तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २

सुल्तान फ़ीरोज़ तथा उसके उत्तराधिकारी

(१३५१—१३९८ ई०)

(HISTORY OF THE TUGHLUQS, PART II)

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकारों द्वारा

[ज़ियाउद्दीन बरनी, शम्स सिराज अफ़ीफ़, यहया, मुहम्मद बिहामद खानी, शरफ़ुद्दीन अली यज़दी, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह, निज़ामुद्दीन अहमद, मीर मुहम्मद मासूम, हमीद क़लन्दर, ऐनुलमुल्क तथा मुतहर कड़ा]

अनुवादक

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

एम० ए०, पी-एच० डी०

यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

प्रकाशक

हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी

अलीगढ़

१९५७

डाक्टर ज़ाकिर हुसेन ख़ां

राज्यपाल बिहार

के

चरणों में

सादर समर्पित

भूमिका

तुग़लुक़ वंश के इस इतिहास में १३५१ से १३६८ ई० तक के इतिहास से सम्बन्धित समस्त प्रमुख फ़ारसी के ऐतिहासिक ग्रन्थों, राजनीति सम्बन्धी रचनाओं एवं काव्यों का हिन्दी अनुवाद ३ भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रथम भाग में समकालीन इतिहासकारों की कृतियों का अनुवाद किया गया है। इसमें ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीख़े फ़ीरोज़शाही, शम्स सिराज अफ़ीफ़ की तारीख़े फ़ीरोज़शाही, यह्या बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी की तारीख़े मुबारकशाही, मुहम्मद बिहामद ख़ानी की तारीख़े मुहम्मदी एवं शरफ़ुद्दीन अली यज़दी के ज़फ़रनामे के अनुवाद दिये गये हैं। दूसरे भाग में समकालीन राजनीति से संबन्धित ग्रन्थों के अनुवाद प्रस्तुत किये गये हैं जिनमें ज़ियाउद्दीन बरनी की फ़तावाये जहाँदारी तथा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही सम्मिलित हैं। तीसरे भाग में बाद के इतिहासकारों में से ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद की तबक़ाते अकबरी तथा मीर मुहम्मद मासूम की तारीख़े सिन्ध के आवश्यक उद्धरणों के अनुवाद किये गये हैं। परिशिष्ट में हमीद क़लन्दर द्वारा संकलित शेख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहलवी की गोष्ठियाँ, ऐनुलमुल्क ऐनुद्दीन अब्दुल्लाह इब्ने माहरू के पत्रों तथा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समकालीन प्रसिद्ध कवि मुतहर कड़ा की कविताओं के आवश्यक अंशों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ साथ समकालीन सिक्कों का भी विवरण दिया गया है। इतिहासकारों तथा उनकी कृतियों का परिचय अनुवाद के आरम्भ में प्रस्तुत किया गया है।

अनुवाद करते समय फ़ारसी से अँग्रेज़ी अनुवाद के सभी प्रचलित नियमों को, जिनका पालन इतिहासकार करते रहे हैं, ध्यान में रखा गया है। भावार्थ के साथ साथ शब्दार्थ को विशेष महत्व दिया गया है। फ़ारसी भाषा का हिन्दी भाषा में वास्तविक अनुवाद देने के प्रयास के कारण कहीं कहीं पर शब्दों की पुनरावृत्ति अनुपेक्षणीय बन गई है क्योंकि इन शब्दों में से किसी एक को भी छोड़ देने से मूल जैसा वातावरण न रह पाता। जिन ग्रन्थों के संक्षिप्त अनुवाद किये गये हैं उनमें मध्य-कालीन भारतीय संस्कृति एवं शासन प्रबन्ध से सम्बन्धित आवश्यक उद्धरणों का विशेष ध्यान रखा गया है। ग्रन्थों की पृष्ठ संख्या पंक्ति के आरम्भ में ही कोष्ठ में लिख दी गई है।

अँग्रेज़ी अनुवाद के ग्रन्थों में पारिभाषिक शब्दों के अँग्रेज़ी अनुवादों में दोष रह गये हैं। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनेक भ्रमपूर्ण रूढ़ियों को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियों से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दों को मूल रूप में ही ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दों की व्याख्या पाद-टिप्पणियों में कर दी गई है। मिथ्या प्रवादों का विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासों के आधार पर पाद-टिप्पणियों में ही किया गया है। नगरों के नाम प्रायः मध्यकालीन फ़ारसी रूप में ही रहने दिये गये हैं। मुझे खेद है कि कुछ आकर ग्रन्थों के न मिलने के कारण कहीं-कहीं आवश्यक व्याख्यायें इस पुस्तक में प्रस्तुत न की जा सकीं। यदि संभव हुआ तो बाद के संस्करण में इस न्यूनता को दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा। इसके अतिरिक्त सीरते फ़ीरोज़शाही तथा हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर की दस्तूरुल अलबाब फ़ी इल्मिल हिसाब के न मिलने के कारण इन ग्रन्थों से इस पुस्तक में आवश्यक उद्धरण प्रस्तुत न किये जा सके। सीरते फ़ीरोज़शाही की हस्तलिखित प्रति केवल ख़ुदाबख़्श लाइब्रेरी पटना

में है और दस्तूरुल अलबाब की प्रति रज़ा लाइब्रेरी रामपुर में है। दूसरे संस्करण के समय सम्भवतः इन दोनों ग्रन्थों की कुछ व्यवस्था हो जायेगी और उनके अनुवाद भी प्रस्तुत किये जा सकेंगे।

''ख़लजी कालीन भारत', 'आदि तुर्क कालीन भारत' तथा 'तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १' के पश्चात् मध्यकालीन भारतीय इतिहास के आधारभूत, फ़ारसी तथा अरबी के इतिहासों के हिन्दी अनुवाद की ग्रन्थमाला की यह चौथी पुस्तक प्रकाशित हो रही है। 'तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १ तथा भाग २' के प्रकाशन के विषय में निर्णय मई १९५६ में इतिहास विभाग अलीगढ़ विश्वविद्यालय ने, डाक्टर ज़ाकिर हुसेन, भूतपूर्व उपकुलपति, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, के सतत प्रयत्नों के फलस्वरूप किया। पिछली दो पुस्तकों ('ख़लजी कालीन भारत' तथा 'आदि तुर्क कालीन भारत') का प्रकाशन भी डाक्टर साहब ही की महती कृपा से सम्भव हुआ। उनकी इस सुलभ कृपा के लिए मैं जितनी कृतज्ञता प्रकट करूं थोड़ी ही है। डाक्टर साहब को राष्ट्र तथा राष्ट्र भाषा से विशेष प्रेम है। उनकी यह हार्दिक इच्छा रही है कि इस ग्रन्थमाला की समस्त पुस्तकें अलीगढ़ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा ही प्रकाशित हों और वे इसके लिए बराबर प्रयत्नशील रहे।

इस ग्रन्थमाला की तैयारी में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफ़ेसर डा० नूरुल हसन, एम० ए०, डी० फ़िल० (आक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता मिली है। उन्होंने मेरी कठिनाइयों को दूर किया और अपने सत्परामर्श एवं अपनी मृदु आलोचनाओं द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की। बहुमूल्य सुझावों तथा सामयिक प्रोत्साहन के लिए मैं उनका विशेष आभारी हूँ। पुस्तकों के मिलने की समस्त कठिनाइयाँ विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रहीं, या यह कहिये कि उनकी कृपा से मुझे पुस्तकों के मिलने में कठिनाई का अनुभव ही नहीं हुआ। उनको धन्यवाद देना मेरा परम कर्त्तव्य है। राजनीति विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर शेख़ अब्दुर्रशीद की मेरे ऊपर सदा ही कृपा रही है। मैं उनके तथा रिसर्च एवं पब्लिकेशन कमेटी के प्रति भी आभार प्रदर्शित करता हूँ। आदर्श प्रेस के स्वामी श्री बद्रीप्रसाद शर्मा ने अपने प्रेस कर्मचारियों के सहयोग से इस पुस्तक की छपाई में जिस परिश्रम और उत्साह को प्रदर्शित किया है उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। प्रूफ़ रीडिंग का कार्य श्री श्रवणकुमार श्रीवास्तव द्वारा बड़ी संलग्नता से होता रहा। इसके लिये मैं उन्हें विशेष धन्यवाद देता हूँ।

अपने इस कार्य में मुझे अपने सभी मित्रों से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। स्थानाभाव के कारण मैं उनके नाम नहीं लिख सका हूँ, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भावों से परिचित हैं।

अनुसचिव
शिक्षा विभाग
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ।
नवम्बर १९५७ ई०

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी,
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस।

अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा

ज़ियाउद्दीन बरनी

तारीखे फ़ीरोज़शाही

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के प्रथम ६ वर्षों का इतिहास उसके समकालीन वयोवृद्ध इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी[1] ने विस्तार से लिखा है। वह लिखता है कि, "मैं तारीखे फ़ीरोज़शाही का लेखक, ज़िया बरनी, इस्लामी पताकाओं की विजय तथा सफलता का इतिहास इस सीमा तक पहुँचा सका हूँ। मैंने अपनी जानकारी तथा योग्यता के अनुसार युग तथा काल

१ उसके विषय में विस्तार से 'आदि तुर्क कालीन भारत' में लिखा जा चुका है (आदि तुर्क कालीन भारत, अलीगढ़ १९५६ ई० पृ० १०१-१२१)। ख़लजी कालीन भारत में ख़लजी वंश से सम्बन्धित उसके इतिहास पर समीक्षा की गई है। (ख़लजी कालीन भारत अलीगढ़ १९५५ ई० पृ० ज-भ)। तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ में ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ तथा मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के इतिहास से सम्बन्धित बरनी के विवरण की समीक्षा की गई है। (तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, अलीगढ़ १९५६ ई० पृ० क-च)। इन पृष्ठों में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के प्रथम ६ वर्षों के इतिहास की समीक्षा की जा रही है।

बरनी का जन्म सुल्तान बलबन के राज्यकाल में ६८४ हि० (१२८५-८६ ई०) में हुआ। उसने तारीखे फ़ीरोज़शाही की रचना ७५८ हि० (१३५७ ई०) में ७४ वर्ष की अवस्था में समाप्त की। इस इतिहास में उसने बलबन के राज्यकाल के आरम्भ से लेकर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के ६ वर्ष (७५८ हि० १३५७ ई०) तक का इतिहास लिखा है। उसका नाना सिपेह सालार हुसामुद्दीन बलबन का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था। उसके पिता मुईदुलमुल्क तथा उसके चाचा अलाउलमुल्क को सुल्तान जलालुद्दीन ख़लजी तथा सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में बड़ा सम्मान प्राप्त था। ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी बाल्यावस्था में अपने समकालीन बड़े-बड़े विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। वह शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया का भक्त था। अमीर ख़ुसरो का बड़ा घनिष्ठ मित्र था। अन्य समकालीन विद्वानों एवं कलाकारों से भी वह भलीभाँति परिचित था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़ के राज्यकाल में उसे अपने शत्रुओं के कारण बड़े कष्ट उठाने पड़े। वह अत्यन्त दीन अवस्था को प्राप्त हो गया। उसने कुछ समय तक बन्दीगृह के कष्ट भी भोगे। उसने अपने ग्रन्थों की रचना सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में ही की, किन्तु उसे कोई भी प्रोत्साहन न मिला और बड़ी ही शोचनीय अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। बरनी ने अपने पूर्वजों तथा अपने इतिहास के विषय में तारीखे फ़ीरोज़शाही में भिन्न-भिन्न स्थानों पर उल्लेख किया है।

(तारीखे फ़ीरोज़शाही, कलकत्ता १८६०-६२ ई० : पृ० ६७, ६८, ६९, ८७, ११४, १२३, १२५, १२७, १६८, १८३, २०४, २०५, २०९, २२२, २४०, २४८, २४९, २५०, २५५, २६४, ३४९, ३५०, ३५१, ३५४, ४५९, ४६३, ४६७, ४९७, ५०४, ५०५, ५०८, ५०९, ५१६, ५२१, ५२९, ५४८, ५५४, ५५७, ५६६, ५६७, ५७३, ५८२, ६०२। आदि तुर्क कालीन भारत : अलीगढ़ १९५६ ई० : पृ० १७१, १७२, १७३, १८५, २०३, २०९, २१०, २११, २१३, २२०। ख़लजी कालीन भारत, अलीगढ़ १९५६ ई० : पृ० ७, ११, १२, २२, ३०, ३६, ४०, ४५, ४६, ४७, ५०, ५४, ५५, १०५, १०६, १०८। तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ : पृ० ३०, ३१, ३६, ३७, ६१, ६२, ६७, ६८, ७२, ७३, ७८, ७९। तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २ : पृ० ४, १६, १९, २१, २७, ३१, ३७, ४९।

के सुल्तान के राज्य के छः वर्षों का हाल तथा उसके कारनामे, जो मैंने स्वयं देखे ११ अध्याय में लिखे हैं। यदि ईश्वर ने चाहा और मैं जीवित रहा और मेरी मृत्यु न हो गई तो मैं इसके आगे भी सुल्तान फ़ीरोज शाह के इतिहास तथा कारनामों से सम्बन्धित अध्याय, जो मेरे निरीक्षण पर अवलम्बित होंगे, लिखूंगा और उन्हें सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के काल के इतिहास से जोड़ दूंगा। यदि मेरी मृत्यु हो गई तो भी संसार के स्वामी के कारनामे, गुण तथा इतिहास इस प्रकार के हैं कि वे लिखे गये बिना नहीं रह सकते। मैंने इस इतिहास की रचना में बड़ा परिश्रम किया है। मुझे ईश्वर से आशा है कि मेरी आँखों ने जो कष्ट उठाया है उसे वह व्यर्थ नष्ट नहीं होने देगा।"[१] आरम्भ में भी उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल के इतिहास का परिचय इस प्रकार दिया है: "इस तारीखे फ़ीरोजशाही के संकलनकर्त्ता ने युग तथा समय के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह (अल्लाह उसके राज्य तथा शासन को सर्वदा वर्तमान रक्खे) के सिंहासनारोहण से लेकर छः वर्ष तक के राज्य का हाल तथा इतिहास, उसके शासन प्रबन्ध एवं विजय, उसके उत्कृष्ट गुण एवं सच्चरित्रता तथा जो कुछ भी देखा है उसका हाल, ११ अध्याय में लिखा है। यदि मैं भविष्य में जीवित रहा तो मैं इन अध्यायों के अतिरिक्त अपने निरीक्षण के आधार पर ९० अन्य अध्याय लिखूंगा, जिससे इस इतिहास में सुल्तान फ़ीरोज शाह का इतिहास एवं उसके गुणों का उल्लेख १०१ अध्यायों में हो जाय। यदि यह संभव न हुआ तो ईश्वर जिसे भी इस कार्य की शक्ति प्रदान करे वही सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का इतिहास, उसके शासन प्रबन्ध तथा गुणों का हाल, एवं उसके अत्यधिक दान पुण्य की चर्चा लिपिबद्ध करे।"[२]

ज़ियाउद्दीन बरनी ने इतिहास का महत्व तथा उससे लाभ, इतिहास की विशेषता तथा इतिहासकार के कर्त्तव्य[३] और इतिहास की रचना की शर्तों[४] का उल्लेख तारीखे फ़ीरोज़शाही की भूमिका में किया है। वह लिखता है "इतिहास की रचना करते समय सबसे बड़ी शर्त, जोकि इतिहासकार के लिए उसकी धर्मनिष्ठता को देखते हुए आवश्यक है, यह है कि बादशाही की प्रतिष्ठा, गुणों, उत्तम बातों, न्याय और नेकियों का उल्लेख करे। उसे यह भी चाहिये कि उसकी बुरी बातों और अनाचार को न छिपाये, इतिहास लिखते समय पक्षपात न करे। यदि उचित देखे तो स्पष्ट अन्यथा संकेत या इशारे से बुद्धिमानों और ज्ञान-सम्पन्न व्यक्तियों को सचेत कर दे। यदि भय अथवा डर के कारण अपने समकालीन बादशाह के विरुद्ध कुछ लिखना सम्भव न हो तो इसके लिए वह अपने आप को विवश समझ सकता है, किन्तु पिछले लोगों के विषय में उसे सच-सच लिखना चाहिये। यदि किसी इतिहासकार को किसी बादशाह या मंत्री अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कोई कष्ट या दुःख पहुँचा हो तो उसे उस पर ध्यान न देना चाहिये तथा वह किसी की अच्छाई या बुराई सत्य के विरुद्ध न लिखे और न ऐसी घटनाओं का उल्लेख करे जो कभी न घटी हों[५]।" उसने यथासम्भव तारीखे फ़ीरोज़शाही में इस नियम के पालन करने का प्रयत्न किया है। उसने युद्ध तथा विजयों की चर्चा की अपेक्षा बादशाहों तथा अमीरों के पूर्ण व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है किन्तु लोगों के गुणों की प्रशंसा एवं दोषों का उल्लेख करते समय वह इतना उत्साहित हो जाता है कि वह अपने ही निर्धारित किये हुए नियमों की उपेक्षा करने लगता है।

---

१ बरनी, तारीखे फ़ीरोज़शाही, पृ० ६०२ तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० ४९।

२ बरनी, तारीखे फ़ीरोज़शाही, पृ० ५५९-६०, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २ पृ० ४।

३ बरनी पृ० १३, आदि तुर्क कालीन भारत पृष्ठ १३१-३२।

४ बरनी पृ० १५-१८, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १३४-३५।

५ बरनी पृ० १५-१६, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १३४।

ज़ियाउद्दीन बरनी सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था। इस कारण सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से भी उसके अच्छे सम्बन्ध रहे होंगे और उसे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में बड़ी आशायें भी रही होंगी; किन्तु उसके शत्रुओं तथा दरबार की राजनीति ने उसकी समस्त आशाओं का खण्डन कर दिया और वह सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में बड़ी शोचनीय दशा को प्राप्त हो गया था। उसे कुछ समय तक बन्दीगृह के भी कष्ट भोगने पड़े। उसने अपनी समस्त रचनायें फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में ही समाप्त कीं किन्तु तारीख़े फ़ीरोज़शाही, जिसकी रचना में उसने इतना परिश्रम किया, उसके समकालीन अमीरों के षड्यन्त्र के कारण फ़ीरोज़ के दरबार में प्रस्तुत भी न हो सकी थी। उसने फ़ीरोज़ शाह की प्रशंसा में अपनी लेखनी की सम्पूर्ण शक्ति समाप्त कर दी किन्तु फिर भी कुछ न हो सका, यहाँ तक कि उसकी कठिनाइयाँ अपनी चरम सीमा पर पहुँच गईं। 'सियरुल औलिया के लेखक अमीर ख़ुर्द ने, जो ज़िया बरनी को भलीभाँति जानता था, लिखा है, कि "जब बरनी की अवस्था सत्तर वर्ष से अधिक हो गई तो फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में उसने अपनी दरिद्रता के कारण एकान्तवास ग्रहण कर लिया। अन्त में कुछ दिन रुग्ण रह कर ईश्वर के अन्य भक्तों के समान इस लोक से परलोक को सिधार गया। मृत्यु के समय उसके पास पैसा कौड़ी कुछ न था। पहनने के वस्त्र भी उसके पास न रह गये थे। उसके जनाज़े में नीचे एक बोरिया और ऊपर एक चद्दर के अतिरिक्त कुछ न रह गया था। सुल्तानुल मशायख़ शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के क़ब्रिस्तान में अपने पिता की क़ब्र के पांयती दफ़न हुआ।"[१]

अपनी कठिनाइयों के बावजूद उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और उसे सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद बिन साम के अतिरिक्त देहली के सुल्तानों में सबसे उत्कृष्ट बादशाह बताया है। उसने देहली के समस्त सुल्तानों की सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से तुलना करके अपने कथन की पुष्टि की है। वह लिखता है कि 'जिन लोगों को प्राचीन सुल्तानों के इतिहास तथा विगत प्रसिद्ध घटनाओं का ज्ञान है, उनसे इस तारीख़े फ़ीरोज़शाही का संकलनकर्त्ता न्याय के अनुसार निवेदन करता है और इसमें लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं कि जब से देहली पर विजय प्राप्त हुई है और हिन्दुस्तान में इस्लाम का प्रचार हुआ है, उस समय से लेकर अब तक सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद बिन साम के उपरान्त समय तथा युग के बादशाह सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान कोई भी शिष्ट, सज्जन, कृपालु, दयालु, दूसरों के अधिकार पहचानने वाला तथा कर्त्तव्य-निष्ठ, इस्लाम के नियमों में दृढ़ तथा पवित्र विश्वास रखने वाला बादशाह देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ नहीं हुआ। मैंने यह बात अतिशयोक्ति, डींग अथवा अनावश्यक प्रशंसा करते हुए नहीं लिखी है और न ये बातें सांसारिक लोभ के कारण ही लिखी हैं, अपितु मैंने इस पुस्तक की भूमिका में इतिहास लिखने का परमावश्यक गुण सत्यता को बताया है। यद्यपि मुझे फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में कोई प्रफुल्लता, समृद्धि, सम्पन्नता, सुख तथा आराम नहीं प्राप्त है और इस विषय में राज्य के सभी लोगों से पृथक् तथा भिन्न हूँ, मैं उन लोगों में हूँ जिनके विषय में इस एक छन्द की यह पंक्ति सत्य समझी जा सकती है और जो किसी अन्य के लिए उचित नहीं ज्ञात होती :

'पक्षी तथा मछली भी अपने देश में मेरे अतिरिक्त सुखी हैं।'[२]

---

१ अमीर ख़ुर्द, सियरुल औलिया (देहली १८८५ ई०) पृष्ठ ३१३, शेख़ अब्दुल हक़्क़ मुहद्दिस देहलवी, अख़बारुल अख़ियार (देहली १९१३-१४ ई०) पृ० १०३।

२ बरनी पृ० ५४८-४९; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० १६।

उसने सुल्तान फ़ीरोज शाह के राज्यकाल का विवरण ११ अध्यायों में दिया है। उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का इतिहास १०१ अध्याय में लिखने का निश्चय किया था, किन्तु वह समझता था कि वृद्धावस्था के कारण वह इस कार्य को सम्पन्न न कर सकेगा। फिर भी उसे आशा थी कि यदि वह जीवित रहा तो अपनी मनोकामना सिद्ध कर लेगा। इन ११ अध्यायों में उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल से सम्बन्धित समस्त आवश्यक बातों का विवरण दिया है। सुल्तान के सार्वजनिक निर्माण कार्यों की भी वह भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। उसने सुल्तान द्वारा नहरों के खुदवाने तथा कृषि की उन्नति के विषय में बड़े उत्साह से विवरण दिया है। वह लिखता है कि 'ईश्वर ही जानता है कि कुछ समय में उन नहरों के किनारे कितने हज़ार ग्राम बस जायेंगे। प्रजा के कृषि करने तथा जोतने बोने के कारण उन ग्रामों में न जाने कितने प्रकार के उत्तम अनाज तथा उत्तम वस्तुयें उत्पन्न होने लगेंगी। उन स्थानों पर अनाज न जाने कितना सस्ता हो जायेगा। इस समय जो कृषि वहाँ होती है तथा जो उद्यान वहाँ लगाये गये हैं उनसे बहुमूल्य वस्तुयें पैदा होती हैं।"[1]

फ़तावाये जहांदारी

ज़ियाउद्दीन बरनी अपने इतिहास द्वारा अपने समकालीन उच्च वर्ग का पथ-प्रदर्शन तथा अपने समकालीन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समक्ष एक आदर्श रखना चाहता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने फ़तावाये जहाँदारी नामक पुस्तक की रचना की। जिन सिद्धांतों की पुष्टि ज़ियाउद्दीन बरनी ने तारीखे फ़ीरोज़शाही में ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा की है उन्हीं सिद्धांतों की पुष्टि फ़तावाये जहांदारी में अन्य मुसलमान बादशाहों तथा ख़लीफ़ाओं से सम्बन्धित ऐतिहासिक कथाओं द्वारा की है।

इस पुस्तक की केवल एक हस्तलिखित प्रति इण्डिया आफ़िस लन्दन के पुस्तकालय में मिलती है। इसमें २४८ पन्ने हैं। किताब ९$\frac{3}{4}$ इंच लम्बी और ५$\frac{9}{16}$ इंच चौड़ी है। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ हैं। कहीं-कहीं पृष्ठों के बीच का लिखा हुआ भाग मिट गया है। पृ० ११५ अ, १५१ अ, १७२ ब, और १७३ अ, का कुछ भाग बिल्कुल सादा है। इस पुस्तक में ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपना नाम कहीं नहीं लिखा है, किन्तु 'दुआगोये सुल्तानी' अर्थात् 'सुल्तान का हितैषी' के शब्द से ज्ञात होता है कि यह शब्द उसने अपने लिए लिखे हैं। इसके अतिरिक्त फ़तावाये जहांदारी तथा तारीखे फ़ीरोज़शाही के राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी सिद्धांतों में जो समानता है वह इस बात का बहुत बड़ा प्रमाण है कि दोनों का लेखक एक ही है किन्तु यह पुस्तक भारतवर्ष तथा भारतवर्ष के बाहर किसी स्थान पर प्रसिद्ध न हो सकी। अमीर ख़ुर्द ने तो इस पुस्तक का नाम भी ज़ियाउद्दीन बरनी की रचनाओं की सूची में नहीं लिखा है। ज़ियाउद्दीन बरनी लिखता है कि, "प्राचीन लेखकों ने राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी अनेक ग्रंथ लिखे हैं, किन्तु बादशाहों, मंत्रियों, मलिकों तथा अमीरों के पथ-प्रदर्शन के लिए मैंने जिस प्रकार राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी अधिनियमों का उल्लेख इस ग्रन्थ में किया है उस प्रकार आज तक किसी लेखक ने नहीं किया।"[2]

फ़तावाये जहांदारी में राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण उपदेश दिए गये हैं। ज़ियाउद्दीन, महमूद ग़ज़नवी को अनुपम तथा आदर्श बादशाह समझता था। उसने उसके बाद के समस्त मुसलमान बादशाहों को महमूद की सन्तान बताया है। प्रत्येक शिक्षा, बादशाहाने इस्लाम अथवा फ़रज़न्दाने महमूद अर्थात् महमूद के पुत्र के नाम से आरम्भ की है।

---

[1] बरनी पृ० ५६८; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० २८।

[2] फ़तावाये जहाँदारी पृ० २४० ब।

उसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि प्रत्येक गुण, जिसका उल्लेख फ़तावाये जहाँदारी में हुआ है, महमूद में विद्यमान था, अतः महमूद की सन्तान अर्थात् मुसलमान बादशाहों को उनका अनुसरण करना चाहिये। प्रत्येक उपदेश के पश्चात् उसे स्पष्ट करने के लिए प्राचीन ईरान और इस्लामी इतिहासों की विभिन्न घटनाओं से उदाहरण दिये हैं। इस प्रकार फ़तावाये जहाँदारी के उपदेशों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :

(१) सिद्धान्तों का उल्लेख।

(२) इतिहासों से उदाहरण।

फ़तावाये जहाँदारी में ज़ियाउद्दीन बरनी ने सुल्तान महमूद को अपने समक्ष रखते हुए अपनी महत्वाकांक्षा इस प्रकार व्यक्त की है : "महमूद यदि एक बार हिन्दुस्तान की ओर आता तो समस्त हिन्दुस्तान के ब्राह्मणों को, जो इस देश में एक छोर से दूसरे छोर तक कुफ़ तथा शिर्क की प्रथाओं को दृढ़ बनाने का कारण हैं, मरवा डालता और अनुमानतः दो सौ-तीन सौ हज़ार हिन्दू नेताओं की गर्दन मरवा देता। जब तक समस्त हिन्दुस्तान इस्लाम स्वीकार न कर लेता और कलमा न पढ़ लेता हिन्दुओं की हत्या करने वाली तलवार को म्यान में न रखता क्योंकि महमूद, शाफ़ई धर्म का अनुयायी था और इमाम शाफ़ई के निकट हिन्दुओं के विषय में यह आदेश है कि वे या तो इस्लाम स्वीकार करलें अन्यथा उनकी हत्या करादी जाय। हिन्दुओं से जिज़या लेने की आज्ञा नहीं क्योंकि न तो उनकी कोई किताब है और न पैग़म्बर।"[१]

मुहम्मद तुग़लुक़ के समय ही से देश के उच्च वर्ग की आर्थिक दशा डांवा डोल हो चुकी थी। अलाउद्दीन के समय की वह स्थिति, जबकि अनाज तथा अन्य वस्तुओं का भाव सस्ता कर दिया गया था, अब वर्तमान न थी। ज़ियाउद्दीन बरनी अपने समकालीनों की भाँति स्वयं बड़ा अपव्ययी बन गया था। उसने अपने समय के सभी अपव्ययी अमीरों की तारीख़े फ़ीरोज़शाही में बड़ी प्रशंसा की है। उसने अपने सुख के दिन याद करके आँसू बहाये हैं, किन्तु मुसलमानों के इस वर्ग को धन अब किस प्रकार प्राप्त हो सकता था ? ज़ियाउद्दीन बरनी स्वयं देश की आय के साधन बढ़ाने के उपाय न सोच सकता था। उसने सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ की कृषि की उन्नति की योजनाओं की भी हँसी सी उड़ाई है। फ़ीरोज़ के समय की नई नहरों तथा आर्थिक व्यवस्था से भी उसे कोई लाभ न प्राप्त हो सका। उसे कोई ऐसा अन्य उपाय भी समझ में नहीं आया जिससे हिन्दू महाजनों, साहूकारों तथा धनी लोगों के धन का किसी प्रकार अपहरण किया जाय। यह केवल उसी समय संभव था जबकि बादशाह तथा समस्त उच्च पदाधिकारियों को यह समझा दिया जाता कि धर्मनिष्ठ अथवा दीनदार बादशाह का कर्त्तव्य यह है कि हिन्दुओं को अपमानित और तिरस्कृत किया जाय। उसे इस बात पर विश्वास था कि सभी हिन्दुओं को मुसलमान बना लेना या उनको तलवार के घाट उतार देना सम्भव नहीं अस्तु उसने तारीख़े फ़ीरोज़शाही तथा फ़तावाये जहाँदारी द्वारा यह समझाने का प्रयत्न किया है कि कम से कम इतना तो होना अनिवार्य है कि हिन्दुओं को दरिद्र तथा मुहताज बना दिया जाय, उनके पास इतना धन शेष न रहे कि वे आदरपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें। इससे उसे आशा थी कि मुसलमानों को पुनः धन सम्पत्ति प्राप्त हो जायेगी और उच्च वर्ग की आर्थिक समस्याओं का कुछ दिनों के लिए समाधान हो जायगा। जहाँ तक साधारण वर्ग का सम्बन्ध है उसे ज़ियाउद्दीन बरनी जीवित रहने का अधिकारी समझता ही न था। वह चाहता था कि युद्ध के लूट के माल में से सब कुछ राजकोष में ही न पहुँच जाय अपितु मुसलमानों के उच्च वर्ग को भी अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो।

---

१ फ़तावाये जहाँदारी पृ० १२ अ।

फ़तावाये जहाँदारी में उसने जिस आर्थिक नीति का उल्लेख किया है, वह वही है जिसका अनुसरण अलाउद्दीन ने किया था। उसका विचार था कि चीज़ों का मूल्य राज्य की ओर से निश्चित हो, किसी को निश्चित भाव से अधिक मूल्य वसूल करने की आज्ञा न हो, बाज़ार में निरीक्षक तथा अन्य पदाधिकारी नियुक्त किये जायँ जो इस बात की देख रेख करते रहें कि राजाज्ञाओं का किसी प्रकार उल्लंघन न हो। उसके समय में देश का सभी व्यापार हिन्दुओं के हाथ में था, अतः उसने जिस स्थान पर भी चोर बाज़ारी को रोकने की शिक्षा दी है उसी स्थान पर यह भी लिख दिया है कि वास्तव में चोर बाज़ारी हिन्दू तथा काफ़िर करते हैं। इस प्रकार उसने हिन्दू व्यापारियों तथा महाजनों को अपमानित करने की शिक्षा प्रत्येक स्थान पर दी है। ब्राह्मणों का विरोध भी इस कारण किया गया है कि हिन्दू समाज में उनका बड़ा सम्मान होता था। वे धनी भी थे। इसके साथ साथ हिन्दुओं के धर्म सम्बन्धी सभी कार्य उन पर निर्भर थे। ज़ियाउद्दीन बरनी समझता था कि इन लोगों के विनाश द्वारा मुसलमानों को धन सम्पत्ति एकत्र करने में बड़ी सुगमता होगी अतः ज़ियाउद्दीन बरनी के दृष्टिकोण को उस समय के उन मुसलमानों का दृष्टिकोण समझना चाहिये, जिनकी आर्थिक दशा बड़ी खराब हो चुकी थी।

शम्स सिराज अफ़ीफ़

तारीखे फ़ीरोज़शाही

शम्स सिराज अफ़ीफ़ (शम्सुद्दीन बिन सिराजुद्दीन) ने अपने इतिहास तारीखे फ़ीरोज़-शाही में लिखा है कि जिस समय सुल्तान फ़ीरोज़ शाह थट्टा से वापस हुआ तो उसकी अवस्था १२ वर्ष की थी।[१] ब्रिटिश म्यूज़ियम की हस्तलिखित पुस्तकों के कैटलाग के संकलनकर्त्ता ने इस घटना को ७६३ हि० (१३६१-६२ ई०) में रखते हुये शम्स सिराज का जन्म ७५१ हि० (१३५०-५१ ई०) में लिखा है,[२] किन्तु शम्स सिराज के उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट नहीं होता कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने थट्टा की वापसी के तुरन्त उपरान्त उन पत्थर की लाटों को स्थानान्तरित कराया।

शम्स सिराज अफ़ीफ़ के प्रपितामह मलिक सादुलमुल्क शिहाब अफ़ीफ़ को फ़ीरोज़पुर के अबूहर नामक स्थान पर सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ द्वारा एक पद प्राप्त था।[3] उसका पिता भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दरबार में विभिन्न पदों पर आसीन रह चुका था। एक समय वह ख़्वासों की शब-नवीसी[४] तथा एक समय वह दीवाने विज़ारत[५] में नियुक्त था। वह सुल्तान के साथ जाजनगर[६] तथा नगरकोट[७] के अभियानों पर भी गया था।

---

१ अफ़ीफ़ पृ० ३१०; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० १२७।

२ रियु भाग १, पृ० २४१ ब।

३ अफ़ीफ़ पृ० ३७; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० ५४।

४ ,, ,, १२७; ,, ,, ,, ,, ७४।

५ ,, ,, १९७; ,, ,, ,, ,, ९३।

६ ,, ,, १६३; ,, ,, ,, ,, ८५।

७ ,, ,, १८६; ,, ,, ,, ,, ९१।

शम्स सिराज अफ़ीफ़ भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दरबार में दीवाने विज़ारत के अधिकारियों के साथ सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के अभिवादन हेतु जाया करता था।[1] जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शिकार खेलने जाता तब भी शम्स सिराज अफ़ीफ़ उसके साथ होता था।[2] इस प्रकार उसका यह दावा कि उसे फ़ीरोज़ शाह के समस्त राज्यकाल का पूर्ण ज्ञान था सत्य है। उसके ज्ञान में उसके पिता तथा दादा एवं अन्य सम्बन्धियों की जानकारी के अनुसार भी वृद्धि हुई थी।

तारीखे फ़ीरोज़शाही में उसने मनाक़िबे सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़[3], मनाक़िबे सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़,[4] तथा मनाक़िबे सुल्तान मुहम्मद इब्ने फ़ीरोज़[5] की ओर संकेत किया है। इससे यह न समझना चाहिये कि उसने इन सुल्तानों के सम्बन्ध में पृथक् इतिहास लिखे थे अपितु संभवतः उसने देहली के तुर्क सुल्तानों का कोई वृहद् इतिहास लिखा होगा जिसमें ख़लजी सुल्तान तथा प्रारम्भिक तुग़लुक़ काल के सुल्तानों का इतिहास विस्तार से दिया गया होगा।

उसने अपने इतिहास में देहली के विनाश की चर्चा कई स्थानों पर की है[6]। इस प्रकार सम्भवतः उसका इतिहास सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद बिन साम से लेकर तैमूर के आक्रमण तक की घटनाओं से सम्बन्धित रहा होगा किन्तु खेद है कि इस समय जो हस्तलिखित प्रतियाँ तथा कलकत्ता द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ मिलता है उसमें केवल फ़ीरोज़ शाह का इतिहास ही वर्तमान है। अन्य भाग क्या हुये, वे कभी मिल भी सकेंगे अथवा नहीं, इसके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।

उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के इतिहास की रूपरेखा जिस प्रकार बनाई थी उसके संबन्ध में वह लिखता है, "मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी ने तारीखे फ़ीरोज़शाही में सुल्तान ग़यासुद्दीन बल्बन के राज्यकाल के आरम्भ से लेकर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल के छठे वर्ष के अन्त तक का हाल लिखा है। उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का हाल १०१ अध्याय में लिखना निश्चय किया था किन्तु वह केवल ११ अध्याय ही लिख सका। क्योंकि वह इसे पूरा न कर सका अतः इस इतिहासकार ने इस इतिहास में ९० अध्याय लिखे हैं। यह ९० अध्याय ५ क़िस्मों (भागों) में लिखे गये हैं और प्रत्येक भाग में १८ अध्याय हैं।[7]" खेद है कि उसके पाँचवें भाग के भी केवल १५ अध्याय ही मिलते हैं और शेष ३ अध्यायों का कोई पता नहीं।

शम्स सिराज अफ़ीफ़ के सूत्रों के विषय में कोई सन्देह नहीं हो सकता। उसने अपने इतिहास में सुल्तान फ़ीरोज़ तुग़लुक़ के जन्म से लेकर मृत्यु तक का विवरण विभिन्न अध्यायों में दिया है। वह सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की धर्मनिष्ठा तथा मृदुलता से अत्यधिक प्रभावित था। वह स्वयं अपने समकालीन सूफ़ियों का मुरीद था और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को उसने एक आदर्श मुसलमान बादशाह के रूप में प्रस्तुत किया है। उसने केवल युद्ध तथा अभियानों का ही उल्लेख नहीं किया है अपितु सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल की अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं

---

१ अफ़ीफ़ पृ० २८१; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० ११९।
२ ,, ,, ३२१-२२; ,, ,, ,, ,, १३१।
३ ,, ,, ३६।
४ ,, ,, ४२, ५१।
५ ,, ,, १४८-१४९, ४२८।
६ अफ़ीफ़ पृ० १८५।
७ ,, ,, ३०; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० ५३।

तथा शासन प्रबन्ध का भी विवरण दिया है। सुल्तान के सार्वजनिक निर्माण कार्यों, भवनों, नहरों इत्यादि के निर्माण से वह अपने समस्त समकालीनों की भाँति प्रभावित था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के मुख्य अधिकारियों के विषय में भी उसका विवरण बड़ा ही महत्वपूर्ण है। उसके इतिहास से समकालीन सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं के विषय में भी स्पष्ट संकेत मिलते हैं।

वह अपने इतिहास में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा उसके अधिकारियों का विवरण देते हुये कहीं कहीं इतिहासकार की निष्पक्षता को भूल जाता है और इस ओर विशेष ध्यान नहीं देता। उसने अपना विवरण काव्यमयी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है अतः उसकी प्रशंसा एवं दोषों के उल्लेख से ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है, फिर भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समकालीन इतिहासकार होने के कारण उसके विवरण के महत्व की उपेक्षा संभव नहीं।

यहया बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह

तारीख़े मुबारकशाही

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा उसके उत्तराधिकारियों का लगभग समकालीन होने के कारण सुल्तान फ़ीरोज़ तथा उसके उत्तराधिकारियों के इतिहास के सम्बन्ध में यहया बिन अहमद सिहरिन्दी की तारीख़े मुबारकशाही को विशेष महत्व प्राप्त है। यहया बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी ने अपना इतिहास सैयिद वंश के सुल्तान, मुइज़्ज़ुद्दीन अबुल फ़तह मुबारक शाह को, जिसने ८२४ हि० (१४२१ ई०) से ८३७ हि० (१४३३ ई०) तक राज्य किया समर्पित किया। इस इतिहास में सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन बिन साम से लेकर शाबान ८३१ हि० (१४२८ ई०) तक के देहली के सुल्तानों का हाल लिखा गया था किन्तु बाद में लेखक ने इसमें ८३८ हि० (१४३४ ई०) तक का हाल और बढ़ा दिया। जिस समय यह इतिहास लिखा गया, कुछ अन्य ग्रंथ जो अब अप्राप्य हैं, लेखक को अवश्य उपलब्ध रहे होंगे।

सुल्तान फ़ीरोज़ के उत्तराधिकारी के इतिहास के लिए उसके विवरण को बड़ा ही महत्व प्राप्त है। तबक़ाते अकबरी, तारीख़े फ़िरिश्ता तथा अन्य इतिहासों में उसी के विवरण को थोड़ा बहुत घटा बढ़ाकर नक़ल किया गया है।

मुहम्मद बिहामद ख़ानी

तारीख़े मुहम्मदी

मुहम्मद बिहामद ख़ानी मलिकुश्शर्क़ मलिक बिहामद ख़ाँ का, जिसे ऐरिच (बुन्देलखण्ड में) की अक्ता प्राप्त थी, पुत्र था। मुहम्मद भी अपने पिता के समान एक सफल सैनिक था और उसने अपने समय के कई युद्धों में भाग लिया, किन्तु बाद में वह ऐरिच के एक सूफ़ी यूसुफ़ बुद्ध का शिष्य हो गया और धार्मिक कार्यों में तल्लीन रहने लगा।

तारीख़े मुहम्मदी में उसने मुहम्मद साहब के काल से लेकर ८४२ हि० (१४३८-३९ ई०) तक का हाल लिखा है। अपने समकालीन इतिहास से सम्बन्धित उसने कालपी के सुल्तानों का

हाल तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के बाद के सुल्तानों का हाल बहुत कुछ अपनी जानकारी के आधार पर लिखा है। तारीख़े मुबारकशाही के समान विभिन्न घटनाओं के क्रम का पता लगाने के लिए यह ग्रन्थ बड़ा ही महत्वपूर्ण है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के उत्तराधिकारियों के इतिहास की जानकारी के लिए तारीख़े मुहम्मदी को बड़ा महत्व प्राप्त है।

शरफ़ुद्दीन अली यज़दी

ज़फ़र नामा

शरफ़ुद्दीन अली यज़दी का जन्म यज़्द में हुआ था। वह सुल्तान शाहरुख़[1] का, जिसने १४०५ से १४४७ ई० तक राज्य किया, विश्वासपात्र हो गया था। शाहरुख़ का दूसरा पुत्र मिर्ज़ा अबुल फ़तह इबराहीम सुल्तान, जो १४१५ से १४३५ ई० तक फ़ारस का हाकिम रहा, यज़दी को विशेष रूप से आश्रय प्रदान करता रहता था। जब यूनुस ख़ाँ, जो बाबर बादशाह का नाना तथा उसके पिता उमर शेख़ मिर्ज़ा बिन अबी सईद का ससुर था, उलुग़ बेग द्वारा १४२८-२९ ई० में बन्दी बना लिया गया तो शाहरुख़ ने यूनुस ख़ाँ को, जो उस समय अल्पावस्था में था, शरफ़ुद्दीन की देख रेख में कर दिया और इस प्रकार वह कुछ समय तक यज़्द में रहा। तारीख़े रशीदी के अनुसार शरफ़ुद्दीन अली यज़दी ने अपनी बहुत सी कवितायें यूनुस ख़ाँ को समर्पित की थीं। १४४२-४३ ई० में अजमी एराक़ के शासक मिर्ज़ा सुल्तान मुहम्मद ने उसे क़ुम में आमंत्रित किया। जब सुल्तान मुहम्मद ने विद्रोह किया तो सम्भवतः उसकी भी हत्या करा दी जाती यदि मिर्ज़ा अब्दुल लतीफ़ बिन उलुग़ बेग ने बीच में पड़कर उसे समरक़न्द इस कारण से न भेज दिया होता कि उलुग़ बेग को ज्योतिष विद्या में उसकी सहायता की आवश्यकता है। उसकी मृत्यु १४५४ ई० में हुई।

वह अपनी विद्वत्ता तथा पांडित्य के लिये बड़ा प्रसिद्ध था और अपनी काव्यमयी फ़ारसी रचनाओं के लिये उसने बड़ी ख्याति प्राप्त करली थी। उसको ज्योतिष शास्त्र का भी ज्ञान था और उसने इस सम्बन्ध में भी एक रचना की थी किन्तु उसकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक ज़फ़र नामा है जिसे उसने १४२४-२५ ई० में समाप्त किया। इसमें तैमूर तथा ख़लील सुल्तान का इतिहास है जिसे सर्वप्रथम इबराहीम सुल्तान ने तैमूर के सरकारी इतिहासों तथा अन्य पत्रों एवं समकालीन विवरणों के आधार पर तैयार किया था। शरफ़ुद्दीन ने इसे काव्यमयी गद्य में लिखा।

ज़फ़र नामा में तैमूर के राज्यकाल का पूर्ण इतिहास बड़े विस्तार से दिया गया है। उसके भारतवर्ष के आक्रमण का भी लेखक ने अपनी काव्यमयी भाषा में बड़े उत्साह से विवरण किया है। तैमूर के कारनामों को आकाश तक पहुँचाने में उसने कोई कसर उठा न रखी और जिन स्थानों पर घटनाओं द्वारा वह अपने पाठकों को प्रभावित नहीं कर सकता था वहाँ उसने विशेष रूप से काव्यमयी भाषा का प्रयोग करके प्रभावित करने का प्रयत्न किया है। तैमूर को वह आदर्श तथा अनुपम बादशाह तो मानता ही था किन्तु उसने इस बात को भी सिद्ध करने का विशेष प्रयत्न किया है कि तैमूर के युद्ध इस्लाम को उन्नति देने तथा इस्लाम के प्रसार से सम्बन्धित थे। यद्यपि तैमूर को भारतवर्ष पर आक्रमण करने की प्रेरणा यहाँ की राजनैतिक दुर्दशा तथा उथल पुथल के कारण हुई किन्तु शरफ़ुद्दीन यज़दी ने यही सिद्ध किया है कि

१ शाहरुख़ : तैमूर का चौथा पुत्र जो अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त ख़ुरासान में १४०५ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ। उसकी मृत्यु १४४७ ई० में हुई।

भारतवर्ष के मुसलमानों के इस्लाम के मार्ग से विचलित हो जाने के कारण तथा भारतवर्ष में इस्लाम की शोचनीय दशा की वजह से तैमूर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया किन्तु उसी के इतिहास द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस कथित इस्लाम के योद्धा का मुक़ाबला बहुत से स्थानों पर हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने संगठित होकर किया और वे तैमूर के आक्रमण को भारतवर्ष पर एक विदेशी का आक्रमण समझते थे। शरफ़ुद्दीन अली यज़दी की जो भी व्याख्या हो पर तैमूर स्वयं यह समझता था कि भारतवर्ष के सभी हिन्दू तथा मुसलमान उसके शत्रु हैं। उसने अपनी सैन्य शक्ति द्वारा यहाँ के निवासियों का दमन किया और प्रत्येक स्थान पर जो हत्याकाण्ड हुआ उसमें मारे जाने वालों में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही समान रूप से सम्मिलित थे। इस प्रकार शरफ़ुद्दीन अली यज़दी के इतिहास से यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि मुसलमान मुग़ल आक्रमण-कारियों को हिन्दुओं के साथ मिलकर अपने देश से निकालना चाहते थे और मेरठ में उसे इस बात की चेतावनी भी दी गई कि यह वही स्थान है जहाँ तुर्माशीरीं को भी विजय न प्राप्त हो सकी थी। शरफ़ुद्दीन अली यज़दी के इतिहास ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि मुसलमान अपने राज्य के २०० वर्ष के भीतर ही भारतीय राष्ट्र का एक मुख्य अंग बन गये थे और यहाँ की जनता हिन्दुस्तानी थी और सभी एक साथ मरने और मारने के लिये कटिबद्ध थे।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह

फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही

तबक़ाते अकबरी में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की इस रचना का उल्लेख हुआ है। तबक़ाते अकबरी का लेखक निज़ामुद्दीन लिखता है कि 'सुल्तान ने अपने राज्यकाल की घटनाओं को स्वयं संकलित करके फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही नामक पुस्तक की रचना की थी। तबक़ाते अकबरी के लेखक ने उस पुस्तक को देखा था और अपने इतिहास में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल का विवरण देते हुए वह उस पुस्तक से लाभान्वित भी हुआ था। उसका कथन है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने फ़ीरोज़ाबाद की जामा मस्जिद के निकट एक अष्टाकार गुम्बद के आठों ओर इस पुस्तक के आठ अध्याय पत्थर पर खुदवा दिये थे[1]। उसने उस पुस्तक में से राजनीति, कर व्यवस्था तथा सार्वजनिक निर्माण के कार्यों के सम्बन्ध में आवश्यक संक्षिप्त उद्धरण भी दिये हैं किन्तु अब इस गुम्बद का पता नहीं, न पूरी पुस्तक ही कहीं मिलती है। अफ़ीफ़ ने भी सुल्तान की इस रचना का उल्लेख किया है।

फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही १८८५ ई० में देहली से प्रकाशित हुई थी और इसकी दो एक हस्तलिखित प्रतियाँ भी मिलती हैं किन्तु इसमें सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल की घटनाओं का अधिक विवरण नहीं है केवल राजनीति, अर्थ-व्यवस्था, शासन प्रबन्ध तथा सार्वजनिक निर्माण के कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है। इसमें फ़ीरोज़ शाह ने अपने कारनामों का जो विवरण दिया है उससे पता चलता है कि वह धर्मनिष्ठ सुन्नी मुसलमान के रूप में जीवन व्यतीत करने तथा शासन प्रबन्ध को भी उसी ढाँचे में ढालने का प्रयत्न करता था। हिन्दू मुसलमान तथा इस्लाम के अन्य फ़िरक़ों से उसे कोई सहानुभूति न थी। शरा के विरुद्ध बहुत सी बातों को जो हिन्दुओं के प्रभाव तथा दोनों जातियों के घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण

१- तबक़ाते अकबरी भाग १ पृ० २३६।

मुसलमानों के जीवन का विशेष अंग बन गई थीं और जिनका शरा के कथित पुजारी अन्य बादशाह अन्त तक भी कभी निराकरण न करा सके, रोकने का सुल्तान फ़ीरोज शाह ने भी यथा-सम्भव प्रयत्न किया। यद्यपि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का उद्देश्य इस विवरण से तो यही था कि वह यह दिखाये कि किस प्रकार उसने शरा को उन्नति प्रदान की किन्तु उसके विवरण से उस समय की सामाजिक दशा की भी झाँकी मिल जाती है जबकि हिन्दुस्तान में मुसलमानों ने अपने वातावरण से प्रभावित होकर बहुत सी प्रथाओं को, जो इस्लाम में स्वीकृत न थीं, अङ्गीकार कर लिया था और इस्लाम की अपेक्षा देश के हित के विषय में सोचने लगे थे।

निज़ामुद्दीन अहमद बख़्शी

तबक़ाते अकबरी

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद मुक़ीम अल-हरवी अकबर के समय में बख़्शी था। सर्वप्रथम वह अकबर के राज्यकाल के २९वें वर्ष में गुजरात का बख़्शी नियुक्त हुआ। तत्पश्चात् ३७वें वर्ष में राज्य का बख़्शी नियुक्त हुआ। १००३ हि० (१५९४-९५ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई।

उसने तबक़ाते अकबरी की रचना १००१ हि० (१५९२-९३ ई०) में की किन्तु बाद में १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) का भी हाल लिख दिया। इसमें ग़ज़नवियों के समय से लेकर १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) तक का हिन्दुस्तान का हाल लिखा गया है। देहली के सुल्तानों का हाल उसने बड़े निष्पक्ष भाव से लिखा है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा उसके उत्तराधिकारियों का हाल उसने अधिकांश यहया की तारीख़े मुबारकशाही से लिया है किन्तु कहीं-कहीं बहुत सी बातें, जो तारीख़े मुबारकशाही में स्पष्ट नहीं हैं, स्पष्ट कर दी हैं। फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल के विवरण के सम्बन्ध में उसने लिखा है कि उसने फ़ुतूहाते फ़ीरोज़-शाही को भी अपने समक्ष रखा था किन्तु फ़ीरोज़ शाह के उत्तराधिकारी का हाल तो अधिकांशतः तारीख़े मुबारकशाही पर ही आधारित है।

मीर मुहम्मद मासूम

तारीख़े सिन्ध

मीर मुहम्मद मासूम बिन सैयिद सफ़ाई अल-हुसैनी अल तिरमिज़ी अल भक्करी १००३-४ हि० (१५९५-९६ ई०) में अकबर की सेवा में प्रविष्ट हुआ और उसने २५० का मनसब प्राप्त किया। उसकी मृत्यु १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) के उपरान्त हुई।

उसने तारीख़े सिन्ध अथवा तारीख़े मासूमी में अरबों द्वारा सिन्ध की विजय से लेकर १००८ हि० (१५९९-१६०० ई०) तक का सिन्ध का इतिहास लिखा है। सुल्तान फ़ीरोज शाह की सिन्ध की विजय का हाल उसने बड़े संक्षेप में लिखा है और उससे हमारे सिन्ध के विषय में ज्ञान में कोई अधिक वृद्धि नहीं होती।

हमीद क़लन्दर

खैरुल मजालिस

इस पुस्तक में शेख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहलवी की गोष्ठियों का विवरण है। शेख़ नसीरुद्दीन मुहमूद चिराग़े देहलवी शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) तथा शिष्य थे। उनका जन्म १२६७ ई० में अवध में हुआ था। उन्होंने कुछ समय वहीं आलिमों के अधीन विद्या-अध्ययन किया किन्तु २५ वर्ष की अवस्था में उन्होंने सूफ़ी बनना निश्चय कर लिया। वे ४३ वर्ष की अवस्था तक अवध में साधारण जीवन व्यतीत करते रहे, तदुपरान्त अपनी माता के निधन के पश्चात् देहली जाकर शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य हो गये। वे कुछ समय तक उसके उपरान्त अवध जाते रहे किन्तु अपनी सबसे छोटी बहिन की मृत्यु के उपरान्त वे देहली ही में निवास करने लगे।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के राज्यकाल में उन्हें सुल्तान के साथ उसके अन्तिम सिन्ध के अभियान में भी उसके साथ जाना पड़ा। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की मृत्यु के उपरान्त नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहलवी ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सिंहासनारोहण के निर्णय में भी विशेष भाग लिया और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के साथ देहली वापस आये। उनकी मृत्यु १३५६ ई० में हुई। हमीद क़लन्दर उनका शिष्य था और शेख़ नसीरुद्दीन उसकी रचना-शैली से प्रभावित थे। जब शेख़ नसीरुद्दीन चिराग़े देहलवी से उसने उनकी गोष्ठियों का विवरण तैयार करने की अनुमति माँगी तो शेख़ ने उसे अनुमति दे दी। इस प्रकार उसने अपनी पुस्तक खैरुल मजालिस ७५५ हि० (१३५४ ई०) में प्रारम्भ की और इसमें कुल १०० गोष्ठियों का विवरण संकलित किया। बीच-बीच में वह अपने विवरणों को शेख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहलवी को दिखलाता रहता था और शेख़ का आशीर्वाद प्राप्त करता रहता था। शेख़ नसीरुद्दीन की इन गोष्ठियों को, जिस समय वे लिखी जा रही थीं, उसी समय बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हो गई थी और शेख़ के अन्य शिष्य भी इन विवरणों को उससे प्राप्त करने का प्रयत्न किया करते थे।

इन गोष्ठियों में अधिकांशतः शेख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहलवी के आध्यात्मिक जीवन का विवरण है। गोष्ठियों के समय जब अन्य सूफ़ी उपस्थित होते थे तो शेख़ किसी भी बात से प्रभावित होकर अपने शिष्यों के लाभार्थ, कोई भी वार्ता छेड़ देते थे। इनमें नियमानुसार तसव्वुफ़ के सिद्धान्तों का भी विवरण नहीं मिलता अपितु केवल उन्हीं समस्याओं का समाधान दृष्टिगत होता है जो उस समय सूफ़ियों के समक्ष आती थीं एवं जो कभी-कभी उनसे पूछी जाती थीं। कभी-कभी अन्य सांसारिक व्यक्ति भी इन गोष्ठियों में उपस्थित हो जाते थे और शेख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहलवी उनके तथा उनकी समस्याओं के सम्बन्ध में भी बातें करने लगते थे। इससे उस समय की सामाजिक दशा की भी झाँकी मिल जाती है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में अनाज के सस्ते होने की समस्त इतिहासकारों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है किन्तु खैरुल मजालिस द्वारा ज्ञात होता है कि उस समय सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल को देखते हुए अधिक सम्पन्नता न थी और मूल्य के अधिक तथा चीज़ों के महंगे होने के कारण लोगों को कठिनाइयाँ होती थीं, यहाँ तक कि सूफ़ी लोग भी, जो संसार से पृथक् होकर एकान्त में जीवन व्यतीत करते थे, कुछ न कुछ उस समय के आर्थिक संकट से प्रभावित थे।

ऐनुद्दीन अब्दुल्लाह ऐने माहरू

इन्शाये माहरू

शम्स सिराज अफ़ीफ़ ने तारीखे फ़ीरोज़शाही में ऐनुलमुल्क ऐन माहरू का विस्तार से विवरण दिया है और उसकी बड़ी ही प्रशंसा की है। उसने उसके पत्रों के संकलन का भी उल्लेख किया है। वह लिखता है कि 'ऐनुलमुल्क ने बहुत सी पुस्तकें मुहम्मद शाह तथा फ़ीरोज़-शाह के राज्यकाल में लिखीं। उनमें से एक तरस्सुले ऐनुलमुल्की है जोकि संसार में बड़ी प्रसिद्ध है[1]।' खेद है कि ऐनुलमुल्क की अन्य रचनायें अब पूर्णतः अप्राप्य हैं। इन्शाये माहरू की एक प्रति एशियाटिक सुसायटी बंगाल के हस्तलिखित पुस्तकों के संग्रहालय में मिलती है। इसके अतिरिक्त किसी अन्य प्रति का अभी तक पता नहीं चल सका है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा इसी प्रति तथा सीतामऊ की प्रति के आधार पर, जो सम्भवतः कलकत्ता की प्रति से तैयार की गई होगी, इसे प्रकाशित कर दिया गया है।

इस पुस्तक में १३३ पत्र हैं। प्रारम्भ के १२ पत्र सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की ओर से लिखे गये हैं जिनमें विभिन्न राजाज्ञायें सम्मिलित हैं। एक पत्र मलिकुश्शर्क़ शिहाबुद्दौला की ओर से लिखा गया है। अन्य पत्र उसने अपनी ओर से अपने समकालीन अधिकारियों, अमीरों, विद्वानों तथा धार्मिक व्यक्तियों को लिखे हैं। इस प्रकार की रचनाओं के संकलन, पत्र लिखने की शैली का ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा शैली की शिक्षा देने के लिए तैयार किये जाते थे। अमीर खुसरो ने भी अपने पत्रों का एक बृहत् संकलन, एजाज़े खुसरवी के नाम से तैयार किया था जो प्रकाशित भी हो चुका है। मुग़ल काल में इस प्रकार के संकलन बहुत बड़ी संख्या में हुये थे। इन पत्रों में अधिकांशतः कवितामयी तथा बड़ी ही जटिल भाषा का प्रयोग किया जाता था और विभिन्न प्रकार के उदाहरण, धार्मिक कथाओं, आत्म-विद्या तथा दर्शन शास्त्र सम्बन्धी समस्याओं को भूमिका में लिखा जाता था। यह भूमिकायें विशेष रूप से उस उद्देश्य से सम्बन्धित होती थीं जिनके लिए इस प्रकार के पत्र लिखे जाते थे। ऐनुलमुल्क के पत्रों में भी इसी प्रकार प्रारम्भ में धार्मिक, आत्म-विद्या तथा दर्शन शास्त्र से सम्बन्धित समस्याओं का उल्लेख करके मूल उद्देश्य का विवरण दिया गया है। विभिन्न अधिकारियों तथा सम्मानित व्यक्तियों के नाम होने के कारण इन पत्रों में तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक तथा शासन प्रबन्ध सम्बन्धी बहुत सी समस्याओं का समाधान किया गया है और इस प्रकार यह रचना समकालीन रचनाओं में विशेष महत्व रखती है। बहुत से पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी कुछ पत्रों में मिल जाती है। बहुत से पत्रों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है। इब्ने बत्तूता ने लिखा है कि सुल्तान का आदेश हो जाने के उपरान्त भी किसी व्यक्ति को उस समय तक धन का भुगतान सुगमतापूर्वक न होता था जब तक वह विशेष प्रयत्न न करे। ऐनुलमुल्क के पत्रों से इसकी पुष्टि होती है। उसने घूस का तो उल्लेख नहीं किया है जिसको देने के लिए इब्ने बत्तूता से कहा जाता था किन्तु इन पत्रों से पता चलता है कि उसे देहली के अधिकारियों को किस प्रकार प्रभावित करना पड़ता था। इन पत्रों द्वारा तत्कालीन अधि-कारियों के पारस्परिक सम्बन्धों के ऊपर भी प्रकाश पड़ता है और इस बहुमूल्य ग्रन्थ द्वारा हमारी तत्कालीन ऐतिहासिक रचनाओं में एक विशेष वृद्धि होती है।

---

१ अफ़ीफ़ पृ० ४०७; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २, पृ० १५७।

मुतहर कड़ा

दीवान

मुहम्मद बिहामद खानी ने अपनी तारीख़े मुहम्मदी में मुतहर कड़ा के क़सीदों[1] का कई स्थानों पर उल्लेख किया है। यह क़सीदे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की विजयों तथा अन्य कारनामों से सम्बन्धित हैं। बिहामद खानी ने इन क़सीदों में से कहीं कहीं आवश्यक उद्धरण दिये हैं। तारीखे मुहम्मदी द्वारा ज्ञात होता है कि मुतहर ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के उत्तराधिकारी सुल्तान तुग़लुक़ शाह के विषय में भी कवितायें लिखी थीं। वह लिखता है कि "इस बादशाह के राज्यकाल में बहुत से शरा के आलिम तथा पूज्य धर्मनिष्ठ व्यक्ति एवं कवि हुये हैं। मौलाना मुतहर सब से अधिक विश्वासपात्र था और वह प्रत्येक वर्ष उच्च कोटि के क़सीदे तथा कवितायें प्रस्तुत किया करता था और उसे खिलअतें तथा इनाम प्रदान हुआ करते थे। इस कवि के बहुत से दीवान इस बादशाह की प्रशंसा से भरे हैं।"[2] सुल्तान मुहम्मद की प्रशंसा में भी उसका एक क़सीदा मिलता है।

मुतहर के जीवनकाल के विषय में कोई समकालीन विवरण प्राप्य नहीं है। बाद के लेखकों ने उसकी कविताओं के आधार पर थोड़ा बहुत लिखा है। उसकी कविताओं का संग्रह भी अप्राप्य है। इस समय तक दो प्रतियों का पता चल सका है। एक प्रति लखनऊ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उर्दू तथा फ़ारसी के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर मसऊद हसन के पास है और दूसरी प्रति अलीगढ़ विश्वविद्यालय में है। दोनों प्रतियों में कुछ तो कवितायें मिलती जुलती हैं किन्तु कुछ कवितायें एक दूसरे से भिन्न हैं। सम्भवतः उसकी कविताओं का संग्रह बड़ा बृहत् रहा होगा किन्तु अब केवल बहुत थोड़ी सी कवितायें ही मिलती हैं। इन कविताओं द्वारा यह ज्ञात होता है कि ऐनुलमुल्क तथा हुसामुद्दौला उसके बहुत बड़े आश्रयदाता थे और ऐनुलमुल्क द्वारा उसे घोड़ा तथा एक ग्राम भी प्राप्त हुये थे। उसने अपने एक क़सीदे में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल की समस्त प्रमुख घटनाओं का भी विवरण दिया है। अन्य क़सीदों में सार्वजनिक निर्माण के कार्यों तथा उसके अन्य कारनामों का उल्लेख मिलता है। फ़ीरोज़ शाह के मदरसे का सविस्तार ज्ञान भी उसके एक क़सीदे द्वारा प्राप्त होता है अतः उसके क़सीदों के ऐतिहासिक महत्व की उपेक्षा सम्भव नहीं।

---

१ वह कविता जिसमें किसी की प्रशंसा तथा अन्य किसी घटना का उल्लेख हो।

२ तारीखे मुहम्मदी पृ० ४१७ अ, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० २२८।

विषय सूची

भाग अ

भाग ब

भाग स

परिशिष्ट

भाग अ

मुख्य समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकार

जियाउद्दीन बरनी

(क) तारीखे फ़ीरोजशाही

शम्स सिराज अफ़ीफ़

(ख) तारीखे फ़ीरोजशाही

यह्या सिहरिन्दी

(ग) तारीखे मुबारकशाही

मुहम्मद बिहामद खानी

(घ) तारीखे मुहम्मदी

शरफ़ुद्दीन अली यजदी

(च) जफ़र नामा

तारीख़े फ़ीरोज़शाही

[लेखक—ज़ियाउद्दीन बरनी]

सुल्तानुल अस्र वज़्ज़मान अल वासिक़ ब नुसरतुर्रहमान फ़ीरोज़ शाह अस्सुल्तान

(५२७) सद्रुस्सुदूरे[१] जहाँ सैयिद जलालुद्दीन किरमीनी

शाहज़ादा फ़ीरोज़, बारबक[२]

शाहज़ादा मुबारक ख़ाँ

शाहज़ादा ज़फ़र ख़ाँ

(शाहज़ादा ज़फ़र ख़ाँ के) चार पुत्र जो शाहज़ादों के समान थे

फ़तह ख़ाँ, फ़ीरोज़ ख़ाँ का पुत्र अर्थात् सुल्तान मुहम्मद

मलिक इबराहीम, नायब बारबक[३], सुल्तान का भाई

मुहम्मद ख़ाँ शाहज़ादा

ख़ाने जहाँ, वज़ीरे ममालिक, ततार ख़ाँ (उस पर ईश्वर की दया हो और उसे क्षमा प्राप्त हो)

मलिक क़ुतुबुद्दीन, सुल्तान का भाई

मलिक शरफ़ुलमुल्क

सैफ़ुलमुल्क, अमीर शिकार[४] मैमना[५]

शेर ख़ाँ मलिक महमूद बक

मलिक एतमादुलमुल्क बशीर सुल्तानी

मलिक दहलान, अमीर शिकार मैसरा[६]

दावर मलिक, सुल्तान मुहम्मद का भागिनेय

मलिक अमीर मुअज़्ज़म अमीर अहमद इक़बाल

मलिक कामरान, ततार ख़ाँ का पुत्र

अमीर क़बतग़ा, अमीर मेहान

मलिक निज़ामुलमुल्क, नायब वज़ीरे ममालिक[७]

---

१ सद्रुस्सुदूर : देहली के सुल्तानों के राज्य में धर्म सम्बन्धी (इस्लामी) सभी प्रबन्ध सद्रुस्सुदूर के अधीन होते थे। धर्म आधारित न्याय तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य की देख रेख करने के लिए उसके अधीन सद्र होते थे। प्रदेशों के क़ाज़ी सद्र का कार्य भी करते थे।

२ बारबक : दरबार सम्बन्धी समस्त कार्यों की देख रेख करने वाले अधिकारियों का अफ़सर बारबक कहलाता था। अमीरों तथा पदाधिकारियों के खड़े होने और दरबार की शोभा स्थापित रखने का कार्य उसी का कर्त्तव्य होता था।

३ बारबक के सहायक नायब बारबक कहलाते थे।

४ अमीर शिकार : बादशाह के शिकार का प्रबन्ध करने वालों का मुख्य अधिकारी।

५ मैमना : दाहिनी ओर अथवा सेना की दाहिनी पंक्ति।

६ मैसरा : बाईं ओर अथवा सेना की बाईं पंक्ति।

७ नायब वज़ीरे ममालिक : वज़ीरे ममालिक का सहायक। वज़ीर अथवा वज़ीरे ममालिक प्रधान मंत्री को कहते थे। राज्य का शासन प्रबन्ध तथा वित्त विभाग उसी के अधीन होता था।

मलिक मुईनुलमुल्क ऐनुद्दीन अमीर, नायब[१] सुल्तान तथा नायब आरिज़े बन्देगान[२]
अमीर हसन पुत्र अमीर अहमद इक़बाल, अनीस सुल्तानी
मलिक क़ुबूल क़ुरान ख्वाँ[३], अमीर मजलिस[४]
मलिक क़मर, सर चत्रदारे[५] सुल्तान
मलिक शर्क़, सर सिलाहदार[६] मैसरा
मलिक ताज इख्तियार, सर सिलाहदार मैमना
ज़फ़र खाँ, नायब वज़ीर गुजरात
मलिक फ़खरुद्दीन दौलतयार, सर जानदार[७] मैसरा
मलिक मुहम्मद दिमलान, सर जानदार मैमना
मलिक बद्रुद्दीन पुत्र मलिक दौलतशाह, आखुरबक[८]
मलिक फ़खरुद्दीन, अरामनये जंग
मलिक जलालुद्दीन दोहती, क़ौरबक
अलप खाँ पुत्र स्वर्गीय क़ुतलुग़ खाँ
मलिक बुरहानुद्दीन क़ाज़िये शह, खास हाजिब[९], दीबालपुर का मुक़्ता[१०]
मलिक सैयिदुल हुज्जाब[११], ख्वाजा मारूफ़
(५२८) मलिक खालिद, नायब सैयिदुल हुज्जाब
सैयिद रसूलदार[१२], स्वर्गीय सैयिद मुइज्जुद्दीन

---

१ नायब : सुल्तान की ओर से किसी प्रान्त का मुख्य अधिकारी।

२ नायब आरिज़े बन्देगान : दासों की भर्ती तथा उनका निरीक्षण करने वाला अधिकारी।

३ क़ुरान ख्वाँ : क़ुरान पढ़ने वाला।

४ अमीर मजलिस : सुल्तान की सभाओं तथा गोष्ठियों का प्रबंध करने वालों का अफ़सर।

५ सर चत्रदार : सुल्तान के चत्र का प्रबन्ध करने वाले अधिकारियों का अफ़सर।

६ सर सिलाहदार : सुल्तान के अङ्गरक्षकों का अधिकारी। जब सुल्तान दरबार करता अथवा कहीं बाहर जाता तो वे उसके साथ-साथ रहते थे। दाहिनी तथा बाईं ओर के लिए पृथक् सर सिलाहदार होते थे।

७ सर जानदार : सुल्तान के अङ्गरक्षकों का अफ़सर। कभी-कभी दो सर जानदार नियुक्त होते थे, एक दाहिनी ओर का तथा दूसरा बाईं ओर का।

८ आखुरबक : शाही घोड़ों की देख भाल करने वाला अधिकारी। सेना के दाहिनी तथा बाईं ओर के घोड़ों की देख भाल के लिए पृथक् अधिकारी हुआ करते थे।

९ खास हाजिब : हाजिबों का अधिकारी। बारबक के अधीन हाजिब होते थे। वे दरबार में सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य में खड़े होते थे और उनकी अनुमति बिना सुल्तान तक कोई भी न पहुँच सकता था। समस्त प्रार्थना-पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजिबों द्वारा ही सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत हो सकते थे। वे सुल्तान का संदेश भी ले जाते थे। वे बड़े कुशल सैनिक होते थे और युद्ध संचालन भी कभी कभी उनके द्वारा होता था।

१० मुक़्ता : अक़्ता का स्वामी। अक़्ता वह भूमि होती थी जो सेना के सरदारों को सेना रखने और उसका उचित प्रबन्ध करने के लिए दी जाती थी।

११ सैयिदुल हुज्जाब : खास हाजिब अथवा अमीर हाजिब को सैयिदुल हुज्जाब भी कहते थे।

१२ रसूलदार : हाजिबुल इरसाल अथवा रसूलदार देश के बाहर के राज्यों से सम्पर्क स्थापित रखता था। वह एक प्रकार से राजदूतों का अधिकारी होता था।

मलिक इज्जुद्दीन, हाजी दबीर[1]
मलिक इब्राहीम, ततार खाँ का पुत्र जो विवाह के उपरान्त मुल्तान का मुक्ता हो गया।
मलिक ऐनुलमुल्क, नायब मुल्तान
मलिक दाऊद दबीर, जालौर का वाली[2]

दास जिन्हें उच्च श्रेणी प्राप्त हुई :

मलिक शाहीन
मलिक क़बूल
तोराबाँद आदि

---

१ दबीर : दीवाने इन्शा (शाही पत्र व्यवहार के विभाग) का एक अधिकारी।
२ वाली : प्रान्त का सब से बड़ा अधिकारी।

(५२९) समस्त प्रशंसा ईश्वर के लिये है जो समस्त संसार का पोषक है। उसके रसूल मुहम्मद तथा उसकी समस्त सन्तान पर बहुत-बहुत दुरूद और सलाम।[१]

मुसलमानों का शुभचिंतक जिया बरनी इस प्रकार निवेदन करता है कि जब २४ मुहर्रम ७५२ हि० (२३ मार्च १३५१ ई०) में अपने समय तथा युग का सुल्तान ईश्वर का विशेष कृपा पात्र, अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज शाह सुल्तान (अल्लाह उसके राज्य तथा देश को सर्वदा वर्त्तमान रखे और उसके आदेशों तथा गौरव को उन्नति प्राप्त होती रहे) सर्व सम्मति,[२] अधिकार[३] तथा उत्तराधिकारी[४] नियुक्त होने के कारण, थट्टा के क्षेत्र में सिन्ध नदी के तट पर सेना की वापसी के समय सिंहासनारूढ़ हुआ[५] तो इसके फलस्वरूप शरीरों से निकले हुए प्राण मनुष्यों के सीने में लौट आये और सेना तथा अन्य लोगों की अशान्ति तथा असन्तोष का परिवर्तन शान्ति एवं सन्तोष में हुआ। सर्व साधारण को मुग़लों के आतंक तथा थट्टा के तस्करों के भय से मुक्ति प्राप्त हो गई। लोग ग्राम-वासियों[६] के भय से मुक्त होकर शान्ति पूर्वक समय तथा युग के बादशाह की पताकाओं के पीछे चल पड़े।

इस तारीखे फ़ीरोजशाही के संकलन-कर्त्ता ने युग तथा समय के सुल्तान फ़ीरोज शाह (अल्लाह उसके राज्य तथा शासन को सर्वदा वर्त्तमान रखे) के सिंहासनारोहण से लेकर छः वर्ष तक के राज्य का हाल तथा इतिहास, उसके शासन प्रबन्ध एवं विजय, उसके उत्कृष्ट गुण एवं सच्चरित्रता तथा जो कुछ भी देखा है, का हाल, ११ अध्याय में (५३०) लिखा है। यदि मैं भविष्य में जीवित रहा तो मैं इन अध्यायों के अतिरिक्त अपने निरीक्षण के आधार पर ९० अन्य अध्याय लिखूँगा जिससे इस इतिहास में सुल्तान फ़ीरोज-शाह का इतिहास एवं उसके गुणों का उल्लेख १०१ अध्यायों में हो जाय। यदि यह सम्भव न हुआ तो ईश्वर जिसे भी इस कार्य की शक्ति प्रदान करे वही सुल्तान फ़ीरोज शाह का इतिहास, उसके शासन प्रबन्ध तथा गुणों का हाल, एवं उसके अत्यधिक दान पुण्य की चर्चा लिपिबद्ध करे।

११ अध्यायों की सूची

---

१ प्रशंसा एवं प्रार्थना के वाक्य।

२ इजतिमा।

३ इस्तेहक़ाक़।

४ इस्तेख़लाफ़।

५ नियमानुसार इस्लामी राज्य इजतिमा, इस्तेहक़ाक़ अथवा इस्तेख़लाफ़, किसी भी साधन से प्राप्त हो सकता था। बरनी का तात्पर्य यह है कि सुल्तान फ़ीरोज शाह को हर प्रकार से राज्य उचित रूप से प्राप्त हुआ था।

६ पुस्तक में रहगराँ है किन्तु इसे देहगराँ होना चाहिये। अन्य स्थानों पर देहगराँ है।

अध्याय ४—अत्यधिक इदरार[1] तथा इनाम[2] जो इस शुभ राज्यकाल में प्रदत्त हुये।
अध्याय ५—शुभ राज्यकाल में भवन निर्माण।
अध्याय ६—इस शुभ राज्यकाल में अत्यधिक नहरों का खुदवाया जाना।
अध्याय ७—सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के शुभ राज्यकाल में राज्य व्यवस्था के नियमों की दृढ़ता।
अध्याय ८—लखनौती विजय का हाल।
अध्याय ९—हज़रत अमीरुल मोमिनीन के पास से संसार के शरण-दाता एवं स्वामी के पास दो बार मनशूर (आज्ञा-पत्र) एवं खिलअत प्राप्त होना।
अध्याय १०—संसार के स्वामी की शिकार से अत्यधिक रुचि।
(५३१) अध्याय ११—सुल्तान फ़ीरोज़शाह के शुभ राज्यकाल में चंगेज़खानी मुग़लों के आक्रमण के भय का अन्त

अध्याय १

समय तथा युग के बादशाह फ़ीरोज़ शाह सुल्तान का सिंहासनारोहण और मुसलमानों तथा उनके परिवार का मुग़लों के उत्पात एवं थट्टा के उपद्रवियों से मुक्त होना।

यह सिंहासनारोहण हिन्द तथा सिन्ध के विश्वासपात्रों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं दरबार के निकटवर्त्तियों की सहमति तथा अधिकार से हुआ। स्वर्गवासी सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह ने अपने जीवनकाल ही में कुछ वर्ष पूर्व अपने दरबार के विश्वास-पात्रों में से तीन व्यक्तियों को चुन लिया था और इन तीनों का सम्मान अपने समस्त मलिकों, अमीरों, विश्वासपात्रों तथा सहायकों की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ा दिया था। वह उन्हें अपना वली-अहद तथा राज्य का अधिकारी समझता था। मिस्र के खलीफ़ा अमीरुल मोमिनीन के प्रार्थना पत्रों में तीनों की चर्चा की थी और इन तीनों से खलीफ़ा की सेवा में पृथक् प्रार्थना-पत्र लिखवाये थे। उनमें से एक मलिक क़ुबूल खलीफ़ती था जिसका निधन सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के जीवनकाल ही में हो गया था। दूसरा अहमद अयाज़ था। उसके विषय में मैंने तथा दरबार के अनेक विश्वास-पात्रों ने सुल्तान मुहम्मद शाह से सुना था कि 'अहमद अयाज़ बेकार हो चुका है। उसकी अवस्था ७० से अधिक हो चुकी है और ८० के निकट पहुँच रही है। वह अब न चलने फिरने में समर्थ है और न अश्वारोहण ही कर सकता है। उसके बेकार हो जाने से दीवाने विज़ारत[3] के कार्य में विघ्न पड़ रहा है। अब उसकी अवस्था राज्य का कार्य करने योग्य नहीं। यदि वह एकान्तवासी हो जाय और शेख निज़ामुद्दीन[4] की खानक़ाह में निवास करने लगे तो लोगों में उसका मान सुरक्षित रह (५३२) जायगा। उसके मुँह पर यह बात कहने में मुझे लज्जा आती है। यदि वही इस विषय में निवेदन करे तो अच्छा होगा। मैं दीवाने विज़ारत किसी ऐसे के अधीन कर दूंगा जिससे दीवान[5] के कार्य में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े।'

१ विद्वानों तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली सहायता।
२ वह भूमि जो किसी से प्रसन्न होकर अथवा पुरस्कार के रूप में प्रदान की जाती थी।
३ दीवाने विज़ारत : प्रधान मंत्री का विभाग दीवाने विज़ारत कहलाता था।
४ शेख निज़ामुद्दीन औलिया देहली के बहुत बड़े सूफ़ी थे। उनका निधन १३२५ ई० में हुआ।
५ दीवान : विभाग; वित्त विभाग को कभी कभी केवल दीवान लिखा जाता था।

सुल्तान मुहम्मद का तीसरा विश्वास-पात्र समय तथा युग का बादशाह फ़ीरोज़ शाह सुल्तान (अल्लाह उसके राज्य तथा शासन को सर्वदा वर्त्तमान रक्खे) था जो सुल्तान का चचेरा भाई था। सुल्तान मुहम्मद ने उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। जिस समय सुल्तान सेना में रुग्ण हो गया और सुल्तान का रोग बहुत बढ़ गया तो संसार के स्वामी (फ़ीरोज़) ने सुल्तान मुहम्मद का बड़ा उपचार किया और अपने स्वामी की कृपाओं, सद्व्यवहारों तथा उदारता का ऋण चुकाया। सुल्तान मुहम्मद सुल्तान फ़ीरोज़ से बड़ा संतुष्ट था। जो कृपा-दृष्टि वह सर्वदा से संसार के स्वामी के प्रति रखता था, उसमें उसने सहस्रशः वृद्धि करदी। संसार के स्वामी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। जब सुल्तान का अन्तिम समय निकट आ गया तो उसने राज्य से सम्बन्धित समस्त वसीयतें[1] संसार के स्वामी से कीं और उसे विशेष रूप से अपना वलीअहद बनाया।

जिस दिन सिन्ध नदी के किनारे थट्टा के निकट सुल्तान मुहम्मद स्वर्गवासी हुआ तो सेना में हाहाकार मच गया और सम्भव था कि सेना वाले तथा सर्वसाधारण एक दूसरे से भिड़ जायँ और ग्रामवासी, लोगों की सम्पत्ति का विनाश करके लोगों की स्त्रियों तथा दासियों को छीन ले जायँ। उस दिन सेना उसी स्थान पर जहाँ सुल्तान का निधन हुआ ठहरी रही। नये-नये आये हुये मुग़लों के आक्रमण तथा थट्टा निवासियों के भय से, जो सुल्तान की मृत्यु के समाचार सुनकर बड़े शक्तिशाली तथा ढीठ हो गये थे, और सेना के ग्रामवासियों के डर से, जो सेना वालों की धन-सम्पत्ति, घोड़ों तथा अन्य लोगों की स्त्रियों और बालकों के विनाश की योजनायें बना रहे थे तथा उपद्रव मचाने की तैयारी कर रहे थे, सेना वाले व्यग्र एवं व्याकुल थे। उस भय तथा हाहाकार में दो तीन हाथी दूसरे तट से लाते समय डूब गये। (५२३) उपद्रव, अशांति एवं लूटमार तथा अपने परिवारों के विनाश के भय से दो तीन दिन तक भोजन तथा जल किसी के कंठ के नीचे भलीभाँति न उतरा।

सुल्तान के निधन, तथा सेना के लोगों की निस्सहाय अवस्था एवं अव्यवस्था को देख कर अमीर क़रग़न के भेजे हुये मुग़ल सैनिक छापा मारने की तैयारियाँ करने लगे और इस विषय में परस्पर परामर्श करने लगे। संसार के स्वामी ने सिंहासनारूढ़ होने के पूर्व, प्रतिष्ठित मलिकों के परामर्श से सुल्तान मुहम्मद की सेना की सहायतार्थ अमीर क़रग़न के भेजे हुये सवारों, अमीराने सदा[2], अमीराने हज़ारा[3] तथा उल्तून बहादुर को उनकी श्रेणी के अनुसार खिलअत तथा इनाम प्रदान किये। उन्हें लौट जाने की भी आज्ञा दे दी। इस भय से कि मुग़ल कहीं सेना में उपद्रव न मचा दें, उसने उन्हें आदेश दिया कि वे शाही सेना के प्रस्थान करने के पूर्व सेना से पृथक् होकर दूर चले जायँ, वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र अपनी-अपनी विलायत[4] को लौट जायँ।

मुग़ल, सेना से पृथक् होकर दूर निकल गये और वहाँ पड़ाव डाला। ऐसी अवस्था में जब कि लोग लूटमार के भय से आतंकित थे, तुर्माशीरीन के जामाता नौरोज़ कुरगुन ने, जो वर्षों तक सुल्तान मुहम्मद के आश्रय में इनाम एवं सम्मान प्राप्त कर चुका था, कृतघ्नता प्रकट की। वह इस्लामी सेना से अपने सहायकों एवं सम्बन्धियों के साथ भाग कर मुग़लों के पास

१ वसीयत : वह आदेश जो कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु के समय लोगों को देता है।

२ १०० सैनिकों के अधिकारी।

३ १००० सैनिकों के अधिकारी।

४ विलायत : साधारणतया प्रान्त को विलायत कहते थे। विभिन्न स्थानों पर इसका अर्थ भिन्न भिन्न है। यहाँ इसका अर्थ राज्य अथवा देश है।

पहुँचा और उपद्रव खड़ा कर दिया। उसने उन लोगों को बहका कर कहा कि "बादशाह की मृत्यु के कारण उसकी सेना निस्सहाय हो गई है। सभी लोग व्याकुल हैं। देहली से दूर होने के कारण छोटे बड़े अश्वारोही तथा पदाती किसी को भी अपने हाथ पैर की सुध बुध नहीं। दो दिन हो गये किन्तु कोई भी सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ जो लोगों को संगठित करता। मुझे उनके विषय में पूर्ण ज्ञान है। मैं तुम्हारा सहायक हो गया हूँ। कल सेना का प्रस्थान होगा। चूंकि कोई भी बादशाह सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ है, प्रस्थान के समय प्रत्येक (५३४) बिना किसी संगठन के अलग-अलग प्रस्थान करेगा। सेना के प्रस्थान करते ही हम लोग उन पर टूट पड़ें। राजकोष तथा स्त्रियों को लूट लें। खुदावन्दजादा, सुल्तान मुहम्मद की बड़ी बहिन, मलिकों की स्त्रियों के साथ एकत्र होकर यात्रा करेंगी। यदि सम्भव हो तो उन्हें भी हानि पहुँचाई जाय।" कृतघ्नी तथा काफ़िर बच्चा नौरोज़ कुरगुन उन मुग़लों से मिलकर उन लोगों को नाना प्रकार से बहकाने लगा। उसने उन लोगों से कहा कि "इतने परेशान तथा व्याकुल लोगों, उनके परिवार एवं अत्यधिक धन सम्पत्ति को पुनः हम इस दशा में कदापि न पावेंगे कि उनका बादशाह उनके सिर से उठ चुका हो, और वे अपनी राजधानी से हजारों कोस दूर जंगल में पड़े हों।" उन पृथक् पड़े हुये मुग़लों ने उपद्रवी नौरोज़ कुरगुन की बातों पर विश्वास कर लिया और सभी ने संगठित होकर छापा मारना निश्चित कर लिया।

सुल्तान मुहम्मद के निधन के तीन दिन पश्चात् शाही सेना ने थट्टा से चौदह कोस की दूरी से (जहाँ उसका शिविर था) सिविस्तान की ओर लौटना प्रारम्भ कर दिया। सेना के सभी समूहों ने बिना किसी संगठन तथा नेतृत्व एवं योजना के प्रस्थान करना प्रारम्भ कर दिया। मार्ग में वे बिना किसी क्रम के चले जाते थे। किसी को किसी की चिन्ता न थी और न कोई एक दूसरे की बात सुनता था। वे असावधान कारवान वालों की भाँति सिविस्तान का मार्ग पकड़े हुये चले जा रहे थे। इस प्रकार वे एक दो कोस ही पड़ाव से आगे बढ़े थे, कि मुग़ल लूट मार के लिये तैयार होकर सामने आ गये। थट्टा के उपद्रवी पीछे से बढ़े। प्रत्येक दिशा में हाहाकार तथा चीत्कार होने लगा। मुग़लों ने लूट मार प्रारम्भ करदी। जो स्त्रियाँ, दासियाँ, घोड़े, मवेशी, सवार तथा धन सम्पत्ति सेना के आगे थी लुट गयी। वे अन्तःपुर पर भी हाथ साफ़ करने वाले थे तथा ऊँटों से राजकोष उतार कर ले जाने वाले ही थे। सेना में जो ग्रामवासी थे वे भी उपद्रव की प्रतीक्षा कर रहे थे और उन्होंने भी हाथ (५३५) पैर फैला दिये। जो सामग्री दाहिने बायें अथवा जाती हुई मिली, लूट ली। पीछे से थट्टा के उपद्रवी सेना के पिछले भाग पर टूट पड़े। सेना वाले सवार तथा प्यादे स्त्री पुरुष इधर उधर खड़े के खड़े रह गये। प्रस्थान के समय सेना पर इतनी बड़ी दुर्घटना आ गई कि यदि वे आगे बढ़ते थे तो मुग़लों के चंगुल में फँसते थे और यदि पीछे हटते थे तो थट्टा के उत्पाती उनका विनाश कर देते थे। जैसी कि कहावत है लोग "अमीनुल्लाह[1], अमीनुल्लाह" कहते हुये पहले पड़ाव पर पहुँचे। जिन लोगों ने स्त्रियों, दासियों तथा सामान को आगे भेज दिया था, उनका सब कुछ नष्ट हो गया। सेना में न तो कोई व्यवस्था थी और न रक्षा का प्रबन्ध। इस प्रकार वे नदी तट पर उतरे। सभी लोगों ने अपने प्राणों, धन-सम्पत्ति तथा परिवार से हाथ धो लिये थे। उस रात्रि में लोगों को व्याकुलता तथा चिन्ता के कारण रात्रि में निद्रा नहीं आई। वे उद्विग्न तथा व्याकुल अपनी आँखों को आकाश की ओर लगाये हुए थे।

दूसरे दिन भी पहले दिन की भाँति जबकि एक ओर से मुग़ल आक्रमण कर रहे थे और

१ ईश्वर ही वास्तविक रक्षक है।

पीछे से थट्टा के उपद्रवी लूट मार कर रहे थे, लोग किसी न किसी युक्ति तथा उपाय से दूसरे पड़ाव पर पहुँचे। नदी तट पर पड़ाव किया। चूंकि सेना की परेशानी सीमा से अधिक हो गई थी और लोगों के प्राणों तथा धन-सम्पत्ति का विनाश सभी के समक्ष था और सभी के स्त्री तथा बालक नष्ट होते दृष्टिगोचर हो रहे थे, अतः मख़दूमज़ादा अब्बासी,[1] शेखुश्शुयूख़ मिस्री[2] शेख़ नसीरुद्दीन महमूद अवधी[3], आलिम, मशायख़ (सूफ़ी), मलिक,[4] अमीर तथा प्रत्येक समूह के प्रतिष्ठित एवं गण्यमान्य व्यक्ति और नेता एकत्र हुये। वे सभी सहमत होकर शाही शिविर के द्वार पर पहुँचे और सभी ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से निवेदन किया कि "आप सुल्तान मुहम्मद के वलीअहद और उत्तराधिकारी हैं। आप सुल्तान तुग़लुक़ शाह के भाई के पुत्र हैं। सुल्तान मुहम्मद शाह के कोई पुत्र न था। अब आपके समान सेना तथा शहर (देहली) में कोई अन्य ऐसा नहीं है जो बादशाही के लिये आप से अधिक उपयुक्त तथा (५३६) योग्य हो। ईश्वर के लिये इतने सब व्याकुल लोगों की पुकार सुनिये और सिंहासनारूढ़ हो जाइये। हमें और कई हज़ार मनुष्यों को जो व्याकुल हैं तथा समस्त सेना वालों के स्त्रियों तथा बालकों को मुग़लों के हाथ से पुनः मोल ले लीजिये। दो लाख मनुष्यों के आशीर्वाद के पात्र बन जाइये।"

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने बहुत क्षमा माँगी किन्तु राज्य तथा धर्म के प्रतिष्ठित लोगों ने कोई बात स्वीकार न की। सभी आलिमों, मशायख़[5], मलिकों, अमीरों, साधारण तथा विशेष व्यक्तियों, सेना वालों, बाज़ारियों, छोटे बड़े लोगों, मुसलमानों, हिन्दुओं, सवारों और प्यादों, स्त्रियों और बालकों, प्रौढ़ तथा अप्रौढ़ ने सर्व सम्मति से कहा कि 'राजधानी देहली तथा सेना के शिविर में फ़ीरोज़ शाह के अतिरिक्त कोई भी नृपत्व के योग्य नहीं। यदि वह आज सिंहासनारूढ़ नहीं होता और मुग़लों को यह ज्ञात नहीं होता कि वह बादशाह हो गया है तो कल वे तथा थट्टा निवासी हम में से किसी को जीवित न छोड़ेंगे।'

२४ मुहर्रम ७५२ हि० (२३ मार्च १३५१ ई०) को समय तथा युग का सुल्तान फ़ीरोज़ शाह साधारण तथा विशेष व्यक्तियों की सहमति से सिंहासनारूढ़ हुआ। सिंहासनारोहण के दूसरे दिन संसार के स्वामी ने इस सुव्यवस्था से प्रस्थान किया और सेना को इतने अच्छे ढंग से आगे बढ़ाया कि जिस ओर से भी मुग़ल सवार आक्रमण करते उनकी हत्या कर दी जाती अथवा वे बन्दी बना लिये जाते। उसी दिन संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह ने कुछ अमीरों को सेना के पिछले भाग पर नियुक्त किया। उन अमीरों ने थट्टा के उत्पातियों में से कुछ लोगों का जो सेना के पृष्ठ भाग में लूट मार कर रहे थे, वध करा दिया। उस हत्या के भय से थट्टा के उत्पातियों ने पीछा करना छोड़ दिया और लौट गये।

---

१ उसके विषय में तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० ६१, १७४, १९६, १९७, १९८, १९९, ३५६ देखिये। ज़ियाउद्दीन बरनी तथा इब्ने बत्तूता ने उसका सविस्तार उल्लेख किया है।

२ मिस्र का शेखुश्शुयूख़। वह अब्बासी ख़लीफ़ा की ओर से मिस्र से आया था।

३ शेख़ नसीरुद्दीन महमूद शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य तथा ख़लीफ़ा थे। उनका निधन १३५६ ई० में हुआ। वे चिराग़े देहली भी कहलाते थे।

४ सवारों के एक दस्ते का अफ़सर सरख़ेल कहलाता था। सरख़ेलों का अफ़सर सिपहसालार कहलाता था। सिपहसालारों का अफ़सर अमीर कहलाता था। अमीरों का अफ़सर मलिक कहलाता था। मलिकों का अफ़सर ख़ान कहलाता था। (बरनी तारीखे फ़ीरोज़शाही पृ० १४५, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २२५)

५ सूफ़ी।

सिंहासनारोहण के तीसरे दिन सुल्तान फ़ीरोज शाह ने कुछ अमीरों को आदेश दिया (५३७) कि वे मुग़लों पर आक्रमण करके कुछ अमीराने सदा तथा अमीराने हज़ारा को जीवित ही बन्दी बना कर राजसिंहासन के समक्ष उपस्थित करें। जिस दिन मुग़लों की पराजय हुई, उसी दिन से मुग़लों का उत्पात समाप्त हो गया। वे शाही सेना से ३०-४० कोस की दूरी पर निकल गये और अपने राज्य की ओर लौट गये। थट्टा के उपद्रवी भी परास्त होकर वापस चले गये। फ़ीरोज शाह के भाग्य के आशीर्वाद से लोग, मुग़लों के लौट पड़ने के कारण तथा थट्टा के उपद्रवियों की वजह से जिन कष्टों में थे, उनसे मुक्त हो गये। इस प्रकार सुल्तान ने अपने सिंहासनारोहण के प्रथम दिन से ही सेना वालों तथा अन्य लोगों को अनुगृहीत बना लिया। सभी सेना वाले, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्ति, छोटे-बड़े, साधारण तथा विशेष लोग उपकृत तथा कृतज्ञ हो गये।

जब मुग़लों तथा थट्टा निवासियों में उत्पात मचाने की शक्ति न रही तो वे पीछा करना त्याग कर लौट गये और समय तथा युग का बादशाह निरन्तर कूच करता हुआ सिविस्तान पहुँचा। अश्वों तथा सैनिकों के विश्राम हेतु कुछ दिन वहाँ ठहरा। सेना के सभी व्यक्तियों का उपकार किया। मलिकों, अमीरों, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को खिलअतें प्रदान कीं। आलिमों तथा सूफ़ियों को फ़ुतूहात[1] बाँटे; दरिद्रों को न्योछावर प्रदान किये; हशम[2] को विशेष इनाम दिये। फ़ीरोज शाह के समृद्धशाली भाग्य से सेना में जान आ गई। घोड़े खच्चर चरागाह की घास से जो एक बड़ी प्रसिद्ध चरागाह है एक सप्ताह में मोटे हो गये। इस्लाम के बादशाह ने सिविस्तान निवासियों को भी सम्मानित किया। उनके अदरार, इनाम, ग्राम तथा भूमि जोकि ज़ब्त हो गई थीं और खालसे[3] में सम्मिलित करली गई थीं, प्राचीन सुल्तानों के आदेशानुसार उन्हें पुनः लौटा दी गईं। जो कुछ उनके पिता तथा पितामहों को प्राप्त था वही पुत्रों तथा पौत्रों को प्रदान कर दिया गया। नये अदरार तथा वज़ीफ़े पिछले की अपेक्षा बढ़ाकर दिये गये। संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह फ़ीरोज शाह ने सिविस्तान के बुज़ुर्गों के मज़ारों के दर्शन किये। भिखारियों, यात्रियों, दरिद्रों तथा निर्धनों को (५३८) न्योछावर वितरण किये। जो लोग हेरात,[4] सीस्तान, अदन, मिस्र, क़ुसदार[5] तथा अन्य स्थानों से आकर सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह के दरबार में उत्तर की प्रतीक्षा में पड़े थे, उन्हें संसार के स्वामी ने उनकी श्रेणी के अनुसार व्यय देकर उनके देशों को वापस भेज दिया।

दूसरा अध्याय

फ़ीरोज शाह की शाही पताकाओं का सिविस्तान से प्रस्थान, मार्ग में देहली तक के प्रदेशों एवं क़स्बों के आलिमों, सूफ़ियों तथा सहायता के पात्रों पर शाही कृपादृष्टि, अहमद अयाज़ के विद्रोह के समाचार की

१ फ़ुतूह : वह उपहार जो आलिमों तथा सूफ़ियों को दिया जाता है।

२ सेना, विशेष रूप से केन्द्रीय सेना।

३ खालसा : वह भूमि जिसका प्रबन्ध केन्द्रीय सरकार की ओर से किया जाता था। ऐसा ज्ञात होता है कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के राज्यकाल में देश की भूमि का बहुत बड़ा भाग ख़ालसे में सम्मिलित कर लिया गया था।

४ पुस्तक में हरीवर है।

५ लगभग आधुनिक बिलोचिस्तान।

प्राप्ति तथा उसके उपद्रव का शान्त होना; शहर (देहली) में शाही पताकाओं का पहुंचना, राजधानी में सिंहासनारूढ़ होना तथा राज्य व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध को पुनः दृढ़ता प्राप्त होना।

हर प्रकार से शान्ति तथा सन्तोष प्राप्त करने के उपरान्त संसार के स्वामी ने सिविस्तान से प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा के उपरान्त वह भक्कर पहुँचा। भक्कर निवासियों पर भी उसने हर प्रकार से कृपादृष्टि प्रदर्शित की। भक्कर के बुज़ुर्गों के रौज़ों के दर्शन किये। भक्कर निवासियों के पिछले अदरार तथा इनाम फिर से निश्चित किये। भक्कर निवासियों को वर्षों के उपरान्त शान्ति प्राप्त हुई। भक्कर से ईश्वर की शरण में प्रस्थान करके वह उच्च पहुँचा। उच्च वालों को भी नाना प्रकार से उपकृत किया। उनकी जीविका-वृत्ति, अदरार, भूमि तथा वज़ीफ़े (वृत्ति) जो वर्षों पूर्व अपहृत हो चुके थे, उन्हें पुनः प्रदान किये। उच्च निवासियों की प्रार्थनायें स्वीकार कीं। जिन लोगों को वृत्ति प्राप्त न थी अथवा जीविका का कोई साधन न था उन्हें वृत्ति प्रदान की गई। उच्च निवासी (५३९) शेख़ जमालुद्दीन की ख़ानक़ाह को, जो लगभग नष्ट हो चुकी थी, पुनः आबाद किया। उनके ग्राम तथा उद्यान, जो ख़ालसे में सम्मिलित कर लिये गये थे, शेख़ जमालुद्दीन के पुत्रों को प्रदान कर दिये। उन्हें इनाम प्रदान किये। उस वंश को जिसका पतन हो चुका था पुनः उन्नति प्रदान की। जिस समय संसार का स्वामी भक्कर से उच्च की ओर प्रस्थान कर रहा था, उस बीच में मुल्तान के आलिम, सूफ़ी, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्ति, मुक़द्दम[1], ज़मींदार तथा साधारण लोग शाही शिविर में आते और उनके प्रार्थना पत्र स्वीकार होते थे। उनको जो भूमि पहले प्राप्त थी, वह पुनः प्रदान होती और उसके सम्बन्ध में फ़रमान लिखे जाते, और वे बादशाह के जीवन की ईश्वर से शुभ कामनायें करते हुये, पूर्ण रूप से सन्तुष्ट लौटते थे।

जब संसार के स्वामी ने विजयी सेना लेकर भक्कर से प्रस्थान किया तो उसे मार्ग में सूचना मिली कि अहमद अयाज़ ने देहली में विद्रोह कर दिया है; लोगों को धोखा देने के लिये छः सात वर्ष के एक विजन्मे बालक को सुल्तान मुहम्मद का पुत्र प्रसिद्ध करके उस अधम को कठपुतली की भाँति सिंहासनारूढ़ कर दिया है; शहर (देहली) के निवासी बड़े कष्ट में हैं; केवल कुछ ही दिन के लिये अपने तथा अपने कुटुम्ब के प्राण संकट में डाल लिये हैं। मलिकों, प्रतिष्ठित एवं गण्यमान्य व्यक्तियों को अहमद अयाज़ के विद्रोह पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें उस पर विश्वास भी न होता था और वे उसे स्वीकार भी न करते थे। वे आपस में कहते थे कि यदि सुल्तान मुहम्मद के निधन के उपरान्त देहली का राज्य किसी अपहरणकर्त्ता अथवा ऐसे व्यक्ति को प्राप्त हो जाता जिसका कोई अधिकार भी न होता तो भी अहमद अयाज़ के लिये, इतना बड़ा पद प्राप्त करते हुये एवं वृद्धावस्था के कारण, यह उचित न था कि वह विद्रोह करता। ऐसी दशा में वह किस प्रकार विद्रोह कर सकता है जब कि सुल्तान फ़ीरोज़ राज्य का उत्तराधिकारी तथा उसके योग्य है। वह सुल्तान मुहम्मद का वलीअहद, सुल्तान तुग़लुक़ शाह का भतीजा तथा सुल्तान मुहम्मद के चाचा (५४०) का पुत्र है। वीरता, पौरुष तथा शौर्य में वह रुस्तम[2] तथा इसफ़न्दियार[3] है। वह

१ मुक़द्दम: गाँव का मुखिया।

२ ईरान का एक पौराणिक वीर पहलवान।

३ गुश्तास्प का पुत्र, ईरान के क्यानी वंश का पाँचवाँ बादशाह। रुस्तम के समान वह भी अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध था।

अकेला ही सेना पर टूट पड़ता है और एक ही आक्रमण में संसार को उलट-पुलट डालता है। अहमद अयाज़ किस प्रकार ऐसे अनुभवी सुल्तान से जिसे संग्राम में सेना की भी आवश्यकता नहीं युद्ध कर सकता है। सुल्तान फ़ीरोज शाह युद्ध, संग्राम, तथा पूर्वजों द्वारा प्राप्त एवं स्वशिक्षित वीरता और पौरुष में ऐसा है कि उसके विषय में निम्नांकित छन्द पढ़ना उचित तथा न्याय-युक्त होगा :

पद्य

"हे ! तू अकेला ही सकड़ों वीर सेना का अन्त कर सकता है,
हे ! तू दैवी रहस्य के घेरे का आभूषण है।
तुझे सेना की आवश्यकता नहीं और तू स्वयं ही
संसार की सेना के शिविर का अधिकारी है।
विजय में तू रुस्तम है और शक्ति में फ़रामुर्ज़,[१]
तेरा गौरव जमशेद[२] के समान है और तू बहुमुर्स[3] के समान वीर है।
अली[४] के समान तू लाल सिंह है, यद्यपि
न तो तू बदख़शाँ के बादशाहों से है और न सैयिद ही है।
शहंशाही के सिंहासन पर और जमशेद की गद्दी पर,
तू इदरीस के समान सर्वदा जीवित रह क्योंकि तेरा मुख स्वर्ग के समान है।"

फ़ीरोज शाह की सेना के सरदार तथा सेनापति, पथभ्रष्ट तथा बलहीन अहमद अयाज़ के विद्रोह तथा विरोध की खिल्ली उड़ाते थे क्योंकि अपने जीवनकाल में उसका मुख्य कार्य, व्यवसाय तथा योग्यता या तो भवन निर्माण की थी या कठोरता, निष्ठुरता एवं रक्तपात द्वारा दीवानी का धन (कर) वसूल करना थी। सेना के सभी बुद्धिमान इस बात से पूर्ण रूपेण सहमत होकर कहते थे कि या तो अहमद अयाज की बुद्धि मारी गई है और या आयु की अधिकता के कारण उसकी चिन्तन शक्ति समाप्त हो गई है और या किसी ऐसे व्यक्ति की, कि जिस पर उसने अत्याचार किया था, उसके विषय में अशुभ कामना स्वीकार हो गई है और उसकी मृत्यु निकट आ गई है। वह अपना ही शत्रु बनकर तथा कुख्यात होकर अपने प्राण त्याग देगा और अपने हाथ से अपने मूल का विनाश करेगा। सेना वाले यह बात भली भाँति समझ गये थे कि जब फ़ीरोज शाह का आकाश-तुल्य चत्र शहर (देहली) से २०-३० कोस की दूरी पर छाया डालेगा और जब शीश काटने वालों की तलवारों की विद्युत चमकने लगेगी और अहमद अयाज़ सुनेगा कि विजयी सेना के वीर तथा रुस्तम युद्ध (५४१) तथा संग्राम के लिये तैयार होकर आ रहे हैं और अपनी कमानें कड़का रहे हैं और अपने बाणों को तेज़ कर रहे हैं और जब शाही सेना वाले अहमद अयाज़ तथा उसकी सेना को जंगली गधे अथवा नीलगाय के समान जंगल में पायेंगे तो उस निर्बल पथभ्रष्ट वृद्ध का पित्ता फट जायगा और उसे ज्वर चढ़ आयेगा, या वह अपने शरीर को प्राण से रिक्त कर देगा, या अपने गले में रस्सी बंधवा कर तथा अपना शीश मुंडित कराकर नंगे सिर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के प्रासाद के द्वार पर उपस्थित हो जायेगा। उसके कुछ परामर्श-दाता जो उसके चारों ओर पौरुष की डींगें मारा करते हैं और दीवारों के चित्र के समान उस बुड्ढे

१ रुस्तम का पुत्र।
२ ईरान का एक प्राचीन बादशाह जो अपने वैभव के लिये प्रसिद्ध था।
३ ईरान के प्राचीन पेशदादी वंश का बादशाह।
४ अलीः मुहम्मद साहब के जामाता तथा चौथे ख़लीफ़ा जो अपनी वीरता के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। इनका निधन ६६१ ई० में हुआ।

खूसट के समक्ष अपने आप को रुस्तम तथा इसफ़न्दियार बताते हैं, उसे अपने स्थान पर निस्सहाय अवस्था में छोड़ कर भाग जायेंगे क्योंकि इससे पूर्व लोग कह गये हैं कि वीरों का मुख मैदान में देखा जा सकता है और नामर्दों, जोकि भित्तिचित्र के समान होते हैं, की डींग झूठ तथा असत्य समझना चाहिये।

छन्द

"वीरों की वीरता रणक्षेत्र में देखो,
दीवार का चित्र किस काम का चाहे वह रुस्तम का हो और चाहे इसफ़न्दियार का।"

जब सेना वालों को यह ज्ञात हुआ कि नत्थू सोंधल, एक नायक का पुत्र, खास हाजिब नियुक्त हो गया है और अहमद अयाज के समक्ष वीरों से युद्ध करने का दावा करता है तो विजयी सेना के धनुर्धारी तथा सैकड़ों, जो अधम नायक के पुत्र को दूध पीता शिशु समझते थे, उसकी खिल्ली उड़ाते थे, यद्यपि वह अपने आप को अवध के नायकों के मध्य में इसफ़न्दियार तथा रुस्तम कहलवाता था।

छन्द

"प्रत्येक दूध पीता शिशु हफ़्तख्वाँ[१] नहीं पार कर सकता।
चाहे तेरा पिता तेरा नाम इसफ़न्दियार रख दे।"

(पृ ४२) अयाज के विद्रोह के समय में संसार के स्वामी ने कई बार दरबार के मलिकों तथा अमीरों से कहा था कि अहमद अयाज युद्ध करने वाला पुरुष नहीं। जिसने आजीवन अपने हाथ में धनुष न लिया हो और तेज घोड़े पर सवार न हुआ हो उसको युद्ध, संग्राम तथा सेना के संचालन एवं सेना लेकर चढ़ाई करने से क्या सम्बन्ध। मुझे उस वृद्ध से लज्जा आती है। पता नहीं कौन ऐसा व्यक्ति था जिस पर उसने अत्याचार किया था और उसकी अशुभ कामना उसके विषय में स्वीकार हो गई कि उसने जानबूझ कर अपने आपको इस कष्ट में डाल लिया है और रक्त की नदी में डुबकी लगा रहा है। उसने ऐसा कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है जो न तो उसका ही कार्य है और न उसके पूर्वजों ही का कार्य है। मुझे उस जैसे अयोग्य व्यक्ति के लिये सेना की क्या आवश्यकता और न मुझे किसी तैयारी की जरूरत है। वह कौनसा योद्धा तथा वीर है जिससे युद्ध करने की मुझे आवश्यकता हो। मैं उसको पराजित करना कोई काय नहीं समझता। जब मैं देहली के निकट पहुँचूँगा वह निःसंदेह अपना कृष्णमुख करके दूसरे द्वार से बाहर निकलेगा। मैं अपने कुछ शिकरादारों[२] को भेज दूंगा, जो उसे उसकी पालकी से उतार कर मेरे समक्ष पकड़ लायेंगे। उस दुष्ट को अपने आप से, अपने ईश्वर से और ईश्वर के दासों के समक्ष लज्जा नहीं आती कि उसने वृद्धावस्था में अपहरण किया है। खज़ाना जोकि बैतुल माल[३] है उसके पास अमानत छोड़ दिया गया था; उसे वह इस समय, जब कि उसके स्वामी का निधन हो गया और दूसरा आश्रयदाता, उत्तराधिकारी एवं सर्व सम्मति से बादशाह हो गया है, व्यर्थ नष्ट कर रहा है। कुछ अधम परामर्शदाता, जो उसके समक्ष डींग मारते हैं, क्या चीज हैं और क्या शक्ति रखते हैं। हमारे पास कौनसा ऐसा खेल[४] है जिसमें उनसे अच्छे २०-३० आदमी नहीं? यह बात स्पष्ट

१ वह कठिन मार्ग जो एक बार रुस्तम ने ईरान के बादशाह कैकाऊस को बन्दीगृह से छुड़ाने के लिए पार किया था। कहा जाता है कि इसमें सात पड़ाव थे और प्रत्येक पड़ाव पर एक नये कष्ट का सामना करना पड़ता था।

२ शिकरादार : शाही शिकरादारों की देख रेख करने वाले।

३ बैतुल माल : इस्लामी राजकोष।

४ खेल : सवारों का एक दस्ता।

तथा निश्चय है कि हम जैसे ही सरसुती तथा हाँसी की सीमा में प्रविष्ट होंगे तो अल्लाह ने (५४३) चाहा तो सभी लोग मेरे पास चले आयेंगे और शरा तथा नीति के अनुसार मेरा अधिकार समझ जायेंगे। जिस समय उसके संघटन का खंडन हो जायगा और वह सुनेगा कि हम निकट पहुँच गये तो उसका दम घुटने लगेगा और उसका हृदय कम्पित हो जायगा और इस आतंक में पता नहीं वह जीवित रहे अथवा न रहे। मैं इतने वर्षों से उसकी निर्बलता तथा अयोग्यता देख रहा हूं कि हजार सुतून के कोठे पर चढ़ने में उसकी क्या दशा हो जाती है। उसमें इतनी शक्ति, इतना पित्ता तथा हृदय कहाँ है कि वह सेना के पहुँचने पर अपने स्थान पर रह सके।

लौटते समय संसार के स्वामी ने कुछ दिन तक प्रसिद्ध नगर दीबालपुर में विश्राम किया। सेना के चौपायों ने अत्यधिक यात्रा के उपरान्त आराम किया। वहाँ से इस्लाम बादशाह ने बड़े धैर्य से तथा शान्ति-पूर्वक राजधानी की ओर प्रस्थान किया। संसार का स्वामी शेखुल इस्लाम फ़रीदुद्दीन[1] (के मजार) के दर्शनार्थ अजोधन गया। उस प्रतिष्ठित वंश को जो पूर्णतया छिन्न भिन्न हो गया पुनः आश्रय प्रदान करके सुव्यवस्थित किया। शेख अलाउद्दीन[2] के वंशजों को खिलअत तथा इनाम प्रदान किये। उन्हें भूमि तथा ग्राम इमलाक[3] में प्रदान किये। अजोधन निवासियों को अत्यधिक न्योछावर बांटी। जिस किसी के विषय में यह सुना कि वह जीविका तथा वृत्ति पाने का अधिकारी है उसे उसने वृत्ति तथा जीविका के साधन प्रदान किये। प्रसिद्ध नगर दीबालपुर से देहली तक उस ओर के सभी क़स्बों के निवासियों को प्राचीन तथा नवीन अदरार तथा वृत्ति के सम्बन्ध में फ़रमान दिये गये। प्रत्येक क़स्बे के फ़क़ीरों तथा दरिद्रियों को पृथक् नक़द न्योछावर दी गई।

जितने दिन तक सेना दीबालपुर में रही, देहली से यही समाचार मिलते रहे कि अहमद अयाज़ उपद्रव की अग्नि को भड़का रहा है; अपने दासों को राजसी पद प्रदान कर दिये हैं; शेख ज़ादा बिस्तामी नत्थू सोंधल तथा कुछ अन्य परामर्शदाताओं को अपना सहायक तथा विश्वासपात्र बना लिया है; लोगों को बहका तथा मार्ग भ्रष्ट कर रहा है; (५४४) उस विजन्मे बालक को कठपुतली की भाँति राजसिंहासन पर बैठाया जाता है; वे अन्य मूर्खों को दिखलाने के लिये अपने आप को सजा कर उसके समक्ष अभिवादन करते हैं; नगर के भागे हुये लोगों तथा ग्रामीणों को क़स्बों में बुला-बुला कर हशम (सेना) कहा जाता है; स्वर्ण तथा राजकोष नष्ट किया जा रहा है; शहर के साधारण तथा विशेष व्यक्ति उससे धन प्राप्त करते हैं और उसकी खिल्ली उड़ाते हैं; उसका विनाश निकट ही पाते हैं; संसार के स्वामी की दीर्घायु की रात दिन ईश्वर से शुभ कामना किया करते हैं; फ़ीरोज शाह की सवारी के पहुँचने की प्रतीक्षा किया करते हैं। क्योंकि अहमद अयाज़ का मृत्यु काल निकट आ गया था, उसके हृदय में कोई उचित बात आती हीं न थी। उस बीच में उसका कोई हितैषी तथा विश्वासपात्र उसके हित की तथा उचित बात भी उससे न कह सका। शहर के सभी विद्वान, बुद्धिमान, अशिक्षित, मूर्ख खास व आम स्त्री, पुरुष छोटे बड़े नगर निवासी, ग्रामीण, स्थायी रूप से रहने वाले तथा यात्री, अधमों तथा मूर्खों की बात देख कर कहते थे :

---

१ शेख फ़रीदुद्दीन गंजशकर प्रसिद्ध चिश्ती सूफ़ी थे। उनका निधन १२६५ ई० में हुआ। उनका मज़ार मुल्तान में अजोधन अथवा पाकपटन में है।

२ शेख अलाउद्दीन : शेख फ़रीदुद्दीन गंजशकर के वंश से थे। इब्ने बत्तूता ने भी इनसे भेंट की थी। (तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० १७०) इनकी मृत्यु १३३५ ई० में हुई।

३ वह भूमि जो धार्मिक लोगों की सहायता के लिए दान के रूप में दी जाती थी।

छन्द

"जब मनुष्य का भाग्य अन्धकारमय हो जाता है,
वह समस्त ऐसे कार्य करने लगता है जिससे उसे कोई लाभ नहीं होता।"

जिस दिन युग तथा समय का बादशाह फ़ीरोज़ शाह सुल्तान विजयी सेना लेकर फ़तहाबाद पहुँचा तो मलिक मक़बूल, जो आज कल ख़ाने जहाँ तथा वज़ीरे ममालिक है, अपने पुत्रों तथा जामाताओं को लेकर एवं मलिक क़बतग़ा, अमीर मेहान तथा अन्य अमीर अयाज़ के पुत्र को धिक्कार कर और आंतरिक तथा वाह्य रूप से उस अभागे का साथ छोड़ कर सुल्तान के दरबार में उपस्थित हो गये और संसार के स्वामी के समक्ष भूमि चुम्बन करके सम्मानित हुए। ख़ाने जहाँ को रत्न-जटित वस्त्र प्रदान किये गये और वह आज तक जबकि छः वर्ष व्यतीत हो चुके हैं समृद्धि तथा सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा है। ख़ाने जहाँ के पुत्रों तथा जामाताओं तथा अन्य अमीरों ने भी ख़िलअत प्राप्त किये और उनकी (५४५) नमक हलाली तथा स्वामिभक्ति की प्रशंसा सभी सेना वालों ने की। ख़ाने जहाँ के पहुँचने के दो तीन दिन उपरान्त मलिक महमूद बक जो इस समय शेर ख़ाँ है सुनाम तथा सामाने की सेना लेकर दरबार में पहुँचा और भूमि चुम्बन करके सम्मानित हुआ।

फ़तहाबाद से सुल्तान हाँसी पहुँचा। हाँसी निवासियों तथा हाँसी के आसपास के क़स्बों तथा स्थानों के लोगों पर अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की गई। इस्लाम के बादशाह ने हाँसी के पीरों (सन्तों) के (मज़ार के) दर्शन किये। फ़क़ीरों को न्योछावर दी गई। जिस दिन विजयी पताकाओं ने हाँसी से राजधानी की ओर प्रस्थान किया, तो शेख़ ज़ादा बिस्तामी नत्थू सोंधल, दुष्ट हसन, हुसाम अदहंग तथा अहमद अयाज़ के कुछ परामर्श-दाता जो उसके सहायक तथा विश्वास-पात्र बने हुये थे, नंगे गले में रस्सी बाँधे हुये उपस्थित हुये और उन्होंने भूमि-चुम्बन किया। अहमद अयाज़ का संघटन टूट गया। योग्य लोग दरबार में उपस्थित हुये। अन्त में अहमद अयाज़ भी कांपने लगा और वह आतंकित हो गया। उसका पित्ता फटने लगा। भय तथा डर के कारण ग्रीवा में रस्सी बँधवाकर तथा शीश का मुण्डन कराकर नंगे सिर सुल्तान के शिविर के द्वार पर पहुँचा। सुल्तान ने आदेश दिया कि उस अधम दुष्ट द्वारा दरबारे आम में भूमि चुम्बन कराया जाय। भूमि चुम्बन के समय सुल्तान के आदेशानुसार उससे यह प्रश्न किया गया कि, "जब तू इस कार्य के योग्य न था तो तूने इस कार्य में क्यों हस्तक्षेप किया? नमक का हक़ क्यों न अदा किया और अपने स्वामी से क्यों विश्वासघात किया?" अहमद अयाज़ ने उत्तर दिया, "जब तक भाग्य मेरा साथ देता रहा तो मुझसे अपने आश्रय-दाताओं तथा स्वामियों की इच्छानुसार कार्य होते रहे। इस समय जब कि भाग्य ने मेरा साथ छोड़ दिया और सौभाग्य मुझसे विमुख हो गया तो मुझसे ऐसे कार्य होने लगे कि (५४६) मैं संसार में कुख्यात तथा क़यामत में दंड का पात्र हूँगा।" राजसिंहासन से आदेश हुआ कि, "इसे लौटा ले जाया जाय और एक स्थान पर रखा जाय।"

जब शाही पताकायें देहली के पास तीस कोस पर पहुंचीं तो राजधानी के लोग जो बादशाह के प्रति वर्षों से निष्ठावान् थे, विशेष तथा साधारण व्यक्ति, आलिम, सूफ़ी, क़लन्दर, हैदरी[1], व्यापारी, सौदागर, (सभी समूहों के) प्रतिष्ठित लोग, साहू, सर्राफ़ तथा ब्राह्मण, अपने अपने दल, गिरोह तथा समूह के साथ दरबार में पहुँचते थे और भूमि-चुम्बन करके सम्मानित होते थे तथा शाही अनुकम्पा एवं प्रोत्साहन से आश्रय प्राप्त करते थे।

इस तारीखे फ़ीरोज़शाही के संकलन-कर्ता ने विश्वस्त सूत्रों से निरन्तर यह विचित्र

१ क़लन्दर तथा हैदरी : स्वतन्त्र विचार के सूफ़ी।

कहानी सुनी है कि उन महीनों में जब अहमद अयाज़ ने विद्रोह कर दिया था और शहर (देहली) के निवासियों को वस्त्र, तन्के तथा जीतल प्रदान कर रहा था तो लोग उससे ये वस्तुयें प्राप्त कर लेते थे और राज प्रासाद के बाहर निकलकर उसको धिक्कार देते थे और हृदय से उसका पतन तथा विनाश चाहते रहते थे और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सवारी पहुँचने की प्रतीक्षा किया करते थे। लोग प्रत्यक्ष रूप से संसार के स्वामी के लिए शुभ कामनायें किया करते थे। अहमद अयाज़ का जो कार्य भी वे देखते उसे कोई महत्त्व न देते थे।

जमादी-उल-आख़िर मास के अन्त में (अगस्त १३५१ ई०) शाही पताकायें राजधानी में प्रविष्ट हुईं। एक शुभ घड़ी तथा मंगलप्रद नक्षत्र में, संसार के ख़ुसरओं (बादशाहों) का सूर्य, विश्व का कैख़ुसरो[1], भूमि तथा समुद्र का सुल्तान, आकाश का सहायता पात्र, अपने शत्रुओं पर विजयी, समय तथा युग का सुलेमान[2], ईश्वर द्वारा दृढ़ सहायता प्राप्त, फ़ीरोज़ शाह सुल्तान (ईश्वर उसके राज्य तथा शासन को चिरस्थायी बनाये) राज प्रासाद में जमशेद तथा ख़ुसरो के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। इस प्रकार राजधानी को बादशाहे इस्लाम[3] के राज्य से शोभा प्राप्त हुई। सर्व साधारण के हृदय संतुष्ट हो गये। अहमद अयाज़ की मूर्खता के कारण जो अशासन तथा विघ्न एवं व्याकुलता उत्पन्न हो गई थी, वह समाप्त हो गई (५४७) और शान्ति तथा दृढ़ता प्राप्त हो गई।

शाही पताकाओं के राजधानी में पहुँचने के प्रथम दिन से ही सभी उपद्रव शान्त हो गये। विरोध तथा विभिन्नता के स्थान पर संघटन तथा शान्ति उत्पन्न हो गई। बिना किसी रक्तपात, अथवा किसी वंश या कुल के विनाश के तथा बिना किसी दंड, अत्याचार अथवा हत्याकाण्ड के जो विद्रोह तथा उपद्रव शांत करने के लिये आवश्यक समझे जाते हैं, शासन-प्रबन्ध सुव्यवस्थित हो गया। राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्य दृढ़ हो गये। विशेष तथा सर्व साधारण व्यक्ति संतुष्ट हो गये। मुसलमानों तथा हिन्दुओं को सन्तोष प्राप्त हो गया। सर्व-साधारण अपने अपने व्यवसाय में लग गये।

लगभग चालीस वर्ष से राज्य तुग़लुक़ शाह के वंश में है। सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह के उपरान्त वह उसके पुत्र को और अब उसके भतीजे को प्राप्त हुआ है। समय तथा युग का सुल्तान देहली के राजसिंहासन पर उत्तराधिकार, अपने हक़ के कारण सर्व सम्मति तथा नामज़द[4] होने के कारण आरूढ़ हुआ है। वह अपने पितृव्य तथा चचेरे भाई के समय में राज्य का बहुत बड़ा स्तम्भ रह चुका है। उसके सिंहासनारोहण के कारण किसी वंश का विनाश न हुआ। न तो दरबार के किसी प्राचीन अधिकारी सहायक तथा विश्वासपात्र की हत्या हुई, न कोई परिवर्तन किया गया, न किसी का पद ही घटाया गया और न कोई पदच्युत हुआ, न तो किसी का शोषण हुआ और न किसी को देश से निकाला ही गया। सभी वंश तथा कुटुम्ब उसी प्रकार वर्तमान रहे। केवल चार पाँच व्यक्तियों को जो अहमद अयाज़ के विद्रोह के नेता थे, तथा जिन लोगों ने उस निस्सहाय तथा निर्बल बालक को कष्ट में डाल दिया था, पृथक् कर दिया गया किन्तु उनके परिवार, सहायकों तथा आश्रितों को किसी प्रकार की हानि न पहुँचाई गई। अहमद अयाज़, नत्थू सोंधल, हसन, हुसाम अदहंग और अयाज़ के पुत्र के दो दासों के अतिरिक्त किसी की हत्या न कराई गई। उन ५-६ मनुष्यों के पुत्रों, जामाताओं तथा सहायकों और सम्बन्धियों को कोई

१ ईरान के क्यानी वंश का तीसरा प्रतापी बादशाह।

२ एक प्रतापी पैग़म्बर।

३ इस्लाम के बादशाह।

४ ब अर्स व हम व इस्तेहक़ाक़ व हम ब इजमा व हम ब इस्तेख़लाफ़।

हानि न पहुँचाई गई। सभी अपने अपने स्थानों पर तथा अपने अपने घरों पर शान्ति-पूर्वक (५४८) जीवन व्यतीत करते रहे। विद्रोहियों के सहायक तथा आश्रित युग तथा समय के स्वामी के राज्यकाल में जिस प्रकार सुरक्षित रहे उस प्रकार किसी अन्य राज्यकाल में न देखे गये।

तीसरा अध्याय

समय तथा युग के बादशाह फ़ीरोज़ शाह सुल्तान के उत्कृष्ट गुण तथा प्रशंसनीय चरित्र जिसके फलस्वरूप राज्य में शान्ति तथा सुशासन उत्पन्न हो सका और जिसके कारण हिन्द तथा सिन्ध के राज्यों की उथल पुथल तथा निकृष्टता का अन्त हो गया और वे पुनः प्रफुल्लित, सुखी तथा आबाद हो गये।

जिन लोगों को प्राचीन सुल्तानों के इतिहास तथा विगत प्रसिद्ध घटनाओं का ज्ञान है, उनसे इस तारीखे फ़ीरोज़शाही का संकलनकर्त्ता न्याय के अनुसार निवेदन करता है और इसमें लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं कि जब से देहली पर विजय प्राप्त हुई है और हिन्दुस्तान में इस्लाम का प्रचार हुआ, उस समय से लेकर अब तक सुल्तान मुइज्जुद्दीन मुहम्मद साम के उपरान्त समय तथा युग के बादशाह सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान कोई भी शिष्ट सज्जन, कृपालु, दयालु, दूसरों के अधिकार पहचानने वाला तथा कर्त्तव्य-निष्ठ, इस्लाम के नियमों में दृढ़ तथा पवित्र विश्वास रखने वाला बादशाह देहली के राज सिंहासन पर आरूढ़ नहीं हुआ। मैंने यह बात अतिशयोक्ति, डींग अथवा अनावश्यक प्रशंसा करते हुये नहीं लिखी है और न ये बातें सांसारिक लोभ के कारण ही लिखी हैं अपितु मैंने सत्यता को इस पुस्तक की भूमिका में इतिहास लिखने का परमावश्यक गुण बताया है। यद्यपि मुझे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्य-काल में कोई प्रफुल्लता, समृद्धि, सम्पन्नता, सुख तथा आराम नहीं प्राप्त है और इस विषय में मैं राज्य के सभी लोगों से पृथक् तथा भिन्न हूँ, मैं उन लोगों में हूं जिनके विषय में एक छन्द (५४९) की यह पंक्ति सत्य समझी जा सकती है और जो किसी अन्य के लिए उचित नहीं ज्ञात होती :

'पक्षी तथा मछली भी अपने देश में मेरे अतिरिक्त सुखी हैं।'

चाहे मैं समृद्धशाली रहूँ अथवा न रहूँ मुझे इतिहास में ठीक ठीक तथा सत्य बात लिखनी चाहिये; अपने लेख को प्रमाणों तथा तर्क से सिद्ध करना चाहिये। यदि कोई प्राचीन सुल्तानों के इतिहास तथा हाल से अनभिज्ञ यह अध्याय पढ़कर अन्याय-पूर्वक यह कहने लगे कि ज़िया बरनी ने (अनुचित) प्रशंसा तथा काव्य लिखा है और यह पद्यमय रचना है कि देहली की विजय से इस समय तक समय तथा युग के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान कोई भी सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ और किसी में भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान उत्कृष्ट गुण न थे, तो उस असावधान को प्राचीन सुल्तानों के इतिहास तथा देहली के बादशाहों की तवारीख़ पर दृष्टिपात करना चाहिये। उसे ज्ञात हो जायगा कि संसार की यह प्रथा हो गई है तथा नियम बन गया है कि सुल्तानों के परिवर्तन में रक्तपात होता है और वंशों तथा ख़ानदानों का विनाश हो जाता है। जब तक प्राचीन एवं दृढ़ वंशों का विनाश नहीं हो जाता उस समय तक नये वंश स्थापित नहीं हो पाते। यह बात निश्चित समझी जाती है कि भूतपूर्व बादशाह के सहायक तथा विश्वासपात्र नवीन बादशाह के सहायक तथा विश्वासपात्र नहीं हो पाते। यदि

कहीं ऐसी बात हो जाती है तो उसे बड़ी विचित्र तथा अद्‌भुत बात समझनी चाहिये। अनुभवी लोगों को यह बात पैतृक राज्यों में दृष्टिगत हुई है। ऐसे राज्य के विषय में, जो विजय[1] द्वारा प्राप्त हुआ हो, जिसमें वर्त्तमान काल के बादशाह के वंश तथा कुल का कोई व्यक्ति अथवा उसका कोई सम्बन्धी कभी बादशाह न हुआ हो, यह बात बड़ी ही सत्य है कि वह विजयी व्यक्ति जब तक भूतकाल के बादशाह के सभी हितैषियों, विश्वासपात्रों, सम्बन्धियों तथा सहायकों की, जिस प्रकार तथा जिस उपाय से सम्भव हो, हत्या नहीं करा लेता अपने आप को बादशाह नहीं समझता। इसके अतिरिक्त यह सिद्धान्त तो निश्चय हो चुका है कि (५५०) बिना रक्तपात के बादशाह का आतंक हृदय में नहीं आरूढ़ हो पाता और उस के आदेशों का पालन नहीं हो पाता; बिना हत्या के विद्रोही तथा दुष्ट विद्रोह से बाज़ नहीं आते।

जब सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ तो जब तक उसने क़ाज़ी साद, क़ाज़ी एमाद, क़ाज़ी हुसाम और क़ाज़ी निज़ाम की, जो शम्सुल अइम्मा गरदेज़ी के भागिनेय थे, और अनेक ग़ोरी अमीरों की, जिन्हें सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद द्वारा हिन्दुस्तान में अक्तायें प्राप्त थीं, हत्या न करा ली और जब तक सुल्तान ताजुद्दीन यलदुज़ का, जिसे सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन पुत्र कहता था, तथा सुल्तान नासिरुद्दीन क़ुबाचा का, जो सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन का सिलाहदार था तथा उनके सहायकों एवं विश्वासपात्रों का अन्त न करा लिया उस समय तक उसे देहली के राजसिंहासन पर निश्चिन्त होकर राज्य करना सम्भव न हो सका। यह बात ज्ञात होनी चाहिये कि इन बुज़ुर्गों की हत्या तथा विनाश में कितना रक्तपात और कितने प्राचीन वंशों तथा कितने घरानों का विनाश हुआ होगा।

उसी प्रकार सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान शम्सुद्दीन के पुत्रों के ३० वर्षीय राज्यकाल में जब चेहलगानी तुर्क अधिकार-सम्पन्न बने थे तो अनेक प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्ति, जो शम्सी राज्य-काल में बड़े गौरवान्वित तथा विश्वासपात्र थे, मरवा डाले गये। उनके रक्त की नदी बहा दी गई। उन उत्कृष्ट अमीरों की अक्तायें सवार तथा प्यादे अधिकार में कर लिए गये और घोर रक्तपात हुआ। जब सुल्तान बल्बन मलिक था तो उसने बड़ा रक्तपात किया और जब वह खान था तो उसने अपने सभी ख़्वाजाताशों[2] की, जिस प्रकार सम्भव हो सकी, हत्या करा दी; उनके वंशों का विनाश कर दिया। इतिहास के पाठकों से यह बात छिपी नहीं। बल्बन का हत्याकाण्ड प्रसिद्ध था। यह बात (५५१) बड़ी प्रसिद्ध है कि सुल्तान बल्बन ने तुग़रिल के साथ कितने विद्रोहियों की हत्या कराई। तुग़रिल के स्त्री और बच्चों तथा उसके सहायकों एवं सम्बन्धियों की किस प्रकार हत्या कराई और आदेश दिया कि मार्ग की दोनों पंक्तियों में सूलियाँ लटकाई जायँ। मुइज़्ज़ुद्दीन कैक़ुबाद के समय का रक्तपात तथा वंशों एवं घरानों का विनाश वृद्धों और बुड्ढों ने देखा है।

सुल्तान जलालुद्दीन जैसे पवित्र विश्वास वाले मुसलमान ने अपने सिंहासनारोहण के प्रारम्भ ही में जब तक सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन (कैक़ुबाद) तथा कुछ अन्य प्रतिष्ठित अमीरों की हत्या न करा ली और अन्त में जब तक मुग़लती तथा उसके घरबार का विनाश न करा लिया, और सीदी मौला तथा कुछ अन्य लोगों को न क़त्ल करा लिया और मलिक छज्जू के विद्रोह के कारण उसका विनाश न करा लिया उस समय तक उसे भली भाँति राज्य करना सम्भव न हो सका। अलाई राज्यकाल के हत्याकाण्ड की चर्चा असम्भव है। बहुत से ऐसे

---

१ मुल्कहाय तग़ल्लुब।

२ साथियों।

लोग जिन्होंने उसके राज्यकाल का हत्याकाण्ड तथा रक्तपात देखा है अब भी जीवित हैं। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन (मुबारक शाह) तथा सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल में अलाई राज्यकाल की अपेक्षा बहुत कम रक्तपात तथा हत्याकाण्ड हुआ। जो कुछ हुआ वह वास्तव में हुआ। सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल के हत्याकाण्ड एवं रक्तपात तथा वंशों के विनाश का उल्लेख सम्भव नहीं।

देहली के बादशाहों के रक्तपात तथा हत्याकाण्ड का जो उल्लेख संकलनकर्त्ता ने किया उसका उद्देश्य यह संकेत करना है कि कौनसा ऐसा बादशाह है जिसने अपने राज्य के हित तथा लाभ के लिये हत्याकाण्ड तथा रक्तपात न किया अथवा कौनसा ऐसा बादशाह है जिसे हत्याकाण्ड एवं रक्तपात के बिना राज्य करना सम्भव हो सका। इसके विरुद्ध समय तथा युग के बादशाह अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज़ शाह (ईश्वर उसके राज्य तथा शासन को सर्वदा वर्त्तमान रखे) को, जोकि प्राचीन तथा वर्त्तमान बादशाहों में अद्भुत है, आस्तिकों तथा मुसलमानों का रक्त बहाये बिना तथा वंशों एवं घरानों के विनाश के बिना राज्य तथा शासन करना (५५२) सम्भव हो सका है। छः वर्ष से सुल्तान फ़ीरोज़ शाह (जो हज़ार वर्ष तक जीवित रहे) देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ है और हिन्द तथा सिन्ध में उसके आदेशों का पालन होता है। पाँच छः व्यक्तियों के अतिरिक्त, जोकि विद्रोहियों तथा उपद्रवियों के नेता थे और जिन्होंने बादशाही के कार्य तथा व्यवस्था में उथल-पुथल कर दी थी, और जो सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में मारे गये, किसी की भी हत्या न की गई किन्तु उनके पुत्रों पुत्रियों, जामाताओं, सम्बन्धियों, सहायकों तथा आश्रितों को हानि न पहुँचाई गई। केवल कुछ युवकों की जिन्होंने बड़े ही भयंकर विद्रोह की योजना बनाई थी और कुछ दिनों तक इसका संचालन भी किया था, हत्या करा दी गई। प्रथम तथा द्वितीय समूह के मनुष्यों की कुल संख्या १५-१६ से अधिक न थी। इनके अतिरिक्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने इतने अपराधियों में से किसी को भी प्राण दण्ड न दिया। किसी भी मुसलमान मुवह्हिद[१] की राज प्रासाद के समक्ष हत्या न कराई गई। किसी भी राज्य तथा माल के अपराधी का बाल बाँका न हुआ और किसी वंश तथा घराने का विनाश न हुआ। क्या यह बात ईश्वर की महत्त्वपूर्ण अनुकम्पा नहीं कही जा सकती कि सुल्तान फ़ीरोज शाह के हृदय में मुसलमानों की हत्या का ध्यान भी नहीं आता और (ईश्वर ने) उसे कलमा (एक ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य ईश्वर नहीं और मुहम्मद उसके दूत हैं) पढ़ने वालों के हत्या काँड से सुरक्षित रखा है ?

मैं, जोकि तारीख़े फ़ीरोजशाही का संकलनकर्त्ता ज़िया बरनी हूं, यह बात लिखता हूं कि देहली की विजय से सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद साम के अतिरिक्त कोई भी बादशाह फ़ीरोज शाह के समान सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ है। ईश्वर ने किसी भी मुसलमान मुवह्हिद की हत्या इससे सम्बन्धित नहीं की है। उसके द्वारा अन्य बादशाहों के समान हत्याकांड (५५३) दृष्टिगत नहीं हुआ है। मैं उसकी कृपा, दया तथा अनुकम्पा एवं ईश्वर से भय अपने वक्तव्य के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करता हूँ। मैंने जो कुछ लिखा है वह न्याय से लिखा है और सच सच तथा ठीक लिखा है। मैं पुनः कहता हूँ तथा लिखता हूं कि हशम[२] तथा प्रजा के विषय में, जो जहाँदारी (राज्यव्यवस्था) के दो बाहु हैं, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में मैं तथा अन्य लोग जो कुछ देख रहे हैं वह कई क़रनों[३] से देहली के बादशाहों के समय में नहीं देखा गया। किसी को भी इस बात की स्मृति नहीं कि हशम में

१ ऐकेश्वरवादी।

२ सेना

३ क़रन : दस, बीस, तीस, यहाँ तक कि १२० वर्ष तक की कोई अवधि।

सुविधा-पूर्वक प्रविष्ट होने के लिये हुल्या[1] जो हशम में प्रविष्ट होने के लिये बड़ा ही कष्टजनक है क्षमा हुआ हो। हशम, जिन्हें वेतन के स्थान पर ग्राम प्राप्त हैं, अपने दास, सेवक तथा सम्बन्धी अर्ज़[2] के समय प्रस्तुत कर देते हैं और उनका वेतन स्वयं ले लेते हैं। जो सुख सम्पन्नता, संतोष तथा विलासमय जीवन उन्हें प्राप्त है वह सभी को ज्ञात है। जो कुछ हशम को इतलाक़[3] में प्राप्त होता है, यद्यपि वह क़िस्तवार कभी नक़द, कभी पत्रों के रूप में प्राप्त होता है किन्तु बादशाह उनके विषय में बेगारी शिकारी[4] का आदेश नहीं देता। दंड का नाम भी किसी की वाणी पर नहीं आता। बहुत सी ऐसी सुविधायें पैदा करदी गई हैं कि बहुतों को अपने घर बैठे वेतन प्राप्त हो जाता है। यदि इतलाक़ियों के वेतन में से अमीर तथा नवीसिन्दे[5] लालच करते हैं और कुछ ले लेते हैं (ग़बन कर लेते हैं) तो उसे बादशाह की ओर से शाही खर्च में लिख लिया जाता है और वह रक़म उसे प्रदान कर दी जाती है और अमीरों के हिसाब के समय उस रक़म को मुजरा कर लिया जाता है। इस बीच में जब से कि बादशाह सिंहासनारूढ़ हुआ है हशम किसी ऐसे युद्ध के लिये नहीं भेजी गई जहाँ उसे कोई कठिनाई तथा कष्ट हो। वह किसी ऐसे स्थान पर भी नहीं भेजी गई जहाँ से वर्ष दो (५५४) वर्ष पश्चात् लौटती। यह आश्रय तथा अनुकम्पा यदि लोग इसका मूल्य तथा महत्त्व जानें अथवा पहिचानें तो साधारण नहीं।

प्रजा की सुख सम्पन्नता, समृद्धि की प्रशंसा तो सम्भव ही नहीं। दुकानदारों, व्यापारियों, क़ाफ़ले वालों, साहों, (साहूकारों) सर्राफ़ों, ऋणदाताओं तथा मुहतकिरान[6] की धन सम्पत्ति, माल तथा नक़द लाखों को पार करके करोड़ों तक पहुँच गया है। खूतों, मुक़द्दमों के घरों में घोड़ों, मवेशियों, अनाज तथा सामान के कारण स्थान शेष नहीं और प्रजा के यहाँ कमी का नाम नहीं है। प्रत्येक अपनी श्रेणी के अनुसार धनी तथा समृद्धशाली हो गया है।

जब मैं, ज़िया बरनी, इस इतिहास का संकलनकर्त्ता, भटनेर के क़िले में था तो शीत ऋतु में थोड़ी सी परेशानी हो गई। निचले भाग के लोग क़िले के चारों ओर एकत्र हो गये। घोड़ों तथा मवेशियों की धूल के कारण दिन में इतना अँधेरा छा गया कि एक दूसरे का मुख दिखाई न देता था। उस स्थान पर जो भीड़ एकत्र हो गई थी उसमें से केवल हज़ार में से एक भाग के लिए अपने घोड़ों को लेकर भटनेर के क़िले में प्रविष्ट होना सम्भव हो सका। मैंने इख़्तयारुद्दीन मधो हज्जाम[7] के अश्वगोष्ठ में गिना था कि १३ घोड़े हज़ार-दो हज़ार तन्के के मूल्य के बंधे थे।

बाज़ार वालों को जिस प्रकार समृद्धि तथा सम्पन्नता-पूर्वक जीवन व्यतीत करना, घर बनवाना तथा सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करना फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में प्राप्त हो सका, वह उन्हें किसी राज्य में प्राप्त न हुआ। व्यापारी ही सभी सामानों के अधिकारी थे। जिस प्रकार उनकी इच्छा होती वे मोल लेते हैं और जिस प्रकार उनकी इच्छा होती है वह बेचते हैं। खराज[8] नहीं अदा करते। न तो वे किसी से झगड़ा करते

---

१ हुल्या : सैनिकों का पूर्ण विवरण।
२ अर्ज़ : सेना की निरीक्षण तथा नई भरती।
३ सैनिक के बाहर रहने पर आधा वेतन प्राप्त करने की अनुमति।
४ बिना पारश्रमिक के कोई कार्य।
५ कार्णिक, मुन्शी।
६ अनाज को छिपाकर एकत्र करने वाले तथा बाद में अधिक मूल्य पर बेचने वाले, चोर बाज़ारी करने वाले।
७ नाई अथवा जर्राह।
८ कर।

हैं और न कुछ मिलावट करते हैं। उनके घरों में प्रति दिन सौ-दो सौ तन्के आते हैं किन्तु एक तन्का भी कर के रूप में अदा नहीं करते। यदि मैं ज़िया बरनी समय तथा युग के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के प्रजा सम्बन्धी आश्रय तथा अनुकम्पा के कारण तारीख़े फ़ीरोज़शाही में यह न लिखूँ कि देहली की विजय से लेकर इस समय तक सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान कोई भी बादशाह सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ तो यह बात न्याय तथा सत्यता के अनुसार (५५५) ठीक न होगी।

मैंने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के (ईश्वर उसके राज्य तथा शासन को चिरस्थाई बनाये) चरित्र के गुणों की श्रेष्ठता का उल्लेख कर दिया है। मैं तर्क तथा प्रमाण सहित पुनः लिखता हूँ कि मैंने सुल्तान फ़ीरोज शाह को (ईश्वर उसके राज्य, आयु सिंहासन तथा मुल्क को चिरस्थाई रखे) जिस प्रकार अपने ख़ानों, मलिकों, अमीरों, सहायकों, सम्बन्धियों, राज्य के सेवकों तथा दरबार के हितैषियों को शाही अनुकम्पा से सम्मानित करते हुए अपनी आँखों से देखा है उस प्रकार किसी अन्य राज्यकाल अथवा समय में नहीं देखा। उसने उपर्युक्त लोगों को लाखों करोड़ों तथा हज़ारों के मूल्य के वेतन एवं इनाम निश्चित कर दिये हैं। पुत्रों, जामाताओं, प्राचीन दासों तथा उन लोगों को, जिन्होंने उसकी प्रमाणित सेवायें की थीं, पृथक् वेतन, इनाम, ग्राम तथा उद्यान प्रदान किये। ख़ानों, मलिकों तथा अमीरों को जो कुछ प्राप्त था उसके अतिरिक्त वेतन, इनाम, क़स्बे, ग्राम, उद्यान तथा भट्टियाँ[1] प्रदान कीं। इसके बावजूद दरबार के विशेष व्यक्तियों को सर्वदा सेवा में उपस्थित रहने के कष्ट से मुक्त कर दिया। दरबार के सभी गण्यमान्य व्यक्ति फ़ीरोज़ शाह की अत्यधिक अनुकम्पा से समृद्धि तथा शान्ति-पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं और धन सम्पत्ति विलासिता तथा सुख शान्ति से परिपूर्ण ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। इस्लाम के बादशाह की अत्यधिक दया तथा अनुकम्पा के कारण किसी के हृदय में कोई कष्ट, दुःख, असुविधा तथा परेशानी नहीं। जिस तिथि से सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सिंहासनारूढ़ हुआ है उस दिन से वह अपने आश्रितों के पद में नित्य वृद्धि कर रहा है। वह दरबार के सहायकों तथा आश्रितों को किसी प्रकार अपमानित तथा क्षुद्र नहीं होने देता। हिसाब किताब के कारण उनका अपमान नहीं होने देता। उन्हें किसी ऐसे कार्य के करने का आदेश नहीं देता जिससे उन्हें कष्ट हो। अधिक हस्तक्षेप, जिससे अधिकारियों (५५६) को कष्ट हो, वह दरबार के खास व आम के लिये पसन्द नहीं करता और किसी को दुखी देखना उसे अच्छा नहीं लगता। यदि ज़िया बरनी ने न्यायपूर्वक तथा सत्य और ठीक ठीक इस इतिहास में लिखा है कि जब से उसको तथा अन्य वृद्धों को याद है, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान गुणवान तथा चरित्रवान कोई भी सुल्तान सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ है तो उसने कोई ऐसी बात नहीं लिखी जो पूर्णतया उचित तथा सत्य न हो।

मैंने उसकी श्रेष्ठता का जो उल्लेख किया है उसका एक अन्य उज्ज्वल प्रमाण यह है कि मेरी आयु ढाई क़रन हो गई और इस बीच में जिन बादशाहों की मुझे स्मृति है उनके दीवाने विज़ारत में मैंने कभी ऐसा न देखा कि मुशरिफ़,[2] आमिल,[3] ख्वाजा,[4] पदाधिकारी

---

१ साधारण प्रकार की भूमि।

२ मुशरिफ़ : प्रान्तों तथा अक़्ताओं से प्राप्त हिसाब किताब की जाँच मुशरिफ़ द्वारा होती थी।

३ पदाधिकारी। साधारणतया ग्रामों में भूमि-कर वसूल करने वाला। ग्रामों में उसका तथा मुतसर्रिफ़ का एक ही कर्त्तव्य होता था।

४ ख्वाजा : प्रत्येक प्रान्त में वज़ीर की सिफ़ारिश पर एक ख्वाजा अथवा साहिबे दीवान नियुक्त होता था। वह प्रान्त का हिसाब किताब रखता था तथा केन्द्र में भेजता था। अक़्ताओं में वह मुक़्ता का अधीन होता था किन्तु केन्द्र से नियुक्त होने के कारण उसे विशेष अधिकार प्राप्त थे।

तथा नवीसिन्दे कुछ अमीरों तथा वालियों से हिसाब की कड़ी जाँच न कर रहे हों, उन्हें बन्दी बनाकर तथा अपमानित तथा क्षुद्र न किया जा रहा हो। जिनके विषय में भी दीवाने विज़ारत में धन की जाँच की जाती अथवा हिसाब किताब होता वे खून थूक देते थे। क्योंकि मैं फ़ीरोज़-शाह के शुभ राज्यकाल में यह बात नहीं देखता अपितु सवें तथा हज़ारवें भाग तक वह दशा नहीं पाता, अतः यदि इस इतिहास में यह लिखा है कि जब से मुझे स्मृति है मैंने कोई भी बादशाह समय तथा युग के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान नहीं देखा है तो मैंने यह न्याय पूर्वक तथा ठीक ठीक लिखा है।

यदि फिर भी कोई मूर्ख तथा अज्ञानी पाठक मेरे वक्तव्य को, जिसे मैंने तर्क तथा प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया है, अतिशयोक्ति बताये और असत्य समझे तो यह उसकी मूर्खता तथा अज्ञानता होगी। मुझे तथा मेरे बहुत से समकालीनों को स्मरण है कि भूतकाल में गुप्तचरों तथा अनभिज्ञ समाचार पहुँचाने वालों की खोज के कारण विशेष तथा साधारण व्यक्ति बड़े भयभीत रहा करते थे और निश्चिन्त होकर शयन नहीं कर सकते थे। ईश्वर (५५७) ही जानता है कि गुप्तचर तथा समाचार पहुँचाने वाले एवं अन्य खोज करने वाले किस प्रकार डंडे के ज़ोर से, जिन्हें कुछ भी ज्ञात न होता था उनसे झूठ स्वीकार करा लेते थे और इस प्रकार न जाने कितने मनुष्यों की हत्या हो गई तथा कितने वंशों का विनाश हो गया। मैंने फ़ीरोज़ शाह के इस शुभ राज्यकाल में न गुप्तचर देखे, न भेदिये और न जासूस और न कभी ऐसा देखा कि किसी को बन्दी बना लिया गया हो और डण्डे के ज़ोर से २००-३०० मनुष्यों के विषय में लिखवा लिया गया हो कि वे इस प्रकार कहते हैं और बादशाह का अहित चाहते हैं। मैं जो यह लिखता हूँ कि मैंने अपने जीवन में फ़ीरोज़ शाह के समान किसी भी व्यक्ति में इतने स्वाभाविक गुण नहीं देखे तो ऐसी अवस्था में मैं वही बात कह रहा हूँ जोकि सत्य तथा न्यायपूर्ण है।

मैं, इस तारीखे फ़ीरोजशाही का संकलनकर्त्ता ज़िया बरनी स्वर्गवासी सुल्तान (मुहम्मद बिन तुग़लुक़) के निधन के उपरान्त नाना प्रकार के कष्टों में ग्रस्त हो गया। मेरे घोर शत्रुओं तथा मेरे प्राणों का अहित चाहने वालों एवं ईर्षालुओं ने मेरी हत्या करने का प्रयत्न किया। शत्रुता के बल्लम के घाव से मानो मुझे विक्षिप्त बना दिया। सहस्रों प्रकार की विषैली बातें संसार के स्वामी की सेवा तक पहुँचा दीं। यदि ईश्वर की अनुकम्पा से समय तथा युग के सुल्तान ने अपनी कृपा, दया, सहानुभूति, मर्यादा, तथा दूसरों के अधिकार एवं राजभक्ति का ध्यान रखने के कारण मेरी विनती न सुनी होती और शत्रुओं की विषभरी बातों को विजय प्राप्त हो गई होती और जो कुछ इस वृद्ध के विषय में कहा गया वह सुन लिया गया होता तो मैं इस समय पृथ्वी माता के उत्संग में शयन करता होता। यदि इस उत्कृष्ट चरित्र वाले तथा दरिद्रियों को सम्मानित करने वाले बादशाह ने मेरे हाथ न पकड़ लिये होते तो इस समय मैं कहाँ जीवित होता? इस शहन्शाह ने मेरे प्राणों की रक्षा करके मुझे जिस प्रकार कृतज्ञ किया है, उसके कारण यदि मैं उसकी प्रशंसा में काव्य न लिख सकूँ तो कम से कम इतना तो होना ही चाहिये कि मैंने उसके जो कुछ गुण देखे हैं तथा उसके (५५८) चरित्र की जिन उत्कृष्ट बातों का निरीक्षण किया है, उन्हें ठीक-ठीक लिख दूँ। इस प्रकार यह न्याय तथा कृतज्ञता का प्रदर्शन होगा न कि झूँठ तथा अनावश्यक स्तुति।

चौथा अध्याय

इदरार तथा इनाम की अधिकता तथा खालसे में सम्मिलित हो

जाने वाले ग्रामों, भूमि, मफ़रूज़[१] तथा बेकार भूमि का युग तथा समय के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा राजधानी के निवासियों, क़स्बे वालों तथा प्रदेश वालों को वितरण, एवं उनका फिर से उन्नति प्राप्त करना।

अनेक दरिद्रियों को नये इदरार, वज़ीफ़े, ग्राम तथा भूमि प्रदान हुईं। देहली के सभी विशेष तथा साधारण व्यक्तियों ने देखा है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सिंहासनारोहण के उपरान्त विशेष कर प्रथम दो तीन वर्षों में कोई दिन ऐसा व्यतीत न होता था जब दीवाने रिसालत[२] वाले बड़े स्नेह से सैयिदों, शेखों, आलिमों, विद्यार्थियों, सूफ़ियों, हाफ़िज़ों, मस्जिद वालों, क़लन्दरों, हैदरियों, रौज़ों के सेवकों, मफ़रूज़ियों, कृषकों, भिखारियों, सहायता पाने के वास्तविक अधिकारियों, लूले लंगड़े लोगों, बेकार व्यक्तियों, वृद्ध स्त्रियों तथा अनाथों के प्रार्थना-पत्र राजसिंहासन के समक्ष न प्रस्तुत करते हों और संसार को शरण देने वाले बादशाह की अनुकम्पा से उनकी इच्छानुसार उन प्रार्थनाओं को स्वीकार न कर लिया जाता हो। ईश्वर प्रशंसनीय है—कौन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दान पुण्य की सीमा का उल्लेख कर सकता है ? सैयिदों, आलिमों, शेखों तथा समस्त सहायता के योग्य व्यक्तियों के इदरार इनाम, ग्राम तथा भूमि के विषय में १७० वर्ष के बीच में जो मिसाल (आदेशपत्र) प्राप्त हुये थे और जो (ज़मीन) अब खालसे में सम्मिलित हो चुकी थी, वे उनकी (स्वामियों की) सन्तान को उन्हीं आदेश पत्रों के आधार पर प्रदान करदी गईं। उन्हें नये सिरे से दीवानी (५५९) के मिसाल (आदेशपत्र) तथा फ़रमाने तुग़रा[३] प्राप्त हुये। जिनके पास कुछ न था और जिन्हें जीविका-साधन की आवश्यकता थी उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार इदरार, इनाम, ग्राम तथा उपजाऊ भूमि प्रदान की गईं। बैतुलमाल से सहायता पाने के पात्रों को हर प्रकार से सन्तुष्ट कर दिया गया। आसपास के प्रदेश वालों की भी आवश्यकता की पूर्ति कर दी गई और उनके भी हृदय सन्तुष्ट हो गये और वे शुभ कामनायें करते हुये तथा प्रशंसा करते हुये लौट गये। देहली के आलिमों, शेखों, अध्यापकों, मुफ़्तियों,[४] मुज़क्किरों[५], विद्यार्थियों, हाफ़िज़ों,[६] क़ुरान पढ़ने वालों, मस्जिद वालों, मक़बरों के सेवकों, हैदरियों, क़लन्दरों, सहायता के पात्रों तथा दरिद्रियों के इदरार, इनाम तथा वज़ीफ़े सहस्रों की संख्या का अतिक्रमण करके लाखों तक पहुँच गये। प्राचीन तथा नवीन पाठशालाएँ, मदरसे एवं मस्जिदें, जो रिक्त तथा उजड़ गई थीं, अध्यापकों, मुज़क्किरों तथा अन्तेवासियों से भर गईं और विद्या को शोभा प्राप्त होगई और शिक्षा का कार्य पुनः चालू हो गया। अध्यापकों को हज़ारों (की संख्या में) इदरार, ग्राम तथा इनाम प्राप्त हुये। उनके आदर सम्मान में वृद्धि हो गई।

---

१ वह भूमि जो किसी विशेष कार्य के लिये राज्य की ओर से पृथक् कर दी जाती थी।

२ दीवाने रिसालत देहली के सुल्तानों के समय का एक प्रमुख विभाग था। इसका अध्यक्ष सद्रुस्सुदूर होता था। दरिद्रियों, अनाथों, विधवाओं तथा धार्मिक व्यक्तियों आदि को सहायता एवं वृत्ति प्रदान करना इसी दीवान का कार्य होता था।

३ फ़रमाने तुग़रा : वह फ़रमान जिस पर सुल्तान की ख़ास मुहर लगी हो। भूमि सम्बन्धी फ़रमान, फ़रमाने तुग़रा कहलाते थे।

४ मुफ़्ती : वह अधिकारी जो इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार मुक़दमों में तथा विभिन्न समस्याओं में अपना मत देते थे।

५ मुज़क्किर : तज़्कीर (धर्मोपदेश) करने वाले।

६ हाफ़िज़ : वे लोग जिन्हें क़ुरान कंठस्थ हो।

जिनके इदरार १००-२०० तन्के थे और वे समाप्त हो गये थे और उन्हें पंजिकाओं से निकाल दिया गया था, उन लोगों का ४००-५००-७०० तथा १००० तन्के तक इदरार निश्चित किया गया। जिन विद्यार्थियों को १० तन्के भी न मिलते थे उनके इदरार १००-२०० तथा ३०० तक निश्चित किये गये। शहर (देहली) के आलिम तथा विद्यार्थी छोटे से बड़े तक धनवान तथा समृद्ध हो गये। वे फ़क़ीरी, उपवास, दरिद्रता तथा निर्धनता से मुक्त हो गये। उपर्युक्त समूह के बहुत से लोग जिनके पास ठीक से जूतियाँ तक न थीं सुल्तान फ़ीरोज शाह की अनुकम्पा के कारण उत्तम वस्त्र धारण करने लगे, चुने हुये घोड़ों पर सवार होने लगे। वे अधिकतर धर्म की शिक्षा तथा शरई आदेशों की शिक्षा देने में तल्लीन रहते थे तथा धर्म (इस्लाम) को आश्रय देने वाले बादशाह की आयु की वृद्धि की ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे।

(५६०) क़िरअत[1] के ऐसे अध्यापकों, हाफ़िज़ों, मुज़क्किरों, सुलेख लिखने वालों, मुक़रियों,[2] अज़ान देने वालों, (मक़बरों के) मुजाविरों, सेवकों तथा फ़र्राशों, जिनके पास जीविकासाधन तथा कोई इदरार एवं वज़ीफ़ा न रहा था और जो दरिद्रता तथा उपवास करके जीवन व्यतीत करते थे और निराश हो चुके थे, उनमें से प्रत्येक संसार के सुल्तान फ़ीरोज शाह की अनुकम्पा से १०००, ५००, ३०० तथा २०० तन्के प्राप्त करने लगा और प्रत्येक जीविकोपार्जन की ओर से संतुष्ट हो गया। उन्हें कोई आवश्यकता, व्याकुलता तथा परेशानी न रही। रातदिन वे मुहम्मदी धर्म के नियमों को उन्नति देने में तल्लीन रहने लगे और हृदय से संसार के बादशाह तथा शाहज़ादों के जीवन वृद्धि की (प्रार्थना) करने लगे।

शहर (देहली) तथा आसपास की खानक़ाहें और प्रान्तों के चार-पाँच कोस के क़स्बे तक की सभी खानक़ाहें, जो वर्षों से बड़ी दुर्दशा में पड़ी थीं और जिनमें पक्षी तक उड़कर न पहुँचता था तथा प्यासा जल तक न पाता था, सुल्तान फ़ीरोज शाह की अनुकम्पा से सेवकों, सूफ़ियों, धार्मिक व्यक्तियों, क़लन्दरों, हैदरियों, यात्रियों तथा दरिद्रियों से परिपूर्ण हैं। फ़ीरोज शाह के उन्नतिशील भाग्य के कारण उन खानक़ाहों को आबाद तथा उपजाऊ ग्राम प्रदान कर दिये गये हैं। १०-५-२० तथा ३० हज़ार तन्के सूफ़ियों की खानक़ाह के व्यय हेतु वज़ीफ़ों तथा यात्रियों के ज्योनार के लिये प्रदान किये गये हैं। शेख फ़रीदुद्दीन, शेख बहाउद्दीन,[3] शेख निज़ामुद्दीन[4], शेख रुक्नुद्दीन[5] तथा शेख जमालुद्दीन उच्च (निवासी) तथा कुछ अन्य प्राचीन शेखों के वंश वाले ग्राम, भूमि तथा उद्यान, पाकर फिर से अपने स्थान पर दृढ़ हो गये हैं। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की अनुकम्पा द्वारा समस्त संसार को सुख प्राप्त हो गया है। अधिकतर सूफ़ियों, खत्मियों,[6] यात्रियों तथा वज़ीफ़ा पाने वालों को वज़ीफ़े तथा भोजन बिना किसी कठिनाई के मिलता रहता है। उन सभों में से प्रत्येक संसार के स्वामी की आयु-वृद्धि के लिये पूर्ण क़ुरान का पाठ करता है। अनिवार्य नमाज़ों के उपरान्त फ़ातेहा[7]

---

१ क़िरअत : क़ुरान को उचित स्वर से पढ़ना।

२ मुक़री : क़ुरान का पाठ करने वाले।

३ बहाउद्दीन ज़करिया : मुलतान के प्रसिद्ध सुहरवर्दी सिलसिले के सूफ़ी। उनकी मृत्यु १२६२ ई० में हुई।

४ देहली के प्रसिद्ध सूफ़ी शेख निज़ामुद्दीन औलिया। इनका निधन १३२५ ई० में हुआ।

५ शेख सद्रुद्दीन आरिफ़ के पुत्र तथा शेख बहाउद्दीन ज़करिया के पौत्र।

६ क़ुरान का पाठ करने वालों।

७ क़ुरान का प्रथम अध्याय।

पढ़ते हैं और तकबीर[1] कहते हैं तथा निश्चिन्त होकर उपासना, इबादत, तस्बीह तथा (५६१) तहलील[2] किया करते हैं। संसार का स्वामी वृद्धों, वृद्धाओं, विधवाओं, अनाथों, अन्धों, विकृत शरीर वालों तथा अपाहिजों को निरन्तर तथा सर्वदा दान किया करता है। सभी लोग साधारण तथा विशेष व्यक्ति पृथ्वी के स्वामी के लिये शुभकामनायें करते रहते हैं। किसी के हृदय में कोई दुःख, विरोध, भय तथा व्याकुलता नहीं उत्पन्न होती। राज्य के धनी लोग समृद्ध होकर तथा भिखारी निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करते रहते हैं। सभी अपना जीवन सफलतापूर्वक व्यतीत कर रहे हैं। सभी सुख चैन से हैं। यदि ज़िया बरनी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का अत्यधिक दान-पुण्य तथा इदरार इनाम एवं समस्त इमलाक, मफ़रूज़ तथा मिटे हुये वक़्फ़, जो खालसे में सम्मिलित हो गये थे, इमलाक के स्वामियों की सन्तान को पुनः प्राप्त करते देखकर एवं वक़्फ़ों को वक़्फ़ करने वालों की वसीयत के अनुसार उनके पुत्रों को पाते देखकर एवं इनके अतिरिक्त लोगों को इस प्रकार इदरार, इनाम, ग्राम तथा भूमि प्राप्त करते देखकर यह लिखता है कि मैंने समय तथा युग के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान किसी को मुसलमानों को अधिकार प्रदान करने तथा मुहम्मद साहब की शरा के आदेशों का पालन करने वाला कोई अन्य बादशाह नहीं देखा है तो यह बात न्याय के विरुद्ध एवं सत्य के खिलाफ़ नहीं।

पाँचवाँ अध्याय

फ़ीरोज़ शाह के श्रेष्ठ राज्यकाल में भवन निर्माण तथा संसार के अद्‌भुत भवनों का बनाया जाना और उनसे सर्व साधारण को लाभ।

क्योंकि ईश्वर ने सुल्तान फ़ीरोज़शाह को दान की खान तथा उपकार का स्रोत बनाया है तथा उसका जन्म संसार वालों को लाभ पहुँचाने के लिए हुआ है अतः उसके शुभ राज्यकाल के प्रारम्भ में ऐसे भवनों का निर्माण हुआ जिनके समान भवन न तो राजधानी (५६२) देहली में और न अन्य इक़लीमों[3] में पाये जाते हैं। जल तथा स्थल मार्ग के यात्री फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में निर्मित भवनों को देखकर दंग रह जाते हैं।

सुल्तान फ़ीरोज़शाह के राज्यकाल की शुभ इमारतों में एक जुमा मस्जिद है जो बड़ी ही अद्‌भुत इमारत है। वह बड़ी ही भव्य है। शुभ मस्जिद के मेहराब आकाश के मेहराब से समानता का दावा करते हैं। यह कीर्त्ति, जोकि बड़ी ही महान कीर्त्ति है, ईश्वर ने इस्लाम के बादशाह द्वारा सम्पन्न कराई है। सभी मोमिन,[4] सुन्नी, एक ईश्वर को मानने वाले मुसलमान, जिन्हें नमाज़ से ज़रा भी रुचि है, इस बात का घोर प्रयत्न किया करते हैं कि जुमे की नमाज़ उसी मस्जिद में पढ़ें। जुमे के दिन नमाज़ पढ़ने वालों की अधिकता से भवन के ढके भाग, छत तथा सम्पूर्ण प्रांगण में स्थान नहीं रहता और नमाज़ पढ़ने वालों की भीड़ समीप की गलियों में पंक्तियाँ बना कर नमाज़ पढ़ती है। अन्य मस्जिदों के होते हुये इसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का प्रयत्न करना और कहाँ-कहाँ से आना, इतनी भीड़ कर लेना कि स्थान तक न रहे और समीप की गलियों में नमाज़ पढ़ें, बड़ी ही विचित्र बात है और इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर ने

१ अल्लाहो अकबर (ईश्वर महान है) का सुमिरन

२ ईश्वर के नाम का सुमिरन।

३ इक़लीम : जलवायु के प्रदेश। मध्यकालीन मुसलमान भूगोलवेत्ताओं के अनुसार संसार सात इक़लीमों में विभाजित था। बड़े बड़े प्रान्त अथवा स्वतंत्र राज्य भी इक़लीम कहे जाते थे।

४ ईमान वाले, धर्मनिष्ठ मुसलमान।

इस बादशाह के उस पुण्य कार्य को स्वीकार कर लिया है। ईश्वर इस मस्जिद तथा अन्य भवनों का निर्माण युग तथा समय के बादशाह सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के लिये शुभ तथा कल्याण-कारी बनाये। ईश्वर इसके आशीर्वाद से उसे दीर्घायु प्रदान करे।

संसार के स्वामी द्वारा निर्माण कराया हुआ दूसरा शुभ भवन मदरसये फ़ीरोज़शाही है। यह अद्भुत इमारत अलाई हौज़ के सिरे पर बनी है। अपने गुम्बदों की ऊँचाई, कला की सुन्दरता, प्रांगणों के अनुपात, बैठने के स्थानों तथा प्रयोग में आने वाले कमरों का आकर्षण एवं हृदयग्राही (खम्भों की) पंक्तियों के कारण यह भवन संसार की प्रसिद्ध भवनों से बढ़ गया है। यह ऐसी विचित्र तथा अद्भुत इमारत निर्मित हुई है कि जो कोई भी मदरसे का (५६३) स्थायी निवासी अथवा यात्री इसमें प्रविष्ट होता है तो वह सोचता है कि मानो वह स्वर्ग में पहुँच गया हो। वहाँ पहुँचते ही प्रविष्ट होने वाले के हृदय के दुःख दूर हो जाते हैं। हृदयग्राही दृश्यों को देखकर थके हुये व्याकुल प्राणियों में जीवन तथा प्रफुल्लता उत्पन्न हो जाती है। प्राचीन दुःख, दर्शकों के हृदय से निकल जाते हैं। लोग भवन पर इतने मुग्ध तथा मदरसे की हवा पर इतने आसक्त हो जाते हैं कि उन्हें अपने घरों की स्मृति नहीं रहती। वे अपनी आवश्यकतायें एवं अपने कार्य त्याग देते हैं और अपने पग मदरसे के बाहर नहीं रखते। शहर के निवासी मदरसे की हृदयग्राही वायु के कारण अपने निवास स्थान त्याग कर मदरसे के निकट अपने-अपने भवन बनवा लेते हैं। जब तक १५-२० बार वे मदरसे में नहीं आजाते उन्हें सन्तोष नहीं होता। यात्री मदरसे की हवा के कारण यहीं टिक जाते हैं और अपनी यात्रा का उद्देश्य भूल जाते हैं। उनकी यही इच्छा होती है कि वे अपने जीवन का शेष भाग यहीं व्यतीत करदें। जो यात्री संसार के विभिन्न भागों से यहाँ आते हैं वे मदरसे के अद्भुत भवन तथा वायु के आकर्षण को देखकर बड़ी-बड़ी शपथ खाकर यही कहते हैं, "हम संसार के विभिन्न भागों में चक्कर काट चुके हैं और अनेक नगर देख चुके हैं किन्तु ऐसी सुन्दरता तथा ऐसी हृदयग्राही वायु जैसी कि इस मदरसे की है हमने समस्त संसार के किसी भी भवन में नहीं पाई है। मदरसये फ़ीरोज़शाही भवन की सुन्दरता, इमारतों के अनुपात तथा आकर्षक वायु के कारण विचित्र है। यदि यह सिनमार द्वारा निर्मित कराये खूरनक़[1] तथा किसरा के महल[2] से बढ़ जाने का प्रयत्न करे तो यह उचित होगा। क्योंकि मदरसये (५६४) फ़ीरोज़शाही उत्कृष्ट कार्यों तथा उपकार की खान है अतः अनिवार्य एवं अन्य एबादतें यहाँ होती रहती हैं। पाँचों समय की सामूहिक नमाज़ यहीं पढ़ी जाती है। सूफ़ी लोग चाश्त, इशराक़, फ़ै-अज़-ज़वाल, अवाबीन तथा तहज्जुद की नमाज़ें[3] यहीं पढ़ते हैं। रात दिन ज़िक्र[4] किया करते हैं तथा बादशाह के लिए शुभ कामना एवं उसकी प्रशंसा किया करते हैं। मौलाना जलालुद्दीन रूमी जो बड़े धुरन्धर विद्वान् हैं सर्वदा लोगों के लाभ के लिए उलूमे दीनी[5] की शिक्षा दिया करते हैं; विद्यार्थियों को सर्वदा पढ़ाया करते हैं तफ़सीर,[6] फ़िक़ह[7] तथा हदीस[8] पढ़ाते हैं। नित्य हाफ़िज़ आद्योपान्त क़ुरान पढ़ने में संलग्न रहते हैं। यात्रियों

१ नोमान बिन मनज़िर द्वारा बैबिलोनिया में निर्मित कराया हुआ महल जिसका निर्माण सिनमार की देख रेख में हुआ था।
२ नौशीरवाँ किसरा का महल।
३ भिन्न भिन्न नमाज़ें जो अनिवार्य नहीं।
४ ईश्वर के नाम का सुमिरन।
५ धर्म सम्बन्धी ज्ञान।
६ क़ुरान की टीका।
७ इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार नियमावली।
८ मुहम्मद साहब की वाणी एवं उनके सम्बन्धियों आदि की वार्ता का संग्रह।

के तकबीर की ध्वनि आकाश तक पहुँचती रहती है। अज़ान देने वाले पाँचों समय अज़ान दिया करते हैं। वे इस्लाम के बादशाह के कल्याण तथा समस्त मुसलमानों की उन्नति के लिये ईश्वर से प्रार्थना किया करते हैं। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दान के कारण उपर्युक्त समूह को इदरार, इनाम तथा विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त होते रहते हैं। चाहे वे धर्मनिष्ठ मुसलमान हों, चाहे विद्यार्थी, चाहे हाफ़िज़, चाहे नमाज़ पढ़ने वाले, चाहे ईश्वर का नाम जपने वाले, चाहे साधारण लोग हों यदि वे मदरसये फ़ीरोज़शाही में निवास करना ग्रहण कर लेते हैं तो उन्हें हर प्रकार की सुविधायें तथा सुख प्राप्त हो जाता है और वे रात दिन निश्चिन्त होकर बादशाहे इस्लाम के, जिसने इस उपकार को स्थापित कराया, दीर्घायु होने की प्रार्थना किया करते हैं। यदि ईश्वर ने चाहा तो उनकी प्रार्थनायें स्वीकार भी होंगी। यदि यह शुभ भवन तथा कल्याण-कारी इमारत जोकि आलिमों, पवित्र लोगों, उपासकों, यात्रियों तथा स्थायी निवासियों के लाभ की खान है, एरम[1] जैसे अशुभ भवन से श्रेष्ठ होने का दावा करता है, जिसे अभागे शद्दाद बिन (पुत्र) आद ने बनवाया था और जिससे मानव तथा जिन्नात को कोई लाभ न हुआ, तो इसके निर्माता फ़ीरोज़ शाह के इस्लाम में दृढ़ तथा पूर्ण विश्वास के आधार पर अथवा इसमें होने वाली अत्यधिक उपासना एवं ईश्वर भक्ति और (५६५) उत्कृष्ट कार्य तथा उपकार के आधार पर कोई आलिम तथा बुद्धिमान इसके दावे के महत्त्व को घटा नहीं सकता और एरम के भवन से श्रेष्ठ होने की बात का कोई विरोध नहीं कर सकता। इसके विपरीत लोग ज्ञान, बुद्धि, धर्म एवं न्याय के आधार पर इसका दावा स्वीकार करेंगे। यद्यपि देहली में पिछले बादशाहों ने बहुत से भवनों का निर्माण कराया है और इस कार्य में अपार धन सम्पत्ति व्यय की है और वे भूतों तथा परियों के निवास स्थान हो गये हैं किन्तु जितना सौन्दर्य, आकर्षण तथा आनन्द मदरसये फ़ीरोज़शाही में है, वह बात किसी भी भवन में नहीं। इस प्रकार का सुन्दर भवन अभी तक नहीं देखा गया है।

छन्द

इस प्रकार का सुन्दर कोई भी भवन नहीं।
यदि कोई होगा तो भी इतना सुन्दर न होगा।

देहली में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की बनवाई हुई तीसरी शुभ इमारत सीरी का बाला बन्द[2] है। वह ऊँचाई में आकाश-तुल्य है। भवन निर्माण कला की सुन्दरता एवं वायु की शुद्धता को देखते हुये यह ऐसी इमारत है जिस पर संसार की सभी इमारतें ईर्ष्या करें। ललित भवनों में किसी भी भवन से इसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह बड़ा ही अद्भुत भवन है। यदि उसे महल कहा जाय तो भी उचित है, यदि खानक़ाह कहा जाय तो भी ठीक है और यदि इसे मदरसा कहा जाय तो और भी उचित है। यदि देहली में कोई भी भवन मदरसये फ़ीरोज़शाही की किसी प्रकार बराबरी कर सकता है तो सीरी के हौज़ के किनारे यही बाला बन्द है क्योंकि उनकी सुखदायी वायु लोगों को अदन (उद्यान) की हृदयग्राही वायु की स्मृति दिलाती है। दर्शकगण इस भव्य भवन से जिस ओर भी दृष्टिपात करते हैं उन्हें स्वर्ग रूपी उद्यान तथा हरियाली दृष्टिगत होती है। उस भवन की अत्यधिक सुन्दरता का उल्लेख प्रशंसा लिखने वालों की लेखनी द्वारा सम्भव नहीं। आजकल इस्लाम के बादशाह की अनुकम्पा द्वारा वहाँ बड़ा ही भव्य मदरसा निर्मित हुआ है। इमामों तथा आलिमों के नेता सैयिद नज्मुद्दीन समरक़न्दी जो बड़े प्रतापी गुरु हैं उस मदरसे के शुभ भवन में शिक्षा (५६६) प्रदान करते हैं। उनके लिये ग्राम, इदरार तथा इनाम प्रदान किये गये हैं। बहुत

१ कहा जाता है कि उसने स्वर्ग के समान एक उद्यान बनवाया था।
२ बाँध।

से विद्यार्थियों को वहाँ भोजन प्राप्त होता है और वे नित्य उपर्युक्त गुरु के अधीन धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते रहते हैं और ईश्वर से सर्वदा बादशाह के दीर्घायु होने की शुभ कामना किया करते हैं। ईश्वर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के उपर्युक्त पुण्य के स्मारकों तथा समस्त दान के कार्यों के कारण जो अगणित तथा असंख्य हैं, उसके दीर्घायु होने के कारण बनाये और भविष्य में ईश्वर के यहाँ उसका उपकार हो।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के नित्य उन्नतिशील भाग्य के कारण यमुना तट पर एक बड़े ही उत्कृष्ट स्थान पर फ़ीरोज़ाबाद के दृढ़ नगर की नीवें पड़ी है। यदि मैं फ़ीरोज़ाबाद नगर, जो कुछ ही समय में बड़े-बड़े नगरों को लज्जित करने वाला हो जायगा के भवनों के हृदय ग्राही गुणों, आकर्षक वायु तथा अत्यधिक लाभों का उल्लेख प्रारम्भ करदूँ तो मुझे एक पृथक् ग्रन्थ की रचना करनी पड़ जायगी। एक अन्य दृढ़ नगर का हाँसी, सर्सुती तथा फ़ीरोज़ाबाद के मध्य में फ़तहाबाद के नाम से निर्माण हो रहा है। उसने एक दृढ़ क़िला भटनीर के क्षेत्र में निर्मित कराया है और वह पूरा हो चुका है।

ईश्वर के दासों के लाभार्थ उसने कहाँ कहाँ से नहरें खुदवाई हैं जिनमें जल का प्रवाह है। वे नहरें उन शहर पनाहों के नीचे से निकाली गई हैं। उन नहरों से उद्यान, अँगूर के बग़ीचे तथा खेत सींचे जाने लगे हैं। जंगल तथा मैदान जो बबूल के काँटों से भरे थे उद्यान तथा फुलवारी बन गये और नित्य उनमें वृद्धि होती जाती है। ईश्वर इस आयत के अनुसार "जो कि मानवजाति के लिये लाभप्रद है वह पृथ्वी पर शेष रहता है" सुल्तान फ़ीरोज़-शाह को जो विशेष तथा साधारण व्यक्तियों का आश्रय दाता है राजसिंहासन पर अत्यधिक वर्षों तक वर्त्तमान रखे।

छठा अध्याय

रेगिस्तानों तथा जंगलों में, जहाँ के लोग जल के अभाव तथा तृषा के कारण मर जाते थे, सर्वसाधारण के लाभार्थ नहरों का खुदवाया जाना।

(५६७) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के शुभ राज्यकाल में गंगा तथा यमुनानदी के समान लम्बी लम्बी नहरें ५०-५०, ६०-६० कोस से खोदी गईं। वे जंगलों तथा रेगिस्तानों के बीच से, जहाँ पहले कोई हौज़ तथा कुआँ न था, गुज़रतीं। अब उन स्थानों पर नावों की आवश्यकता पड़ने लगी है। लोग नहरों की अधिकता तथा उनके चौड़े होने के कारण अब नावों में बैठकर यात्रा करने लगे। देहली के इतने सब बादशाहों में से इस पुण्य कार्य की योग्यता ईश्वर ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को प्रदान की और अब इस पुण्य द्वारा लोगों को प्यास तथा जल के अभाव से मुक्ति प्राप्त हो गई है और इनके द्वारा उत्तम प्रकार के अनाजों तथा गन्ने की खेती होने लगी है और उद्यान तथा अंगूर के बग़ीचे लग गये हैं। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सुप्रबन्ध तथा उत्तम प्रयत्नों के फलस्वरूप उजाड़ जंगलों तथा जलते हुये रेगिस्तानों में लम्बी लम्बी नहरें पैदा हो गई हैं। जिस भूमि पर यात्री तथा मार्ग चलने वाले जल के अभाव तथा प्यास के भय से पाँव भी न रख सकते थे और मश्क तथा जल के भरे बर्तन लेकर चलते थे, तथा बहुत से उस भूमि पर जल के न मिलने तथा प्यास के कारण मर जाते थे, और उन लम्बे लम्बे जंगलों तथा उजाड़ वनों में जहाँ कोई हौज़, तालाब अथवा कुआं न था और जहाँ सिंह तथा बन-पशु प्यास के कारण मर जाते थे, और पक्षी प्यास के कारण प्राण त्याग देते थे और उन पर्वतों में जहाँ जल की एक बूँद भी न मिलती थी जिससे

पक्षी अपनी चोंच भिगो सकें और पशुओं के जीवित रहने के लिये जहाँ हरियाली का कोई (५६८) साधन न था, वहाँ फ़रसंग[1] के फ़रसंग खोद डाले गये हैं और गंगा यमुना के समान नहरें बहने लगी हैं। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के आदेशानुसार जो नहरें खोदी गई हैं उनके किनारे यदि बड़ी-बड़ी सेनायें पड़ाव डाले क़रनों तक पड़ी रहें तो भी उनके कारण किसी में भी जल की कमी न होगी। ईश्वर ही जानता है कि कुछ समय में उन नहरों के किनारे कितने हज़ार ग्राम बस जायेंगे। प्रजा के कृषि करने तथा जोतने बोने के कारण उन ग्रामों में न जाने कितने प्रकार के उत्तम अनाज तथा उत्तम वस्तुएँ उत्पन्न होने लगेंगी। उन स्थानों पर अनाज न जाने कितना सस्ता हो जायगा। इस समय जो कृषि वहाँ होती है तथा जो उद्यान वहाँ लगाये गये हैं उनसे बहुमूल्य वस्तुयें पैदा होती हैं। उस तिथि से जब से कि हिन्दुस्तान आबाद हुआ इन स्थानों पर मवेशियों के लिये जल की कमी के कारण ग्रामों के स्थानों पर तिलौंदी हुआ करते थे। तिलौंदी बैलगाड़ियों के समूह को कहते हैं। प्रजा को जिस स्थान पर भी थोड़े से जल का पता चल जाता है वहाँ वे अपनी बैलगाड़ियाँ तथा मवेशी ले जाते हैं और वहीं वर्ष के बारह महीने अपनी स्त्री तथा बच्चों के साथ निवास करते हैं। अब फ़ीरोज़ शाह के सुशासन के कारण वहाँ की प्रजा ग्राम बसा लेगी तथा घर बनवा लेगी। वे तथा उनकी स्त्रियाँ एवं बालक गाड़ियों के नीचे जीवन व्यतीत करने के कष्ट से मुक्त हो जायेंगे। मोठ तथा तिल के स्थान पर, जो वे उस भूमि पर बोया करते थे और जिन्हें वे मैदानों में रखते थे, अब वे जल के कारण गन्ना, गेहूँ तथा चना बोने लगेंगे और अपने घरों में ले जाया करेंगे। उनके मवेशी नदी रूपी नहरों की अधिकता के कारण हज़ार गुना बढ़ जायेंगे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की अनुकम्पा द्वारा उस भूभाग की प्रजा समृद्ध हो जायेगी और वालियों तथा मुक़्तों को ग्रामों के आबाद होने के कारण सुशासन में सुविधा होगी और ख़राज[2] तथा कर स्थायी रूप से प्राप्त कर सकेंगे। उस ओर की प्रजा जिसने गन्ना, गेहूँ, चना मेवा तथा (५६९) बाग़ के फूल अपनी आँखों से न देखे थे, और जो केवल (इनके विषय में) कानों से सुना करते थे तथा गेहूं, चना, मिश्री, व्यापारी देहली तथा देहली के आसपास से कपड़े के समान ले जाते थे और कपड़े के मूल्य पर बेचते थे तथा जहाँ के लोग मिश्री न ख़रीदते थे और विवाहों तथा पहुनाई के अतिरिक्त गेहूँ की रोटी[3] न खाते थे, अब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की नहरों के जल के बाहुल्य के कारण गन्ना, गेहूँ, चना एवं विभिन्न प्रकार की उत्तम वस्तुयें बोने लगे और समृद्ध रहने लगे। वे अपने अपने घरों को नाना प्रकार की उत्तम वस्तुओं से परिपूर्ण रखते थे। जिस प्रकार शकर, मिश्री, गन्ने, गेहूँ तथा चने का राजधानी देहली के आसपास से व्यापारिक सामग्री के समान इस ओर आयात होता था उसी प्रकार इस भू-भाग से अन्य प्रदेशों को जाने लगेगा। एक संसार तथा विश्व सुख तथा आनन्द-पूर्वक धन-धान्य सम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करने लगेगा। उस ओर की प्रजा तथा सर्वसाधारण संसार को शरण प्रदान करने वाले सुल्तान के, जो इस प्रकार के सार्वजनिक कार्यों का संस्थापक है, दीर्घायु होने की शुभ कामनायें करते रहेंगे। फ़ीरोज़ शाह का गुणगान तथा यश-गान क़यामत तक होता रहेगा। उसका गुण-गान तथा यश-गान क़यामत तक क्यों न होता रहे जब कि जिन मरु-भूमियों में काँटेदार झाड़ियों के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु उत्पन्न न होती थी, और जिन ज़मीनों पर फ़रसंगों तक इन्द्रायन, बबूल तथा आग[4] के वृक्ष हुआ

१ फ़रसंग, फ़रसख़ : तीन मील के बराबर होता था। प्रत्येक मील, ४००० गज़ का तथा प्रत्येक गज़ २४ अंगुल का होता था।

२ ख़राज : भूमि कर।

३ मूल पुस्तक में नान व हिन्ता है किन्तु इसे 'नाने हिन्ता' गेहूँ की रोटी होना चाहिये।

४ एक प्रकार का विषैला वृक्ष।

करते थे, वहाँ नहरों के जल के बाहुल्य के कारण अत्यधिक कृषि, खेती उद्यान तथा अंगूर की बेलें होने लगेंगी। बाटिकायें, उद्यान, गन्ने और गेहूँ दृष्टिगोचर होने लगेंगे। उन बाटिकाओं तथा उद्यानों में लाल गुलाब, हज़ारा गेंदा, करना[1] के फूल तथा सेवती उगने लगेंगे। अनार, अंगूर, सेब खरबूज़ा, मीठा नीबू, जन्हेरी,[2] अनजीर, नीबू, करना, झवानक, आम, (५७०) बाक़ला तथा पोस्ता उगने लगेंगे। काला गन्ना तथा पौंडा, उद्यानों में बोया जाने लगेगा। खिरनी, जामुन, इमली, बड़हल, जटा-माँसी, पीपल तथा गुल[3] के वृक्ष लगाये जाने लगेंगे। फ़ीरोज़ शाह की बढ़ती हुई समृद्धि के कारण निकट के सनों ही में न कि देर में इस भू-भाग में इतनी अधिक उत्तम वस्तुयें उगने लगेंगीं कि बाहुल्य के कारण बिकने के लिये देहली में जाने लगेंगीं। नहर खुदवाना बड़ा ही विचित्र कल्याण-कारी कार्य है। इससे ईश्वर के दासों को सहस्रों लाभ प्राप्त होते रहते हैं तथा भविष्य में भी प्राप्त होते रहेंगे। जितने दिन व्यतीत होते जायेंगे, लोगों के लाभ में वृद्धि होती जायगी। जिस भू-भाग पर यात्री कई-कई दिन तक तयम्मुम[4] करके नमाज़ पढ़ते थे, इसके उपरान्त पाँचों समय की नमाज़ स्नान करके पढ़ने लगेंगे। जो लोग लू के भय से, जो उन मार्गों में चला करती है, रात्रि में यात्रा किया करते थे, तथा अपनी ग्रीवा में प्याज़ लटकाये रखते थे, तदुपरान्त सूर्य की उपस्थिति में यात्रा किया करेंगे और उन्हें किसी भी दशा में छागल, जल से भरी हुई छोटी अथवा बड़ी मशक ले जाने की कदापि आवश्यकता न पड़ा करेगी। समस्त जिन्नात[5] तथा मनुष्य इस उत्कृष्ट उपकार के कारण जिससे सर्वसाधारण का कल्याण होगा, संसार के स्वामी के लिये शुभ कामनायें करते रहेंगे। सिंह के प्रकार के पशु, बन पशु तथा पक्षी जिनकी प्यास के कारण बड़ी दुर्दशा हो जाती थी (सुल्तान) के दीर्घायु होने की शुभ-कामनायें करते हैं तथा करते रहेंगे। यह ऐसा उपकार है जो वर्षों तथा क़रनों तक ईश्वर के दासों के मध्य में रहेगा और इस्लाम के बादशाह के दीर्घायु होने का कारण बनेगा। मुहम्मद साहब ने जिस चीज़ को सदक़ये जारिया[6] कहा है और जो वर्षों तथा क़रनों तक लोगों के मध्य में वर्त्तमान रहता है, वह बाह्य तथा वास्तविक रूप से नहरों का खुदवाना है जो सर्वदा चलता रहता है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के नहर खुदवाने से इतने अधिक लाभ प्राप्त हैं कि इनका उल्लेख सम्भव नहीं।

मैंने, जो इस तारीखे फ़ीरोज़शाही का संकलन-कर्त्ता हूँ, इस प्रकार के सर्व साधारण के हित तथा कल्याण के कार्य, जिससे समस्त मनुष्यों तथा जानवरों को लाभ प्राप्त होता है (५७१) और क़रनों तथा कालों तक प्राप्त होता रहेगा, जैसे कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्य-काल में देखे अपने जीवन काल में अन्य बादशाहों के समय में नहीं देखे हैं। मैंने इस इतिहास में लिखा है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समान बादशाह, जोकि नैतिकता-पूर्ण बातों, दानशीलता तथा उत्कृष्ट गुणों का भंडार है, मुझे याद नहीं कि देहली में सिंहासनारूढ़ हुआ हो। ईश्वर ने समस्त बादशाहों में से इस युग तथा काल के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को इतने कल्याण एवं उपकार के कार्य करने की योग्यता प्रदान की जिनमें से प्रत्येक के द्वारा सर्व व्यापी

१ एक प्रकार का नीबू।

२ इसके विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

३ यह छापे की अशुद्धि है। यहाँ कुछ और होना चाहिये था।

४ तयम्मुम : जल के अभाव में मिट्टी पर हाथ मार कर पवित्र होना।

५ जिन्नात : मुसलमानों के विश्वास के अनुसार एक तैजस योनि।

६ ऐसा उपकार जिससे लोगों को निरन्तर लाभ होता रहे।

तथा अत्यधिक लाभ प्राप्त होते रहते हैं। उसने उसे अत्यधिक सौभाग्य एवं नाना प्रकार की उत्कृष्ट वस्तुयें प्रदान की हैं।

अध्याय ७

नियमों की दृढ़ता जिनके पालन से सुल्तान फ़ीरोज शाह की राज्य व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध शीघ्र सुचारु रूप से चलने लगा और उपद्रव, अशान्ति, उथल-पुथल तथा परेशानी जो नाना प्रकार के अत्याचारों के कारण देश में उठ खड़ी हुई थी, उसके सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में ही सुव्यवस्था तथा सुप्रबन्ध के कारण ठीक हो गई। इसका निरीक्षण राजधानी देहली एवं राज्य के प्रदेशों के समस्त साधारण तथा विशेष व्यक्तियों ने किया था।

युग तथा काल के सुल्तान फ़ीरोज शाह के सिंहासनारूढ़ होने के पूर्व हिन्द तथा सिन्ध के प्रदेशों में, क्या अकाल, क्या संक्रामक रोग, क्या विद्रोह एवं उपद्रव, क्या कठोर दंडों (मृत्यु दंडों) की अधिकता, क्या सर्वसाधारण की घृणा के कारण-हलचल मची हुई थी और जन साधारण में अशान्ति फैल गई थी। सर्व साधारण तथा विशेष व्यक्ति, बुद्धिमान, दरवेश, नवीसिन्दे, सेना वाले, प्रतिष्ठित तथा साधारण लोग, कमीने तथा कुलीन, स्वतंत्र तथा बाज़ारी, व्यापारी, कृषक, काम करने वाले और बेकार सभी दुर्दशा तथा परेशानी में ग्रस्त थे। प्रत्येक (५७२) समूह तथा वर्ग में उथल-पुथल और परेशानी फैली हुई थी। प्रत्येक क़ौम तथा गरोह में विरोध तथा विद्रोह उत्पन्न हो गया था। कुछ लोगों का अकाल के कारण विनाश हो गया और कुछ व्यापक रोगों के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। कुछ लोगों ने कठोर दंड (मृत्यु दण्ड) के कारण प्राण त्याग दिये। कुछ लोग घर बार छोड़ कर दूर दूर के स्थानों को चले गये और परदेश तथा दीनता स्वीकार कर ली। कुछ लोग पर्वतों तथा जंगल के आंचलों में घुस गये। युग तथा काल के सुल्तान फ़ीरोज शाह ने, जो हज़ार वर्ष तक राज्य व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध करता रहे, अपने सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में कुछ अधनियमों को दृढ़ बना कर उन अव्यवस्थित एवं परेशान तथा शान्ति से शून्य प्रदेशों को इस प्रकार सुव्यवस्थित एवं सुशासित कर दिया कि मानो इन प्रदेशों में अकाल, संक्रामक रोग, कठोर (मृत्यु) दंड, उपद्रव, विद्रोह तथा घृणा कदापि व्यापक न रही हों। युग तथा काल के सुल्तान फ़ीरोज शाह के सौभाग्य तथा प्रताप के कारण हिन्दुस्तान के विस्तृत प्रदेशों में, पूर्व से पश्चिम, दक्षिण से उत्तर तक अत्यधिक सुसंघटन, आबादी, कृषि, उद्यान, अंगूर की बेलें, खेत, लाभ, मुनाफ़ा, शान्ति, संतोष, निश्चिन्तता, समृद्धि, आराम, प्रफुल्लता, आनन्द उल्लास, भोग-विलास, सफलता तथा रौनक़ व्यापक थीं। संसार वाले इस सौभाग्यशाली राज्य में अपने व्यवसाय तथा परिश्रम में सफल होते रहते थे।

सुल्तान फ़ीरोज शाह ने राज्यव्यवस्था को दृढ़ बनाने के लिए पहला नियम यह बनाया कि उसने कठोर (मृत्यु) दंडों का परित्याग कर दिया। सुल्तान फ़ीरोज शाह के समृद्ध राज्य-(५७३) काल में किसी भी एकेश्वरवादी, मुसलमान, मोमिन, सुन्नी, आज्ञाकारी, ज़िम्मी, पीड़ित, दरिद्र, धर्मनिष्ठ तथा अधर्मी को राजधानी के द्वार के समक्ष कठोर दंड (मृत्यु दंड) नहीं दिया गया। भूमि से मनुष्यों की उपज होती थी तथा आकाश से मनुष्यों की वर्षा होती थी। अपार जन समूह तथा प्रत्येक वर्ग एवं गरोह के अत्यधिक लोग राजधानी देहली में पैदा हो गये थे और प्रदेश नये सिरे से आबाद तथा समृद्ध हो गये थे। संसार वालों को शान्ति प्राप्त हो गई थी।

मैं ज़िया बरनी, जो इस तारीखे फ़ीरोज़शाही का संकलनकर्त्ता हूँ और जिसकी अवस्था ७४ वर्ष को, जो ढाई क़रन होते हैं, पहुँच चुकी है, जिस किसी भी जुमा मस्जिद में जाता हूँ, अथवा जिस ईद की नमाज़ पढ़ने जाता हूँ अथवा जिस घर में भी प्रविष्ट होता हूँ, तो जन समूह की अधिकता तथा लोगों की सुख शान्ति को देख देख कर चकित हो जाता हूँ। जिस समूह अथवा वर्ग को देखता हूँ तो (समझ में नहीं आता) कि इतने उपयोगी लोग कहाँ थे और कहाँ से उत्पन्न हो गये। मैं आलिमों, शेखों, सूफ़ियों विद्यार्थियों, मक़बरे के रक्षकों, एकान्तवासियों, ज़ाहिदों,[1] आबिदों, हैदरियों तथा क़लन्दरों को इतनी बड़ी संख्या में देखता हूँ किन्तु एक को भी नहीं पहचानता और उन्हें मैंने कभी भी नहीं देखा था। मैं बहुत से अमीर, सिपहसालार, सेनानायक तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति देखा करता हूँ। बहुत से नवीसिन्दे जो नाम मात्र को रह गये थे और अनक़ा[2] तथा कीमिया[3] हो गये थे अधिकांश दृष्टिगत होते रहते हैं। युग तथा काल के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के न्याय तथा परोपकार के बाहुल्य एवं अत्यधिक प्रेमभाव तथा कृपा और अत्यन्त मर्यादा के कारण इतने अधिक उपयोगी मनुष्य एकत्र हो गये हैं और इतना जन समूह इकट्ठा हो गया है कि मुझे स्मृति नहीं और न मैं जानता हूँ कि किसी भी युग अथवा काल में इतने अधिक लोग इस प्रकार आराम से तथा धन-धान्य सम्पन्न होकर निश्चिन्त एवं शान्ति से जीवन व्यतीत करते हों। अन्य बुद्धिमान लोग भी जानते हैं कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के न्याय तथा परोपकार की प्रसिद्धि, सुशीलता तथा मर्यादा की प्रसिद्धि, कृपा तथा स्नेह की ख्याति से वे लोग जो जा चुके थे, लौट आये। जो (५७४) लोग छिप गये थे, वे प्रकट हो गये। भागे हुये लोग, लौट आये। जो लोग छिन्न-भिन्न हो गये थे वे एकत्र हो गये। जो लोग भयभीत हो गये थे उन्हें शान्ति प्राप्त हो गई। जो लोग परेशान हो गये थे वे संतुष्ट हो गये। विद्रोही आज्ञाकारी बन गये। उपद्रवकारियों ने अधीनता स्वीकार कर ली। जो घृणा व्यापक थी वह कम हो गई। विद्रोह तथा उपद्रव भूमि के नीचे पहुँच गये। संसार नये सिरे से प्रसन्न तथा हर्षमय हो गया। संसार वाले समृद्ध तथा आबाद हो गये। प्रदेश पुनः सुव्यवस्थित हो गये।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का दूसरा अधनियम, जिसकी दृढ़ता से हिन्द तथा सिन्ध के प्रदेश समृद्ध हो गये, यह है कि खराज तथा जिज़्ये[4] को उत्पत्ति के आधार पर[5] वसूल करने का आदेश दिया गया। बटाई, अत्यधिक वसूली, असफल कृषि तथा काल्पनिक हिसाब किताब को प्रजा के मध्य से पूर्णतया उठा दिया। मुक़ातेआगीरों[6], मुहस्सिबों[7] तथा तौफ़ीर[8] कराने

१ त्यागी।

२ एक काल्पनिक पक्षी जो अप्राप्य है।

३ रसायन विद्या, सोना चाँदी बनाने की विद्या।

४ जिज़या : वह कर जो ज़िम्मियों से वसूल किया जाता था। इसका एक कारण यह भी था कि ज़िम्मी सैनिक सेवा से, जो मुसलमानों के लिये अनिवार्य थी, मुक्त थे। यहाँ पर जिज़्ये का अर्थ साधारण भूमि कर है।

५ बर हुक्मे हासिल।

६ मुक़ातेआगीर : किसी को ग्राम के कर का टुकड़ा करके दे देना ताकि वह निश्चित धन दे सके, मुक़ातेआ कहलाता है (दस्तूरुल अल्बाब, रामपुर पृ० १५ ब) किसी भूमि के लिये ठेके पर कर अदा करने वाले मुक़ातेआगीर कहलाते थे।

७ मुहस्सिब : भूमि के बदले में सेना भर्ती करने वाले। ऐसे लोगों को कृषि की उन्नति की कोई चिन्ता न होती थी।

८ तौफ़ीर : दीवान के कर को अत्यधिक बढ़ा देना तौफ़ीर कहलाता है (दस्तूरुल अल्बाब रामपुर १९ अ)

वालों को प्रान्तों की विलायतों तथा अक़्ताओं के निकट भी फटकने न दिया जाता। वह उसी निश्चित कर से संतुष्ट रहता था जिसे प्रजा हृदय से बिना किसी आपत्ति, कठिनाई तथा कठोरता के अदा कर सकती थी। वह कृषकों से, जो मुसलमानों के बैतुलमाल (ख़ज़ाने) के रक्षक हैं, कठोरता एवं निष्ठुरता न करता था। उपर्युक्त अधनियम की दृढ़ता से विलायतें आबाद हो गईं। कोसों तथा फ़रसख़ों तक कृषि होने लगी। जंगलों बियाबानों तथा मरु-भूमियों में कृषि तथा खेती होने लगी। खेत उद्यान तथा ग्राम एक दूसरे से मिले हुये फैल गये। सर्वसाधारण के हृदय में घृणा, जोकि आरूढ़ हो चुकी थी, एकबारगी निकल गई। ख़राज तथा जिज़ये की प्राप्ति के आधार पर वसूल होने के कारण किसी आमिल[1], मुतसर्रिफ़[2] तथा कारकुन[3] अपितु किसी वाली अथवा मुक़्ते को कोई हानि न होती थी और अक़्ताओं तथा विलायतों में (वसूल होने से) कुछ भी शेष न रहता था। पदाधिकारियों को दीवाने विज़ारत के मुतालबों[4] तथा हिसाब किताब के कारण (दंड) न भोगना पड़ता था। मुसलमान बन्दी-गृह की शृंखलाओं में जकड़े जाने, मार-पीट, अपमानित तथा तिरस्कृत होने से मुक्त थे। यह विशेषता फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल के अतिरिक्त किसी अन्य राज्यकाल में न देखी गई।

(५७५) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल का तीसरा अधनियम, जिसके दृढ़ हो जाने से समस्त प्रदेशों में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का न्याय तथा परोपकार व्यापक हो गया और अत्याचार तथा अन्याय के द्वार बन्द हो गये, यह है कि दरबार के सहायक, विश्वास-पात्र तथा पदाधिकारी और विलायतों के मुक़्ते तथा वाली सभी सदाचारी, परोपकारी, न्यायकारी तथा इंसाफ़ पसन्द चुने जाते थे और किसी भी दुष्ट, अत्याचारी तथा ईश्वर का भय न करने वाले को नेतृत्व एवं सम्मान न प्रदान किया जाता था। इस कारण कि ईश्वर ने इस युग तथा काल के बादशाह अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज़ शाह सुल्तान को नैतिकता-पूर्ण बातें, अत्यधिक दया तथा कृपा, अत्यन्त मर्यादा, सदाचार, न्याय तथा परोपकार द्वारा सुशोभित किया है अतः इस लोकोक्ति के अनुसार कि "प्रजा बादशाह के धर्म का पालन करती है" दरबार के सहायक, विश्वासपात्र, विशेष व्यक्ति तथा निकटवर्ती, और प्रान्तों के वाली, मुक़्ते सेनापति एवं सेनानायक संसार के बादशाह के गुणों तथा उसकी नैतिकता पूर्ण बातों का अनुसरण करने वाले नियुक्त हुये। उपर्युक्त अधनियम के जोकि राज्य व्यवस्था सम्बन्धी समस्त नियमों में सर्वश्रेष्ठ है सुदृढ़ हो जाने के उपरान्त, कोई भी दुष्ट, कामी, दुर्जन, अत्याचारी, नीच, क्रूर, ईश्वर का भय न करने वाला तथा बुरी आदत वाला मुसलमानों तथा ज़िम्मियों का अधिकारी न बनाया गया। सदाचारी तथा चरित्रवान दुष्टों तथा दुष्ट स्वभाव वालों के अधिकार-सम्पन्न होने के कारण दीन तथा निस्सहाय न हो पाते थे। उपर्युक्त अधनियम के उपभोग के कारण राज्य की समस्त विशेष तथा साधारण प्रजा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के प्रति सर्वदा कृतज्ञता एवं आभार प्रकट किया करती थी। सर्वदा देश की समस्त प्रजा संसार को शरण प्रदान करने वाले सुल्तान (ईश्वर उसके राज्य तथा प्रदेशों को सुरक्षित रक्खे) के प्रति अत्यधिक श्रद्धा तथा निष्ठा के कारण अपने आप को तथा अपने परिवार को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के घोड़े के पैरों के नीचे न्योछावर कर देने की अभिलाषी रहती थी।

---

१ आमिल : ग्रामों में भूमि कर वसूल करने वाले।

२ मुतसर्रिफ़ : ग्रामों में किसानों से भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी, आमिल।

३ कारकुन : भूमि कर का हिसाब किताब रखने वाला।

४ मुतालबा : वह धन जो अदा करना हो।

मैं, जोकि संकलनकर्त्ता हूँ, यदि फ़ीरोज़ शाह के समस्त पदाधिकारियों, सहायकों, सेनापतियों तथा सेनानायकों के यश का इस इतिहास में उल्लेख करूँ तो, इस कारण से कि वे बहुत बड़ी संख्या में हैं और उनकी सुख्याति इससे भी अधिक है, सम्भव न हो सकेगा; अतः (५७६) मैं उल्लेख नहीं करता किन्तु ऐसे यशस्वी व्यक्तियों की चर्चा से मैं अपने इतिहास को सुशोभित करता हूँ जिनकी प्रशंसा तथा जिनके गुणों एवं नैतिकतापूर्ण बातों की चर्चा के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं। समस्त शाहज़ादों में शाहज़ादये जहाने आज़म मुअज़्ज़म शादी खाँ (ईश्वर उसे दीर्घायु प्रदान करे तथा उसके सम्मान को बढ़ाये) है जिसमें उत्कृष्ट सदाचरण तथा शाहज़ादगी का प्रताप विद्यमान है। संसार का बादशाह उस शाहज़ादे की उत्कृष्ट आज्ञाकारिता से अत्यन्त संतुष्ट है। वकीलदरी[1] का उत्कृष्ट पद, जो दरबार के पदों में बहुत बड़ा पद है, लाखों कृपाओं तथा अन्य दया-भाव के साथ उसे प्राप्त है। वह इतना शिष्ट, सभ्य, उदार तथा सज्जन है कि क्षण-क्षण पर उसके प्रति शाही कृपा में वृद्धि होती रहती है। परमेश्वर संसार के बादशाह की दृष्टि के समक्ष उत्कृष्ट शादी खाँ को दीर्घायु तथा समृद्धि प्रदान करे।

अन्य शाहज़ादे यद्यपि खान की उपाधियों, बड़े-बड़े पदों तथा प्रसिद्ध अक़्ताओं द्वारा सम्मानित हैं, किन्तु अल्पावस्था के कारण क़ुरान पढ़ने तथा सुलेख की शिक्षा प्राप्त करने में व्यस्त हैं और अभी तक उनके पृथक् दरबार स्थापित नहीं हुये हैं और उन्हें स्वतंत्र आदेश प्रदान करने के अधिकार प्राप्त नहीं हुये हैं। उनके नव्वाब[2] शाहज़ादों की सेना तथा अक़्ताओं का कार्य करते हैं। परमेश्वर हमारे शाहज़ादों को संसार के बादशाह की दृष्टि के समक्ष दीर्घायु तथा समृद्धि प्रदान करे और प्रत्येक को किसी इक़्लीम, राज्य तथा प्रदेश का शासन प्रबन्ध प्रदान करे; (तथास्तु ! हे परमेश्वर !)। इस कारण कि संसार के स्वामी की दृष्टि के समक्ष उनकी शिक्षा तथा उनका पालन-पोषण सेनानायकी एवं सरदारी के लिए हो रहा है अतः आशा है कि वे उच्च श्रेणी तथा सरदारी तक उन्नति कर सकेंगे।

पद्य

'एक सिकन्दर के समान विश्व विजय करेगा,
दूसरा ख़िज़्र[3] के समान अमर रहेगा।
अन्य एराक़ तथा ख़ुरासान को अपने अधीन करेगा,
अन्य निर्दयी आकाश को अपनी चौखट पर पायेगा'।

(५७७) विशेष रूप से आज़म फ़तह खाँ, जो शहंशाह के नेत्रों का प्रकाश है और छः वर्ष की अवस्था में उत्कृष्ट सदाचरण से सम्पन्न तथा सरदारी एवं श्रेष्ठता के प्रताप से सुशोभित है, शाहज़ादों में एक विचित्र व्यक्ति उत्पन्न हुआ है और मुझ पर, जोकि संसार को शरण देने वाले सुल्तान का प्राचीन शुभचिन्तक है, बड़ी कृपा-दृष्टि रखता है। परमेश्वर फ़तह खाँ मुअज़्ज़म को संसार के बादशाह की दृष्टि के समक्ष वृद्धावस्था का सौभाग्य प्रदान करे और किसी इक़्लीम का शासक बनाये। (तथास्तु)।

संसार के स्वामी के भाइयों में से प्रत्येक सहस्रों साधुवाद एवं लाखों प्रशंसाओं का पात्र है। संसार को शरण देने वाले बादशाह के भाई होने के सम्मान से बढ़कर कौनसा बड़ा,

---

१ वकीलदर: शाही महल तथा सुल्तान के विशेष कर्मचारियों का प्रबन्ध करने वाला सब से बड़ा अधिकारी।

२ प्रतिनिधि।

३ ख़िज़्र: एक पैग़म्बर जिनके विषय में प्रसिद्ध है कि वे सर्वदा जीवित रहेंगे।

भव्य एवं उत्कृष्ट सम्मान सोचा जा सकता है। इस्लाम के बादशाह का सम्बन्धी होना, विशेष रूप से भाई होना, बड़ा ही उत्कृष्ट तथा उच्च सम्बन्ध है और समस्त सम्मानों में सर्वश्रेष्ठ है। इतने उत्कृष्ट सम्मान के होते हुये वे सदाचरण, दूसरों के अधिकार को पहचानने, दूसरों के अधिकार को प्रदान करने एवं स्वामिभक्ति के गुण से सम्पन्न हैं। वे कृपा की खान तथा न्याय का स्रोत हैं। उन्हें अत्यधिक उच्च श्रेणी प्राप्त है।

संसार के स्वामी के भाइयों में से एक मलिकुल मुलूकुल उमरा क़ुतुबुल हक़ वद्दीन है। वह मलिक भी है और फ़रिश्तों के समान गुण भी रखता है। वह मलिकों में सर्वश्रेष्ठ है और दरबार के सरदारों (सेनापतियों) में है। वह सदाचरण तथा प्रशंसनीय गुणों से सम्पन्न है तथा अत्यधिक कृपा, दया एवं ईश्वर के भय से सुशोभित है। सम्भवतः उसके हृदय में आजीवन किसी भी अत्याचार, कठोरता तथा अन्याय का विचार न आया होगा तथा किसी को कष्ट पहुँचा कर कभी भी कलंकित न हुआ होगा। उसको अधिकतर दान पुण्य करते तथा इस्लाम के बादशाह के उत्कृष्ट कार्यों को प्रसारित करते देखा गया है। उसके धर्म तथा देश सम्बन्धी कार्यों में सभी को विश्वास है। वह सर्वदा निस्सहायों की सहायता तथा दीनों की मदद में संलग्न रहता है। फ़रिश्तों जैसे उस गुणवान मलिक को कभी किसी ने कोई कार्य शरा के विरुद्ध करते नहीं देखा है।

(५७८) संसार के स्वामी का दूसरा भाई मलिकुश्शर्क़ फ़ख़रुद्दौला वद्दीन मुईनुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, फ़रिश्तों जैसे गुण रखने वाला मलिक इबराहीम मुअज़्ज़म नायब बारबक (ईश्वर उसके गुणों में वृद्धि करे) है। देश तथा राज्य के प्रति उसका संरक्षण तथा संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह की उसके प्रति दया तथा कृपा सूर्य के समान स्पष्ट है। इस कारण कि संसार के स्वामी की कृपा दृष्टि नायब बारबक पर अत्यधिक है, उसने उसे एक उच्च तथा उत्कृष्ट पद प्रदान करके सम्मानित किया है। उसका कर्त्तव्य प्रार्थियों की प्रार्थनायें बादशाह के कानों तक पहुँचाना है। यह ऐसा कार्य है कि जिबरील[1] भी प्रार्थियों की प्रार्थनायें बादशाह तक पहुँचाने की आकांक्षा किया करते थे। स्वामी की अपार कृपा के कारण, मलिक नायब बारबक जब कभी उत्कृष्ट राजसिंहासन के समक्ष जाता है तो सम्मानित कानों तक प्रार्थियों की प्रार्थनायें पहुँचाता है और ईश्वर के सेवकों की प्रार्थनाओं पर सुल्तान से आदेश प्राप्त करता है।

छन्द

'वह भी जिबरील के समान कार्य करता है,
संसार के स्वामी के समक्ष।'

किसी ने भी इस फ़रिश्तों जैसे गुण रखने वाले मलिक को शरा के विरुद्ध कोई कार्य करते नहीं देखा है।

उन लोगों में से, जिन्हें संसार के स्वामी ने समस्त मलिकों की अपेक्षा उन्नति प्रदान की, और खान की उपाधि, चत्र[2] तथा दूरबाश[3] प्रदान करके सम्मानित किया और जिनके प्रति सुल्तान की कृपा तथा उत्कृष्ट दरबार के प्रति जिनकी निष्ठा एवं राज-भक्ति लेखों तथा वार्त्ता में नहीं समा सकती, एक उलुग़ क़ुतलुग़े आज़म, हुमायूँ खाने जहाँ वज़ीरे

---

१ जिबरील : एक फ़रिश्ता जो मुहम्मद साहब के पास ईश्वर का संदेश ले जाता था।

२ चत्र : छत्र

३ दूरबाश : दूर रहो। वह लकड़ी जिससे चाऊश तथा नक़ीब जनसाधारण को सुल्तान के पास पहुँचने से रोका करते थे।

ममालिक मक़बूल सुल्तानी (ईश्वर उसे सर्वदा सम्मानित रखे) है जिसे छः वर्ष से राज्य के प्रदेशों की विज़ारत प्राप्त है। दीवाने विज़ारत के समस्त अधिकार तथा कार्यभार उसे प्रदान कर दिये गये हैं और उसे पूर्ण रूप से स्वतंत्र कर दिया गया है। जितनी कृपा, संसार (५७९) का स्वामी खाने जहाँ के प्रति प्रदर्शित करता है, उतनी कृपा राजधानी देहली में किसी भी बादशाह ने अपने समकालीन वज़ीर के प्रति प्रदर्शित न की होगी। वह सम्मानित दरबार का इतना बड़ा विश्वासपात्र है कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। इस कारण कि आज़म खाने जहाँ में अपने अधिकारों के पहचानने तथा (दूसरों को उनका) अधिकार प्रदान करने की अत्यधिक योग्यता पाई जाती है, अतः वह अपने आप को दरबार के तुच्छ से तुच्छ दासों से अधिक तुच्छ समझता है। वह अपनी अत्यधिक निष्ठा एवं राजभक्ति के कारण अपना घरबार बादशाह के दासों के दास के सिर पर से न्योछावर कर देने की आकांक्षा किया करता है। दीवाने विज़ारत के कार्यों का संचालन वह इस प्रकार करता है जिससे बैतुल-माल का समस्त धन खज़ाने में पहुँचता रहता है। माँग (कर) की अधिकता से अदा करने वालों को कष्ट नहीं होता।

उत्कृष्ट शुभ दरबार द्वारा जिन्हें अत्यधिक विश्वास प्राप्त है, उनमें आज़म ततार खाँ बहादुर है जो अमीरुल मोमिनीन (सुल्तान)—ईश्वर उसका सम्मान सर्वदा बढ़ाता रहे—का दास है जो सुल्तान के प्रति निष्ठा एवं राजभक्ति में समस्त मलिकों तथा अमीरों से बढ़कर है। संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह की शाही कृपा के कारण, उसे बड़ा उच्च स्थान प्राप्त है। उत्कृष्ट दरबार में उसे समस्त मलिकों की अपेक्षा उच्च स्थान हासिल है। खान जो सांसारिक सम्मान की खान है, को उच्च श्रेणी के साथ-साथ, अपनी धर्मनिष्ठता, ईश्वर की उपासना, शुद्धता, आत्मत्याग, हदीस तथा फ़िक़ह के ज्ञान में संलग्नता, विचारों की दृढ़ता तथा स्वभाव की पवित्रता के कारण, प्राचीन तथा नवीन खानों एवं मलिकों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त है। जिन लोगों ने संसार के साथ-साथ धर्म को एकत्र किया है, उनमें आज़म ततार खाँ है—ईश्वर उसके सम्मान में वृद्धि करे।

उन सम्मानित व्यक्तियों में से, जिनके ऊपर सुल्तान की अत्यधिक कृपा है, तीसरा व्यक्ति मलिकुस्सादात सद्रुस्सुदूरे जहाँ जलालुल हक़ वद्दीन किरमानी है—ईश्वर सर्वदा उसके सम्मान की रक्षा करता रहे—वह मुहम्मद साहब के पुत्र तथा हज़रत अली की आँख के प्रकाश के वंश से है और इल्मे मन्क़ूल[१] तथा माक़ूल[२] के अत्यधिक (ज्ञान के) कारण अपने काल का ग़ज़्ज़ाली[३] तथा राज़ी[४] है। धर्म (इस्लाम) को आश्रय देने वाले तथा धर्म (इस्लाम) की (५८०) रक्षा करने वाले बादशाह की अत्यधिक कृपा के कारण सद्रे सुदूरे जहाँ जलालुल हक़ वद्दीन के समय में, जोकि अपने युग का सबसे बड़ा विद्वान है, क़ज़ाये ममालिक[५] के पद (का सम्मान) प्राचीन तथा नवीन क़ाज़िये ममालिक के पदों से, जो राजधानी देहली में सद्रे जहाँ रह चुके हैं, बढ़ गया है। इस्लाम के बादशाह—ईश्वर सर्वदा उसके देश तथा राज्य की रक्षा करता रहे—ने उसे मुहम्मद साहब के शरा-सम्बन्धी कार्यों में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र

१ इल्मे मन्क़ूल : वे ज्ञान जो दूसरों के कथन पर आधारित हैं।

२ इल्मे माक़ूल : वे ज्ञान जो तर्क पर आधारित हैं।

३ हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़्ज़ाली बहुत बड़े आलिम तथा सूफ़ी थे। उनकी मृत्यु ११११ ई० में हुई।

४ इमाम फ़ख़रुद्दीन मुहम्मद राज़ी भी बहुत बड़े विद्वान थे। उनकी मृत्यु १२१० ई० में हुई।

५ सद्रुस्सुदूर, क़ाज़िये ममालिक अथवा मुख्य न्यायाधीश होता था।

अधिकार प्रदान कर दिये हैं। राजधानी तथा समस्त प्रान्तों के सभी आलिमों को इदरार एवं इनाम प्रदान करने का कार्य सद्रे सुदूरे जहाँ को सौंप दिया गया है। ये उसके दारुलक़ज़ा[1] के आदेशों के अधीन हैं। इस कारण कि युग तथा समय का सुल्तान फ़ीरोज़ शाह—ईश्वर उसे प्रसन्नता प्रदान करे—ईश्वर के रसूल (मुहम्मद साहब) के घर वालों के प्रति निष्ठा एवं अन्तिम नबी के वंश वालों से प्रेम करने में संसार के बादशाहों से बढ़ गया है और इस विषय में अत्यधिक उन्नति कर गया है अतः, क्या सद्रे सुदूरे जहाँ क्या समस्त फ़ातमी सैयिद, सभी के प्रति नाना प्रकार की कृपा तथा दया प्रदर्शित करता है। यह सैयिदों के वंश से प्रेम का कारण है कि उसने खुदावन्द खाँ अर्थात् स्वर्गीय खुदावन्द जादा क़िवामुद्दीन तिरमिज़ी को चत्र, दूरबाश तथा बादशाही चिह्न प्रदान कर दिये। उसका भतीजा मलिक सैफ़ुलमुल्क, जोकि मुहम्मद साहब के पवित्र वंश से है—संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह का अमीर शिकार है। मलिकुस्सादात वल उमरा अशरफ़ुलमुल्क, जो ज़हरा[2] के नेत्रों का प्रकाश और असदुल्लाह[3] की आँख तथा ज्योति है[4], इस्लाम के बादशाह के राज्यकाल में सम्मानित तथा उत्कृष्ट है। उसे नायब वकील दर[5] का पद प्राप्त है। क्षण-क्षण पर वह शाही कृपा द्वारा सम्मानित तथा श्रेष्ठ होता रहता है। सैयिदुस्सादात अलाउद्दीन सैयिद रसूल दाद, दरबार का विश्वासपात्र हो गया है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह उस पर कृपा-दृष्टि प्रदर्शित किया करता है। वह नाना प्रकार की शाही कृपा द्वारा सम्मानित हुआ करता है। (५८१) सुल्तान के अत्यधिक विश्वास की पवित्रता एवं कृपा के कारण राजधानी तथा राज्य के प्रान्तों के समस्त सैयिद पद, इनाम, ग्राम तथा भूमि द्वारा सम्मानित एवं उत्कृष्ट हैं और समस्त सैयिदों का पुनरुत्थान हो गया है और वे सुल्तान के दीर्घायु होने की शुभ कामनायें किया करते हैं।

जिन लोगों को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का प्राचीन दास होने तथा प्राचीन सेवाओं के कारण सम्मान प्रदान हुआ है और जो बहुत बड़े मलिक एवं सुल्तान के सहायक तथा मददगार हैं और जिन्हें बहुत बड़े-बड़े पद प्राप्त हैं, उनकी संख्या अत्यधिक है। उनमें से सभी नाना प्रकार के गुणों द्वारा सम्पन्न हैं और न्याय तथा इन्साफ़ द्वारा सुशोभित हैं। वे अपने दान-पुण्य के लिये बड़े प्रसिद्ध हैं। संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह के प्राचीन दासों को यद्यपि सम्मान तथा श्रेष्ठता प्राप्त है किन्तु कृपा, दया, न्याय तथा इन्साफ़ के अतिरिक्त कोई भी दुष्कर्म अथवा अनुचित कार्य उनके द्वारा प्रदर्शित नहीं हुआ है, विशेष कर मलिक शरफ़ एमादुलमुल्क आरिज़े ममालिक[6] बशीर सुल्तानी—ईश्वर उसके सम्मान को चिरस्थायी बनाये—प्रताप, महानुभावता, उदारता तथा कृपा द्वारा सुशोभित है। इस उत्कृष्ट गुण वाले मलिक के शुभ अस्तित्व के कारण, दीवाने अर्ज़े ममालिक[7], जो धर्म (इस्लाम) के मुजाहिदों[8] तथा इस्लाम के नमाज़ियों की जीविका का स्रोत है, सुशोभित तथा सुव्यवस्थित है। इतने

१ क़ाज़िये ममालिक का विभाग।

२ मुहम्मद साहब की पुत्री, फ़ातमा ज़हरा।

३ अली।

४ सैयिद है।

५ वकील दर का सहायक।

६ आरिज़े ममालिक अथवा अर्ज़े ममालिक: दीवाने अर्ज़ (सैन्य विभाग) का सबसे बड़ा अधिकारी। सेना की भरती, निरीक्षण तथा सेना का समस्त प्रबन्ध उसके अधीन कर्मचारियों द्वारा होता था।

७ सैन्य विभाग।

८ योद्धाओं।

वर्षों से हम तथा अन्य लोग यह देख रहे हैं कि मलिकुश्शर्क़ एमादुलमुल्क बशीर सुल्तानी, सेना पर, जो धर्म (इस्लाम) तथा देश की रक्षक है, माता तथा पिता से अधिक दयालु है। चूँकि धर्म तथा राज्य के प्रति कर्त्तव्य उसके हृदय को बड़ा ही प्रिय है और इस कारण कि वह सुल्तान के प्राचीन दासों में सब से अधिक दयालु एवं विश्वासपात्र है. अतः सेना की उन्नति-सम्बन्धी जो प्रार्थना-पत्र भी वह राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत करता है, उसे स्वीकृति का सम्मान प्राप्त हो जाता है। संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह के नित्य-प्रति बढ़ने वाले प्रताप के कारण क़रनों तथा युगों के उपरान्त इस प्रकार का एमादुल (५८२) मुल्क, जो दया तथा कृपा की खान है, सेना पर नियुक्त हुआ है।

विशेष दासों तथा सम्मानित दरबार के विश्वासपात्रों में दूसरा मलिकुल उमरा शिकारबक देहलाने सुल्तानी[1] है जो सुल्तान का प्राचीन दास है। वह मलिक बड़े ही प्रशंसनीय चरित्र, दूसरों के अधिकार पहचानने तथा राजभक्ति के गुणों का स्वामी है। वह सम्मानित दरबार का बहुत बड़ा विश्वासपात्र है और उसमें बड़ी विशेषतायें हैं। अधिकांशतः वह बादशाह के प्रासाद में निस्सहाय लोगों, दीनों तथा प्रार्थियों की फ़रियाद एवं प्रार्थनायें सम्मानित तथा उत्कृष्ट राजसिंहासन तक पहुँचाता है। क्योंकि वह प्राचीन दास है और बहुत बड़ा विश्वास-पात्र है अतः दासों को आश्रय प्रदान करने वाला बादशाह उन्हें स्वीकृति के कानों से सुनता है तथा पापी इस प्राचीन दास की सिफ़ारिश से दरबार द्वारा क्षमा प्राप्त कर लेते हैं। मलिक शिकारबक देहलाने सुल्तानी—ईश्वर उसे इस्लाम के बादशाह की दृष्टि में नित्य-प्रति प्रिय तथा सम्मानित करता रहे—मेरी, जोकि इस तारीखे फ़ीरोज़शाही का संकलनकर्त्ता है, अत्यधिक सहायता करता रहता है। कुछ बातें, जो उसी के समान व्यक्ति के लिये उचित थीं, उसने राजसिंहासन के समक्ष कहीं। मलिक शिकारबक—ईश्वर उसके सम्मान की रक्षा करे—को बहुत बड़ी सेनायें तथा अक़्तायें प्रदान की गईं। उसके पवित्र स्वभाव तथा उत्कृष्ट पौरुष्य के कारण सेना तथा अक़्ताओं की प्रजा आराम, चैन, शान्ति से तथा चिन्ता रहित होकर जीवन व्यतीत करती है। वे सुखी तथा समृद्ध हैं। वे सर्वदा संसार के बादशाह के दीर्घायु होने की शुभ कामनायें करने में संलग्न रहते हैं।

संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार द्वारा जिन लोगों को सम्मान प्राप्त हुआ है और जो सम्मानित दरबार के प्राचीन विश्वासपात्र हैं उनमें मलिक मुस्तौफ़ी इफ़्तेखारुलमुल्क गुजरात का नायब है। वह वर्षों से सम्मानित दरबार की दासता तथा सेवा कर रहा है। वह कर्त्तव्य-पालन, कर्त्तव्य पहचानने, कार्य-कुशलता, दूसरों को हानि न पहुँचाने, योग्यता तथा उत्कृष्ट विचारों के कारण इस काल के अद्भुत व्यक्तियों में से है। सुल्तान की कृपा की (५८३) अधिकता के कारण वह गुजरात प्रदेश का कई वर्षों से नायब है। उसने अपनी श्रेष्ठ योग्यता, ज्ञान की अधिकता, कृपा तथा दया के बाहुल्य तथा पूर्ण न्याय एवं इन्साफ़ के कारण उतने बड़े तथा लम्बे चौड़े प्रदेश को, जो विद्रोह तथा उपद्रव की अधिकता के कारण छिन्न भिन्न तथा परेशान हो गया था, इस प्रकार सुशासित एवं सुव्यवस्थित कर दिया कि इससे अधिक सम्भव न था। उसने उस प्रदेश का खराज इस प्रकार सुव्यवस्थित कर दिया कि प्रत्येक वर्ष कई लाख उत्कृष्ट खज़ाने में पहुँचता रहता है।

संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार द्वारा जिन लोगों को उन्नति प्रदान हुई है उनमें एक मलिक महमूद बक है। वह शेर खाँ की उपाधि द्वारा सम्मानित हुआ है। सुल्तान उसके प्रति नाना प्रकार की कृपा तथा दया प्रदर्शित किया करता है। शेर खाँ प्राचीन मलिकों

१ पुस्तक में दिमलान है किन्तु अन्य स्थानों पर देहलान है।

तथा अमीरों में से है। उसकी अवस्था ९० वर्ष से अधिक हो चुकी है और सौ के खाने में पहुँच चुकी है। वह तथा उसके पिता, जो बहुत बड़े अमीरों में थे, अपने आश्रय-दाता के प्रति हलाल-ख्वारगी भक्ति, वफ़ादारी तथा कर्त्तव्य-पालन के लिये प्रसिद्ध थे। उन्होंने कभी भी किसी विद्रोह अशान्ति, बग़ावत तथा फ़ितने में कोई सहायता प्रदान न की थी। मलिकों तथा अमीरों का यह गुण बड़ा ही उत्कृष्ट होता है। उनकी संतान को हलाल-ख्वारगी द्वारा लाभ प्राप्त होता है। हलाल-ख्वारगी द्वारा सुल्तानों का विश्वास प्राप्त होता है। वह एक विचित्र मलिक था, जिसने सिपहसालारी तथा अमीरी से लेकर मलिकी एवं खानी के पद तक, लगभग १०० वर्ष की अवस्था को प्राप्त होने तक, किसी भी विद्रोह, फ़ितने, बग़ावत तथा अशान्ति में किसी की सहायता न की थी। वह सर्वदा हलाल-ख्वारगी तथा कर्त्तव्य पहचानते हुये अपना जीवन व्यतीत किया करता था।

सम्मानित दरबार द्वारा जिन्हें उन्नति प्राप्त हुई है उनमें खाने मुअज़्ज़म ज़फ़र ख़ाँ है जिसे नियाबते विज़ारत का पद प्राप्त है। उत्कृष्ट दीवान के पदों में विज़ारत के उपरान्त यही सर्वोत्कृष्ट पद है। ईश्वर ने ज़फ़र ख़ाँ को आत्मत्याग तथा सदाचार द्वारा सुशोभित किया है तथा दयानत और सत्यता द्वारा अलंकृत किया है। उसे क़ुरान कंठस्थ है और वह क़ुरान पढ़ने में अद्वितीय है। नमाज़ में तथा नमाज़ के अतिरिक्त वह इस प्रकार क़ुरान पढ़ता है (५८४) कि श्रोतागण रोने लगते हैं और लोगों की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। वह अपनी खानी तथा मलिकी के समय उपर्युक्त गुण के कारण एक विचित्र खान तथा मलिक था। कार्य-कुशलता, योग्यता, साहस, वीरता तथा दान-पुण्य में वह अद्वितीय है।

सुल्तान ने जिन लोगों को उन्नति प्रदान की है तथा नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित किया एवं मुल्तान की अक़्ता प्रदान की है, उनमें एक मलिक ऐनुलमुल्क माहरू है। उसमें नाना प्रकार के गुण, कार्य कुशलता, योग्यता तथा सूझ बूझ पाई जाती है। उसे विद्याओं का पूर्ण ज्ञान है तथा अपने उत्तम गुणों एवं प्रशंसनीय सदाचरण के कारण वह प्रसिद्ध है। वह उन लोगों में से है जिनके आश्रय तथा कृपा के कारण "कार्य को उचित समय पर करना" प्रसिद्ध हो गया है। वह उच्च वंश से सम्बन्धित है तथा उसे उच्च पद प्राप्त है। वह शहंशाह फ़ीरोज़ शाह के दरबार द्वारा उन्नति पाये हुये लोगों तथा उसके विश्वासपात्रों में है। उसे मुल्तान प्रदेश की नियाबत प्राप्त है। संसार के स्वामी—ईश्वर उसके देश तथा राज्य की रक्षा करे—की जो कृपा-दृष्टि उसके प्रति है, उसका उल्लेख सम्भव नहीं।

दो बड़े अमीर ज़ादे जिनके पूर्वज चंगेज़ ख़ाँ के अमीर तुमन रह चुके हैं और जिनके पूर्वज सर्वदा सम्मानित तथा उत्कृष्ट होते रहे हैं, सम्मानित दरबार के विश्वास-पात्र हो गये हैं और उन पर नाना प्रकार की दया तथा कृपा की जाती है; वे रात दिन राजसिंहासन की सेवा किया करते हैं; बादशाह की बड़ी ही विशेष गोष्ठियों में वे प्रविष्ट हो सकते हैं; वे बादशाह के इतने निकटतम हैं. कि उसका उल्लेख तथा उसकी विशेषता का वर्णन नहीं किया जा सकता। क्योंकि वे श्रेष्ठता, ऐश्वर्य तथा प्रताप द्वारा सुशोभित हैं और अपने पूर्वजों की ओर से महान हैं अतः क्षण-क्षण पर सुल्तान की सेवा में उनका सम्मान बढ़ता रहता है। उन चीन तथा खता के दो बुज़ुर्ग ज़ादों में एक अमीर क़बतग़ा अमीर मेहमान[1] है। स्वर्गीय (५८५) सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह उसका बड़ा सम्मान करता था और उसे अमीर मेहमान कहा करता था। वह अनेक बार कहा करता था कि अमीर क़बतग़ा, तिमुर अमीर

१ पुस्तक में मेहमान है। अन्य स्थानों पर मेहान है।

तुमन का नाती है जिसने खान शहीद[1] को पराजित किया था। समस्त मुग़लिस्तान में उसके समान कोई अमीर ज़ादा नहीं। वह मुसलमान हो गया है। वह अमीर ज़ादा बड़ा शान्तिप्रिय है। वह इस योग्य है कि उसको सर्वदा उच्च श्रेणी प्राप्त रहे। उसके द्वारा कोई विश्वास-घात तथा कृतघ्नता दृष्टिगत नहीं हुई है। उसे इस्लाम में दृढ़ विश्वास है। उसने व्यर्थ रक्तपात नहीं किया है। उसको श्रेष्ठ एवं सम्मानित रखना अनिवार्य है।

दूसरा मलिक मुअज़्ज़म अमीर अहमद इक़बाल है। चंगेज़ ख़ाँ के मलिकों तथा अमीरों में वह अद्भुत है। अपने पूर्वजों की ओर से वह अमीर तुमन तथा अमीर ज़ादा है। वह स्वयं बड़ा सम्मानित तथा उत्कृष्ट है। वह दूसरों के अधिकार पहचानता है और उन्हें प्रदान करता है। वह दरबार के प्रति निष्ठावान तथा राजभक्त है। संसार को शरण प्रदान करने वाले हमारे बादशाह की उसके ऊपर अत्यधिक दया तथा कृपा है। वह नेतृत्व तथा सरदारी के योग्य है। धर्म (इस्लाम) की रक्षा करने वाले हमारे बादशाह द्वारा उसे सर्वदा इनाम इकराम प्राप्त होता रहता है। वह इस दरबार का जितना बड़ा विश्वासपात्र है उसका उल्लेख नहीं किया जा सकता।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के कुछ सहायकों तथा मित्रों के उल्लेख से मेरा उद्देश्य यह है कि जिस युग तथा काल में मुक़्ते तथा वाली सभी चरित्रवान तथा गुणवान हों और जिनमें न्याय, नेकी, इस्लाम के प्रति निष्ठा, ईश्वर का भय, कृपा तथा दया विद्यमान हों और जिस बादशाह के राज्यकाल में दुष्टों, दुराचारियों, अत्याचारियों तथा अवानों[2] को राज्यव्यवस्था में कोई स्थान न प्राप्त हो तो उस युग की राज्य व्यवस्था तथा उस काल का शासन प्रबन्ध बड़े ही उत्तम तथा सुचारु रूप से सम्पन्न होता होगा। उस काल के बादशाह तथा बादशाह के सहायकों (५८६) एवं मित्रों का हाल, इतिहासों में लिखने के योग्य होता है। उनके गुण तथा उनका हाल इतिहासकारों द्वारा लिपिबद्ध होकर क़यामत तक वर्तमान रहता है।

अध्याय ८

युग तथा काल के बादशाह फ़ीरोज़ शाह की कुछ दिग्विजयों का हाल तथा सम्मानित पताकाओं का लखनौती की ओर प्रस्थान तथा लखनौती विजय करना और पर्वत-रूपी हाथियों एवं उस प्रदेश से अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति का लाना तथा लखनौती के शासक का सम्मानित दरबार के प्रति निष्ठावान एवं आज्ञाकारी बनना।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह जो संसार को शरण प्रदान करने वाला बादशाह है, अपने सिंहासनारोहण के प्रथम वर्षों में शासन प्रबन्ध को सुव्यवस्थित करता था और न्याय, नेकी, शान्ति तथा उपकार द्वारा संसार वालों को सुशासित तथा सम्पन्न बना रहा था कि शुभ कानों तक यह सूचना पहुँचाई गई कि लखनौती के शासक इलियास ने उस प्रदेश को अपहरण द्वारा अपने अधिकार में कर लिया है; इस समय उसने जल से भरे हुये बंगाल से पायक तथा धानुक[3] बहुत बड़ी संख्या में एकत्र कर लिये हैं; भविष्य पर ध्यान न देते हुये उसने तिरहुट पर आक्रमण कर दिया है और मुसलमानों तथा ज़िम्मियों को घोर कष्ट दे रक्खा है

१ बल्बन का ज्येष्ठ पुत्र।

२ पुलिस के अधिकारी जो बड़ी कठोरता से आदेशों का पालन कराते थे।

३ धनुर्धारी।

और उस सीमा के प्रदेशों को परेशान कर रहा है; अपहरण द्वारा बल प्राप्त करके मस्ती, अत्याचार, जुल्म तथा लूटमार के कारण उसे अपने हाथ पाँव की सुध बुध नहीं रही है; वह उस प्रदेश को नष्ट तथा विध्वंस कर रहा है; मुसलमानों तथा प्रजा को कष्ट में डाले हुये है; व्यर्थ के विश्वासघात के कारण जो उस अत्याचारी के सिर पर सवार है, वह मुसलमानों के नगरों का विनाश कर रहा है। इस कारण कि धार्मिक (इस्लामी) जोश तथा इस्लामी सूर्य को उन्नति देने का उत्साह, ऐश्वर्य (प्रदर्शित करने का प्रयत्न) दिग्विजय तथा दूसरों को आश्रय प्रदान करने की आदत, फ़ीरोज़ शाह में, जिसे अमीरुल मोमिनीन ईश्वर के रसूल के चाचा के पुत्र[1] की ओर से समस्त शासन व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों एवं उलिल (५८७) अमरी[2] के पूर्ण अधिकार प्राप्त हुये हैं, स्वाभाविक रूप से पायी जाती है, अतः वह १० शव्वाल ७५४ हि० (८ नवम्बर, १३५३ ई०) को एक बहुत भारी सेना लेकर राजधानी देहली के बाहर निकला और लखनौती तथा पंडुवा की ओर प्रस्थान करके निरन्तर कूच करता हुआ अवध प्रदेश में पहुँचा। हिन्दुस्तान के समस्त राय, राना तथा मुक़द्दम, जो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सिंहासनारोहण के पूर्व विद्रोही तथा उपद्रवी बने हुये थे, अपने अश्वारोही तथा पदाति लेकर सम्मानित पताकाओं के पीछे-पीछे लखनौती की ओर अपनी इच्छा तथा रुचि से रवाना हुये। शाही शिविर में बहुत बड़ी सेना एकत्र हो गई। शाही पताकाओं ने अपार सेना के साथ सरयू नदी पार की। शाही पताकाओं के पहुँचने से लखनौती के शासक इलियास तथा उसके भाइयों एवं मित्रों को सूचना हो गई। वे इन सीमाओं से लौट कर तिरहुट पहुँचे। यद्यपि वह भंग के नशे में शाही सेना से युद्ध तथा मुक़ाबले की डींग मारा करता था किन्तु (शाही सेना) के सामने आते ही वह भाग खड़ा हुआ। जब इस्लाम के बादशाह ने ईश्वर की रक्षा में सरयू नदी पार की तथा आकाश का चुम्बन करने वाले शाही चत्र की छाया खरोसा तथा गोरखपुर पर पड़ी और विजयी सेनायें उपर्युक्त रायों के प्रदेश में पहुँचीं, तो पंडुवा का शासक इलियास अपना बन्दीगृह तोड़ कर शीघ्रातिशीघ्र तिरहुट से पंडुवा की ओर चला गया और उस स्थान की गढ़बन्दी करने लगा। जब शाही पताकायें गोरखपुर तथा खरोसा के क्षेत्र में पहुँचीं तो गोरखपुर का राय, जो बहुत बड़ा राय है, तथा खरोसा का राय, जो अशान्ति, उपद्रव तथा विद्रोह के पूर्व अवध की शिक़ को ख़राज अदा करते थे और जिन्होंने वर्षों से विद्रोह करके ख़राज रोक लिया था, शाही पताकाओं के पहुँचने पर उपर्युक्त शाही चौखट के समक्ष उपस्थित हुये और उन्होंने अत्यधिक उपहार के साथ दरबार में ख़ाकबोस[3] किया। गोरखपुर के राय ने अपने उपहार के साथ हाथी भेंट किये और शाही कृपा के कारण उसे चत्र, ताज, रतन जटित क़बा (खिलअत) तथा ज़ीन सहित घोड़े प्राप्त हुये। (५८८) कुछ अन्य मुक़द्दमों को भी, जो उसके राज्य में श्रेष्ठ तथा राना थे, खिलअतें पहनाई गईं। खरोसा के राय ने भी अपने राज्य (की शक्ति) के अनुसार उपहार भेंट किये तथा अपनी विलायत के मुक़द्दमों के साथ खिलअतें प्राप्त कीं। इस प्रकार (उन लोगों) ने अनुग्रह के वस्त्र धारण किये।

उपर्युक्त रायों ने अपनी निष्ठा के कारण दासता स्वीकार कर ली और सम्मानित चौखट के आज्ञाकारी तथा अधीन हो गये। पिछले वर्षों के शेष कई लाख चाँदी के तन्कों को सेना के ख़ज़ाने में पहुँचा दिया और भविष्य में निश्चित ख़राज अदा करना स्वीकार किया और ख़राज के इक़रारनामे सम्मानित दीवान में दाख़िल किये। उत्कृष्ट राजसिंहासन की ओर से ख़राज

१ अब्बासी ख़लीफ़ा।

२ बादशाही।

३. अभिवादन का एक मध्यकालीन नियम जो भूमि चूम कर किया जाता था।

वसूल करने वाले नियुक्त हुये। उपर्युक्त राय अपने समस्त अश्वारोहियों तथा पदातियों सहित सम्मानित पताकाओं के पीछे-पीछे लखनौती तथा पंडुवा की ओर रवाना हुये। कुछ दिन तक सम्मानित पताकायें उपर्युक्त रायों के राज्य में ठहरीं। इन रायों ने पूर्ण रूप से आज्ञाकारिता प्रदर्शित की और आदेशों का पालन किया। उनकी अधीनता एवं आज्ञाकारिता के कारण शाही कृपा द्वारा शुभ दरबार से यह फ़रमान जारी हुआ कि विजयी सेनायें उन रानाओं के किसी ग्राम का ध्वंस तथा विनाश न करें; यदि उन्होंने किसी को दास बनाया हो तो उसे मुक्त कर दें।

जब सम्मानित पताकायें उन रायों की विलायत से लखनौती तथा पंडुवा की ओर रवाना हुईं और इलियास को सम्मानित पताकाओं के पहुँचने की सूचना मिली तो वह व्यर्थ में युद्ध करना छोड़ कर और तिरहुट से शीघ्रातिशीघ्र भाग कर पंडुवा पहुँचा; वह विजयी सेनाओं के आतंक के कारण पंडुवा में भी न ठहरा तथा एकदला[1] नामक एक स्थान में, जो कि पंडुवा के निकट है और जिसके एक ओर नदी तथा दूसरी ओर जंगल है, गढ़बन्दी करके बैठ रहा। पंडुवा से योग्य लोगों को उनके परिवार सहित लाकर एकदला में घुस गया और अपनी रक्षा में संलग्न हो गया। इस्लाम के बादशाह, मुजाहिदों तथा विजयी सेना के योद्धाओं के आतंक के कारण उसके तथा उसके अश्वारोहियों एवं पदातियों के शरीर से (५८९) प्राण उड़ गये थे और वे अपने अनुभव के दर्पण में अपनी मृत्यु देख रहे थे। वे बड़ी अशान्ति एवं असमंजस की अवस्था में एकदला में पड़े थे।

शाही पताकायें गोरखपुर से जगत पहुँचीं और जगत से सैर करती हुई तिरहुट में छाया डालने लगीं। तिरहुट का राय तथा उस प्रदेश के राना एवं ज़मींदार लोग दरबार में उपस्थित हुये और उन्होंने उपहार प्रस्तुत किये। उन्हें खिलअतें तथा सम्मान प्रदान हुये। तिरहुट प्रदेश, जिस प्रकार पहले दरबार के अधीन तथा आज्ञाकारी था और खराज अदा करता था, उसी प्रकार आज्ञाकारी तथा अधीन हो गया। इस्लामी सेना द्वारा तिरहुट प्रदेश को कोई हानि न पहुँची। शरा तथा राज्य का प्रबन्ध करने के लिये अधिकारी नियमानुसार सम्मानित राजसिंहासन की ओर से नियुक्त हुये। वह प्रदेश सुव्यवस्थित तथा सुशासित हो गया। सम्मानित पताकाओं ने तिरहुट से पंडुवा की ओर निरन्तर प्रस्थान किया। इसके पूर्व लखनौती के शासक इलियास ने पंडुवा को रिक्त कर दिया था। अपनी सेना तथा पंडुवा के लोगों को लेकर एकदला, जिसके एक ओर नदी तथा दूसरी ओर जंगल है, चला गया था। इलियास ने अपने विश्वासपात्रों तथा मित्रों से यह निश्चय कर लिया था कि वर्षा ऋतु निकट है और वह भूमि बड़ी निचाई पर है और वर्षा होने पर जल से इतनी भर जाती है और इतने बड़े-बड़े मच्छर पैदा हो जाते हैं कि शाही सेना उस स्थान पर न ठहर सकेगी और घोड़े इस स्थान के मच्छरों के डंक को सहन न कर सकेंगे; इन्हीं दिनों में वर्षा होने लगेगी और वर्षा होते ही संसार का स्वामी अपनी सेना को लेकर लौट जायगा। इस विचार तथा ख्याल से इलियास अपनी प्रजा तथा सेना सहित एकदला चला गया और उसे अपनी शरण का स्थान बना लिया।

जब इस्लामी सेना पंडुवा के पास पहुँची तो संसार के स्वामी ने आदेश दिया कि जो निस्सहाय लोग पंडुवा में रह गये हैं, उन्हें कोई भी कष्ट न पहुँचाये और इलियास के

१ Westmacott के अनुसार एकदला ग्राम दिनाजपुर ज़िले के धनजर परगने में है। यह स्थान माल्दा ज़िले में (हज़रत) पंडुवा के उत्तर में २३ मील पर है और लखनौती अथवा गौड़ के उत्तर में ४२ मील पर है (जरनल एशियाटिक सूसाइटी बंगाल, १८७४ पृ० २४४-२४५), होदीवाला, पृ० ३११-३१२

(५६०) घर तथा उद्यान को जलाया एवं विध्वंस न किया जाय और पंडुवा को कोई भी हानि न पहुँचाये। शाही सेना के अग्रिम दल के जो कुछ अश्वारोही तथा पदाति पंडुवा पहुँचे उन्होंने वहाँ के निवासियों को कोई हानि न पहुँचाई। कुछ विद्रोही पदाति, जो इलियास के घर में थे, मार डाले गये। उसके घर में जो घोड़े मिले उन्हें नष्ट कर दिया गया। सम्मानित पताकायें नदी के निकट एकदला के सामने ठहरीं। इस्लामी सेनायें उस उजाड़ स्थान पर उतर पड़ीं। राजसिंहासन द्वारा आदेश हुआ कि सेना वाले कटघर[1] तैयार करायें और नदी पार करने की तैयारी में संलग्न हों; लम्बी नौकायें तथा पुल जिस किसी से भी नदी शीघ्रातिशीघ्र पार की जा सकती हो एकत्र करें। संसार के स्वामी ने कहा कि जब नदी पार करने की सामग्री तैयार हो जायगी तो समस्त सेना को एक साथ पार करने का आदेश दिया जायगा और तब सब कुछ शाही हाथियों द्वारा पददलित कर दिया जाय, एकदला को विध्वंस करके तहस-नहस कर दिया जाय।

सेना वाले कटघर तैयार करके नदी पार करने की चेष्टा में संलग्न हो गये और शीघ्रातिशीघ्र नदी पार करने तथा एकदला को विध्वंस करने तथा एकदला के पहलवानों को बन्दी बना लेने की कामना करने लगे। संसार के स्वामी के हृदय में उसकी धर्मनिष्ठता के कारण यह बात आई कि जब सेना नदी पार करके एकदला को हाथियों द्वारा पददलित करके विध्वंस करेगी तो निस्संदेह उस भीड़ में अनेक अपराधियों तथा निरपराधियों की हत्या कर दी जायगी; विद्रोही इलियास के अपहरण के कारण अत्यधिक निरपराधी मुसलमानों का रक्तपात हो जायगा तथा सुन्नी मुसलमानों की स्त्रियाँ एवं पुत्रियाँ गुण्डों, पदातियों, धनुर्धारियों मुशरिकों तथा काफ़िरों के हाथ पड़ जायेंगी; खुल्लम खुल्ला व्यभिचार होने लगेगा; अलवी,[2] बुद्धिमान, सूफ़ी, विद्यार्थी, दरवेश, एकांतवासी, दरिद्र तथा यात्री नष्ट हो जायँगे; निरपराधियों, दीन-दुखियों की धन-सम्पत्ति सेना के गंवारों द्वारा नष्ट कर दी जायगी; शाही हाथियों द्वारा पददलित किये बिना किसी अन्य उपाय से अपहरणकर्ताओं, षड्यंत्रकारियों तथा (५६१) विद्रोहियों, जो एक स्थान पर घुस गये हैं और नदी तथा जंगल द्वारा गढ़बन्दी किये हुये हैं, का उपद्रव शान्त न हो सकेगा। संसार का स्वामी उपर्युक्त सोच-विचार में, जो उसके ईमान के फलस्वरूप था, संलग्न रहता था। प्रत्येक नमाज़ के उपरान्त वह बड़ी दीनता तथा विनयपूर्वक ईश्वर से प्रार्थना किया करता कि वह इलियास के हृदय में यह डाल दे कि वह विद्रोही तथा उपद्रवी सेना को लेकर एकदला के बाहर निकल आये और इस्लामी सेना से युद्ध करे। ईश्वर ने एक प्रातःकाल को मुसलमानों के बादशाह की प्रातःकाल की प्रार्थनायें स्वीकार करलीं। एक दिन शाही आदेश हुआ कि सेना शिविर की ओर न जाय, क्योंकि उस शिविर में सेना कई दिन से टिकी हुई थी और उसके चारों ओर बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई थी। इस कारण सेना वाले प्रसन्न हो गये। बाज़ारी तथा अन्य लोग चिल्लाते तथा शोर मचाते हुये कटघर के बाहर निकल आये और शोरगुल करते हुये उस स्थान की ओर चल दिये जो शिविर के लिये निश्चित हुआ था। इलियास तथा उसके निकटवर्त्तियों को सर्वसाधारण का शोर सुनकर यह भ्रम हुआ कि कदाचित् सेना शहर की ओर लौट रही है। क्योंकि दैवी कोप ने उसे घेर लिया था, अतः उसने लौटने के समाचार की जांच न की। भंग तथा व्यर्थ एवं दिखावे के विचार से इलियास अपने हाथियों, अश्वारोहियों तथा पदातियों को लेकर एकदला के बाहर निकला और युद्ध तथा रक्तपात के विचार से मैदान में हाथियों की पंक्तियाँ उसने आगे बढ़ा दीं। अभिमानवश इस्लामी सेना से युद्ध करने को डट गया, और

१ रक्षा के लिये एक प्रकार का लकड़ी का क़िला। पुस्तक में कंखर है।

२ सैयिद

लड़ाई प्रारम्भ करदी। उस जैसे दुष्ट ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। इस्लाम के बादशाह ने अपनी इस प्रार्थना के स्वीकार होने के कारण कि अपराधी निरपराधियों से पृथक् हो जायें और विद्रोही युद्ध करने के लिये मैदान में निकल आयें, दो रकात[1] नमाज़ पढ़ी, ईश्वर की वन्दना तथा स्तुति की और युद्ध के लिये सवार हुआ। जब इस्लाम के योद्धाओं की तथा सेना की पंक्तियों का विनाश कर देने वालों की दृष्टि उन अभागे तथा बुरे दिन वालों पर पड़ी (५९२) तो वे उसी प्रकार प्रसन्न हो गये जिस प्रकार कुशल शिकारी मृगों तथा फ़ाख़ताओं के झुण्ड को जंगल में देखकर प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें अपने थैले में बंधा हुआ समझते हैं। उन लोगों ने उन विद्रोहियों को, जो एक स्थान पर एकत्र थे, अपने घोड़ों के खुर के नीचे टुकड़े-टुकड़े तथा चकना चूर समझ लिया। क्योंकि वे सत्य तथा न्याय को अपनी ओर तथा झूठ एवं अन्याय को शत्रु की ओर समझते थे, अतः दैवी विजय तथा सहायता का अपने आपको पात्र समझते थे। वे अभागे दुष्ट कुछ बाणों के पहुंचने की दूरी तक (शाही) सेना से युद्ध करने के लिए अग्रसर हुये। दिग्विजयी बादशाह ने सेना के कुछ भागों को उन दुष्टों पर आक्रमण करने का अटल आदेश दिया। इस्लामी सेना के अजगरों ने 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाते हुये मियान से तलवारें निकाल लीं और पहले ही आक्रमण तथा पहले ही धावे में उन्होंने लखनौती के शासक इलियास की, जिसके मस्तिष्क में सरदारी का अभिमान भरा था और जो इस्लामी सेना से युद्ध करने निकला था, सेना तथा समस्त सहायकों, मित्रों, अश्वारोहियों एवं पदातियों को पराजित तथा तहस नहस कर डाला, विद्रोहियों तथा उपद्रवियों का अभिमान समाप्त कर दिया, रक्त की नदियाँ बहा दीं, युद्ध के प्रारम्भ ही में लखनौती के शासक के चत्र, दूरबाश, ढोल तथा पताका एवं ४४ हाथियों पर अधिकार जमा लिया। इलियास जो सरदारी तथा बादशाही के अभिमान में भरा हुआ था, पलक झपकाते हुये पराजित हो गया और इस प्रकार भागा कि लगाम तथा दुमची और रिकाब तथा काठी के उभड़े हुये भाग को न पहचान सका। इस्लामी सेना के ग़ाज़ी पराजित इलियास की सेना के पिछले भाग के अश्वारोहियों तथा पदातियों के सिर, वीरों का विनाश करने वाली तलवार द्वारा, इस प्रकार काटते थे जिस प्रकार अनाज से भरे हुये खेत को किसान की हंसिया काटती है। पलक झपकाते हुये उन दुष्टों की लाशों के ढेर लग गये। वे विद्रोही, उपद्रवी तथा लुटेरे इस्लाम के सम्मान के भय से इस प्रकार बहरे, अन्धे, असावधान तथा बेहोश होगये कि उन्हें अपने हाथ-पाँव की भी सुधे बुध न रही; उन्हें भागने तथा दाहिने या बायें किसी (५९३) ओर जाने का मार्ग न मिलता था। वे इस्लाम के योद्धाओं तथा धर्म के वीरों की तलवारें अपने सिरों पर खाते थे और अपने प्राण नरक के रक्षकों को सौंप देते थे। बङ्गाल के प्रसिद्ध पायक (पदाति) जो वर्षों से अपने आप को अबू बङ्गाल कहते थे और अपने आप को वीर कहलाते थे और जिन्होंने इलियास भंगी[2] के समक्ष अपने प्राण त्याग देने का संकल्प कर लिया था और जो उस पागल की रिकाब के सम्मुख दलदली बङ्गाल के रायों के विरुद्ध बड़ी वीरता का परिचय दिया करते थे, अपनी दो अँगुलियों को अपने मुँह में डाल कर सिंहों को पराजित करने वाले योद्धाओं तथा विजयी सेना के धनुर्धारियों के सामने युद्ध के समय, सावधान रहने का संकेत करते थे। उन्होंने अपनी तलवारें तथा बाण फेंक दिये, अपना माथा भूमि पर रगड़ा और तलवार का भोजन बन गये। एक घड़ी दिन भी व्यतीत न हुआ था कि समस्त युद्ध-भूमि चारों ओर लाशों के ढेर से पट गई। इस्लामी सेना विजय तथा

१ नमाज़ में खड़े होकर कुछ पढ़ने के बाद झुकना, सिज्दा करना तथा फिर उठना—इस पूरी क्रिया को रकात कहते हैं।

२ भंग खाने वाले।

सफलता पाकर और अत्यधिक लूट की सम्पत्ति प्राप्त करके बिना किसी सैनिक के एक रोम की हानि कराये हुये, सुरक्षित वापस हुई। जब सायंकाल की नमाज़ का समय आया और जब ईश्वर की सहायता से इतनी बड़ी विजय प्राप्त हो गई और पूर्ण सफलता के चिह्न दृष्टिगोचर हो गये तो बादशाह शाही शिविर को लौट गया और उसने विजयी सेनाओं को भी अपने विभिन्न विश्राम के स्थानों को लौट जाने की अनुमति देदी। लखनौती के शासक इलियास के पदाधिकारी, खान, अमीर तथा विश्वासपात्र जो बन्दी बनाये गये थे शाही शिविर के द्वार के सामने (इस अवस्था में लाये गये) कि उनके हाथ उनकी गर्दनों के पीछे बंधे थे। शाही चत्र, दूरबाश, बादशाही के चिह्न, ४४ हाथी, ज़ीन तथा बिना ज़ीन के घोड़े, जो पकड़े गये थे, लाये गये। हाथी राजसिंहासन के समक्ष उसी समय प्रस्तुत किये गये। दर्शक पर्वत रूपी गजों को देख कर आश्चर्यचकित हो गये थे। शाही गजशाले के प्राचीन पीलवानों तथा महावतों ने एक स्वर से राजसिंहासन के समक्ष शपथ लेकर निवेदन किया कि इस प्रकार के विचित्र हाथी, जिनमें से प्रत्येक लोहे का पर्वत तथा सीसे का क़िला ज्ञात होता था, किसी (५९४) भी राज्य में किसी भी देश से देहली न आये थे। जब ये हाथी राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किये जा रहे थे तो संसार के स्वामी ने उन्हें देख कर मलिकों तथा अमीरों से, जो वहाँ उपस्थित थे, कहा, "ये हाथी ही लखनौती के शासक इलियास को सङ्कट में डाले हुये थे और इन्हीं ने उसके मस्तिष्क में बादशाही का अभिमान भर दिया था; इन्हीं हाथियों के बल पर उसके हृदय में देहली की सेना से युद्ध का विचार आया करता था। अब जबकि ये हाथी उससे छिन गये हैं तो वह मूर्खता के निकट कदापि न जायगा और निष्ठा तथा मित्रता का व्यवहार करेगा और प्रत्येक वर्ष नाना प्रकार के उपहार, बहुमूल्य वस्तुयें तथा भेंट देहली भेजा करेगा। हाथी, विशेष रूप से इस प्रकार के हाथी, मस्तिष्क में व्यर्थ की बातें उत्पन्न कर देते हैं, खास तौर पर यदि वे किसी मूर्ख को प्राप्त हो जायँ। बड़े-बड़े बादशाहों ने कहा है कि 'उस बादशाह के गजशाले के अतिरिक्त जिसकी बादशाही न्याय-युक्त हो किसी अन्य के लिये हाथी रखना उचित नहीं। यदि संयोगवश किसी धृष्ट अपहरणकर्ता के हाथ कुछ हाथी पड़ जाते हैं तो अत्यधिक सङ्कट उसके मस्तिष्क में जन्म पा जाते हैं और वही उसके तथा उसके परिवार के विनाश का साधन बन जाते हैं'"। जब यह वार्तालाप समाप्त हो गई तो सुल्तान ने आदेश दिया कि हाथी शाही गजशाला तथा घोड़े शाही अश्वशाला में ले जाये जायँ। इलियास की सेना के अमीरों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के विषय में आदेश हुआ कि उन्हें सालार को सौंप दिया जाय। संसार का स्वामी उस रात्रि में देर तक जागता रहा और इस दैवी विजय के लिये ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता रहा।

दूसरे दिन विजय के उपरान्त विजयी सेना के समस्त व्यक्ति—ईश्वर उनकी सहायता करे—खास व आम, अश्वारोही तथा पदाति, मुसलमान तथा हिन्दू, साधारण लोग तथा सेना वाले एकत्र होकर शाही दरबार के समक्ष आये और उन्होंने प्रार्थना की कि उन्हें एकदला को विध्वंस करने तथा शाही हाथियों द्वारा पददलित करने और इलियास के सहायकों की खोज करने की अनुमति प्रदान की जाय। सुल्तान ने अपनी अत्यधिक धर्मनिष्ठता के कारण, सेना (५९५) वालों को एकदला को पददलित करने की अनुमति न दी। उसने कहा "अधिकांश लोग, जिन्होंने विद्रोह किया था और जो विद्रोह की खान थे, युद्ध में काम आये। हाथी, जो इलियास के अभिमान तथा राजद्रोह का कारण थे, पकड़ लिये गये। ईश्वर ने हमें सफलता तथा विजय प्रदान कर दी है। दैवी कृपा की वर्षा का समय आ गया है अतः हमने यह निर्णय किया है कि मुसलमान तथा अन्य इस्लामी सैनिक, जो इस समय तक सुरक्षित हैं, इसी प्रकार

सुरक्षित अपने-अपने घरों को वापस हों। ऐसी विजय तथा सफलता के उपरान्त अत्यधिक अभिलाशा करना उचित नहीं"। जो लोग द्वार के समक्ष एकत्र हुये थे, उन्हें लौटा दिया।

शाही पताकाओं ने विजय तथा सफलता प्राप्त करके राजधानी देहली की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर कूच करती हुई तिरहुट तथा जगत के क्षेत्र में पहुँच गईं। उस प्रदेश में वाली, नायब तथा पदाधिकारी नियुक्त किये गये। यह आम आदेश दिया गया कि इस्लामी सेना ने बंगाल की इक़लीम से जिस किसी को भी दास बनाया हो उसे उसी स्थान से मुक्त कर दिया जाय। यहाँ से सम्मानित पताकायें सरयू नदी-तट पर पहुँचीं। विजयी सेनाओं ने बड़ी शान्ति से सरयू नदी पार की और विजय की शिखर पर ज़ाफ़राबाद पहुँचीं। हिन्दुस्तान की ओर के वालियों, अमीरों, रायों तथा मुक़द्दमों को, जो लखनौती तथा पंडुवा के युद्ध के लिये शाही पताकाओं के अधीन नियुक्त हुये थे, लौटने की अनुमति प्रदान करदी गई। जब शाही पताकाओं ने कड़ा व मानिकपुर के क्षेत्र में गंगा नदी पार की तो उसने उन स्थानों के प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित लोगों को सम्मानित किया और बहुत से लोगों को अक़्तायें, मरातिब[1] तथा हशम (रखने की अनुमति) प्रदान की। कड़ा मानिकपुर के सैयिदों, आलिमों, सूफ़ियों तथा साधारण लोगों की प्रार्थनायें स्वीकार की गईं और इन स्थानों के दीनों तथा दरिद्रियों को अत्यधिक दान पुण्य किया गया।

यहाँ से, ईश्वर की रक्षा की छाया में शाही पताकायें निरन्तर कूच करती हुईं कोल में पहुँचीं। ग्रामों तथा नगरों के भिखारियों तथा दरिद्रियों को शाही दान प्रदान हुआ। सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति, एवं पदाधिकारी विजय तथा सफलता की बधाई देने तथा (५९६) शाही शिविर के स्वागतार्थ बहुत बड़ी संख्या में आये। वे सुल्तान की दया तथा आश्रय के फलस्वरूप ख़िलअत तथा इनाम द्वारा सम्मानित किये गये। आज़म हुमायूं ख़ाने जहाँ, अमीरों मलिकों, दीवाने विज़ारत के अधिकारियों, शहर (देहली) के शहनों, सद्रे सुदूरे जहाँ, क़ाज़ियों तथा सूफ़ियों सहित झज्झर तथा चन्दौस[2] तक विजय की बधाई देने तथा स्वागतार्थ आये और उसके समक्ष उन्होंने ज़मीन बोस किया।

शाही पताकाओं ने ईश्वर की रक्षा की छाया में क़बूलपुर घाट पर नदी पार की। आज़म हुमायूँ ख़ाने जहाँ ने क़बूलपुर के घाट पर उत्तम उपहार, वस्तुयें, सोना-चाँदी, अरबी तथा तातारी घोड़े, ज़ीन सहित तथा बिना ज़ीन के इतनी अधिक संख्या में भेंट किये कि वे जंगल तथा मैदान तक में न समाते थे। दर्शकों की दृष्टि विभिन्न रंगों के उपहार देख कर चकाचौंध हो जाती थी। १२ शाबान ७५५ हि० (१ सितम्बर १३५४ ई०) को एक शुभ नक्षत्र तथा समय पर शाही पताकायें इतनी बड़ी सफलता एवं विजय प्राप्त करके राजधानी में प्रविष्ट हो गईं। हाथी तथा घोड़े, जो लखनौती और पंडुवा की विजय के उपरान्त शाही कारखानों में पहुँच गये थे तथा लखनौती के शासक इलियास के अमीर, विश्वासपात्र तथा विशेष व्यक्ति, जो विजयी सेना द्वारा बन्दी बना लिए गये थे, राजधानी की आम सड़क पर लाये गये। शहर के दर्शक, ख़ास व आम, सेना वाले तथा बाज़ारी, मुसलमान तथा हिन्दू, स्त्री तथा पुरुष छोटे तथा बड़े लखनौती के लूट की धन-सम्पत्ति देखकर ख़ुशियाँ मनाते थे। शहर में क़ुब्बे[3] सजा दिये गये थे। संसार के स्वामी के इतनी बड़ी विजय तथा सफलता प्राप्त करके वापस आने पर लोग धन न्यौछावर करते थे और प्रत्येक मुहल्ले में

१ बादशाही के विशेष चिह्न।

२ दोनों स्थान बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) में हैं।

क़ुब्बे : एक प्रकार के द्वार जो राज्य की बहुत बड़ी बड़ी ख़ुशियों के अवसर पर सजाये जाते थे।

दावतें होती थीं। गलियों तथा बाज़ारों में संगीत और नृत्य होता था। क्योंकि सभी लोग सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दरबार के सेवक, दास, हितैषी तथा मित्र हैं अतः वे खुशी के मारे फूले (५६७) न समाते थे। विद्रोहियों की जो धन-सम्पत्ति लूटी गई थी, उससे सुन्नियों का हृदय बड़ा प्रसन्न था और वे उसके दीर्घायु होने की शुभ कामनायें करते थे और उसकी प्रशंसा के गीत गाते थे। संसार के स्वामी ने—ईश्वर उसका देश तथा राज्य सर्वदा सुरक्षित रक्खे—शहर के सभी निवासियों को इनाम प्रदान किया और आदेश दिया कि चाँदी की थैलियाँ जामा मस्जिद तथा खानक़ाहों में ले जायी जायँ और राजधानी के उन दीनों, दुखियों, दरिद्रियों तथा भिखारियों को प्रदान की जायँ जो रात दिन धर्म (इस्लाम) के रक्षक बादशाह की विजय तथा सफलता की प्रार्थनायें किया करते थे। दिग्विजयी बादशाह के दान पुण्य द्वारा, राजधानी के आलिमों ने इनाम, खानक़ाहों के शेखों ने फ़ुतूह तथा मुजाविरों[1] तथा एकांतवासियों ने प्रसाद प्राप्त किये।

इस्लाम के बादशाह ने, विजय तथा दैवी सहायता के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिये सूफ़ियों के मज़ारों के दर्शन किये और दान पुण्य किया। राजधानी तथा प्रान्तों के निवासियों, खास व आम, के हृदय शाही पताकाओं के सुरक्षित तथा विजय और सफलता प्राप्त करके लौटने एवं लूट की धन-सम्पत्ति लाने के कारण संतुष्ट तथा प्रसन्न हो गये। उपर्युक्त विजय के उपरान्त, जो विजयी सैनिकों की वीरता द्वारा प्राप्त हुई थी, लखनौती के शासक इलियास ने विजयी सेनाओं की विजय के सम्बन्ध में जो कुछ देखना था देख लिया और वह अधीन तथा आज्ञाकारी बन गया। वह सुल्तान की मित्रता तथा उसके प्रति राजभक्ति पर गर्व करता है और दो अवसरों पर उसने अत्यधिक उपहार उस देश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हाथ भेजे हैं। उसने अमीर (सुल्तान) को सर्वाधिकार-सम्पन्न स्वीकार करते हुये एक प्रार्थना-पत्र भी भेजा है।

अध्याय ९

(५६८) युग तथा काल के सम्राट फ़ीरोज़ शाह सुल्तान को अमीरुल मोमिनीन अब्बासी ख़लीफ़ा द्वारा बड़े वैभव तथा ऐश्वर्य से दो अवसरों पर शासन का मनूशूर तथा राज्य की लवा (पताका) प्राप्त होना और उनके द्वारा संसार के स्वामी का राज्य तथा शासन को दृढ़ करना।

क्योंकि परमेश्वर ने संसार के सम्राट्, युग तथा काल के बादशाह, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को अपनी नित्यता की छाया में आश्रय प्रदान किया था, और उसे वास्तविक ईश्वर की छाया बनाया था अतः उसने अपने छः वर्ष के शासन-काल में–परमेश्वर उसके राज्य तथा देश एवं पुत्रों की क़यामत तक रक्षा करता रहे—अमीरुल मोमिनीन द्वारा दो बार राज्य का मनूशूर, बादशाही की खिलअत तथा पताका प्राप्त कीं। परमेश्वर हमारे बादशाह को, जो धर्म का रक्षक है, अमीरुल मोमिनीन के मनूशूर, खिलअत, पताका तथा खलीफ़ा के दूतों का सम्मान करने के विषय में निर्देश करता रहे। अमीरुल मोमिनीन के उपहारों का बादशाह ने अत्यधिक आदर सम्मान किया और उसने ऐसा अनुभव किया मानो अमीरुल मोमिनीन के मनूशूर तथा

१ किसी क़ब्र आदि के सेवक

खिलअत आकाश तथा मुहम्मद साहब—ईश्वर का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त होता रहे—के दरबार से आये हों। अमीरुल मोमिनीन के प्रति अत्यधिक दीनता एवं अधीनता का भाव प्रकट करने के लिये बादशाह ने उसकी सेवा में प्रार्थना-पत्र तथा उपहार भेजे।

अब्बासी खलीफ़ा के मन्शूर तथा खिलअत के आशीर्वाद से शुक्रवार तथा ईद की नमाज़ें इस्लाम के अनुयायी बहुत बड़ी संख्या में पढ़ने लगे हैं और मुहम्मद साहब—ईश्वर का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त होता रहे—के चाचा के पुत्र की आज्ञा तथा अनुमति के कारण इस भूभाग पर दैवी अनुकम्पा की निरन्तर वर्षा होती रहती है और दैवी कोप—अकाल तथा (५९९) व्यापक रोग—के द्वार बन्द हो गये हैं। उसके उत्कृष्ट विश्वास तथा इस्लाम के बादशाह द्वारा दीन परवरी व दीन पनाही (धर्म इस्लाम को आश्रय देना तथा उसकी रक्षा) के कारण उसके राज्य में विद्रोह का भय पूर्णतया समाप्त हो गया है। राज्य की प्रजा, खास व आम के हृदय दरबार के प्रति अधीनता, आज्ञाकारिता, मित्रता तथा राजभक्ति के भावों से परिपूर्ण हो गये हैं। प्रत्येक दिशा में शान्ति तथा निर्भयता का संचार हो रहा है। लोगों के हृदय से विरोध, विद्रोह, उपद्रव तथा त्रास का अन्त हो गया है। संसार एक बार फिर समृद्धि, भवन निर्माण, कृषि की उन्नति, उद्यानों तथा अंगूर की बेलों के लगवाये जाने के कारण तर व ताज़ा है तथा पृथ्वी स्वर्ग बन गई है। ईश्वर को इन सब के लिये धन्य है।

अध्याय १०

संसार के स्वामी की शिकार से, जो बादशाही का चिह्न तथा बड़े-बड़े बादशाहों का मुख्य गुण है, अत्यधिक रुचि।

शाही पताकाओं ने अनेक बार हाँसी तथा सरसुती की ओर शिकार के लिये प्रस्थान किया। प्रथम बार वे पर्वत की ओर गईं। ईश्वर प्रशंसनीय है—यदि मैं उसके शिकारों के वैभव तथा उनके बार-बार आयोजित होने के विस्तृत वर्णन में से थोड़ा बहुत भी लिखूं तो मुझे एक "शिकार नामये फ़ीरोज़शाह"[१] की रचना करनी पड़ेगी और दो बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखने पड़ेंगे। जिस प्रकार से हमने संसार के रक्षक सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को शिकार के विषय में घोर प्रयत्न करते देखा है, उस प्रकार किसी भी सुल्तान को नहीं देखा। यद्यपि सुल्तान शम्सुद्दीन (इल्तुतमिश) की शिकार से अत्यधिक रुचि के विषय में पुस्तकों में लिखा है और उस विषय में सुल्तान ग़यासुद्दीन बल्बन की श्रेष्ठता की बड़ी प्रशंसा की जाती है और इसके विषय में मैंने अपने दादा से सुना भी था और यद्यपि मैंने स्वयं अपनी आँखों से सुल्तान अलाउद्दीन खलजी की शिकार से रुचि तथा प्रेम देखा है किन्तु ये बादशाह पक्षियों का शिकार करते थे और केवल (६००) शीत ऋतु में चार मास तक बाज़ उड़ाया करते थे। जो व्यक्ति सिंहों तथा जंगली जानवरों और पक्षियों का शिकार करता रहता है और साल के १२ मास में कभी भी बिना शिकार के नहीं रह सकता, वह संसार का रक्षक सुल्तान फ़ीरोज़ शाह है। थोड़े से उन अवसरों पर जब वह शिकार खेलने उन स्थानों पर गया तो उसने जंगल में न तो कोई चीता छोड़ा और न कोई भेड़िया, नीलगाय, हिरन या बारहसिंघा, न मुझे कोई पक्षी ही हवा में उड़ता अथवा जल के निकट उतरता हुआ दिखाई देता है। अत्यधिक पशुओं की हत्या के कारण सेना के शिविर में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के शिकार के शिविर से इतना अधिक माँस आता था कि क़साइयों को बहुत समय तक गाय अथवा भेड़ की हत्या करने की आवश्यकता ही

१. फ़ीरोज़ शाह के शिकार से सम्बन्धित पुस्तक।

न पड़ती थी और न अब पड़ती है। संसार की रक्षा करने वाले बादशाह की शिकार में अत्यधिक संलग्नता के कारण अमीर शिकारान को इतनी उच्च श्रेणी प्राप्त हो गई है जितनी उन्हें कभी न प्राप्त हुई होगी और न उन्हें इतना अधिक सम्मान तथा वैभव प्राप्त हुआ होगा। आरिज़ान शिकरा[1], उनके पदाधिकारी, देख भाल करने वाले तथा समस्त बाज़ वाले शाही अनुकम्पा तथा दान द्वारा सम्मानित होते रहते हैं। उनके द्वारा नाना प्रकार का सुख भोगने के कारण उनकी संख्या सीमा से अधिक हो गई है। राजधानी के समस्त शिकार खेलने वाले बादशाह के शिकरे खाने की सेवा में प्रविष्ट हो गये हैं। वे निरन्तर शाही शिकरों को, जिनकी संख्या बहुत अधिक हो गई है तथा जो अगणित हैं, भोजन पहुँचाने में संलग्न रहते हैं।

निम्नांकित छन्द सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के शाही शिकार के शिविर में बराबर पढ़े जाया करते हैं :

"उसके बाण द्वारा रद्द कर दिये जाने का विचार करके मृग के लिये दूध रक्त के समान हो जाता है और रक्त उसके (बाण द्वारा) स्वीकार हो जाने की सम्भावना से दूध हो जाता है।

उसके दो नुकीले बाणों की गोलाई के समक्ष, सिंह बारहसिंघे की सींगों के समान अपनी पीठ सिज्दे में दोहरी कर देता है।

मैंने सुना है कि पृथवी के इस सिंह के भय तथा आतंक के कारण, आकाश का सिंह (सिंहराशी) शान्ति की प्रार्थना करने लगता है"।

अध्याय ११

फ़ीरोज़ शाह के शुभ राज्यकाल में चंगेज़ ख़ाँ के मुग़लों द्वारा कष्ट का अन्त।

(६०१) हिन्द तथा सिन्ध के सभी योग्य लोगों ने देख लिया है कि फ़ीरोज़ शाह के शुभ राज्यकाल में, चंगेज़ ख़ाँ के मुग़लों के आक्रमण का अन्त हो गया है। उनके लिये देश की सीमा में लूट तथा विनाश के लिये प्रविष्ट होना सरल नहीं और न वे मित्रता तथा राजभक्ति के बहाने ही से आकर अत्यधिक धन ले जा सके हैं।

उन्होंने दो बार साहस किया। एक बार वे सोंदरा नदी पार करके आसपास के प्रदेश में घुस आये किन्तु कुछ इस्लामी सेनाओं ने उन तुच्छ लोगों से युद्ध किया और दैवी विजय तथा सहायता के कारण, जो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की पताकाओं के साथ सर्वदा रहती है, बहुत से दुष्ट मार डाले गये और बहुत से बन्दी बना लिये गये। बन्दियों को ऊँट पर बैठा कर तथा उनके गलों में दो शाखों वाली लकड़ी डाल कर घुमवाया गया। इनमें से बहुत से दुष्टों को पराजित होकर भागते समय अपने हाथ पाँव की सुध बुध भी न रही और वे लगाम तथा घोड़े के साज़ की दुमची को भी न पहिचान सकते थे और सोदरा नदी पार करने के प्रयत्न में डूब गये।

दूसरी बार जब मुग़ल गुजरात पर आक्रमण करना चाहते थे तो वे अंधा-धुन्ध उस प्रान्त पर टूट पड़े। कुछ प्यास के कारण मर गये और कुछ की इस्लामी सेना ने हत्या करदी। बहुत से गुजरात के मुक़द्दमों के रात्रि के आक्रमण के समय नष्ट हो गये। चंगेज़ ख़ाँ के इन दुष्ट अनुयाइयों में से दस में से एक भी राज्य की सीमा न पार कर सका। परमेश्वर ने अपनी विशेष कृपा से संसार की रक्षा करने वाले, युग तथा काल के सुल्तान

१ शिकरों की देख रेख करने वाले।

तारीखे फ़ीरोज़शाही

[लेखक—शम्स सिराज अफ़ीफ़]

प्रकाशन—कलकत्ता १८९० ई०

सुल्तान फ़ीरोज शाह

(२०) सुल्तानुल आज़म फ़ीरोज़ शाह २४ मुहर्रम ७५२ हि० (२३ मार्च, १३५१ ई०) को सिंहासनारूढ़ हुआ। शम्स सिराज अफ़ीफ़ इस प्रकार निवेदन करता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सफ़ेद खाल वाला (गोरा), ऊँची नाक तथा लम्बी दाढ़ी वाला था। वह न बहुत लम्बा और न अत्यन्त छोटा था। उसके मुटापे तथा दुबलेपन में भी सन्तुलन दृष्टिगत होता था। वह एक कृपालु तथा दयालु बादशाह था। वह अत्यधिक सहनशील तथा उत्कृष्ट स्वभाव वाला था। उसमें वलीयों (सन्तों) के जैसे गुण तथा आलिमों जैसी बातें थीं। वह सेना तथा प्रजा के प्रति उदार था। शिष्टाचार में उसे मुहम्मद साहब के अनेक गुण प्राप्त थे। वह अत्यधिक सहनशील था। यदि कर्मचारी वर्ग काहिली करते तथा सैकड़ों अपहरण करते तो वह किसी को कठोर वचन से भी कष्ट न पहुँचाता था। शाह फ़ीरोज़ ने शहर फ़ीरोज़ाबाद के सामने के दरबार के महल के बड़े गुम्बद में पिछले सुल्तानों की यह प्रथा लिखवा दी थी और उसी के नीचे यह भी लिखवा दिया था कि पिछले सुल्तानों के राज्य का आधार यह छन्द था जिसे वे पथ-दर्शक मानते थे :

छन्द

'यदि तू अपने राज्य को स्थाई रखना चाहता है,
तो तलवार को विश्राम न देना चाहिये'।

उसी के नीचे सुल्तान ने अपना हाल इस प्रकार लिखवाया था कि 'यद्यपि पिछले सुल्तान इस छन्द के अनुसार आचरण करते थे किन्तु वे इस बात पर ध्यान न देते थे कि राज्य (२१) का स्थायी रहना ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। वे यह न जानते थे कि बेचारी माता कितने कष्टों से बालक को जन्म देती है; ९ मास तक गर्भ के कष्ट झेलती है; २½ वर्ष तक दूध पिलाती है; जन्म देने के कष्ट सहन करती है। एक प्राण को अचानक ले लेना उचित नहीं'। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उसी स्थान पर यह लिखा दिया था कि 'मैं इस छन्द के अनुसार आचरण करूँगा :'

छन्द

'इस बात पर दृष्टिपात कर कि किस प्रकार दयालु माता ने,
अपने उस पुत्र के लिये कितना कष्ट उठाया'।

उसी स्थान पर फ़ीरोज़ शाह ने यह गद्य लिखवा दिया था : "क्योंकि मैं इस नियम पर आचरण करता हूँ और दीनों की आवश्यकतायें न्यायपूर्वक पूरी करता हूँ अतः ईश्वर ने अपने प्रताप से तलवार के बिना ही मेरा आतंक साधारण तथा विशेष व्यक्तियों के हृदय पर ऐसा

आरूढ़ कर दिया है कि समस्त संसार मेरी ओर चला आता है"। उसके राज्यकाल के ४० वर्ष के बीच में मुग़ल सेना सिन्ध नदी से देहली की ओर न आ सकी। इस बीच में उसके दान तथा उदारता के फलस्वरूप कोई भी विरोध की अँगुली न हिला सका।

(२२) उसकी मृत्यु के उपरान्त देहली में बड़ी उथल-पुथल हो गई यहाँ तक कि मुग़लों ने इसे विध्वन्स कर दिया।......शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर[1] ने मुझ से अनेक बार यह चर्चा की थी कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शेख (सन्त) है जोकि राजमुकुट धारण किये है।

(२३) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह विजय में इतना सफल था कि जिस ओर भी मुख करता, ईश्वर के आदेशानुसार बिना तलवार के ही उस स्थान पर विजय प्राप्त हो जाती। यहाँ तक कि देहली निवासी फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में युद्ध करना भूल गये और अस्त्र-शस्त्र का कोई मूल्य ही शेष न रह गया। फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में किसी पर भी ऐसा कोई अत्याचार न हुआ जिसका न्याय न हुआ हो। सहनशीलता को सभी धर्मों में अच्छा बताया गया है विशेष कर इस्लाम में।......

(२५) यदि कोई सैकड़ों अपराध करता और उसे फ़ीरोज़ शाह के समक्ष लेजाया जाता और वह डरता काँपता उसके सम्मुख जाता तो सुल्तान फ़ीरोज़ उसे देखते ही उससे नम्रता-पूर्वक वार्त्ता करता और उसका अपराध क्षमा कर देता; चाहे किसी ने बड़े से बड़ा अपराध क्यों न किया हो वह उसे क्षमा कर देता था। सुल्तानों के निकट बड़े से बड़े अपराध प्राण सम्बन्धी हैं अथवा धन सम्बन्धी। धन सम्बन्धी अपराध यह है कि कोई पदाधिकारी किसी कार्य में राजकोष का धन नष्ट कर दे। प्राण सम्बन्धी अपराध यह है कि कोई (ईश्वर न करे) विद्रोह कर दे। इस प्रकार के अपराध सुल्तान फ़ीरोज़ शाह क्षमा कर देता था। यदि वह किसी पर क्रोध करता तो दण्ड देने के लिये उसे उस समय अभिवादन करने से रोक देता। कुछ समय उपरान्त जब वह सवारी के समय दृष्टिगत होता तो वह पूछताछ के पश्चात् उसे क्षमा कर देता। चोरों तथा ख़ूनी लोगों को, जो दूसरों का हक़ छीनते हैं, कठोर (मृत्यु) दण्ड देता था। पिछले सुल्तान राज्य-व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध में अधिक सहनशील न (२६) रहते थे क्योंकि इससे बड़ी हानि होती है; किन्तु फ़ीरोज़ शाह के ईश्वर का भक्त होने के कारण ईश्वर ने ४० वर्ष तक उसकी सहनशीलता को बड़ा ही सफल बनाये रक्खा। यदि कोई ईर्ष्या के कारण उसका अहित चाहता तो, ईश्वर उसे हीन तथा अपहरणकर्त्ता बना कर सुल्तान फ़ीरोज़ के समक्ष पहुँचवा देता। इस पर भी सैकड़ों अपराध के होते हुये भी सुल्तान फ़ीरोज़ उसको क्षमा कर देता। यदि किसी को बन्दी कराना होता तो सुल्तान इस प्रकार का आदेश उसके समक्ष न देता अपितु उसके लौट जाने पर उसके बन्दी बनाये जाने के विषय में आदेश देता किन्तु मुँह से कुछ न कहता। यद्यपि सुल्तान जलालुद्दीन को ख़ुत्बों में सहनशील कहा जाता था किन्तु सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सहनशीलता चरम सीमा को पहुँच चुकी थी।

(२७) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को राज्य के विषय में भविष्य वाणी चार सूफ़ियों (सन्तों) द्वारा प्राप्त हुई थी : (१) शेख़ फ़रीदुद्दीन के नाती शेख़ अलाउद्दीन द्वारा। इस भविष्य वाणी का उल्लेख इस तुच्छ लेखक शम्स सिराज अफ़ीफ़ ने सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह की प्रशंसा (हाल) के सम्बन्ध में विस्तार से कर दिया है। इसमें से कुछ इस स्थान पर पुनः लिखा जाता है। जब सुल्तान तुग़लुक़ दीबालपुर का मुक़्ता था, तो उसने शेख़ अलाउद्दीन से भेंट करना निश्चय किया। सुल्तान मुहम्मद तथा सुल्तान फ़ीरोज़, जो उस समय अल्पावस्था में थे, उसके

१ शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के चेले [तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १, पृ० १५४-१५७]।

साथ गये। उस समय शेख़ अलाउद्दीन के समक्ष एक बिना सिला हुआ कपड़ा आया था। शेख़ ने ४½ गज़ कपड़ा फाड़ कर सुल्तान तुग़लुक़ को, २७ गज़ कपड़ा सुल्तान मुहम्मद को तथा ४० गज़ कपड़ा सुल्तान फ़ीरोज़ को सिर पर बाँधने के लिये दिया। जब वे तीनों बाहर आये (२८) तो शेख़ अलाउद्दीन ने कहा कि 'ये लोग राज्य के स्वामी होंगे'। क्योंकि शेख़ अलाउद्दीन ने शेष कपड़ा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को दिया था अतः बादशाही उस पर समाप्त हो गई। उसकी मृत्यु के उपरान्त देहली नगर विध्वंस हो गया।

दूसरी भविष्य वाणी शेख़ शरफ़ुद्दीन पानीपती द्वारा प्राप्त हुई थी। जब सुल्तान तुग़लुक़, सुल्तान फ़ीरोज़ तथा सुल्तान मुहम्मद, शेख़ की सेवा में भेंट करने गये तो शेख़ ने अपने सेवकों से कुछ भोजन लाने के लिये कहा। शेख़ के सेवक एक प्याले में भोजन लाये। जब तीनों लोगों ने भोजन की ओर हाथ बढ़ाया तो शेख़ ने कहा कि 'तीन बादशाह एक ही प्याले में भोजन कर रहे हैं'।

तीसरी भविष्य वाणी शेख़ निज़ामुद्दीन द्वारा प्राप्त हुई थी। जब सुल्तान अल्पावस्था में था तो वह ग़यासपुर शेख़ के चरण छूने गया। शेख़ ने सुल्तान फ़ीरोज़ से पूछा "तुम्हारा क्या नाम है"? सुल्तान ने उत्तर दिया "कमालुद्दीन"। सुल्तान की पदवी कमालुद्दीन थी। शेख़ ने यह सुनते ही कहा "आयु पूर्ण सौभाग्य तथा समृद्धि के साथ"। अन्य भविष्य वाणी शेख़ (२९) नसीरुद्दीन महमूद द्वारा प्राप्त हुई थी। जब सुल्तान मुहम्मद, तग़ी का पीछा करने के लिये थट्टा गया तो शेख़ नसीरुद्दीन को भी अपने साथ ले गया। जब सुल्तान मुहम्मद का थट्टा में निधन हो गया और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बादशाह हुआ तो शेख़ नसीरुद्दीन ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पास सन्देश भेजा कि 'इन लोगों के साथ न्याय करोगे अथवा इन मुट्ठी भर दीनों के लिये कोई दूसरा अधिकारी अल्लाह से माँगा जाय'? सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने कहला भेजा कि "मैं सहनशीलता तथा न्याय से कार्य करूँगा"। शेख़ ने यह सुन कर उत्तर भेजा "यदि तू ऐसा करेगा तो मैंने भी ईश्वर से तेरे लिये ४० वर्ष तक राज्य करने की प्रार्थना की है। कुछ लोगों का कथन है कि शेख़ नसीरुद्दीन महमूद ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के लिये ३९ छुहारे भेजे थे।

(३०) मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी ने तारीखे फ़ीरोज़शाही में सुल्तान ग़यासुद्दीन बलबन के राज्यकाल के आरम्भ से लेकर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल के छठे वर्ष के अन्त तक का हाल लिखा है। उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का हाल १०१ अध्याय में लिखना निश्चय किया था किन्तु वह केवल ११ अध्याय ही लिख सका। क्योंकि वह इसे पूरा न कर सका अतः इस इतिहासकार ने इस इतिहास में ९० अध्याय लिखे हैं। यह ९० अध्याय ५ क़िस्म (भाग) में लिखे गये हैं और प्रत्येक भाग में १८ अध्याय हैं।

पहला भाग

सुल्तान फ़ीरोज के जन्म से सिंहासनारोहण तक १८ अध्याय में

अध्याय १

(३६) फ़ीरोज़ शाह का जन्म ७०९ हि० (१३०९–१० ई०) में हुआ। सुल्तान के पिता का नाम सिपेहसालार रजब था। वह सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ ग़ाज़ी का भाई था। इस इतिहासकार ने उनके जन्म का हाल सुल्तान तुग़लुक़ के हाल के सम्बन्ध में विस्तार से दिया है। तुग़लुक़, रजब तथा अबूबक्र, तीनों भाई सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल

में खुरासान से देहली आये। सुल्तान ने इनकी वीरता तथा योग्यता देख कर सुल्तान तुग़लुक़ को प्रसिद्ध नगर दीबालपुर की विलायत प्रदान करदी।

(३७) सुल्तान तुग़लुक़, सिपेहसालार रजब का विवाह दीबालपुर के रायों में से किसी राय की पुत्री से करना चाहता था। वह इसी खोज में था कि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति ने सुल्तान तुग़लुक़ को सूचना दी कि रानामल भट्टी की पुत्री अत्यन्त रूपवती है। उस समय सभी विशेष तथा साधारण राजे, जो मनियान तथा भट्टियान समूह से सम्बन्धित थे, दीबालपुर के अधीन क़स्बा अबूहर के अधीन थे। उन दिनों में इस इतिहासकार के एक प्रपितामह अर्थात् मलिक सादुलमुल्क शिहाब अफ़ीफ़ को सुल्तान तुग़लुक़ द्वारा अबूहर में एक पद प्राप्त था। सुल्तान तुग़लुक़ ने उसके परामर्श से कुछ योग्य व्यक्तियों को अपनी ओर से इस सम्बन्ध की चर्चा करने के लिये रानामल के पास भेजा। उसने यह सुनकर अभिमानवश अनुचित बातें करनी प्रारम्भ करदीं। सुल्तान तुग़लुक़ को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने इस इतिहासकार के प्रपितामह से परामर्श करके यह निश्चय किया कि वह रानामल की तिलौंदी में पहुँच कर उससे वार्षिक कर माँगे और थोड़ा-थोड़ा करके न ले। दूसरे दिन सुल्तान तुग़लुक़, रानामल की तिलौंदी को गया और वार्षिक कर नक़द माँगा। विलायत के सभी मुक़द्दमों तथा चौधरियों से कठोरता का व्यवहार किया और समस्त कर नक़द माँगा। रानामल की सभी विलायत बड़े कष्ट में पड़ गई। सभी प्रजा विनाश के निकट पहुँच गई। (३८) उस समय सुल्तान अलाउद्दीन का राज्यकाल था। कोई भी विद्रोह न कर सकता था। दो तीन दिन उपरान्त रानामल की प्रजा को बड़ा कष्ट दिया जाने लगा और लोग बड़े परेशान हो गये। इस इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि सायंकाल रानामल की माता जो बड़ी वृद्धा थी सुल्तान तुग़लुक़ द्वारा प्रजा के कष्टों की सूचना पाकर विलाप करती हुई रानामल के घर में पहुँची और निराशायुक्त वाक्य कहने लगी। उस समय रानामल की पुत्री, अर्थात् सुल्तान फ़ीरोज़ की माता प्रांगण में खड़ी थी। उसने अपनी दादी से विलाप का कारण पूछा। दादी ने उत्तर दिया कि "यह विलाप तेरे ही कारण है। यदि तू न होती तो सुल्तान तुग़लुक़ यहाँ की प्रजा पर इतनी कठोरता न करता"। (राना की) पुत्री ने उत्तर दिया "यदि मेरे दे डालने से आपके इतने सब लोगों का कल्याण हो सकता है तो उन लोगों का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाय और समझ लिया जाय कि एक पुत्री को मुग़ल उठा ले गये"। जब रानामल की माता ने रानामल के पास पहुँच कर उसकी पुत्री की (३९) यह बात कही तो उसे भी यह बात पसन्द आ गई। रानामल ने इस इतिहासकार के प्रपितामह द्वारा सन्देश भेज कर अपनी पुत्री का विवाह सिपेहसालार रजब से स्वीकार कर लिया और विवाह सम्पन्न हो गया। रानामल ने उसका नाम बीबी नाएला रक्खा था। सुल्तान तुग़लुक़ ने उसका नाम बीबी कदबानो रख दिया।

कुछ वर्ष उपरान्त फ़ीरोज़ शाह का जन्म हुआ। इस इतिहासकार के दादा शम्स शिहाब अफ़ीफ़ का जन्म भी उसी दिन हुआ। इस इतिहासकार के पूर्वजों की स्त्रियाँ दीबालपुर में सुल्तान तुग़लुक़ के अन्तःपुर में मख़दूमये जहाँ[1] के पास आया जाया करती थीं। इस इतिहासकार की परदादी इस बात की अनेक बार चर्चा किया करती थीं कि उन्होंने सुल्तान फ़ीरोज़ को दूध पिलाया था। सुल्तान फ़ीरोज़ ने भी अनेक बार अपने ऐश्वर्य-काल में इस इतिहासकार के पिता तथा चाचा से इस बात की चर्चा की कि उसने उनकी दादी का दूध पिया था।

१ मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह की माता।

(४०) जब शाह फ़ीरोज़ लगभग ७ वर्ष की अवस्था को प्राप्त हुआ तो सिपेहसालार रजब का निधन हो गया। सुल्तान तुग़लुक़ को बड़ा दुःख हुआ। सुल्तान फ़ीरोज़ की माता को बड़ी चिन्ता हुई कि वह अपने पुत्र का पालन-पोषण किस प्रकार करेंगी। सुल्तान तुग़लुक़ शाह ने फ़ीरोज़ शाह की माता की चिन्ता के विषय में सुनकर उसे बड़ा प्रोत्साहन दिया। बीबी कदबानो से सिपेहसालार रजब के एक ही पुत्र सुल्तान फ़ीरोज़ हुआ और कोई अन्य पुत्र अथवा पुत्री न थी। मलिक क़ुतुबुद्दीन सुल्तान फ़ीरोज़ का भाई दूसरी माता से था। (४१) इसी प्रकार एक भाई मलिक नायब बारबक भी दूसरी माता से था। सुल्तान फ़ीरोज़ को राज्य-व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध की शिक्षा दो बादशाहों द्वारा प्राप्त हुई—एक तो सुल्तान तुग़लुक़ शाह से और दूसरे सुल्तान मुहम्मद शाह से। तातार ख़ाँ बुज़ुर्ग का कथन है कि "हम लोगों के मध्य में सुल्तान फ़ीरोज़ के समान किसी को भी राज्य-व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध का ज्ञान नहीं"।

अध्याय २

सुल्तान फ़ीरोज़ का तुग़लुक़ शाह तथा सुल्तान मुहम्मद द्वारा राज्य-व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करना।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़, सुल्तान तुग़लुक़ शाह के सिंहासनारोहण के समय १४ वर्ष का था। सुल्तान तुग़लुक़ ने ४½ वर्ष तक राज्य किया। इस अवधि में वह सुल्तान की सेवा में रहा। सुल्तान के राज्य-व्यवस्था के समस्त अधनियमों का ज्ञान सुल्तान फ़ीरोज़ शाह प्राप्त किया करता था। सुल्तान तुग़लुक़ के उपरान्त सुल्तान मुहम्मद सिंहासनारूढ़ हुआ। (४२) सुल्तान मुहम्मद शाह के सिंहासनारोहण के समय सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की अवस्था १८ वर्ष की थी। उसने फ़ीरोज़ शाह को नायब अमीर हाजिब नियुक्त कर दिया था और उसकी उपाधि नायब बारबक रक्खी थी। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेना में १२००० प्रतिष्ठित सवार नियुक्त हुये। सुल्तान मुहम्मद, फ़ीरोज़ पर बड़ी दया तथा कृपा रखता था। वह सर्वदा फ़ीरोज़ को अपने पास रखता था और राज्यव्यवस्था के गुण सिखाया करता था। उस समय भी सुल्तान फ़ीरोज़ सर्वसाधारण पर विशेष कृपा-दृष्टि रखता था। जिस किसी को जो भी आवश्यकता होती, सुल्तान फ़ीरोज़ उसकी सहायता करता था। जब सुल्तान मुहम्मद शाह ने देहली के राज्य को चार भागों में विभाजित किया तो उसने राज्य-व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध की गूढ़ समस्यायें सीखने हेतु एक भाग सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को पृथक् प्रदान कर दिया। इसका उल्लेख सुल्तान मुहम्मद शाह के हाल में विस्तार से किया जा (४३) चुका है[1]। सुल्तान मुहम्मद उसे राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी बातें समझाने के लिये उससे बड़े कठिन कार्य कराता था। सुल्तान मुहम्मद के निधन के समय वह ४५ वर्ष की अवस्था को प्राप्त हो चुका था।

अध्याय ३

फ़ीरोज़ शाह का सिंहासनारोहण

(४४) सुल्तान मुहम्मद शाह के निधन के उपरान्त जब मुग़ल, लोगों के शिविर लूट कर अपने देश की ओर चल खड़े हुये तो मलिकों और सूफ़ियों ने सर्व सम्मति से सुल्तान फ़ीरोज़

१ इस इतिहास का अभी तक कोई पता नहीं चल सका है।

शाह को सिंहासनारूढ़ किया। सुल्तान फ़ीरोज़ ने कहा कि वह हज करने जाना चाहता था; (४५) किन्तु थट्टा में सुल्तान मुहम्मद के साथ जितने ख़ान, मलिक, क़ाज़ी, आलिम तथा सूफ़ी थे, उन्होंने सुल्तान फ़ीरोज़ ही को सुल्तान चुना।

जब यह हाल सुल्तान तुग़लुक़ की पुत्री ख़ुदावन्द ज़ादा को, जो दावर मलिक की माता थी, और जो उन दिनों साथ थी, ज्ञात हुआ तो उसने मलिकों के पास सूचना भेजी कि "मेरे पुत्र दावर मलिक के होते हुये, मलिक नायब अमीर हाजिब को बादशाही के लिये चुनना उचित नहीं। मेरा पिता सुल्तान तुग़लुक़ बादशाह था और मेरा भाई मुहम्मद शाह था। मेरे पुत्र के होते हुए कोई अन्य कैसे सिंहासनारूढ़ हो सकता है"। कुछ लोगों का कथन है कि ख़ुदावन्द ज़ादा ने बहुत सी अनुचित बातें भी कहीं। जब यह संदेश मलिकों को प्राप्त हुआ तो किसी ने भी उसे पसन्द न किया। मलिकों तथा सूफ़ियों ने मलिक सैफ़ुद्दीन (४६) ख़ूजू को, जो बड़ा स्पष्टवादी था, ख़ुदावन्द ज़ादा के पास भेजा। उसने स्पष्ट रूप से कह दिया कि "यदि सुल्तान फ़ीरोज़ के स्थान पर तेरे पुत्र को चुन लिया जाय तो न तो तू घर का मुँह देखेगी और न हम स्त्री तथा बालकों का, कारण कि तेरा पुत्र कुमार्ग-गामी है और राज्य नहीं कर सकता। हम दूसरों की भूमि पर पहुँच चुके हैं और मुग़लों की सेना हमारे सिर पर है। यदि कुशल-क्षेम चाहती है तो जो कुछ हम लोगों ने निश्चय कर लिया है, उससे सन्तुष्ट हो जा। सुल्तान फ़ीरोज़ का पद तथा उपाधि अर्थात् नायब बारबकी तेरे पुत्र को प्रदान कर दी जायगी"। ख़ुदावन्द ज़ादा, मलिक सैफ़ुद्दीन ख़ूजू की बात सुन कर चुप हो रही।

सुल्तान फ़ीरोज़ सभी के सहमत हो जाने पर भी बादशाह होना स्वीकार न करता था। उस समय तातार ख़ाँ ने, जो सब लोगों से अधिक वृद्ध था, खड़े होकर ज़बरदस्ती सुल्तान फ़ीरोज़ को राजसिंहासन पर बैठा दिया। सुल्तान ने नमाज़ पढ़ी, ईश्वर से सहायता की प्रार्थना की और राजमुकुट धारण किया किन्तु सुल्तान फ़ीरोज़ व सुल्तान मुहम्मद के निधन के शोक के वस्त्र न उतारे। राजसी वस्त्र उन्हीं वस्त्रों पर पहन लिये। सभी लोगों ने अत्यन्त हर्ष तथा उल्लास का प्रदर्शन किया। उसका सिंहासनारोहण २४ मुहर्रम ७५२ हि० (२३ मार्च १३५१ ई०) को हुआ। सुल्तान फ़ीरोज़ का जुलूस हाथी पर निकाला गया। वहाँ से वह अन्तःपुर पहुँचा और ख़ुदावन्द ज़ादा के चरणों पर शीर्ष रख दिया। ख़ुदावन्द ज़ादा ने सुल्तान फ़ीरोज़ का शीर्ष अपनी गोद में रख लिया और सुल्तान तुग़लुक़ शाह तथा सुल्तान मुहम्मद शाह का ताज, जो उन बादशाहों की यादगार तथा एक लाख तन्के के मूल्य का था, सुल्तान फ़ीरोज़ को पहना दिया।

अध्याय ४

मुग़लों से सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का युद्ध

मुग़ल सेना शिविरों के विनाश के उपरान्त देहली की सेना के शिविर के स्थान के निकट ही पड़ी थी। सभी ख़ान तथा मलिक एकत्र हुये। सुल्तान फ़ीरोज़ ने मुग़ल सेना से युद्ध (४९) करना निश्चय कर लिया। सुल्तान की विजय हुई। जिन लोगों को मुग़लों ने बन्दी बना लिया था, वे मुक्त हो गये। मुग़ल बड़ी कठिनाई से प्राण बचा सके। विजय तथा सफलता प्राप्त करके सुल्तान ने समस्त हाथियों तथा सेना सहित देहली की ओर प्रस्थान किया।

अध्याय ५

सुल्तान मुहम्मद के एक पुत्र को ख्वाजये जहाँ अहमद अयाज़ द्वारा बादशाह बनाने की भूल।

कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद ने दौलताबाद की ओर अन्तिम बार प्रस्थान करते समय कुछ लोगों को देहली छोड़ दिया था : (१) मलिक कबीर (२) क़ुतलुग़ खाँ (३) सुल्तान फ़ीरोज़ जो उन दिनों अमीर हाजिब था। मलिक कबीर तथा क़ुतलुग़ खाँ की सुल्तान के निधन के पूर्व ही मृत्यु हो गई। सुल्तान फ़ीरोज़ को सुल्तान मुहम्मद ने अपने पास बुलवा लिया। देहली के रिक्त होने के कारण सुल्तान मुहम्मद ने ख्वाजये जहाँ को थट्टा से अपनी अनुपस्थिति के कारण अपना नायब बना कर देहली भेज दिया। कुछ मलिक उसके साथ थे अर्थात् मलिक क़िवामुलमुल्क खाने जहाँ, मलिक हसन, मलिक हुसामुद्दीन उज़बुक, मलिक खत्ताब तथा अन्य लोग। सुल्तान मुहम्मद के निधन तथा सुल्तान फ़ीरोज़ के सिंहासनारोहण के समाचार पाकर धूर्त ख्वाजये जहाँ ने सुल्तान मुहम्मद के पुत्र को देहली में सिंहासनारूढ़ कर दिया और सुल्तान फ़ीरोज़ से युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। प्रजा को मिला लिया किन्तु सर्वसाधारण को यह बात ठीक नहीं ज्ञात हुई। इस इतिहासकार ने इस घटना का (५१) हाल किशवर खाँ बिन (पुत्र) किशलू खां बहराम ऐबा से इस प्रकार सुना है :

जब सुल्तान मुहम्मद का थट्टा में निधन हो गया तो खुरासान के अमीराने हज़ारा ने, जो सुल्तान मुहम्मद की सहायतार्थ आये थे, बड़े बाज़ार को लूट लिया। इस इतिहासकार ने इस घटना का सविस्तार उल्लेख सुल्तान मुहम्मद के हाल में कर दिया है। संक्षेप में, जिस दिन शिविर लूटा गया लोग छिन्न-भिन्न हो गये। सुल्तान फ़ीरोज़ के सिंहासनारूढ़ होने के पूर्व मलीह तून-तून ग़ुलाम, जिसे ख्वाजये जहाँ ने सुल्तान मुहम्मद के पास भेजा था, उसी उपद्रव के समय देहली की ओर भाग गया। उसने देहली पहुंच कर सब हाल ख्वाजये जहाँ को बताया और यह भी कहा कि "तातार खाँ तथा मलिक अमीर हाजिब अर्थात् सुल्तान फ़ीरोज़ का पता नहीं। यह ज्ञात नहीं कि वे मुग़लों के हाथ पड़ गये अथवा मार डाले गये। अधिकांश मलिक उस युद्ध में शहीद हो गये।

(५२) मलीह बड़ा प्रसिद्ध दास था। ख्वाजये जहाँ ने यह समाचार सुनकर सुल्तान मुहम्मद के निधन तथा सुल्तान फ़ीरोज़ के अन्तर्ध्यान हो जाने का बड़ा शोक मनाया। ख्वाजये जहां को सुल्तान फ़ीरोज़ से अत्यधिक प्रेम था। शोक के उपरान्त ख्वाजये जहाँ ने सुल्तान मुहम्मद के पुत्र को सिंहासनारूढ़ कर दिया। भाग्यवश ख्वाजये जहाँ ने अपने निर्णय में भूल की। ..... उसने देहली में असंख्य सेना एकत्र की और लोगों को सेवायें प्रदान कीं। २० हज़ार सवार एकत्र किये। लोगों को बहुत धन प्रदान किया। उस समय राजकोष में धन की बड़ी कमी थी, कारण कि सुल्तान मुहम्मद ने अपने २७ वर्षीय राज्यकाल में अत्यधिक (५३) दान किया था। राजकोष में धन की कमी के कारण ख्वाजये जहाँ ने स्वर्ण, रजत तथा सोने चाँदी के पात्र वितरण किये। तत्पश्चात् उसने जवाहरात भी नष्ट कर डाले। उसके दान के समाचार पाकर चारों ओर से लोग उसके लश्कर की ओर चल खड़े हुये किन्तु आश्चर्य यह है कि लोग धन तो ख्वाजये जहाँ से प्राप्त करते थे परन्तु सुल्तान फ़ीरोज़ के लिये शुभ कामनायें करते थे।

अध्याय ६

ख्वाजये जहाँ का सुल्तान फ़ीरोज़ के सिंहासनारूढ़ होने का समाचार प्राप्त करना ।

कहा जाता है कि जब ख्वाजये जहाँ को सुल्तान के राज्य के विषय में ज्ञात हुआ तो उसे अपनी भूल पर बड़ा खेद हुआ । दोनों सेनाओं में विभिन्न चर्चायें होती थीं । कुछ कहते कि ख्वाजये जहाँ ने यह निश्चय कर लिया है कि जब सुल्तान की सेना देहली पहुँचेगी तो ख्वाजये जहाँ विजयी सेना के अमीरों के साथ हो जायेगा । यह भी कहा जाता था कि (५४) ख्वाजये जहाँ शाही विजयी सेना से युद्ध करना चाहता है । यह सब समाचार पाकर विजयी सेना के सभी मलिक तथा खान सर्वसम्मति से कहते थे कि सुल्तान मुहम्मद के कोई पुत्र न था । उसके केवल एक पुत्री सुल्तान तुग़लुक़ के राज्यकाल में हुई थी । ख्वाजये जहाँ ने सुल्तान मुहम्मद का पुत्र कहाँ से पैदा कर दिया । सभी बुद्धिमान इसी प्रकार के शब्द कहते थे । सभी ख्वाजये जहाँ पर आश्चर्य करते थे और सुल्तान फ़ीरोज़ यही विचार करता हुआ देहली की ओर रवाना हुआ । सेना वाले तथा देहली के लोग सुल्तान फ़ीरोज़ की ही सफलता चाहते थे ।

(५५) सुल्तान फ़ीरोज़ ने मुल्तान की सीमा तक पहुँचने तक कोई भी बात ख्वाजये जहाँ (५६) के विषय में न कही ।.........उसने सोचा कि सेना अत्यधिक कष्ट भोग चुकी है । यदि ख्वाजये जहाँ के विषय में सेना में कुछ प्रसिद्ध हुआ तो सेना वाले समझेंगे कि कदाचित सुल्तान फ़ीरोज़ ख्वाजये जहाँ से डरता है । उनके दिल टूट जायंगे । इसी कारण उसने मुल्तान पहुँचने तक इस विषय में कुछ न कहा ।

अध्याय ७

सुल्तान फ़ीरोज़ का थट्टा से देहली की ओर प्रस्थान ।

(५७) थट्टा से लौटते समय सुल्तान फ़ीरोज़ ने लोगों से परामर्श किया कि देहली किस मार्ग से लौटना चाहिये । कुछ लोगों ने कहा कि "गुजरात के मार्ग से जाना चाहिये जिससे गुजरात का धन हाथ लग जाय ।" सुल्तान फ़ीरोज़ ने कहा "मेरे चाचा सुल्तान तुग़लुक़ ने खुसरो खाँ के विद्रोह के दमन हेतु दीबालपुर के मार्ग से प्रस्थान किया था । ईश्वर ने उन्हें विजय प्रदान की । हमें भी आशिष हेतु मुल्तान तथा दीबालपुर के मार्ग से देहली की ओर प्रस्थान करना चाहिये ।" जब देहली वालों को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के मुल्तान तथा देहली के मार्ग से आने के समाचार प्राप्त हुये तो वे लोग बड़े प्रसन्न हुये । कुछ अमीर, मलिक तथा प्रतिष्ठित सद्र, गुप्त रूप से शहंशाह की ओर चल खड़े हुये और उससे (५८) मिल गये ।......ख्वाजये जहाँ यह सब सुनता किन्तु कोई उत्तर न देता ।......... यद्यपि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेना बड़ी शोचनीय दशा को प्राप्त हो चुकी थी और ख्वाजये जहाँ के पास देहली में २०,००० अश्वारोही थे किन्तु ईश्वर ने सुल्तान ही को विजय प्रदान (५९) की । संक्षेप में जब सुल्तान फ़ीरोज़ मुल्तान की सीमा पर पहुँचा तो ख्वाजये जहाँ का भेजा हुआ दास मलीह तून-तून दूर से दिखाई पड़ा ।.... जब मलीह निकट पहुँचा तो वह (६०) सुल्तान मुहम्मद के पुत्र का फ़रमान लटकाये हुये था । सुल्तान ने अपने हाजिब उसके पास भेजे । उसने उनसे अभिमान से भरी बातें कीं । सुल्तान को जब यह हाल ज्ञात हुआ

तो उसने कहा "ईश्वर की कृपा चाहिये; ख्वाजये जहाँ तथा अन्य लोग क्या कर सकते हैं।" संक्षेप में सुल्तान, मुल्तान नगर में प्रविष्ट हुआ और मुल्तान के मशायख (सूफ़ियों) को दान (६१) दिये। तत्पश्चात् अजोधन पहुँच कर शेख़ फ़रीदुद्दीन के (मज़ार के) दर्शन किये। वहाँ से सरसुती पहुँचा। सरसुती देहली से ६० कोस होगा। सरसुती के सर्राफ़ों तथा बक़्क़ालों ने एकत्र होकर कुछ लाख तन्के भेंट किये। सुल्तान ने कहा "तुम्हारा उपहार ऋण है। अल्लाह ने चाहा तो देहली पहुँच कर अदा कर दिया जायगा।" मलिक एमादुल मुल्क बशीर को आदेश हुआ कि देहली पहुँचने के उपरान्त उनका धन लौटा दिया जाय। फ़ीरोज़ ने वह सब धन सेना को बाँट दिया। लश्कर वालों को व्यय हेतु धन मिल गया।

इस स्थान पर शेख़ नसीरुद्दीन ने सुल्तान फ़ीरोज़ से कहा कि "इस स्थान तक ईश्वर से प्रार्थना करके मैंने लोगों को पहुँचवा दिया। इस स्थान से शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर[1] की विलायत (सन्तलोक) की सीमा है। उनकी सेवा में लिखो।" सुल्तान ने यही शब्द शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर को हाँसी लिख भेजे। शेख़ क़ुतुबुद्दीन ने लिखा कि "क्योंकि भाई शेख़ (६२) नसीरुद्दीन (इस स्थान से) लोगों को मेरे हवाले करते हैं तो मैं ईश्वर से तुम्हें देहली प्राप्त होने के विषय में प्रार्थना करता हूँ।" शेख़ नसीरुद्दीन ने यह बात शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर की प्रतिष्ठा-वृद्धि के लिये कही थी, अन्यथा दोनों में बड़ा प्रेम था और वे एक ही गुरु के शिष्य थे।

अध्याय ८

क़िवामुलमुल्क अर्थात् खाने जहाँ मक़बूल का सुल्तान फ़ीरोज़ से मिलना।

कहा जाता है कि मुल्तान, दीबालपुर, सरसुती तथा अन्य स्थानों के लोग सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के उसी प्रकार अधीन हो गये जिस प्रकार सुल्तान मुहम्मद शाह के थे।...... (६३) उस ओर के सभी ३६ राजा लोग भी अधीन हो गये।......यद्यपि देहली वाले भी समय समय पर उससे मिलने जाते थे किन्तु फ़ीरोज़ शाह सन्तुष्ट न होता था, यहाँ तक कि मलिक क़िवामुलमुल्क अर्थात् खाने जहाँ मक़बूल के अधीनता सम्बन्धी पत्र प्राप्त हो गये। जब ख्वाजये जहाँ को क़िवामुलमुल्क की योजना के विषय में ज्ञात हुआ तो उसने क़िवामुलमुल्क को बन्दी बना लेना चाहा।.........उन दिनों ख्वाजये जहाँ कूश्के हज़ार सतून के कोठे पर (६४) रहता था। जब क़िवामुलमुल्क हज़ार सतून के निकट पहुँचा और ऊपर जाना चाहता था तो उसी समय ख्वाजये जहाँ का एक निकटवर्ती ऊपर से नीचे आया और क़िवामुलमुल्क को देख कर उसने अपनी अँगुली दाँत के नीचे करके आँख से संकेत किया कि ऊपर जाना उचित नहीं। क़िवामुलमुल्क समझ गया और इस प्रकार बन गया मानो पंगु हो। उसने अपना एक विश्वासपात्र भेज कर ख्वाजये जहाँ के पास कहला दिया कि "मेरा पैर सूज गया है। घर से इस स्थान तक बड़ी कठिनाई से आया हूँ। ऊपर आना सम्भव नहीं।" क़िवामुलमुल्क उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना लौट गया। ख्वाजये जहाँ ने यह सुनकर अपने कुछ आदमी दौड़ाये कि वे क़िवामुलमुल्क से कहें कि उससे कुछ परामर्श करना है अतः वहाँ आ जाय। जब तक ख्वाजये जहाँ के आदमी क़िवामुलमुल्क तक पहुँचे, क़िवामुलमुल्क महल के प्रांगण में पहुंच गया था। जब ख्वाजये जहाँ के आदमी क़िवामुलमुल्क के पास पहुँचे और ख्वाजये जहाँ का सन्देश पहुँचाया तो क़िवामुलमुल्क ने उत्तर दिया "मैं पैर की पीड़ा के कारण बेचैन हूँ और मुझे अपना भी ज्ञान नहीं। मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त ही आ जाऊँगा।"

[1] देखो तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १, पृ० १४५–१४७।

ख्वाजये जहाँ के पास समाचार पहुँचते-पहुँचते वह पश्चिम दिशा के द्वार के समक्ष पहुँच गया। सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ के राज्यकाल में क़िवामुलमुल्क का निवास स्थान पश्चिम दिशा के (६५) द्वार के समक्ष था। क़िवामुलमुल्क अपने घर पहुँचा और तुरन्त सुनहरे चुडवल पर सवार होकर और सेना लेकर दिन के समय अपने अन्तःपुर (की स्त्रियों), पुत्रों, मित्रों, तथा लावलश्कर लेकर मैदान के द्वार में आगया और ख्वाजये जहाँ की चिन्ता न की। जब क़िवामुलमुल्क मैदान के द्वार के समक्ष पहुँचा तो द्वारपाल ने द्वार बन्द करना चाहा किन्तु सवार तलवारें लिये पहुँच गये और द्वारपाल द्वार बन्द न कर सका। क़िवा-मुलमुल्क धीरे धीरे फ़ीरोज़ शाह की ओर चल पड़ा। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सरसुती से रवाना हो चुका था। कुछ पड़ाव पार करके एकदार नामक पड़ाव पर उतरा था। क़िवामुलमुल्क ने फ़ीरोज़ शाह के पास पहुँच कर उसके चरण चूमे। उसी दिन शाहज़ादा फ़ीरोज़ ख़ाँ के घर में पुत्र का जन्म हुआ। सुल्तान फ़ीरोज़ को उस पड़ाव पर दुहरी प्रसन्नता प्राप्त हुई। एक क़िवामुलमुल्क के मिलने की, दूसरी फ़ीरोज़ ख़ाँ के पुत्र के जन्म की। वहाँ उसने एक बहुत बड़ा नगर बसवाया और उसका नाम फ़तहाबाद रक्खा। उस शिशु का नाम फ़तह ख़ाँ रक्खा।

अध्याय ६

ख्वाजये जहाँ का सुल्तान से मिलना।

(६६) ख्वाजये जहाँ ने जब देखा कि क़िवामुलमुल्क उसके पास से चला गया तो वह बड़ा परेशान हुआ। उसके सहायकों ने क़िवामुल्मुल्क का पीछा करने की अनुमति माँगी (६७) किन्तु ख्वाजये जहाँ ने कोई उत्तर न दिया। वह सोचने लगा कि वह भी सुल्तान फ़ीरोज़ से मिल जाये। संक्षेप में क़िवामुलमुल्क बृहस्पतिवार को देहली से निकला था। उसी दिन वह देहली से २४ कोस पर इस्माईल नामक पड़ाव पर उतरा। ख्वाजये जहाँ ने शुक्रवार को नमाज़ के उपरान्त देहली से प्रस्थान किया और हौज़े ख़ास अलाई पर उतरा। उसके सहा-यक मलिक, हौज़े ख़ास पर उसके साथ आये अर्थात् मलिक हसन, मलिक खत्ताब, मलिक (६८) हुसामुद्दीन उज़बुक आदि मलिकों ने ख्वाजये जहाँ से पूछा कि "आपने सुल्तान फ़ीरोज़ के पास जाना निश्चय कर लिया है, हमारे लिये क्या आदेश होता है?" ख्वाजये जहाँ ने उत्तर दिया "मित्रो! सुल्तान मुहम्मद के पुत्र के चुनने में, मैं ने किसी लोभ से कार्य नहीं किया क्योंकि इमामत (नेतृत्व) बादशाहों का कार्य है। विज़ारत वज़ीरों का कार्य है। यदि बादशाह वज़ीरों के कार्य की और वज़ीर बादशाहों के कार्य की इच्छा करने लगें तो राज्य में विघ्न पड़ जायेगा। मैंने सुल्तान मुहम्मद के निधन, मुग़लों के आक्रमण तथा सुल्तान फ़ीरोज़ एवं तातार ख़ाँ के अज्ञात हो जाने के समाचार पाकर शहर वालों के हित में इस कार्य में हस्तक्षेप किया। इसमें मुझसे बड़ी भूल हुई।.........मैं सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल में सुल्तान फ़ीरोज़ को पुत्र कहा करता था और वह भी मुझे पिता कहता था। मुझे ज्ञात नहीं कि इसमें ईश्वर की क्या इच्छा है। तुम लोग भी मेरे (६९) साथ आओ। सुल्तान फ़ीरोज़ बड़ा ही सज्जन है। मेरी बात का विरोध न करेगा और तुम लोगों को भी क्षमा कर देगा।" लोग ख्वाजये जहाँ की बात को सुनकर बहुत रोये। उस समय ख्वाजये जहाँ की अवस्था ८० वर्ष के कुछ ऊपर पहुँच चुकी थी। वह बड़ा वृद्ध हो गया था और उसकी दाढ़ी सफ़ेद हो गई थी। वह शेखुल इस्लाम शेख निज़ामुद्दीन औलिया का चेला था।

मलिकों ने उसकी बात सुनकर उससे आज्ञा माँग कर कहा, "राज्यव्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध के नियमानुसार पिता तथा पुत्र के सम्बन्ध पर विचार नहीं किया जाता। यद्यपि फ़ीरोज़ शाह बड़ा सज्जन मनुष्य है किन्तु सुल्तानों की प्रथा के विरुद्ध कोई कार्य न करेगा।" ख्वाजये जहाँ ने उत्तर दिया, "यदि लौट कर देहली की शहरपनाह में बन्द हो जाऊँ तो, यद्यपि मेरे पास सेना तथा हाथी हैं, सुल्तान फ़ीरोज़ की सेना के देहली की शहरपनाह पर अधिकार जमा लेने पर तो मुसलमानों की स्त्रियाँ दुष्टों के हाथ पड़ जायेंगीं। मुझे इसका (७०) क़यामत में उत्तर देना पड़ेगा। मैं कब तक जीवित रह सकता हूँ।........." यह देख कर कुछ अमीर ख्वाजये जहाँ के साथ सुल्तान फ़ीरोज़ के पास रवाना हो गये और कुछ पृथक् हो गये।

क़िवामुलमुल्क फ़तहाबाद में सुल्तान फ़ीरोज़ से मिला। ख्वाजये जहाँ धानसूर[1] के पड़ाव पर अकरोदह[2] के निकट क़िवामुलमुल्क के मिलने के दूसरे दिन मिला। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि फ़ीरोज़ शाह संध्या समय दरबार कर रहा था। सभी दरबारी उपस्थित थे। ख्वाजये जहाँ अपनी गर्दन में ज़ंजीर बाँधे, सिरसे पगड़ी उतार कर, ताक़िया[3] सिर पर पहने, नंगी तलवार अपने गले से बाँधे हाजिबों के पीछे के स्थान पर खड़ा हो गया जिससे सायंकाल की नमाज़ के समय सराचा[4] उतरवाने के वक़्त एक बाण के पहुँचने (७१) तक की दूरी से सलाम कर ले। सुल्तान की दृष्टि जैसे ही ख्वाजये जहाँ पर पड़ी उसने तुरन्त उसके सिर पर पगड़ी बाँधने के लिये मनुष्य भेजे और कहलाया कि "मुझे कदापि यह विचार न था कि तुम ऐसे कार्य करोगे।" तत्काल उसने अपने खासे[5] की सवारी की सुनहरी चुडवल भेजी और आदेश दिया कि ख्वाजये जहाँ को चुडवल पर सवार करके एक बड़े शिविर में उतारें और उससे कहदें कि "मैं उससे भेंट करने वहीं आऊँगा।" शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर का कथन कि "देहली उसी स्थान पर आजायगी", सत्य निकला।

अध्याय १०

सुल्तान के मित्रों की ख्वाजये जहाँ के विषय में वार्त्ता।

(७२) फ़ीरोज़ शाह ख्वाजये जहाँ को कोई हानि न पहुँचाना चाहता था और पुनः वज़ीर बना देना चाहता था,.........किन्तु मलिक एमादुलमुल्क तथा अन्य अमीरों के (७५) विरोध पर सुल्तान ने मलिक एमादुलमुल्क से कह दिया कि 'ख्वाजये जहाँ का निर्णय तुम्हारे हाथ में दिया जाता है।' उन लोगों ने सुल्तान की ओर से ख्वाजये जहाँ के पास (७६) सूचना भेजी "तुम वृद्ध हो गये हो। सामाने की अक़्ता तुम्हें इनाम में प्रदान की जाती है। वहीं ईश्वर की वन्दना किया करो।".........संक्षेप में ख्वाजये जहाँ को सामाने की ओर भेज दिया गया। जब ख्वाजये जहाँ शाही सेना से कुछ मंज़िल आगे सामाने की ओर पहुँच गया तो उसी के पीछे-पीछे शेर खाँ भी पहुँचा और उससे भेंट किये बिना दूसरे स्थान (७८) पर उतर पड़ा और उसकी हत्या करा दी।

---

१ धानसूर : हिसार के उत्तर में ८ मील पर।
२ अगरोहा उचित होगा। यह हिसार के उत्तर पश्चिम में १३ मील पर है।
३ दरवेशों के पहनने वाली टोपी।
४ ख़ेमे-डेरे।
५ सुल्तान के व्यक्तिगत प्रयोग की सवारी।

अध्याय ११

फ़ीरोज़ शाह का हाँसी पहुँचना।

सुल्तान अकरोदह के पड़ाव से शहर (देहली) की ओर चल पड़ा। कुछ पड़ाव के उपरान्त हाँसी पहुँचा और उसके निकट उतर पड़ा। उस दिन शुक्रवार था। फ़ीरोज़ शाह नमाज़ के पूर्व शेखुल इस्लाम शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर के दर्शनार्थ शहर-पनाह में प्रविष्ट हुआ। उस समय शेख़ शुक्रवार की नमाज़ हेतु खानक़ाह के बाहर आये थे और अपने द्वार के समक्ष खड़े थे। उसी समय सुल्तान फ़ीरोज़ पहुँच गया।········ शेख़ ने सुल्तान को कुछ उपदेश (७९) दिये। उन्होंने कहा "मैंने सुना है तुम्हें मदिरापान से बड़ी रुचि है। यदि सुल्तान तथा धर्म के नेता मदिरापान में तल्लीन रहेंगे तो दोनों की आवश्यकतायें पूरी न हो पायेंगी। ईश्वर ने कुछ मुसलमानों को तुम से सम्बन्धित कर दिया है, अतः उनकी ओर से असावधान होना उचित नहीं।" उस अवसर पर शहंशाह ने कहा, "अब मदिरापान न करूँगा"। (८०) दूसरा उपदेश यह था कि "बाबा! सुना है तुम्हें शिकार खेलने से बड़ी रुचि है। यह बात ठीक नहीं। बिना आवश्यकता के शिकार करना उचित नहीं।" सुल्तान ने शेख़ से कहा "आप ईश्वर से प्रार्थना करें कि ईश्वर मुझे इस बात से रोक दे।" शेख़ ने कहा, "मेरी प्रार्थना का निषेध करने वाले ऐसे ही होते हैं। यह नहीं कहता कि तोबा करता हूँ।" शेख़ (८१) यह कह कर मस्जिद को चले गये।······सुल्तान ने शेख़ के लिये एक बहुमूल्य खिलअत भेजी किन्तु शेख़ ने स्वीकार न की। ईश्वर को धन्य है कि ऐसे ही शेख़ों (सन्तों) के (८२) चरणों के आशीर्वाद से हाँसी नगर मुग़लों के उत्पात से सुरक्षित रह गया।

अध्याय १२

शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर तथा शेख़ नसीरुद्दीन महमूद की हाँसी में भेंट।

कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद शेख़ नसीरुद्दीन महमूद को अपने साथ थट्टा ले गया था। शेख़ नसीरुद्दीन भी सुल्तान फ़ीरोज़ के साथ लौटे थे। जब वे हाँसी पहुँचे तो वे विशेष कर शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर से भेंट करने उनकी खानक़ाह में गये। दोनों को शेख़ निज़ामुद्दीन (८३) औलिया ने एक ही दिन ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया था और दोनों को भाइयों के (८४) समान रहने का आदेश दिया था।·········शेख़ क़ुतुबुद्दीन, शेख़ नसीरुद्दीन के पहुँचने की सूचना पाकर नंगे पाँव दौड़ते हुये बाहर पहुंचे·········और दोनों एक दूसरे के हाथ पकड़े हुये खानक़ाह में प्रविष्ट हुये। दोनों शेख़ निज़ामुद्दीन को याद करके बहुत रोये। तत्पश्चात् क़व्वालों द्वारा समा[1] का आयोजन हुआ और दोनों कई दिन तक समा सुनते रहे।······ (८७) तत्पश्चात् वे विदा हुये और कुछ समय उपरान्त उनका निधन हो गया। सर्वप्रथम १८ रमज़ान[2] को शेख़ नसीरुद्दीन महमूद का निधन हुआ और २६ ज़ीक़ाद[3] को शेख़ क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर की मृत्यु हुई। दोनों के निधन के बीच में दो मास तथा कुछ दिनों का अन्तर था।

अध्याय १३

सुल्तान फ़ीरोज़ का देहली पहुँचना।

(८८) फ़ीरोज़ शाह के देहली पहुँचने की प्रसन्नता में ख़ुशी के ढोल बजाये गये और समस्त

१ सूफ़ियों का ईश्वर की याद में संगीत तथा नृत्य।
२ १८ रमज़ान ७५७ हि० (१६ सितम्बर १३५६ ई०)।
३ २६ ज़ीक़ाद ७५७ हि० (२१ नवम्बर १३५६ ई०)।

नगर को आभूषणों तथा सुन्दर वस्त्रों से सजाया गया। चारों ओर क़ुब्बे बाँधे गये। कहा जाता है कि शहर देहली में छः क़ुब्बे लगाये गये थे। उस समय तक फ़ीरोज़ाबाद नगर आबाद न हुआ था। प्रत्येक क़ुब्बे के नीचे २१ दिन तक जश्न होता रहा। प्रत्येक क़ुब्बे में एक लाख तन्के व्यय हुये। किसी को भी भोजन, शर्बत तथा ताँबूल से न रोका गया। लोग चारों ओर से क़ुब्बे देखने आते थे। जो कोई भी इन्हें देखने आता उसे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के आदेशानुसार स्वादिष्ट भोजन प्रदान किया जाता था। क़ुब्बे लकड़ी के लट्ठों के थे और उन पर विभिन्न प्रकार के रंग बिरंगे कपड़े लिपटे हुये थे; प्रत्येक क़ुब्बे के नीचे गायक गाने गाते थे; नर्तकियाँ नृत्य करती थीं।......

अध्याय १४

सुल्तान फ़ीरोज़ का देहली वालों को सम्मानित करना तथा शेष को क्षमा कर देना।

(६०) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ ने सर्वसाधारण के लिये दान तथा दया के द्वार खोल दिये इसलिये कि देहली निवासी अकाल तथा महामारी के कारण बड़े पीड़ित थे और अनाज तथा वस्त्र की बड़ी कमी देख चुके थे; सुल्तान फ़ीरोज़ ने प्रत्येक मनुष्य को जितना (६१) उसने माँगा उससे अधिक प्रदान किया यहाँ तक कि उससे पूर्व प्रजा ने जो कष्ट भोगे थे उनका निवारण होगया और सभी सन्तुष्ट हो गये।

(६२) उन दिनों में ख्वाजा फ़ख्र शादी मजमूआदार[1] था। सुल्तान मुहम्मद ने अपने जीवन काल में दौलताबाद से आने के उपरान्त देहली के प्रदेशों को आबाद करने के लिये दो करोड़ धन देहली वालों को सोन्धार[2] के रूप में दे दिया था ताकि जो भूभाग, क़स्बे तथा ग्राम अकाल में नष्ट हो गये थे पुन: आबाद किये जायँ। इसका उल्लेख मुहम्मद शाह के हाल में किया जा चुका है। वह सब धन लोगों को अदा करना था। ख्वाजये जहाँ ने भी अत्यधिक हीरे जवाहरात वितरण कर दिये थे। समस्त धन का उल्लेख ख्वाजा फ़ख्र शादी मजमूआ दार की पंजिकाओं में था। उसने उन सब को लाकर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने इस सम्बन्ध में क़िवामुलमुल्क अर्थात् खाने जहाँ से परामर्श किया। उसने समझाया कि यह धन सुल्तान मुहम्मद ने विशेष परिस्थिति में दिया (६३) था और अब उसे लोगों से वापस माँगने में बदनामी के अतिरिक्त कुछ हाथ न आयेगा और लोगों को बड़ा कष्ट होगा अतः इसे क्षमा कर देना चाहिये। सुल्तान फ़ीरोज़ ने तदनुसार (९४) वह धन क्षमा कर दिया। उस दिन फ़ीरोज़ शाह ने क़िवामुलमुल्क को सनद तथा चत्र प्रदान किया और उसे देहली के राज्य का वज़ीर नियुक्त किया। राज्य का कर नये सिरे से निश्चित किया गया। इस कार्य हेतु ख्वाजा हुसामुद्दीन जुनैद को नियुक्त किया गया। छः वर्ष में ख्वाजा ने राज्य के क़स्बों में घूम-घूम कर अपने निरीक्षण के आधार पर कर निश्चित किया। ६ करोड़ ७५ लाख तन्के जमये मुमलेकत[3] निश्चित किया गया। सुल्तान फ़ीरोज़ के राज्यकाल में ४० वर्ष तक देहली की जमा यही रही।

---

१ राज्य के रिकार्ड (लेखा आदि) रखने वालों का अधिकारी।

२ ऋण, (तक़ावी)। तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १, पृ० ५०।

३ राज्य का कर।

अध्याय १५

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा नयी वृत्तियों के नियम।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने लोगों को अत्यधिक वृत्ति बाँटीं जिससे उन्हें बड़ा सुख प्राप्त हुआ। कुछ को १०,००० तन्के, कुछ को ५०००, कुछ को २००० उनकी योग्यतानुसार प्रदान किये तथा समस्त हशमे वजहदार[१] को भी प्रदान किया। (९५) यह विशेषता इसी बादशाह की है इसलिये कि पिछले बादशाहों के समय में यह नियम न था। कोई ग्राम वजह में न दिया जाता था और यह बात किसी की समझ में न आई थी। मुझे लोगों ने अनेकों बार बताया कि सुल्तान अलाउद्दीन इस विषय पर वार्त्ता किया करता था और शंकायें किया करता था कि ग्राम वजह में न देना चाहिये इसलिये कि एक ग्राम में २००-३०० पुरुष निवास करते हैं और सब के सब एक वजहदार वेतन पाने वाले के अधीन होते हैं। यदि इस प्रकार के कुछ वजहदार अभिमानवश तथा दुराचार के कारण एकत्र होकर संगठित हो जायं एवं विद्रोह करदें तो आश्चर्य न करना चाहिये। इसी कारण सुल्तान अलाउद्दीन किसी को वजह के बदले में ग्राम न देता था। जब सुल्तान फ़ीरोज शाह सिंहासनारूढ़ हुआ तो उसने सन्त होने के कारण सभी पर कृपा दृष्टि प्रदर्शित की और मुसलमानों के लाभार्थ विशेष प्रयत्नशील हुआ। उसने हर प्रकार की शंकायें अपने हृदय से निकाल दीं। उसने समस्त ग्राम क़स्बे तथा खित्ते सेना को बाँट दिये। निश्चय ही यह बड़ा (९६) उत्कृष्ट कार्य था। क्योंकि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईश्वर में लीन हो चुका था अतः उसके ४० वर्षीय राज्यकाल में एक पत्ता भी न हिला।

इसी प्रकार जब फ़ीरोज़ शाह ने राज्य का कर सेना को वेतन के बदले में प्रदान कर दिया तो उसने दूसरा नियम यह बनाया कि यदि सेना में से किसी की मृत्यु हो जाती तो उसकी जीविका (ग्राम) उसके पुत्र को प्रदान करदी जाती। यदि किसी के पुत्र न होता तो जामाता को दे दी जाती। यदि जामाता भी न होता तो उसके दास को प्रदान कर दी जाती। यदि दास भी न होता तो उसके किसी सम्बन्धी को दे दी जाती। यदि वह भी न होता तो उसकी स्त्रियों को दे दी जाती। सुल्तान ने अपने ४० वर्षीय राज्यकाल में यही नियम रक्खा।

कहा जाता है कि एक बार शेखुल इस्लाम शेख़ सद्रुद्दीन, जो शेख बहाउद्दीन ज़करिया के नाती थे, विराजमान थे। वृत्तियों तथा जीविकाओं (ग्रामों) के सम्बन्ध में वार्त्ता होने लगी। उन्होंने कहा कि धर्मनिष्ठ मुसलमानों को मरते समय दो चिन्तायें पर्वत के समान कष्ट दिया करती हैं: (१) धर्म की चिन्ता (२) संसार की चिन्ता।.........मानव के संरक्षक ने (९७) संसार की चिन्ता अपने राज्यकाल में समाप्त करादी इसलिये कि किसी सैनिक की मृत्यु पर उसकी जीविका उससे तत्काल नहीं ले ली जाती। यह साधारण कार्य नहीं। इसमें बड़ा पुण्य है।......

अध्याय १६

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा प्रजा-पालन।

(९८) सुल्तान फ़ीरोज़ प्रजा-पालन हेतु अत्यन्त प्रयत्न-शील रहता था। भूतपूर्व सुल्तानों

१ सम्भवतः वेतन पाने वाली स्थायी सेना।

के समय में अत्यधिक क़ानून (कर) थे। राज्य की प्रजा कर अदा करते करते नष्ट हो जाती थी। कुछ सूत्रों से मुझे ज्ञात हुआ है कि प्रजा के पास केवल एक गाय छोड़ दी जाती थी और सब कुछ ले लिया जाता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने शरा के विरुद्ध समस्त (करों) का (९९) अन्त करा दिया और जो (कर) शरा के अनुकूल थे, उनमें भी कमी करदी। दीवानी के मुतालबों में दीवान के महसूल को छोड़ कर पिछले करों में से तन्के में दो जीतल ही लेने का नियम रहने दिया। यदि कोई कारकुन अथवा कर्मचारी उससे अधिक लेता तो कड़ी पूछताछ की जाती। यदि कारखानों के लिये कोई सामान अथवा वस्तु मोल ली जाती तो प्रचलित भाव एवं न्याययुक्त दाम देकर मोल ली जाती। बाजार के छोटे बड़े सभी प्रसन्न थे। जहाँ कहीं कोई उत्तम वस्तु अथवा सामान होता तो लोग उसे कारखानों के लिये एकत्र कर लेते कारण कि भाव न्याय पर आधारित होता और मूल्य एकमुश्त अदा कर दिया जाता था; अतः लोगों को बड़ा लाभ होता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने ईश्वर का अत्यधिक भय रखने के कारण, राज्य के पदाधिकारियो को चेतावनी दे दी थी कि किसी पर किसी लोभ के कारण कोई अत्याचार न हो। इस चेतावनी के कारण प्रजा समृद्ध हो गई। यहाँ तक कि प्रत्येक अक़्ता, परगने तथा कोस पर चार ग्राम[1] बस गये। प्रजा के घरों में इतना अनाज, धन, घोड़े एवं सम्पत्ति एकत्र हो गई कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। प्रत्येक (१००) के पास अत्यधिक सोना चाँदी एवं सम्पत्ति हो गई। प्रजा में, स्त्रियों में से कोई ऐसी स्त्री न थी जिसके पास आभूषण न हों। प्रजा में से प्रत्येक के घर में सुन्दर बिछौने, अच्छे पलंग, अत्यधिक वस्तुयें एवं धन सम्पत्ति एकत्र हो गई थीं। सभी के पास अत्यधिक वस्त्र थे। समस्त देहली का राज्य धन सम्पत्ति की अधिकता के कारण निश्चिन्त हो गया था।

अध्याय १७

ख़ुसरो मलिक तथा ख़ुदावन्दज़ादा, जो सुल्तान तुग़लुक़ की पुत्री थी, का षड्यन्त्र।

सुल्तान तुग़लुक़ की पुत्री ख़ुदावन्दज़ादा तथा उसका पति ख़ुसरो मलिक देहली में सुल्तान मुहम्मद के अन्तःपुर में अपने घर में निवास करते थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का नियम था कि शुक्रवार की नमाज़ के उपरान्त ख़ुदावन्दज़ादा से भेंट करने विशेष रूप से जाया करता था। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ख़ुदावन्दज़ादा को देखता तो आदरपूर्वक आगे बढ़ कर खड़ा हो जाता और अभिवादन करता। उस समय ख़ुदावन्दज़ादा भी आदर पूर्वक अभिवादन करती। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा ख़ुदावन्दज़ादा एक ही क़ालीन[2] पर (१०१) आसीन होते। ख़ुसरो मलिक उस समय खड़ा रहता। दावर मलिक ख़ुदावन्दज़ादा के पीछे बैठता। कुछ देर इधर उधर की वार्त्तालाप के उपरान्त ख़ुदावन्दज़ादा पान देती और सुल्तान फ़ीरोज़ लौट जाता। इसी प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह प्रत्येक शुक्रवार को नियमित रूप से उसके पास जाता था।

ईर्ष्या के कारण ख़ुसरो मलिक तथा ख़ुदावन्दज़ादा ने निश्चय किया कि सुल्तान

१ चौगुने ग्राम।

२ जामा ख़ाना।

फ़ीरोज़ शाह को छल से पकड़ कर उसकी हत्या करा दी जाय। उस महल में छत पर भी इमारत थी जिसमें बाज़ू में दो कोठरियाँ थीं। ख़ुसरो मलिक ने कुछ मनुष्यों को सिर से पाँव तक कवच पहना कर बाज़ू की दोनों कोठरियों में छिपा दिया और उन्हें समझा दिया कि जब ख़ुदावन्दज़ादा अपने सिर का पल्लू सीधा करे तो वे बाहर निकल कर सुल्तान फ़ीरोज़ का शीर्ष शरीर से पृथक् करदें। कुछ कवच धारियों को दुःशील ख़ुसरो मलिक ने बाहर के द्वार के तख़्तों के नीचे छिपा दिया और उन्हें बता दिया कि यदि सुल्तान फ़ीरोज़ (१०२) शाह किसी प्रकार घर के बाहर सुरक्षित आ जाय तो वे सुल्तान पर टूट पड़ें और उसे सुरक्षित बाहर न जाने दें।

शुक्रवार के दिन जब नमाज़ के उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह नियमानुसार ख़ुदावन्दज़ादा से भेंट करने गया तो भेंट के उपरान्त दोनों छत के नीचे एक कालीन पर बैठे। दावर मलिक ख़ुदावन्दज़ादा के पीछे विगत शुक्रवारों की भाँति बैठा। दुष्ट ख़ुसरो मलिक ख़ुदावन्दज़ादा का दूसरा पति था। उस समय ईश्वर के आदेशानुसार दावर मलिक सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को देखते ही अपनी अंगूठे के पास की अंगुली दाँतों से काटने लगा और आँखों से संकेत करने लगा कि वह उस स्थान से शीघ्रातिशीघ्र अपने घर चला जाय। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह पान की प्रतीक्षा किये बिना ही उठ खड़ा हुआ और ख़ुदावन्दज़ादा के रोकने पर भी न रुका। उसने कहा, "फ़तह ख़ाँ रुग्ण है इसलिये शीघ्र जा रहा हूँ। ईश्वर ने चाहा (१०३) तो दूसरे दिन शीघ्र आऊँगा।" सुल्तान तुरन्त ख़ुदावन्दज़ादा के घर के बाहर निकल गया। जो कवचधारी बाज़ु की कोठरी में थे, वे इन बातों की सूचना न पा सके। ईश्वर की कृपा से उन लोगों को भी जो द्वार के पास के तख़्तों के नीचे छिपे थे सुल्तान के प्रविष्ट होने की तो सूचना हुई किन्तु बाहर जाने की कोई सूचना न हो सकी।

वह ईश्वर की कृपा से उन दुष्टों के घर से निकल कर चिल्लाया और अपने हितैषियों को बुलाने लगा। शुक्रवार के कारण अधिकतर मलिक लौट गये थे। राय भीरहू भट्टी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का मामा उपस्थित था। उसने उत्तर दिया। सुल्तान ने सम्राटों के समान गरज कर राय भीरहू से तलवार माँगी। राय भीरहू समझ गया कि कार्य बिगड़ (१०४) चुका है। उसने कहा 'मैं तलवार खींचे ख़ुदावन्दे आलम (संसार के स्वामी) के पीछे-पीछे चलूंगा।" सुल्तान ने उसकी बात न सुनी। राय भीरहू के हाथ से तलवार ले ली और मियान से निकाल कर सुल्तान मुहम्मद के अन्तःपुर से बाहर निकल आया और अपने राजभवन के ऊपर चढ़ गया। तत्काल दरबार के समस्त ख़ानों तथा मलिकों को बुलवाया। ख़ुसरो मलिक तथा ख़ुदावन्दज़ादा का घर घेर लिया गया। उन कवचधारियों को उपस्थित किया गया। उन लोगों ने समस्त बातें स्पष्ट रूप से कह दीं। सुल्तान ने उन लोगों से पूछा, "तुम्हें हमारे विषय में भी कोई सूचना थी?" उन्होंने कहा "हमें आपके जाने के विषय में तो ज्ञात है किन्तु लौटने के विषय में कुछ पता नहीं।" सुल्तान ने इस घटना के प्रमाणित हो जाने के उपरान्त ख़ुदावन्दज़ादा को एकान्त-वास ग्रहण कर लेने का आदेश दे दिया और उसकी वृत्ति निश्चित करदी। ख़ुदावन्दज़ादा के पास अत्यधिक धन सम्पत्ति थी। ख़ुसरो मलिक ने उस धन से षड्यन्त्र रचना चाहा था अतः वह सब धन राजकोष में दाखिल कर लिया गया और ख़ुसरो मलिक को (देश से) निकाल दिया गया। दावर मलिक को आदेश दिया गया कि वह प्रत्येक मास की पहली तिथि को बारानी तथा जूते पहन कर उससे (सुल्तान से) भेंट करने आया करे।

अध्याय १८

ईदों तथा जुमे के अवसर पर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा खुत्बे में भूतपूर्व सुल्तानों के नाम का सम्मिलित करना तथा सुल्तानों के सिक्कों का उल्लेख।

(१०६) देहली के सुल्तानों की यह प्रथा थी कि ईद तथा जुमे के खुत्बों[१] में वर्तमान सुल्तान का नाम पढ़ा करते थे और देहली के भूत-पूर्व सुल्तानों का उल्लेख नहीं करते थे। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का राज्यकाल प्रारम्भ हुआ तो लोगों ने सुल्तान फ़ीरोज़ के नाम का खुत्बा पढ़ना चाहा। सुल्तान ने कहा कि 'यह उचित नहीं कि भूत काल के सुल्तानों का नाम खुत्बे से पृथक् कर दिया जाय। सर्वप्रथम भूतकाल के सुल्तानों का नाम पढ़ा जाय और तत्पश्चात् मेरी चर्चा हो।' भूतकाल के सुल्तानों के नाम इस प्रकार रक्खे गये :

(१) सुल्तान शिहाबुद्दीन मुहम्मद बिन साम
(२) सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश
(३) सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद
(४) सुल्तान ग़यासुद्दीन बल्बन
(५) सुल्तान जलालुद्दीन फ़ीरोज
(१०७) (६) सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद खलजी
(७) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन मुबारक
(८) सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह
(९) सुल्तान मुहम्मद आदिल[२]
(१०) सुल्तान फ़ीरोज शाह

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पश्चात् दो बादशाहों के खुत्बे निश्चित हुये : (१) सुल्तान मुहम्मद बिन फ़ीरोज़ शाह (२) सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दर शाह[३]

ताजदारी[४] के सिक्के[५]

समस्त संसार वालों को ज्ञात है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने ताजदारी के नियमानुसार राज्य व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध हेतु २१ सिक्कों का तथा राज्य-व्यवस्था की ३१ अलामतों[६] का आविष्कार[७] किया। यह इतिहासकार पाठकों के लाभार्थ प्रत्येक की चर्चा विस्तार रूप से पृथक्-पृथक् करता है।

---

१ खुत्बा उस प्रवचन को कहते हैं जो दोनों ईदों तथा जुमे की नमाज़ के साथ पढ़ा जाता है। इसमें ईश्वर की स्तुति तथा मुहम्मद साहब एवं उनके मित्रों तथा वंश वालों की प्रशंसा के उपरान्त समकालीन बादशाह का वर्णन होता है। यदि राज्य के किसी प्रदेश में कोई अन्य व्यक्ति अपने नाम का खुत्बा पढ़वा देता था तो वह विद्रोही समझा जाता था।

२ मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह।

३ एक पोथी के अनुसार सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दर शाह बिन सुल्तान मुहम्मद शाह।

४ बादशाही सम्मान।

५ अधिनियम।

६ चिह्न किन्तु इस स्थान पर आदेश।

७ पुस्तक में वज़ा शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका साधारण अर्थ आविष्कार है किन्तु जो आविष्कारों की सूची दी गई है उनमें से आविष्कार कोई भी नहीं, अतः आविष्कार का अर्थ, 'लागू करना' ही समझना चाहिये।

(१०८) २१ सिक्के इस प्रकार हैं

(१) खुत्बा
(२) तख्त सन्दली[1]
(३) अक़ीक़ की मुहर[2]
(४) तौक़ी तथा तबलीग़ में तुग़रा[3]
(५) मगसराँ*
(६) बाँगे पास[4]
(७) दिरआ[5]
(८) ग़ाशियये पारा[6]
(९) सिलाहर वक़्त[7]
(१०) जंजीर पेशे दाख़ूल[8]
(११) राजप्रासाद के समक्ष परिजन।
(१२) अभियानों के समय नौबत।
(१३) शाही टोपी।
(१४) काला चत्र (छत्र)
(१५) सफ़ेद निषंग।
(१६) इतिहास लिखवाना।
(१७) हाथियों पर भार।
(१८) मलिकों की राजप्रासाद में प्रातःकाल उपस्थिति।
(१९) (बादशाह के) बाहर निकलने के समय घोषणा का होना।
(२०) दुर्रा बबदकोश[9]

संक्षेप में ये २१ अधिनियम बादशाहों की प्रथानुसार हैं किन्तु दो सिक्के (अधिनियम) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने अपने राज्यकाल में अपनी बुद्धिमत्ता के कारण आविष्कार किये: (१) तास घड़ियाला जिसका आविष्कार थट्टा की वापसी के उपरान्त हुआ। इसका उल्लेख थट्टा के अभियान की चर्चा के उपरान्त होगा। दूसरा अधिनियम निसारे चत्र[10]। यह भी सुल्तान फ़ीरोज़ का आविष्कार है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के बादशाह हो जाने के उपरान्त सुख शान्ति प्रारम्भ हो गई। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दिया कि शाही चत्र तथा अन्य चत्रों में अन्तर होना चाहिये।

---

१ चन्दन का राजसिंहासन।
२ एक प्रकार के लाल रंग के रत्न की मुद्रा।
३ शाही फ़रमानों में सुन्दर लेख में शाही उपाधि आदि।
४ दिन अथवा रात का एक पहर व्यतीत हो जाने पर उसकी घोषणा।
५ गज़ अथवा किसी प्रकार का माप।
६ घोड़े के ज़ीन पर के ग़लाफ़ का नियम।
७ प्रत्येक समय अस्त्र शस्त्र रखना।
८ शाही महल के द्वार के समक्ष शृंखला।
९ यह शब्द स्पष्ट नहीं। उपर्युक्त सूची में कुल २० नियमों का उल्लेख है।
१० शाही छत्र पर से जो धन न्यौछावर किया जाय। यह भी बड़ी प्राचीन प्रथा है।
* मोरछल हिलाने वाला।

दूसरा भाग

लखनौती का उल्लेख, जाजनगर तथा नगर कोट की ओर दो बार प्रस्थान।

अध्याय १

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा प्रथम बार लखनौती की ओर प्रस्थान। एक हज़ार बन्द कुशा नावों का कहारों की गर्दनों में जाना।

(१०९) इस इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि ७०,००० खान तथा मलिक निकले और इस प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ ने बड़े वैभव तथा ऐश्वर्य से बंगाले की ओर प्रस्थान किया और लखनौती पहुँचा तथा ख़ाने जहाँ देहली नगर में रह गया।

अध्याय २

सुल्तान फ़ीरोज़ का लखनौती पहुँचना तथा उसे घेर लेना।

(११०) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ बड़े ऐश्वर्य तथा वैभव से बंगाल पहुँचा। सुल्तान शम्सुद्दीन की सेना ने जो नदी तट पर थी अपनी शक्ति प्रदर्शित की अर्थात् सरा, गंगा एवं कोसी नदी पर। सुल्तान फ़ीरोज़ की सेना के वीर तथा योद्धा बाण एवं भाले लेकर बन्द कुशा नावों पर, जो भेजदी गई थीं, सवार हुए और बाण तथा भाले की नोक से लोगों को लौटा देते थे। संक्षेप में जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपनी हितैषी सेना के साथ कोसी नदी के तट पर पहुँचा तो उसने वहाँ कुछ विश्राम किया।

दूसरे तट पर शम्सुद्दीन अपार सेना लिए डटा था और नदी पार करना कठिन था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह कोसी के ऊपर १०० कोस तक अग्रसर हुआ और जियारन[१] के पास—जहाँ से कोसी नदी पर्वत से निकलती है और नदी छिछली है—उतरा। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात (१११) हुआ है कि उस स्थान पर जल बड़े वेग से बहता है। ५०० मन के पत्थर ठीकरों के समान बहते चले जाते हैं। सुल्तान ने आदेश दिया कि जहाँ पानी छिछला हो ऊपर की ओर तथा नीचे की ओर हाथी खड़े कर दिये जायँ जिससे सेना वाले सुगमतापूर्वक नदी पार करलें। ऊपर की ओर हाथी इस कारण खड़े किये गये कि जल का वेग कम हो जाय। हाथियों के रस्सियाँ बाँध दी गईं। नीचे की ओर इस कारण हाथी खड़े किये कि जो कोई डूबने लगे वह रस्सी पकड़ ले। जब ईश्वर की कृपा से सुल्तानी सेना ने कोसी नदी पार करली और सुल्तान शम्सुद्दीन की ओर पर्वत के समान अग्रसर हुई तो सुल्तान शम्सुद्दीन ने सुना कि एक बहुत भारी सेना ने जियारन (चम्पारन) के पास कोसी नदी पार करली, तो भयभीत होकर सुल्तान शम्सुद्दीन असंख्य सेना लेकर एकदला में घुस गया। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि शाही सेना के पार होने के समय सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने राय जियारन (चम्पारन) को चत्र प्रदान किया था।

संक्षेप में सुल्तान शम्सुद्दीन पंडुवा नगर छोड़ कर एकदला में घुस गया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह एकदला की ओर बढ़ा और उसने उस स्थान को बड़े प्रबन्ध के साथ घेर लिया

१ सम्भवतः चम्पारन।

और अपनी सेना के चारों ओर कटगढ़ तैयार करा लिया तथा खाइयाँ खुदवालीं। प्रत्येक दिन सुल्तान शम्सुद्दीन की सेना एकदला से निकल कर युद्ध करती थी। इस ओर से शाही (११२) सेना उनपर बाणों के वार करती थी। सुल्तान शम्सुद्दीन अपनी डींग के बावजूद बड़े कष्ट में एकदला द्वीप में घिरा था और उसका समस्त राज्य विध्वंस हो रहा था। बङ्गाल का जो राय अथवा राना एवं ज़मीनदार सुल्तान फ़ीरोज़ का अधीन बन जाता उसे क्षमा कर दिया जाता। बङ्गाल के अधिकतर लोगों ने सुल्तान फ़ीरोज से युद्ध किया। नित्य दोनों ओर से युद्ध होता और परस्पर ज़ोर आज़माई होती। इस प्रकार जब कुछ समय व्यतीत हो गया और सूर्य कर्क राशि में प्रविष्ट होने वाला था तो सुल्तान फ़ीरोज़ ने अपने विश्वासपात्रों से परामर्श किया। विचार विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि सुल्तान शम्सुद्दीन क़िला बन्द हो गया है और एकदला द्वीप के चारों ओर समुद्र बन गये हैं। सुल्तान शम्सुद्दीन समझता है कि वर्षा ऋतु आजाय तो बङ्गाल-भूमि से जलप्लाव के कारण शाही सेना लौट जायगी अतः इस अवसर पर यह उचित है कि युक्ति से काम लेकर कुछ (११३) कोस पीछे हट जाना चाहिये और देखना चाहिये कि परोक्ष से क्या होता है।

दूसरे दिन फ़ीरोज़ शाह ने देहली की ओर प्रस्थान किया और देहली की ओर चल दिया। ७ कोस की दूरी पर पड़ाव हुआ और कुछ क़लन्दरों को धोका देने के लिये एकदला भेजा गया और उन्हें समझा दिया गया कि यदि तुम्हें पकड़ कर सुल्तान शम्सुद्दीन के समक्ष प्रस्तुत किया जाय और वह फ़ीरोज़ शाह की सेना के विषय में प्रश्न करे तो उसे बतादें कि सुल्तान फ़ीरोज़ भागने वालों के समान लौट रहा है। जब क़लन्दर एकदला के कोट के नीचे पहुँचे तो उन्हें बन्दी बना कर सुल्तान शम्सुद्दीन के समक्ष प्रस्तुत किया गया। उन्होंने सुल्तान को बताया कि फ़ीरोज़ भागने वालों की भाँति अपनी सेना के साथ वापस जा रहा है। सुल्तान शम्सुद्दीन ने उन लोगों की बात पर विश्वास करके उपस्थित गणों से कहा कि सुल्तान फ़ीरोज़ पर छापा मारना चाहिये। सुल्तान अपनी अपार सेना लेकर एकदला के बाहर निकला।

अध्याय ३

सुल्तान फ़ीरोज़ का सुल्तान शम्सुद्दीन से युद्ध करना, ५० हाथी अधिकार में कर लेना, तथा बंगाले के एक लाख ८० हज़ार मनुष्यों की हत्या।

(११४) सुल्तान फ़ीरोज़ ने लौटते समय कुछ सामान छोड़ दिया। कुछ का कथन है कि फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दे दिया कि शिविर का कुछ सामान जला डाला जाय। तदनुसार कुछ सामान जला दिया गया और लोग लौट पड़े। सुल्तान शम्सुद्दीन १० हज़ार अश्वारोही तथा दो लाख पदाति एवं ५० हाथी लेकर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का पीछा करने के लिये निकला। फ़ीरोज़ शाह अपनी हितैषी सेना लेकर ७ कोस की दूरी पर पड़ाव किये हुये प्रतीक्षा कर रहा था। उस स्थान पर इस ओर के तट पर जल बड़ा गहरा था और उस ओर पर छिछला था। फ़ीरोज़ शाह के शिविर छिछले तट से पार हो चुके थे। इसी बीच में बङ्गालियों का बादशाह अचानक पहुँच गया। बिना भाला आदि खोले हुये फ़ीरोज़ शाह की सेना की ओर लपका। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को यह सूचना पहुँचाई गई और कहा गया कि शम्स मादक मूर्खता के कारण असंख्य सेना तथा पर्वत-तुल्य हाथियों को लेकर लुटेरों के नेता की भाँति प्रकट हुआ है। फ़ीरोज़ शाह ने अपनी सेना तैयार की। उसने अपनी सेना

(११५) को तीन स्थानों पर रक्खा। दाहिनी ओर मलिक देलान मीर शिकार ३० हज़ार सवारों के साथ, बाईं ओर मलिक हुसाम नवा ३० हज़ार वीरों के साथ, मध्य भाग में तातार ख़ाँ ३० हज़ार योद्धाओं के साथ। फ़ीरोज़ शाह स्वयं इन तीनों सेनाओं में चक्कर लगाता था और लोगों को प्रोत्साहन प्रदान करता था। इन तीनों सेनाओं में हाथी वितरण कर दिये गये। समस्त विशेष मरातिब[1] खड़े कर दिये गये और निशान[2] खोल दिये गये। उस दिन सभी ख़ानों तथा मलिकों के मरातिब फ़ीरोज़ शाह के मरातिब के बराबर कर दिये गये। ५०० निशान एक स्थान पर एकत्र हो गये।

संक्षेप में समस्त ढोल तथा मरातिब की दुन्दुभी एक बार बजने लगी। दोनों सेनाओं में मारकाट होने लगी। जब सुल्तान शम्सुद्दीन ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेनायें समुद्र के (११६) समान सजी देखीं तो पत्ते की भाँति काँपते हुये अपने मित्रों से कहा "उन क़लन्दरों ने छल करके हमारी सेना को क़िले के बाहर निकलवा दिया। अब जो कुछ भी ईश्वर की इच्छा होगी वह होगा।" बङ्गाल के बादशाह की सेना तथा मलिक हुसाम नवा की सेना के मध्य में युद्ध होने लगा।......अभी इस ओर युद्ध हो ही रहा था कि दाहिनी ओर से मलिक देलान ने धावा कर दिया। घोर रक्तपात होने लगा। योद्धाओं ने तलवारें खींच लीं। तलवारों के युद्ध के पश्चात् दोनों ओर के पहलवान एक दूसरे की कमर में हाथ डाल कर मल्ल युद्ध करने लगे।..........इस अवसर पर ख़ाने आज़म तातार ख़ाँ ने सुल्तान फ़ीरोज़ (११७) की ओर मुख करके कहा, "ईश्वर इस विरोधी को शहंशाह की विजय हेतु लाया है।" सुल्तान फ़ीरोज़ ने कहा, "ईश्वर से यही आशा है कि शम्स तत्काल हाथ आजाय।"

घोर युद्ध तथा अत्यधिक रक्तपात के उपरान्त छली सुल्तान शम्सुद्दीन भाग खड़ा हुआ और अपने नगर की ओर चल दिया। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि ख़ाने आज़म तातार ख़ाँ तथा उसकी भारी सेना मध्य भाग से और बाईं तथा दाईं ओर से मलिक हुसाम नवा एवं मलिक देलान ने ऐसा प्रयास किया कि बङ्गाले की समस्त सेना पंडुवा से एकदला की ओर भाग गई। तातार ख़ाँ ने बड़े वेग से बङ्गाले के बादशाह का पीछा किया। तातार ख़ां चिल्लाता रहा, "हे शम्स! काला मुख करके कहाँ जा रहा है। वीरों को पीठ न दिखानी चाहिये। कुछ देर ठहर और फ़ीरोज़ शाह के वीरों की शक्ति देख।" किन्तु सुल्तान शम्सुद्दीन इस प्रकार भागा कि उसने किसी की चिन्ता न की।..........

(११८) ईश्वर की कृपा से सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को विजय प्राप्त हुई। ४७ हाथी पकड़ लिये गये और तीन हाथी मार डाले गये। बङ्गाले का बादशाह इतनी बड़ी सेना तथा शक्ति के होते हुये भी ७ सवारों के साथ भाग खड़ा हुआ। उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। फ़ीरोज़ शाह की सेना ने बङ्गाले की सेना का पीछा किया। बङ्गाले का बादशाह किसी न किसी उपाय से भागा। उसके वीर अश्वारोही तथा पदाति खलिहान की भाँति काट डाले गये। कुछ लोगों का कथन है कि प्रयत्न करने पर भी वहाँ की भूमि न दिखाई देती थी।.....

जब सुल्तान शम्सुद्दीन भाग कर अपने क़िले के निकट पहुँचा तो क़िले के कोतवाल ने बड़ी कठिनाई से द्वार खोला। सुल्तान फ़ीरोज़ के शिविर एकदला में लग गये। कहा जाता (११९) है कि जो स्त्रियाँ एकदला के क़िले में थीं, फ़ीरोज़ शाह के क़िले के नीचे पहुँचने के समाचार पाकर क़िले के ऊपर चढ़ गईं और अपने सिरों से आँचल उतार कर नंगे सिर

१ विशेष शाही चिह्न, बाजे आदि।

२ पताकायें।

हो गई तथा विलाप करने लगीं। फीरोज़ शाह ने उन्हें इस अवस्था में देखकर कहा "मैंने नगर पर अधिकार जमा लिया है और अत्यधिक मुसलमानों को बन्दी बना लिया है, इस राज्य में मेरा ख़ुत्बा पढ़ दिया गया है, किन्तु यदि मैं क़िले में प्रविष्ट होकर मुसलमानों पर अत्याचार करूँ तो इतनी स्त्रियाँ अनुचित लोगों के हाथ पड़ जायेंगी। कल क़यामत में ईश्वर के सिंहासन के समक्ष मैं क्या मुंह दिखाऊँगा? मुझमें तथा मुग़लों में क्या अन्तर होगा?" तातार ख़ाँ ने इस अवसर पर कई बार कहा कि प्राप्त हुआ राज्य हाथ से न गँवाना चाहिये। फ़ीरोज़ शाह ने दैवी प्रेरणा से कहा कि देहली के इतने सुल्तानों ने इस राज्य पर विजय प्राप्त की किन्तु सभी ने बुद्धिमानी की कि यहाँ अधिक निवास न किया। यहाँ के अमीर (शासक) बड़ी कठिनाई से द्वीपों के मध्य में जीवन व्यतीत करते हैं, इसलिये देहली के सुल्तानों की प्रथा का विरोध करना उचित नहीं। राज्य-नीति इसी में है। फ़ीरोज़ शाह यह सोचकर लौट गया और एकदला का नाम आज़ादपुर रख दिया।

(१२०) कहा जाता है कि जब शम्सुद्दीन, तातार ख़ाँ के भय से भागा और ख़ाने आज़म तातार ख़ाँ निकट पहुँच कर तलवार चलाने वाला ही था कि उसने कुछ सोचकर तलवार न चलाई और उसका पीछा न किया तथा लौट आया। युद्ध के उपरान्त जब फ़ीरोज़ शाह ने इसका कारण पूछा तो तातार ख़ाँ ने उत्तर दिया "बादशाहों पर तलवार चलाना मेरा कार्य नहीं।" सुल्तान यह उत्तर सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

अध्याय ४

सुल्तान फ़ीरोज़ की देहली को वापसी।

(१२१) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने विजय प्राप्त करने के उपरान्त आदेश दिया कि मरे हुये बंगाली अश्वारोहियों तथा पदातियों के सिर एकत्र किये जायँ। उसने आदेश दिया कि जो कोई एक बंगाली का सिर लाये उसे चाँदी का एक तन्का दिया जाय। गणना पर पता चला कि एक लाख अस्सी हज़ार अपितु इससे अधिक सिर लाये गये इसलिये कि ७ कोस तक बुरी तरह पीछा किया गया था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह देखता था और शिक्षा ग्रहण करता था और कहता था कि ये लोग रोटी के लिये इस दशा को प्राप्त हुये हैं।

(१२२) संक्षेप में फ़ीरोज़ शाह उस स्थान से शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके देहली की ओर वापस हुआ और पंडुवा पहुँचा। वहाँ फ़ीरोज़ शाह के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा गया। उस नगर का नाम फ़ीरोज़ाबाद रक्खा गया, इस प्रकार काग़ज़ों में आज़ादपुर उर्फ़ एकदला तथा फ़ीरोज़ाबाद उर्फ़ पंडुवा लिखा जाने लगा। जब फ़ीरोज़ शाह कोसी नदी के तट पर पहुंचा और वर्षा ऋतु आ गई तो आदेश हुआ कि सेना बन्द कुशा नावों द्वारा नदी पार करे। समस्त सेना ने नावों से नदी पार की। जब सुल्तान शम्सुद्दीन एकदला में प्रविष्ट हुआ तो उस कोतवाल की, जिसने द्वार बन्द किये थे, बन्दी बना कर हत्या करा डाली।

लौटते समय सुल्तान ने लखनौती की विजय के पत्र देहली भेजे। उस समय ख़ाने (१२३) जहां मक़बूल वज़ीर, शहर देहली में नायबे ग़ैबत[1] था और राज्य की रक्षा में बड़ा प्रयत्नशील था। विजय पत्र प्राप्त होने पर बंगाले की विजय तथा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह एवं शाही सेना की कुशलता की ख़ुशी में देहली में २१ दिन तक ख़ुशी के ढोल बजाये गये।

१ सुल्तान की अनुपस्थिति में उसकी ओर से प्रत्येक अधिकार का स्वामी।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह नगर के निकट पहुँचा तो खानें जहाँ ने अत्यधिक सामान तथा उपहार प्रस्तुत किये। छः क़ुब्बे बाँधे गये। अभी फ़ीरोज़ाबाद न बसाया गया था। जिस दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह देहली पहुँचा उस दिन असंख्य पताकायें एकत्र हो गईं। पताकाओं की प्रथा भूतकाल में न थी। यह भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का विशेष आविष्कार है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के देहली में प्रविष्ट होने के दिन लखनौती से जीते हुए ४७ हाथियों को रंगा गया और उन पर हौदज आदि कस कर तथा पर्दे लगा कर शाही सेना के आगे करके नगर में लाया गया। सभी ने स्वागत किया और सुल्तान के लिये शुभ कामनायें कीं।

(१२४) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह पहली बार जब उसने लखनौती विजय की और बंगाल के बादशाह पर अधिकार जमाया तो ११ मास तक लखनौती की ओर रहा और ११ मास उपरान्त देहली वापस आया।

अध्याय ५

शहर हिसार फ़ीरोज़ा का बसाया जाना।

कहा जाता है कि जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह विजय प्राप्त करके देहली आया तो कुछ वर्षों तक निरन्तर देहली के आसपास जाता रहा। इस इतिहास के लेखक को अपने पिता द्वारा ज्ञात हुआ है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बंगाले से आने के उपरान्त ढाई वर्ष तक हिसारे फ़ीरोज़ा की ओर रहा। राज्य के पालन हेतु उसने विभिन्न प्रकार के प्रयत्न किये और उनके लाभ के द्वार लोगों की ओर खोल दिये (उनके लाभार्थ कार्य किये)। शहर हिसार फ़ीरोज़ा उन्हीं दिनों में बसाया गया। प्रत्येक बार जब सुल्तान फ़ीरोज़ शहर देहली आता तो कुछ दिन वहाँ रह कर उसी स्थान को लौट जाता। जब शाह फ़ीरोज़ ने शहर हिसार फ़ीरोज़ा बसाने के विषय में सोचा तो उस स्थान पर इससे पूर्व दो बड़े-बड़े (१२५) ग्राम बसे हुये थे: एक बड़ा लरास दूसरा छोटा लरास। बड़े लरास में ५० खरक[1] तथा छोटे लरास में ४० खरक थे। उस ओर बिना खरक के कोई ग्राम न होता था। जब शाह फ़ीरोज़ ने बड़े लरास की भूमि देखी तो वह उसे बड़ी अच्छी लगी और उसने कहा, 'क्या अच्छा हो, यदि यहाँ एक नगर बसाया जाय" उस भूमि पर सर्वदा जल का अभाव रहता था। जब ग्रीष्म ऋतु में एराक़ तथा खुरासान से यात्री उस स्थान पर पहुंचते थे तो एक गिलास जल ४ जीतल में मोल लेते थे। इस प्रकार वहाँ जल का इतना अभाव था।

सुल्तान ने कहा, "जब मैं ईश्वर के भरोसे पर मुसलमानों के लाभार्थ यहाँ नगर बसा रहा हूँ तो ईश्वर इस भूमि पर जल भी उत्पन्न कर देगा। शाह फ़ीरोज़ ने उसी भूमि पर पड़ाव किया और बड़े प्रयत्न से नगर निर्माण प्रारम्भ कर दिया। कई वर्ष तक खानों, तथा मलिकों के साथ इस कार्य में तल्लीन रहा। नरसाई पर्वत से पर्वतीय पत्थर लाये गये। पक्का चूना खुर[2] में मिलाकर एक बहुत लम्बा चौड़ा तथा बहुत ऊँचा कोट तैयार कराया (१२६) गया। राज्य के सभी स्तम्भों (अमीरों) को कोट का थोड़ा-थोड़ा भाग दे दिया गया। प्रत्येक निश्चय रूप से बड़े परिश्रम से अपना-अपना भाग बनवाने में तल्लीन हो गया। जब कोट तैयार हो गया और बहुत समय इसी कार्य में व्यतीत हो गया तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उस कोट का नाम शहर हिसार फ़ीरोज़ा रखा। कोट के तैयार होजाने के उपरान्त खाई खोदी गई। खोदने के पश्चात् खाई के दोनों बाजुओं पर मिट्टी के ढेर (एक प्रकार

१ सम्भवतः बांस बल्लियों से बनाया हुआ गाय रखने का बाड़ा।

२ एक प्रकार का पत्थर।

का धुस्स) उठाये गये तथा प्रत्येक बाजू पर बुरजी बनाई गई। कोट में एक बहुत बड़ा अद्वितीय हौज बनवाया गया। उस हौज़ का जल खाई में गिराया गया। एक वर्ष से दूसरे वर्ष तक उस हौज़ का जल खाई के भीतर बहता रहता था।

कोट में एक कूश्क (राजप्रासाद) बनाया गया जिसके समान संसार में कोई अन्य ढूंढ़ने पर भी न निकल सकता था। उस कूश्क में अनेक महल बैठने हेतु (हाल) इत्यादि बड़ी सजावट के साथ तैयार किये गये। उनमें असंख्य युक्तियाँ रखी गईं। उस कूश्क में एक युक्ति यह थी कि उसमें कोई बड़ी चतुराई से ही महलों में से होता हुआ मध्य के महल में पहुँच सकता था। बीच में पहुँच कर जो महल मिलता था उसके मार्ग में बड़ा अँधेरा था और यह बड़े सकरे स्थान का था। यदि उस कूश्क के रक्षक मार्ग न दिखावें तो उस अँधेरे से बाहर निकलना सम्भव न था। कहा जाता है कि एक बार एक फ़र्राश अकेला उस स्थान पर पहुँच गया। कई दिन अनुपस्थित रहा। तत्पश्चात् समस्त रक्षकों ने जाकर उसे उस अँधेरे के बाहर निकाला।

(१२७) जिस प्रकार शाह फ़ीरोज़ ने युक्तियों से परिपूर्ण कूश्क बनाया, उसी प्रकार शहर हिसार फ़ीरोज़ा में सभी बड़े-बड़े खानों, आदरणीय तथा सम्मानित मलिकों एवं सभी विशेष और साधारण व्यक्तियों ने बड़े प्रबन्ध से अपने-अपने घर बनवाये। फ़ीरोज़ शाह ने उस स्थान पर पूर्णतः जल का अभाव देखकर उस स्थान पर जल पहुँचाना निश्चय किया और उसने इस सम्बन्ध में स्वयं विशेष प्रयत्न किया। दो नदियों से नहरें निकाल कर हिसार फ़ीरोज़ा की भूमि पर पहुंचाईं, एक यमुना नदी से, दूसरी सतलज नदी के दहाने से। यमुना नदी से इस प्रकार नहर निकाली गई कि रजीवाह[१] नहर तथा उलुग़खानी नहर दोनों के दहाने करनाल से निकले थे और वे ८० कोस होते हुये शहर हिसार फ़ीरोज़ा पहुँचती थीं। इस इतिहासकार के पिता ने, जो उन दिनों उस सुल्तान का विश्वासपात्र था और प्रासाद में सेवा कार्य करता था और ख्वासों की शबनवीसी[२] के पद पर नियुक्त था, मुझे बताया कि फ़ीरोज़ शाह २½ वर्ष तक हिसारे फ़ीरोज़ा के निर्माण में तल्लीन रहा। सभी प्रजा इस कार्य में प्रयत्न करती रही।

(१२८) शाह फ़ीरोज़ ने प्रसन्नता-पूर्वक शहर हिसार फ़ीरोज़ा का निर्माण कराया। बहुत से उद्यान तथा अगणित वृक्ष लगवाये। प्रत्येक प्रकार के मेवे उन उद्यानों में पैदा होते थे; सदा फल, जनहरी, नारंगी, सकन्दरावल, विभिन्न प्रकार के फूल, अत्यधिक प्रकार के गन्ने, काला गन्ना, पौंडा। यदि कोई गन्ने का छिलका दाँत से निकालता तो नरमी के कारण तने तक निकल जाता। इससे पूर्व हिसार फ़ीरोज़ा की भूमि पर केवल खरीफ़ की फ़सल होती थी और रबी की फ़सल न होती थी इसलिये कि बिना जल के गेहूँ नहीं हो सकता। जब फ़ीरोज़ शाह ने असीम नहरों द्वारा हिसार फ़ीरोज़ा में जल पहुँचवा दिया तो दोनों फ़सलें पूर्ण रूप से होने लगीं।

इससे पूर्व भूतकाल के सुल्तानों के राज्य-काल में उस दिशा को पंजिकाओं तथा दीवानों (कार्यालयों) में हाँसी की शिक़ लिखते थे। शहर हिसार फ़ीरोज़ा के निर्माण के उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ ने आदेश दे दिया कि इस तिथि से शिक़ हिसार फ़ीरोज़ा लिखा जाया करे। हाँसी, अगरोहा,[३] फ़तहाबाद, सरसुती से सालोरा तथा खिज्राबाद तक एवं

१ रजबवाह।

२ सम्भवतः राज प्रासाद में रात्रि के समय कार्य करने वाले सुल्तान के विश्वासपात्रों की उपस्थिति पंजिका रखने वाला।

३ हांसी के उत्तर की ओर २७ मील पर।

अन्य अक़्तायें हिसार फ़ीरोज़ा की शिक़ में सम्मिलित हो गईं। संक्षेप में वह बहुत बड़ा नगर बन गया तथा पूर्ण रूप से आबाद हो गया और कृषि होने लगी। हिसार फ़ीरोज़ा का शिक़दार मलिक देलान को बनाया गया। असीम नहरों तथा जल के कारण हिसार फ़ीरोज़ा में अपार जल एकत्र रहता था। जो चाहता अपने अथवा उद्यान के निकट पक्का कुआँ खोद लेता। केवल चार गज़ भूमि खोदने पर जल निकल आता।

अध्याय ६

इमलाक का स्थायी किया जाना।

(१२९) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने फ़तहाबाद तथा शहर हिसार फ़ीरोज़ा बसाकर दोनों में अत्यधिक तथा असंख्य नहरें निकलवाईं तथा ८०-८० और ९०-९० कोस से इन स्थानों तक पहुँचवाईं। इनके मध्य में अनेक क़स्बे तथा ग्राम थे: उदाहरणार्थ क़स्बा जिन्द, क़स्बा धातरथ[१], शहर हाँसी, तुग़लुक़पुर उर्फ़ सपदम[२]। प्रत्येक क़स्बे तथा ग्राम में इन नहरों के जल से बहुत लाभ होने लगा। इस अवसर पर फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दिया कि राज्य के सभी गुणवान आलिमों, बरकत वाले मशायख़ (सन्तों) को एकत्र किया जाय और उनसे फ़तवा[३] पूछा जाय कि यदि कोई अकेला अपने परिश्रम तथा धन से गहरी नदियों में से नहरें निकाले और उन नहरों को क्षेत्रों क़स्बों, तथा ग्रामों में से ले जाय और वहाँ के निवासियों (१३०) को बड़ा लाभ हो तो ऐसी अवस्था में कष्ट भोगने वाले को भी उसके कष्टों से कोई लाभ होगा अथवा नहीं? सभी महा पुरुषों ने सोच विचार करके सर्वसम्मति से कहा "कष्ट भोगने वाले तथा प्रयत्न करने वाले को हक़्क़े शुर्ब प्राप्त होता है अर्थात् दस में एक।"

इस प्रकार फ़ीरोज़ शाह ने उस हक़्क़े शुर्ब को अपनी इमलाक[४] में ले लिया। इसी प्रकार उस धार्मिक बादशाह ने पिछले बादशाहों के समान बहुत से ग्राम ज़मीने अमवात[५] में आबाद करके इमलाक में दाखिल कर लिये और उन स्थानों के हासिलात[६] को आलिमों तथा मशायख़ के लिये निश्चित कर दिया और उसे बैतुल माल[७] से निकाल दिया और उन्हें भागों में निश्चित कर दिया।

उन दिनों दो चीज़ें इमलाक में सम्मिलित थीं: (१) हक़्क़े शुर्ब से प्राप्त धन (२) अहया[८] ग्रामों का कर। दो लाख तन्के फ़ीरोज़ शाह की इमलाक में एकत्र हो गये। जितनी इमलाक सुल्तान फ़ीरोज़ के पास थी राजधानी (देहली) में किसी बादशाह के पास न थी। इमलाक की संख्या इतनी अधिक हो गई तथा इस सीमा को पहुंच गई कि इमलाके खास के पदाधिकारी पृथक् नियुक्त किये गये और इमलाक का खज़ाना अलग कर दिया गया।

---

१ झिन्द के उत्तर पूर्व की ओर १० मील पर।

२ सफ़ीदून झिन्द से उत्तर-पूर्व की ओर लगभग १५ मील पर।

३ मुफ़्ती का मत। किसी समस्या के समाधान हेतु मुसलमान आलिमों का मत।

४ व्यक्तिगत सम्पत्ति।

५ ऊसर तथा वह भूमि जो व्यर्थ पड़ी हो और कृषि के योग्य न हो।

६ कर।

७ इस्लामी राज-कोष जिसका धन केवल राज्य के हित में व्यय हो सकता था।

८ ऊसर तथा व्यर्थ भूमि को कृषि के योग्य बनाना, अहया कराना कहलाता था।

जब वर्षा ऋतु आती तथा अत्यधिक वर्षा होती तो फ़ीरोज़शाही राजसिंहासन की ओर से कुछ मलिक विशेष रूप से इस कार्य के लिये नियुक्त होते जो प्रत्येक नहर के किनारे घूम-घूम कर यह समाचार लाते कि जल बहकर कहाँ से कहाँ तक पहुँच गया है। इस कार्य हेतु इस (१३१) इतिहासकार के पिता तथा चाचा को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की ओर से प्रत्येक नहर के किनारों पर घूम-घूम कर समाचार लाने के लिये नियुक्त किया गया था। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सुनता कि नहरों का जल बहकर संसार भर में फैल गया और पूर्व से पश्चिम तक पहुँच गया तो वह फूला न समाता। यदि इमलाक का कोई ग्राम नष्ट हो जाता तो फ़ीरोज़ शाह उस पदाधिकारी से बड़ा रुष्ट होता और उससे कठोर व्यवहार करता।

अध्याय ७

सुल्तान फ़ीरोज़ की इस इतिहासकार के ख़्वाजा[1] से हाँसी में भेंट।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह इस इतिहासकार के ख़्वाजा से भेंट करने हिसार फ़ीरोज़ा से हाँसी आया। उस समय इस इतिहासकार के ख़्वाजा के ख़्वाजा शेख़ (१३२) क़ुतुबुद्दीन मुनव्वर का निधन हो चुका था और इस इतिहासकार के ख़्वाजा को सज्जादा[2] प्राप्त हो चुका था। जब फ़ीरोज़ शाह उत्कृष्ट ख़ानक़ाह में प्रविष्ट हुआ तो शेख़ नूरुद्दीन सज्जादे से उठना चाहते थे और कुछ दूर बढ़ कर स्वागत करना चाहते थे किन्तु सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने शेख़ नूरुद्दीन को शपथ देकर कहा कि वे सज्जादे से न उतरें। जब भेंट तथा हाथ मिलाने के उपरान्त ईश्वर के यहाँ से चुने हुये दोनों बादशाह एक स्थान पर बैठे तो ख़्वाजा ने मशायख़ (बड़े-बड़े सूफ़ियों) के समान उपदेश देने प्रारम्भ कर दिये। तत्पश्चात् सुल्तान ने सम्राटों के समान वार्त्ता करनी प्रारम्भ की और कहा, "मैंने शहर हिसार फ़ीरोज़ा इसलाम के लाभार्थ तथा सभी लोगों के आराम के लिये बसाया है। यदि शेख़ कृपा करके शहर हिसार फ़ीरोज़ा में निवास करें तो शेख़ के लिए ख़ानक़ाह का निर्माण करा दिया जाय। हाँसी नगर भी निकट है और दस कोस से अधिक नहीं। आने जाने वालों के लिए ख़ानक़ाह के व्यय हेतु धन भी निश्चित कर दिया जायगा। शेख़ के चरणों के आशीर्वाद से आशा है कि हिसार फ़ीरोज़ा संकटों से सुरक्षित रह जायगा और पूर्ण रूप से आबाद तथा सम्पन्न हो जायगा।" शेख़ ने प्रश्न किया, "मेरा हिसारे फ़ीरोज़ा में निवास करना शाही आदेशानुसार है (१३३) अथवा मेरे अधिकार में है?" सुल्तान फ़ीरोज़ ने कहा, "मैं किस प्रकार आदेश दे सकता हूं। आपको अधिकार है।" ख़्वाजा ने उत्तर दिया, "यदि मेरा अधिकार है तो मेरा स्थान हाँसी है जो मेरे पूर्वजों का स्थान है। यह स्थान मुझे शेख़ फ़रीदुद्दीन तथा शेख़ निज़ामुद्दीन द्वारा प्राप्त हुआ है।" सुल्तान फ़ीरोज़ ने उत्तर दिया, "अत्युत्तम! शेख़ हाँसी ही में निवास करें। आशा है कि शेख़ के चरणों के आशीर्वाद से शहर हिसार फ़ीरोज़ा आबाद तथा सुरक्षित रहेगा।" ईश्वर को धन्य है कि जब मलाईन (मुग़लों) ने देहली पर छापा मारा और लोगों को नष्टभ्रष्ट कर दिया मुसलमानों का धन, ज़िम्मियों की सम्पत्ति तथा धरोहर रखने वालों का सामान लूट लिया तो हाँसी वाले इस इतिहासकार के ख़्वाजा के कारण सुरक्षित रहे और हिसार फ़ीरोज़ा के निवासी, जो हाँसी नगर में प्रविष्ट हो गये, भी ईश्वर की कृपा तथा ख़्वाजा (१३४) की विलायत (सन्त लोक) के आशीर्वाद से सुरक्षित रह गये। इसका उल्लेख, जो कि इस इतिहास के संकलन का एक उद्देश्य है, अन्त में संक्षेप में होगा।

---

१ पीर, गुरु।

२ सूफ़ियों के नेताओं की गद्दी।

अध्याय ८

यमुना तट पर फ़ीरोज़ाबाद नगर का निर्माण।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को जब फ़ीरोज़ाबाद नगर बसाने का विचार हुआ तो उसने इसके लिये बड़ा परिश्रम किया। देहली के आसपास उसने बादशाहों के योग्य बहुत से स्थान देखे। अन्त में यमुना तट पर काबीन ग्राम को इस कार्य हेतु चुना। संक्षेप में काबीन-भूमि पर कूश्क (राजप्रासाद) निर्माण प्रारम्भ हो गया। निर्माण के पदाधिकारी तथा योग्य एवं निपुण शिल्पी, कार्य में तल्लीन हो गये। दरबार के सभी ख़ानों, तथा मलिकों ने वहाँ घर बनवाये। देहली नगर से पाँच कोस पर एक बहुत बड़ा नगर बस गया। कहा जाता है कि फ़ीरोज़ाबाद नगर १८ ग्रामों की परिधि में बसाया गया। क़स्बा इन्दभत (इन्द्रप्रस्थ), सराय शेख़ मलिक यार पर्रां, सराय शेख़ अबू बक्र तूसी, काबीं ग्राम कतिहवाड़ा, लहरावत, अन्धावली, सराय मलका, सुल्तान रज़िया के मक़बरे की भूमि, बहारी, मेहरौला, सुल्तानपुर आदि इसमें सम्मिलित हुये।

(१३५) फ़ीरोज़ाबाद नगर में ईश्वर की कृपा से इतनी आबादी हो गई कि क़स्बा इन्दभत (इन्द्रप्रस्थ) से कूश्के शिकार तक पूर्ण रूप से बस गया। क़स्बा इन्दभत (इन्द्रप्रस्थ) से कूश्के शिकार ५ कोस होगा। इस पाँच कोस में प्रत्येक कोस पर आबादी थी। लोगों ने कच्चे तथा पक्के घर बनवा लिये। अगणित मसजिदों का निर्माण हो गया। लम्बे लम्बे बाज़ार बने जिनमें प्रत्येक समूह के लोग पाये जाते थे। सभी लोग धनी, सुखी तथा निश्चिन्त थे। पाँच बहुत बड़ी-बड़ी मसजिदों का निर्माण हुआ। एक मसजिदे ख़ास, ख़ान जहाँ की दो मसजिदें, एक द्वार के समक्ष दूसरी जाजनगर में, नायब बारबक की एक मसजिद, मलिक बहर शहनये नत्थी[1] की एक मसजिद, मलिक निज़ामुलमुल्क की एक मसजिद, एक जुमा मसजिद कूश्के शिकार में, इन्दभत (इन्द्रप्रस्थ) में एक मसजिद। इस प्रकार फ़ीरोज़ाबाद नगर में इन आठ मसजिदों का निर्माण हुआ। यह सब बड़ी भव्य मसजिदें थीं और इतनी लम्बी चौड़ी थीं कि एक मसजिद में दस हज़ार नमाज़ पढ़ने वाले नमाज़ पढ़ते थे।

आश्चर्य है कि फ़ीरोज़ शाह के पूरे ४० वर्षीय राज्य-काल में देहली नगर तथा फ़ीरोज़ाबाद के मध्य में यद्यपि ५ कोस की दूरी थी किन्तु नित्य बहुत से लोग अपने-अपने कार्य से देहली से फ़ीरोज़ाबाद तथा फ़ीरोज़ाबाद से देहली आते जाते थे। इस पाँच कोस में (१३६) प्रत्येक कोस पर लोग चींटियों तथा टिड्डियों के समान आया जाया करते थे। आने जाने के लिये लोग बहुत सवेरे, प्रातःकाल की नमाज़ के समय किराये पर चलाने वाले गरदून, सुतूर (चौपाये) तथा घोड़े ले आते थे और प्रतीक्षा किया करते थे। जो कोई देहली से फ़ीरोज़ाबाद जाना चाहता अथवा फ़ीरोज़ाबाद से देहली आना चाहता तो वह गरदून, चौपाये अथवा घोड़े पर, जैसा उचित समझता सवार हो जाता। कुछ जीतल किराया निश्चित था, उसे दे देता और क्षण भर में अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँच जाता। कहार डोले लिये खड़े रहते थे। जिसे आवश्यकता होती डोले पर सवार हो जाता। एक आदमी का गरदून का किराया चार जीतल लिया जाता था। सुतूर (चौपायों) का किराया ६ जीतल और घोड़े का किराया १२ जीतल था। डोले का किराया आधा तन्का।

इस प्रकार ४० वर्ष तक लोग निरन्तर उस मार्ग पर यात्रा करते रहे। निकट तथा दूर के बहुत से मज़दूर, मज़दूरी पर किसी न किसी का कार्य करने में तल्लीन रहते थे।

---

१ मलिक नत्थी शहनये बहर।

इसी बहाने उनका जीवन निर्वाह हो जाता था। ईश्वर प्रशंसनीय है कि किस प्रकार इतना भव्य तथा बसा हुआ नगर भाग्यवश विध्वंस हो गया और यहाँ के निवासी किस तरह मुग़लों द्वारा विनाश को प्राप्त हो गये तथा शेष इधर उधर चल दिये। यह सब ईश्वर की लीला है। कोई श्वाँस नहीं ले सकता।

अध्याय ९

ज़फ़र ख़ाँ का अभियोगी के रूप में सुनारगाँव से फ़ीरोज़ शाह के चरण चुम्बनार्थ आगमन।

(१३७) कहा जाता है कि फ़ीरोज़ शाह हिसार फ़ीरोज़ा की समृद्धि में प्रयत्नशील था कि ख़ाने आज़म ज़फ़र ख़ाँ सुनारगाँव से फ़ीरोज़ शाह के चरण चुम्बनार्थ पहुँचा। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि ज़फ़र ख़ाँ सुनारगाँव के बादशाह का, जिसे सुल्तान फ़ख़रुद्दीन कहते थे, जामाता था। राजधानी सुनारगाँव राजधानी पंडुवा से पहली है।

फ़ीरोज़ शाह के पहली बार बंगाले से लौटने के उपरान्त सुल्तान शम्सुद्दीन ईर्ष्या के कारण बजरों (नौकाओं) पर सवार होकर कुछ दिनों में सुनारगाँव पहुंच गया। सुल्तान फ़ख़रुद्दीन, जिसे साधारणतः लोग फ़ख़रा कहते थे, उन दिनों अपने राज्य सुनारगाँव में निश्चिंत था। सुल्तान शम्सुद्दीन ने सुल्तान फ़ख़रुद्दीन को जीवित बन्दी बनाकर तत्काल मार डाला और सुनारगाँव पर अधिकार जमा लिया। इस दुर्घटना के उपरान्त फ़ख़रुद्दीन के सम्बन्धी तथा सहायक इधर उधर भाग गये।

(१३८) ज़फ़र ख़ाँ इन दिनों भूमि-कर वसूल करने तथा भूत काल के एवं वर्तमान कर्मचारियों के विषय में पूछताछ करने हेतु सुनारगाँव में भ्रमण कर रहा था। इस घटना को सुनकर वह भय के कारण सुनारगाँव से भाग कर जहाज़ पर सवार हुआ और समुद्र के कठिन तथा भयानक मार्ग से बहुत दिन पश्चात् लम्बी यात्रा करके बड़े कष्ट भोगने तथा चतुराई से उलटे मार्ग से थट्टा पहुंचा और थट्टा से देहली पहुंचा।

जिस समय ज़फ़र ख़ाँ को शाह फ़ीरोज़ के चरण-चुम्बन हेतु प्रस्तुत किया गया और उसके विषय में सुल्तान को बताया गया, उस समय सुल्तान हिसारे फ़ीरोज़ा में था। उस दिन उसने दरबारे आम किया। प्रत्येक ख़ान तथा मलिक अपनी श्रेणी के अनुसार अपने-अपने स्थान पर खड़ा हुआ और अपनी दोनों आँखों को अपने जूतों की नोक पर जमाये था। इस इतिहासकार ने ज़फ़र ख़ाँ के चरण चुम्बन का हाल अपने पिता द्वारा सुना है और उन दिनों लेखक का पिता दरबार के विशेष व्यक्तियों के साथ सेवा करता था।

जब ज़फ़र ख़ाँ को सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया और हाजिबों के स्थान से उससे अभिवादन कराया गया, तो वह शहंशाह के ऐश्वर्य के दर्शन से मूर्च्छित हो गया। इस (१३९) लिए कि लखनौती में उसने ऐसा दरबार न देखा था। ज़फ़र ख़ाँ ने एक हाथी उपहार स्वरूप भेंट करके चरण चुम्बन किया और फ़ीरोज़ शाह की प्रशंसा एवं ईश्वर से उसके लिये शुभ कामना की। उस कृपालु तथा दयालु शाह ने ज़फ़र ख़ाँ के विषय में बहुत पूछा और सम्मानित किया। उसे प्रोत्साहन देते हुए कहा, "चिन्ता मत करो। यद्यपि तूने बड़े कष्ट भोगे हैं और बड़ी लम्बी यात्रा करके आया है किन्तु ईश्वर की कृपा से तेरी उद्देश्य-पूर्ति हो जायगी। जो कुछ तुझे सुनारगाँव में प्राप्त था, उससे द्विगुना प्राप्त हो जायेगा।........."

(१४०) ज़फ़र ख़ाँ ने अपना पूरा वृत्तान्त दिया और उस पर जो अत्याचार हुये थे,

(१४१) उसके लिये न्याय की प्रार्थना की। सुल्तान ने उत्तर दिया, "संतोष रक्खो और देखो ईश्वर का क्या आदेश है।" जफ़र खाँ तथा उन लोगों को, जो चरण-चुम्बन हेतु आये थे, ज़रदोज़ी तथा ज़रबफ़्त[1] के वस्त्र प्रदान किये गये। ज़फ़र खाँ ने प्रथम दिन सुल्तान से ३० हज़ार तन्के सरजामा ग़ुस्तन[2] के रूप में पाये और ज़फ़र-ख़ानी की पदवी प्राप्त की। ४ लाख तन्का उसका तथा उसके मित्रों का इनाम निश्चित हुआ। ज़फ़र खाँ के साथ १००० अश्वारोही तथा असंख्य पदाति थे। इस प्रकार उसी दिन दुखी ज़फ़र खाँ को नयाबते विज़ारत[3] का पद भी प्राप्त हुआ। अन्त में ज़फ़र खाँ वज़ीर नियुक्त हो गया।

दूसरे दिन जब सुल्तान ने दरबार किया तो ज़फ़र खाँ ने दीन दुखियों के समान धरती चुम्बन किया। सुल्तान ने उससे उसके दुःख का कारण पूछा। उसने पुनः दीन दुखियों की (१४२) भांति धरती पर सिर रख कर उत्तर दिया, "लोगों को सन्तोष नहीं होता और जिन पर अत्याचार किया जाता है वे चिन्तित रहते हैं। यदि मेरे विषय में कुछ सोच विचार हो जाय तो मुझे संतोष प्राप्त हो।" सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उत्तर दिया, "ज़फ़र खाँ तू इस समय देहली ख़ाने जहाँ के पास चला जा। मेरा आना भी तेरे पीछे ही होगा। देख ईश्वर का क्या आदेश होता है।"

ज़फ़र खाँ विदा होकर ख़ाने जहाँ के पास देहली पहुँचा। ख़ाने जहाँ ने भी ज़फ़र खाँ को बड़ा सम्मानित किया और उसको प्रोत्साहन दिया। चत्रे सब्ज़ (हरे छत्र) में जहाँ सुल्तान अलाउद्दीन का दरबार होता था हिसारे सब्ज़ (हरे कोट) में ठहराया। कुछ समय पश्चात् फ़ीरोज़ शाह भी देहली पहुंच गया। उसने ज़फ़र खाँ का हाल ख़ाने जहाँ से कहा और बताया कि "ज़फ़र खाँ प्रतिकार हेतु आया है। इस कार्य के विषय में क्या मत है?"

(१४३) उसने उत्तर दिया, "ईर्ष्यालु सुल्तान शम्सुद्दीन, सुल्तान का ऐश्वर्य देखकर भी एकदला पर सन्तुष्ट न रह सका और सुनारगाँव पर जो बंगाले के मध्य में है अधिकार जमा लिया और वहाँ के अत्याचार से पीड़ित लोग विनति हेतु संसार को शरण देने वाले के दरबार में आये हैं तो इस अवस्था में आप बंगाले पर आक्रमण करके उस अत्याचारी को दण्ड दें तो संसार में प्रसिद्ध हो जायेगा कि फ़ीरोज़ शाह ने पीड़ितों की विनति सुनी।"......

(१४४) यह सुनकर फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दिया कि लखनौती पर आक्रमण करने की तैयारी प्रारम्भ कर दी जाय।

अध्याय १०

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का लखनौती की ओर दुबारा प्रस्थान।

फ़ीरोज़ शाह ने लखनौती की ओर पुनः प्रस्थान किया। प्रस्थान के समय राज्य-व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध के नियमानुसार सेना को ४-४, १०-१०, ११-११[4] देकर दान के द्वार खोल दिये और समस्त सेना निश्चित हो गई। पहली बार की भाँति सुल्तान ने लखनौती की ओर प्रस्थान करते समय ८० हज़ार अश्वारोही, असंख्य पदाति, ४७० भयंकर हाथी तथा अत्यधिक बन्द कुशा नावें लीं। देहली में सुल्तान के परिश्रम से जो बहुत से रक्त पीने वाले

---

१ सोने के तारों के काम के तथा सोने के तारों से बुने हुये वस्त्र।

२ वस्त्र धोने के लिये। सम्मानित व्यक्तियों के दान के लिये इसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है। इब्ने बत्तूता ने भी इस शब्द का प्रयोग किया है। अब भी पान खाने के लिये अथवा इसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है।

३ नायब वज़ीर, वज़ीर का सहायक।

४ इराम रा चहारगान, देह, याज़देह दादा अबवाबे मराहिम ब हर यक अवाम व ख़्वास कुशाद।

दास एकत्र हो गये थे, वे भी साथ भेजे गये। इस प्रकार दो दहलीज़[१], दो बारगाह[२], दो (१४५) ख़्वाबगाह[३], मतबख़ की दहलीज़,[४] मरातिब,[५] प्रत्येक प्रकार के १८० निशाने[६] ८४ गधों के बोझ के बराबर ढोल तथा तुरुही, ऊँट, गधों एवं घोड़ों पर चलने वाले ढोल साथ लिये गये। इस प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने अपनी हितैषी सेना, वीर पहलवान, प्रसिद्ध योद्धा एवं बहादुर ग़ाज़ियों को लेकर बंगाले की ओर निरन्तर कूच किया। ख़ाने जहाँ वज़ीर, जो योग्यता तथा परामर्श में अद्वितीय था, देहली में नयाबते ग़ैबत के नाम से रहा। ख़ाने आज़म तातार ख़ाँ उत्कृष्ट पताकाओं के साथ कुछ पड़ावों तक साथ गया। तत्पश्चात् फ़ीरोज़ शाह ने तातार ख़ाँ को लौटा दिया और हिसार फ़ीरोज़ा की ओर नियुक्त कर दिया।

तातार ख़ाँ के लौटाये जाने का हाल इस इतिहासकार शम्स सिराज अफ़ीफ़ ने अपने पिता से जो सुल्तान का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था, इस प्रकार सुना है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपने राज्य के प्रारम्भ में बादशाहों की प्रथानुसार कभी-कभी मदिरापान किया करता था। फ़ीरोज़ शाह एक मंज़िल पर उतरा था। वह राज्य-व्यवस्था में बड़ी योग्यता तथा सावधानी से अत्यधिक परिश्रम करता था। उस दिन प्रातःकाल की नमाज़ के समय फ़ीरोज़ शाह के लिये मदिरा उपस्थित की गई थी। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह विभिन्न रंगों तथा स्वाद (१४६) की मदिरा पिया करता था, कुछ केसरिया, कुछ गुलाबी और कुछ सफ़ेद। वह दूध के समान मीठी होती थी। इसी प्रकार दरबार के विश्वासपात्र विभिन्न रंगों की मदिरा लाये। सुल्तान फ़ीरोज़ प्रातःकाल की नमाज़ तथा अवराद[७] पढ़ने के उपरान्त प्याला पीना चाहता था। संयोग से उसी समय तातार ख़ाँ सुल्तान के द्वार के समक्ष पहुँच गया। विश्वासपात्रों ने सुल्तान के पास सूचना पहुँचाई। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को तातार ख़ाँ का इस प्रकार आना बड़ा बुरा लगा। बादशाह ने शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ से कहा, "किसी प्रकार बहाना करके तातार ख़ाँ को लौटा दो"; किन्तु हर प्रकार से बहाना करने पर भी तातार ख़ाँ न लौटा और द्वार के समक्ष बैठ गया और कहने लगा, "मुझे एक प्रार्थना करनी है।" विवश होकर बादशाह ने बुलवा लिया।

उस समय बादशाह पलंग के ऊपर अजगर के समान पीराहन[८] पहने बैठा था। सुल्तान तातार ख़ाँ के आने के पूर्व पलंग से चीते के समान उतर कर निहालचे पर बैठ गया और मदिरा के चिह्न[९] पलंग के नीचे छिपा दिये और एक चादर उस पलंग पर बिछा दी। जब तातार ख़ाँ पहुँचा तो उसकी दृष्टि पलंग के नीचे पड़ गई। उसे सन्देह हो गया और उसने मदिरा के चिह्न देखे। कुछ देर तक सिर झुकाये सोचता रहा और न सुल्तान फ़ीरोज़ ने कुछ कहा और न तातार ख़ाँ ने क्षण भर बाद तातार ख़ाँ ने मित्रों के समान कहा, (१४७) "हम लोग इस समय शत्रु के समक्ष जा रहे हैं। राज्य-व्यवस्था में यह कार्य बड़ा महत्त्वपूर्ण है।"

---

१ बादशाह के प्रयोग के लिये शिविर।
२ दरबार के लिये शिविर।
३ बादशाह के सोने के लिये शिविर।
४ रसोई का शिविर।
५ बाजे तथा पताका इत्यादि।
६ पताकायें।
७ विभिन्न प्रकार की दुआयें इत्यादि।
८ एक प्रकार की क़मीज़।
९ बोतलें, प्याले आदि।

छन्द

"अपने शत्रु को छोटा न समझना चाहिये।
छोटा पत्थर दाँत के नीचे क्या करता है?"[१]

यह समय तोबा[२] करने का है और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये।" सुल्तान ने पूछा, "इस वार्ता का क्या कारण है? यही न, कि मैंने कोई ऐसा निन्द्य कर्म स्पष्ट रूप से किया है जो तुम्हें अच्छा नहीं लगा।" तातार ख़ाँ ने उत्तर दिया "सेवक पलंग के नीचे किसी वस्तु के चिह्न देख रहा है।" सुल्तान ने कहा, "तातार ख़ाँ! मुझे कभी-कभी इस कार्य की इच्छा होती है।" तातार ख़ाँ ने पुनः कहा, "यह तोबा का समय है। इस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग करना उचित नहीं।" उस समय सुल्तान ने शपथ ली "जब तक तुम इस सेना में रहोगे, मैं मदिरापान न करूँगा।" तातार ख़ाँ ने कहा, "अल हमदु लिल्लाह।"[३] तातार ख़ाँ उस स्थान से लौट गया। फ़ीरोज़ शाह सोच में पड़ गया कि तातार ख़ाँ ने मेरे समक्ष बादशाहों की प्रथा के विरुद्ध शब्द कहे और इस ओर कोई ध्यान न दिया।

(१४८) जब इस बात को कुछ दिन व्यतीत हो गये तो कुछ दिन उपरान्त फ़ीरोज़ शाह ने कहा, "हिसारे फ़ीरोज़ा का मुक्ता उस स्थान पर नहीं। उस ओर मुग़लों का बड़ा भय है।" फ़ीरोज़ शाह ने तातार ख़ाँ को हिसार फ़ीरोज़ा की ओर नियुक्त किया जिससे उस ओर की प्रजा सुख तथा शान्ति से जीवन व्यतीत कर सके। तातार ख़ाँ विदा होकर लौट आया।

संक्षेप में, फ़ीरोज़ शाह ईश्वर की कृपा से क़न्नौज तथा अवध होता हुआ जौनपुर पहुँचा। अभी तक उस स्थान पर जौनपुर नगर न बसाया गया था। जब फ़ीरोज़ शाह वहाँ पहुँचा तो उसने उस स्थान को बड़ा ही सुन्दर तथा मनोरंजक पाया। उसने हृदय में सोचा कि यहाँ एक बहुत बड़ा नगर बसाना चाहिये। फ़ीरोज़ शाह छः मास तक जौनपुर में रहा और कोदी[४] नदी के तट पर एक बहुत बड़ा नगर बसाया और उसका नाम सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ के नाम पर रखा इसलिये कि सुल्तान मुहम्मद का नाम जोनाँ था। इसी कारण उस नगर का नाम जोनाँपुर रखा। इस सम्बन्ध में ख़ाने जहाँ के पास देहली सूचना भेज दी और जौनपुर नगर सुल्तानुश्शर्क़ अर्थात् ख़ाने जहाँ को सौंप दिया। ईश्वर ने चाहा तो सुल्तानुश्शर्क़ का आद्योपान्त वृत्तान्त सुल्तान मुहम्मद के हाल में दिया जायगा।

(१४९) सुल्तान ने छः मास उपरान्त जौनपुर से निरंतर कूच करके बंगाले की ओर प्रस्थान किया और कुछ समय में उस स्थान पर पहुँच गया। उस समय सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु हो चुकी थी और उसका पुत्र सुल्तान सिकन्दर सिंहासनारूढ़ हुआ था। वह भय के कारण अपनी सेना तथा वीरों को लेकर एकदला द्वीप में घुस गया। शाह फ़ीरोज़ ने उस पूरे द्वीप को घेर लिया। शाही आदेशानुसार सेना कटघरा तैयार करके सावधानी से युद्ध की प्रतीक्षा करने लगी।

---

१ अर्थात् बड़ी हानि पहुँचाता है।
२ घृणित अथवा निन्द्य कर्म करने पर पश्चाताप या उसे पुनः न करने के लिए शपथ पूर्वक की गई दृढ़ प्रतिज्ञा।
३ ईश्वर प्रशंसनीय है।
४ गोमती।

अध्याय ११

फ़ीरोज़ शाह के भय से सिकन्दर शाह का क़िला बन्द होना और उनके क़िले के बुर्ज का गिरना।

(१५०) कहा जाता है कि दोनों ओर से अरादे तथा मन्जनीक़[1] लगा कर बाणों द्वारा नित्य युद्ध होने लगा। सुल्तान की सेना क़िले के भीतर से मैदान के बाहर आने का साहस न कर सकती थी। भाग्य से एक दिन स्कन्दरिया क़िले[2] का एक शाह बुर्ज[3] गिर पड़ा। इसका कारण यह था कि वहाँ के बहुत से लोग क़िले पर खड़े हो गये और बोझ की अधिकता तथा कमज़ोर होने के कारण वह बैठ गया। क़िले का बुर्ज गिरजाने के कारण फ़ीरोज़ शाही सेना उन लोगों के समक्ष खड़ी हो गई। दोनों ओर की सेनाओं में हाहाकार मच गया। दोनों ओर वाले अपनी-अपनी सेनायें तैयार करके युद्ध के लिये डट गये। जब शोरगुल बहुत बढ़ा तो फ़ीरोज़ शाह के कानों तक पहुँच गया। उस समय शाह फ़ीरोज़ ने उन लोगों की ओर, जो उपस्थित थे, देखा। उस अवसर पर शाहज़ादा फ़तह खाँ ने कहा, "कदाचित बंगाले की सेना एकदला से हमारी सेना की ओर झपटी है।" शहंशाह ने कहा, "वस्त्र लाओ। मैं स्वयं सवार हूँगा।" फ़ीरोज़ शाह ने वस्त्र पहने और ४४ अस्त्र-शस्त्र (१५१) लगाये और घोड़े पर सवार होकर शीघ्रातिशीघ्र शोरगुल की ओर पहुँचना चाहता था कि तत्काल वीर हुसामुलमुल्क नवा दूर से दिखाई पड़ा और शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान फ़ीरोज़ के पास पहुँच कर बोला, "उनके क़िले का शाह बुर्ज मनुष्यों की अधिकता के कारण गिर पड़ा है। वीर सैनिक तथा योद्धा क़िले पर पहुँचने के लिये बढ़ रहे हैं। यदि शहंशाह का आदेश हो तो सैनिक एकबारगी क़िले पर पहुँच जायँ और शत्रुओं से युद्ध करें।" फ़ीरोज़ शाह ने यह समाचार सुनकर कुछ देर सोच कर कहा, "हुसामुद्दीन! यदि किसी प्रकार हमारी सेना के क़िले में घुसे हुये बिना इस स्थान पर विजय प्राप्त हो जाय तो अच्छा हो। जब हमारी सेना एकबारगी क़िले में घुस जायगी और लोगों की हत्या प्रारम्भ कर देगी तो हज़ारों पवित्र स्त्रियाँ अनुचित तथा दुष्ट लोगों के हाथ पड़ जायँगी। आज धैर्य धारण करो। देखो ईश्वर का क्या आदेश होता है।" उस दिन सुल्तान की समस्त सेना क़िले पर पहुँचने की प्रतीक्षा कर रही थी। सुल्तान का यह आदेश सुनकर सबको धैर्य से कार्य लेना पड़ा।

(१५२) सूर्यास्त के उपरान्त बंगाले वालों ने बड़े परिश्रम से रातों रात क़िले का बुर्ज खड़ा कर लिया और युद्ध के लिये तैयार हो गये। इस इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि एकदला का कोट मृत्तिका का बना था। उसके ऊपर भी बुर्ज बन गया। दोनों ओर की सेनायें युद्ध में तल्लीन हो गईं। कुछ दिनों के दोनों ओर के युद्ध के उपरान्त दुर्ग में खाद्य सामग्री की न्यूनता हो गई। बंगाले वाले बड़े सोच में पड़ गये। दोनों ओर के वीर तथा योद्धा, युद्ध से व्याकुल हो चुके थे। ईश्वर ने दोनों बादशाहों को शोधना का मार्ग दर्शाया।

---

१ एक प्रकार की मध्यकालीन मशीन जिससे क़िलों पर आक्रमण करते समय पत्थर अथवा जलने वाले पदार्थ फेंके जाते हैं।

२ सिकन्दर शाह के क़िले।

३ बड़ा बुर्ज; मुख्य बुर्ज।

अध्याय १२

सुल्तान सिकन्दर का सुल्तान फ़ीरोज़ से संधि करना तथा ४० हाथी प्रदान करना।

(१५३) जब सुल्तान सिकन्दर अत्यधिक कष्ट में पड़ गया तो उसने अपने वज़ीरों से परामर्श किया। उन्होंने उत्तर दिया कि छोटों का बड़ों पर विजय पाना सम्भव नहीं। यदि शहंशाह का आदेश हो तो हम हितैषी किसी व्यक्ति को फ़ीरोज़ शाह के वज़ीरों के पास भेज कर उपदेशों का गुलदस्ता उसके हाथ में दें।[1] इस अवसर पर सुल्तान सिकन्दर चुप रहा। सुल्तान सिकन्दर के वज़ीरों ने वापस होकर परस्पर कहा कि "मौनसहमति का चिह्न (१५४) है।" इस प्रकार सुल्तान सिकन्दर के वज़ीरों ने एक बुद्धिमान व्यक्ति को फ़ीरोज़ शाह के वज़ीरों के पास भेज कर संधि के विषय में उपदेश भरा पत्र भेजा। सुल्तान फ़ीरोज़ के (१५५) वज़ीरों ने संधि के महत्त्व से सहमत होकर सुल्तान से निवेदन किया कि "शत्रु द्वारा दीनता प्रकट करने पर उसे क्षमा कर देना चाहिये। क्योंकि सुल्तान सिकन्दर संधि चाहता है, अतः शहंशाह भी संधि करले और मुसलमानों के मध्य से तलवार निकल जाय।"[2] सुल्तान ने कुछ (१५६) देर सोच कर कहा, "जो कुछ हमारे राज्य के वज़ीरों ने निश्चय किया है वही मेरा निर्णय है किन्तु संधि केवल इस शर्त पर हो सकती है कि ख़ाने आज़म ज़फ़र ख़ाँ सुनार गाँव में सिंहासनारूढ़ किया जाय।" जब सुल्तान फ़ीरोज़ के वज़ीरों ने इस विषय में सुल्तान सिकन्दर के वज़ीरों को लिखा तो उन्होंने यह प्रार्थना प्रेषित की कि कोई राजदूत इस कार्य हेतु भेज दिया जाय। अतः इस ओर से ख़ाने आज़म हैबत ख़ाँ को राजदूत बना कर शाह बंगाला के पास भेजा गया।............

(१५७) सर्वप्रथम हैबत ख़ाँ ने सुल्तान सिकन्दर के वज़ीरों से भेंट की। वे सब एकत्र होकर उसे सुल्तान सिकन्दर के समक्ष ले गये। यद्यपि सुल्तान सिकन्दर को सब कुछ ज्ञात था किन्तु वह अनभिज्ञ बन गया। जब हैबत ख़ाँ सुल्तान सिकन्दर की गोष्ठी में उपस्थित हुआ तो सर्वप्रथम उसने बड़ी उत्तम शैली तथा भाषा में (उसकी) अत्यधिक प्रशंसा की और दासता की भूमि का चुम्बन किया[3] और राजदूतों के समान खड़ा हो गया।

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि हैबत ख़ाँ भी उन्हीं लोगों के प्रदेश का निवासी था और उसके दो पुत्र शाह की सेवा में थे। हैबत ख़ाँ ने उपदेशकों तथा बुद्धिमानों के समान संधि के विषय में वार्ता की। इस पर सुल्तान सिकन्दर ने कहा, "सुल्तान फ़ीरोज़ शाह मेरा स्वामी, आश्रयदाता तथा चाचा है। हमें उससे युद्ध करने का दुस्साहस किस प्रकार हो (१५८) सकता है ?" जब हैबत ख़ाँ ने सुल्तान सिकन्दर को संधि सम्बन्धी वाक्य कहते सुना तो उसने कहा कि "सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का मुख्य उद्देश्य इस स्थान पर आने का यह है कि सुनारगाँव की विलायत ज़फ़र ख़ाँ को सौंप दें।" सुल्तान सिकन्दर ने उत्तर दिया "यदि उनकी यही इच्छा है तो मुझे स्वीकार है। सुनारगाँव की विलायत ज़फ़र ख़ाँ को देता हूँ। यदि यही इच्छा थी तो इसके लिये इतना कष्ट क्यों भोगा। देहली से फ़रमान भेज दिया जाता, मैं सुनारगाँव ज़फ़र ख़ाँ को प्रदान कर देता।" हैबत ख़ाँ ने प्रसन्नतापूर्वक लौट कर जो कुछ सुल्तान सिकन्दर के यहाँ देखा तथा सुना था, सविस्तार (सुल्तान फ़ीरोज़ को) बता दिया।

१ उपदेश द्वारा काम लेने का प्रयत्न करें।
२ युद्ध न हो।
३ दीनता प्रदर्शित की।

(१५९) सुल्तान फ़ीरोज़ बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने कहा, "इसके उपरान्त ईश्वर ने चाहा तो हमारे मध्य में तलवार न रहेगी[१]। सुल्तान सिकन्दर मेरा भतीजा है। ईश्वर की कृपा से हम दोनों के राज्यों में शान्ति रहेगी।" सुल्तान फ़ीरोज़ ने हैबत ख़ाँ के निवेदन पर सुल्तान सिकन्दर के प्रोत्साहन हेतु मलिक क़ुबूल द्वारा, जो तोराबन्द[२] के उपनाम से प्रसिद्ध था, एक जड़ाऊ मुकुट जिसका मूल्य ८०,००० तन्के था, ५०० बहुमूल्य अरबी तथा तुर्की घोड़े उपहार स्वरूप सुल्तान सिकन्दर के पास भेजे तथा क़ुबूला द्वारा कहला दिया "अब हमारे मध्य में तलवार न रहेगी।"

(१६०) फ़ीरोज़ शाह उस स्थान से दो पड़ाव पीछे हट आया। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि सिकन्दर के क़िले की खाई की चौड़ाई २० गज़ थी। वहाँ पहुँच कर मलिक क़ुबूल अपनी वीरता प्रदर्शित करने के लिए घोड़े को कोड़ा मार कर खाई फाँद गया। सभी बंगाली यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये। शाह बंगाले के दरबार में पहुँच कर उसने धरती चुम्बन किया और उसके राजसिंहासन के चारों ओर ७ बार घूमा और सुल्तान सिकन्दर के लिये जो मुकुट सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने भेजा था वह उसे पहनाया। उसे वस्त्र पहनाये और कहा, "आप दोनों सदाचारी बादशाहों में क्या विरोध। वह चाचा आप भतीजे। यदि चाचा प्रेमवश भतीजे के घर अतिथि बन कर आये तो कोई आपत्ति नहीं और जो कोई शत्रुओं के समान बीच में कोई बात कहे उससे कोई लाभ नहीं। अब तुम दोनों बादशाहों को युद्ध न करना चाहिये।" सुल्तान सिकन्दर ने पूछा, "तेरा क्या नाम है?" मलिक क़ुबूल ने हिन्दवी में कहा, "तोरा बाँद।" बंगाले के बादशाह ने पुनः प्रश्न किया "तेरे समान मेरे चाचा के पास कितने दास हैं?" मलिक क़ुबूल ने उत्तर दिया "मैं दूसरे महल (श्रेणी) में हूँ। मेरे (१६१) जैसे १०,००० तलवार चलाने वाले दास दूसरे महल (श्रेणी) वाले रात्रि में पहरा देते हैं।" सुल्तान सिकन्दर इन शब्दों को सुन कर विस्मित हो गया।

संक्षेप में, सुल्तान सिकन्दर इस सन्धि से बड़ा प्रसन्न हुआ। निश्चित होकर ४० हाथी तथा विभिन्न प्रकार के उपहार एवं बहुमूल्य सम्पत्ति फ़ीरोज़ शाह के लिये भेजी और कहला भेजा, "यदि इस भतीजे पर कृपादृष्टि है तो प्रत्येक वर्ष इसी प्रकार स्मृति बनाये रखें अर्थात् स्मृति चिह्न भेजने की प्रथा जारी रखें।" जब तक दोनों बादशाह जीवित रहे दोनों ओर से स्मृति चिह्न निरन्तर आते जाते रहे। शाह बंगाला ने ४० हाथी तथा अन्य उपहार भेजे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने हाथियों के प्राप्त होने पर एक हाथी मलिक क़ुबूल को भी प्रदान किया।

(१६२) सुल्तान फ़ीरोज़ ने ज़फ़र ख़ाँ से कहा, "यदि तेरी इच्छा हो तो मैं कुछ समय तक सेना लिए इस ओर रुका रहूँ। तू सुनारगाँव चला जा।" ज़फ़र ख़ाँ ने अपनी गोष्ठी में बुद्धिमानों से परामर्श किया। सभी ने कहा "यदि इस समय सुनारगाँव चले भी जायँ तो वहाँ टिकना सम्भव नहीं। सभी घर वाले तथा परिचित एवं अपरिचित लोग मार डाले गये हैं।" ज़फ़र ख़ाँ ने सुल्तान फ़ीरोज़ से निवेदन किया कि "दास तथा उसके सभी घर वाले देहली में इतने संतुष्ट हैं कि सुनारगाँव के राज्य को कानोर से सुनारगाँव तक पूर्णतः भूल चुके हैं। यह दास निश्चित है।" फ़ीरोज़ शाह ने बहुत कहा किन्तु ज़फ़र ख़ाँ ने स्वीकार न किया और सुनारगाँव न गया। सुल्तान ने खाने जहाँ को कृपा तथा दयायुक्त फ़रमान लिखे।

---

१ युद्ध न होगा।

२ तोरा बाँधने वाला। पगड़ी पर रतन जटित कलग़ी को तोरा कहते थे। सम्भवतः वह बादशाह के तोरा बाँधता होगा।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईश्वर की कृपा से जौनपुर पहुँच गया और जौनपुर (१६३) से जाजनगर की ओर प्रस्थान किया। लखनौती के चालीस हाथी तथा अन्य हाथी लेकर जाजनगर की ओर रवाना हुआ[1]।

अध्याय १३

सुल्तान फ़ीरोज़ का जौनपुर से जाजनगर की ओर प्रस्थान।

जौनपुर पहुँच कर जाजनगर के लिये सुल्तान ने पुनः तैयारी की। दरबार के कर्मचारियों तथा प्रबन्धकों ने सामान ठीक किये। सेना वालों ने बड़े परिश्रम से तैयारी की। बादशाह ने बुनगाह[2], कड़े में छोड़ दिया और कड़े से जाजनगर की ओर शीघ्रातिशीघ्र बढ़ा। निरन्तर कूच करता हुआ बिहार होकर जाज नगर पहुँचा। जाजनगर के निवासी बड़े सुखी तथा राज्य धनी था। इतिहासकार का पिता उस सवारी में सुल्तान के साथ था। उसने मुझे बताया है कि समस्त सेना को अनाज तथा मेवे अत्यधिक मात्रा में प्राप्त हुये और सभी पूर्ण (१६४) रुप से सन्तुष्ट होगये। सेना की पूरी थकावट का अन्त हो गया।

शाह फ़ीरोज़ ने प्रसन्नतापूर्वक बिना किसी चिन्ता के बनारसी नामक स्थान पर जोकि वहाँ के रायों का प्राचीन निवासस्थान है, विश्राम किया। उन दिनों जाजनगर का राय अदेसर[3] किसी कारण बनारसी का निवास त्याग कर दूसरे स्थान पर निवास करने लगा था। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि बनारसी के कोट की परिधि ३० कोस थी। प्रत्येक कोस पर लोग आबाद थे। कुछ लोगों का कथन है कि जाजनगर के राय जो ब्राह्मण थे, यह बात अपने लिये शुभ समझते थे कि वे बनारसी के कोट में किसी न किसी भवन की वृद्धि करते रहें। इसी कारण वह बहुत बड़ा कोट हो गया।

जब दुष्ट राय जाजनगर ने सुना कि फ़ीरोज़ शाह की सेना उस भूमि पर पहुँच गई है तो वह भयभीत होकर गुप्त रूप से जहाज़ में बैठ कर समुद्र के मध्य में चला गया। उसका समस्त राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। अधिकांश बन्दी बना लिये गये। कुछ लोगों ने पर्वतों में शरण ली। अत्यधिक बन पशु पकड़ लिये गये। पशुओं की इतनी बड़ी संख्या हाथ आई (१६५) कि कोई उनकी ओर दृष्टिपात भी न करता था। दासों का भाव दो[4] जीतल हो गया। मवेशियों को कोई भी मोल न लेता था। भेड़ों की गणना भी सम्भव न थी। जिस पड़ाव पर उतरते सेना वाले भेड़ें लाकर ज़िबह करते और जो बच जातीं उन्हें वहीं छोड़ देते। जब दूसरे पड़ाव पर उतरते तो अन्य भेड़ें ले लेते। इस उल्लेख का उद्देश्य केवल यह दिखाना है कि ईश्वर ने उस प्रदेश को कितना धन-धान्य सम्पन्न बनाया था। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि उस विलायत (राज्य) के निवासियों के घर बहुत बड़े होते थे। यहाँ तक कि उनके घरों में उनके विभिन्न प्रकार के मेवों के उद्यान एवं कृषि होती थी किन्तु उस विलायत में कोई मुसलमान न रहता था। सभी काफ़िर आबाद थे।.........

(१६६) फ़ीरोज़ शाह बनारसी के आगे बढ़कर राय जाजनगर का पीछा करना चाहता था। वह गुप्त रूप से इससे पूर्व भाग कर समुद्र में घुस गया था और उसने अपने

---

१ एक हस्तलिखित पोथी में इस प्रकार है "अन्य हाथियों की लालच में जाजनगर की ओर प्रस्थान किया।"

२ शिविर के भारी ख़ेमे डेरे सामान।

३ एक पोथी में अदाया है।

४ एक पोथी में १० जीतल है।

दरबार के (भवन के) समक्ष एक भयंकर मस्त हाथी छोड़ दिया था जिससे सेना वाले उससे उलझ जायँ और उसका पीछा न करें। वह हाथी बड़ा भयंकर था। कोई अन्य हाथी उसका सामना न कर सकता था। ३ दिन तक फ़ीरोज़ शाह की सेना उसके पकड़ने का प्रयत्न करती रही। जब उसे जीवित पकड़ना सम्भव न हो सका तो तीसरे दिन बादशाह ने हाथी की हत्या कर देने का आदेश दे दिया। हाथी की हत्या के उपरान्त फ़ीरोज़ शाह सेना लेकर (१६७) क़िले में प्रविष्ट हो गया। इसी बीच में यह सूचना प्राप्त हुई कि 'इस स्थान से मिला हुआ एक घना जंगल है। उस जंगल में ७ हाथी तथा एक ख़ूंख़्वार हथनी है।' यह सुनकर फ़ीरोज़ शाह ने निश्चय किया कि सर्वप्रथम उन हाथियों को पकड़ा जाय, तत्पश्चात् राय का पीछा करने का प्रयत्न किया जाय।

अध्याय १४

सुल्तान फ़ीरोज़ का हाथियों का शिकार करना तथा राय जाज नगर की आज्ञाकारिता।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ उन जंगली हाथियों की सूचना पाकर बड़ी वीरता से जंगल की ओर अत्यधिक सेना लेकर अग्रसर हुआ। उसने देखा कि उस जंगल में दस ग्यारह कोस के भीतर हाथी अपना स्थान बनाये हैं। फ़ीरोज़ शाह के आदेशानुसार समस्त हितैषी सेना जिसमें बड़े-बड़े ख़ान तथा मलिक एवं प्रसिद्ध सरदार, पवित्र सद्र तथा बाज़ारी लोग थे, उस जंगल के चारों ओर उतर पड़ी और कटघरा[1] बाँध लिया। दो मार्ग द्वार दृढ़ता (१६८) पूर्वक बना लिये। कटघरे की चौड़ाई १० गज़ और ऊँचाई ७ गज़ थी। समस्त जंगल को मिट्टी से पाट दिया[2]। मध्य में दो मार्ग छोड़ कर उन्हें दृढ़ बना लिया। फ़ीरोज़ शाह नित्य-प्रति कटघरे को दृढ़ रखने के लिए स्वयं दो समय सवार होता और निरन्तर चेतावनी दिया करता। इस प्रकार कटघरा तैयार हुआ। कुछ भयंकर हाथी गजशाले से लाये गये। चतुर महावत उन हाथियों पर सवार हुये। इस जंगल के एक ओर से आदमियों की एक भीड़ ढोल, तुरही, अरग़ून आदि बाजे लेकर जंगल में प्रविष्ट हो गई और एक बार सब बाजे बजाने लगे तथा शोरग़ुल करने लगे। आठों हाथी जो जंगल में घुसे थे भयंकर आवाज़ों के भय से मैदान की ओर भागे। कुछ लोगों का कथन है कि जब हाथी जंगल से मैदान की ओर भागे तो प्रत्येक तनेदार वृक्ष ख़ूंख़्वार हाथियों की शक्ति से जड़ से उखड़ गया। जब जंगली हाथी जंगल के किनारे पहुँचते तो सेना के सब लोग कटघरे के ऊपर चढ़ जाते और शोरग़ुल करते तथा ढोल एवं अरग़ूनआदि बजाते। हाथी लोमड़ी की भाँति विस्मित हो हो कर किनारे से पुनः जंगल में भाग जाते।

इस प्रकार जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह हाथियों को कई दिन तक कष्ट दे चुका तो कुछ (१६९) दिन उपरान्त फ़ीरोज़ शाह के भाग्य से हाथी थक गये और उन्होंने चारा भी न खाया। वीर महावत जंगल में वृक्षों पर चढ़ गये। जो हाथी जंगल में भूखे प्यासे थकावट के कारण धीरे-धीरे चल रहे थे उनकी पीठ पर महावत जो वृक्षों पर चढ़े थे कूद पड़े तथा

१ लकड़ी का घेरा।

२ एक हस्तलिखित पोथी में यह वाक्य इस प्रकार है: "कटघरे के ये दो द्वार, जो दो मार्गों में थे, पूरी तरह से मिट्टी से पाट दिए गये और कटघरे को दृढ़ कर दिया गया।"

एक पोथी में इस प्रकार है, जो उचित है। "इस कटघरे के इन दोनों मार्गों को, जो मध्य में थे मिट्टी से पाट कर दृढ़ बना दिया।"

(१७३) मार्ग न मिलता था। अनाज तथा अन्य सामान का मूल्य बढ़ गया। लोग विभिन्न स्थानों पर नष्ट हो रहे थे। छः मास तक शहंशाह के समाचार देहली न पहुँचे। ख़ाने जहाँ शहर (देहली) में बड़ा भयभीत था। ख़ान प्रसिद्ध शासकों के समान नित्य शहर के निकट सवार होकर जाता था। उसके भय के कारण समस्त राज्य संतुष्ट था। छः मास उपरान्त ईश्वर की कृपा से कुछ मार्ग का पता चला। सुल्तान ने देहली उलाग़ (समाचार-वाहक) भेजना निश्चय किया। समस्त सेना में ढिंढोरा पीट दिया गया कि लोग अपने परिवार को कुशलता के समाचार लिख भेजें, और दौलतसरा[1] में पहुँचवा दें।

इस ढिंढोरे से सभी प्रसन्न हो गये। समस्त सेना वालों ने अपने-अपने पत्र लिखे और सुल्तान के शिविर में पहुँचा दिये। एक ऊँट पर लद कर पत्र देहली पहुँचे। ख़ाने जहाँ ने आदेश दिया कि ख़ुशी के ढोल बजाये जायें और ढिंढोरा पिटवाया कि लोग आकर अपने-अपने पत्र ले जायँ। उन पत्रों को देहली के दरबार के समक्ष ढेर कर दिया गया। जो कोई आता अपने-अपने पत्र ले जाता।......

(१७४) संक्षेप में, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह पर्वतों, जंगलों तथा नदियों को पार करता हुआ बड़े कष्ट, परिश्रम एवं योग्यता से छः मास उपरान्त ईश्वर की कृपा से अपनी हितैषी सेना को लेकर उन पर्वतों से मैदान में पहुँचा।...... सुल्तान फ़ीरोज़ कुछ दिन निरन्तर यात्रा करके पुनः अपने बुनगाह में पहुँचा। जिस समय सुल्तान फ़ीरोज़ शाह जाजनगर में था, बुनगाह को कड़े में छोड़ गया था। सुल्तान ने पर्वत से निकल कर अपने लौटने के समाचार ख़ाने जहाँ के पास देहली भेजे।

अध्याय १६

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का देहली पहुँचना तथा क़ुब्बों का बांधा जाना।

(१७५) कहा जाता है कि जब फ़ीरोज़ शाह शहर (देहली) के निकट पहुँचा तो लोग अपने सम्बन्धियों की ओर दौड़े। नगर में सुल्तान के स्वागतार्थ ख़ाने जहाँ ने बड़ी तैयारी की। जिस प्रकार लखनौती से प्रथम बार लौटने के समय विभिन्न प्रकार के क़ुब्बे बाँधे गये थे, उसी प्रकार इस बार भी हर्ष के प्रदर्शनार्थ क़ुब्बे बाँधे गये। राज्य के समस्त क़स्बों में साधारण तथा विशेष सभी व्यक्तियों ने आनन्द मंगल मनाया।...... उस समय फ़ीरोज़ाबाद नगर का निर्माण हो चुका था किन्तु कूश्क तथा कोट का अभी तक निर्माण न हुआ था; फिर भी एक क़ुब्बा फ़ीरोज़ाबाद के मैदान में बाँधा गया।

जिस दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह नगर में प्रविष्ट हुआ सभी लोगों ने झंडियाँ ले लेकर उसका स्वागत किया उन ७३ हाथियों को विभिन्न रंगों से रंग कर तथा सजा कर भेड़ के गल्ले समान सुल्तान के चत्र[2] के समक्ष करके नगर में प्रविष्ट किया गया जिससे सभी को ज्ञात हो (१७६) जाय कि सुल्तान ने इतने भयंकर हाथियों का शिकार किया है। लोग अपने परिवार के पास पहुँच कर समस्त कष्ट भूल गये[3]।

(१७७) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को इतिहास से बड़ी रुचि थी। उस समय मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी की, जो तवारीखे फ़ीरोज़शाही के लेखक थे, मृत्यु हो चुकी थी। सुल्तान

१ शाही शिविर।

२ छत्र।

३ वह रजब ७६२ हि० (मई-जून १३६१ ई०) में लखनौती से लौटा। तारीखे मुबारकशाही पृ० १३०।

फ़ीरोज़ शाह ने अपने प्रत्येक कर्मचारी से इस विषय में वार्ता की कि योग्य इतिहासकार के बिना उसके राज्य का वृत्तान्त नहीं लिखा जा सकता। जब फ़ीरोज़ शाह इस बात से निराश हो गया कि कोई योग्य इतिहासकार उसके राज्य का इतिहास लिख सकेगा तो उसने विवश होकर अपनी आकांक्षा के अनुसार अपने शब्दों में कूश्के शिकार, कूश्के नुजूल के गुम्बद के चारों ओर तथा पत्थर के मीनार की इमारत में जो कूश्के शिकार तथा फ़ीरोज़ाबाद में थी इस प्रकार खुदवा दिया : "हमने इस प्रकार हाथियों का शिकार किया, इस प्रकार हाथी लाये, इस प्रकार सफलता प्राप्त की।" यह सब इस कारण था कि समस्त योग्य तथा बुद्धिमान लोगों के समक्ष यह बातें वर्तमान रहें और वे इससे शिक्षा ग्रहण कर सकें।.........

अध्याय १७

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल की सुख सम्पन्नता

(१७८) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह लखनौती के युद्ध से लौट कर भवन निर्माण में तल्लीन हो गया। शहर फ़ीरोज़ाबाद के कूश्क का निर्माण समाप्त कराया। फ़ीरोज़ शाह ने कूश्क जन्दावरी[1] का निर्माण भी बड़े आडम्बर के साथ कराया था। क्योंकि सेना २½ वर्ष के उपरान्त लौटी थी, प्रत्येक अपने-अपने स्थान को चला गया। फ़ीरोज़ शाह अपने राज्यकाल में तीन बातों की ओर ध्यान देने लगा : (१) शिकार खेलना, कभी पक्षियों की ओर शिकरे छोड़ता, कभी घोड़े को बन पशुओं की ओर दौड़ाता (२) राज्य की समृद्धि (१७९) के लिये (३) भवन निर्माण जिसमें वह अत्यधिक निपुण था। इनमें से प्रत्येक के विषय में ईश्वर ने चाहा तो उचित स्थान पर लिखा जायगा। इस समय थट्टा वालों के विवरण से प्रारम्भ किया जाता है। सुल्तान ने अपने राजसिंहासन के पश्चात् इन तीन चार अभियानों का निरन्तर संचालन किया। दो बार लखनौती गया; एक जाजनगर का अभियान तथा एक थट्टा का।

उसके प्रयत्न से प्रत्येक वर्ष राज्य में वृद्धि होती तथा स्थान बसाये जाते। लोगों को अपार आनन्द मङ्गल प्राप्त होता। आलिमों, मशायख़ (सूफ़ियों) तथा पवित्र लोगों के लिये फ़ीरोज़ शाह ने ३६ लाख तन्के निश्चित किये थे। वृद्धों, फ़क़ीरों तथा दीनों को १०० लाख तन्के वज़ीफ़े (वृत्ति) के रूप में दिये, जिससे लोग निश्चित होकर इन नेमतों के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते रहें। इसी प्रकार ख़ानों, मलिकों तथा प्रतिष्ठित लोगों को अपार आनन्द (१८०) तथा अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त होती रहती थी। व्यापारियों को प्रत्येक वर्ष अधिक लाभ तथा बाज़ार वालों को हर साल मूल से अधिक व्याज एवं मज़दूरी करने वालों को प्रत्येक वर्ष पिछले वर्ष की अपेक्षा अच्छी मज़दूरी प्राप्त होती थी। इसी प्रकार ईश्वर की कृपा से दीन फ़क़ीर, धन-धान्य सम्पन्न हो जाते थे। हर छोटा बड़ा फ़क़ीर निश्चित होने लगा। कृषकों के लाभ में प्रत्येक वर्ष वर्तमान की अपेक्षा वृद्धि होने लगी। प्रत्येक कृषक धन-धान्य सम्पन्न तथा निश्चित हो गया। कृषकों का कार्य इस सीमा को पहुँच गया था कि यदि वे एक मुट्ठी बीज भूमि में डालते तो एक के स्थान पर ७० तथा ७०० अपितु उससे कहीं अधिक, लाभ प्राप्त होता। क़ाफ़िर, जो ज़िम्मी तथा अमानी[2] थे, फ़ीरोज़ शाही चत्र के नीचे बादशाही प्रजा के समान सुख सम्पन्नता से जीवन व्यतीत करते थे। दारे हरब वालों

१ एक पोथी में महेन्दवारी।
२ जो सुरक्षित हों।
३ वह स्थान जहां मुसलमानों का राज्य न हो और जिस से उनका युद्ध चल रहा हो।

का प्रत्येक वर्ष विनाश तथा उन्हें विध्वंस किया जाता था। दारे हरब के जितने स्थान विध्वंस होते उनसे अधिक सुल्तान के प्रजा-पालन के कारण आबाद होते। सैयिदों, क़ाज़ियों, फ़क़ीरों तथा प्रतिष्ठित लोगों के पिता अपनी पुत्रियों का सुल्तान के चरणों के आशीर्वाद से अल्पावस्था में ही विवाह कर देते थे और उनके पति को दे देते थे इसलिये कि उनके पिताओं को बहुत अधिक सामग्री प्राप्त होती थी और जिसे न प्राप्त होती उसे अपनी पुत्रियों के विवाह के लिये राजकोष से धन प्राप्त होता था। इसी प्रकार मुसलमानों के छोटे-छोटे पुत्र (१८१) निश्चिंत होकर सांसारिक लाभार्थ धार्मिक शिक्षा प्राप्त किया करते थे। आलिम, अदीब[1], ख़त्तात (सुलेख वेत्ता) शिक्षा देते थे और राजकोष से वेतन प्राप्त करते थे। वे निश्चिंत होने के कारण इस कार्य में बड़ा परिश्रम करते थे।

व्यापारी बड़ी शान से सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के चरणों के आशीर्वाद से तीन-तीन वर्ष तथा चार-चार वर्ष व्यापार हेतु दूर-दूर के प्रसिद्ध राज्यों की यात्रा के लिये जाते तथा अधिक लाभ प्राप्त करते। देहली राज्य में ईश्वर की कृपा से इतनी निश्चिंतता, समृद्धि तथा सम्पन्नता प्राप्त हो गई थी, अपितु सुल्तान फ़ीरोज़ के सदाचार के कारण समस्त संसार के बादशाहों की यही दशा थी।.........

(एक बादशाह तथा वृद्धा का प्रसिद्ध क़िस्सा जिसमें देश की सम्पन्नता का कारण उसके सदविचारों को बताया गया है).........

(१८४) इसके उल्लेख का उद्देश्य यह है कि राज्य के क़स्बों की सुख-सम्पन्नता एवं समृद्धि धर्म के आकांक्षी सुल्तान के सदाचार पर निर्भर है। क्योंकि फ़ीरोज़ शाह का ईश्वर के प्रति विश्वास शुद्ध था एवं वह मुसलमानों के लाभार्थ विशेष प्रयत्न किया करता था अतः उसके ४० वर्षीय राज्यकाल में समस्त लोगों को सुख सम्पन्नता प्राप्त रही। साधारण तथा (१८५) विशेष व्यक्तियों के हृदय से दुःख का अन्त हो गया था।.........

अध्याय १८

नगरकोट के क़िले की विजय।

कहा जाता है कि फ़ीरोज़ शाह ने लखनौती के युद्ध से लौटकर दौलताबाद की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया। समस्त सेना तथा परिजनों को १० प्रतिशत प्राप्त हुआ। सुल्तान फ़ीरोज़ दो दहलीज़, दो बारगाह, दो ख़्वाबगाह तथा मरातिब एवं सेना लेकर दौलताबाद की ओर रवाना हुआ। निरन्तर कूच करता हुआ भयाना[2] तक पहुँचा। भयाना में कुछ विश्राम किया और फिर किसी कारण वश देहली की ओर लौट गया।

(१८६) देहली पहुँच कर हितैषी सेना लेकर नगरकोट के क़िले की ओर प्रस्थान किया। हरबी ज़मींदारों की दिशा में कोई बाण अथवा भाला न फेंका[3] और सेना लेकर नगर कोट पहुँच गया[4]। नगरकोट का क़िला अत्यधिक दृढ़ पाया। राय नगरकोट क़िले के ऊपर घुस गया। विजयी सेना ने आतंकित राय की समस्त विलायत (राज्य) को विध्वंस कर दिया। ज्वाला मुखी की मूर्ति, जिसे काफ़िर पूजते थे, नगरकोट के मार्ग में थी।

१ साहित्याचार्य।
२ ब्याना।
३ उनसे युद्ध न किया।
४ वह रजब ७६६ हि० (मार्च-अप्रैल १३६५ ई०) के पूर्व देहली से रवाना न हुआ होगा।

कहा जाता है कि मूर्ति एक कोठरी में थी जिसे काफ़िर पूजते थे। कुछ काफ़िर जो यह कहते हैं कि जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ज्वालामुखी मूर्ति के निकट पहुँचा तो वह विशेषकर उसके दर्शनार्थ गया और सोने का चत्र उसपर चढ़ाया, तो यह झूठ है क्योंकि इस इतिहासकार ने अपने पिता से जो उस युद्ध में साथ गया था, सुना है कि काफ़िरों ने सुल्तान के विषय में ये शब्द झूठ गढ़ लिये थे। सुल्तान ने ४० वर्ष तक शरीअत तथा तरीक़त के अनुसार कार्य किया। वह ऐसा कार्य किस प्रकार कर सकता था ?

मेरे पिता का कथन है जब शहंशाह उस स्थान पर पहुँचा और उसने उस मूर्ति को देखा तो समस्त रायों, राणाओं, तथा ज़मींदारों को जो साथ थे, अपने समक्ष बुलवाया और (१८७) यह बात कही, "हे मूर्खों तथा इस मूर्ति के पूजकों ! इस पत्थर पूजने से क्या लाभ और उनसे प्रार्थना करने से क्या प्राप्त होता है ? शरीअत का पालन करना चाहिये। शरा का विरोधी नरक में जायगा। फ़ीरोज़ शाह ने अल्लाह के भय से उस मूर्ति को अपमानित किया। हिन्दुओं ने अत्यधिक कुफ़्र तथा अपने झूठे धर्म से प्रेम के कारण सुल्तान फ़ीरोज़ के सम्बन्ध में यह झूठा दोषारोपण किया है।" कुछ काफ़िरों का कथन है कि सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह ने भी एक चत्र उस मूर्ति के शीर्ष पर चढ़ाया था। यह भी झूठ है। मुसलमानों के लिये इन बातों पर विश्वास न करना आवश्यक है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा सुल्तान मुहम्मद शाह दोनों सुन्नत जमाअत के अनुयायी थे। अपने राज्यकाल में अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से जहाँ कहीं भी मन्दिर होता, उसे गिरवा देते। तुच्छ काफ़िरों ने यह झूठ प्रसिद्ध कर दिया है।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ नगरकोट के क़िले के निकट पहुँचा तो उस स्थान को अत्यधिक (१८८) दृढ़ पाया। राय नगरकोट क़िले के ऊपर मध्य में घुस गया। शाही सेना ने क़िले को घेर लिया। घेरे पर घेरे अपितु दस घेरे डाल दिये। दोनों ओर से मन्जनीक़ें लग गईं तथा अरादे द्वारा पत्थर चलने लगे। मन्जनीक़ के पल्लों से दोनों ओर से पत्थर हवा में धक्के खाते थे और चूर्ण हो जाते थे। छः मास तक सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेना क़िले को घेरे रही। दोनों ओर के पहलवान तथा वीर अपनी-अपनी शक्ति आज़माते थे। ईश्वर की कृपा से छः मास के उपरान्त फ़ीरोज़ शाह को विजय प्राप्त हुई। आतंकित राय क़िले से नीचे उतर आया।

एक दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह क़िले की परिधि देखने तथा काफ़िरों के विनाश हेतु सवार हुआ। राय क़िले के ऊपर था। संयोग से सुल्तान की दृष्टि राय पर पड़ गई। राय क़िले के ऊपर आज्ञाकारियों की भाँति खड़ा हो गया और दीनता प्रकट करते हुये अँगुलियाँ खोल दीं और हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। सुल्तान ने यह देखकर अपना हाथ अपनी बग़ल (१८९) में कर लिया और रूमाल बग़ल से निकाला और राय की ओर कृपादृष्टि डालकर संकेत किया कि 'आजा।' राय के समस्त महता एकत्र हुये और उन्होंने सलाह दी कि सुल्तान के बुलाने पर राय को चला जाना चाहिये। राय अभिमान त्याग कर क़िले के नीचे उतर आया और सुल्तान के चरणों पर गिर कर विनती करने लगा। सुल्तान ने राय की पीठ पर हाथ रखकर उसे ज़रदोज़ी तथा ज़रबफ़्त के वस्त्र और एक चत्र प्रदान किया तथा तत्काल बादशाहों के नियमानुसार लौटा दिया। राय को सुल्तान द्वारा तेज़ घोड़े तथा बहुमूल्य दास प्राप्त हुये। राजकोष के अधिकारियों ने सुल्तान के आदेशानुसार धन की थैलियाँ राय के हाथ पर रख दीं। राय राजसिंहासन के सामने से प्रसन्नतापूर्वक लौट गया और ईश्वर की कृपा से उस स्थान पर विजय प्राप्त हो गई।.........

(१९०) यह सब घटनायें थट्टा के युद्ध के पूर्व घटीं। थट्टा के युद्ध के उपरान्त सुल्तान ने युद्ध करना त्याग दिया और अपने राज्य का हित इसी में देखने लगा। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह नगरकोट से लौटने लगा तो राय ने क़िले से अत्यधिक उपहार तथा अपार बहुमूल्य धन-सम्पत्ति भेजी। बादशाह देहली की ओर लौट गया।

तीसरा भाग

थट्टा के युद्ध का वृत्तान्त तथा जाम एवं बाँहबना का साथ लाना और तास घड़ियाल का आविष्कार

अध्याय १

सुल्तान का खाने जहाँ से थट्टा के युद्ध के विषय में निश्चय करना।

(१९१) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ लखनौती तथा जाजनगर से लौटने के पश्चात् बादशाहों के समान देहली के आसपास शिकार के लिये सवार होकर जाता था और हरबियों से युद्ध करता ता। लखनौती के युद्ध से देहली लौटने के ४ वर्ष के बीच में यद्यपि वह प्रजा की समृद्धि का प्रयत्न करता था किन्तु हर बार जब थट्टा का उल्लेख होता तो वह दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहता "दुःख है कि स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद की थट्टा विजय की आकांक्षा पूर्ण न हुई।" इससे दरबार के विश्वासपात्र यह निष्कर्ष निकालते कि सुल्तान थट्टा पर आक्रमण करने का अभिलाषी है।

(१९२) एक दिन सुल्तान ने खाने जहाँ वज़ीर से एकान्त में परामर्श किया कि मुझे सुल्तान मुहम्मद का बदला लेना चाहिये अथवा नहीं। वज़ीर ने सोचकर उत्तर दिया कि "यह बड़ा उत्तम विचार है इसलिये कि एक तो बुज़ुर्गों के उपदेश पर आचरण करना चाहिये और प्रतिकार का प्रयत्न बड़ा ही अच्छा है, दूसरे बादशाहों को प्रत्येक वर्ष क़िलों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।"

(१९३) बादशाह ने तदनुसार आदेश दिया कि थट्टा की ओर आक्रमण की तैयारी की जाय। वज़ीर ने तैयारी प्रारम्भ करदी। उपस्थित एवं अनुपस्थित सेना का अर्ज़[1] सावधानी से प्रारम्भ करा दिया। वीर सवार तथा तलवार चलाने वाले पदातियों का, जो वजहदार[2] तथा ग़ैर वजहदार[3] से सम्बन्धित थे, अर्ज़ किया गया। लोगों में प्रसिद्ध हो गया कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईश्वर की कृपा से थट्टा पर आक्रमण करेगा। सुल्तान ने अपने सिंहासनारोहण के उपरान्त निरन्तर कुछ युद्ध किये। क्योंकि राज्य के सभी लोग सुख शान्ति से जीवन व्यतीत करते थे अतः प्रत्येक बड़े हर्ष से सेना में चला जाता था।

जब तैयारी हो गई तो ग़ैर वजही सेना को (वार्षिक वेतन का) ४० प्रतिशत दिया गया। वजहदार में से प्रत्येक अत्यधिक समृद्धि एवं सम्पन्नता के कारण घोड़ा (१९४) तथा अस्त्र-शस्त्र लेकर उपस्थित हुआ। सुल्तान बादशाहों के नियमानुसार थट्टा की ओर सवार हुआ। प्रत्येक खान तथा मलिक अत्यधिक समृद्धि के कारण बड़े ठाठ के साथ रवाना हुआ।

---

१ गणना।

२ वह सेना जो स्थायी रूप से अक्ताओं से सम्बन्धित थी।

३ वह सेना जिसे नक़द धन अथवा भूमि कर से निश्चित भाग प्रदान होता था

अध्याय २

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का थट्टा की ओर प्रस्थान ।

थट्टा प्रस्थान करने के पूर्व सुल्तान ने सर्वप्रथम धर्म के उन बुज़ुर्गों के मज़ारों के श्रद्धापूर्वक दर्शन किये जो देहली नगर के आसपास थे। तत्पश्चात् समस्त भूत काल के सुल्तानों के (मज़ारों) के दर्शन किये। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की यह प्रथा थी कि चाहे वह एक मास को चाहे दो मास को सवार होकर जाता वह समस्त प्रसिद्ध मशायख (सूफ़ियों) तथा सुल्तानों के (मज़ारों के दर्शन करता) तथा प्रत्येक से सहायता की प्रार्थना करता और अपने आपको उनकी शरण में डालता। यह वलियों (सन्तों) का गुण है।······

(१९५) जब सुल्तान किसी बुज़ुर्ग के मज़ार पर पहुँचता तो श्रद्धापूर्वक उसकी क़ब्र की ओर भागता और अत्यधिक आस्था प्रकट करता। टोपी (मुकुट) भूमि पर रख देता। इस इतिहासकार ने उसे यह कार्य करते हुये स्वयं अपनी आँखों से देखा है। जब वह शेखुल इस्लाम शेख निज़ामुद्दीन के मक़बरे जाता तो वह पाँयँती ओर अमीर खुसरो की क़ब्र के सरहाने खड़ा हो जाता और श्रद्धापूर्वक ईश्वर की प्रसन्नता के लिये अपना शीर्ष भूमि के निकट ले जाता। तत्पश्चात् दो तीन अन्य स्थानों पर अपना सिर भूमि पर रखता। जब शेख की क़ब्र के निकट पहुँचता तो ईश्वर की प्रसन्नता हेतु भूमि पर सिर रखता। तत्पश्चात् शेख की क़ब्र के (१९६) निकट बैठ जाता और बहुत कुछ दुआयें जो शरा के अनुसार हैं पढ़ता। इसके उपरान्त आगे बढ़कर शेख की क़ब्र का ग़लाफ़ पकड़ लेता और अपनी इच्छा प्रकट करता।

दर्शन के उपरान्त कुछ देर बैठ जाता और वहाँ जितने लोग दफ़्न हैं सभी की आत्मा के लिये फ़ातेहा पढ़ता। दर्शन के उपरान्त प्रत्येक क़ब्र के लिये धन का कड़ाह जो प्रत्येक मक़बरे के लिये निश्चित होता था, बैतुलमाल के खज़ानची फ़क़ीरों तथा दीनों को बाँटने हेतु फ़ीरोज़ शाह के समक्ष प्रत्येक क़ब्र के मुतवल्ली[1] को दे देते थे। इसपर भी सुल्तान प्रतिष्ठित मलिकों में से एक बहुत बड़े अमीर को मुतवल्लियों की तसल्ली के लिये नियुक्त कर देता था जिससे कोई सहायता पाने के योग्य मनुष्य छूट न जाय। अनेक बार इतिहासकार के पिता तथा चाचा को इस कार्य हेतु कुछ मक़बरों पर नियुक्त किया गया। इस प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह दर्शन करके लौट जाता।·········

(१९७) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बहुत बड़ी सेना, योद्धाओं, प्रसिद्ध पहलवान, वीर सैनिकों, चतुर पदातियों तथा पर्वत रूपी हाथियों को लेकर थट्टा की ओर रवाना हुआ। इस इतिहासकार के पिता तथा चाचा उस समय दीवाने विज़ारत में सेवा करते थे। फ़ीरोज़ शाह के साथ ९० हज़ार अश्वारोही तथा ४८० हाथी थे। खाने आज़म तातार खाँ की (१९८) उस समय मृत्यु हो चुकी थी। खाने जहाँ वज़ीर देहली में न्याबते ग़ैबत के नाम से रह गया था। फ़ीरोज़ शाह के फ़र्राश खाने में सुल्तानों तथा बादशाहों के नियमानुसार दो दहलीज़, दो बारगाह, दो ख्वाबगाह तथा नौबते संजरी साथ भेजी गईं। युद्ध के मरातिब प्रत्येक प्रकार के १८० निशान थे। इनका सविस्तार उल्लेख प्रथम भाग में हो चुका है। ८४ तबल दमामये शुतरी, अस्पी तथा खरी[2] तथा इन्हीं के समान प्रत्येक कारखाने का सामान भेजा गया।······

जब सुल्तान अजोधन पहुँचा तो सर्वप्रथम शेखुल इस्लाम शेख फ़रीदुद्दीन के (मज़ार) के दर्शन किये और आगे बढ़ा। जब वह भक्कर तथा सिविस्तान की सीमा पर पहुँचा तो उसने

१ रक्षक एवं प्रबन्धक।
२ ऊँट, घोड़े तथा गधे पर लादे जाने वाले बड़े ढोल।

आदेश दिया कि उस विलायत (राज्य) की सभी नावें उसके साथ भेज दी जायँ। ५००० (१६६) में से प्रत्येक हज़ार को एक बड़े मलिक को सौंपा गया। प्रत्येक प्रकार की ५००० नावें एकत्र हुईं। १००० नावें इस इतिहासकार के पिता तथा चाचा को सौंपी गईं। अन्त में सुल्तान फ़ीरोज़ ने आदेश दिया कि समस्त नावें सिन्ध नदी से भेजी जायँ। फ़ीरोज़ शाह स्वयं ईश्वर की शरण में सेना लेकर नावों के साथ साथ किनारे पर यात्रा कर रहा था। इस प्रकार थोड़े समय में वह थट्टा की परिधि में पहुँच गया।............

अध्याय ३

सुल्तान फ़ीरोज़ का थट्टा की परिधि में उतरना।

कहा जाता है कि उन दिनों में थट्टा की आबादी दो स्थानों पर थी। एक सिंध तट पर देहली की ओर तथा दूसरी सिन्ध नदी को पार करके। थट्टा वाले बहुत बड़ी संख्या में थे। प्रत्येक मनुष्य एक सभा के बराबर था और पर्वत के समान भारी था। सभी युद्ध-प्रिय थे। उनकी वीरता तथा पौरुष्य का हाल समस्त संसार में प्रसिद्ध था।

उन दिनों राय उन्नर का भाई जाम तथा उसका भतीजा बाँहबना थट्टा के शासक थे। वे अत्यधिक ऐश्वर्य तथा ठाठ बाट के स्वामी थे और फ़ीरोज़ शाह के मुक़ाबले में पौरुष्य के द्वार पौरुष्य के न होने पर भी खोले हुये थे। उन लोगों ने मनुष्यों की अपार भीड़ एकत्र करली थी। (२००) क्योंकि उनकी विलायत (राज्य) अत्यधिक तथा असंख्य (असीमित) थी अतः सुल्तान की चिन्ता न करके अपने बल तथा मनुष्यों की शक्ति एवं उस आबादी के कारण जो सिन्ध तट के निकट थी शत्रुता प्रकट करते हुये उन्होंने युद्ध का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। आबादी के इन दोनों स्थानों पर मिट्टी का कोट था।

संक्षेप में, अभिमानी जाम तथा बाँहबना युद्ध के लिये उद्यत हो गये। भाग्यवश फ़ीरोज़ शाह की सेना में नित्य अनाज मँहगा होने लगा। घोड़ों की महामारी का उल्लेख सम्भव नहीं। इसके कारण सेना के छोटे बड़े सभी निराश हो गये। ६० हज़ार सवारों में से यदि एक चौथाई के घोड़े भी जीवित रह गये हों तो बहुत था। अनाज का मूल्य दो तन्का तथा तीन तन्का प्रति मन से बढ़ने लगा। यह दशा देखकर अभिमानी जाम तथा बाँहबना ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेना से युद्ध करना निश्चय कर लिया और अभिमानवश अनुचित बातें करने लगे।

अध्याय ४

सुल्तान फ़ीरोज़ की सेना का थट्टा वालों से युद्ध।

(२०१) कहा जाता है कि अभिमानी जाम तथा बाँहबना अत्यधिक अश्वारोही एवं पदाति लेकर क़िले के बाहर निकल कर सुल्तान फ़ीरोज़ की सेना के समक्ष प्रकट हुये। सुल्तान फ़ीरोज़ ने अपनी सेना का अर्ज़[1] किया तो पता लगा कि अश्वारोहियों का एक चौथाई भाग भी शेष नहीं। अकाल के कारण किसी में भी शक्ति नहीं। इस पर भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने साहस करके अपनी विजयी सेना को तैयार किया। सेना के ३ भाग किये। दायाँ, बायाँ तथा मध्य।[2] समस्त हाथी इन तीनों सेनाओं में विभाजित कर दिये। सुल्तान स्वयं

---

१ गणना।

२ मैमना व मैसरा व क़ल्ब।

सवार होकर तीनों सेनाओं में चक्कर लगाता था और प्रत्येक के उत्साहवर्धन का प्रयत्न (२०२) करता था। यद्यपि वह वाह्य रूप से थट्टा की अगणित सेना की ओर कोई ध्यान न देता था किन्तु हृदय में वह अपनी सेना की निर्बलता से बड़ा दुखी था और ईश्वर से प्रार्थना करता रहता था। थट्टा की सेना में २० हज़ार वीर अश्वारोही तथा चार लाख पदाति थे। दोनों ओर के वीर बाणों की वर्षा करने लगे। उसी समय फ़ीरोज़ शाह की सेना के सामने बड़ी तेज़ आँधी चलने लगी। कोई भी आँख न खोल सकता था। इस पर भी दोनों ओर के पहलवान युद्ध कर रहे थे।

(२०३) यद्यपि सुल्तान फ़ीरोज़ की सेना अकाल तथा महामारी के कारण निर्बल हो चुकी थी किन्तु फिर भी जब वे सब मिलकर आक्रमण करते तो थट्टा निवासी अत्यधिक शक्तिशाली होने के बावजूद क़िले में घुस जाते थे। सुल्तान उनकी प्रशंसा करता रहता। अन्त में थट्टा निवासियों में शक्ति न रही। जाम अपनी सेना लेकर लौट गया। फ़ीरोज़ शाह ने अपने स्थान पर विश्राम किया किन्तु फिर भी थट्टा पर विजय न प्राप्त हुई।

सुल्तान ने अपने दरबार के हितैषियों तथा मित्रों से परामर्श किया और कहा, "इस समय इस स्थान से लौट जाना चाहिये और गुजरात की ओर प्रस्थान करना चाहिये। वहाँ सेना तैयार करके यदि जीवित रहे और ईश्वर की कृपा रही तो दूसरे वर्ष आना चाहिये। (२०४) फिर देखें क्या होता है ?"

अध्याय ५

सुल्तान फीरोज़शाह का थट्टा से लौट कर गुजरात की ओर प्रस्थान।

रात्रि में सुल्तान ने अपने विश्वासपात्रों को पुनः बुलवाया और पुनः परामर्श किया। उसने कहा कि "इस बार थट्टा पर विजय नहीं प्राप्त हो सकती। ईश्वर ने कुछ ऐसी ही स्थिति उत्पन्न करदी है। सेना अत्यधिक निर्बल हो गई है। एक अनाज के अभाव दूसरे घोड़ों की (२०५) महामारा के कारण। यदि सेना वाले साहस भी करें तो क्या हो सकता है।" सभी ने (२०६) सुल्तान के विचार से सहमत होकर कहा, "यह बहुत ही उचित है.........ऐसा हो जाने पर थट्टा में प्रसिद्ध हो जायगा कि फ़ीरोज़ शाह लौट गया और अपने नगर को चला गया तो वे भली-भाँति परिश्रम करके कृषि करेंगे और जो कुछ अनाज उनके पास होगा भूमि में डाल देंगे। रबी की फसल तैयार होने पर हम बहुत बड़ी सेना लेकर हाथियों सहित इस स्थान पर पहुँच जायँ और उनके समस्त अनाज पर अधिकार जमा लें। सेना वाले निश्चिन्त हो जायंगे और ईश्वर की कृपा से थट्टा पर विजय प्राप्त हो जायगी।"

सुल्तान ने अपने परामर्श-दाताओं की बात से सहमत होकर आदेश दिया कि "कूच का नक़्क़ारा बजा दिया जाय[1] जिससे सेना वाले अपना सामान एकत्र करलें।" कूच का नक़्क़ारा सुनते ही सेना के सब लोग प्रसन्न हो गये। सभी ने अपना सामान एकत्र कर लिया। (२०७) ख़ाने आज़म ज़फ़र ख़ाँ को, जिसके अधीन बंगाल के लोगों की बहुत बड़ी संख्या थी, मदार[2] बना कर छोड़ दिया और सुल्तान ने स्वयं प्रस्थान कर दिया। थट्टा वालों ने जब यह सुना कि सुल्तान फ़ीरोज़ अपने शिविर लेकर देहली की ओर जा रहा है तो उन लोगों ने बढ़ कर सेना का पीछा किया। प्रथम दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने दस कोस पर पड़ाव

१ प्रस्थान करने का आदेश दिया जाय।

२ मदार का अर्थ है केन्द्र अथवा वापसी का स्थान। लेखक का तात्पर्य यह है कि ज़फ़र ख़ाँ को इस कारण छोड़ दिया गया कि वही युद्ध का केन्द्र रहे और शत्रुओं को युद्ध में लगाये रक्खे।

किया था। थट्टा वाले पीछा कर रहे थे। क्योंकि ज़फ़र ख़ाँ मदार था अतः थट्टा वालों एवं बंगालियों में युद्ध हुआ। अन्त में ज़फ़र ख़ाँ की विजय हुई और ज़फ़र ख़ाँ के भय से थट्टा वाले लौट गये। ज़फ़र ख़ाँ थट्टा वालों के कुछ सिर काट कर सुल्तान की सेवा में ले गया। लौटते समय समस्त नावें थट्टा वालों को प्राप्त हो गईं। बादशाह ईश्वर की कृपा से अपने शिविर सहित गुजरात की ओर चल दिया।

अध्याय ६

सेना का कूँचीरन में पड़ना।

कहा जाता है कि सुल्तान के लौटने पर अनाज और भी महंगा होगया। नित्य अनाज का भाव बढ़ने लगा और घोड़ों की महामारी की दशा का तो उल्लेख ही सम्भव नहीं। अनाज एक तन्का तथा दो तन्का प्रति सेर अपितु इससे भी महंगा बिकने लगा था। लोगों (२०८) के लिये चलना भी सम्भव न था। लोग अन्न न मिलने पर मुरदार का मांस तथा कच्ची खाल खाते थे। कुछ लोग अत्यधिक भूख के कारण पुरानी खाल जल में उबाल कर खा जाते थे। इतना घोर अकाल था कि सेना वाले सभी मरने को तैयार हो गये थे। समस्त ख़ान तथा मलिक बिना घोड़ों के होकर पैदल चल रहे थे। सेना में से किसी के पास घोड़े न रहे थे। भाग्य ने सब को दीन अवस्था को पहुँचा दिया था। यह भी पर्याप्त न हुआ। मार्ग दर्शाने वालों ने जो इस कार्य के लिये नियुक्त किये गये थे विश्वासघात किया। उन्होंने ऐसे स्थान पर लेजा कर डाल दिया जिसे कूंचीरन कहते थे।

उस कूंचीरन में समस्त जल खारी था। यदि उस खारी जल को जिह्वा पर रख लिया जाता तो जिह्वा टुकड़े-टुकड़े हो जाती। जब सेना वहाँ फँस कर विस्मित खड़ी थी तो सुल्तान ने एक दुष्ट मार्ग दर्शाने वाले की हत्या करा दी। दूसरों ने प्राणों के भय से सच-सच बता दिया कि "हम लोगों ने विश्वासघात किया है। तुम लोगों को ऐसे स्थान पर ले आये जहाँ से यदि हवा में भी उड़ोगे तो सुरक्षित नहीं जा सकते। इस स्थान को कूंचीरन कहते हैं। यहाँ (२०९) से समुद्र निकट है और यह खारीपन उसी के प्रभाव से है। यहाँ प्राण नष्ट हो जायँगे।"

मार्ग दर्शाने वालों की बात सुन कर समस्त सेना वालों ने प्राणों से हाथ धो लिये तथा निराश हो गये। फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दिया कि "अपने तथा अपने अधीनों के लिये मीठा जल लेलो और उस खारे जल (की भूमि) को पार करो।" वहाँ अथाह खारा जल था। सभी लोग हैरान व परेशान थे। जहाँ तक दृष्टि जाती खारा ही खारा जल दृष्टिगत होता था। लोग बड़ी कठिनाई तथा सहस्रों परेशानी से मीठा जल लेकर खारे जल (की भूमि) में प्रविष्ट हुये। वहाँ का जल इतना अधिक खारा था कि यदि मीठे जल का घड़ा उस खारे जल में गिर जाता तो वह भी खारा हो जाता। यदि मीठे जल का घड़ा खारे पानी की गीली भूमि पर रख दिया जाता तो वह भी खारा हो जाता। कोई भी उसे जिह्वा पर न रख सकता था।

अन्त में जब सेना बड़ी कठिनाई तथा परेशानी से उस जल के पार हुई और आगे बढ़ी तो एक ऐसे मैदान में पहुँच गई जहाँ किसी पक्षी तक ने अण्डे न दिये थे और न कोई पक्षी पैदा ही हुआ था। किसी स्थान पर कोई घास अथवा वृक्ष न उगा था; यहाँ तक कि यदि दाँत खोदने को तिन्का ढूँढ़ा जाता तो वह भी न मिलता। इस भयानक मैदान में, जहाँ भय के कारण बन पशु भी न बोलते थे तथा ख़ौफ़ से हवा भी न चलती थी, अकाल की मारी, (२१०) शक्तिहीन तथा पैदल बड़ी दीन अवस्था में पड़ी हुई सेना के प्राण मुँह को आगये थे। प्रत्येक यही कहता "हमें बड़ी दीनावस्था में प्राण त्यागने हैं।"

संक्षेप में शाही शिविर के प्रस्थान करते समय दीन पिता वृक्ष के नीचे बैठ जाता और पुत्र बेचारा उसके सिर की ओर खड़ा हो जाता। वह वर्षा के समान अश्रुपात करता। पिता कहता, "हे पुत्र ! मैं इस निर्जन में प्राण त्याग रहा हूँ। तू आगे जा। कदाचित सुरक्षित घर पहुँच सके और अपने दुखी पिता की मृत्यु के समाचार घर पहुँचा सके।" इसी प्रकार दुखी भाई दूसरे दुखी भाई को छोड़ जाता तथा मित्र मित्र को। यह अवस्था इस सीमा को पहुँच गई कि चारों ओर से विलाप होने लगा। सभी सेना वाले प्राणों से हाथ धो बैठे थे। फ़ीरोज़ शाह सब हाल देखता और विस्मित होकर अंगुली दाँतों (२११) से चबाता और ईश्वर की कृपा से लौ लगाये था और क्षण क्षण पर ईश्वर से प्रार्थना करता था। सेना की दीन अवस्था देख कर उसका हृदय फटा जाता था और वह आँखों से आँसू बहाता जाता था। इस प्रकार उन दुखी लोगों पर चार कष्ट पड़ गये थे। एक अकाल, दूसरे पैदल होना, तीसरे निर्जन जंगल, चौथे मित्रों से पृथक् होना। छः मास तक फ़ीरोज़ शाह के कोई समाचार देहली न पहुँच सके। सभी छोटे बड़े परेशानी की वार्ता करते थे। देहली में यह प्रसिद्ध हो गया कि फ़ीरोज़ शाह सेना सहित ग़ायब हो गया। शहर देहली में योग्य वज़ीर ख़ाने जहाँ बड़ी योग्यता से शासन कर रहा था। उसके आतंक के कारण कोई भी विरोध न कर सकता था। सभी के घरों में विलाप हो रहा था। देहली वाले विस्मित थे क्योंकि इस बीच में सेना से कोई उलाग़ (समाचार वाहक) न आया था और न किसी का पत्र प्राप्त हुआ था।............

(२१२) ख़ाने जहाँ यह देख कर सुल्तान का समस्त सामान जो कूश्क में था अपने घर उठा ले गया और सावधान रहने के विषय में निरंतर चेतावनी देता रहा और कोई भी कुछ विरोध न कर सका। वह प्रसिद्ध वज़ीरों के समान देहली के आसपास सवार होकर चक्कर लगाता और अपना आतंक लोगों पर प्रदर्शित करता। जब प्रसिद्ध वज़ीर ने देखा कि लोगों की अशान्ति बढ़ती जा रही है तो उसने सुल्तान की ओर से एक झूठा फ़रमान बना कर जिसमें सुल्तान तथा सेना की कुशलता का उल्लेख था देहली के सर्वसाधारण के समक्ष पढ़ दिया। २१ दिन तक ख़ुशी के ढोल बजाये गये। प्रत्येक अपने-अपने स्थान पर प्रसन्न हो गया। इस युक्ति से लोगों की अशान्ति समाप्त हो गई। सभी अपने-अपने कार्य (२१३) में तल्लीन हो गये। यदि इस प्रकार के योग्य वज़ीर न हों तो बादशाह किस प्रकार दूर-दूर के राज्यों पर विजय प्राप्त करने जा सकते हैं। यद्यपि फ़ीरोज़ शाह छः वर्ष तक कूचीरन में फंसा रहा किन्तु हितैषी एवं राजभक्त वज़ीर ने राज्य सुव्यवस्थित रखा और कभी भी राज्य के अपहरण का विचार न किया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के वज़ीर ख़ाने जहाँ मक़बूल के समान कोई योग्य तथा हितैषी एवं राजभक्त वज़ीर नहीं हो सकता। केवल सुल्तान सिकन्दर का वज़ीर अरस्तू ही ऐसा था।............

अध्याय ७

(२१४) कूचीरन में लोगों का विलाप तथा सुल्तान फ़ीरोज़ का दुखी होना।

(२१५) ....प्रत्येक पड़ाव पर कई हज़ार मनुष्यों तथा घोड़ों की मृत्यु हो जाती। सुल्तान फ़ीरोज़ बड़ा दुखी होता। कहा जाता है कि सुल्तान को एक दिन ऊँचाई दिखाई दी। वह उस ऊँचाई की ओर पहुंचा। वहाँ एक तनेदार ऊँचा हरा वृक्ष था। उसके नीचे एक निर्बल अन्धा वृद्ध दीन फ़क़ीर बैठा था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह उस ऊँचाई पर

गया। सुल्तान के जामदार[1] तथा नक़ीब उसे वृक्ष से पृथक् करना चाहते थे किन्तु सुल्तान ने उन्हें ऐसा करने से रोका। सुल्तान फीरोज़ उसी स्थान पर उस वृक्ष के नीचे उस वृद्ध के पास खड़ा हो गया। उस वृद्ध ने बादशाह की ओर मुख करके कहा, "हे ईश्वर का भय करने (२१६) वाले, ईश्वर का भय कर। इतने मनुष्यों को व्यर्थ नष्ट करा दिया। एक बार इस सेना को ऐसे स्थान पर ले जाता जहाँ वे ऐसा कार्य करते जिससे उन्हें स्वर्ग का सुख प्राप्त हो सकता।" इस अवसर पर सुल्तान फ़ीरोज ने उससे पूछा कि, 'तेरी कोई इच्छा है?' वृद्ध ने कहा, "मैं अत्यधिक उपवास कर चुका हूँ और इस समय भूखा हूँ।" शाह फ़ीरोज ने दो सोने के तन्के लाने के लिए कहा। वृद्ध दो तन्के देखकर हंसा और अपनी कमर से थैली खोलकर दस तन्के सुल्तान को दिखा दिये और कहा, "हे बादशाह! मैं भोजन हेतु कोई वस्तु चाहता हूँ।" सुल्तान ने कहा, "ईश्वर की शपथ मेरे पास कोई भोजन सामग्री नहीं। एक सेर खिचड़ी फ़तह खाँ के लिए बशीरा अर्थात् एमादुलमुल्क के पास से लाई गई थी।"

सुल्तान यह कह कर आगे बढ़ गया तथा संकल्प कर लिया कि 'यदि ईश्वर की कृपा से थट्टा पर विजय प्राप्त हो गई तो फिर युद्ध न करूँगा।' संक्षेप में, प्रत्येक भूखा प्यासा यात्रा (२१७) कर रहा था। सुल्तान ने भी प्राणों से हाथ धो लिये थे.........एक रात्रि में सुल्तान एकान्त में बैठा वर्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि अचानक वर्षा होने (२१८) लगी। समस्त सेना ने जल पिया तथा जल साथ ले लिया।...............

(२१९) अन्त में जब सुल्तान फ़ीरोज शाह ईश्वर की कृपा से उस उजाड़ मैदान के बाहर आया तो उसने ईश्वर की कृतज्ञता का सिज्दा किया और अपनी तथा सेना की कुशलता के समाचार खाने जहाँ के पास देहली भेजे। जब सुल्तान का फ़रमान देहली पहुँचा तो वज़ीर ने पुनः खुशी के ढोल बजवाये।

अध्याय ८

सुल्तान फ़ीरोज शाह का गुजरात पहुँचना।

सुल्तान उस मैदान से निकल कर समस्त सेना को लेकर गुजरात पहुंचा। सेना वालों ने वहाँ विश्राम किया। उन दिनों मलेकुश्शर्क़ निज़ामुलमुल्क अर्थात् अमीर हसन बिन (पुत्र) अमीर मीरान मुसतौफ़िये ममालिक गुजरात की विलायत का अधिकारी था। वह अक़्ता की (२२०) उन्नति तथा समृद्धि का विशेष प्रयत्न करता था। सुल्तान फ़ीरोज़ बादशाहों के समान उससे बड़ा रुष्ट हुआ और उसने कहा, "यदि तू गुजरात से निरन्तर अनाज भेजता रहता तथा हमारी सेना की चिन्ता रखता तो सेना वाले नष्ट न होते।" निज़ामुलमुल्क को गुजरात से पदच्युत करके उससे अक़्ता ले ली।

सुल्तान फ़ीरोज शाह ने गुजरात में सेना को फिर से तैयार किया तथा ग़ैर वजही को शशगान दह याज़दह दिलाया[2]। ग़ैर वजही सुल्तान की कृपा से तत्काल सवार हो गये[3] इस अवसर पर मलिक आदुलमुल्क (एमादुलमुल्क) ने जो देहली के राज्य का स्तम्भ था, वजहदारों के विषय में सुल्तान से निवेदन किया और उनका रहस्य खोला। उसने कहा, "ग़ैर वजही शाहंशाह की कृपा से सवार हो गये तथा वजहदार अपने कष्टों के कारण अभी तक

१ एक पोथी में जानदार (अंग रक्षक) है और यही उचित है।

२ ६/१० अथवा ३/५ अर्थात् जो कुछ उनके लिये निश्चित था उसका ३/५ पेशगी दिया।

३ घोड़े पागये।

प्यादे हैं। प्रत्येक अपने कष्टों के कारण निराश है इसलिए कि उनके ग्राम देहली के आस पास हैं और उनके पास कोई धन नहीं। ये लोग इस देश में हैं। इनका वजह[1] देहली से कौन लाये। इस कारण इन दीन दुखियों की बड़ी दुर्दशा है।" इस पर सुल्तान ने कहा, "मुझे ज्ञात है कि वजहदार कष्ट के कारण बहुत बड़ी संख्या में प्यादे हो गये हैं किन्तु (२२१) उन्होंने इस युद्ध में बड़ा साथ दिया है। उनके ग्राम यहाँ से बहुत दूर हैं। इस कारण वे बड़े दुखी हैं। जो कुछ मुट्ठी भर अनाज प्राप्त होता है वह उनके पुत्रों पर व्यय होता है। ये लोग बड़ी दीन अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं।" उसने आदेश दिया कि वजहदारों को बादशाहों की प्रथानुसार खज़ाने से ऋण दिया जाय। इस प्रकार सुल्तान के आदेशानुसार प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार ऋण दिया गया। कुछ को ५०० तन्का, कुछ को ७०० तन्का तथा कुछ को १००० तन्का। सुल्तान की कृपा से वजहदार भी ऋण पाकर सुव्यस्थित एवं सवार बन गये। इस अवसर पर सुल्तान ने आदेश दिया कि खाने जहाँ को फ़रमान लिख दिया जाय कि वजहदारों के ग्रामों पर किसी प्रकार तथा किसी कारण कोई रोक टोक न की जाय। दरबार के आमिलों तथा कारगुज़ारों[2] को चेतावनी देदी जाय कि उन्हें मेरे आने तक कोई कष्ट न पहुँचाया जाय, वजहदारों के पुत्र निश्चित होकर अपने अपने स्थानों पर निवास करते रहें।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने गुजरात का समस्त कर जो लगभग दो करोड़ था, कारखानों की समृद्धि तथा सेना को धन अदा करने में व्यय किया। क्योंकि सुल्तान थट्टा पर पुनः आक्रमण करना चाहता था अतः उसने खाने जहाँ के पास फ़रमान भेजा कि "मैं थट्टा पर पुनः (२२२) आक्रमण करूँगा, अतः अपार सामग्री एवं सामान थट्टा की ओर शीघ्रातिशीघ्र भेज दिया जाय।"

अध्याय ९

खाने जहाँ का सुल्तान फ़ीरोज शाह के पास गुजरात में सामग्री भेजना।

सुल्तान का फ़रमान पाते ही खाने जहाँ ने सामग्री तैयार करने का विशेष प्रयत्न किया। दरबार के आमिलों तथा कारगुज़ारों को आदेश दिया कि प्रत्येक कारखाने की सामग्री खज़ाने के धन से प्रयत्न करके एकत्र की जाय। इस प्रकार प्रत्येक कारखाने की सामग्री की तैयारी प्रारम्भ हो गई। प्रत्येक कारखाने से हर प्रकार का सामान इतनी बड़ी संख्या में तैयार हो गया कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। ७ लाख तन्के केवल अस्त्र शस्त्र की तैयारी पर व्यय हुये। इसी प्रकार प्रत्येक कारखाने में अपार सामग्री एकत्र हुई। जो सामान एक (२२३) दिन में तैयार होता, खाने जहाँ उसे दूसरे दिन भेज देता। प्रति दिन सामान भेजा जाने लगा। सेना में इतनी सामग्री पहुँच गई कि ढोने की कठिनाई होने लगी।

खाने जहाँ ने शाह के पास पत्र भेजा कि ईश्वर थट्टा पर विजय प्रदान करे। जब दबीर[3] ने प्रार्थना पत्र पढ़ा तो बादशाह ने कहा कि, "वज़ीर बड़ा ही योग्य तथा बुद्धिमान है।" सुल्तान ने शुभ घड़ी में थट्टा की ओर प्रस्थान किया। सरापर्दये खास[4] थट्टा की ओर

१ व्यय हेतु धन।
२ कर्मचारियों।
३ शाही पत्र लिखने वाले।
४ बादशाह का व्यक्तिगत शिविर।

(२२४) लगाया गया।·········इसी बीच में सौभाग्य से हसन काँगू के जामाता बहराम ख़ाँ का प्रार्थना पत्र सुल्तान को दौलताबाद से प्राप्त हुआ। उन दिनों बहराम दौलताबाद पर राज्य कर रहा था। हसन काँगू के पुत्र तथा बहराम में शत्रुता हो गई। उसने सुल्तान को लिखा कि सुल्तान दौलताबाद में पधार कर अपने इस राज्य पर आरूढ़ हो जाय। जब दबीरे ख़ास ने यह पत्र पढ़ा तो सुल्तान ने बहराम ख़ाँ को उत्तर भेजा कि "जब तक मैं थट्टा पर विजय प्राप्त न कर लूंगा किसी अन्य ओर न जाऊँगा। थट्टा पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त यदि ईश्वर ने चाहा तो दौलताबाद की ओर आऊँगा।"

(२२५) सर्वप्रथम उसने मलिक नायब बारबक को गुजरात की अक़्ता देना निश्चय किया। उसके लिये ख़िलअत तथा मरातिब की व्यवस्था करली गई थी किन्तु वह क़ुरान से फ़ाल[1] निकाले बिना कोई कार्य न करता था, अतः उसने क़ुरान से फ़ाल निकाला। फ़ाल ज़फ़र ख़ाँ के नाम निकला। ज़फ़र ख़ाँ अचानक राजसिंहासन के समक्ष बुलवाया गया। ख़िलअत प्रदान हुआ। गुजरात की अक़्ता एवं समस्त (सम्बन्धित) स्थान उसे प्राप्त हुये।······

अध्याय १०

सुल्तान फ़ीरोज़ का थट्टा से गुजरात की ओर प्रस्थान।

(२२६) क्योंकि प्रथमबार सेना को अत्यधिक कष्ट हुआ था अतः बहुत से लोग सामग्री सहित अपने-अपने घरों को लौट गये। जब सुल्तान को यह ज्ञात हुआ तो उसने पूछा, "इन लोगों का क्या किया जाय?" सुल्तान के विश्वासपात्रों तथा परामर्श-दाताओं ने निवेदन किया कि "पड़ावों पर चौकियाँ बैठा दी जायँ ताकि लोग जाने न पायें। जो कोई जाय उसको रोका जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "प्रथम बार बेचारों ने हमारे कारण इतने कष्ट भोगे, अतः इसी भय तथा चिन्ता के कारण भाग रहे हैं। यह प्राचीन प्रथा है कि युद्ध में कुछ लोग सेवकों के रूप में आते हैं। कुछ किसी से सम्बन्धित होते हैं। कुछ किसी दृष्टि से लश्कर में जाते हैं। यदि चौकियाँ बैठा दी जायँ तथा आज्ञा दी जाय तो जो लोग सेवक हैं वे रुक जायँगे। जो सेवक नहीं हैं वे चौकियों के भय से न जा सकेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि हम उन्हें बाँध कर रखेंगे। इस प्रकार कुछ दीन निर्दोषों पर अत्याचार होगा। यदि ईश्वर ने हमारे भाग्य में थट्टा की विजय लिखी है तो इनके जाने से क्या प्रभाव होगा और यदि भाग्य में थट्टा विजय नहीं है तो इनके रोकने से क्या लाभ होगा?"

(२२७) इस अवसर पर सुल्तान ने आदेश दिया कि ख़ाने जहाँ के नाम फ़रमान लिख दिया जाय कि जो लोग इस स्थान से शहर (देहली) पहुँचें उनके विषय में सावधानी से पूछताछ की जाय। जो लोग नौकर हैं और जिन्होंने हम से धन प्राप्त किया है उन्हें बन्दी बना लिया जाय। उनसे तदारुके मानवी किया जाय, तदारुके ख़ुसरवी नहीं जिसमे दूसरे लोग सचेत हो जायँ। राज्य व्यवस्था में तदारुके ख़ुसरवी प्राण-दण्ड अथवा उनकी भूमि छीन लेने अथवा कठोर दण्ड को कहते हैं। तदारुके मानवी यह है कि उन्हें अपमानित रखा जाय। यह मुहम्मद साहब का दर्शाया मार्ग है।·········

(२२८) जब ख़ाने जहाँ को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का फ़रमान पहुँचा तो वज़ीर ने इस

---

१ किसी कार्य के विषय में निश्चय करने के पूर्व शुभ मुहूर्त्त अथवा उचित निर्णय का पता लगाना। क़ुरान से शुभ मुहूर्त्त अथवा उचित निर्णय का पता लगाने की मुसलमानों में अब तक प्रथा है।

विषय में पूछताछ प्रारम्भ करा दी। जो कोई सेना से लौट आता उसे दीवान[1] का सरहंग[2] बन्दी बना लेता। दीवान में उसकी दशा का उल्लेख करता। यदि वह सेवक होता तो उससे तदारुके मानवी किया जाता। कुछ प्रतिष्ठित लोगों से यही तदारुक किया गया। एक दो दिन बाज़ार के मध्य में कुन्दे में खींच कर छोड़ दिया गया किन्तु उनकी रोटी, ग्राम तथा वजह को कोई हानि न पहुँचाई गई। यह केवल सुल्तान की धर्म-निष्ठता के कारण था अन्यथा ऐसे अपराधों को कोई भी क्षमा नहीं करता।.........

अध्याय ११

सुल्तान फ़ीरोज़ का थट्टा में उतरना तथा सेना की समृद्धि।

(२३०) जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह निरन्तर कूच करता थट्टा की ओर रवाना हुआ तो प्रस्थान करने के पूर्व शेखुल इस्लाम शेख बहाउद्दीन ज़करिया के नाती शेखुल इस्लाम शेख सद्रुद्दीन ने जो साथ थे आज्ञा लेकर निवेदन किया कि "प्रथम बार सुल्तान अजोधन में शेखुल इस्लाम फ़रीदुद्दीन के (मज़ार) के दर्शन करके थट्टा चला गया था और शहर मुल्तान के मशायख की ओर ध्यान न दिया था तथा शेख बहाउद्दीन ज़करिया (के मज़ार) के दर्शन न किये थे हालाँकि कोई बुद्धिमान दोनों सूफ़ियों के ख़ानवादों[3] में कोई अन्तर नहीं समझता; (२३१) अतः सुल्तान मनौती करें कि थट्टा विजय हो जाने पर संसार के स्वामी मुल्तान होते हुये मुल्तान के मशायख (के मज़ार) के दर्शन करते हुये देहली वापस जायंगे।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि "मैंने भी यह संकल्प किया है।".........

इस बार नावों की संख्या कम थी। जब सुल्तान थट्टा पहुँचा तो वहाँ के निवासियों को सुल्तान के आने का कोई विचार ही न था। अपने-अपने ग्रामों, ख़ित्तों, क़स्बों तथा बस्तियों में कृषि कर रहे थे। प्रथम बार सुल्तान के गुजरात लौट जाने पर वे लोग कहते थे, "बरकते शेख तहबा एक मुआ एक तिहा,[4] ईश्वर की कृपा से हमारे पीछे सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ ने (२३२) प्राण त्याग दिये तथा सुल्तान फ़ीरोज़ भाग गया।" इस बार सुल्तान के पुनः आने के समाचार पाकर थट्टा निवासी सुल्तान के भय से बड़े आतंकित हुये। सिन्ध तट पर जो आबादी थी, उसे नष्ट करके सिन्ध नदी पार करके मिट्टी के क़िले में घुस गये। सुल्तान जब अपनी सेना लेकर उनकी आबादी में पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ के समस्त लोगों ने रबी की फ़स्ल बड़े परिश्रम से बोई थी और अभी उनकी खेती का अनाज कच्चा था। थट्टा निवासी सिन्ध नदी को पार कर चुके थे।

हिन्दी सिन्ध तट पर उतर पड़े। खाई के साथ कटघरा तैयार किया। सेना वाले समृद्धि के कारण बड़े आराम से थे, केवल अनाज का भाव ८ जीतल तथा १० जीतल में ५ सेर था इसलिये कि अभी नया अनाज न प्राप्त हुआ था। जब नया अनाज आगया तो वह भी सस्ता हो गया। चारों ओर सेना वाले बड़े ठाठ-बाट से चक्कर लगाते थे। थट्टा के ग्रामों

१ वित्त विभाग।

२ चपरासी, सिपाही।

३ वंश।

४ होदीवाला ने इसे इस प्रकार पढ़ा है, "बरकते शेख़ पत्था यक मुआ, यक भगा"—शेख़ पत्था के आशीर्वाद से एक मरगया और एक भाग गया। पीर पट्ठू, थट्टा के प्राचीन प्रसिद्ध सन्त थे। (होदीवाला पृ० ३२३)।

का अनाज काट लेते थे। सिन्ध नदी के तट पर असंख्य ग्राम थे। देहात के वे लोग जो (२३३) नदी न पार कर सके बन्दी बना लिये गये। जब सुल्तान को यह ज्ञात हुआ तो उसने नक़ीबों तथा चाऊशों[1] द्वारा लश्कर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि 'ये थोड़े से लोग मुसलमान हैं, इनको दास बनाना तथा इनकी गर्दन में ज़ंजीर डालना उचित नहीं। जो कोई इन्हें पकड़े अपने घर में न रक्खे। जो कोई ऐसा करेगा वह अपराधी होगा।' जब यह फ़रमान हुआ कि इन्हें लाकर दीवान में सौंप दें तो ४००० सिन्धी दीवान में एकत्र हो गये। सुल्तान ने आदेश दिया कि 'इनको किसी अच्छे स्थान पर रखा जाय। प्रत्येक मनुष्य को तीन सेर अनाज भोजन हेतु दीवाने विजारत से दिला दिया जाय।' उस समय मनगा ५ तन्के में एक मन तथा जरत[2] चार तन्के में एक मन था। सुल्तान के आदेशानुसार इन्हें मनगा दिया जाता था। सुल्तान ने जो कुछ इन बन्दियों के साथ किया वह किसी ने न किया था।

अध्याय १२

मलिक एमादुलमुल्क तथा ज़फ़र ख़ाँ का सिन्ध नदी पार करना तथा सिन्धियों से युद्ध करना।

(२३४) सुल्तान ने सिन्ध तट पर उतरने के पश्चात् यह निश्चय किया कि कुछ सेना युद्ध करने के लिये सिन्ध नदी के पार भेजनी चाहिये। बड़े सोच विचार के उपरान्त सुल्तान ने निश्चय किया कि एमादुलमुल्क तथा ज़फ़र ख़ाँ को अत्यधिक सेना देकर उस पार भेजा जाय। सिन्धी अत्यधिक सेना लिये सिन्ध तट पर ७० कोस तक बड़ी वीरता से पार करने का मार्ग रोके थे। बड़े सोच विचार के पश्चात् यह निश्चय हुआ कि मलिक एमादुलमुल्क तथा ज़फ़र ख़ाँ देहली नगर की ओर प्रस्थान करें। नौकायें अपने सामने से लौटा दें; सिन्ध नदी के किनारे-किनारे १२० कोस तक चले जायँ; भक्कर के नीचे सिन्ध नदी पार करें; नदी पार करलेने के उपरान्त १२० कोस की यात्रा करके थट्टा वालों की भूमि में प्रविष्ट हो जायँ और उनसे युद्ध करें।

मलिक एमादुलमुल्क तथा ज़फ़र ख़ाँ ने ऐसा ही किया और एक बहुत बड़ी सेना लेकर थट्टा निवासियों की भूमि में प्रविष्ट हो गये। थट्टा निवासी भी बहुत बड़ी सेना लेकर (२३५) अश्वारोहियों तथा पदातियों सहित क़िले के बाहर आये। दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध हुआ। सिन्ध नदी का पाट बहुत बड़ा होने के कारण उस ओर से ग़ाज़ियों के घोड़ों की धूल के अतिरिक्त कुछ न दिखाई पड़ता था। सुल्तान फ़ीरोज प्रतीक्षा कर रहा था कि उस ओर से क्या होता है और ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था। रात्रि में सुल्तान ने एक हितैषी मलिक को एक नौका में बैठा कर सिन्ध नदी के उस पार भेजा और उससे कहा कि, "बशीरा से कहदे कि वह लौट आये इसलिये कि दोनों ओर से निर्दोष मुसलमानों की हत्या हो रही है।" जब उस मलिक ने एमादुलमुल्क तथा ज़फ़र ख़ाँ से यह बात जाकर कही तो वे समस्त सेना लेकर लौट पड़े और उसी प्रकार १२० कोस चल कर भक्कर के नीचे नदी पार करके शहंशाह से मिल गये।

जब एमादुलमुल्क तथा ज़फ़र ख़ाँ सुल्तान के पास पहुँचे तो उसने कहा, "हे एमादुल-मुल्क ! यह मुट्ठी भर थट्टा निवासी मुझसे बचकर कहाँ जायेंगे, चाहे वे चींटी के बिल ही में

१ उद्घोषक।

२ मनगा तथा जरत : एक प्रकार के अनाज।

(२३६) सर्प के समान क्यों न घुसें। शाही सेना यहीं रहेगी और यहाँ एक बड़ा नगर बसाऊँगा।

अध्याय १३

एमादुलमुल्क का देहली में सेना लेने के लिए आना।

कहा जाता है कि जब सुल्तान फ़ीरोज शाह को सिन्ध नदी के तट पर कुछ दिन व्यतीत हो गये और प्रत्येक अपने अपने कार्य में तल्लीन हो गया तो सुल्तान ने अपने परामर्श दाताओं से परामर्श करके यह निश्चय किया कि एमादुलमुल्क को देहली भेजदे और वह वहाँ से जितनी सेना देहली में है (शहर की सेना तथा अक़्ताओं एवं परगनों की सेना) थट्टा ले आये। एमादुलमुल्क को विदा करते समय सुल्तान ने कहा कि "बशीरा! मैं नहीं चाहता कि तू खाने जहाँ से सेना एकत्र करने के लिये कहे। खाने जहाँ ऐसा वज़ीर है जो मेरे आदेश पर क्षण भर भी असावधानी तथा विलम्ब न करेगा। तू बस इतनी सेवा कर कि अपने आप को दिखादे। तुझे एक कारण से भेज रहा हूँ अन्यथा खाने जहाँ आज्ञा-पत्र के प्राप्त होते ही सभी सैनिक तथा परिजन मेरे पास भेज देगा।"

(२३७) जब एमादुलमुल्क थट्टा से देहली की ओर रवाना हुआ और देहली के निकट पहुँचा तो वज़ीर ने उसका स्वागत किया। जैसे ही खाने जहाँ की दृष्टि एमादुल-मुल्क पर पड़ी, एमादुलमुल्क घोड़े पर से भूमि पर उतर पड़ा। खाने जहाँ भी अपने घोड़े पर से उतर पड़ा। अपना चत्र अपने सिर से पृथक् कर दिया। जब दोनों इकट्ठा हुये सर्वप्रथम एमादुलमुल्क अपना हाथ खाने जहाँ के चरणों की ओर ले गया। खाने जहाँ भी शिष्ट वज़ीरों के समान बड़ी शीघ्रता से अपने हाथ एमादुलमुल्क के चरणों की ओर ले गया। तत्पश्चात् दोनों ने आलिंगन किया तथा घोड़ों पर सवार हुये। खाने जहाँ चत्र से पृथक् होकर एमादुलमुल्क से वार्ता करता जाता था। खाने जहाँ एमादुलमुल्क को सुल्तान के राजभवन में ले गया। दोनों एक स्थान पर बैठे। खाने जहाँ ज़रदोज़ी तथा ज़रबफ़्त के हर प्रकार के बिना सिले हुये वस्त्र एमादुलमुल्क के समक्ष ले गया। एमादुलमुल्क लौट कर अपने घर उतरा। तत्पश्चात् खाने जहाँ ने १ लाख तन्के एमादुलमुल्क के व्यय हेतु भिजवाये।

योग्य वज़ीर ने ख़ुर्द खत[1] सेना बुलवाने के लिए राज्य के प्रदेशों की सभी अक़्ताओं में भिजवाये। इस प्रकार बदायूं क़न्नौज, सन्दीला, अवध, जौनपुर, बिहार, तिरहुट, महौबा (२३८) ईरज, चन्देरी तथा धार, की सेना तथा हशमे हज़रत[2] दोआब, दोआब के अतिरिक्त सामाना दीबालपुर, मुल्तान, लाहौर तथा अन्य अक़्ताओं की सेनाये खाने जहाँ ने थोड़े समय में एकत्र कर लीं। खाने जहाँ इस कार्य के लिए नित्य मसनद पर आसीन होता था। रोज़ाना एमादुलमुल्क आकर खाने जहाँ के बराबर बैठता और दोनों प्रेमपूर्वक वार्ता करते। कुछ समय उपरान्त हितैषी वज़ीर ने एक बहुत बड़ी सेना एकत्र करके एमादुलमुल्क के साथ करदी। एमादुलमुल्क भी समस्त सेना तथा परिजन लेकर शीघ्रातिशीघ्र थट्टा पहुंचा और वज़ीर की बड़ी प्रशंसा की। सुल्तान वज़ीर की प्रशंसा सुनकर तथा सेना देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह समस्त सेना सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत हुई। सुल्तान ने सब को वस्त्र प्रदान किये।

जब कृतघ्न थट्टा निवासियों ने सुना कि सुल्तान के पास देहली से सेना के झुंड के झुंड आते जा रहे हैं और सुल्तान ने सेना सहित यहीं निवास करना निश्चय कर लिया है तो

१ एक प्रकार का आज्ञा पत्र।

२ राजधानी की सेना।

(२३९) उनके हृदय टूट गये और प्रत्येक उनसे पृथक् होकर दूसरी ओर चला जाने लगा। इस बार ईश्वर ने सुल्तान की सेना को बड़ी समृद्धि प्रदान की थी। समृद्धि के समाचार सुन-सुन कर जो लोग सुल्तान की सेना से चले गये थे, वे पश्चाताप करते और कहते, "क्या अच्छा होता हम लोग न आये होते।"

संक्षेप में, थट्टा में घोर अकाल पड़ गया। प्रत्येक किसी न किसी दिशा में चल दिया। जिस प्रकार प्रथम बार शाही सेना को अनाज के न होने के कारण कष्ट भोगने पड़े, उसी प्रकार इस बार भी थट्टा वालों को परेशानी का सामना करना पड़ा। इसका कारण यह था कि सुल्तान के प्रथम बार लौट जाने के उपरान्त थट्टा निवासियों ने अपने प्राचीन स्थान पर पहुँच कर निर्भय तथा निश्चिन्त होकर जो कुछ अनाज उनके पास था उसे उन्होंने खेतों में बो दिया। जब उस अनाज का समय आया तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह गुजरात से थट्टा पहुँच गया और उनकी कृषि पर अधिकार जमा लिया। शाही सेना वाले अनाज से निश्चिन्त हो गये। थट्टा वालों के अनाज का मूल्य बढ़ने लगा और अकाल पड़ गया। थट्टा वाले मरने लगे। उनके अनाज का भाव एक तन्के तथा दो तन्के प्रति सेर तक पहुँच गया। (२४०) वहाँ वाले छोटे बड़े नित्य नौकाओं पर सवार हो-होकर भूख के कारण शाही सेना में आते थे। थट्टा विनाश को प्राप्त होने लगा। जाम तथा बाँहबना ने निश्चय किया कि इस समय यही उचित है कि सुल्तान की अधीनता स्वीकार करली जाय और सभी कष्टों से मुक्त हो जायँ।

तत्पश्चात् जाम तथा बाँहबना ने बड़े सोच विचार के उपरान्त कुछ योग्य व्यक्ति क़ुतुबुल आलम सैयिदुस्सादात सैयिद जलालुद्दीन हुसेन बुखारी के पास उच्च भेजे और अपनी दशा का वृत्तान्त भिजवाया और यह प्रार्थना कराई कि सैयिदुस्सादात उच्च से आकर हमें सुल्तान फ़ीरोज़ के चरणों में डाल दें। ....

अध्याय १४

थट्टा निवासियों से सन्धि का प्रस्ताव।

(२४१) सैयिदुस्सादात सैयिद जलालुद्दीन विशेषकर सुल्तान फ़ीरोज़ की सेना में पहुँचे। समस्त सेना वालों ने सैयिद के चरण चूमने का हृदय से प्रयत्न किया। जो कोई सैयिद के चरण चूमने आता सैयिद कहते, "बाबा! अल्लाह ने चाहा तो कुछ दिन में संधि हो जायगी।" सुल्तान फ़ीरोज ने भक्तों के समान सैयिद का स्वागत किया। हाथ मिलाते समय सैयिद जलालुद्दीन ने कहा कि "थट्टा में एक पवित्र धर्मनिष्ठ स्त्री थी। उसकी प्रार्थना के कारण थट्टा पर विजय प्राप्त न हो रही थी। वह मेरी प्रार्थना के बीच में (२४२) आ जाती थी। आज तीन दिन हुये कि उस स्त्री का निधन हो गया। आशा है कि थट्टा पर विजय प्राप्त हो जायगी।"

थट्टा निवासियों ने शाही सेना में सैयिद जलालुद्दीन के पहुँचने के समाचार पाकर सैयिद के पास निरन्तर संदेश भेजे और अपनी कठिनाई का उल्लेख किया। सैयिद ने सुल्तान से उनकी प्रार्थना की चर्चा की। सुल्तान ने अत्यधिक उदारता प्रकट की। बाँहबना ने जाम से परामर्श किया कि "सुल्तान फ़ीरोज़ को यह बताया गया है कि समस्त बिरोध बाँहबना द्वारा था; अतः मैं सर्वप्रथम उसके चरण चुम्बनार्थ जाऊँ, तत्पश्चात् तू उपस्थित हो।"

जाम को भी बाँहबना की बात पसन्द आ गई। बाँहबना को पहले जाने की आज्ञा देदी। दूसरे दिन बाँहबना सुल्तान फ़ीरोज़ के पास पहुंचा।

अध्याय १५

फ़ीरोज़ शाह के दरबार में जाम तथा बाँहबना का उपस्थित होना।

(२४३) कहा जाता है कि जिस दिन बाँहबना फ़ीरोज़ शाह के दरबार में पहुँचा तो संयोग से सुल्तान उस दिन शिकार खेलने गया था। उसे शिकारगाह में ही यह सूचना दी गई। उस समय सुल्तान फ़ीरोज़ भेड़िये पकड़ने में तल्लीन था। यह समाचार पाकर उसमें कोई परिवर्तन न हुआ।............बाँहबना भी शिकार के स्थान पर पहुँचा। उस समय तक सुल्तान उस भेड़िये की हत्या कर चुका था। शाही चत्र के नीचे टहल रहा था (२४४) और चत्र का सोने का डंडा एक हाथ में पकड़े था; बाँहबना उसी अवस्था में अपने गले में रस्सी डाले तथा गर्दन में तलवार बाँधे अपराधियों के समान पहुँचा और आज्ञाकारी दास के समान सुल्तान के चरणों में गिर पड़ा।............सुल्तान ने प्रेम से उसकी पीठ पर हाथ रख दिया और कहा, "बाँहबना! मुझ से इतना भय क्यों करता था? हम किसी को हानि नहीं पहुँचाते, विशेष कर तुझे। निश्चिन्त रह। जो कुछ तू था, उससे बढ़कर हो जायगा।"............

(२४५) सुल्तान ने आदेश दिया कि बाँहबना को एक अरबी घोड़ा प्रदान किया जाय। इतनी बात करके सुल्तान पुनः शिकार में तल्लीन हो गया और एक घड़ी तक शिकार खेलता रहा। उसी दिन जाम भी बाँहबना के उपरान्त उपस्थित हुआ और शिकार ही के समय बुद्धिमान तथा शिष्ट लोगों के समान चरण चूमने गया। जब हाजिब तथा दरबार के पदाधिकारी जाम को सुल्तान के चरणों का चुम्बन कराने लगे तो जाम प्रसिद्ध अमानियों[१] के समान रस्सी बाँधे सुल्तान फ़ीरोज़ के चरणों में गिर पड़ा। अपराधियों के लिये गले में रस्सी बांध कर तथा गर्दन में तलवार बाँध कर सुल्तानों के दरबार में उपस्थित होने की प्रथा प्रथम बार उपस्थित होने के समय की है। क्योंकि प्रथम बार बाँहबना रस्सी गले में डालकर तथा तलवार गर्दन से बाँध कर उपस्थित हुआ था अतः जब उसके उपरान्त जाम उपस्थित हुआ तो केवल रस्सी बाँधे रहा। जब जाम ने चरण चूमे तो सुल्तान घोड़े पर सवार था। उसने (२४६) अपना हाथ जाम की पीठ पर रख दिया और बड़ी नम्रता से वार्ता की। जाम ने बड़े दीन भाव से अपने एक-एक अपराध का सुल्तान के समक्ष उल्लेख किया। उस समय जाम ने यह मिसरा[२] पढ़ा:

'हे शाह! तू बख़्शने वाला है। दास लज्जित है।'

फ़ीरोज़ शाह ने जाम को भी बड़ा प्रोत्साहन प्रदान किया और उसे भी एक अरबी घोड़ा दिया और यह मिसरा पढ़ा:

'मेरे लिये किसी से बुराई करना उचित नहीं
तथा मैं बुराई नहीं करता।'

जब शहंशाह शिकारगाह से लौटा तो उसने जाम तथा बाँहबना को ज़रदोज़ी ख़िलअतें

१ शरण के आकांक्षी।
२ छन्द का एक वाक्य।

तथा पताकायें प्रदान कीं। जो लोग उनके साथ थे, उन्हें भी उनकी श्रेणी के अनुसार (२४७) खिलग्रतें प्रदान कीं।·········सुल्तान ने ग्रादेश दिया कि जाम तथा बाँहबना अपने ग्राश्रितों तथा परिजनों को उसके साथ देहली भेज दें। उन्होंने सुल्तान के ग्रादेशानुसार अपने ग्राश्रितों तथा परिजनों को नदी के पार लाकर सुल्तान की सवारी के साथ कर दिया।

अध्याय १६

सुल्तान फ़ीरोज़ की देहली की ग्रोर वापसी।

सुल्तान ने लौटते समय जाम के पुत्र तथा बाँहबना के भाई तमाची को थट्टा की विलायत (राज्य) प्रदान कर दी तथा उन्हें मरातिब प्रदान किये। उन्होंने चार लाख तन्के नक़द उपहार (ख़राज) में दिये और प्रत्येक वर्ष कई लाख तन्के नक़द, सामग्री तथा घोड़े देना स्वीकार किया। शाह फ़ीरोज़ ने विजयी सेना तथा जाम एवं बाँहबना और उनके परिजनों को लेकर देहली की ग्रोर प्रस्थान किया। सुल्तान ने ग्रादेश दिया कि जाम तथा बाँहबना को खास दहलीज़ के समक्ष उतारा जाय ; खास फ़र्राश खाने से सफ़ेद फ़राशीना[१] (२४८) दिया जाय। मलिक सैफ़ुद्दीन ख़ूजू को ग्रादेश हुग्रा कि उन्हें दरबार की शिष्टता सिखाई जाय किन्तु इनकी शाही ग्रधिनियम के ग्रनुसार देखभाल रखी जाय।

जाम तथा बाँहबना ने अपने ग्राश्रितों तथा परिजनों को शाही सेना में लाकर नौकाग्रों पर सवार कर दिया। सुल्तान फ़ीरोज़ विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली की ग्रोर लौटा। मलिक सैफ़ुद्दीन ख़ूजू रात दिन शाह के ग्रादेशानुसार उनकी सेवा में रहता था और उनकी रक्षा में प्रयत्नशील रहता था।

एक दिन यह प्रसिद्ध हो गया कि बाँहबना के पुत्रों तथा ग्राश्रितों की नौका डूब गई। बाँहबना तुरन्त बड़े वेग से नौका की ग्रोर भागा। मलिक सैफ़ुद्दीन ख़ूजू को चिन्ता हुई कि कहीं बाँहबना विश्वासघात करके इस बहाने से अपने स्थान को न चला जाय। उसने अपना पुत्र सुल्तान के पास भेजा और उसके द्वारा पूरी घटना को सुल्तान की सेवा में निवेदन कराया। सुल्तान ने सोचकर उत्तर भेजा, "अपने पिता से जाकर कह दो कि यदि बाँहबना समाचार की वास्तविकता का पता लगाने सिन्ध नदी के तट तक जाता है तो वह भी उसके साथ चला जाय। यदि बाँहबना नौका पर सवार होकर जाने लगे तो उसे मत रोको। (२४९) केवल यह कह दो, 'हे बाँहबना ! यदि तू मर्द है और वीरता रखता है तो लौट ग्रा।' तत्पश्चात् मैं जानूं और बाँहबना।"

मलिक सैफ़ुद्दीन ख़ूजू के पुत्र के उत्तर लाने के समय तक यह समाचार प्राप्त हो गया कि जिस नौका पर बाँहबना के पुत्र थे, डूबी न थी, सुरक्षित थी। बाँहबना भी उस स्थान से शाही सेना में लौट ग्राया। इस घटना के उल्लेख का उद्देश्य यह है कि सुल्तान फ़ीरोज़ को ईश्वर की इतनी सहायता प्राप्त थी कि उसने इस बात पर कोई ध्यान न दिया। वह बड़ा ही ग्रनुभवी तथा कुशल शासक था। वह संसार का ग्रनुभव किये तथा संसार में घूमे हुये था अन्यथा कोई ग्रन्य इस प्रकार सहनशील नहीं हो सकता था।

(२५०) संक्षेप में, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने निरंतर कूच करते हुये देहली की ग्रोर प्रस्थान किया और सेना वाले ढाई वर्ष के उपरान्त प्रसन्नतापूर्वक अपने घरों को लौटे। वह कुछ समय के लिये मुल्तान गया और मुल्तान के मशायख़ के (मज़ारों के) उसने दर्शन किये। मुल्तान वालों को बहुत कुछ दान किया। ख़ाने जहाँ के पास थट्टा का विजय-पत्र देहली भेज दिया।

१ फ़र्श तथा ग्रन्य तत्सम्बन्धी सामग्री।

वज़ीर ने वह फ़रमान जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा था, ग्राम लोगों को पढ़ कर सुनाया। देहली में २१ दिन तक खुशी के ढोल बजाये गये। क़ुब्बों के सजाने का ग्रादेश हुग्रा। खाने जहाँ ग्रत्यधिक साज़ व सामान तथा उपहार लेकर दीबालपुर तक स्वागत करने गया।

ग्रध्याय १७

खाने जहाँ का प्रसिद्ध नगर दीबालपुर तक स्वागतार्थ जाना।

(२५१) जब खाने जहाँ सुल्तान से मिला तो ईश्वर के प्रति बड़ी कृतज्ञता प्रकट की। ग्रत्यधिक उपहार भेंट किये। सुल्तान ने थट्टा तथा गुजरात के मार्ग के कष्टों की वज़ीर से चर्चा की।.........यह स्थान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद साम के समय के उपरान्त पुनः इस प्रकार पूर्ण रूप से देहली के किसी बादशाह को न प्राप्त हुग्रा था। सुल्तान ग्रलाउद्दीन की सेना को भी, जिसके पास रूम तथा चीन के सुल्तानों की भाँति साज़ व सामान था थट्टा पर ग्राक्रमण करने पर इस प्रकार विजय न प्राप्त हुई। सुल्तान मुहम्मद शाह बिन सुल्तान तुग़लुक़ शाह इतनी बड़ी सेना लेकर वर्षों तक थट्टा में पड़ा रहा किन्तु उसे विजय न प्राप्त हुई। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को ईश्वर ने यह स्थान बिना तलवार चलाये ही प्रदान कर दिया और यह थोड़ा नहीं है।

(२५२) संक्षेप में, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह दीबालपुर से चलकर देहली पहुँचा। समस्त नगर निवासियों ने झंडियाँ तथा ग्रन्य उत्तम वस्तुयें ले ले कर स्वागत किया। देहली में क़ुब्बे बाँधे गये और उन्हें नाना प्रकार से सजाया गया। संसार वालों में ग्राम खुशी हो गई और लोग ग्रासपास के स्थानों से तमाशा देखने ग्राते थे और ग्रानन्द मनाते थे। प्रत्येक क़ुब्बे के नीचे ग्रपार उत्तम भोजन सामग्री एकत्रित करदी गई थी। भोजन मदिरा, ताम्बूल, मेवा सभी सूखी तथा गीली वस्तुयें थीं। जो कोई तमाशा देखने ग्राता वह उत्तम वस्तुग्रों का भोजन करता, और कोई किसी को न रोकता। समस्त संसार निश्चिंत होकर ग्रानन्द मना रहा था। घरों में जश्न हो रहे थे इसलिये कि लोग बड़ा कष्ट भोगने के उपरान्त ग्रपने-ग्रपने घरों को ग्राये थे और उन्होंने ग्रपने सम्बन्धियों तथा मित्रों से भेंट की थी। जिन लोगों की उन कष्टों के कारण मृत्यु हो गई थी तथा जो कूंचीरन में मर गये थे, उनके घरों में विलाप हो रहा था। किसी घर में ग्रानन्द तो किसी घर में विलाप। जब फ़ीरोज़ शाह ने लोगों से यह समाचार सुने तो उसने ग्राँखों में ग्राँसू भर कर कहा, "कुछ बेचारे लोग कूंचीरन में मृत्यु को प्राप्त हो गये; ग्राज उनके घरों में विलाप हो रहा है। यदि थट्टा न जाते तो ग्रच्छा होता।" उसने खाने जहाँ को ग्रादेश दिया कि "जो भी हमारे साथ थट्टा गया और (२५३) कूंचीरन में मर गया, उसकी जो कुछ भी जीविका (का साधन) हो वह उसके पुत्रों के लिये उसी प्रकार से रखा जाय और उन्हें कोई कष्ट न हो। उनकी दशा की मेरे सामने पुन: चर्चा करने की ग्रावश्यकता नहीं। जिस किसी ने भी हमारा विरोध किया और गुजरात में देह याज़देह[1] ले लिया और हमें छोड़ कर शहर (देहली) ग्रा गया उसकी भी रोटी तथा ग्राम उसके पास रहने दिये जायँ। मैं नहीं चाहता कि किसी को किसी प्रकार कष्ट हो।"......

जाम तथा बाँहबना ग्रपने समस्त घरबार सहित देहली पहुँचे। सुल्तान ने ग्रादेश दिया कि उनके घरबार को सराय मलका[2] के निकट स्थान दिया जाय जिससे वे लोग

१ दसवाँ भाग पेशगी।

२ सराय मलका—मलका की सराय।

निश्चिंत होकर वहाँ निवास करें। उनके घरबार के वहाँ स्थान पा जाने से वह जगह बस गई और उस स्थान का नाम सराय थट्टा रख दिया गया। फ़ीरोज़ शाह ने दो लाख तन्के जाम के लिये तथा दो लाख तन्के बाँहबना के लिये नक़द वार्षिक इनाम के रूप में खज़ाने से निश्चित किये। इसके अतिरिक्त उन्हें नित्य इतने वस्त्र, सामान तथा इतनी अधिक विचित्र वस्तुयें प्राप्त होती थीं कि वे थट्टा को पूर्णतः भूल गये। दरबार के समय जब सुल्तान (२५४) राजसिंहासन पर आसीन होता तो जाम व बाँहबना दाईं ओर दूसरे क़ालीन पर सद्रुस्सुदूरे जहाँ के नीचे, सुल्तान के आदेशानुसार बैठते थे।.........

जब इस घटना को कई वर्ष व्यतीत हो गये तो बाँहबना के भाई तमाची ने थट्टा में विद्रोह कर दिया। शहंशाह ने जाम को उसका विद्रोह शान्त करने के लिये भेजा। जाम ने थट्टा पहुँच कर तमाची को शहर (देहली) भेज दिया। बाँहबना भी देहली में रह गया और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेवा किया करता था। जब सुल्तान तुग़लुक़ शाह बादशाह हुआ तो उसने बाँहबना को सफ़ेद चत्र प्रदान किया और उसे थट्टा भेज दिया। बाँहबना मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हो गया।

अध्याय १८

थट्टा के युद्ध से लौट कर तास घड़ियाला का आविष्कार।

(२५५) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने दैवी प्रेरणा से अपने राज्यकाल में जितने भी आविष्कार किये, वे विचित्र थे। उसका एक आविष्कार तास घड़ियाला था जोकि किसी बादशाह को प्राप्त न हो सका था।..........सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का यह आविष्कार (२५६) ख़ुरासान से बङ्गाले तक यादगार रहा। इस आविष्कार से देखने में तो सांसारिक लाभ थे, किन्तु वास्तव में इससे मनुष्य को परलोक में भी लाभ प्राप्त होता था। शम्स सिराज अफ़ीफ़ इससे धर्म सम्बन्धी सात लाभों का संक्षेप में उल्लेख करता है :

(१) तास घड़ियाला के बजने से लोगों को दिन के व्यतीत होने तथा रात्रि के आने का पता चलता है और असावधान लोगों को अपने जीवन-काल में कमी होने का पता चलता रहता है और लोग परलोक की चिन्ता में लीन हो जाते हैं।

(२) आकाश पर धूल तथा अन्धेरा हो जाने के कारण बेचारे नमाज़ पढ़ने वालों को ज़ुहर तथा अस्र की नमाज का समय ठीक से न ज्ञात हो पाता था किन्तु तास घड़ियाला की (२५७) आवाज़ से लोगों को ज़ुहर तथा अस्र[१] की नमाज़ का समय ज्ञात हो जाता है और किसी प्रकार का धोखा नहीं होता।

(३) तहज्जुद[२] की नमाज के लिये उठने वालों को नमाज़े तहज्जुद का ठीक समय ज्ञात हो जाता है।

(४) नमाज़ पढ़ने वालों को असली छाया पहचानना परमावश्यक होता है। इस प्रश्न पर आलिमों में मतभेद होना स्वाभाविक है, अपितु आलिमों का कथन है कि वही व्यक्ति पूर्ण योग्य है जो चौदह विज्ञान पढ़ा हो। ज्योतिष विद्या उन चौदह विज्ञानों में से एक है। (२५८) ज्योतिष विद्या से केवल छाये के विषय में जानकारी प्राप्त करने की शरा में अनुमति

१ मध्याह्नोत्तर के पश्चात् की नमाज़ें।

२ आधी रात्रि के लग-भग की नमाज़।

दी गई है। वास्तविक छाया प्रत्येक सूर्य पर आधारित महीनों में फिरता रहता है इसलिये कि कभी दिन बड़ा होता है और रात छोटी होती है और कभी रात बड़ी होती है तथा दिन छोटा होता है। १½ पग से १०½ पग तक बारह मास में रात दिन बड़े छोटे होते रहते हैं। यह अन्तर दैवी ज्ञान के अतिरिक्त किसी प्रकार ज्ञात नहीं होता। तास घड़ियाला बन जाने से तथा उस तास में प्रहर के पता चलाने के नियम होने से, अन्तिम तास पर योग्य दार्शनिकों के निर्णयानुसार गजर बजाया जाता है अर्थात् उतने पहर जितने उस दिन में हैं। उस पहर के समाप्त हो जाने पर उतने तास रोजाना बजाये जाते हैं। इससे यह पता चलता रहता है कि इस मास में सूर्य किस राशि चक्र में है। वास्तविक छाया इस मास में अमुक राशि चक्र में है। इतने पग है। इस नियमानुसार ज्योतिष विद्या की आवश्यकता नहीं होती।

(५) रोज़ा रखने वालों को रोज़ा खोलने का ठीक समय ज्ञात हो जाता है और किसी (२५९) प्रकार की भूल नहीं होती।

(६) सहरी[1] खाने का ठीक समय ज्ञात हो जाता है।

(७) जो लोग एशा की नमाज एक तिहाई रात्रि व्यतीत होने पर पढ़ना चाहें पढ़ें और सोने के समय की नमाज़ एक तिहाई रात गये पढ़ना उचित है तो उन लोगों को इस विषय में ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

(२६०) थट्टा से लौटने के उपरान्त इसके आविष्कार हेतु तक शाह फ़ीरोज़ तथा ज्योतिषियों ने कई दिन तक इस कार्य में प्रयत्न किया; जब तास की आवाज़ लोगों के कान में पड़ी तो जो लोग तास घड़ियाला की लीला देखने फ़ीरोज़ाबाद आये थे, उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। लोग तास घड़ियाला देखने चल पड़े। वह तास घड़ियाला शहर फ़ीरोज़ाबाद के कूश्के के दरबार पर रखा गया था। लोग उसे देखने जाते थे। तास घड़ियाला का लाभ तथा उसकी श्रेष्ठता इस सीमा तक पहुँच गई कि वह बादशाहों के सिक्कों तथा शासकों के चिह्नों में सम्मिलित हो गया। सिक्के का प्रयोग सम्मानित पादशाहों के अतिरिक्त किसी अन्य के लिये नहीं हो सकता। तास घड़ियाला भी सर्वदा सदाचारी सुल्तानों के दरबार के समक्ष बजाया जाता है।

चौथा भाग

सुल्तान का बड़े बड़े युद्धों को त्यागना और राज्य की समृद्धि में तल्लीन होना।

अध्याय १

फ़ीरोज शाह का बड़े बड़े युद्धों को त्यागना।

(२६१) कहा जाता है कि सुल्तान देहली लौट कर राज्य की समृद्धि का विशेष प्रयत्न करने लगा। माबर से राजदूतों ने आकर वादी के रूप में प्रार्थना की कि हसन कांगू का सम्बन्धी[2] माबर में बादशाह हो गया था। जब सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र)

१ रोजा रखने के लिये सूर्योदय से पूर्व जो अन्तिम भोजन किया जाता है, उसे सहरी कहते हैं।

२ सम्भवतः सुल्तान फ़खरुद्दीन मुबारक शाह।

सुल्तान तुग़लुक़ शाह का निधन हो गया और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बादशाह हुआ तो उसका फ़रमान माबर पहुँचा। माबर वाले दौलताबाद पहुँचे। हसन काँगू के एक सम्बन्धी को माबर लाये और उसे अपने ऊपर बादशाह स्वीकार कर लिया; सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की अधीनता से सिर खींच लिया। हसन काँगू का यह सम्बन्धी प्रत्यक्ष रूप से बहुत सी कुकृतियों में ग्रस्त था।

इस इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि जब हसन काँगू का वह सम्बन्धी दरबार करता तो वह स्त्रियों के वस्त्र तथा आभूषण धारण करता। वह खुल्लम (२६२) खुल्ला गुदा भोग करता। ईश्वर समस्त मुसलमानों को इस कुकर्म से सुरक्षित रक्खे। माबर वाले उससे बड़े परेशान हो गए। षड्यन्त्र कारी बिकन[१] जो माबर के निकट था, बहुत बड़ी सेना एवं हाथियों को लेकर माबर पर चढ़ आया। हसन काँगू के सम्बन्धी को जीवित बन्दी बना लिया और उसकी हत्या करा दी। माबर पर स्वयं अधिकार जमा लिया। समस्त माबर जो मुसलमानों का नगर था नष्ट कर दिया अपितु मुसलमान स्त्रियाँ भी हिन्दुओं ने बन्दी बना लीं। माबर में बिकन का राज्य हो गया।

जब उन लोगों ने अपना हाल सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को बताया तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने कहा, "सर्वप्रथम तुम लोगों ने विद्रोह किया। सुल्तान मुहम्मद के निधन के उपरान्त जब हमारा फ़रमाने तुग़रा पहुंचा तो तुमने हमारे फ़रमान पर अधीनता प्रकट न की और दौलताबाद जाकर हसन काँगू के सम्बन्धी को ले आये और उसे माबर में सिंहासनारूढ़ कर दिया। उसकी कुकृतियों के कारण ईश्वर ने (२६३) अपना कोप प्रकट करके तुम्हें काफ़िरों के अधीन कर दिया जिसने तुम्हें विध्वंस कर डाला। इससे पूर्व तुम लोगों ने इस ओर ध्यान न दिया। इस समय हमारी सेना निरंतर आक्रमण के कारण थक गई है। कुछ दिनों हमारी सेना विश्राम करले तो, यदि जीवन शेष रहा, उस ओर प्रस्थान किया जायगा।"

माबर के दूतों को लौटा कर वह स्वयं राज्य की समृद्धि तथा उसे सम्पन्न बनाने में तल्लीन हो गया। कुछ समय उपरान्त फ़ीरोज़ शाह ने एकान्त में परामर्श किया कि "मेरा दौलताबाद (२६४) पर आक्रमण करने का विचार होता है किन्तु लोगों के शक्तिहीन होने से चिन्ता होती है। बादशाहों में दूसरे राज्यों पर अधिकार जमाने का लोभ प्रबल रहता है और वे इसके लिए प्रयत्नशील रहते हैं।" वज़ीर ने इस अवसर पर कहा, "राज्य की दो आवश्य-कतायें होती हैं: (१) प्रजा-पालन तथा राज्य की समृद्धि, सुन्नी मुसलमानों की कुशलता का प्रयत्न, अधर्मी ज़िम्मियों को निश्चिन्त रखना, राज्य के अमानियों को अमान में रखना। (२) काफ़िरों का विनाश, दुराचारियों का विच्छेदन, तथा अत्यधिक राज्यों को विजय करना। ईश्वर की कृपा से शहंशाह के राज्यकाल में प्रजापालन, राज्य की समृद्धि तथा मुसलमानों की रक्षा इस प्रकार हो रही है कि किसी भी अन्य राज्यकाल में इस प्रकार के अधिनियम ढूँढने पर भी नहीं मिल सकते। ईश्वर की कृपा से काफ़िरों का विच्छेदन भी बहुत हो चुका है। देहली की सेना इतनी तैयार तथा शक्तिशाली हो गई है कि बादशाह के सवार होने की आवश्यकता नहीं। यदि किसी स्थान पर कोई काफ़िर विद्रोह करता है तो दरबार के दासों में से कोई दास तथा कोई विश्वासपात्र भेज दिया जाता है और वह उसका समूल विच्छेदन कर देता है जिससे दूसरे लोग शिक्षा ग्रहण करते हैं किन्तु राज्यों को जीतने तथा

१ सम्भवतः गोपन: विज्यानगर के बुक्का राय का सेनापति। सम्भवतः यह युद्ध ७७४ हि० (१३७१ई०) में हुआ होगा। (होदीवाला पृ० ३२७)।

(२६५) इक़्लीमों पर अधिकार जमाने के लिए देहली के राज्य के आसपास मुसलमानों की बहुत सी इक़्लीमें हैं।

मुसलमानों से तलवार चलाने में यदि एक लाभ है तो दस हानियाँ। ये दस हानियाँ इस प्रकार हैं :

(१) मुसलमानों के क़िले को हानि पहुँचाने तथा उन्हें कष्ट देने के लिए लोग जितने पग रखते हैं उतने पाप उनके नामये आमाल[1] में लिखे जाते हैं।

(२) बैतुलमाल में धन इस्लाम की उन्नति के लिए एकत्र किया जाता है न कि मुसलमानों के विनाश हेतु व्यय के लिए।

(३) कई हज़ार मुसलमान व्यर्थ कष्ट भोगते हैं।

(४) जीवन व्यर्थ नष्ट होता है और पग-पग पर पाप लिखा जाया करता है।

(५) यदि उस स्थान पर विजय प्राप्त हो जाय तो कई हज़ार मुसलमान स्त्रियां अपमानित होती हैं।

(६) ऐसा धन बैतुलमाल में एकत्र होता है जो शरा के विरुद्ध होता है।

(७) अन्य सुल्तानों में भी मुसलमानों के विरुद्ध विद्रोह करने की प्रथा हो जाती है।

(८) ऐसे कार्य सदाचारी सुल्तानों के लिए उचित नहीं होते।

(९) व्यर्थ में इतने हज़ार शत्रु हो जाते हैं और क़यामत में प्रत्येक का उत्तर देना होगा।

(१०) क़यामत में मुहम्मद साहब के समक्ष लज्जा प्राप्त होगी।

(२६६) वज़ीर ने पुनः कहा कि यह दस हानियाँ संक्षेप में बताई गईं। यदि मुसलमानों को हानि पहुँचाने के विषय में उल्लेख किया जाय तो उसे समाप्त होने के लिए बहुत समय चाहिये। केवल एक लाभ जो प्राप्त होता है वह यह है कि समस्त संसार में प्रसिद्ध हो जाता है कि अमुक बादशाह ने अमुक मुसलमान को अपनी शक्ति तथा आतंक से अधिकार में कर लिया और मुट्ठी भर मुसलमान जो उस राज्य में थे उन्हें छिन्न भिन्न कर दिया। इस कार्य में ईश्वर के मार्ग में कोई लाभ नहीं और अत्यधिक हानियाँ, पाप तथा शत्रु प्राप्त हो जाते हैं। बुद्धिमान तथा समझदार लोग केवल दिखावे के लिए असंख्य पाप नहीं अपनाते।

फ़ीरोज़ शाह को वज़ीर की बात बड़ी पसन्द आई और वह बड़ा लज्जित तथा परेशान हुआ। उसने आँखों में आँसू भर कर कहा कि, "इन वाक्यों में लोक तथा परलोक दोनों ही के लाभ हैं और राज्य-व्यवस्था का आधार है। अब मैं ईश्वर की कृपा से मुसलमानों पर कदापि आक्रमण न करूँगा।" दरबार में जितने लोग उपस्थित थे, तथा जो लोग इस बात को देख रहे थे, उन्होंने पृथ्वी पर सिर रखकर ईश्वर से (उसके लिये) शुभ कामनायें कीं। उस अवसर पर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने कहा कि "जो मुसलमान होगा उसे किस प्रकार अपने ईमान की चिन्ता न होगी। संसार कोई वस्तु नहीं। यदि ईमान सहित (संसार से) (२६७) जाना हुआ तो क्या बात है और कितना अच्छा कार्य है, उस दिन सुल्तान ने वह विशेष वस्त्र जो ऊपर पहने हुये था, खाने जहाँ को पहना दिया। धन्य है ऐसे अद्वितीय

१ मुसलमानों के विश्वास के अनुसार वे संसार में जितने भी अच्छे तथा बुरे कार्य करते हैं, उनके नामये आमाल में लिखे जाते हैं।

बादशाह को तथा शाबाश है ऐसे विचित्र वज़ीर को। इसी कारण वह ईश्वर का प्रिय सुल्तान पूरे चालीस वर्ष तक राज्य कर सका।

अध्याय २

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का दास एकत्र करने के सम्बन्ध में प्रयत्न

कहा जाता है कि जब फ़ीरोज़ शाह ने निष्ठावान दास एकत्र करने के सम्बन्ध में विशेष प्रयत्न प्रारम्भ किया तो उसने समस्त अक़्ताओं के मुक़्तों तथा पदाधिकारियों को सचेत कर दिया कि जिस स्थान पर वे विजय प्राप्त करें वहाँ से दासों को चुन लिया करें; जो जो दरबार के योग्य हों उन्हें हमारे पास भेज दें। निस्संदेह यह बड़ा विचित्र तथा उत्कृष्ट (२६८) कार्य था। जब मुक़्ते दरबार में आते तो प्रत्येक अपने साधन के अनुसार बादशाह की रुचि के कारण चुने हुये, रूपवान तथा असील दास सुन्दर वस्त्र पहनाकर, सिरों पर रूमाल तथा टोपी, लाल जूते पैरों में, कशीदे की छोटी पगड़ी कमर में बाँध कर राजसिंहासन के समक्ष उपहार स्वरूप भेंट करते थे।

सुल्तान फ़ीरोज़ के समय में यह प्रथा थी कि प्रतिवर्ष जब अक़्ताओं से मुक़्ते चरण चूमने आते तो वे अपने साधन के अनुसार प्रत्येक प्रकार के उपहार लाते थे। अरबी घोड़े, बहुमूल्य तरुण, असंख्य हाथी, विभिन्न प्रकार के बहुमूल्य वस्त्र, असंख्य सोने चाँदी के बर्तन, अस्त्र शस्त्र, ऊँट चौपाये आदि प्रत्येक अपनी अक़्ता के साधन के अनुसार लाता था। प्रत्येक प्रकार की वस्तु कोई १००, कोई ५० कोई २०, कोई ११ की संख्या में लाता था और प्रस्तुत करता था। वे दास भी लाते थे। सुल्तान ने इस प्रकार आदेश दे दिया था कि अक़्ताओं के मुक़्ते जितना उपहार लायें उसका मूल्यांकन किया जाय और उसमें से महसूल मुजरा कर दिया जाय। अपार उपहार का नियम सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने बनाया था। भूतपूर्व सुल्तानों के समय में यह प्रथा न थी। जो मुक़्ता अपनी (२६९) अक़्ता से आता तो वह जो कुछ उससे हो सकता, भूतपूर्व सुल्तानों की सेवा में प्रस्तुत कर देता। वह उपहार महसूल में मुजरा न होता था। फ़ीरोज़ शाह ने अपने राज्य-काल में यह आदेश दे दिया कि मुक़्तों का व्यय बहुत अधिक होता है। उन्हें उपहार से क्षमा कर दिया जाय और कष्ट न दिया जाय। उसने आदेश दिया कि 'जो मुक़्ता अपनी अक़्ता से आये तो जो चीज़ें उसकी अक़्ता में होती हों उन्हें बहुत बड़ी संख्या में ले आये और उसका मूल्य कर में मुजरा करा दे जिससे दोनों ओर से सम्मान प्राप्त हो। मुक़्ता का भी सम्मान बना रहे और राजसिंहासन के समक्ष बादशाह के योग्य उपहार भी प्रस्तुत हो जायं।' पूरे ४० वर्ष तक इस नियम पर आचरण होता रहा।

जो मुक़्ता अधिक दास उपहार में प्रस्तुत करता उस पर अत्यधिक अनुकम्पा तथा अनुग्रह प्रदर्शित किया जाता। जो मुक़्ता थोड़े दास प्रस्तुत करता उस पर उसी अनुपात से अनुकम्पा प्रदर्शित की जाती। जब अक़्ता के मुक़्तों को विश्वास हो गया कि सुल्तान हितैषी दासों के एकत्र करने का बहुत आकांक्षी है तो अक़्ताओं के समस्त मुक़्ते समस्त कार्यों की अपेक्षा इस कार्य को महत्वपूर्ण समझने लगे। सुल्तान के प्रयत्न से कुछ वर्षों में इतने सदाचारी दास एकत्र हो गये कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। जब बादशाह ने देख लिया (२७०) कि बहुत बड़ी संख्या में दास एकत्र हो गये तो उसने कुछ को मुल्तान में, कुछ को दीबालपुर में, कुछ को हिसार फ़ीरोज़ा में, कुछ को सामाने में, कुछ को गुजरात में तथा इसी प्रकार प्रत्येक स्थान में उन्हें निवास करने के लिये भेज दिया। उनमें से प्रत्येक का उस

अक़्ता में प्रबन्ध कर दिया। उनके पालन हेतु परोपकारिता का हाथ बढ़ाया। कुछ दासों के लिये अक़्ताओं में सेना के साथ उनकी रोटी प्राप्त करने का प्रबन्ध कर दिया। उनके व्यय हेतु ग्राम दे दिये[1]। अन्य दास जो शहर (देहली) में थे उनका पूरा वेतन निश्चित किया। कुछ को १०० तन्का, कुछ को ५० तन्का, कुछ को ४०, कुछ को ३०, और कुछ को २५, साधारण को २० तन्का। १० तन्के से किसी को कम न प्राप्त था। प्रति मास, अथवा छठे मास, अथवा चौथे मास अथवा तीसरे मास बिना किसी कमी के उन्हें यह धन खज़ाने से प्राप्त हो जाता।

कुछ क़ुरान पढ़ने, कण्ठस्थ करने, कुछ धार्मिक शिक्षा तथा कुछ किसी प्रकार के लिखने में तल्लीन रहते। कुछ सुल्तान के आदेशानुसार हज करने चले जाते। कुछ को शिल्पकारों को सौंप दिया जाता जो उन्हें शिल्प तथा कारीगरी सिखाते। १२००० दास प्रत्येक प्रकार के शिल्पकार हो गये। ४०,००० दास नित्य सवारी के समय तथा महल में उपस्थित रहते। कुल १,८०,००० उस सुल्तान के दास नगरों तथा अक़्ताओं में एकत्र हो गये। फ़ीरोज़ शाह उनके लिये बहुत कुछ इच्छा किया करता था तथा उनको सन्तुष्ट एवं सुखी रखने का प्रयत्न किया करता था। इस प्रकार उनकी दृढ़ता की जड़ तथा स्थिरता पाताल तक पहुँच गई।

(२७१) बादशाह यह कार्य अपने लिये अनिवार्य समझता था। यह कार्य इस सीमा तक पहुंच गया कि अर्ज़ये बन्देगान[2] पृथक्, मजमूआदार पृथक्,[3] दासों के व्यय का खज़ाना पृथक्, दासों का दीवान पृथक्, चाऊशग़ोरी तथा नायब चाऊशग़ोरिये[4] दीवान पृथक् अर्थात् दासों के दीवान के अधिकारी दीवाने विज़ारत के अधिकारियों से पूर्णतः पृथक् रहते थे।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह किसी ओर प्रस्थान करता तो धनुर्धारी दास पृथक् समूह बनाकर आगे-आगे पृथक् चलते थे। हज़ार-हज़ार तलवार चलाने वाले दास पृथक् बन्देगाने आवर्द[5] पृथक्, बाहुली[6] दास भैंसों पर सवार होकर पृथक्, कुछ बन्देगाने हज़ारा[7] तुर्की तथा अरबी घोड़ों पर सवार परिजनों सहित हज़ारों की संख्या में बादशाह के पीछे-पीछे चलते थे। इस प्रकार के असंख्य दास एकत्र होगये थे।

इस प्रकार समस्त शाही कारखानों (आबदार,[8] शराबदार,[9] जामदार,[10] मतबखी,[11]

१ देहहा दर वजह दाद।

२ दासों की भर्ती तथा निरीक्षण करने वाले अधिकारी।

३ दासों के ऊपर जो धन व्यय होता था उसकी जाँच करने वाला अधिकारी।

४ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं। होदीवाला का अनुमान है कि इसका अर्थ ग़ोरी दासों का अधिकारी हो सकता है। चाऊश उद्घोषक को कहते हैं। सुल्तानों की सवारी के आगे-आगे नक़ीबों के समान चाऊश भी चलते थे।

५ युद्ध करने वाले दास।

६ शिकार खेलने वाले दास।

७ सम्भवतः अफ़ग़ानों के हजारा समूह के दास।

८ जल का प्रबन्ध करने वाले।

९ मदिरा तथा उसके पात्र इत्यादि का प्रबन्ध करने वाले।

१० शाही वस्त्र का प्रबन्ध करने वाले।

११ शाही रसोई का प्रबन्ध करने वाले।

इत्रदार,[1] तश्तदार,[2] चत्रदार,[3] शमादार,[4] पर्दादार,[5] जानदार, सिलाहदार, शिकरादार,[6] यूज़िबान,[7] सियहगोशदार,[8] पीलबान,[9] सतूर बन्दान,[10] खासदार,[11] दारूदार,[12] संगतराश,[13] सक़्क़ा,[14] इत्यादि, तथा महल के भीतर एवं बाहर अलमखाने,[15] यात्रा तथा महल में नौबतपास,[16] तरग़ाक[17] तथा चौकी, किताबखाने[18] में क़ुरान पढ़ने वाले दास, (२७२) अलमखाना, घड़यालखाना, दीवानों में मुहर्रिर तथा कुछ दास दीवाने अर्ज़ तथा दीवाने विज़ारत में, नक़ीबों में, तथा कुछ दास, मुक़्ते, परगनादार, तथा शहनगाने महल[19] आदि नियुक्त हुये। इस प्रकार कोई स्थान सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दासों से रिक्त न था। देहली राज्य में किसी भी बादशाह ने फ़ीरोज़ शाह के अतिरिक्त इतने दास एकत्र न किये थे। सुल्तान अलाउद्दीन ने ५०,००० दास एकत्र किये थे। वे उसके परामर्श-दाता थे। अलाई राज्यकाल के उपरान्त किसी भी बादशाह ने दास एकत्र करने में इतनी अधिकता नहीं की। ईश्वर ने भाग्य में यह भी लिखा था कि फ़ीरोज़ शाह के निधन के कुछ वर्ष उपरान्त मुसलमानों में इतना रक्तपात हो और यह उत्पात उपर्युक्त दासों के कारण हो।·········

(२७३) सुल्तान फ़ीरोज़ ने दास एकत्र करने का कार्य अपना कर्त्तव्य समझ रखा था और हृदय से इसके लिये प्रयत्नशील होता था। जब मुक़्ते दासों को प्रस्तुत करते थे तो कुछ दास सुल्तान के आदेशानुसार अमीरों तथा मलिकों को इस आशय से सौंप दिये जाते थे कि वे उन्हें शिष्टाचार सिखायें। अमीर तथा मलिक उन दासों का पुत्रों के समान पालन-पोषण करते थे। भोजन, वस्त्र, वस्त्र की धुलाई, कला सिखाने, भोजन कराने, सुलाने तथा उनकी चिन्ता पूर्ण रूप से रखते थे। प्रत्येक वर्ष उन्हें राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत करते थे और उनकी शिष्टता, सेवा, तथा कला-कौशल की राजसिंहासन के सम्मुख चर्चा करते थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह उन अमीरों तथा मलिकों को इतना अनुगृहीत करता कि इसका उल्लेख नहीं हो सकता।·········अन्त में उपर्युक्त दासों ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पुत्रों के सिर

---

१ इत्र का प्रबन्ध करने वाले।
२ हाथ धुलाने का प्रबन्ध करने वाले।
३ शाही छत्र का प्रबन्ध करने वाले।
४ शाही दीपकों का प्रबन्ध करने वाले।
५ सम्भवतः अन्तःपुर की देख रेख करने वाले।
६ शाही शिकरों का प्रबन्ध करने वाले।
७ शिकारी चीतों का प्रबन्ध करने वाले।
८ सियह गोश (चीते के समान एक बनपशु जिससे शिकार खेलने में सहायता प्राप्त होती है) का प्रबन्ध करने वाले।
९ महावत।
१० चौपायों का प्रबन्ध करने वाले।
११ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
१२ औषधि का प्रबन्ध करने वाले।
१३ पत्थर काटने वाले।
१४ भिश्ती।
१५ वह स्थान जहाँ शाही पताकायें रक्खी जाती थीं।
१६ राजप्रासाद के द्वार पर बजने वाले ढोल।
१७ पहरा।
१८ पुस्तकालय।
१९ महल के प्रबन्धक।

काट कर दरबार के सामने लटका दिये। इसका उल्लेख सुल्तान मुहम्मद फ़ीरोज़ के विवरण में होगा।

अध्याय ३

ख़लीफ़ा का भेजा हुआ ख़िलअत प्राप्त होना।

(२७४) कहा जाता है कि जिस प्रकार ख़लीफ़ा के यहाँ से सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह के लिये ख़िलअत आते थे, उसी प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को भी ख़लीफ़ा ने ख़िलअत भेजी। सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह को उसकी प्रार्थना पर ख़िलअत प्राप्त हुआ था। इसका सविस्तार उल्लेख सुल्तान मुहम्मद शाह के हाल में इस इतिहासकार शम्स सिराज अफ़ीफ़ ने कर दिया है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के लिये, ईश्वर की कृपा से ख़लीफ़ा ने बिना प्रार्थना किये ही ख़िलअत भेजा अपितु ख़लीफ़ा ने कुछ अपने मरातिब के चिह्न भी साथ भेजे। जब जब ख़लीफ़ा के पास से ख़िलअत फ़ीरोज़ शाह के लिये आते तो तीन ख़िलअत प्राप्त होते थे। एक सुल्तान फ़ीरोज़ के लिये, दूसरा शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ के लिये तीसरा ख़ाने जहाँ के लिये।

संक्षेप में, जब ख़लीफ़ा के पास में ख़िलअत प्राप्त होता तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह उसके स्वागतार्थ शहर के बाहर जाता और ख़लीफ़ा का ख़िलअत आदरपूर्वक अपने दोनों हाथों से लेकर सिर तथा आँखों पर रखता। तत्पश्चात् सभी ख़ास व आम के समक्ष ख़लीफ़ये ज़माँ इब्ने उमर बिन रहमान व इमाम वारिसे मुल्के इमामान अबुल फ़तह अबी बक्र बिन (पुत्र) अबिर्रबी सुलेमान ख़लदल्लाहु मुल्कहू का भेजा हुआ ख़िलअत प्राप्त करता। ख़लीफ़ा का (२७५) फ़रमान, जिसमें सुल्तान फ़ीरोज़ को ख़लीफ़ा अपना इमाम तथा अपनी सल्तनत का पूर्ण रूप से अधिकार, सम्पन्न नायब लिखता था, तथा उसे सैयिदुस्सलातीन की उपाधि प्रदान की थी, दिया जाता। सुल्तान वह फ़रमान तेज़ी से आगे बढ़कर दोनों हाथों से बड़े आदर-पूर्वक लिया करता और उसे चूम कर दाईं और बाईं आँख पर रखता। तत्पश्चात् उसे सिर पर रखता और उसे पढ़ता। दरबार के हाजिब नारा लगाते। सभी लाने वालों से भेंट करते, हाथ मिलाते तथा आलिंगन होने में तल्लीन हो जाते। सभी का बड़ा आदर सत्कार होता।

तत्पश्चात् शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ तथा ख़ाने जहाँ को ख़लीफ़ा का ख़िलअत पहनाया जाता। इसके उपरान्त सुल्तान स्वयं ख़िलअत तथा फ़रमान लाने वालों को प्रत्येक की श्रेणी के अनुसार ख़िलअत पहनाता। वह दरबार के समस्त ख़ानों अमीरों तथा मलिकों को जामदार ख़ानये ख़ास[1] से ख़िलअतें पहनाता। उस दिन फ़ीरोज़ शाह समस्त प्रजा के सामने जश्न करता। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ख़लीफ़ा के ख़िलअत को बड़े आदरपूर्वक पहनता था और उसे आशीर्वाद के लिये जामदार ख़ानये ख़ास में रखता था। उन मरातिब के निशानों को (२७६) अलमख़ानये ख़ास[2] में रखता था। जब फ़ीरोज़ शाह अहं भाव त्याग कर ईश्वर पर (२७७) आश्रित हो गया तो ईश्वर ने ख़लीफ़ा को ख़िलअत भेजने के लिये प्रेरित किया।... ईश्वर ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह में नबियों तथा वलियों[3] के गुण उत्पन्न कर दिये थे और उसमें से अहं भाव पूर्णतः निकाल दिया था।......

---

१ शाही वस्त्र रखने का गृह।

२ शाही पताकाओं के रखने का गृह।

३ ईश्वर के दूतों तथा सन्तों।

अध्याय ९

सुल्तान फ़ीरोज़ का दरबार ।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तीन स्थानों पर बैठकर दरबार किया करता था। एक स्थान को महले सहने गुलीं[१] कहते थे। उस स्थान को महले दाका[२] अर्थात् महले अंगूर (अंगूर का स्थान) कहते थे। दूसरे स्थान को महले छज्जये चोबीं[३] कहते थे। तीसरे स्थान को महले बारे आम[४] कहते थे। उसे सहने मियानगी[५] भी कहते थे। समस्त खान, (२७८) मलिक, अमीर तथा प्रतिष्ठित लोग एवं कुछ प्रसिद्ध लेखक सहने गुलीं के दरबार में जाते थे और प्रत्येक अपने आने के निश्चित समय पर आकर महले सहने गुलीं में अभिवादन के लिये जाता था। महले छज्जये चोबीं बड़े ही खास लोगों का स्थान था। तीसरा स्थान अर्थात् महले सहने मियानगी दरबारे आम का स्थान था।.........

संक्षेप में जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने देहली में निवास करना त्याग दिया था और फ़ीरोज़ाबाद में निवास करता था तो जब वह दरबार करना चाहता उसके दो तीन दिन पूर्व एबादत एवं क़ुरान पढ़ने में व्यस्त रहता। तत्पश्चात् राजसिंहासन सजाया जाता। फ़ीरोज़ शाह एबादत में नित्य क़ुरान के कई सूरे पढ़ता था। शुक्रवार के दिन सूरये कहफ़ तथा शुक्रवार की रात्रि में नियमपूर्वक सूरये ताहा पढ़ता था। पाँचों समय की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ता था। वह क़ुरान के कुछ सिपारे वज़ीफ़े में पढ़ता था। जब वह क़ुरान पढ़ता था तो क़ुरान पढ़ते समय जहाँ-जहाँ अल्लाह का नाम आता तो वह बड़े अनुराग तथा उत्कंठा से अपने हाथ चूमता और अपनी आँखों पर मलता। उसने यह कार्य अपने लिये अनिवार्य बना लिया था।

(२७९) सर्वप्रथम सुल्तान फ़ीरोज़ स्वयं आता तथा राजसिंहासन पर आसीन होता। तत्पश्चात् सरापर्दादाराने खास[६] तथा सरापर्दा के पदाधिकारी आते तथा अभिवादन करते और आगे बढ़कर पूछते "अभिवादन करने वालों के लिये क्या आदेश होता है ?" फ़रमान होता "लोगों को अभिवादन के स्थान पर प्रस्तुत किया जाय।" सरापर्दादाराने ख़ास सर्वप्रथम हाजिबों को आज्ञा देते। हाजिबों के अभिवादन करने के उपरान्त कुछ तेग़दार (तलवारें चलाने वाले) सोने तथा चाँदी की ढालें लिये अनुमति पाते। फिर दीवाने रिसालत को आज्ञा मिलती। दीवाने क़ज़ा के अधिकारी दीवाने रिसालत वालों के साथ-साथ जाते थे। तत्पश्चात् दीवाने विज़ारत वालों को आज्ञा मिलती।

दीवाने विज़ारत का स्थान सर्वदा राजसिंहासन की दाहिनी ओर होता है। दीवाने विज़ारत के उपरान्त दीवाने अर्ज़ को आज्ञा मिलती। कोतवाल लोग उनके साथ-साथ जाते दीवाने अर्ज़ का स्थान राजसिंहासन के बाईं ओर है। समस्त शाहज़ादे तथा विश्वासपात्र सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राजसिंहासन के पीछे खड़े होते थे। कुछ अमीर, मलिक, अक़्ताओं के स्वामी, प्रबंधक आदि भी बाईं ओर खड़े होते। प्रत्येक अपनी-अपनी श्रेणी के अनुसार

१ वह प्रांगण जिसमें फूल इत्यादि बने हों।

२ द्राचा (अंगूर) का विकसित रूप। सम्भवतः उस प्रांगण में अंगूर की बेलें बनी होंगी।

३ लकड़ी के छज्जे का महल।

४ दरबारे आम का महल।

५ केन्द्रीय प्रांगण।

६ राज प्रासाद के विशेष अधिकारी।

(२८०) खड़ा होता था। किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति को उन दिनों बिना कुलाहे यज़क[1] के आज्ञा न मिलती थी। केवल उन थोड़े से तेग़दारों के लिए, जो राजसिंहासन के समक्ष ज़रदोज़ी के वस्त्र सफ़ेद बन्द के, तथा सुनहरी पेटी एवं कुलाहे बारबकी[2], तथा अन्य खिलअतें प्राप्त किये हुये होते थे, यह शर्त न थी कि जब वे लोग राजभवन में उपस्थित हों तो वही वस्त्र धारण किये रहें।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समय में समस्त खान, मलिक, अमीर, प्रतिष्ठित लोग एवं आलिम नरमीना[3] के वस्त्र धारण करते थे। उन दिनों में बुज़ुर्ग लोग खिलअत की क़बा[4] पहनना अच्छा न समझते थे। प्रत्येक उसे खिलअत से पृथक् कर देता था। द्वार के ऊपर अथवा नीचे आने वाले को बिना मोज़ा तथा मूए बन्द[5] पहने हुये आने की आज्ञा न मिलती थी। कभी-कभी दरबार के समय सुल्तान शिकरे उड़ाने की लीला देखता कभी घोड़ों के दौड़ाने का तमाशा देखता था।

राजसिंहासन के निकट बैठने वाले लोग—

खाने जहाँ वज़ीरे ममालिक राजसिंहासन के दाईं ओर बैठता था। अमीरे मुअज़्ज़म अमीर अहमद इक़बाल खाने जहाँ से कुछ ऊँचे तथा एकज़ानू खाने जहाँ के पीछे बैठता था मलिकों तथा शासन प्रबन्ध के नियमों में इस नियम के अनुसार उसे न खाने जहाँ से ऊपर और न खाने जहाँ से नीचे कहा जा सकता है। मलिक निज़ामुलमुल्क अमीर हुसैन अमीर मीरान जो नायब वज़ीरे ममालिक था खाने जहाँ के नीचे राजसिंहासन से मिले हुये बैठता था। यही तीन लोग राजसिंहासन से मिले हुये बैठते थे।

(२८१) दाईं ओर खाने जहाँ के पीछे एक जामाखाने[6] की दूरी पर उसे दुहरा करके बिछा देते थे। उस जामाखाने के बीच में क़ाज़ी सद्रे जहाँ बैठता था उसके बराबर बाँहबना पालती मार कर बैठता था। उसके बराबर मंगली खाँ उग़ली बैठता था। राजसिंहासन के बाईं ओर का स्थान रिक्त रहता था। बाईं ओर एक जामाखाने की दूरी पर एक जामाखाना दुहरा करके बिछाया जाता था। उस जामाखाने के बीच में जो बाईं ओर बिछता था, ज़फ़र खाँ बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ आसीन होता था। उसके बराबर अहमद खाँ, अनीरत्थू दो चत्रों का स्वामी, बैठते थे। उनसे मिला हुआ आज़म खाँ खुरासानी बैठता था। उनके पीछे राय मदार देव[7] राय सबीर, (सुमेर ?) रावदत्त (रावत) अदहरन भूमि पर बैठते थे।

उन दिनों में यह इतिहासकार शम्स सिराज अफ़ीफ़ दीवाने विज़ारत के अधिकारियों के साथ सुल्तान के आदेशानुसार अभिवादन को जाया करता था। खाने जहाँ के साथ दीवाने विज़ारत के समस्त अधिकारी आते और हाजिबों के स्थान पर अभिवादन करते थे। समस्त अधिकारी दाईं ओर अपने स्थान पर खड़े हो जाते थे। वज़ीर के पुत्र, भाई तथा भतीजे दीवान के अधिकारियों के ऊपर खड़े होते थे और दो मनुष्यों की दूरी का अन्तर रहता था। (२८२) इसी प्रकार चुने हुये वज़ीर लोग आगे बढ़ते। पुनः भूमि पर सिर रखते। सुल्तान अपने

१ किसी विशेष प्रकार की टोपी।
२ एक प्रकार की टोपी।
३ एक प्रकार का कपड़ा।
४ सम्भवतः खिलअत को सुरक्षित रखने के लिये क़बा।
५ बालों के बाँधने का कोई नियम।
६ क़ालीन।
७ एक पोथी के अनुसार वलार देव।

शुभ हाथों से बैठने का संकेत करता। वज़ीर तीसरी बार भूमि पर सिर रखता और अपने स्थान पर बैठ जाता। मलेकुश्शर्क़ निज़ामुलमुल्क नायब वज़ीरे ममालिक उस अवसर पर बराबर वज़ीर के साथ रहता था।

भूतकाल में देहली के सुल्तानों के यहाँ यह प्रथा थी कि नायब वज़ीर को राजसिंहासन के समक्ष बैठने का स्थान न मिलता था। जब फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में मलिक निज़ामुल मुल्क नायब वज़ीर हुआ, तो वह सुल्तान को राज्य-व्यवस्था में परामर्श दिया करता था तथा सुल्तान की बहिन उससे विवाहित थी। उसको ईश्वर ने अनेक उत्कृष्ट गुण प्रदान किये थे, अतः सुल्तान ने आदेश दे दिया था कि ऐसा नायब वज़ीर, वज़ीर के नीचे बैठा करे।

जब खाने जहाँ अभिवादन करके अपने स्थान पर आसीन हो जाता तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह दाईं ओर मुख करके खाने जहाँ से वार्ता करने लगता। जब तक खाने जहाँ उसके समक्ष रहता, तब तक वह उसी से वार्ता करता रहता था। उसकी उपस्थिति में किसी अन्य से वार्ता न करता था। यदि सुल्तान किसी को उस स्थान पर बुलाना चाहता तो वह खाने जहाँ की ओर संकेत करता। खाने जहाँ उसे बुला लेता। यदि सुल्तान किसी (२८३) से रुष्ट होता तब भी वह खाने जहाँ की ओर मुख करता। प्रत्येक छोटे बड़े कार्य हेतु सुल्तान हितैषी वज़ीर की ओर मुख करता। जिस प्रकार अन्य सफल तथा प्रसिद्ध बादशाह राज्यव्यवस्था के सम्बन्ध में आचरण कर चुके थे, उसी प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने भी नियम बनाये थे। क़ाबूस हकीम ने क़ाबूस नामे[1] में लिखा है कि सुल्तानों को उस समय तक जब तक वज़ीर उसके समक्ष रहे किसी से वार्ता न करनी चाहिये। यदि वज़ीर की उपस्थिति में बादशाह किसी अन्य से बात कर लेता है तो इससे राज्य को बड़ी हानि प्राप्त होती है। वज़ीर को समस्त राज्य के हिसाब किताब की जाँच करनी पड़ती है चाहे कोई बादशाह का पुत्र हो अथवा भाई। इसी कारण राज्य के सभी अधिकारी वज़ीर के शत्रु होते हैं। यदि बादशाह वज़ीर की उपस्थिति में किसी अन्य से वार्तालाप कर लेता है तो बड़े-बड़े पदाधिकारी एवं विश्वासपात्र यही समझने लगते हैं कि बादशाह वज़ीर से रुष्ट है। इस प्रकार उनके हृदय में वज़ीर के महत्त्व में कमी हो जाती है। वज़ीर भी दुखी हो जाता है और सोचने लगता है कि कदाचित मैंने कोई ऐसा कुकर्म किया है कि बादशाह दूसरे की ओर मुख करने लगा है। इस कारण हिसाब किताब में शिथिलता आजाती है। आमिलों से हिसाब किताब में शिथिलता के कारण राजकोष में धन नहीं पहुँचता और राज्य की नीवँ में दोष उत्पन्न हो जाता है। राज्य का स्थापित रहना धन पर अवलम्बित है।

(२८४) दस्तूरुल वुज़रा में लिखा है कि प्रत्येक आमिल जो टालमटोल करके धन भूमि में गाड़ देता है उसे योग्य वज़ीर उसकी आँखों में अँगुली डालकर निकाल लेता है।.........

यदि किसी को राजसिंहासन के समक्ष पा बोस[2] के लिये लाया जाता तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह दैवी प्रेरणा से किसी परिचय के पूर्व ही उसके पूर्वजों के विषय में भी ज्ञान प्राप्त कर लेता था। ईश्वर ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को इतनी बुद्धि प्रदान की थी।.........

(२८५) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह एक पहर दिन तक दरबार में बैठता, तत्पश्चात् उठ जाता। खान तथा मलिक लौट जाते। खाने जहाँ वज़ीरों की प्राचीन प्रथा के अनुसार विज़ारत

---

१ क़ाबूस नामा लेखक कैकाऊस बिन इस्कन्दर बिन क़ाबूस बिन वाश्मगिर, रचना ४७५ हि० (१०८२-८३)। इसमें राजकुमारों के पथ प्रदर्शनार्थ नियम हैं। (ईथे, इण्डिया आफ़िस पुस्तकालय लन्दन न० २१५३)।

२ चरणों का चुम्बन।

की गद्दी पर विराजमान होता और आमिलों के कार्य की देखभाल में तल्लीन हो जाता। प्रत्येक अधिकारी अपने-अपने कर्त्तव्य पालन में व्यस्त हो जाता।.........

इस स्थान पर यदि कोई यह प्रश्न करे कि राजसिंहासन के दाईं ओर खाने जहाँ, अमीर अहमद इक़बाल तथा मलिक निज़ामुलमुल्क बैठते थे और राजसिंहासन से मिला हुआ बाईं ओर का स्थान रिक्त रहता था, यद्यपि सुल्तानों के बाईं ओर का स्थान कभी रिक्त नहीं रहता था, तो इसका क्या कारण था? इस विषय में मैंने अपने पिता से पूछा। "मेरे पिता ने मुझे बताया कि 'राजसिंहासन के बाईं ओर का स्थान सर्वदा सरे लश्कर[1] के लिये रहता है।' जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में सेनापति का पद अपने दास बशीरा को प्रदान कर दिया और उसकी उपाधि एमादुलमुल्क रखी तब उसके बैठने का स्थान राजसिंहासन के बाईं ओर न था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सिंहासनारोहण के समय खाने जहाँ, यद्यपि वह वज़ीर था, राजसिंहासन के बाईं ओर बैठता था। दाईं ओर राजसिंहासन के बराबर खाने आज़म तातार ख़ाँ आसीन होता (२८६) था। जब कुछ समय उपरान्त तातार खाँ की मृत्यु हो गई तो खाने जहाँ सुल्तान के आदेशानुसार दाईं ओर बैठने लगा और बाईं ओर का स्थान रिक्त रह गया। जब खाने आज़म ज़फ़र खाँ बंगाल से सुल्तान के दरबार में पहुँचा तो कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने ज़फ़र खाँ को मसनद[2] प्रदान की। उस अवसर पर सुल्तान का आदेश हुआ कि ज़फ़र खां राजसिंहासन के बाईं ओर आसीन हुआ करे। जब उसकी मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर उसके पुत्र दरया खाँ को उसका पद तथा ज़फ़र खाँ की उपाधि मिली तो उसके विषय में आदेश हुआ कि वह भी अपने पिता के समान राजसिंहासन के निकट बाईं ओर बैठा करे।...............

इसी प्रकार यदि कोई प्रश्न करे कि सहने गुलीं के दरबार के स्थान पर सैदुरगानी मौलाना जलालुद्दीन रूमी तथा शेख़ुल इस्लाम किस स्थान पर बैठते थे, तो इसका उत्तर यह है कि सैदुरगानी सद्रे जहाँ के नीचे दाईं ओर बैठते थे। मौलाना जलालुद्दीन रूमी सैदुरगानी के बराबर बैठते थे। युग के शेख़ (शेख़ुल इस्लाम) जब सुल्तान की भेंट को आते तो एक पहर दिन के पश्चात् आते। उस समय सुल्तान फ़ीरोज़ राजसिंहासन से उठ (२८७) चुका होता था और महले छज्जा में निहालचे (गद्दे) पर आसीन रहता था। जब शेख़ुल इस्लाम आते तो सुल्तान उठकर स्वागत करता और शेख़ के चरणों की ओर हाथ बढ़ाता; शेख़ुल इस्लाम सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को आलिंगन करके आशीर्वाद देते। तत्पश्चात् दोनों साथ-साथ एक स्थान पर बैठते। कोई तीसरा उस स्थान पर न आ पाता। वे आपस में देर तक वार्ता किया करते तथा भोजन, मेवा, शर्बत एवं पान खाते। तत्पश्चात् शेख़ुल इस्लाम उठ जाते और सुल्तान, शेख़ुल इस्लाम को कुछ दूर पहुंचाने जाता। शेख़ुल इस्लाम पुनः उसी प्रकार आलिंगन होते और आशीर्वाद देते और लौट जाते। यदि शेख़ुल इस्लाम को कुछ निवेदन करना होता तो वे उसे स्वयं सुल्तान से कदापि न कहते अपितु एक काग़ज़ पर लिख कर अपने रूमाल में लपेट कर उसी स्थान पर छोड़ देते। जब सुल्तान शेख़ुल इस्लाम को पहुंचा कर लौटता तथा निहालचे पर आसीन होता तो उस रूमाल तथा काग़ज़ को पाता। पूरा काग़ज़ पढ़ता और शेख़ुल इस्लाम की इच्छानुसार तुरन्त आदेश दे देता और किसी मलिक को फ़रमान देकर कहता कि इस काग़ज़ को तुरन्त शेख़ुल इस्लाम

१ सेनापति।

२ गद्दी।

के पास उनके पहुंचने के पूर्व पहुँचा दे। वह मलिक वैसा ही करता। उस समय महले छज्जा में क़ाज़ी बुग़दादी, मलिक मुबारक कबीर तथा उन्हीं जैसे लोग सुल्तान के पीछे खड़े रहते।

अध्याय ५

उस काल के मलिकों का आनन्द तथा उल्लास।

(२८८) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में समस्त खानों, मलिकों, प्रतिष्ठित लोगों, मुन्शियों तरकशबन्दों (धनुर्धारियों) तथा समस्त विशेष एवं साधारण व्यक्तियों, स्वतन्त्र तथा दास लोगों को आनन्द, प्रसन्नता तथा निश्चिन्तता प्राप्त थी। समस्त प्रजा को समय-समय पर हर्ष तथा उल्लास प्राप्त होता रहता था। वह काल तथा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के चरण बड़े शुभ थे। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह किसी ओर सवार होकर जाता[1], तो उस काल के मलिकों को इतनी प्रसन्नता प्राप्त होती, मानो वे किसी अक़्ता के अधिकारी बन कर जा रहे हों। इसलिए कि ईश्वर की कृपा से सभी लोगों को अपार स्थायित्व, असंख्य इनाम, अक़्ता, परगने, क़स्बे, गाँव उद्यान आदि व्यय हेतु[2] निश्चित थे। इसी प्रकार उस आनन्द के साथ-साथ लोगों को उन्नति तथा आय प्राप्त होती रहती थी। दरबार के प्रतिष्ठित लोगों में बहुत कम ऐसे होंगे जिनके पास फ़र्राशखाना न हो। सबके पास उसकी स्थिति के अनुसार अत्यधिक फ़राशीना[3] थे। प्रत्येक रूपवती कनीज़[4] जो बड़े अच्छे स्वर में गाती थी, दुःख दूर करने, संभोग के आनन्द, तथा चिन्ता दूर करने के लिए अपने साथ ले जाता था।

(२८९) प्रत्येक पड़ाव पर अपार निश्चिन्तता, सुख तथा सस्ता अनाज प्राप्त होता था। किसी को बादशाह के अत्याचार का भय न रहता था और कण कण में से किसी को किसी प्रकार का डर न रहता था। सुल्तान फ़ीरोज़ के राज्यकाल में यदि कोई अधिकारी किसी कारण अनुपस्थित होता तो वह सवारी के समय तुरन्त उपस्थित हो जाता और अधिक समय तक अनुपस्थित न रहता। उस बादशाह के राज्यकाल में कोई तरक़शबन्द (धनुर्धारी; सैनिक) अनुपस्थित हो जाता तो उसकी जीविका न छीनी जाती। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेना के प्रत्येक व्यक्ति के घर में अपार सुख तथा आनन्द रहता था। लोग इतने समृद्ध थे कि प्रत्येक शिविर में गायक गाने गाया करते थे; सम्पन्न लोग खूब सम्पत्ति खर्च किया करते थे। लोगों को सेना के सुख तथा आनन्द के कारण वहाँ से लौटना अच्छा न लगता था। शहर (देहली) में लोगों के घरों पर इतनी समृद्धि थी कि सेना में किसी को भी घर की चिन्ता न होती थी। सेना में अत्यधिक सम्पन्नता, सुख, आनन्द, निश्चिन्तता के कारण बहुत से मुसलमान सुल्तान के साथ ही फिरा करते थे और वहाँ की सुख सम्पन्नता के कारण उन्हें लौटना अच्छा न लगता था।

बाज़ार वाले देहली निवासियों के पास सामग्री तथा सामान की अधिकता के कारण (२९०) बड़े हर्ष तथा आनन्द से सुल्तान के साथ जाते थे। यह बड़ी प्राचीन प्रथा है कि कारोबारी लोगों में से केवल वही बादशाह की सेना के साथ जा सकता था जिसे शहर की

---

१ शिकार हेतु अथवा अन्य किसी कार्य से जाता।

२ दर वजह

३ फ़रीश

४ दासी

रईस[1] आज्ञा दे देता था। बाज़ार वाले सेना के साथ जाने के लिये रईस शहर की ख़ुशामद करते थे और उपहार भेंट करते थे।

जब शहंशाह शिकार की सवारी से लौटता और शहर (देहली) वापस आता, तो प्रत्येक ख़ान तथा मलिक प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने घर को लौटता था और अपने घर से अत्यधिक सामग्री तथा मेवे भेजता था[2]। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईश्वर की कृपा से विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौटता और यमुना तट पर कूश्क (प्रासाद) के समक्ष उतरता तो उसके कुछ दिन पूर्व ख़ाने जहाँ के आदेशानुसार फ़ीरोज़ाबाद के समस्त कूश्क में सफ़ेदी कराई जाती तथा उसे नाना प्रकार के बेल बूटों से अलंकृत किया जाता। ख़ाने जहाँ अत्यधिक सामग्री तथा उपहार के लिये आदेश देता। शहर के चारों ओर झण्डों का आदेश दिया जाता। पचास झण्डों के पीछे एक ढोल, दो शहनाई तथा यरग़ून होते। १२००० झण्डे शहर के चारों ओर से एकत्र होते। वे सब लोग दरबार के भवन के समक्ष उपस्थित होते थे।

(२९१) शहंशाह यमुना तट पर उतरने के पश्चात् यह आदेश दे देता कि ख़ानों, मलिकों, अमीरों तथा प्रतिष्ठित लोगों को आगे जाने न दिया जाय, कारण कि सब इकट्ठा नगर में प्रविष्ट हों। वह रात्रि हर्ष तथा आनन्द की अधिकता से लोगों को ईद की रात्रि के समान हो जाती थी। प्रातःकाल ख़ाने जहाँ समस्त शहरदारों[3] तथा कारकुनों को लेकर असंख्य झण्डों के साथ यमुना तट के उस पार जाता, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के चरणों का चुम्बन करता। तत्पश्चात् सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शुभ मुहूर्त्त में बड़े ऐश्वर्य से आनन्द तथा प्रसन्नता के साथ फ़ीरोज़ाबाद नगर में प्रविष्ट होता था। नगर के समस्त पदाधिकारियों के उपहार राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किये जाते। सर्वप्रथम ख़ाने आज़म ख़ाने जहाँ के उपहार राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किये जाते। तत्पश्चात् मलेकुश्शर्क़ मलिक निज़ामुल मुल्क नायब वज़ीरे ममालिक के उपहार प्रस्तुत किये जाते। इसके उपरान्त समस्त ख़ानों, अमीरों, आलिमों, फ़क़ीहों, सैयिदों, मशायख़ (सूफ़ियों), प्रतिष्ठित व्यक्तियों, नगर के चारों ओर (२९२) के निवासियों एवं दूर-दूर के स्थान वालों के जो उस समय देहली में ख़ाने आज़म ख़ाने जहाँ के पास किसी कारण से उपस्थित होते, प्रस्तुत किये जाते। समस्त लोग अपने साधन के अनुसार राजसिंहासन के समक्ष अपने-अपने उपहार प्रस्तुत करते थे। तरकशबन्द पहलवान तथा प्रसिद्ध वजहदार जो (शाही) सेवा में रहते थे, भिन्न-भिन्न दिशाओं में निश्चिन्त होकर लौट जाते थे और अपने-अपने ग्रामों में अपने घरबार के साथ, जो ग्रामों में निवास करते थे, प्रसन्नतापूर्वक पहुँच जाते थे। अपने सम्बन्धियों से सब भला बुरा हाल कह सुनाते थे। उस शहंशाह के राज्यकाल में प्रत्येक धन-धान्य सम्पन्न था।

इस प्रकार देहली राज्य के शहर तथा क़स्बों के सभी लोगों को सुख तथा शान्ति प्राप्त थी। सभी वस्तुयें सस्ती थीं और प्रत्येक सामग्री का बाहुल्य था। इसका कारण सुल्तान का सदाचार था। लोग इतने सुख में थे कि निर्धन लोग भी अपनी पुत्रियों का विवाह अल्पावस्था में कर देते थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के शुभ चरणों के आशीर्वाद से उसके राज्यकाल में किसी को किसी बात की कमी तथा कष्ट न हुआ।.........

---

१ बाज़ार का मुख्य अधिकारी।

२ सम्भवतः सुल्तान के पास उपहार स्वरूप।

३ शहर के अधिकारियों।

अध्याय ६

सामग्री के सस्ता होने तथा समृद्धि का उल्लेख।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में सामग्रियों की अल्पमूल्यता तथा समृद्धि उच्च शिखर तक पहुँच चुकी थी। उसके पूरे ४० वर्षीय राज्य-काल में किसी ने अकाल का मुँह न देखा। समृद्धि इस सीमा को पहुँच गई कि लोग सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल को भूल गये। जितनी समृद्धि सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में थी उतनी किसी बादशाह के राज्यकाल में न हुई। सुल्तान ने सामग्री के सस्ता करने के लिये अत्यधिक प्रयत्न किये (२९४) थे। वह समस्त विवरण प्रसिद्ध इतिहासों में दिया हुआ है। वह व्यापारियों को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्रदान करता था; उन पर बड़ी कृपादृष्टि रखता था; उनके वेतन निश्चित कर दिये थे। इस प्रकार अलाई राज्यकाल में अल्पमूल्यता प्राप्त हो सकी थी।

सुल्तान फ़ीरोज़ के राज्यकाल में ईश्वर की कृपा से उस बादशाह की ईश्वर-भक्ति के कारण बिना उसके प्रयत्न के ही स्थायी रूप से अनाज की अल्पमूल्यता प्राप्त हो गई थी। ईश्वर की कृपा से अनाज इतना सस्ता हो गया था कि देहली नगर में गेहूँ ८ जीतल प्रति मन, जौ और चना ४ जीतल प्रति मन बिकता था। दीन सैनिक एक जीतल में घोड़े को दस सेर दलीदा[1] खिला लेता था। इसी प्रकार ईश्वर की कृपा से शहंशाह के उसके प्रति विश्वास होने के कारण प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता हो गया था। कपड़ों में क्या सपेदीना[2], क्या नरमीना[3] सभी सस्ते थे। उन दिनों शहंशाह ने आदेश दिया कि मिष्ठान्न का भाव कुछ कम होना चाहिये। क्योंकि सभी वस्तुयें सस्ती हैं अतः मिठाई भी सस्ती होनी चाहिये।

(२९५) संक्षेप में, उस बादशाह के ४० वर्षीय राज्यकाल में ईश्वर की कृपा से अल्प-मूल्यता अपने शिखर पर पहुँच गई थी। यदि कभी मूल्य बढ़ जाता अथवा कुछ दिन वर्षा न होती तो एक तन्का प्रति मन का भाव हो जाता। वह भी कुछ गिनती के दिन रहता। सुल्तान के चरणों के आशीर्वाद से देहली निवासियों ने ४० वर्ष तक अकाल का मुँह न देखा। इसी प्रकार उसके राज्यकाल में आबादी में इतनी उन्नति हुई कि दोआब में सकरोदा पर्वत तथा खरला से कोल तक एक ग्राम भी बुरी दशा में न था और थोड़ी सी भूमि भी बेकार न थी। उस समय में दोआब में ५२ परगने आबाद हो गये थे। इसी प्रकार दोआब के अतिरिक्त तथा प्रत्येक अक़्ता एवं शिक़ में (उदाहरणार्थ सामाने की शक़ में) एक कोस में चार गाँव बस गये थे। गाँवों में लोग निश्चिन्त थे। इस प्रकार उसके राज्यकाल में समस्त प्रजा को पूरा आराम प्राप्त था।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को ईश्वर की कृपा से उद्यान लगवाने से भी बड़ी रुचि थी। उसने प्रत्येक उद्यान का प्रांगण बड़े प्रयत्न से सजवाया था। उसके प्रयत्न से शहर देहली के आसपास १२०० उद्यान लग गये। लोगों की जो मिल्क तथा वक़्फ़ (की भूमि) थी, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने प्रमाण की सत्यता[4] का पता लगाने के उपरान्त उसे स्थायी रूप से प्रदान कर दिया।

---

१ मोटा अनाज, सम्भवतः पशुओं आदि के खाने के योग्य।

२ सम्भवतः कोई बहुमूल्य कपड़ा।

३ सम्भवतः कोई कम मूल्य का कपड़ा।

४ पुस्तक में बग़ैर तसहीहे हुज्जत (बिना प्रमाण की सत्यता का पता लगवाये) है किन्तु एक अन्य पोथी में बाद तसहीहे हुज्जत (प्रमाण की सत्यता का पता लगाने के उपरान्त) है और यही उचित है।

उसने अलाउद्दीन के प्रारम्भ किये हुये ३० उद्यानों को लगवाया[१]। बन्द सालोरा में ८० उद्यान (२९६) लगवाये। चितूर में ४४ उद्यान लगवाये। प्रत्येक बाग़ में सात प्रकार के अंगूर, सफ़ेद, काले खजूर के रंग के, चितूरी, अरग़वानी, सेरी, आलू, ख़ाचये गुलामान होते थे और एक जीतल प्रति सेर के हिसाब से बिकते थे। इसी प्रकार प्रत्येक उद्यान में विभिन्न प्रकार के मेवे होते थे।

सुल्तान के राज्यकाल में उद्यानों का महसूल बाग़बानों को जो कुछ प्राप्त होता था उसके अतिरिक्त एक लाख अस्सी हज़ार तन्के मिलता था। दोआब का महसूल उन दिनों अस्सी लाख तन्का था। इसी प्रकार उस धार्मिक बादशाह के प्रोत्साहन के कारण राजधानी देहली के अधीन प्रदेशों का महसूल छः करोड़ पच्चासी लाख तन्का था। यद्यपि फ़ीरोज़ शाह ने अपनी बुद्धिमत्ता के कारण देहली (से सम्बन्धित स्थानों) में कमी कर दी थी तब भी प्रदेशों का कर इतना अधिक था। उसने समस्त महसूल प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार बाँट दिया था। ख़ानों को ख़ानी के अनुसार, अमीरों तथा मलिकों को उनकी श्रेणी के अनुसार, प्रतिष्ठित लोगों को उनके आराम के अनुसार, हशम को उनके आराम के अनुसार वजह तथा ग़ैर वजही को शाही ख़ज़ाने से धन दिलाने की व्यवस्था कराई। शेष को शाही आदेशानुसार इतलाक़ प्राप्त होती थी। जब वजहदारों का इतलाक़ अक़्ताओं में चला जाता था तो इतलाक़ के स्वामी को (सैनिक को) उसके वजह का आधा प्राप्त हो जाता था। उन दिनों बहुत से आदमी सैनिकों का इतलाक़ दोनों ओर की अनुमति से मोल ले लेते थे। वे उन्हें एक तिहाई नगर में दे देते थे और उनको अक़्ताओं से आधा प्राप्त होता था। इतलाक़ को (२९७) मोल लेने वाले बड़ा पूरा लाभ उठाते थे। बहुत से लोग सुल्तान के राज्यकाल में सैनिकों की वजह मोल लेकर धनी हो गये और उनका यह व्यवसाय हो गया।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने दैवी प्रेरणा से राज्य के प्रदेशों का समस्त महसूल समस्त प्रजा में बाँट दिया था अपितु परगने तथा अक़्तायें भी बाँट दी थीं। ख़ाने जहाँ वज़ीरे ममालिक को सेना, परिजन तथा अपने पुत्रों के वजह के अतिरिक्त १३ लाख तन्के प्राप्त थे। इसके बदले में उसे बहुत सी अक़्तायें तथा परगने दे दिये गये थे। इसी प्रकार उस धार्मिक बादशाह ने उसकी श्रेणी के अनुसार किसी के लिये आठ लाख तन्के किसी के लिये छः लाख तन्के तथा किसी के लिये चार लाख तन्के निश्चित किये। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की इस नीति से उसके समकालीन समस्त ख़ान तथा मलिक धनी हो गये। प्रत्येक ने अत्यधिक धन, सोना, जवाहरात तथा हीरे एकत्र कर लिये। जब मलिक शाहीन शहना की जो सुल्तान के दरबार का नायब अमीर मजलिसे ख़ास था मृत्यु हुई तो उसकी छोड़ी हुई सम्पत्ति की पूछताछ की गई। अन्य सामान, बहुमूल्य वस्तुओं तथा अत्यधिक जवाहरात के अतिरिक्त उसके घर से पचास लाख तन्के नक़द निकले। इसी प्रकार एमादुलमुल्क बशीर सुल्तानी की छोड़ी हुई सम्पत्ति (२९८) के विषय में सभी को ज्ञात है।..........सुल्तान के इस कार्य से समस्त संसार उसका मित्र बन गया और सब लोग उसके हितैषी हो गये।

अध्याय ७

सेना का उल्लेख।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में दासों के अतिरिक्त ८०,००० सवार थे। समस्त सवार वर्ष के अन्त तक अर्ज़[२] हेतु प्रस्तुत होते रहते थे। कम मूल्य के घोड़े भी अधिकांश

१ पूरा कराया।
२ निरीक्षण।

दीवाने (अर्ज़) में प्रस्तुत हो जाते थे और उन्हें स्वीकार कर लिया जाता था। प्रायः यह समाचार सुल्तान के कानों तक भी पहुँचता था और वह सुनी, अनसुनी कर देता था। जब साल समाप्त हो जाता और बहुत से सैनिकों के घोड़े न प्रस्तुत हो पाते तो उसके विषय में दीवाने अर्ज़ के कर्मचारी राजसिंहासन के समक्ष निवेदन करते कि साल समाप्त हो रहा है, इतने घोड़े अभी तक प्रस्तुत नहीं हुये। इस पर शहंशाह कहता कि शुक्रवार के दिन अलंग[1] नहीं बैठते। पूरे वर्ष के शुक्रवारों के बदले में अलंग बैठे[2]। जब वह भी समाप्त हो जाता (२९९) और कुछ सैनिकों के घोड़े प्रस्तुत न हो पाते और सुल्तान के समक्ष निवेदन किया जाता कि शुक्रवार के बदले में अलंग बैठे इस पर भी इतने घोड़े प्रस्तुत नहीं हुये। शेष घोड़ों के प्रस्तुत किये जाने के विषय में क्या आदेश होता है?' आदेश होता कि दो मास का और समय दिया जाय। जब वह भी समाप्त हो जाता और यह निवेदन किया जाता कि यह समय भी समाप्त हो गया और इतने आदमियों ने घोड़े प्रस्तुत नहीं किये, तो उन दिनों मलिक रज़ी (जोकि एक बहुत बड़ा सन्त था) और जो नायब अर्ज़े ममालिक था और सेना का प्रबन्ध नियमपूर्वक करता था, राजसिंहासन के समक्ष निवेदन करता था कि 'जिन लोगों ने घोड़े प्रस्तुत नहीं किये उनमें से अधिकांश सैनिक इतलाक़ात की वजह लाने के लिये अक़्ताओं में गये हैं। वे लोग जब यह कार्य कर चुकेंगे तब शहर (देहली) आयेंगे। इसी बीच में वर्ष का अन्त हो जायगा। इन बेचारों की अवस्था बड़ी शोचनीय है। इन लोगों का विनाश हो जायेगा। इनके अतिरिक्त जो लोग अर्ज़ में नहीं पेश हुये हैं उनमें अधिकांश इसी प्रकार के लोग हैं जो किसी कार्य से भेज दिये गये हैं।'

बादशाह यह समाचार सुनकर प्रसन्न हो जाता और कहता, "जब एक आदमी अपने अधिकारी द्वारा किसी कार्य से भेज दिया गया है और उसकी अनुपस्थिति में वर्ष का अन्त हो रहा है और वह अर्ज़ नहीं कराता तथा उसका घोड़ा नहीं प्रस्तुत होता और उसे रद्द कर दिया जाता है तो वह बड़ी कठिनाई में पड़ जायगा। उसके घर में विलाप होने लगेगा।" (३००) तत्पश्चात् सुल्तान आदेश देता कि "साहबाने ख़ेल[3] से उनका प्रतिनिधि ले लिया जाय। जो सैनिक किसी कार्य से गया है, वह दीवाने अक़्ता[4] में अर्ज़ हेतु प्रस्तुत हो जाय तथा घोड़ा दे दे जिससे दीन सैनिकों को यह चिन्ता न रहे।"

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सर्वसाधारण के प्रति इतना उदार था जितना कोई पिता अथवा भाई भी न हो सकता था। सुल्तान के इस स्वभाव के कारण ४० वर्ष में कोई भी दीवाने अर्ज़ में प्रस्तुत हुये बिना न रहा।.........

उस शहंशाह के राज्यकाल में एक बार वर्ष समाप्त होने में केवल एक दिन शेष रह गया था जिसके उपरान्त दीवाने अर्ज़ की पंजिकायें बन्द हो जातीं। दरबार के एक विश्वासपात्र दास का घोड़ा दीवाने अर्ज़ में प्रस्तुत न हुआ था। संयोग से वह दास उस दिन महल में पहरा देने[5] वालों में से था। वह बैठा दुःख तथा शोक प्रकट कर रहा था और अपने विषय में अपने (३०१) दूसरे मित्र से वार्तालाप कर रहा था। उसकी वार्ता सुल्तान के कानों तक पहुँच गई।

---

१ अलंग का अर्थ है 'खाई' किन्तु यहाँ यह अर्थ है कि शुक्रवार को अर्ज़ का कार्य नहीं होता।

२ वर्ष के ४८ शुक्रवारों के बदले में ४८ दिन तथा इन ४८ दिनों में ७ शुक्रवारों के स्थान पर ७ दिन की, अर्थात् ५५ दिन अथवा दो मास की मुहलत।

३ सेना के दस्तों के अधिकारी।

४ अक़्ता के दीवान।

५ नौबतियों में से था।

सुल्तान ने दोनों को अपने समक्ष बुलवाया और उनके विषय में पूछताछ करने लगा। उन्होंने अपनी बात को गुप्त रखना चाहा। जब शहंशाह ने उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने पर ज़ोर दिया तथा उनको प्रोत्साहन देते हुये पूछा, "तुम लोग क्या वार्ता कर रहे थे?" तो जिस दास का घोड़ा प्रस्तुत न हुआ था, उसने अपने हृदय की बात इस प्रकार कही, "कल दीवाने अर्ज़ की पंजिकायें बन्द हो जायँगी। मैंने अभी घोड़ा प्रस्तुत नहीं किया है। हम लोग यही वार्ता कर रहे थे।" सुल्तान ने उससे कहा, "जाकर दीवान के नवीसिन्दों[1] को समझा लो।" उस दास ने कहा "दुःख तो यही है कि व्यय करने को कुछ नहीं।" सुल्तान ने प्रश्न किया, "कितना व्यय चाहिये जिससे तुझे सन्तोष प्राप्त हो सके?" उसने उत्तर दिया कि "यदि एक सोने का तन्का हो तो घोड़े की इस्लाह हो सकती है[2]।" फ़ीरोज़ शाह ने मलिक नेक ख्वाह खरीतादार[3] से उस दास को एक सोने का तन्का दिला दिया और उसे इस दुःख से मुक्त करा दिया। जब उस दास को वह सोने का तन्का मिल गया तो वह दीवाने अर्ज़ में पहुँचा। उस सोने के तन्के को नवीसिन्दों को देकर घोड़े की इस्लाह करा ली। जब वह लौटा तो सुल्तान ने उससे पूछा, "तेरा उद्देश्य पूरा हो गया?" उस दास ने भूमि पर सिर रख कर कहा कि "संसार के स्वामी की कृपा से दास का कार्य हो गया।" इस पर सुल्तान ने कहा, "अलहम्दो लिल्लाह (उस ईश्वर की प्रशंसा जिसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं)।" इस बात के लिखने का उद्देश्य यह दिखाना है कि शासन प्रबन्ध में इस प्रकार कौन कर सकता है।

अध्याय ८

एमादुलमुल्क का सैनिकों की दशा के विषय में सुल्तान फ़ीरोज़ के समक्ष विवरण तथा यथोचित उत्तर पाना।

(३०२) कहा जाता है कि एक बार मलिक इसहाक़ एमादुलमुल्क ने फ़ीरोज़ शाह के समक्ष जाकर निवेदन किया, "यदि आदेश हो तो सेना के कुछ लोग जो वृद्ध हो चुके हैं और सवारी के साथ नहीं जा सकते उनके स्थान पर बलवान युवकों को स्थायी (रूप से नियुक्त) किया जाय।" उस समय मलिक एमादुलमुल्क वृद्ध हो गया था। उसका पुत्र मलिक इसहाक़ अपने पिता के स्थान पर दीवाने अर्ज़ का कार्य करता था। जब मलिक इसहाक़ ने सुल्तान से यह बात कही तो सुल्तान फ़ीरोज़ ने उत्तर दिया, "हे इसहाक़! तू मेरे समक्ष क्या अच्छी बात लाया है? जब कोई वृद्ध हो जाय तो उसे पृथक् कर दिया जाय और उसके स्थान पर उसके पुत्रों अथवा अन्य लोगों को रख लिया जाय। दोनों दशाओं में उन वृद्धों की दशा शोचनीय हो जाती है। तेरा पिता बशीरा भी वृद्ध हो गया है। सर्वप्रथम अपने इस पिता को कार्य तथा जीविका से पृथक् करदे, फिर मैं अपने राज्य के वृद्धों को भी पृथक् कर दूँगा।"

(३०३) मलिक इसहाक़ यह सुनकर कुछ न बोल सका। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने कहा, कि "यदि दीन वृद्धों को जो सर्वदा दीन रहते हैं पृथक् कर दूं और उनके स्थान पर उनके पुत्रों अथवा अन्य लोगों को नियुक्त कर दूं तो उन बेचारे वृद्धों का विनाश हो जायगा। वृद्धावस्था में वे बड़ी दीन दशा को प्राप्त हो जायेंगे। इसी कारण उन वृद्धों में कोई परिवर्तन

१ कारणिक।
२ घोड़े के विषय में कोई पूछताछ न होगी।
३ पुस्तक में मलिक तन्कादार है। एक अन्य पोथी में खरीतादार है और यही उचित है। खरीतादार का तात्पर्य खज़ानची से है।

नहीं किया जाता। यह ऐसा समय है कि पुत्र पिता से पृथक् हो जाना चाहता है। वृद्ध अपनी वृद्धावस्था के कारण दुखी रहते हैं। यदि उनकी जीविका लेकर उनके पुत्रों को देदी जाय और पुत्र पिता से पृथक् हो जायँ तो बेचारे वृद्ध अपमानित हो जायँगे और वृद्धों का हृदय टूट जायगा। तू जाकर यह फ़रमान पहुँचा दे कि वृद्धों के स्थान पर उनके पुत्र उनके प्रतिनिधि के रूप में सवारी के समय आया करें। जिसके पुत्र न हो, उसका जामाता आये। जिसके जामाता न हो वह अपने दास को भेज दे जिससे वृद्ध अपने घरों में सुख से रहें और युवक शाही सवारी के साथ रहें।.........हे इसहाक़! इस प्रकार की बात न करनी चाहिये। ईश्वर वृद्धावस्था के कारण अपने दासों को जीविका से वंचित नहीं करता। मैं उसका एक दास होकर उन्हें किस प्रकार जीविका से वंचित कर सकता हूँ।".........

(३०४) मलिक इसहाक़ ने जब यह बात सुल्तान द्वारा सुनी और इस विषय में दीवानों में फ़रमान भेज दिये तो सभी लोग उसके लिये शुभ कामनायें करने लगे।.........

अध्याय ६

भारी मीनार (लाट) के लाने का उल्लेख।

(३०५) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ जब थट्टा के आक्रमण के उपरान्त देहली लौटा तो वह अधिकांश संसार के बादशाहों के समान देहली के आसपास सवार होकर जाता तथा हरबियों[1] से युद्ध करता था। देहली के आसपास दो भारी मीनार (लाट) थे। एक मीनार (लाट) सालोरा तथा ख़िज़्राबाद शिक़ में पर्वत के आंचल में तवेरा ग्राम की हद में था। दूसरा मीनार (लाट) मेरठ क़स्बे के पास था। ये मीनार पाँडुवों के समय से इसी स्थान पर थे।...............

सुल्तान बड़े परिश्रम से इन मीनारों को लाया। यह बात देहली के किसी अन्य सुल्तान को प्राप्त न हो सकी।

उसने एक को कूश्के फ़ीरोज़ाबाद में जुमा मस्जिद के निकट रखा और उसका नाम मिनारये ज़र्री[2] रखा। दूसरे को कूश्के शिकार में बड़े परिश्रम तथा योग्यता से लाया।

(३०६) मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि ये भारी मीनार (लाट) दुष्ट भीम की लाठी थी। वह बड़े लम्बे डील डौल का था और बड़ा ही बलवान था। काफ़िरों के इतिहास में लिखा है कि दुष्ट भीम नित्य हज़ार मन भोजन करता था। उसके समय में कोई भी उसके बराबर बलवान न था। यदि वह हाथी को भाले में छेद कर फेंक देता तो वह पूर्व से पश्चिम में गिर पड़ता। उन दिनों में समस्त हिन्द में काफ़िर निवास करते थे और परस्पर मार काट किया करते थे। दुष्ट भीम के पाँच भाई थे। दुष्ट भीम सबसे छोटा था और अधिकांश अपने दुष्ट भाइयों के मवेशी चराया करता था और यह दोनों मीनार अपने हाथ में लाठी के स्थान पर रखता था और इन्हीं से अपने मवेशी हंकाता था। उन दिनों में मवेशी भी मनुष्यों के समान बहुत बड़े डील डौल के होते थे।

संक्षेप में इनका अधिकतर निवास देहली में रहा करता था। दुष्ट भीम अपनी मृत्यु के उपरान्त इन दोनों मीनारों को दोनों स्थानों पर स्मृति चिह्न के रूप में छोड़ गया।......

१ मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जातियों के लोग जो ज़िम्मी बनना स्वीकार न करते थे और जिनका युद्ध मुसलमानों से हुआ करता था।

२ सुनहरी मीनार।

(३०८) जब सुल्तान फ़ीरोज़ दोनों मीनारों के स्थान पर पहुँचा तो उसने दोनों को बड़ा ही विचित्र पाया। उसने सोचा कि इन्हें प्रयत्न करके देहली पहुँचा देना चाहिये। उसने बड़ा परिश्रम करके इन मीनारों (लाटों) को लाकर शहर फ़ीरोज़ाबाद तथा कुश्के शिकार में रखा।

मिनारये ज़र्री का उस स्थान से जहाँ वह था लाया जाना।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने सालोरा तथा ख़िज्राबाद की ओर प्रस्थान किया। (ख़िज्राबाद देहली नगर से ९० कोस है) तो पर्वत के आँचल की ओर नवेरा ग्राम में उसने भारी मीनार (लाट) देखे।.........बड़े सोच विचार के उपरान्त उसने उन लाटों के लाने (३०९) का आदेश दिया।

लाट के निकट दोआब तथा दोआब के बाहर जितने क़स्बे तथा ग्राम थे, सभी के निवासी एकत्र हुए। सेना वाले, स्वतन्त्र तथा दास, अश्वारोही एवं पदाति इकट्ठा हुये। विभिन्न प्रकार के सामान तथा यन्त्र एकत्र किये गये। सेंभल के वृक्ष की रुई के गट्ठे लाये गये ताकि लाट को सहारा दिया जा सके और जब लाट नीवँ खोदते समय टेढ़ी हो और भूमि पर गिरे तो भारी होने के कारण टूट न जाय।

जब लाट की नीवँ खोदी गई तो वह झुक कर उन सहारा देने वाले गट्ठों पर गिर पड़ी। तत्पश्चात् धीरे-धीरे एक एक गट्ठा लाट के नीचे से निकाला गया। कुछ दिन उपरान्त ईश्वर की कृपा तथा बादशाह के भाग्य से वह समतल भूमि पर लेट गया। लाट की जड़ में एक बहुत बड़ा चतुष्कोण मिला जो लाट के नीचे एक घर के स्थान पर था। उसे भी बाहर निकाला गया। वह लाट उस घेर के ऊपर थी।

लाट को ऊपर से नीचे तक भाले के डण्डों के टुकड़ों तथा कच्ची खाल से लपेटा गया जिससे उसे कोई हानि न पहुँचे। तत्पश्चात् गरदूं[1] तैयार कराई गई। उसमें ४२ पहिये थे। (३१०) प्रत्येक पहिये में रस्से बाँधे गये। कई हज़ार मनुष्यों ने एक साथ ज़ोर लगाया। अन्त में बड़े परिश्रम तथा मेहनत के उपरान्त उसे गाड़ी पर चढ़ाया। गाड़ी के प्रत्येक पहिये में दस दस मन के रस्से बाँधे गये। प्रत्येक रस्से को दो दो सौ आदमियों ने खींचा और पूरी शक्ति से ज़ोर लगाया। इसी प्रकार समस्त ४२ पहियों में रस्से बाँधे गये और कई हज़ार मनुष्यों ने एक साथ ज़ोर लगाया। तत्पश्चात् वह गरदूं लाट को लेकर चला।

क्योंकि यमुना तट नवेरा ग्राम से निकट है अतः सुल्तान फ़ीरोज़ शाह स्वयं साथ-साथ चल कर लाट को यमुना तट पर लाया। यमुना तट पर समस्त नौकायें एकत्र कराईं। यमुना में बहुत लम्बी चौड़ी नौकायें होती हैं। कुछ नौकाओं में ५००० मन अनाज आ जाता है और कुछ में ७००० मन। जो छोटी होती हैं उनमें २००० मन अनाज आ जाता है। इस प्रकार की नौकायें एकत्र की गईं। तत्पश्चात् लोग लाट को बड़ी युक्ति से नौकाओं में डाल कर यमुना नदी के बीच में करके शहर फ़ीरोज़ाबाद में ले गये और बड़ी युक्ति तथा चतुराई से कुश्के फ़ीरोज़ाबाद में पहुँचाया तथा लाट को खड़ा करने के लिए इमारत बनने लगी।

उस समय इस इतिहासकार की अवस्था १२ वर्ष की थी। जब लाट फ़ीरोज़ाबाद के दरबार में पहुँच गई तो जामा मस्जिद के निकट इमारत बनने लगी। वह इमारत कुशल तथा (३११) योग्य कारीगरों ने घुरसंग पत्थर के चूने का गारा देकर बनाई। एक रद्दे के उपरान्त दूसरे रद्दे का बनना आरम्भ होता था। जब लाट प्रत्येक रद्दे से ऊपर की ओर चली गई

१ गाड़ी।

तब लाट को खड़ा करने के लिए दूसरी युक्ति की गई। दस दस मन के रस्से लाये गये। प्रत्येक छ: रद्दे के नीचे लकड़ी की घिरनियाँ लगी थीं। रस्से का एक सिरा लाट के सिरे पर बाँधा गया। दूसरा सिरा घिरनी में फँसा दिया गया। प्रत्येक घिरनी पर उसे कई हज़ार मनुष्य कस कर खींचते थे और एक साथ ज़ोर लगाकर घिरनी को घुमाते थे। जब बहुत ज़ोर लगाया जाता तो आधा गज़ लाट ऊपर आ जाती।

जब लाट आधा गज़ उठ गई तो लाट के बग़ल में सहारे के लिये बड़े-बड़े लट्ठे तथा सेंभल के वृक्ष के गट्ठे लगाये गये जिससे पुनः लाट इमारत पर न गिर पड़े। इसी प्रकार कुछ दिन के ज़ोर लगाने तथा परिश्रम करने से ईश्वर की कृपा से फ़ीरोज़ शाह की इच्छानुसार लाट खड़ी हो गई। लाट के चारों ओर नीचे से ऊपर तक असंख्य लकड़ी के लट्ठे लगाये गये जिससे लाट को सहारा मिल सके। इस प्रकार लकड़ी का क़ुब्बा तैयार हो गया। उन लट्ठों को लोहे से जड़ दिया गया जिससे लाट किसी ओर हिल न सके। इस प्रकार लाट को बाण के समान सीधा खड़ा कर दिया गया और यह किसी ओर हिल न सकती थी। वह चतुष्कोण (३१२) पत्थर लाट खड़ा करने के समय रख दिया गया।

जब लाट खड़ी हो गई तो लाट के ऊपर भी (उसके सिरे की गोलाई पर) कुछ काले तथा सफ़ेद पत्थर के घेरे लगा दिये गये। उन काले तथा सफ़ेद पत्थरों के ऊपर ताँबे का, सोने का मुलम्मा किया हुआ, क़ुब्बा जिसे हिन्दवी में कलश कहते हैं लगाया गया। लाट की ऊँचाई ३२ गज़ है। ८ गज़ (भूमि) में है तथा २४ गज़ भूमि के ऊपर है। इस बात का कोई पता नहीं कि नवेरा ग्राम की भूमि में इसे किसने खड़ा किया था। हिन्दवी में कुछ प्रसिद्ध पंक्तियाँ लाट के नीचे खुदी थीं। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने बहुत से जुन्नारदारों (ब्राह्मणों) तथा स्योड़ों[1] को बुलवाया। कोई भी उसे न पढ़ सका। कुछ लोगों का मत है कि कुछ काफ़िरों ने वह हिन्दवी पढ़ी थी। उसमें लिखा था कि इस लाट को कोई भी किसी शक्ति से इस स्थान से नहीं हटा सकता, न मुसलमान सुल्तान और न अहंकारी राय। केवल अन्तिम काल में एक योग्य बादशाह का जन्म होगा, जिसका नाम सुल्तान फ़ीरोज़ होगा, वह इस लाट को इस स्थान से ले जायेगा।.........

दूसरी लाट का हाल जो कूश्क शिकार में रखी गयी।

(३१३) वह लाट दोआब में मेरठ क़स्बे के निकट थी। कूश्के शिकार की लाट मिनारयेज़रीं से कुछ छोटी थी। यह लाट भी सुल्तान अनेक युक्तियों तथा परिश्रम से लाया और उसे उसने कूश्के शिकार में पर्वत पर लगवाया। उस दिन सभी साधारण तथा विशेष व्यक्तियों के लिये सुल्तान के आदेशानुसार आम जश्न हुआ। सभी लोग निश्चिन्त थे। असंख्य शर्बत के मटके कूश्के शिकार में भर कर रक्खे गये। सभी आने जाने वाले उसमें से शर्बत पीते थे। जो कोई लीला देखने आता वह शर्बत पीकर लौटता था। किसी के लिये कोई रोक टोक न थी।

जब लाट खड़ी होगई और कूश्क तैयार होगया तो उस स्थान पर बहुत बड़ा नगर बस गया। सभी ख़ानों तथा मलिकों ने वहाँ अपने-अपने सुन्दर भवन बनवा लिये। प्रत्येक (३१४) सुल्तान ने कोई न कोई ऐसे स्मारक छोड़े हैं जिनसे उनकी स्मृति चिरस्थायी रहती है। सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ने देहली की जुमा मस्जिद में एक भव्य मीनार (लाट) का निर्माण कराया जिसके विषय में सभी को ज्ञात है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह जो इन लाटों को लाया तो इसे संसार की एक अद्भुत बात समझनी चाहिये। जब अमीर तिमूर ख़ुरासान

१ जैन धर्म के पंडित।

(३१५) से हिन्दुस्तान पहुँचा तो इसने दन दोनों लाटों को देख कर कहा, 'मैं इतने देशों का भ्रमण कर चुका हूँ तथा उन्हें अपने अधिकार में कर चुका हूँ किन्तु मैंने इस प्रकार का सुन्दर स्मृति चिह्न कहीं नहीं देखा।' सुल्तान फ़ीरोज़ ने इस लाट का आद्योपांत हाल उपर्युक्त लाटों के नीचे खुदवा दिया था जिससे समय व्यतीत हो जाने के उपरान्त जब लोग आकर इसे देखें तो समझें कि यह कार्य मनुष्य के बस का नहीं।

अध्याय १०

फ़ीरोज़ शाह के शिकारों का हाल।

जब सुल्तान ने आक्रमण करना बन्द कर दिया तो उसके हृदय में यह विचार आया कि सुल्तानों तथा धर्म के इमामों (नेताओं) की सवारी से संसार वालों को आराम मिलता है और बादशाह राजकाज के अतिरिक्त, जोकि वास्तविक उद्देश्य है, सवार होकर जाना उचित न (३१६) समझते थे[१]। उन्होंने भागने वाले षड्यंत्रकारियों के पीछे सवार होकर जाना[२] मना किया है। आवश्यकतानुसार शिकार खेलने तथा उसके साथ-साथ हरबियों[३] से युद्ध करने का नियम बनाया है।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को अल्पावस्था से शिकार खेलने में बड़ी रुचि थी। उसके राज्यकाल में शिकार राज्य का एक स्तम्भ बन गया था और बहुत खेला जाता था। सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह इस विषय में कहा करता था कि "मलिक नायब अमीर हाजिब[४] बुद्धिमान तथा समझदार व्यक्ति है किन्तु खेद है कि उसे शिकार से बड़ी रुचि है। व्यर्थ में शिकार के लिये इतना प्रयत्न किया करता है। गौरैये के पीछे राज्य नष्ट करता है।" सुल्तान मुहम्मद को यह ज्ञात न था कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह देहली के बादशाहों की मुहर बनेगा[५] और उसके शिकार से अनेक मुसलमानों को लाभ होगा, इसलिये कि जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शिकारगाह में शिकार खेलता और शिकार का घेरा डाल कर अत्यधिक प्रसन्न रहता तो उस समय जो कोई जो प्रार्थना भी करता वह स्वीकार हो जाती।

(३१७) सुल्तान ने अपने राज्यकाल में शिकार खेलने का बड़ा प्रयत्न किया था। उसने हर प्रकार के अत्यधिक शिकार किये। उसने असंख्य चीते, सियाहगोश[६] कुत्ते एकत्र किये। उसने बहुत से शिकारी शेर भी जमा किये थे। बाज़, बहरी, तुरमती, शाहीन, सीमतन[७] तथा अन्य इसी प्रकार के पक्षी इतनी बड़ी संख्या में इकट्ठा किये कि मनुष्य के लिए उनके विषय में सोचना तथा समझना भी सरल न था। प्रत्येक जानवर की देख भाल के लिए दो-दो, तीन-तीन दास नियुक्त थे। इन सब जानवरों के रक्षक घोड़े पर सवार होकर यात्रा करते थे।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शिकार की सवारी के लिए निकलता तो शिकार के मरातिब[८]

---

१ आक्रमण करना उचित न समझते थे।
२ आक्रमण करना।
३ वे लोग जिन्होंने इस्लामी राज्य की अधीनता स्वीकार न की हो।
४ सुल्तान फ़ीरोज़।
५ देहली के सुल्तानों के मध्य में मुख्य स्थान प्राप्त करेगा।
६ एक प्रकार का चीता जिससे मृग का शिकार किया जाता था।
७ पक्षियों का शिकार करने वाली विभिन्न प्रकार की चिड़ियाँ।
८ शाही विशेष चिह्न बाजे इत्यादि।

के ४५ निशान साथ जाते। फ़र्राशख़ाने में से एक दहलीज़, एक बारगाह, एक ख़्वाबगाह, एक बड़ा सफ़ेद गुम्बद, जोकि सुल्तान का एक विशेष आविष्कार था, साथ जाते थे। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह यात्रा करता तो मरातिब के आगे बढ़ जाता था और सेना लेकर समस्त ख़ानों, मलिकों तथा शाहज़ादों के साथ जाता था। मोर के पंख के दो भाले जोकि विशेष कर (३१८) सुल्तान तुग़लुक़ की ईजाद थे शहंशाह की ख़ास सेना के दायें तथा बायें चलते थे उन दोनों भालों के नीचे दाईं ओर हिंस्रजन्तु होते थे। बाईं ओर पक्षियों का शिकार करने वाले पक्षी होते थे।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पास असंख्य घोड़े थे। उन समस्त घोड़ों को पाँच पायगाह (अश्वशाला) में बाँधा जाता था, जिन्हें पाँच महल कहते थे। इनमें से एक पायगाह शिकरा ख़ाना थी। १२०० घोड़े शिकरों से सम्बन्धित थे। उन दिनों मलिक देलान अमीर शिकार[1] था। शिकरेख़ाने के बाज़ी देहान तथा फौज़दार[2] पृथक् थे। शिकरेख़ाने का प्रत्येक अधिकारी एक बहुत बड़ा अमीर होता था। प्रत्येक शिकरों के पालन पोषण का विशेष प्रयत्न किया करता था। क्योंकि सुल्तान को इससे बड़ी रुचि थी अतः वह बड़ा प्रयत्न करता था। उसका शेष जीवन-काल इसी में व्यतीत हुआ।

वह सेना में शिकार के लिए परह[3] तैयार कराने का बड़ा प्रयत्न किया करता था। जिस प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शिकारगाह में परह तैयार कराता था, उस प्रकार के परह भूत-पूर्व सुल्तानों में से बहुत कम लोग तैयार कराते होंगे। यदि पिछले सुल्तानों में से किसी को परह तैयार कराने की इच्छा होती थी तो वह तुरन्त परह तैयार करा लेता था। तत्पश्चात् उसी समय परह तोड़ डाला जाता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सात-सात आठ-आठ (३१९) दिन परह स्थापित रखता था और नित्य परह के घेरे में शिकार खेलता था।.........

गोरख़र का परह

गोरख़र[4] जंगलों में होते हैं। वे दीबालपुर तथा सरसुती के बीच में रहते हैं। उस स्थान पर अधिकांशतः जल का अभाव होता है। कई कोस के मध्य में उजाड़ स्थान होता है। यदि १०० गज़ भूमि भी खोदी जाय तो भी जल देखने को नहीं मिलता। यदि ग्रीष्म ऋतु में कोई यात्री मार्ग भूल जाय तो वह जल न मिलने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जायगा, इसलिये कि पड़ाव के अतिरिक्त किसी स्थान पर भी जल नहीं मिलता। गोरख़र ऐसे स्थानों पर रहता है जहाँ जल नहीं मिलता। वह ऐसे स्थान पर विश्राम करता है जिसके आसपास ८० कोस तक जल नहीं होता और उजाड़ स्थान होता है। जब उन्हें प्यास लगती है तो वे ८० कोस तक चले जाते हैं और जल के पास पहुँच जाते हैं तथा जल पीते हैं। तत्पश्चात् वे पुनः अपने स्थान पर लौट जाते हैं।

गोरख़र का शिकार ग्रीष्म ऋतु के अतिरिक्त किसी अन्य समय में नहीं हो सकता, इसलिये कि ग्रीष्म ऋतु में गोरख़र एक स्थान पर एकत्र होते हैं। शीत तथा वर्षा ऋतु में (३२०) वे छिन्न भिन्न हो जाते हैं। जब सुल्तान की इच्छा गोरख़र का शिकार करने की होती थी, तो वह बुनगाह[5] सरसुती तथा अबुहर के मध्य में रखता था और स्वयं गोरख़र के शिकार का प्रयत्न करता था। बुनगाह से सवार होते समय वह केवल बहुत बड़े बड़े

१ शिकार का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी।

२ इनके विषय में कोई ज्ञान नहीं। सम्भवतः शिकरे का प्रबन्ध करने वाले अधिकारी।

३ शिकार के लिये एक प्रकार का घेरा।

४ जंगली गधा।

५ शाही शिविर।

सवारों को साथ चलने का आदेश देता था। दुर्बल सवारों के लिये वह बुनगाह ही में रहने का आदेश दे देता था। उन्हें अपने तथा अपने घोड़ों के लिये तीन दिन का जल साथ ले लेने का आदेश होता था। कुछ ख़ान तथा मलिक ऊँटों पर जल लदवा लेते थे। कुछ लोग धीवरों की ग्रीवाओं पर तथा कुछ लोग पशुओं की पीठों पर जल साथ ले लेते थे।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अस्र[१] की नमाज़ के समय शिकार गाह की ओर प्रस्थान करता तथा शीघ्रातिशीघ्र समस्त रात्रि यात्रा करता रहता और दूसरे दिन ज़ुहर[२] की नमाज़ के समय गोरख़रों के विश्राम स्थल पर पहुँच जाता। वहाँ पहुँच कर परह तैयार करवाता और १५ कोस तक परह का घेरा डलवा देता। शनैः शनैः घेरे को कम करके ४ कोस का कर देता। परह के भीतर अत्यधिक गोरख़र आ जाते। उस रात्रि में वह वहीं टिका रहता। दूसरे दिन गोरख़र का शिकार खेलने के लिये सवार होता। प्रातःकाल से रात्रि तक गोरख़रों का शिकार होता। संध्या की नमाज़ के समय शहंशाह गोरख़र का परह तोड़कर बुनगाह की ओर लौट जाता और रात भर अपने साथियों के साथ यात्रा करता हुआ दिन में (३२१) दो पहर चल कर, तथा तीसरे दिन दो पहर चल कर बुनगाह में पहुँच जाता। संक्षेप में, सुल्तान ईश्वर की कृपा से ७० कोस यात्रा करके बुनगाह को लौटता था।.........

हिरन, गोर[३] तथा नील गाय आदि के शिकार के परहों का हाल।

इस प्रकार के शिकार अधिकांशतः बदायूं तथा आंवले के पास होते हैं। इस प्रकार के जानवर ऐसे स्थानों पर रहते हैं जो उजाड़ हों और जहाँ जल तथा घास हो। इस प्रकार के उजाड़ स्थान देहली राज्य में कहीं न थे, इसलिये कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने प्रजा पालन तथा राज्य की उन्नति का विशेष प्रयत्न किया था। केवल इस स्थान को शिकार हेतु उसी दशा में छोड़ दिया गया था, अन्यथा वहाँ भी सुल्तान के प्रयत्न के फलस्वरूप आबादी हो जाती।

सुल्तान प्रत्येक वर्ष फ़ीरोज़ाबाद से सवार होकर उस ओर शिकार खेलने जाता और अगणित जानवरों का शिकार करता था। यह इतिहासकार शम्स सिराज अफ़ीफ़ साथ रहा करता (३२२) था। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह निरन्तर कूच करके उस जंगल में पहुँचता तो शिकार का परह तैयार करने के पूर्व सुल्तान एक दिन यह आदेश देता था कि सेना वाले उस रात्रि में तवेले के पास उतर पड़ें। उस रात्रि में दुहलपास[४] नहीं बजाया जाता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह उस दिन अपने ठहरने के स्थान से प्रस्थान करता। समस्त सेना अश्वारोही तथा पदाति एवं वीर दास उसके साथ होते थे। बुनगाह भी बादशाह के साथ होता था। उस दिन सुल्तान एक ऊँचे स्थान पर ठहरता था। उसके नीचे अश्वारोहियों को परह में प्रविष्ट होने की आज्ञा प्रदान की जाती थी। सुल्तान के आदेशानुसार दो शिकार के निशाने[५] लाये जाते। एक निशाना दाईं ओर लाया जाता और दूसरा बाईं ओर। एक ओर मलिक नायब बारबक खड़े होकर सवारों को परह की ओर जाने का आदेश देता। दूसरी ओर मलिक एमादुलमुल्क उन शिकारों के निशान के पीछे सवारों को जाने का आदेश देता। प्रत्येक ख़ेल पृथक्-पृथक् आज्ञा पाता। जब उस ख़ेल के यार[६] परह में जाने लगते तो सर्वप्रथम उस ख़ेल के नेज़े को भेजा जाता। तत्पश्चात् उस नेज़े के पीछे समस्त ख़ेल के सवार जाते थे। कुछ लोग ईर्ष्या

१ तीसरे पहर के पश्चात् की नमाज़।
२ मध्याह्नोत्तर की नमाज़।
३ एक प्रकार का जंगली गधा जो सम्भवतः उपर्युक्त जंगली गधों से भिन्न प्रकार का होता होगा।
४ समय की सूचना का ढोल।
५ पताकायें।
६ सैनिक।

के कारण सुल्तान से कहते कि 'सेना के अर्ज़ का क्रम यही है कि प्रत्येक ख़ेलदार के साथ (३२३) दमरेज़ (सवार) जाता है[1]।' उस बादशाह को उनकी बात अच्छी न लगती और वह उसकी ओर ध्यान न देता।

जब दोनों निशान दस कोस पहुँच जाते तो दमरेज़ सवार उपर्युक्त निशानों के साथ आज्ञा पाते। जब समस्त सवार चले जाते तो ख़ास दास परह में प्रविष्ट होने की आज्ञा प्राप्त करते। १०० दासों के बीच में एक झंडा होता था। वे भी सब चले जाते। तत्पश्चात् शिकराखाने के पायगाह[2] के घोड़े छोड़े जाते। कारख़ाने के लोग भी परह में जाने की आज्ञा पाते। तत्पश्चात् हाथियों को परह में छोड़ा जाता। यदि परह का घेरा बड़ा होता तो हाथियों के पूर्व बुनगाह[3] के सवारों को आज्ञा प्रदान की जाती; फिर हाथियों को।

जब दोनों निशान निश्चित समय पर एकत्र हो जाते तो उस स्थान पर आग जलाई जाती जिससे धुआँ निकलने लगे और लोगों को ज्ञात हो जाय कि परह मिल गया है। वे समस्त सवार, जो दमरेज़ के साथ जाते थे, एक दूसरे के समक्ष अपनी लगाम फेर कर परह के भीतर पहुँचते थे और सुल्तान का यह फ़रमान पहुँचाते थे कि सवार धीरे-धीरे परह के घेरे में घुसें और दूसरा फ़रमान यह होता था कि किसी ओर से शिकार निकलने न पाये।.........

(३२४) परह का घेरा जितना कम होता जाता था, परह के सवार एक पंक्ति से दो और दो से तीन में होते जाते थे। ऐसा भी होता कि परह के घेरे के सवार एक दूसरे के आमने सामने देखे जाते। उस दिन से परह का घेरा तीन चार कोस के मध्य में रखा जाता। जब दिन ख़ुशी-ख़ुशी समाप्त हो जाता तो उस समय आदेश होता कि जो परह के घेरे पर जिस स्थान पर खड़ा है, वह वहीं उतर पड़े। परह के समय किसी के स्थान का कोई ध्यान न रखा जाता था। जो परह के घेरे पर जिस स्थान पर खड़ा होता वहीं उतर पड़ता।

इसी प्रकार ख़ेलदारों के सरायचे[4] एक दूसरे से मिला कर लगाये जाते थे। इस प्रकार हो जाता कि परह के समस्त घेरे में एक सरायचे का घेरा बन जाता, इसलिये कि एक ख़ेलदार का सरायचा दूसरे ख़ेलदार के सरायचे से मिला होता था। सरायचे के घेरे के समक्ष कटघरा बाँधा जाता था और उसका एक घेरा हो जाता था। सरायचों के पीछे ख़ेलदारों के बुनगाह उतारे जाते थे। बाज़ार वाले भी अपने समूह वालों के साथ उतरते थे।

(३२५) जब इस प्रकार परह का घेरा दृढ़ हो जाता तो परह के भीतर पूछताछ की जाती। यदि उसमें कोई सिंह अथवा बबर या भेड़िया होता तो सर्वप्रथम उसकी फ़ीरोज़ शाह हत्या करता। तत्पश्चात् अन्य प्रकार का शिकार होता। उन दिनों परह में दहलीज़ न लगाते थे। बारगाह, ख़्वाबगाह तथा सफ़ेद गुम्बद लगाते थे। सुल्तान प्रत्येक ख़ेलदार को आदेश दे देता था कि अपने मित्रों के साथ अपने-अपने अलंग[5] पर सावधान रहें, सरा (शाही शिविर) में उनके आने की आवश्यकता नहीं। समस्त ख़ेलदार यारों के साथ अपने अलंगों में तूणीर सामने रखे सावधान तथा जागते रहते थे। परह में एक घेरा तूणीर का बन जाता था।

जब परह इस प्रकार दृढ़ रहता और प्रत्येक प्रकार के शिकार परह में बन्दी हो जाते और उनकी संख्या सहस्रों से भी अधिक हो जाती तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह नित्य परह से

१ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
२ अश्वशाला।
३ शाही शिविर।
४ ख़ेमे।
५ जिस स्थान की वे रक्षा कर रहे हों।

सवार होकर जाता और ५००-६०० अश्वारोही, शाहज़ादे, ख़ान तथा मलिक साथ सवार होते थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह परह में प्रविष्ट होकर शिकार खेलता था। शिकार के पीछे स्वयं वाण चलाता। जिस ख़ेलदार के अलंग के सामने शिकार मारता उसे वह उसी ख़ेलदार को इनाम में दे देता था। इस प्रकार फ़ीरोज़ शाह ७-८ दिन तक शिकार खेलता रहता था। घोड़ा शिकार के पीछे दौड़ाता था। जब उसकी परह तुड़वाने तथा शेष शिकार को पकड़वाने की इच्छा होती तो उसके आदेशानुसार परह में एक अग्नि-वाण फेंका जाता था और ढोल तथा शहनाई बजाई जाती थी। सभी लोग घुस पड़ते थे और जो शिकार परह के भीतर होता उसे मार डालते।

(३२६) प्रत्येक मनुष्य कहार तथा किवानी जो शाही सेना में होता शिकार पकड़ने के लिये बढ़ता। प्रत्येक मनुष्य एक शिकार पकड़ लाता। परह के दिनों में शिकार का मांस इतना अधिक हो जाता था कि उससे गंदगी फैल जाती थी। कुछ लोग शिकार के मांस में ज़ीरा लगाकर सुखा लेते थे और शहर देहली ले आते थे। यदि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह जंगली भैंसों का शिकार करता, जो बहुत ही अधिक संख्या में थीं, तो उसके आदेशानुसार उनके लिये भी परह तैयार किया जाता। थोड़ी देर में भैंसों का परह तैयार हो जाता। जब सुल्तान शिकार खेल चुकता तो तत्काल परह तोड़ दिया जाता क्योंकि भैंसें अत्यधिक शक्ति के कारण देर तक परह में नहीं रह सकती थीं।

इस प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह प्रत्येक वर्ष, हर सवारी के समय इस प्रकार के तीन-चार परह करता था। तब वह बुनगाह सहित देहली की ओर लौट जाता।.........

सिंह तथा मछली के शिकार का हाल।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह समय-समय पर हर चीज़ का शिकार खेलता था। वह सर्वदा शिकार हेतु घोड़ा दौड़ाने का प्रयत्न किया करता था। सर्वदा शिकरा उड़ाने तथा शिकार (३२७) पकड़ने में तल्लीन रहता था। जब सुल्तान किसी स्थान पर बैठता था तो शिकरे को सिखाने के लिये उन पक्षियों के पीछे छोड़ा जाता जिनके थोड़े से पंख इस कार्य हेतु काट दिये जाते थे। यदि मार्ग में सवार होकर जाता होता तो भी शिकार के पीछे शिकरे उड़ाता। यदि कोई चौपाया उसके समक्ष आ जाता तो चीता अथवा सियाहगोश उसके पीछे छोड़ दिया जाता, अपितु १२००० बाहली (बहेलिये) शाही पताकाओं के साथ चलते थे। बहेलिये वे लोग होते हैं जो चौपायों पर मृग पकड़ने के जाल लेकर चलते हैं। जिस स्थान पर मृग पकड़े जा सकते हैं वहाँ वे जाल वाले अपना जाल फैला देते हैं। मृग जाल में फँस जाता है।

कुछ बहेलिये नर भैंसों पर वीर पहलवानों की भाँति सवार होकर लोहे के भाले अपने हाथों में लिये चलते थे। जब किसी जंगल में कोई सिंह फंस जाता तो बहेलिये अपने नर भैंसों को एकत्र कर देते थे। स्वयं उनकी पीठ पर खड़े हो जाते थे। भैंसे सिंह को देखकर अपनी सींघें एक दूसरे से मिला देते थे और उसी प्रकार घेरा बनाये हुये सिंहों पर आक्रमण कर देते थे और बहेलिये ऊपर से सिंह को भाले से छेद कर मार डालते थे। कभी-कभी सुल्तान आदेश देता कि बड़े-बड़े जालों को सिंह पर डाल दिया जाय। चारों ओर से हाथी उस जाल को दबाकर उसे कुचलते हुये बढ़ते थे और उस सिंह को जाल के नीचे बन्दी बना लेते थे। कभी-कभी फ़ीरोज़ शाह यह आदेश देता था कि हाथियों को सिंहों से भिड़ा दिया जाय। (३२८) जब हाथी सिंह से मल्ल युद्ध करने लगते तो सिंह हाथियों पर आक्रमण कर देता था। उस अवस्था में शहंशाह बड़ी वीरता से सिंह पर वाण चलाता। यहाँ तक कि कुछ सिंह दरबार के समक्ष दाईं तथा दाईं ओर बंधे रहते थे।.........

इसी प्रकार यदि किसी तालाब में मछली होती तो शहंशाह उन भारी-भारी जालों को, जो हथनियों पर लदे होते, तालाब में डाल देने का आदेश दे देता। बादशाह के आदेशानुसार जालों को डाल दिया जाता था और सब मछलियाँ पकड़ ली जाती थीं।.........इसी प्रकार शहंशाह ने लोहे के दो बहुत बड़े-बड़े देगदोले[1] तैयार करा रखे थे जिन में से प्रत्येक में १०-१० भेड़िये पकाये जा सकते थे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अन्य शिकार कितने पकाये जा सकते थे। दो लोहे के देगदान जिन में दस-दस पाये थे इन दोनों देगदोलों के लिये तैयार कराये थे। उन दोनों देगदोलों को तथा दोनों देगदानों को १२० कहार सुल्तान की सवारी के साथ ले जाते थे। वह जिस पड़ाव पर उतरता और शिकार का (३२९) अत्यधिक मांस एकत्र हो जाता तो उन दोनों देगदोलों में पकाया जाता था और समस्त लोगों को बाँटा जाता था। इसी प्रकार सुल्तान ने अपनी बुद्धि से जितनी बातें निकालीं वह सब अद्वितीय थीं।.........

अध्याय ११

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा निर्मित विभिन्न भवन।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह भवन निर्माण हेतु बड़ा प्रयत्न करता था। देहली के राजसिंहासन पर जितने भी बादशाह आरूढ़ हुये तथा जिन लोगों ने अन्य राज्यों को विजय किया उनमें से किसी ने भी भवन निर्माण के विषय में इतना प्रयत्न नहीं किया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को इस कार्य से बड़ी रुचि थी। उसने अपनी रुचि के कारण विभिन्न नमूनों की इमारतें (३३०) बनवाईं। उसने असंख्य नगर, कोट, कुश्क,[2] बाँध, मस्जिदें, मक़बरे बनवाये। शहर हिसार फ़ीरोज़ा तथा फ़तहाबाद का उल्लेख यह इतिहासकार पिछले अध्यायों में विस्तार से कर चुका है। इसी प्रकार उसने शहर फ़ीरोज़ाबाद, फ़ीरोज़ाबाद हारनी खेरा, तुग़लुक़ पुरे कासना, तुग़लुक़ पुरे मुलूक मक़ूत, जौनपुर आदि का निर्माण कराया। प्रत्येक स्थान तथा जगह पर दृढ़ कोट विश्राम हेतु बनवाये। सुन्दर कूश्कों में कूश्के फ़ीरोज़ाबाद, कूश्के नज़ूल, कूश्के महेन्दवारी, कूश्के शहर हिसार फ़ीरोज़ा, कूश्के फ़तहाबाद, कूश्के जौनपुर, कूश्के शिकार, कूश्के बन्द फ़तह ख़ाँ, कूश्के सालौरा तथा अन्य स्थानों के कूश्क बनवाये। बाँधों में बन्द फ़तह ख़ाँ, बन्द मालजा (जहाँ बादशाह ने ज़मज़म[3] जल डलवाया था), बन्द महिपाल पुर, बन्द शुक्र ख़ाँ, बन्द सालौरा, बन्द सहपना, बन्द वज़ीराबाद, आदि जैसे दृढ़ बाँध प्रत्येक स्थान पर बनवाये। आने जाने वालों के लिये ख़ानक़ाहें तथा सरायें बनवाईं।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने शहर देहली तथा फ़ीरोज़ाबाद में ईश्वर के भक्तों के आराम के लिये १२० ख़ानक़ाहें इस आशय से तैयार कराईं कि जब संसार के इधर (३३१) उधर के भागों से यात्री आयें तो प्रत्येक में तीन दिन तक अतिथि के रूप में रहें। इस प्रकार १२० ख़ानक़ाहों में ३६० दिन तक मेहमान रहें। प्रत्येक ख़ानक़ाह में सुल्तान ने सुन्नी मुतवल्ली[4] तथा पदाधिकारी रखे। ख़ानक़ाहों का व्यय ख़ज़ाने से नक़्द दिलवाता था।

जहाँ-जहाँ उसने इमारतें बनवाईं उन सब को पत्थर का बनवाया। लकड़ी का प्रयोग नाम मात्र को अपितु नहीं के बराबर किया जाता था। केवल द्वार के तख़्ते लकड़ी के

१ सम्भवतः डोली के समान कंधों पर ले जाने वाले देग।

२ राज प्रासाद।

३ मक्के के ज़मज़म नामक प्रसिद्ध कूप का जल जिसे मुसलमान बड़ा पवित्र समझते हैं।

४ रक्षक तथा प्रबन्धक।

लगाये जाते थे। उस समय मलिक ग़ाज़ी शहना मीर इमारत[1] था। वह इमारत बनवाने में बड़ा परिश्रम करता था। सुल्तान द्वारा उसे सोने का डंडा प्राप्त हुआ था। अब्दुल हक़ उर्फ़ जाहर सौंधार सुनहरी गदा रखता था।[2] शहंशाह ने इमारत के कारीगरों के प्रत्येक समूह पर कुशल शहने नियुक्त किये। इस प्रकार पत्थर तराशने वालों, लकड़ी तराशने वालों, लोहारों, बढ़इयों, आरा चलाने वालों, चूना पकाने वालों, राज आदि में से प्रत्येक क़ौम पर एक शहना नियुक्त किया। इस प्रकार का इमारतख़ाना किसी अन्य बादशाह के राज्यकाल में न था इसलिये कि इमारतख़ाने में लाखों व्यय होते थे अपितु अपार धन नष्ट होता था।

सुल्तान द्वारा धार्मिक सुल्तानों के मक़बरों का रोशन कराना तथा मशायख़ के रौज़ों का उज्ज्वल कराना—

(३३२) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने भूतपूर्व सुल्तानों के मक़बरों की पूर्ण रूपेण मरम्मत कराके उन्हें नया कर दिया, इसलिए कि बड़े-बड़े बादशाहों को अपने ऐश्वर्य तथा वैभव के कारण भूतपूर्व सुल्तानों की स्मृति ही कहाँ होती है जो वे उनके मक़बरों की खोज करें। इसी कारण बहुत से पिछले सुल्तानों के मक़बरे नष्ट भ्रष्ट हो चुके थे। उन स्थानों से सम्बन्धित असहाब व अरबाब[3] बड़े दुखी थे। राज्यव्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध की यह प्रथा है कि प्रत्येक बादशाह, जो सिंहासनारूढ़ होता है, इन लोगों के लिए गाँवों के प्रकार के इमलाक, मिल्के एहयाई के नाम से प्रदान कर दिया करता है[4]। इन ग्रामों की हासिलात (आय) अपने मक़बरे से असहाब व अरबाब के लिए इस आशय से सम्बन्धित कर देता है कि उनकी मृत्यु के उपरान्त मक़बरों तथा मदरसों में धर्म-परायणता होती रहे।

उस समय समस्त ग्राम नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे। उन स्थानों के असहाब तथा अरबाब के पास कुछ न रह गया था। प्रत्येक दरिद्रता के कारण निराश था। इस प्रकार सभी मक़-बरों पर अन्धकार छा गया था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने बड़े परिश्रम से सभी की मरम्मत कराई तथा उनका उद्धार कराया। इससे पूर्व जितने गाँव प्रत्येक मक़बरे से सम्बन्धित थे, और अब नष्ट हो चुके थे, तथा वहाँ की प्रजा का विनाश हो चुका था, उन्हें उसने पुनः आबाद (३३३) कराया। उन मक़बरों के असहाब तथा अरबाब को, जो छिन्न भिन्न हो चुके थे अपितु प्रत्येक इधर उधर भागा जाता था, सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने दैवी प्रेरणा से एकत्र किया। सुल्तानों तथा (इस्लाम) धर्म के नेताओं के मक़बरों को नया कराया। इसी प्रकार सुल्तान ने मशायख़[5] तथा आलिमों के मक़बरों का पूर्ण रूपेण जीर्णोद्धार कराया। मशायख तथा सुल्तानों के मक़बरों में चन्दन की लकड़ी के द्वार लगवाये और उन्हें नये सिरे से सजवाया।

उसके राज्यकाल में किसी समय भी इमारत का कार्य रुका न रहता था। जब किसी स्थान पर इमारत प्रारम्भ होने वाली होती तो सर्वप्रथम दीवाने विज़ारत द्वारा जिस चीज़ की भी वहाँ आवश्यकता होती उसका लेखा तैयार किया जाता। समस्त धन शाही ख़ज़ाने से इमारत के कर्मचारियों तथा पदाधिकारियों को सौंप दिया जाता। तत्पश्चात् इमारत का कार्य प्रारम्भ होता। इस प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ के ४० वर्षीय राज्यकाल में विभिन्न प्रकार की इमारतें बनती रहीं।

---

१ भवन निर्माण सम्बन्धी कार्यों की देख रेख करने वाला मुख्य अधिकारी।

२ सम्भवतः वह मलिक ग़ाज़ी के अधीन था। गुर्ज़ (गदा) के स्थान पर गज अथवा छड़ी उपयुक्त होगा।

३ देख रेख करने वाले धार्मिक व्यक्ति।

४ भूमि प्रदान कर देता है।

५ सूफ़ियों।

अध्याय १२

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा बेरोज़गार लोगों के समूह को प्रोत्साहन।

(३३४) कहा जाता है कि जब सुल्तान शिकार की सवारी से देहली आता तो कोतवाले ममालिक को, जो बड़ा ही प्रतापी तथा वीर था और लोगों में न्याय के लिए प्रसिद्ध था और सर्वदा कोतवाली के कर्त्तव्य-पालन के विषय में सतर्क रहता था, सुल्तान का फ़रमान प्राप्त होता कि शहर में जहाँ कहीं कोई योग्य व्यक्ति बेरोज़गार तथा परेशान मिले उसे राज सिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया जाय। प्रसिद्ध कोतवाल नगर के प्रत्येक मुहल्लादार को अपने सम्मुख बुलवाता और प्रत्येक के (मुहल्ले के) विषय में पूछताछ करता। मुहल्लादार उन समस्त प्रतिष्ठित लोगों को, जो दरिद्रता एवं दीनता के कारण किसी को मुख न दिखाते थे, कोतवाल के समक्ष प्रस्तुत करता था। कोतवाल उन लोगों के नाम तथा विवरण लिखवा कर उन्हें उचित अवसर पर राजसिंहासन के समक्ष ले जाता था। सुल्तान उनमें से प्रत्येक को उनके पूर्वजों के परिचय से पहिचान जाता था, और उन्हें किसी न किसी कार्य तथा व्यवसाय में लगा देता था।

(३३५) यदि कोई अहले क़लम[1] से सम्बन्धित होता था तो उसे कारख़ाने में दाख़िल कर दिया जाता। यदि कोई महत्वपूर्ण कारकुन होता तो वह ख़ाने जहाँ को सौंप दिया जाता। यदि कोई यह प्रार्थना करता कि उसे अमुक अमीर को सौंप दिया जाय तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह स्वयं अपने समक्ष उसे उसके सिपुर्द कर देता। यदि कोई यह प्रार्थना करता कि उसे अमुक अमीर के, जो अक़्तादार है, अधीन कर दिया जाय तो उस अक़्तादार के नाम फ़रमान लिखवा दिया जाता और वह उस अक़्ता को चला जाता। बहुत कम लोग बेकार रह गये थे। जहाँ कहीं भी इन बेकारों को किसी को सौंपा जाता, वहाँ उसकी जीविका का उत्तम प्रबन्ध हो जाता। इस प्रकार बहुत से लोगों को व्यवसाय प्राप्त हो गया।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह कहा करता था कि "महत्वपूर्ण कारकुन (कर्मचारी) बेरोज़गार हो जाने पर बड़ी शोचनीय दशा को प्राप्त हो जाते हैं और दरिद्रता के कारण अपना सिर नहीं उठा सकते। वे नित्य इसी बात की खोज में रहते हैं कि आज कौन पदच्युत हुआ और किस पर आज सुल्तान फ़ीरोज़ शाह रुष्ट हुआ, कौन बन्दी बनाया गया, जिससे यदि कोई (३३६) पदच्युत हो और दूसरे को उसका स्थान दिया जाय तो वे उसके लिये प्रयत्नशील हों।......मैं ने यह व्यर्थ की चिन्ता इन लोगों के हृदय से दूर करदी।"......

अध्याय १३

फ़ीरोज़ शाह के कारख़ानों की सामग्री का उल्लेख।

(३३७) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के ३६ कारख़ाने थे। वह कारख़ानों में सामग्री एकत्र करने का बड़ा प्रयत्न किया करता था। उसने प्रत्येक कारख़ाने को नाना प्रकार की उत्तम वस्तुयें तथा सामग्री से सम्पन्न बनाया था। प्रत्येक कारख़ाने में अगणित सामान एकत्र हो गया था। समस्त सामान सोने चाँदी का अथवा जड़ाऊ था। प्रत्येक वर्ष प्रत्येक कारख़ाने में अपार धन व्यय होता था। ३६ कारख़ानों में कुछ रातिबी[2] थे और कुछ ग़ैर रातिबी[3]।

१ विद्वान्।
२ निश्चित वेतन वाले।
३ अनिश्चित वेतन वाले।

पीलख़ाना[1], पायगाह[2], मतबख़[3], शराबख़ाना, शमाख़ाना[4], शुतुरख़ाना[5], सगख़ाना[6] आबदारख़ाना[7] तथा इसी प्रकार के अन्य रातिबी थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में प्रतिदिन इन रातिबी कारख़ानों में अपार धन व्यय होता था। रातिबी कारख़ाने का व्यय माल अस्बाब हाशिये[8] तथा अन्य लोगों के वेतन के अतिरिक्त एक लाख साठ हज़ार (चाँदी के) (३३८) तन्के मासिक होता था। ग़ैर रातिबी कारख़ानों उदाहरणार्थ जामदारख़ानों[9] अलमख़ानों[10], फ़र्राशख़ानों[11], रिकाबख़ानों[12], तथा इसी प्रकार के अन्य कारख़ानों में प्रत्येक वर्ष नये सामान की तैयारी का आदेश होता रहता था।

जामदारख़ाने में प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु में छः लाख का शीत ऋतु सम्बन्धी सामान का, बहार तथा ग्रीष्म ऋतु के सामान के अतिरिक्त, आदेश होता था। अलमख़ाने में प्रत्येक वर्ष ८० हज़ार तन्के का आदेश मरातिब की सामग्री के लिए होता था। इसमें हाशिये के शीत ऋतु के सामान तथा अलमख़ाने के लोगों का वेतन सम्मिलित नहीं। फ़र्राशख़ाने में दो लाख तन्के के फ़राशीना[13] का आदेश होता था। सुल्तान के राज्यकाल में इस प्रकार के आदेश दिये जाया करते थे।

प्रत्येक कारख़ाना बड़े-बड़े ख़ानों तथा प्रतिष्ठित मलिकों के अधीन होता था। जामदार ख़ाना मलिक अली तथा मलिक इस्माईल के अधीन था। वे लोग मैमना (दाईं ओर) के जानदार भी थे। पीलख़ाना मलिक शाहीन सुल्तानी के, शिकराख़ाना मलिक ख़िज़्र बहराम के, अलमख़ाना व पायगाहे ख़ास व रिकाबख़ाना मलिक मुहम्मद हाजी के, ज़र्रादख़ाना[14] व सिलाहख़ाना[15] मलिक मुबारक कबीर सिलाहदारे ख़ास तथा वकीलदर के अधीन था। तश्तदारख़ाना[16] मलिक बिलाल ख़ाँ व जवाहरख़ाना[17] सुल्तानुश्शर्क़ अर्थात् ख़्वाजये जहाँ सरवर सुल्तानी के अधीन था। इस प्रकार के बड़े-बड़े ख़ान तथा मलिक कारख़ाने के पदाधिकारी थे।

(३३९) शहंशाह स्वयं प्रत्येक कारख़ाने के लिए मुतसर्रिफ़ नियुक्त करता था। जान-दारख़ाने (जामदारख़ाने) का मुतसर्रिफ़ मलिक कमालुद्दीन तूरती ख़ाँ था जिसे सफ़ेद बन्द प्राप्त था। इसी प्रकार प्रत्येक कारख़ाने का तसर्रुफ़[18] समस्त प्रतिष्ठित अमीरों को प्राप्त

१ गजशाला
२ अश्वशाला
३ रसोई
४ दीपक का प्रबन्ध करने वाला कारख़ाना
५ ऊँटों के रखने का स्थान
६ कुत्तों के रखने का स्थान
७ जल के प्रबन्ध का स्थान
८ निम्न वर्ग के कर्मचारी
९ वस्त्रों से सम्बन्धित विभाग।
१० पताकाओं का विभाग।
११ फ़र्श इत्यादि का विभाग।
१२ घोड़े की ज़ीन आदि अथवा भोजन से सम्बन्धित विभाग।
१३ फ़र्श।
१४ अस्त्र शस्त्र का विभाग।
१५ अस्त्र शस्त्र का भण्डार। Arsenal.
१६ हाथ मुँह धुलाने के सामानों से सम्बन्धित विभाग।
१७ रत्नों का विभाग
१८ मुतसर्रिफ़ का पद।

था। उन दिनों में अलमखाने, रिकाबखाने तथा पीलखानये मैसरा (बाईं ओर का) के मुतसर्रिफ़ का पद राजसिंहासन द्वारा इस इतिहासकार के पिता तथा चाचा को प्राप्त था। इन लोगों की ओर से इन कारखानों में इतिहासकार कार्य करता था।

सुल्तान फ़ीरोज शाह कहा करता था कि सांसारिक राज्य में दो उत्तम मोती दो उत्कृष्ट गुणों सहित हैं। एक मोती, अक़्ताओं, परगनों तथा मामलों[१] का है। दूसरा मोती कारखानों से सम्बन्धित है। जिस प्रकार अक़्ताओं से लाखों का कर प्राप्त होता है उसी प्रकार कारखानों में लाखों एकत्र होता है। इसी कारण एक कारखाने का तसर्रुफ़[२] मुल्तान नगर के तसर्रुफ़ से कम नहीं। सुल्तान ने समस्त ३६ कारखानों में स्वयं मुतसर्रिफ़ नियुक्त किये थे। ख्वाजा अबुल हसन समस्त कारखानों के तसर्रुफ़ का अधिकारी था।[३] सुल्तान का जो कुछ आदेश होता उसके सम्बन्ध में सर्वप्रथम ख्वाजा अबुल हसन को फ़रमान प्राप्त होता। वह प्रत्येक कारखाने के मुतसर्रिफ़ों को आदेश देता था और तुरन्त उसका पालन हो जाता था। उन दिनों में दीवाने मजमूये कारखाना पृथक् था। कारखानों के हिसाब किताब की जाँच इसी दीवान में होता थी, यद्यपि कारखाने के मुतसर्रिफ़ दीवाने विज़ारत में भी अपना हिसाब किताब प्रस्तुत करते थे। जिस प्रकार दीवानों (विज़ारत) के अधिकारी अक़्ताओं के हिसाब किताब की जाँच करते थे उसी प्रकार कारखाने के भी हिसाब किताब की जाँच होती थी। प्रत्येक कारखाने में अगणित हाशिये[४] थे। फ़र्राशखाने, पीलखाने, अलमखाने तथा पायगाह में अत्यधिक हाशिये थे। इन्हें शीत ऋतु का सामान निरन्तर मिला (३४०) करता था।

सुल्तान फ़ीरोज शाह की पायगाह पाँच स्थानों पर थी। पायगाहे बुज़ुर्ग[५] सहरवान, सुल्तानपुर में, दूसरी क़िबला में, तथा तीसरी सुल्तान के दरबार में थी। उसे पायगाहे महले खास[६] कहते थे। चौथा स्थान शिकरा खानये खास की पायगाह और पाँचवां स्थान पायगाहे बारगीर दाराने बन्दगाने खास[७] था। इन पाँचों पायगाहों के अतिरिक्त कई हज़ार घोड़े देहली के आसपास चरते थे। उन्हें सेह पंज कहते थे।

नफ़र अर्थात् ऊँटों के कारखाने पृथक् थे। यह कारखाना मलिक दिलशाद के अधीन था। उसे उन दिनों में दिलशाद शहनये नफ़र[८] कहते थे। उसे सुल्तान अबूबक्र शाह ने अपने राज्यकाल में सफ़दर खाँ की उपाधि प्रदान कर दी थी। उसे लाल चत्र प्रदान किया था। कारखानये नफ़र में बहुत बड़ी संख्या में ऊँट थे। उनमें से अधिकतर उँट ग्रामों में चरा करते थे—दुवलाहन[९] शिक़ के आस पास। वे सब ग्राम ऊँट चराने वालों की वजह[१०] में दे दिये गये थे। कुछ ऊँट शहर (देहली) में भी थे। जब बादशाह की सवारी का समय होता समस्त ऊँट शहर में लाये जाते थे। प्रत्येक वर्ष ऊँटों की संख्या बढ़ती रहती थी

१ तत्सम्बन्धी व्यवसाय।
२ मुतसर्रिफ़ का पद।
३ मुतसर्रिफ़ था।
४ निम्न वर्ग के कर्मचारी।
५ बड़ी अश्वशाला।
६ शाही राजप्रासाद की पायगाह।
७ विशेष दासों के बोझ ढोने वाले जानवरों की अश्वशाला।
८ ऊँटों की देख रेख करने वाला मुख्य अधिकारी।
९ देहली सरकार में बेरी दूबालजन।
१० व्यय।

इसलिये कि जब समस्त अक़्ताओं के मुक़्ते प्रत्येक प्रकार के उपहार प्रस्तुत करते थे, तो ऊँट भी लाते थे।

ईश्वर को धन्य है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का राज्यकाल बड़ा ही समृद्ध तथा शुभ था। ४० वर्ष में किसी कारख़ाने के हिसाब किताब की जाँच मुहासिबों[1] के समान (कठोरता से) न हुई। जब राज्य के हिसाब किताब करने वालों ने देखा कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह समस्त (३४१) प्रजा के प्रति उदार तथा दयावान है और लोगों के बहुत बड़े-बड़े अपराधों को क्षमा कर देता है तो दरबार के कारकुनों तथा आमिलों के कार्य के मुहासिबों ने भी लोगों के लिये सुगमता पैदा कर दी।.........

सुल्तान के राज्यकाल में जब किसी अक़्ता के हिसाब किताब की जाँच होती, तो जब अक़्ता का मुक़्ता अपनी अक़्ता से आता और बादशाह के चरणों का चुम्बन कर चुकता तो उस मुक़्ता को दीवाने विज़ारत में उपस्थित किया जाता। उसके हिसाब किताब की जाँच की जाती और उसे फ़ीरोज़ शाह के राजसिंहासन के समक्ष लेजा कर प्रस्तुत किया जाता। उस पर जो कुछ बाक़ी होता उसको निकाला जाता। प्रश्नोत्तर के उपरान्त मुक़्ता को लौटा दिया जाता। जब साल का अन्त होने लगता तो कारख़ानों के मुहर्रिरों को दीवाने विज़ारत में उपस्थित किया जाता। उनसे मुजमेलात[2] ले लिया जाता और जो कुछ नक़्द तथा सामग्री उनके ऊपर बाक़ी होती उसे निकाला जाता। फिर भी सुल्तान के ४० वर्षीय राज्यकाल में मुहासिबों के नियमानुसार मुहासिबा न हुआ[3]। यह बात न थी कि सुल्तान फ़ीरोज़ को इस विषय में जानकारी न हो, अपितु वह भली भाँति जानता था; आँख बन्द कर लेता था। आमिलों के हिसाब किताब की जाँच को देखकर अन-देखा कर देता था। (३४२) निःसन्देह उस काल के आमिल बड़े सुखी थे। आशा है कि ईश्वर भी क़यामत में उसके हिसाब किताब की जाँच न करेगा।.........

अध्याय १४

सिक्कये मोहरे शशगानी[4] का उल्लेख।

(३४४) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने विभिन्न प्रकार के सिक्के चलाये। सोने का तन्का, चाँदी का तन्का, सिक्कये चिहल व हश्तगानी,[5] मोहरे बिस्त व पंजगानी,[6] बिस्त व चहारगानी,[7] द्वाज़देहगानी,[8] देहगानी,[9] हश्तगानी,[10] शशगानी[11] तथा मोहरे यक जीतल[12]।

१ हिसाब किताब की जाँच करने वालों।
२ हिसाब का लेखा।
३ कठोरता से हिसाब किताब न हुआ।
४ शशगानी मुद्रा।
५ ४८ जीतल के मूल्य की मुद्रा।
६ २५ जीतल के मूल्य की मुद्रा।
७ २४ जीतल के मूल्य की मुद्रा।
८ १२ जीतल के मूल्य की मुद्रा।
९ १० जीतल के मूल्य की मुद्रा।
१० ८ जीतल के मूल्य की मुद्रा।
११ ६ जीतल के मूल्य की मुद्रा।
१२ १ जीतल की मुद्रा।

जब फ़ीरोज़ शाह इतने अधिक प्रकार की मुद्रायें चला चुका तो उसने सोचा कि यदि दरिद्र फ़क़ीर बाजार वालों से कोई वस्तु मोल लेते हैं और समस्त माल में आधा जीतल अथवा एक दाँग शेष रह जाता है तो दुकान वालों के पास ख़ुर्दा[1] दाँग[2] नहीं होता। यदि कोई यात्री उसको उसके पास छोड़ दे तो वह उससे वंचित हो जाता है। यदि वह उसे दुकान वाले से माँगे तो जब यह मुद्रा ही नहीं है फिर उसे कहाँ से दे; फलस्वरूप उसका बाक़ी रह जाता है। इस कारण क्रयकर्ता तथा विक्रेता में इस बात पर बखेड़ा हुआ करता है। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दिया कि आधे जीतल की मुहर जिसे अध कहते थे तथा दाँग जीतल की मुहर जिसे बेगह[3] कहते थे चलाया जाय जिससे फ़क़ीरों तथा दरिद्रियों का कार्य चल सके।

(३४५) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सिंहासनारोहण के समय शशगानी मुद्रा की टकसाल कजर शाह के अधीन थी। यह पदाधिकारी इस कार्य को बड़े प्रयत्न से किया करता था। कई लाख तन्के की शशगानी मुद्रायें सुल्तान के राज्यकाल में कजर शाह के अधीन बनी थीं। दो योग्य गोयेन्देगान[4] बादशाही क़ानून के अनुसार समाचार पहुँचाया करते थे। उन्होंने सूचना दी कि शशगानी मुद्रा में शाही अधिकारी एक हब्बा[5] चाँदी कम कर लेते हैं। यदि परीक्षा की जाय तो इसका तथ्य ज्ञात हो जायगा और उन पदाधिकारियों तथा कर्मचारियों का जो कुछ होना होगा वह होगा।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने इसकी जाँच गुप्त रूप से प्रसिद्ध वज़ीर के अधीन करदी। उन दिनों ख़ाने जहाँ मक़बूल जीवित था। उसका निधन ७७२ हि० (१३७०-७१ ई०) में हुआ। उसने राजनीति के भेदों का इस प्रकार उल्लेख किया, "सुल्तानों की मुद्रा धर्ती पर कुमारी कन्या के समान होती है। यदि कुमारी कन्या सच या झूठ कहीं कुख्यात हो जाय और उस पर कोई दोष लग जाय तो वह अत्यधिक रूपवती एवं योग्य होने पर भी न पूछी जायगी। इसी प्रकार धर्म के आकांक्षी सुल्तानों की मुद्रा को ईश्वर न चाहे कोई झूठ अथवा सच किसी लोभ से कम बताने लगे तो बादशाही मुद्रा कुख्यात हो जायगी। संसार की इक़लीमों तथा देशों में खुल्लम खुल्ला ख़राबी उत्पन्न हो जायगी। इस प्रकार मुद्रा कुख्यात हो जायगी। कोई भी उसे हाथ न लगायेगा।

(३४६) सुल्तान ने यह सुनकर कहा कि "इस बात की जाँच के लिये क्या उपाय किया जाय?" प्रसिद्ध वज़ीर ने गूढ़ समस्याओं पर भी सोच विचार करके राजनीति का रहस्य इस प्रकार खोला, "इस कार्य में सन्देह करना तथा इसकी जाँच करना बहुत बड़ी भूल है।" इस पर सुल्तान ने कहा, "इस रहस्य का तो पता चलना ही चाहिये जिससे मेरे सन्देह का अन्त हो सके।" वज़ीर ने कहा, "गोयेन्दों (गुप्तचरों) को बन्दी बना लिया जाय और इस कार्य को आवश्यक सावधानी तथा सतर्कता के कारण एकान्त में कराया जाय।"

इस कारण उन दोनों गुप्तचरों को बन्दी बना लिया गया और उन्हें दीवाने विज़ारत के बन्दीगृह में रखा गया। यह निश्चित हुआ कि जाँच दूसरे दिन होगी। जब ख़ाने जहाँ

---

१ फुटकर।

२ चौथाई जीतल।

३ *होदीवाला के अनुसार यह पैकह हो सकता है।*

४ गुप्तचर।

५ दाना।

लौट गया बादशाह एकान्त में चला गया। वज़ीर ने गुप्त रूप से कजर शाह को बुलवाया। जब वह उपस्थित हुआ तो खाने जहाँ ने कहना प्रारम्भ किया, "हीन आमिलों के हृदय में धन का अपार लोभ होता है। इसी कारण वे परिणाम पर ध्यान दिये बिना मुद्रा तराशते (३४७) हैं। संसार का यह नियम है कि कारकुन अत्यधिक प्रयत्न किया करते हैं। यह बात नहीं कि यह कार्य तुमने किया है। जाकर अपने कारकुनों से जाँच करो। यदि ऐसा ही हो जैसा कि गुप्तचर कहते हैं तो मैं ऐसा उपाय करूँ कि इस शतरंज के मैदान को फ़रज़ी से जीतूँ जिससे शशगानी मुद्रा समस्त संसार में प्रसिद्ध हो जाये।"

जब दोषी कजर शाह वज़ीर के पास से लौटा तो उसने अपने कारकुनों के पास पहुँच कर इस विषय में जाँच की तो ज्ञात हुआ कि शशगानी मुद्रा में एक दाना चाँदी कम होती है। कजर शाह ने वज़ीर को जाकर सच-सच हाल बता दिया। इस पर वज़ीर ने कहा कि 'इस अफ़वाह की जाँच के लिये एकान्त में सुनारों को बुलवाया जायगा। जाकर उन्हें मिलाओ।' वह इस बात को सुनकर सुनारों के पास पहुँचा और उनसे कुछ उपाय करने को कहा। उन लोगों ने उत्तर दिया कि "हम लोगों को शहंशाह के समक्ष नंगा करके तहमत तथा इकहरा वस्त्र बंधवा दिया जायगा और फिर जाँच कराई जायगी। यदि किसी प्रकार कुछ दाने (३४८) चाँदी हमारे पास उस स्थान पर पहुँच जाय तो हम उसे घरिये में डाल देंगे।" कजर शाह ने कोयला बेचने वालों को भी मिलाया। उन लोगों ने प्रयत्न करके एक कोयले को बीच से खाली करके उसमें कुछ चाँदी के दाने डाल दिये और कोयले का मुंह मोम से बन्द कर दिया।

दूसरे दिन बादशाह वज़ीर के साथ एकान्त में बैठ गया। उस समय सुल्तान पलंग पर आसीन था। खाने जहाँ वज़ीर जामाखाने[1] पर आराम कर रहा था। कजर शाह को गुप्तचरों के साथ प्रस्तुत किया गया। सुनारों को नंगा करके तहमत बंधवा दिया गया। कोयला बेचने वालों ने सुनारों के समक्ष कोयला लाकर ढेर कर दिया। सुनारों ने सुल्तान के आदेशानुसार कुछ शशगानियाँ लेकर घरिये में डाल दीं। उन्हें आग पर रख दिया। आग जलने लगी। बादशाह हितैषी वज़ीर से वार्ता करने लगा। कभी-कभी राज्य सम्बन्धी गोपनीय वार्ता भी होती जाती थी। सुनारों ने आग जलाने के बीच में कोयले में से उन चाँदी के दानों को धीरे से घरिये में डाल दिया। जब घरिया आग पर से निकाल कर ठंडी की गई और राजसिंहासन के समक्ष उसे तौला गया तो शशगानी मुद्रा पिछली तौल के अनुसार ठीक निकली। गुप्तचर झूठे हो गये।

(३४९) सुल्तान ने कजर शाह को खिलअत प्रदान की तथा उसे अत्यधिक सम्मानित किया। इस अवसर पर वज़ीर ने निवेदन किया कि "क्योंकि शाही मुद्रा इन गुप्तचरों की सूचना से परीक्षा पर ठीक निकली अतः शहंशाह कजर शाह को हाथी की पीठ पर बैठा कर घुमाये जाने का आदेश प्रदान करे जिससे संसार वाले जान जायँ कि शाही शशगानी मुद्रा खरी है। इसमें कोई हानि नहीं।" इस प्रकार बादशाह के आदेशानुसार कजर शाह को हाथी पर सवार करके शहर में घुमाया गया और वे गुप्तचर झूठे बन गये। बादशाह ने उन्हें दूसरे स्थान पर भिजवा दिया किन्तु कुछ समय उपरान्त हितैषी वज़ीर ने कजर शाह को किसी दूसरे बहाने से पदच्युत कर दिया। निःसन्देह, यदि इस प्रकार के बुद्धिमान वज़ीर न हों तो देश के कार्य तथा शासन प्रबन्ध में बड़ी कठिनाई हो।...।......

१ फ़र्श।

अध्याय १५

दीवाने ख़ैरात[1] तथा शफ़ाख़ाने[2] की स्थापना।

सुल्तान ने कन्याओं के विवाह के लिये दीवाने ख़ैरात की स्थापना की। जो दुखी मुसलमान दीन तथा फ़क़ीर हैं और जिनके पुत्रियाँ हैं और जो उनके विवाह का प्रबन्ध नहीं (३५०) कर सकते, सर्वदा परेशान रहते हैं। इन लोगों को न तो रात में नींद आती है और न दिन में चैन। सुल्तान ने आदेश दे दिया कि "जिसकी पुत्री वयस्क हो जाय वह दीवाने ख़ैरात में सूचना दे दे और अपना दु:ख तथा हाल सविस्तार दीवाने ख़ैरात के अधिकारियों को बता दे।" दीवाने ख़ैरात के अधिकारियों में एक सयिद अमीर मीरान था जो उन दिनों अपनी ईमानदारी तथा सत्यता के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। इसी प्रकार अन्य अधिकारी भी थे।

शहंशाह ने आदेश दे दिया था कि "दीवाने ख़ैरात के अधिकारी कन्याओं के पिताओं के विषय में पूछताछ किया करें और हर प्रकार के प्रमाणों से परिचित हो जायँ; प्रत्येक की दशा के अनुसार वृत्ति निश्चित करें। प्रथम श्रेणी को ५० (चाँदी के) तन्के, द्वितीय श्रेणी को ३० (चाँदी के) तन्के, तृतीय श्रेणी को २५ चाँदी के तन्के कन्याओं के विवाह हेतु दिये जायँ।" यह निश्चित हो जाने के उपरान्त प्रत्येक दीवाने ख़ैरात का पदाधिकारी इस कार्य को सम्पन्न करने में तल्लीन हो गया।

(३५१) मुसलमान फ़क़ीर, दीन विधवायें, छोटे बड़े राज्य की चारों दिशाओं से शहर में आने लगीं और वे अपनी पुत्रियों के नाम दीवान में लिखवा देती थीं तथा अद्वितीय सामान मोल लेने के लिये अत्यधिक धन ले जाती थीं। शहंशाह की दया तथा उदारता से कई हज़ार सुशील कन्याओं का विवाह हो गया। इस कारण बहुत से लोगों को रोज़गार मिल गया।.........

(३५३) इसी प्रकार सुल्तान ने प्रत्येक जाने तथा अनजाने, शहर निवासी तथा यात्री, निकट वाले तथा दूर वाले, युवक तथा वृद्ध, धनी तथा दरिद्र के लिये दारुश्शफ़ा (चिकित्सालय) बनवाया।

शफ़ाख़ाने का, जिसे सेहतख़ाना भी कहते थे, निर्माण।

ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में १८००० रोग रखे हैं जिनमें से छ: हज़ार के उपचार के विषय में बड़े से बड़े हकीम को कोई ज्ञान नहीं और न वे रोग का नाम जानते हैं और न (३५४) औषधि का। छ: हज़ार ऐसे रोग हैं जिनका नाम हकीम लोग जानते हैं किन्तु उनकी औषधि नहीं जानते।.............रोगी को रोग तथा दरिद्रता के कारण सर्वदा बड़ा कष्ट (३५५) रहता है ... .इस कारण बादशाह रोगियों के विषय में पूछताछ करते रहते हैं और अपने अपने राज्यकाल में सेहतख़ाने बनवाते रहते हैं।...............सुल्तान (३५६) फ़ीरोज़ शाह ने रोगियों के उपचार हेतु शफ़ाख़ाने व सेहतख़ाने की स्थापना कराई। बड़े-बड़े योग्य हकीमों को वहाँ का अधिकारी नियुक्त किया। औषधि का व्यय तथा हकीमों का वेतन निश्चित किया।.........सुल्तान ने शफ़ाख़ाने तथा सेहतख़ाने साधारण रोगियों (३५७) के लिये स्थापित कराये थे। हकीम, सेवक, जर्राह, तथा किहाल (सुर्मे वाले) वहाँ

१ दान का विभाग।

२ चिकित्सालय।

नियुक्त किये। रोगियों के लिये औषधि, भोजन तथा पीने की वस्तुयें ख़ज़ाने से निश्चित थीं।............

(३५९) शहंशाह ने दीवान ख़ैरात तथा शफ़ाख़ाने के लिये आबाद कृषि वाले ग्राम प्रदान किये जिससे उन ग्रामों की आय दीवाने ख़ैरात तथा शफ़ाख़ानों में ख़र्च हो। इसी प्रकार सुल्तान ने शिक्षितों, हाफ़िज़ों, तथा आलिमों के लिये इदरार निश्चित किये। ३६ लाख (३६०) तन्के राज्य के प्रदेशों से इदरार के लिये निश्चित किये अपितु ४२०० मनुष्य, जो सर्वदा दुखी रहते थे, दीवाने इस्तेहक़ाक़ से वेतन पाते थे। उसके राज्यकाल में मुसतहक़ों के पदाधिकारी पृथक् थे। सुल्तान फ़ीरोज़ के कारण सब सुख से तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करते थे।.........

अध्याय १६

जश्नों का उल्लेख।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह दोनों ईदों,[1] शब बरात तथा नौरोज़ के दिन आम जश्न करता (३६१) था। जब ईद का दिन निकट आ जाता तो पूर्व से ही जश्न की तैयारी प्रारम्भ हो जाती। ईद की रात्रि में फ़ीरोज़ शाह बहुत देर तक जागता रहता था, अपितु सुल्तान मलिक नायब बारबक से कहा करता था, "इबराहीम! तू कोई चीज़ नहीं। यदि तू इस कार्य को प्रारम्भ करे तो मैं इतना परिश्रम न करूँ। सुल्तान मुहम्मद शाह इब्ने (पुत्र) तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल में जब ईद की रात्रि होती तो वह मुझ से केवल इतना कह देता कि नायब अमीर हाजिब कल ईद है। सुल्तान के मुख से यह शब्द सुनते ही मैं तत्काल ईद के जश्न की समस्त सामग्री एकत्र कर देता था। तू वैसा नहीं कि जश्न का सामान इकट्ठा करादे। मैं इसी कारण रात भर ईद के सामान की तैयारी में बैठा रहता हूँ।"

ईद के जश्न का हाल

ईद के दिन कूश्के फ़ीरोज़ाबाद के सातों प्रांगणों में आम की वृक्ष की पंक्तियाँ फैला दी जाती थीं। उतार के स्थान पर, जिसे मध्य का प्राँगण कहा जाता था, शाह के आदेशानुसार बारगाह लगाई जाती थी। उस स्थान को दरबारे आम का स्थान कहा जाता था। उस स्थान पर सुल्तान ने एक कूश्क आम लोगों के हेतु बनवाया था। जब सुल्तान ख़ास व आम सभी के लिए दरबार करना चाहता था तो उस स्थान पर (३६२) बैठता था। उस कूश्के के दोनों बाज़ुओं पर लकड़ी के दो पाशेब बाँधे जाते थे। वहाँ हर प्रकार के पौधे रक्खे जाते थे। कुछ पौधे अबरेशम[2] कुछ नरमीने, कुछ सोने चाँदी की कमानों के कुछ सफ़ेद वस्त्र के, कुछ मोम के, कुछ फूल के और कुछ वास्तविक पौधे बहुत बड़ी संख्या में रक्खे जाते थे। मध्य के प्राँगण की समस्त दीवारों पर नरमीना[3] कपड़ा लगाया जाता था। लश्करी जामख़ाने[4] समस्त दरबार के प्रांगण में बिछाये जाते थे। सूखे तथा पक्के मेवे वहाँ रखे जाते थे। प्रातःकाल तथा मध्याह्न के बीच में फ़ीरोज़ शाह आकर कूश्क में बैठता था। मलिक नायब बारबक बाहर आता था।

---

१ ईद तथा बक़रईद।
२ रेशम।
३ एक प्रकार का मुलायम वस्त्र।
४ फ़र्श

सर्वप्रथम तेग़दार[1] दासों को आज्ञा प्रदान की जाती थी। तत्पश्चात् २१ चत्र दाईं तथा बाईं ओर रखे जाते थे। दस चत्र सुल्तान के दाईं ओर दस बाईं ओर तथा एक चत्र सुल्तान के सिर पर रखा जाता था। समस्त चत्र विभिन्न रंगों के होते थे। कुछ लाल कुछ हरे, कुछ गुलाबी, कुछ दो रंग के, कुछ कंज (?) कुछ बुने हुये, कुछ काले, कुछ सफ़ेद, कुछ मोमी कपड़े के लाल रंग के जिन्हें मेघद भी कहते थे और जिसे बादशाह वर्षा ऋतु में अपने सिर पर रखता था। जब उपर्युक्त चत्र अपने स्थान पर रुक जाते थे तब मरातिब के निशान भीतर ले जाये जाते थे।

(३६३) ईदों के जश्न के समय समस्त मकसानी (?) निशान, बहुत सजा कर तथा अलंकृत करके ले जाये जाते थे। उस दिन रिसाले के निशान को उस स्थान पर ले जाने का आदेश न था। मकसानी निशान १६० अथवा १७० थे। वे बड़े सुन्दर लगते थे। मरातिब के साथ साथ अलमखाने वाले महल में भीतर की ओर जाते थे। तत्पश्चात् पायगाहे खास के घोड़े चाँदी मढ़ी हुई ज़ीनों सहित भीतर जाते थे। इसके उपरान्त कुछ सजे हुये हाथी, जिन पर सुनहरे रूपहले हौदज तथा दो रंग के परदे पड़े होते थे अपने स्थान पर भीतर जाते थे और राजसिंहासन के समक्ष भूमि पर सिर रख कर अभिवादन करते थे और अपनी वाणी में शुभ कामनायें करते थे और दाईं तथा बाईं ओर अपने स्थान पर खड़े हो जाते थे। तत्पश्चात् शिकरे खाने के अधिकारी कुछ शिकरादारों के साथ भीतर जाते थे। इसके उपरान्त गायक तथा नर्तकियाँ लाई जाती थीं। समस्त गायक केसरिया वस्त्र धारण किये हुये तथा लाल पगड़ी सिर पर पहने हुये रहते थे। नर्तकियाँ जड़ाऊ बहुमूल्य वस्त्र धारण किये प्रत्येक ४०-४० हज़ार तन्कों के वस्त्र पहने आती थीं। प्रत्येक युवावस्था में, जैसा कि एक कवि ने कहा है, होती थी।

छन्द

'स्तन के अनार उठे हुये बाण के समान।
स्तन से प्रत्येक ने दूध के स्थान पर शकर खाया।'

(३६४) जब यह स्थान इस प्रकार सज जाता था तब क़व्वाल वाद्य (हाथ में ले) लेते थे। नर्तकियाँ नृत्य प्रारम्भ कर देती थीं। तत्पश्चात् समस्त बड़े बड़े खानों, प्रतिष्ठित अमीरों अन्य प्रसिद्ध लोगों, आलिमों तथा सूफ़ियों को अभिवादन के स्थान पर आज्ञा मिलती थी। तत्पश्चात् समस्त अन्य लोग जाते थे। दीवाने रिसालत के अधिकारी अपने-अपने अधीनस्थ लोगों को लिये हुये, दीवाने क़ज़ाये ममालिक के अधिकारी अपने अधीन व्यक्तियों के साथ, दीवाने विज़ारत के अधिकारी तथा दीवाने अर्ज़े ममालिक के अधिकारी अपने-अपने स्थानों पर बैठकर खड़े होते थे।

जब एक पहर के लगभग दिन चढ़ जाता तो फ़ीरोज़ शाह ईद की नमाज़ के लिये सवार होता था। समस्त खान, मलिक तथा सूफ़ी जश्न की सभा के बाहर आते। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह कभी हाथी पर सवार होता तो कभी घोड़े पर। वह दो चत्र के साथ बाहर निकलता था। एक चत्र सुल्तान के सिर पर होता था और दूसरा चत्र तुग़लुक़ शाह के सिर पर होता था। तुग़लुक़ शाह चत्र के साथ कुछ आगे रहता था। शेष समस्त चीज़ें जश्न के स्थान पर रहती थीं।

---

५ तलवार चलाने वाले।

(३६५) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईद की नमाज़ कूश्के नुज़ूल के पास पढ़ता था। जब वह नमाज़ पढ़ चुकता तो अपने शुभ कूश्क को लौट जाता और दरबार में बैठता। उस समय उपहार प्रस्तुत किये जाते। यदि शीत ऋतु में ईद होती तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शीत ऋतु के विशेष वस्त्र धारण करता था। ईद के दिन कुछ खानों तथा मलिकों को खिलअत प्रदान की जाती थीं। जब पास[1] बजता तो वह उठ जाता। जश्न विसर्जित हो जाता। उस दिन के क़व्वालों तथा नर्तकियों को पारितोषिक मिलता था।

शब बरात की बाज़ियाँ

जब शाबान का महीना आ जाता तो राजसिंहासन द्वारा शब बरात की बाज़ी[2] का आदेश दिया जाता था। शाबान की १५ तारीख की रात को सुल्तान कूश्के फ़ीरोज़ाबाद में फुलझड़ियों की हवाइयाँ छुड़ाता था। जब शब बरात निकट आ जाती तो १३, १४, १५ तारीख की रात्रि में अत्यधिक बाज़ियाँ इकट्ठी की जाती थीं। फ़ीरोज़ाबाद के कूश्के नुज़ूल में शब बरात की बाज़ी छुड़ाने के लिये चार अलंग[3] निश्चित किये जाते थे। एक अलंग खास, द्वितीय मलिक नायब बारबक के, तृतीय अलंग मलिक अली के और चतुर्थ अलंग मलिक (३६६) मुहम्मद हाजी के पुत्र मलिक याक़ूब के सिपुर्द होता था। प्रत्येक चारों अलंग में ३०-३० गधों के बोझ के बराबर ढोल तथा बाजे निश्चित किये जाते थे।

उन तीनों रात्रियों में कूश्के नज़ूल में इतनी मशालें तथा दीपक जलाये जाते थे कि कूश्के नुज़ूल के चारों ओर का मैदान दिन के समान चमकने लगता था। चारों अलंगों पर नौकायें बांधी जाती थीं। इन नौकाओं में मशालें जलाई जाती थीं। इन तीनों रातों में चारों अलंगों में ढोल बजाये जाते थे। विभिन्न प्रकार की बाज़ियाँ छुड़ाई जाती थीं। कूश्के नुज़ूल के नीचे इन चारों अलंगों में ढोल, भीर तथा शहनाई बजाई जाती थीं। देहली के आसपास के लोग, विशेष कर देहली वाले खास व आम, मुसलमान-हिन्दू, छोटे बड़े उपस्थित होकर तमाशा देखते थे।

तीन रातों तक इस प्रकार की विचित्र लीलायें हुआ करती थीं। फ़ीरोज़ शाह इन रातों में स्वयं बहुत कम आता था, केवल बिरले ही। समस्त शाहज़ादे, खान, तथा मलिक कूश्के नुज़ूल में उपस्थित रहते थे। पीलखाने के अधिकारी मिट्टी के हाथी तथा नफ़र के अधिकारी मिट्टी के ऊँट तैयार कराते थे। ये सब वस्तुयें शब बरात में शहंशाह के समक्ष (३६७) लाई जाती थीं। शहंशाह प्रत्येक को इनाम दिलवा कर लौटा देता था। उस शहंशाह के राज्यकाल में विभिन्न बहानों से लोगों को सुख प्राप्त होता रहता था।

अध्याय १७

जुमे की नमाज़ के उपरान्त गायकों का बुलाया जाना।

सुल्तान का आदेश था कि जुमे की नमाज़ के उपरान्त प्रत्येक चारों नगरों के गायक, पहलवान तथा अदूती महल में उपस्थित किये जाया करें। जब शाह फ़ीरोज़ नमाज़ से लौटता तो महले छज्जये चोबीं में दरबार करता। इन तीनों समूहों के लगभग दो तीन हज़ार मनुष्य एकत्र होते। इन लोगों को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के समक्ष प्रस्तुत किया जाता।

१ पहर का घण्टा।
२ तमाशे, आतशबाज़ी।
३ मोर्चे।

सुल्तान थोड़ी देर तक गायकों के साथ उनका गाना सुनता। तत्पश्चात् पहलवान मल्ल-युद्ध करते। कुछ देर उनका मल्ल-युद्ध देखकर वह अदूतीयों से क़िस्से कहानियाँ सुना करता था। सन्ध्या (३६८) समय की नमाज़ तक वह इन लोगों के साथ व्यस्त रहता था। वह उन्हें प्रोत्साहन देने के लिये उनके ऊपर बड़ी कृपा दृष्टि रखता था। जब वह उठने लगता तो इन्हें बहुत कुछ इनाम प्राप्त होता। उनमें से प्रत्येक को कुछ न कुछ तन्के इनाम में प्राप्त होते थे।

देहली के गायकों ने यह कार्य प्रारम्भ कर दिया था कि वे अपने अल्पावस्था के पुत्रों को लेकर देहली से फ़ीरोज़ाबाद आ जाते थे। यहाँ तक कि जिसके चार वर्ष अथवा पाँच वर्ष का भी कोई पुत्र होता तो वह उसे अपने साथ फ़ीरोज़ाबाद लाता था इसलिये कि सुल्तान की ओर से जो इनाम प्राप्त होता था वह सब व्यक्तियों में बाँटा जाता था। एक बार दरबार के कारकुनों तथा आमिलों ने इनमें भेद भाव पैदा करना चाहा। सुल्तान को इस बात का पता चला। उसने उनकी ओर कठोरतापूर्वक दृष्टिपात करते हुये कहा, 'बेचारे फ़क़ीर सात दिन तक परेशानी में पड़े हुये प्रतीक्षा किया करते हैं कि कब शुक्रवार आये और कब हमको कुछ प्राप्त हो। इस आशा से वे अपने पुत्रों को ५ कोस से देहली से फ़ीरोज़ाबाद लाते हैं। यदि इनमें भेद भाव किया गया तो इनकी क्या दशा हो जायगी?' शहंशाह ने आदेश दे दिया (३६९) कि प्रत्येक को एक-एक करके इनाम दिया जाया करे। भेद भाव करने की आवश्यकता नहीं।

अध्याय १८
नये नमूने (आविष्कार)।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने अपने राज्यकाल में विभिन्न आविष्कार किये थे। इनमें से एक तास घड़ियाला था, जिसका सविस्तार उल्लेख तीसरे भाग में हो चुका है। दो देग दौलये आहनीं का कुछ हाल शिकार के अध्याय में दिया जा चुका है। उसने एक बहुत बड़ा सफ़ेद गुम्बद एक फ़रीज़ा[१] सहित ईजाद किया था। जब फ़र्राश तथा कारकुन शाही फ़र्राशख़ाना लगाते थे तथा देहलीज़, बारगाह व छत्राबगाह लगाते थे, उस समय सफ़ेद गुम्बद शाही बारगाह के बराबर लगाया जाता था। अधिकांशत: सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सफ़ेद गुम्बद में रहता था।

इसी प्रकार फ़ीरोज़ शाह ने दो अजगर पील के निशाने एक मन के और अन्य दो लाख निशाने तीस सेरी लोहे के बनवाये। दो अजगर-पील, एक दाईं ओर के लिये तथा दूसरा बाईं ओर के लिये तैयार किये गये। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शिकार के लिये निकलता तो दोनों अजगर (३७०) के निशाने हाथी पर दाईं तथा बाईं ओर चलते थे। दो निशान ले जाने वाले हाथी के हौदज में बैठते थे। वे इन निशानों को लिये रहते थे और उन्हें रस्सों से हाथी के हौदज में बाँध देते थे। जब फ़ीरोज़ शाह दूर होता तो ये दोनों निशान दो तीन कोस से दिखाई पड़ते थे।

इसी प्रकार फ़ीरोज़ शाह ने दो बड़े ढोल भी ईजाद किये थे। साधारण ढोलों से यह ढोल लम्बाई तथा चौड़ाई में एक हाथ अधिक थे। इन दोनों ढोलों को हाथी के हौदजों पर बंधवा दिया जाता था, हौदज में दो ढोल बजाने वाले बैठते थे। उन निशानों के पीछे ढोल चलते थे।.........उसने उस्तुरलाब[२] नामक एक निशाना मिनारये ज़रीं के बराबर लटकवाया था। उस्तुरलाब निस्फ़ी सर्वदा बादशाह के समक्ष रहता था।......

१ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
२ धरातल की ऊँचाई नापने का एक पुराना यंत्र।

पाँचवाँ भाग

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के महलूक़[१] होने का उल्लेख, शहज़ादा फ़तह ख़ाँ का निधन, कुछ ख़ानों तथा मलिकों का ऐश्वर्य, उसके राज्यकाल का अन्त।

अध्याय १

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का महलूक़ होना।

(३७१) कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह, शेखुल इस्लाम शेख़ फ़रीदुद्दीन अजोधनी के नाती शेखुल इस्लाम शेख़ अलाउद्दीन का मुरीद था। सुल्तान जब तक शासन करता रहा उस समय तक वलियों (सूफ़ी सन्तों) का अनुसरण करता रहा। अपने अन्तिम जीवन काल में वह महलूक़ हो गया था। सर्वदा मशायख़ का भक्त रहता था और उनसे प्रेम करने का बड़ा प्रयत्न किया करता था। वह पूरे ४० वर्ष तक शरीअत के अनुसार राज्य करता रहा। कहीं जाने के पूर्व देहली के समस्त मशायख़ (सन्तों) की क़ब्र के दर्शन करता था।

(३७२) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने ७७६ हि० (१३७४-७५ ई०) में बहराइच की ओर प्रस्थान किया। बहराइच पहुँच कर सिपेहसालार मसऊद ग़ाज़ी (की क़ब्र) के दर्शन किये। वहाँ कुछ समय तक ठहरा। एक रात्रि में सिपेहसालार मसऊद ग़ाज़ी ने स्वयं को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को स्वप्न में दिखाया और सुल्तान फ़ीरोज़ को देख कर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा जिसका अर्थ यह था कि अब वह वृद्धावस्था को प्राप्त हो चुका है और उसे परलोक की तैयारी करनी चाहिये तथा अपने आप को याद करना चाहिये। प्रातःकाल सुल्तान फ़ीरोज़ शाह महलूक़ हो गया। उस दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से प्रेम के कारण राज्य के बहुत से ख़ान तथा मलिक महलूक़ हो गये।·········अधिकतर ख़ानों तथा मलिकों ने सिर के बाल (३७३) मुंडवा डाले······महलूक़ होने के उपरान्त वह बहुत बड़ा शेख़ (सूफ़ी सन्त) ज्ञात होता था। यह सब आलिमों तथा सूफ़ियों से प्रेम का आशीर्वाद था।·········

शहंशाह ने महलूक़ होने तथा सिर के बाल मुंडवाने के उपरान्त राज्य-व्यवस्था में जितनी बातें शरा के विरुद्ध होती थीं और ऐसी बातें जिनकी (शरा द्वारा) लोगों को करने की आज्ञा न थी, बन्द करा दीं। जितने कर शरा के विरुद्ध थे, वे भी बन्द करा दिये गये। आमिलों तथा कारकुनों को चेतावनी दे दी कि शरा के विरुद्ध कोई चीज़ न प्राप्त करें।

अध्याय २

शरा के विरुद्ध बातों का बन्द होना।

(३७४) *सुल्तानों के एकान्त के कमरों में चित्र कला* :—बादशाहों का यह नियम है कि उनके विश्राम करने के स्थान पर चित्र बनाये जाते हैं जिससे वे एकान्त में उन चित्रों पर दृष्टिपात कर लिया करें। सुल्तान ने ईश्वर के भय के कारण आदेश दे दिया कि 'इन

१ सिर मुड़वाने, किसी पीर का चेला बनाना।

कारखानों में चित्र न बनाये जायँ इसलिये कि यह शरा के विरुद्ध है। चित्रों के स्थान पर बेल बूटे बनाये जायँ।'

शरा के विरुद्ध दूसरी बात यह होती थी कि पीतल, ताँबे, सोने तथा चाँदी में चित्रकारी होती थी। यह शरा के विरुद्ध था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने यह सब बन्द करा दिया। इसी प्रकार पिछले सुल्तान सोने व चाँदी के पात्रों का प्रयोग करते थे। उन्हीं में भोजन करते तथा जल पीते थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईश्वर के अत्यधिक भय के कारण पत्थर तथा मिट्टी के पात्रों का प्रयोग करने लगा। इसी प्रकार झण्डों तथा मरातिब के निशानों में चित्र बनाये जाते थे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उन समस्त बातों को बन्द करा दिया।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने आलिमों तथा सदाचारियों के साथ रहने के कारण उन लोगों द्वारा बताये हुये शरा के विरुद्ध महसूल लेने बन्द कर दिये और उनको जमा से निकलवा (३७५) दिया। एक बार फ़ीरोज़ शाह के राजसिंहासन के समक्ष आलिमों ने ईश्वर के भय के कारण शरा के विरुद्ध कुछ चीज़ों का, जोकि भूतपूर्व सुल्तानों के राज्यकाल में चलाई गई थीं, उल्लेख किया। उनमें से एक चीज़ दानगाना कही जाती थी।

दानगानाः—सराय अदल में जो सामान आता और उस पर निसाब[1] के अनुसार तथा निसाब के अतिरिक्त जो ज़कात होता वह ले लिया जाता। ज़कात का धन लेने के उपरान्त वह समस्त सामान ख़ज़ाने में लाया जाता। उसे पुन: तोला जाता और एक तन्के में एक दाँग लिया जाता था। इस साधन से बड़ा धन एकत्र हो जाता था। दानगाना के ख़ज़ाने में व्यापारियों को बड़ा कष्ट होता था इसलिये कि उस दाँग के वसूल करने तथा सावधानी के हित में कारकुन व्यापारियों पर बड़ी निष्ठुरता करते थे और प्रायः बहुत सी बातें टालते रहते थे। इससे व्यापारियों को बड़ा कष्ट होता था। उन्हें बहुत समय तक दानगाने के ख़ज़ाने में रहना पड़ता था।

देहली में शरा के विरुद्ध दूसरी चीज़ मुस्तग़िल थी।

मुस्तग़िल—दुकानों तथा मकानों की करा भूमि। यह नियम भूतपूर्व सुल्तानों के आदेशानुसार था। १५०,००० तन्का एकत्र हो जाने पर (आय) करा भूमि हो जाती थी[2]।

दूसरी शरा के विरुद्ध आय जज़ारी थी जो पिछले सुल्तानों के आदेशानुसार वसूल की जाती थी।

जज़ारी—क़स्साब प्रत्येक गाय पर जो वह ज़िबह करता था १२ जीतल देता था। इससे भी बैतुल माल को बड़ी आय होती थी।

(३७६) *दौरी*—उन दिनों सभी खास व आम व्यापारी अनाज, नमक, मिश्री, चीनी तथा अन्य सामग्री बड़े प्रयत्न से चौपायों पर लाद कर शहर (देहली) में लाते थे। दीवान के आदमी उन चौपायों को ज़बरदस्ती पकड़ लेते थे और पुरानी देहली में ले जाते थे। पुरानी देहली में सात बादशाहों के बनवाये हुये सात कोट थे। वे सब पुराने हो गये थे। वहाँ गिरी पड़ी पुरानी ईंटें बहुत बड़ी संख्या में थीं। दीवान के कर्मचारी व्यापारियों तथा उनके चौपायों को वहाँ ले जाते थे और उनसे एक बार ईंटें लदवा कर शहर फ़ीरोज़ाबाद में खोर के लिए पहुँचवाते थे। इस अत्याचार के कारण व्यापारी शहर देहली में आने से बचते थे। देहली में अनाज तथा नमक का भाव बढ़ने लगा। सुल्तान के समक्ष सब बातें विस्तार से कही गईं अपितु यहाँ तक कह दिया गया कि एक व्यापारी तीन मन रुई लाया था। ख़ज़ीनये दानगाना के अधिकारी उसे वहाँ ले गये और उसे बिना कुछ निश्चय किये रखे रहे। न उससे तीन दाँग

१ वह निर्धारित सम्पत्ति जिस पर ज़कात (कर) वसूल किया जाता है।
२ १,५०,००० वार्षिक तन्के की आय की दुकानों तथा घरों से भूमि कर।

(३७७) लेते थे और न उसे छोड़ते थे। वह कुछ दिनों तक उसी दशा में पड़ा रहा और उसकी रुई में आग लग गई और वह जल गई। वह चला गया। इसका उद्देश्य यह है कि व्यापारियों को इतना कष्ट है। दौरी के कारण भी जब व्यापारियों पर बड़ा अत्याचार होने लगा तो उन्होंने शहर (देहली) में आना छोड़ दिया। अनाज, नमक तथा कुछ अन्य सामानों का मूल्य बढ़ गया।

इसी प्रकार मुस्तग़िल अर्थात् करा भूमि जब विधवाओं, फ़क़ीरों तथा दरिद्रियों से माँगी जातीं और उनके पास दीनता के कारण कोई साधन न होता था तो उन्हें भी बड़ा कष्ट होता था।

जब राज्य के हितैषियों तथा परामर्शदाताओं ने इन बातों का सविस्तार उल्लेख किया तो सुल्तान ने राज्य के सभी मशायख तथा आलिमों को बुलवा कर उनसे कहा, "यद्यपि भूत-पूर्व सुल्तानों ने कुछ चीज़ों को राज्य के महसूल की जमा तथा सल्तनत के करों में किसी कारण से सम्मिलित किया था अथवा इनका दोष उनके कानों तक न पहुँचाया गया था किन्तु हमें अपने राज्यकाल में बचना चाहिये जिससे संसार वाले सम्पन्न हो सकें। यदि इनका लेना शरा के अनुसार ठीक हो तो इन्हें लिया जाय अन्यथा रोक दिया जाय और इस प्रकार के कर को जमा से निकाल दिया जाय।

(३७८) समस्त आलिमों, सूफ़ियों तथा दीवाने क़ज़ा के अधिकारियों ने फ़तवा दिया कि यह आय शरा के विरुद्ध है। सुल्तान ने आदेश दिया कि यह सब चीज़ें रोक दी जायँ। दरबार के समक्ष हाथी पर सविस्तार फ़स्ल पढ़ी जाय[1]। शाह के आदेशानुसार क़ाज़ी नस्रुल्लाह ने जो शहंशाह का क़ाज़िये लश्कर था[2] हाथी पर सवार होकर वह फ़स्ल (सूचना) हाथ में लेकर बादशाह की ओर से सब को सुनाई : "यद्यपि भूतपूर्व सुल्तान किसी कारण इस प्रकार के खराज लेते थे और या उनके वज़ीरों ने उन्हें इसके विषय में कोई परामर्श न दिया किन्तु इनका लेना शरा के अनुसार उचित नहीं अतः मैंने अपने राज्यकाल में ईश्वर के भय से इन्हें बन्द करा दिया।"

(३७९) यह इतिहासकार इस सूचना के पढ़े जाने के समय उस महफ़िल में उपस्थित था। इसके सुनने के लिये सभी प्रदेशों के असंख्य छोटे बड़े लोग उपस्थित हुये थे। जब क़ाज़ी नस्रुल्लाह फ़स्ल पढ़ते-पढ़ते दानगाना शब्द पर पहुँचा तो उसने पुन: कहा तथा लोगों को सुनाया कि दानगाना जिसे दहेनगाना कहते हैं ....३० लाख तन्के राज्य की जमा से निकाल दिये गये। यह घटना ७७७ हि० (१३७५-७६ ई०) में घटी।

अध्याय ३

ज़ुन्नारदार (ब्राह्मण) का सुल्तान के दरबार के समक्ष जलाया जाना।

(३८०) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को एक समाचार-वाहक ने सूचना दी कि प्राचीन देहली में एक दुष्ट ज़ुन्नारदार (ब्राह्मण) खुल्लम खुल्ला मूर्ति-पूजा करता है। उस मूर्ति-पूजक के घर में मूर्ति-पूजा होती है। शहर के सभी लोग मुसलमान तथा हिन्दू उसके घर में मूर्ति पूजा करने जाते हैं। उस ज़ुन्नारदार (ब्राह्मण) तथा दुष्ट काफ़िर ने एक लकड़ी की मुहर बनवाई है। उसके भीतर तथा बाहर देवताओं के चित्र बने हैं। काफ़िर निश्चित दिन पर उस

१ सूचना दी जाय।
२ सेना का क़ाज़ी।

जुन्नारदार (ब्राह्मण) के घर एकत्र होते हैं और मूर्ति-पूजा करते हैं। किसी पदाधिकारी को इसकी सूचना नहीं।

शहंशाह को कई बार यह सूचना भी दी गई कि 'उस जुन्नारदार (ब्राह्मण) ने एक मुसलमान स्त्री को मुरतेदा[1] कर लिया है और कुफ़्र के धर्म में कर लिया है।' सुल्तान ने गुप्तचरों तथा दरबारियों से कई बार यह बात सुनकर उस जुन्नारदार (ब्राह्मण) को मुहर सहित फ़ीरोज़ाबाद में लाने का आदेश दिया। जब वह फ़ीरोज़ाबाद आया तो सुल्तान ने आलिमों, सूफ़ियों तथा मुफ़्तियों से समस्त घटना का उल्लेख करके फ़तवा[2] माँगा। उन्होंने (३८१) फ़तवा दिया कि या तो वह मुसलमान हो जाय अन्यथा उसे जीवित ही जला दिया जाय। उससे इस्लाम स्वीकार करने के लिये बहुत कहा गया तथा ईमान का मार्ग दिखाया गया किन्तु उसने सीधा मार्ग स्वीकार न किया और इस्लाम स्वीकार न किया।

अन्त में उसे शहंशाह के आदेशानुसार दरबार के समक्ष लाया गया और लकड़ी ढेर की गई। उसके हाथ पाँव बाँधे गये और उसे उस लकड़ी के भीतर डाल दिया गया। मुहर को भी लकड़ी के ऊपर रख दिया गया। लकड़ी के नीचे आग लगा दी गई। यह इतिहासकार शम्स सिराज अफ़ीफ़ उस दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दरबार के समक्ष उपस्थित था। सन्ध्या की नमाज़ के समय मुहर तथा उस जुन्नारदार (ब्राह्मण) के दो ओर से आग लगाई गई। एक सिर की ओर से तथा दूसरी पाँव की ओर से। लकड़ी के सूखी होने के कारण सर्वप्रथम आग उसके पैर की ओर पहुँची। उसने घबड़ा कर आह भरी। उसी समय सिर की ओर भी तेज़ी से आग दहकने लगी और जुन्नारदार (ब्राह्मण) क्षण भर में जल गया। शरीअत की कठोरता को धन्य है, कि शहंशाह शरा का कण भर भी उल्लंघन न करता था।.........

अध्याय ४

जुन्नारदारों से जिज़या लिया जाना।

(३८२) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपने राज्यकाल में शरा के अनुसार आचरण किया करता था, तदनुसार उसने जुन्नारदारों (ब्राह्मणों) से जिज़या वसूल किया। पिछले सुल्तानों के समय में जुन्नारदारों से जिज़या न वसूल किया जाता था और उनका जिज़या क्षमा कर दिया जाता था। कभी भी इनसे जिज़या न लिया गया था।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने समस्त आलिमों तथा सूफ़ियों को एकत्र किया और उनसे कहा कि, "यह बात साधारणतः मिथ्या प्रसिद्ध हो गई है कि जुन्नारदारों से जिज़या न लिया जाय। पिछले सुल्तानों ने इस कार्य में अधिक प्रयत्न इस कारण नहीं किया कि उस काल के कारकुनों तथा दासों ने असावधानी की और उन्हें सूचना न दी। जुन्नारदार (ब्राह्मण) कुफ़्र की कोठरी की कुंजी हैं। काफ़िर उनके भक्त होते हैं। सर्वप्रथम उनसे जिज़या लिया जाय तथा क्षमा न किया जाय।"

सभी शरीअत तथा तरीक़त के अधिकारियों ने फ़तवा दिया कि जुन्नारदारों तथा ब्राह्मणों को अपमानित करके जिज़या लिया जाय तथा जिज़या क्षमा न किया जाय। चारों नगरों के जुन्नारदार एकत्रित हुये तथा कूश्के शिकार पहुँचे। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह कूश्के शिकार

१ इस्लाम त्याग कर अन्य धर्म स्वीकार करने वाला मुरतद कहलाता था।

२ निर्णय हेतु मुफ़्ती का मत, व्यवस्था।

(३८३) के निर्माण में तल्लीन था। उन्होंने सुल्तान से निवेदन किया कि "किसी बादशाह के राज्यकाल में हमारे पूर्वज जुन्नारदारों ने जिज़या अदा नहीं किया। हम किस प्रकार दें। हम यह कुख्याति कहाँ ले जायँ। इस समय हम इस आशय से आये हैं कि कूश्के शिकार के नीचे लकड़ी एकत्र करें और अपने आपको जीवित जला दें तथा जिज़या न अदा करें।"

सुल्तान ने उनकी ओर क्रोध से देखते हुये कहा कि, "इन लोगों से कहो कि वे तत्काल अपने आपको जला डालें तथा मर जायँ। उनका जिज़या कोई भी न छोड़ेगा। उन्हें यह विचार अपने हृदय से निकाल देना चाहिये।" जुन्नारदार कुछ दिन तक कूश्के शिकार में परेशानी के कारण अनशन किये पड़े रहे और उन्होंने अपने आपको मृत्यु के निकट पहुँचा दिया। जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि बादशाह उन्हें क्षमा न करेगा तो नगर के समस्त हिन्दू उस स्थान पर एकत्रित हुये और उन्होंने जुन्नारदारों से कहा कि "जिज़ये के कारण आत्म हत्या करनी उचित नहीं।" सभी हिन्दुओं ने जुन्नारदारों की ओर से जिज़या अदा करना स्वीकार कर लिया।

देहली में जिज़ये तीन प्रकार के थे। प्रथम ४० तन्के, द्वितीय २० तन्के, तृतीय १० तन्के। समस्त जुन्नारदारों ने अपनी दीन अवस्था का उल्लेख करके निवेदन किया कि उनसे (३८४) जिज़या अन्य मनुष्यों की अपेक्षा कुछ कम लिया जाय। फ़ीरोज़ शाह ने आदेश दिया कि एक मनुष्य से पंजाहगानी[1] तथा दस तन्के लिये जायँ। जुन्नारदारों से जिज़या प्राप्त करने के लिये पदाधिकारी नियुक्त हुये।

अध्याय ५

दो लम्बे आदमियों, एक ठिगने तथा दो दाढ़ी वाली स्त्रियों का हाल।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में बहुत से विचित्र लोग पैदा हुये। कुछ लोग लम्बे, कुछ ठिगने तथा कुछ विचित्र जानवर।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह थट्टा के युद्ध से लौटा तो देहली में एक ठिगना आदमी लाया गया। वह एक गज़ लम्बा था। उसके हाथ पैर भी उसकी लम्बाई के अनुसार (३८५) थे। उसका सिर प्रौढ़ मनुष्य के सिर के समान था। उसे कुछ समय तक देहली तथा फ़ीरोज़ाबाद में रखा गया। लोग चारों ओर से उसे देखने आते थे। इस इतिहासकार ने भी उसे देखा था।

सुल्तान के राज्यकाल में जाल पहाड़ से दो बहुत लम्बे मनुष्य लाये गये। वे काले काले थे। हमारे काल के लम्बे मनुष्य उनकी कमर तक पहुंचते थे। इस इतिहासकार ने उन्हें देखा था। वे मनसुख कहलाते थे। सुल्तान के आदेशानुसार उन्हें कुछ समय तक शहर में रखा गया। वे जब चलते थे तो मानो कोई लाट हिलती आ रही हो।

सुल्तान के राज्यकाल में दो स्त्रियाँ लाई गईं जिनके दाढ़ी थी। वे साधारण डील डौल की थीं और काफ़िर ज्ञात होती थीं। उनके स्तन भी थे और दाढ़ी भी। दोनों काली थीं और दोनों के पति थे। वे दोनों हिन्दुस्तान से लाई गई थीं। इस इतिहासकार (३८६) ने उन्हें देखा था।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में तीन पाँव की एक भेड़ लाई गई। वह चितकबरी थी। उसके दो आगे के पैर थे और एक पिछला। दूसरे पैर के स्थान पर

१ ५० जीतल। इसका अर्थ पंजाहगानी वाले १० तन्के भी हो सकता है।

गाय के स्तन के समान एक स्तन दिखाई पड़ता था। वह तीन पैर से इच्छानुसार चल सकती थी। वह इच्छानुसार खा पी सकती थी। कुछ समय तक वह भेड़ शहंशाह के दरबार के समक्ष बंधी रही अपितु कूश्के फ़ीरोज़ाबाद के मध्य में रक्खी गई ताकि लोग उसे देख सकें।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में एक कौआ लाया गया जिसका पूरा शरीर (३८७) काला था, केवल पाँव तथा चोंच लाल थे। कुछ समय तक उस कौये को दरबार में रखा गया। इस इतिहासकार ने उसे देखा था।

इसी प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में एक तोता लाया गया जो सफ़ेद रंग का था, उसकी चोंच तथा पाँव काले थे। सुल्तान के आदेशानुसार उसे कूश्के नुज़ूल में रखा गया। एक समुद्रीय मछली का सिर लाया गया जो सूंड सहित हाथी के सिर के बराबर था। वह सिर भी कुछ समय तक दरबार के समक्ष रखा गया। सुल्तान के राज्यकाल में एक गाय लाई गई जिसके पाँच पाँव थे। इस इतिहासकार ने उसे देखा था। वह सफ़ेद रंग की थी। उसका पाँचवाँ पांव उसकी गर्दन से निकला हुआ था और कंधे तक (३८८) लटका था किन्तु वह उस पाँचवें पैर से कोई काम न ले सकती थी। वह मनुष्य के हाथ की छठी अंगुली के समान था। कुछ समय तक वह दरबार के समक्ष बंधी रही। एक गाय के जिसे इस इतिहासकार ने देखा था अगले दोनों खुर घोड़े के खुर के समान बिना फटे थे और पिछले दोनों खुर गाय के खुरों के समान फटे थे। वह सफ़ेद रंग की दिखाई पड़ती थी।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के कुछ ख़ानों तथा मलिकों का हाल— प्रत्येक बादशाह के इतिहासकारों के इतिहास के अनुसार।

अध्याय ६

ख़ाने आज़म तातार ख़ाँ।

(३८९) ख़ाने आज़म तातार ख़ाँ तुर्क वंशीय था। एक विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ के राज्यकाल में ख़ुरासान के एक बादशाह ने मुल्तान तथा दीबालपुर पर आक्रमण किया। उसकी एक पत्नी बड़ी रूपवती थी और बादशाह को उसके बिना एक क्षण भर भी चैन न मिलता था। वह भी इस आक्रमण में उसके साथ थी। वह गर्भवती थी। जब बादशाह मुल्तान तथा दीबालपुर की हद में पहुँचा तो उसके पुत्र का जन्म हो गया। संयोग से उसी रात्रि में सुल्तान तुग़लुक़ ने उस बादशाह पर छापा मारा। वे लोग हार कर भाग खड़े हुये और यह शिशु उनके भागते समय झूले में रह गया। सेना वाले शिशु को सुल्तान के पास लाये। सुल्तान तुग़लुक़ को वह बड़ा अच्छा लगा और उसने अपने पुत्र के समान उसका पालन पोषण किया। उसका नाम तातार मलिक रखा।

(३९०) वह सुल्तान तुग़लुक़ के राज्यकाल में अल्पावस्था में था। सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल में बड़ा हुआ और बड़ा वीर तथा योद्धा बन गया। अपनी वीरता तथा पौरुष्य के कारण उसे सेना के मध्य भाग (के अधिकारी) का स्थान प्राप्त होने लगा। इस इतिहास-कार को ज्ञात हुआ है कि एक बार सुल्तान मुहम्मद तातार मलिक से किसी कारण रुष्ट हो गया और उसे उसने एक दूसरे स्थान पर भिजवा दिया।

तातार मलिक ने उस स्थान से अपनी दशा का उल्लेख कुछ छन्दों में करके सुल्तान मुहम्मद के पास भेजा। सुल्तान ने उन्हें पढ़ कर उसे अपने पास बुलवा लिया और उस पर अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में उसे तातार ख़ाँ की (३९१) उपाधि प्रदान हुई और मख़मल का चत्र प्रदान किया गया। उसके चत्र के ऊपर सुनहरा हुमा[1] के स्थान पर सुनहरा मोर था। सुनहरा मोर विशेष कर सुल्तानों के चत्र पर होता है। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सहने ग़ुलों में दरबार करता तथा बारजा (दरबार) में बैठता तो उसके दाईं ओर, जो सर्वदा वज़ीर का स्थान होता है, तातार ख़ाँ बैठता था और बाईं ओर ख़ाने जहाँ मक़बूल बैठता था यद्यपि ख़ाने जहाँ वज़ीर था। उसके निधन के उपरान्त ख़ाने जहाँ दाईं ओर वज़ीरों के स्थान पर बैठने लगा।

फ़ीरोज़ शाह को तातार ख़ाँ पर पूर्ण विश्वास था। राज्य-व्यवस्था की समस्याओं के विषय में वह अधिकतर उससे परामर्श किया करता था और उसके परामर्श के अनुसार शासन प्रबन्ध करता था। वह सुल्तान के हितैषी मित्रों के समान था। उसमें बड़ी योग्यता थी। (३९२) ईश्वर की कृपा से उसने हज किया। तातार ख़ाँ के साथ आलिम तथा सूफ़ी रहा करते थे। तफ़सीरे तातारख़ानी[2] जो संसार में प्रसिद्ध है उसकी संकलन की हुई थी। तफ़सीर[3] का संकलन करने के लिए उसने समस्त तफ़सीरों को एकत्र किया और सभी आलिमों को उपस्थित किया। प्रत्येक आयत तथा वाक्य पर तफ़सीर लेखकों के जो जो मत थे वह उसने अपनी तफ़सीर में लिखे थे। उसने तफ़सीर के लिए बड़ा परिश्रम किया। उसने समस्त मतभेदों को अपनी तफ़सीर में लिख कर उन लेखकों के हवाले दिये थे। इस प्रकार उसने समस्त तफ़सीरों को एक तफ़सीर में जमा कर दिया था। जब उसका संकलन हो गया तो उसने उसका नाम तफ़सीरे तातारख़ानी रक्खा।

इसी प्रकार धर्मनिष्ठ ख़ाने आज़म ने एक फ़तावा तैयार कराया वह इस प्रकार कि उसने देहली के सभी फ़तवों को एकत्र कराया। प्रत्येक मसअले[4] तथा प्रत्येक वाक्य पर जो मुफ़्तियों के बीच में मतभेद था अपने फ़तावा में लिखवाया। उसका नाम फ़तावाये तातारख़ानी रखा। प्रत्येक मुफ़्ती के मत के सम्बन्ध में उस मुफ़्ती का हवाला भी दिया। यह तीस जिल्दों (पुस्तकों) में सकलित हुआ।

तातार ख़ाँ शरीअत का महा पण्डित था। शरीअत के द्वारा उसने तरीक़त के भवन के द्वार को हक़ीक़त[5] से सजाया। उसने इन तीनों मक़ामों की गूढ़ समस्याओं के समझने (३९३) का बड़ा प्रयत्न किया था। (ईश्वर) की अत्यधिक कृपा एवं अपने अपार परिश्रम से तातार ख़ाँ ने इश्क़ की सीढ़ी पर पाँव रख दिया था। ईश्वर ने उसके हृदय में शौक़ के द्वार खोल दिये थे। ख़ान ने लिखा है:

छन्द

'तू ने कहा कि तातार ख़ाँ प्राचीन दास है।
हाव भाव ऐसा दिखाया कि मानो न पहचानता हो।'

---

१ एक काल्पनिक पक्षी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि यदि किसी पर उसकी छाया पड़ जाय तो वह बादशाह हो जाय।

२ तातार ख़ाँ द्वारा रचित क़ुरान की टीका।

३ क़ुरान की टीका।

४ समस्या।

५ तसव्वुफ़ के मार्ग के विभिन्न रूप।

उसे.........उसे शरा का इतना भय था कि जब वह विजयी सेना के साथ जाता तो वह अपनी कनीज़ों को घोड़े पर बैठा कर न ले जाता यद्यपि खानों तथा मलिकों में यह प्रथा थी कि वे अपनी कनीज़ों को साथ ले जाते थे। वह उन्हें गरदून पर जिसे हिन्दी में भरकर (३९४) कहते हैं ले जाता था। खान ने परदे के लिये तख़्त के परदे तैयार कराये थे और उन्हें कोठरी के समान बना दिया था। गरदून में ताला लगा दिया जाता था जिससे अन्य लोगों की दृष्टि उन पर न पड़ सके। ईश्वर ने उसे सभी उत्कृष्ट गुण प्रदान किये थे। शहंशाह के सिंहासनारोहण के कुछ समय उपरान्त उसका निधन हुआ।

अध्याय ७

खाने जहाँ।

उसका नाम मक़बूल था। उसे जाहिलियत (मुसलमान होने के पूर्व) के समय कुन्नू कहा जाता था। वह तिलंग का निवासी था। जाहिलियत के समय वह तिलंग के राय का (३९५) बहुत बड़ा विश्वासपात्र था। जब सुल्तान मुहम्मद ने तिलंग के राय को देहली की ओर भेजा तो मार्ग में राय नरक में पहुँच गया। खाने जहाँ सुल्तान मुहम्मद के समक्ष लाया गया। वह मुसलमान हो गया।..........सुल्तान मुहम्मद ने उसका नाम मक़बूल रखा और उस पर बड़ी कृपा तथा दया रखने लगा।

सुल्तान ने खाने जहाँ में सभी प्रकार के गुण देख कर उसे देहली नगर की नयाबते विज़ारत[1] देदी। वह परवानों में निशान (मुहर) करता और अपने हस्ताक्षर बनाता था। वह हस्ताक्षर में अपने आप को (मक़बूल बन्दये मुहम्मद तुग़लुक़[2]) मक़बूल मुहम्मद तुग़लुक़ का दास लिखता था। यद्यपि वह पढ़ना लिखना न जानता था किन्तु वह बहुत बड़ा बुद्धिमान् था। उसने अपनी बुद्धि से राजधानी की शोभा बढ़ा दी थी।

(३९६) सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ ने आरम्भ में उसकी उपाधि क़िवामुलमुल्क रक्खी। उसे मुल्तान की अक़्ता प्रदान की। तत्पश्चात् उसे नायब वज़ीर नियुक्त किया। उन दिनों ख्वाजये जहाँ सुल्तान मुहम्मद का वज़ीर था। वह बड़ा अच्छा शासक तथा प्रबन्धक था। उसने दीवाने विज़ारत का कार्य बड़ी योग्यता से किया। अक़्ताओं के मुक़्तों को ख्वाजये जहाँ का अधिक भय न रहता था। वे सब क़िवामुलमुल्क से बहुत भय करते थे। जब वह किसी अक़्ता के अधिकारी की भर्त्सना करना चाहता तो क़िवामुलमुल्क को सौंप देता। क़िवामुलमुल्क पूछताछ के समय बड़ी कठोरता दिखाता था। इसी प्रकार जब धर्मनिष्ठ ख्वाजये जहाँ दीवान से उठ जाता तो क़िवामुलमुल्क दीवानदारी (दीवान का कार्य) करता और मुक़्तों से बड़ी निष्ठुरता करता। शाही खज़ाने में अपार धन सम्पत्ति जमा करा लेता। ख्वाजये जहाँ केवल नाममात्र को था। दीवाने विज़ारत के कार्य क़िवामुलमुल्क की बुद्धिमत्ता द्वारा सम्पन्न होते थे।

खाने जहाँ को सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल में भी गौरव प्राप्त हो गया था। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का राज्यकाल प्रारम्भ हुआ तो ख्वाजये जहाँ इतनी योग्यता तथा बुद्धिमत्ता के होते हुये भी सुल्तान का विरोधी बन गया।............

(३९७) वह नित्य मसनद (गद्दी) पर बैठता। अक़्ताओं के मुक़्तों का मुहासेबा तथा मामेलात के पदाधिकारियों का हिसाब किताब बड़ी सावधानी से करता। बैतुल माल के

---

१ नायब वज़ीर बना दिया।

२ मुहम्मद तुग़लुक़ का दास।

हिस्से का शेष कर वसूल करता। प्रतिदिन खज़ाने का रोज़नामा उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता। वज़ीर निरन्तर चेतावनी देता रहता था कि रोज़ाना अपार धन खज़ाने में पहुँचता रहे। यदि किसी दिन शाही खज़ाने में कुछ कम (धन) पहुँचता तो उस दिन वज़ीर समस्त कारकुनों तथा कारगुज़ारों पर बड़ा रुष्ट होता। यहाँ तक कि उस दिन सोच में रहता तथा चिन्ता के कारण भोजन न करता और कहता, "राज्य तथा शासन का आधार धन है। यदि खज़ाने में धन की कमी हो जाय अथवा किसी अन्य स्थान पर नष्ट हो जाय तो राज्य की नीवें में दोष (३९८) आ जाता है। यदि, ईश्वर न करे, बादशाहों का खज़ाना किसी कारण रिक्त हो जाय तो उस राज्य का स्थिर रहना तथा उस सल्तनत का आराम बड़ा ही कठिन हो जाता है।" इसी कारण वज़ीर रात दिन धन एकत्र करने में तल्लीन रहता था।.........

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह किसी युद्ध हेतु अथवा शिकार के लिये प्रस्थान करता तो खाने जहाँ वज़ीरे ममालिक को शहर में नायबे ग़ैबत[1] के स्थान पर छोड़ जाता। वज़ीर, प्रसिद्ध नायबों की भाँति दूसरे तीसरे दिन शहर (देहली) के आसपास चक्कर लगाता। अपना आतंक लोगों को दिखाता। उसकी सवारी बड़े शान से निकलती थी। अत्यधिक सेना, हाथी, असंख्य पदाति समस्त पुत्र, नाती, जामाता तथा दास ताज़ी तथा दरियाई घोड़ों पर सवार, सफ़ेद पेटी बाँधे हुये, बहुमूल्य टोपी पहने अस्त्र शस्त्र लिये फ़ीरोज़ाबाद से शहर देहली आते थे। लोग आराम से थे और शासन भलीभाँति होता था।

(३९९) इस इतिहासकार के माता-पिता ने उसे बताया है कि फ़ीरोज़ शाह अपने राज्यारोहण से सात वर्ष तक शहर देहली में १३ दिन तक रहा। प्रत्येक बार जब वह शहर में आता तो गिनती के कुछ दिन शहर में रहकर पुनः दूसरी ओर प्रस्थान कर देता। खाने जहाँ मक़बूल बुद्धिमान वज़ीरों की भाँति समस्त राज्य को सुशासित रखता। उसके पास असंख्य सेना तथा अगणित हशम[2] थे। उसके पुत्रों, जामाताओं तथा नातियों की कोई सीमा न थी। उसके दास बड़े बुद्धिमान् तथा वीर थे। वह स्वयं बड़ा राजभक्त तथा सुल्तान का हितैषी वज़ीर था। जब सुल्तान ने खाने जहाँ के भरोसे पर कुछ वर्ष निरन्तर युद्ध किये और विरोधियों पर कठोरता की तो प्रत्येक विद्रोही आज्ञाकारी बन गया। खाने जहाँ मक़बूल की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने आक्रमण करना पूर्णतः त्याग दिया। यदि कहा जाता तो केवल आसपास चक्कर लगाता।...........

खाने जहाँ के बहुत से पुत्र थे। उसे स्त्रियों से बड़ी रुचि थी। वह स्त्रियाँ एकत्र करने (४००) का बड़ा प्रयत्न किया करता था। उसने अपने अन्तःपुर में बहुत सी रूपवती कनीज़ें एकत्र की थीं। समाचार वाहकों का कथन है कि उसके अन्तःपुर में दो हज़ार रूम तथा चीन की कनीज़ें थीं। प्रत्येक अपने शरीर को जड़ाऊ वस्त्र से विभूषित करती थी। खाने जहाँ राज्य व्यवस्था के कार्य में इतना व्यस्त होने पर भी अपना समय अन्तःपुर में व्यतीत करता था। उसकी सन्तान की संख्या बहुत अधिक थी।

जब सुल्तान को यह हाल ज्ञात हुआ तो उसने आदेश दे दिया कि खाने जहाँ के यहाँ जिस पुत्र का जन्म हो उसके लिए तत्काल ११००० तन्के वृत्ति निश्चित की जाय और सफ़ेद पेटी प्रदान की जाय। खाने जहाँ की जिस पुत्री का विवाह हो, तो उसके जामाता की वृत्ति १५००० तन्के निश्चित की जाय तथा सफ़ेद पेटी प्रदान हो। खाने जहाँ को इतना ऐश्वर्य प्राप्त था कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह कहा करता था कि देहली का बादशाह खाने जहाँ है।......

१ अपनी अनुपस्थिति में अपना प्रतिनिधि।

२ परिजन।

(४०१) यदि किसी श्रामिल तथा कारकुन द्वारा किसी लोभवश किसी अपराध अथवा धन-अपहरण का पता चलता तो उसको उस कारण राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया जाता। खाने जहाँ जो संसार भर में सबसे अधिक बुद्धिमान था शासन तथा धन सम्बन्धी समस्याओं के समाधान में बड़ा प्रयत्नशील रहता था। वह सुल्तान का क्रोध भी शान्त करता था। इस इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि उस सुल्तान के फ़र्राशखाने में एक जड़ाऊ जूता उस कारखाने के अधिकारियों को सौंपा गया था। उसका मूल्य ८०,००० तन्के था। संयोग से कारकुन आपस में कारकुनी की चतुराई से संगठित हुये और उन्होंने लखनौती के उपहारों में उसे दिखाकर आपस में बाँट लिया और ले गये।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान को उसकी स्मृति हुई। कर्मचारियों ने, जो असावधान लोगों में सम्मिलित होते हैं निवेदन किया कि उसे लखनौती के उपहारों में भेज दिया गया था। सुल्तान फ़ीरोज शाह को सन्देह हुआ कि इन कारकुनों ने जूता नष्ट कर दिया। उसने उनका कथन स्वीकार न किया। उसने उन्हें दंड देना निश्चय किया। वज़ीर उस समय (४०२) उपस्थित था और सब कुछ देख रहा था। उसने बादशाह का क्रोध देख कर सोचा कि शहंशाह इन कारकुनों को मात मार्गों पर चलता कर देगा।[1] वह सुल्तान के समक्ष खड़ा हो गया और क्रोध से उन पदाधिकारियों की आसतीन पकड़ कर बड़ी कठोरता से उन्हें हटा दिया। जब वे बादशाह के सामने से हाजिबों के निकट पहुँचे तो उसने उन असावधान आमिलों से कहा, "हे! मृत्यु के निकट पहुंचे हुये तुम्हारे प्राण बचा दिए। जूते का मूल्य ८०,००० तन्का खज़ाने में पहुँचा दो।" दूसरे दिन बादशाह ने हितैषी वज़ीर से पूछा कि 'जूते वाले कारकुनों का क्या हुआ?' वज़ीर ने कहा कि '८०,००० तन्के जूते का मूल्य शहंशाह के खज़ाने में पहुंच गया, चाहे जूता उपहार में लखनौती गया हो अथवा न गया हो।'

(४०३) कहा जाता है कि सुल्तान थट्टा के युद्ध से लौटकर सालोरा के कूश्क का निर्माण करवाने लगा।............खाने जहाँ वज़ीर फ़ीरोज़ाबाद में था और विज़ारत का कार्य किया करता था। प्रत्येक दिन मसनद (गद्दी) पर बैठता था और आमिलों के कार्य की जाँच किया करता था। प्रत्येक शनिवार को सालोरा जाता था और शहंशाह को पूर्ण हाल बताता था। जब सुल्तान को खाने जहाँ के हितैषी होने का पूरा प्रमाण मिल गया तो उसने सोचा कि खाने जहाँ को विज़ारत के सम्मान से ऊँचा कोई सम्मान मिलना चाहिए। एक दिन सुल्तान ने दो विश्वस्त मलिकों, मलिक साहन तथा सैयिदुल हुज्जाब को सालोरा से फ़ीरोज़ाबाद भेज कर खाने जहाँ के पास अपनी ओर से यह सूचना पहुंचवाई कि "मैं तेरा सम्मान बढ़ाना चाहता हूं। मसनद तेरे लिये उचित नहीं। तू राजसिंहासन के बराबर ज़रदोज़ी[2] निहालचा[3] (४०४) बिछाया कर और दरबार के समय मेरे राजसिंहासन के निकट बैठा कर और मसनद अपनी ओर से ज़फ़र खाँ को देदे इसलिये कि राजसिंहासन के निकट ज़रदोज़ी निहालचे का सम्मान मसनद के सम्मान से अधिक है।"

जब वे खाने जहाँ के पास फ़ीरोज़ाबाद पहुंचे और सुल्तान का संदेश सुनाया तो उसने सोचा कि 'ऐसा ज्ञात होता है कि सुल्तान इस बहाने से मुझ से मसनद लेना तथा विज़ारत से पदच्युत करना चाहता है और ज़फ़र खाँ को दीवाने विज़ारत में बैठाना चाहता है।' उसने कहा 'मसनद भी संसार के स्वामी की प्रदान की हुई है और ज़रदोज़ी का निहालचा भी अन्नदाता का है किन्तु जिस दिन मैंने सरसुती की सीमा में बादशाह के चरण चूमे थे तो उस

---

१ इधर उधर भेज देगा।

२ सोने के तारों के काम का।

३ गद्दा।

दिन शहंशाह ने तौक़ी[1] से मुझे विज़ारत की मसनद स्वयं लिखी थी और यह भी लिखा था कि मेरे तथा मेरी सन्तान के राज्यकाल में मसनद तथा विज़ारत का पद मेरे तथा मेरे पुत्रों के अतिरिक्त किसी को न मिलेगा। दास के पास वह तौक़ी विद्यमान है।" वज़ीर ने वह तौक़ी मलिक साहन को देकर कहा कि "तुम यह निवेदन कर देना कि शहंशाह अपना (४०५) लिखा हुआ स्वयं फाड़ डालें और मसनद ज़फ़र खाँ को दे दें।" बादशाह ने यह सुनकर कहा कि "ईश्वर न करे मैं खाने जहाँ को पदच्युत करूं। मैं तो उसका सम्मान बढ़ाना चाहता था। यदि उसे अच्छा नहीं लगता तो वह अपनी मसनद पर बैठे।"

दूसरे दिन जब खाने जहाँ दीवाने विज़ारत का विवरण देने फ़ीरोज़ाबाद से सालोरा आया तो सुल्तान ने उसे बताया कि वह केवल उसका सम्मान बढ़ाना चाहता था किन्तु उसने और ही बात सोच ली। खाने जहाँ ने उत्तर दिया "मैं असीमित सम्मान का आकांक्षी नहीं। यह मेरे किस काम का कि मैं ज़रदोज़ी निहालचा राजसिंहासन के बराबर बिछाऊँ। यह मेरे ऊपर विशेष कृपा होगी किन्तु शहर देहली के साधारण लोग मुझे इस स्थान पर कहाँ देख सकेंगे। वे यही कहेंगे कि शहंशाह ने दास को (४०६) पदच्युत कर दिया। जब दास अपनी मसनद पर आसीन होता है तो देहली के सब लोग देखने आते हैं और कहते हैं कि खाने जहाँ मसनद पर बैठा है। इसी कारण दास मसनद का आकांक्षी है। ज़रदोज़ी का निहालचा जिसे इच्छा हो दे दिया जाय।" सुल्तान इस बात पर मुसकराने लगा।

ऐनुलमुल्क का पदच्युत होना

ऐनुलमुल्क ऐन माहरू कहा जाता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में इशराफ़े ममालिक[2] तथा दीवाने विज़ारत में इजलास करता था। ऐनुलमुल्क बड़ा बुद्धिमान् तथा योग्य व्यक्ति था। इस इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि (४०७) सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल में ऐनुलमुल्क के भाइयों ने कोई अनुचित कार्य कर दिया। सुल्तान मुहम्मद ने उसे वास्तविक रूप से धमकाया। उसने कुछ दिन उपरान्त दरबारे आम किया। सुल्तान मुहम्मद के राजसिंहासन के निकट एक ज़ीलूचा[3] बिछाया गया। सुल्तान ने उस दिन समस्त क़ाज़ियों, आलिमों, सूफ़ियों, खानों, मलिकों, प्रतिष्ठित लोगों तथा प्रत्येक दिशा के खास व आम लोगों को बुलवाया। सुल्तान मुहम्मद ने उनसे प्रश्न किया कि "यदि किसी का बहुमूल्य मोती तथा रत्न खो जाय और कुछ समय उपरान्त उसे वह मलिन स्थान पर पाये तो वह उसे ले ले अथवा नहीं?" लोगों ने उत्तर (४०८) दिया "ले लेना चाहिये। छोड़ना उचित नहीं।" सुल्तान ने यह सुनकर ऐनुलमुल्क की ओर संकेत किया और कहा, "हमारा रत्न ऐनुलमुल्क है कि अपने भाइयों के कारण व्यर्थ में मलिन स्थान पर पहुँच गया था। हमने अपना मोती पा लिया।" उस दिन उसने आदेश दिया कि ऐनुलमुल्क को उस ज़ीलूचे पर बैठाया जाय। संक्षेप में ऐनुलमुल्क ऐसा योग्य तथा बुद्धिमान् था किन्तु उसे अधिक सम्मान प्राप्त न था। उसने बहुत सी पुस्तकें मुहम्मद शाह तथा फ़ीरोज शाह के राज्यकाल में लिखीं। उनमें से एक तरस्सुले ऐनुलमुल्की[4] है जोकि संसार में बड़ी प्रसिद्ध है।

---

१ फ़रमाने तौक़ी।

२ मुशरिफ़े ममालिक।

३ ऊनी क़ालीन।

४ ऐनुलमुल्क के पत्रों का संग्रह।

जब ऐनुलमुल्क को फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में देहली के राज्य की इशराफ़े ममालिक[1] प्राप्त हुई तो वह इशराफ़ के कार्यों के सम्पन्न करने का विशेष प्रयत्न किया करता था। दीवाने विज़ारत में बैठता था। संयोग से ऐनुलमुल्क का ख़ाने जहाँ वज़ीर से मतभेद (४०९) हो गया दोनों ने दरबार में बैठ कर बड़ी अनुचित बातें तथा बड़े नीच प्रकार का झगड़ा किया। प्रत्येक ने अपनी अपनी सीमा से बढ़ कर बातें कीं। एक दिन वज़ीर ने ऐनुल मुल्क से कहा कि "मुशरिफ़ को मुफ़स्सल (सविस्तार) व्यय के काग़ज़ से क्या काम जो वह मुक़्तों से मुफ़स्सल (व्यय का उल्लेख) माँगता है। मुशरिफ़ जमा का अधिकारी है[2]। व्यय की जाँच मुस्तौफ़ी का विशेष कर्त्तव्य है।" इस पर ऐनुलमुल्क ने कहा कि "मुस्तौफ़ी का सविस्तार जमा के काग़ज़ से क्या कार्य ?"

दोनों आदमी वाद विवाद करते और एक दूसरे को बुरा भला कहते सुल्तान के पास पहुँचे। मुशरिफ़ तथा मुस्तौफ़ी के कर्त्तव्यों का राजसिंहासन के समक्ष उल्लेख किया। फ़ीरोज़ शाह ने कहा कि अक्ताओं के मुक़्तों तथा मामलों के कारकुनों को आदेश दिया जाय कि वे दीवाने इशराफ़ में जमये मुफ़स्सल[3] द तथा ख़र्चे मुन्तख़ब[4] और दीवाने इसतीफ़ा में ख़र्चे मुफ़स्सल[5] दें तथा जमये मुन्तख़ब[6]। दीवाने विज़ारत में जमा व ख़र्चे मुफ़स्सल दें। सुल्तान के इन्हीं शब्दों का दीवाने विजारत द्वारा पालन होने लगा। इससे पूर्व समस्त सुल्तानों के राज्यकाल में समस्त कारकुन प्रत्येक तीनों दीवानों में मुफ़स्सल तथा मुतकैफ़[7] काग़ज़ प्रस्तुत करते थे।

(४१०) ख़ाने जहाँ तथा ऐनुलमुल्क का झगड़ा इस सीमा को पहुँच गया था कि अनेक बार ख़ाने जहाँ ने ऐनुलमुल्क से कठोर शब्द कहे। ऐनुलमुल्क भी ख़ाने जहाँ से अनुचित शब्द कहा करता था। कोई बात गुप्त न रखता था। एक बार फ़ीरोज़ शाह ने शिकार के लिए शहर देहली से प्रस्थान किया। ख़ाने जहाँ मुक़बूल तथा ऐनुलमुल्क भी साथ थे। सुल्तान एक पड़ाव पर उतरा हुआ था। ऐनुलमुल्क मध्याह्न में सहसा अपने शिविर से सवार होकर ख़ाने जहाँ के सरायचा[8] के द्वार के समक्ष आया और घोड़े से उतर कर ख़ाने जहाँ के सरायचा में चला गया। ख़ाने जहाँ के विश्वासपात्रों ने ख़ान से ऐनुलमुल्क के आने की सूचना दी। जब तक ख़ाने जहाँ अपने स्थान से आकर ऐनुलमुल्क का स्वागत करता, इसी बीच में ऐनुलमुल्क के एक निकटवर्ती ने उससे कहा, 'यह ख़ाने जहाँ का सरायचा है।' इस पर ऐनुलमुल्क अपने आदमियों से बड़ा रुष्ट हुआ और उसने कहा, "जब मैं वज़ीर के सरायचे के समक्ष उतरा था तभी तुम लोगों ने क्यों न बताया ?" अतः ऐनुलमुल्क ख़ाने जहाँ से भेंट किये बिना उसके सरायचे के बाहर निकल गया और सुल्तान के द्वार पर पहुँचा। जब ऐनुल- (४११) मुल्क के लौट जाने के विषय में ख़ाने जहाँ ने सुना तो वह भी सवार होकर सुल्तान

१ मुशरिफ़े ममालिक का पद।
२ आय की देख रेख का अधिकारी है।
३ आय का सविस्तार लेखा।
४ व्यय का संक्षिप्त लेखा।
५ व्यय का सविस्तार लेखा।
६ आय का संक्षिप्त लेखा।
७ सविस्तार विवरण सहित लेखा।
८ शिविर।

के शिविर के द्वार पर पहुँचा और ऐनुलमुल्क के आने तथा लौट जाने का हाल शहंशाह से भली भाँति कहा।

फ़ीरोज़ शाह ऐनुलमुल्क को बुलाकर मुसकराया और उसने कहा "ख्वाजा ऐनुद्दीन ! खाने जहाँ के सरायचे में जाने तथा बिना भेंट किये लौट आने का क्या कारण था ? भेंट कर लेनी चाहिये थी।" ऐनुलमुल्क ने उत्तर दिया, "दास खाने जहाँ के शिविर में न गया था। विशेषकर शाही शिविर के द्वार पर आ रहा था। क्योंकि वज़ीर के दायरे तथा बादशाह के दायरे में कोई अन्तर नहीं इसलिये कि लाल सरायचा बादशाह का भी है और वज़ीर का भी है, देहलीज़, बारगाह, तथा ख्वाबगाह बादशाह के भी हैं और वज़ीर के भी, हाथी बादशाह के द्वार पर भी हैं तथा वज़ीर के भी, अतः दास इस भ्रम से कि यह शाही सरायचा है, खाने जहाँ के द्वार पर उतर पड़ा।"

(४१२) खाने जहाँ ने यह सुनकर कहा, "दास इस राज्य में निवास त्याग कर काबे चला जायगा इसलिये कि अभी तक हम लोगों के बीच में धन सम्बन्धी मतभेद था और जिस प्रकार है वह चला जाता था। इस समय चोर ऐनुलमुल्क ने दास को शहंशाह के बराबर कर दिया। इससे मुझे अपने प्राणों का बड़ा भय होने लगा। अब मुझे हज की तैयारी कर लेनी चाहिये।" यह सुनकर शहंशाह उस स्थान से उठ कर एकान्त में चला गया और दोनों के विरोध के कारण दुःख की अवस्था में बैठ गया।

दोनों की शत्रुता इतनी बढ़ गई कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। कुछ समय तक दोनों का व्यवहार इसी प्रकार रहा। इसी बीच में वज़ीर ने मुशरिफ़ से कहा, "हे दुष्ट हराम खोर !" ऐनुलमुल्क ने भी वज़ीर को इसी प्रकार का बुरा उत्तर दिया और उसे अपमानित किया। उस समय सुल्तान एकान्त में आनन्द मना रहा था। वज़ीर सुल्तान के पास उसी स्थान पर पहुंच गया। फ़ीरोज़ शाह ने सुल्तान को अत्यधिक चिन्तित देखकर पूछा, "खाने जहाँ ! कुशल है अर्थात् इस समय बे मौक़ा कैसे पहुँच गया ?" वज़ीर ने कहा, (४१३) "ऐनुलमुल्क हराम खोर ने दीवान में बैठकर संसार के स्वामी के दास को अनुचित शब्द कहे। क्योंकि शहंशाह ने अपने दास को सम्मानित करके विज़ारत के पद पर आसीन करा दिया है तो फिर ऐसी अवस्था में ईर्ष्या के कारण कोई उसका अपमान करे तो दास का क्या स्थान रह जायगा ? शहंशाह कृपा करके मसनद ऐनुलमुल्क को प्रदान करदें।"

सुल्तान ने सोच कर उत्तर दिया, "खाने जहाँ ! दीवाने विज़ारत तुझे प्रदान कर दिया। दीवाने विज़ारत के अधिकारी तेरे अधीन हैं। जिसे तू रखे, वही रहेगा, जिसे तू पृथक् कर दे वह पदच्युत। यदि ऐनुलमुल्क अपमान करता है तो उसे इशराफ़ से पृथक् करदे। इशराफ़े ममालिक किसी अन्य को दे दे।" इस अवसर पर सुल्तान ने खाने जहाँ को खास खिलअत प्रदान की और वह खुश खुश अपने घर को चल दिया। वहाँ से उसने दीवाने विज़ारत के शहना को ऐनुलमुल्क के पास भेजा और उससे कहा कि, "ऐनुलमुल्क के पास (४१४) यह फ़रमान पहुँचा दे कि उसे इशराफ़े ममालिक से पदच्युत कर दिया गया।"

खाने जहाँ को इतना बड़ा सम्मान प्राप्त था। जब-जब बादशाह शिकार की सवारी से लौटकर शहर (देहली) आता और सर्वप्रथम जब खाने जहाँ सुल्तान के पाँव पर गिरता तो सुल्तान घोड़े से उतर पड़ता। उसे आलिंगन करता और उसके विषय में पूछताछ करता। जब तक खाने जहाँ जीवित रहा तब तक उसमें तथा सुल्तान में कोई भेद न था।

जब ऐनुलमुल्क इशराफ़ के पद से पृथक् कर दिया गया तो वह तीन दिन तक शाही दरबार में न गया। तीन दिन पश्चात् फ़ीरोज़ शाह के समक्ष अभिवादन के स्थान पर

अभिवादन करने गया। उस अवसर पर शहंशाह ने ऐनुलमुल्क को अपने निकट बुलवाया और ये शब्द कहे, "ख्वाजा ऐनुद्दीन सुन। विरोध के कारण राज्य नष्ट हो जाते हैं। सभी लोग, वृद्ध तथा युवक निराश हो जाते हैं। क्योंकि तेरा खाने जहाँ से विरोध है अतः तुझे मुल्तान, भक्खर तथा सिविस्तान की अक़्ता प्रदान की जाती है। अपनी अक़्ता को चला जा और वहाँ का कार्य कर।"

उसने यह फ़रमान सुनकर शहंशाह से निवेदन किया, "मैं अक़्ता में कार्य तथा वहाँ का प्रबन्ध करूँगा किन्तु दीवाने विज़ारत में हिसाब नहीं दे सकता। शहंशाह की सेवा में (४१५) प्रस्तुत करूँगा।" सुल्तान ने उत्तर दिया, "ख्वाजा ऐनुद्दीन! मैं मुल्तान की अक़्ता दीवाने विज़ारत से पृथक् करता हूँ। जो कुछ तू मुल्तान की अक़्ता में करेगा वह मुझे स्वीकर है। तेरा लिखना पर्याप्त है।" ऐनुलमुल्क ने इस शर्त पर मुल्तान की अक़्ता स्वीकार की।

जब ऐनुलमुल्क को खाने जहाँ के कारण इशराफ़े ममालिक से पदच्युत कर दिया गया तो फ़ीरोज़ शाह के विशेष पात्र एक स्थान पर एकत्र हुये तथा परस्पर कहने लगे कि "यह अच्छा न हुआ। आज उसे वज़ीर के कारण पदच्युत किया गया कल किसी अन्य की वज़ीर के कारण यही दशा होगी। वे सब मिलकर सुल्तान फ़ीरोज़ का हृदय खाने जहाँ से फेर दें और प्रयत्न करें जिससे खाने जहाँ का अपमान हो सके।" सुल्तान ने इस अवसर पर कहा (सोचा) "यदि ख्वाजा ऐनुद्दीन इस स्थान पर होता तो इस कार्य के विषय में उससे परामर्श किया जाता।" ऐनुलमुल्क मुल्तान की अक़्ता को प्रस्थान कर चुका था और देहली (४१६) से २४ कोस तक पहुँच गया था। शाह के पास ऐनुलमुल्क का फ़रमान पहुँचा कि "अपना माल अस्बाब वहीं छोड़कर शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जाय। सब कुशल है। शीघ्र आकर, सुनकर लौट जाए।" ऐनुलमुल्क के पास जैसे ही शहंशाह का फ़रमान पहुँचा तो वह शीघ्राति-शीघ्र देहली पहुँचा। बादशाह उन दरबारियों तथा ऐनुलमुल्क के साथ एकान्त में बैठ गया।

प्रत्येक हितैषी दास ने अपने हृदय तथा राज्य के हित की बात परामर्श-दाताओं के समान इस प्रकार कही, "वज़ीर को इतना सम्मान प्रदान करना कहाँ तक उचित है। उसके आचरण तथा कार्य की जाँच करानी चाहिये।" सुल्तान ने यह सुनकर इस बात का पता लगाने के लिये कि वे क्या कहते हैं, ऐनुलमुल्क की ओर मुख किया। ऐनुलमुल्क ने यह सुनकर राज्य के हितैषी परामर्श-दाताओं के समान कहा, "इन बातों पर सोचना तथा बुरे विचार हृदय में लाना राज्य की नीवँ में विघ्न डाल देता है। जो कोई इन बातों में प्रयत्नशील होता है वह हितैषी नहीं होता। खाने जहाँ बड़ा ही बुद्धिमान तथा योग्य वज़ीर है। उसके (४१७) हटा देने से न जाने क्या हो जायेगा। राज्य अपने स्थान पर रह जाय अथवा राज्य का जहाज़ हिलने लगे अथवा संसार दरिद्र हो जाय, (किसी को ज्ञात नहीं)।"

सुल्तान को ऐनुलमुल्क के शब्द बड़े अच्छे लगे और उसने ऐनुलमुल्क से इस विषय में परामर्श देने को कहा। उसने उत्तर दिया, "ऐसा नहीं कि यह बातें वज़ीर के कानों तक न पहुंची होंगी। उसे बुलाकर सब कुछ बता देना चाहिये जिससे उसके हृदय में कोई शंका अथवा भय हो तो उसका समाधान हो सके और वह निश्चिंत होकर राज्य का कार्य कर सके। यदि उसके हृदय में विभिन्न शंकायें रहेंगी तो वह अपने प्राण हथेली पर रखेगा और राज्य के कार्य न कर सकेगा। कुछ समय में राज्य के सभी कार्यों तथा शासन प्रबन्ध में विघ्न पड़ जायेगा।" कुछ लोगों ने जो इस घटना से सम्बन्धित थे, इस इतिहासकार को बताया है कि शहंशाह ने तत्काल खाने जहाँ को बुलवाया। जब वह लाया (४१८) गया तो उससे समस्त घटना का उल्लेख किया गया। वह इन सब बातों को सुनकर

चकित रह गया और बड़ा दुखी हुआ। सुल्तान ने उसे दुखी देख कर उसे स्वयं खिलअत पहनाई तथा बड़े सम्मान से विदा किया।

वज़ीर ने वहाँ से खुश खुश लौट कर ऐनुलमुल्क का आलिंगन किया और कहा, 'मुझे यह ज्ञात न था कि तुझको मुझसे इतना प्रेम है। यह मेरी भूल थी कि मैं तेरा विरोध किया करता था।' इस पर ऐनुलमुल्क ने कहा, "यह बात हृदय से निकालदे कि मैंने यह बात तेरे हित में कही है। मेरी तथा तेरी शत्रुता उसी प्रकार विद्यमान है। मैंने जो कुछ कहा वह राज्य तथा सल्तनत के हित में था।" खाने जहाँ ने ऐनुलमुल्क को अपने घर ले जाने की बड़ी इच्छा की किन्तु वह उसके घर न गया। सुल्तान ने यह सुनकर कहा :

'बुद्धिमान शत्रु जो प्राण के पीछे पड़ा हो,
उस मित्र से अच्छा है जो कि मूर्ख हो।'

(४१९) जब खाने जहाँ विज़ारत की गद्दी पर आसीन होता तो निज़ामुलमुल्क अमीर हुसेन अमीर मीरान नायब वज़ीर गद्दी के बराबर बाईं ओर बैठता था। उसके नीचे नायब वज़ीर मुशरिफ़ ममालिक बैठता था। उसके नीचे बरीदे ममालिक बैठता था। वज़ीर के दाईं ओर मुस्तौफ़ी बैठता था। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि मुस्तौफ़ी का स्थान सर्वदा मुशरिफ़ के नीचे होता है। जिन दिनों सुल्तान मुहम्मद की पुत्री के पुत्र मुहम्मद को, जो दो भाई थे—एक मुहम्मद, दूसरा मौदूद, फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में मुस्तौफ़ी का पद प्राप्त हुआ और उसकी उपाधि अज़ीज़ुलमुल्क निश्चित की गई, तो शहंशाह ने कहा, "अज़ीज़ुलमुल्क मेरे स्वामी की पुत्री का पुत्र है अतः वह मुशरिफ़ के नीचे किस प्रकार बैठ सकता है। यदि उसे मैं मुशरिफ़ के ऊपर बैठा दूँ तो इससे सुल्तानों की प्रथा पलट जायेगी।" इस कारण सुल्तान ने आदेश दिया कि क्योंकि दीवाने विज़ारत के समस्त पदाधिकारी खाने जहाँ के बाईं ओर बैठते हैं अतः अज़ीज़ुलमुल्क दाईं ओर बैठा करे। जिस समय शाही दरबार होता तो मुस्तौफ़ी, मुशरिफ़ से ऊँचे स्थान पर खड़ा होता।

(४२०) किन्तु नाज़िर तथा वुक़ूफ़ एवं उनके समस्त नायब, नायब वज़ीर के पीछे खड़े होते थे। इस सम्बन्ध में विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि वुक़ूफ़ी का पद भूतपूर्व पदाधिकारियों (की सूची) में न था। जब सुल्तान जलालुद्दीन खलजी देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ तो उसने नाना प्रकार के मिसदाक़हा (दान के कार्य) प्रारम्भ किये। सुल्तान जलालुद्दीन का एक सम्बन्धी उसे राज्य के कार्य में परामर्श दिया करता था। सुल्तान जलालुद्दीन उसे दीवाने विज़ारत के अधिकारियों में पद प्रदान करना चाहता था। पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि दीवाने विज़ारत में कोई पद नहीं। योग्य वज़ीर ने निवेदन किया कि यदि सुल्तान का आदेश हो तो किसी को पदच्युत कर दिया जाय और इसे पद प्रदान कर दिया जाय। सुल्तान जलालुद्दीन ने कहा कि "किसी को बिना किसी अपराध के पदच्युत कर देना उचित नहीं।" जब वज़ीर ने समझ लिया कि सुल्तान अपने उस सम्बन्धी को कोई पद देना नहीं चाहता है तो उस वज़ीर ने वुक़ूफ़ी का पद निकाला। नाज़िर का कर्त्तव्य यह होता है कि राज्य के समस्त आमिल दीवाने इशराफ़े ममालिक में जो राज्य की जमा (प्राप्ति का लेखा) प्रस्तुत करते हैं उनकी जाँच पड़ताल करे और वुक़ूफ़ राज्य के व्यय से परिचित रहे। सुल्तान जलालुद्दीन के निकट सम्बन्धी को वुक़ूफ़ी का पद प्राप्त हुआ। वह अपने कर्त्तव्य पालन हेतु बड़ा प्रयत्न शील रहने लगा। उस दिन से वुक़ूफ़ तथा नायब वुक़ूफ़ दीवाने विज़ारत के अधिकारियों में सम्मिलित हो गये। यदि दीवान के अधिकारियों के कर्तव्यों का उल्लेख किया जाय तो

लेता तो तत्काल पलंग से उतर कर उस आफ़ताबे से वज़ू कर लेता और पुनः सो जाता। किसी को न जगाता। अन्त में शेख़ निज़ामुद्दीन की पायंती स्थान पाया[1]।

सुल्तान ने ख़ाने जहाँ के निधन के समाचार पाकर आँखों में आँसू भर कर निश्चय किया कि तत्पश्चात् वह किसी बड़े युद्ध के लिए न निकलेगा। वह उसके लिए बहुत रोता था।

(४२५) मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि जिस समय ख़ाने जहाँ बिन (पुत्र) ख़ाने जहाँ का जन्म हुआ तो उस समय ख़ाने जहाँ मक़बूल मुल्तान की अक़्ता का स्वामी था। वह वहाँ के कार्यों तथा प्रबन्ध के विषय में बड़ा प्रयत्न किया करता था। उस समय सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह देहली में राज्य करता था। ख़ाने जहाँ मक़बूल ने पुत्र के जन्म का हाल सुल्तान मुहम्मद शाह को लिखा। ख़ाने जहाँ के पास देहली से फ़रमान पहुँचा कि इस पुत्र का नाम जोना शाह रखा जाय। इसी कारण ख़ाने जहाँ बिन (पुत्र) ख़ाने जहाँ को जोना शाह कहते थे।

सच्चे रावियों का यह भी कथन है कि ख़ाने जहाँ के जन्म के उपरान्त जब ख़ाने जहाँ मक़बूल उसे शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया के नाती शेख़ रुक्नुद्दीन के पास ले गया तो शेख़ रुक्नुद्दीन ने जोना शाह को देखकर कहा कि "क़िवामुलमुल्क यह शिशु बड़ा ही उत्तम होगा। तुझे इसके द्वारा पहचाना करेंगे।" उस समय ख़ाने जहाँ मक़बूल की उपाधि क़िवामुल-मुल्क थी।

(४२६) ख़ाने जहाँ मक़बूल के निधन के उपरान्त अंत्येष्टि क्रिया से निवृत्त होकर ख़ाने जहाँ के घर वाले सुल्तान के पास पहुँचे। फ़ीरोज़ शाह ने बड़ा शोक प्रकट किया और ख़ाने जहाँ की स्वामि-भक्ति सम्बन्धी एक एक बात का उल्लेख किया और शाही अनुकम्पा के द्वार वज़ीर के घर वालों के सम्बन्ध में खोल दिये। जोना शाह को विज़ारत का ख़िलअत प्रदान किया और उसकी उपाधि ख़ाने जहाँ बिन (पुत्र) ख़ाने जहाँ रखी।

यह ख़ाने जहाँ भी बड़ा ही योग्य बुद्धिमान् तथा समझदार था। सूझ बूझ तथा योग्यता में अद्वितीय था। जब सुल्तान का फरमान इस ख़ाने जहाँ को प्राप्त होता तो सुल्तान इस ख़ाने जहाँ को फ़रज़न्दम[2] लिखा करता था। ख़ाने जहाँ मक़बूल के निधन के उपरान्त यह ख़ाने जहाँ पूरे २० वर्ष तक राज्य-व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध में उसे परामर्श दिया करता था। जो परामर्श देता वह सुल्तान की इच्छा के अनुकुल होता था। सुल्तान हितैषी वज़ीर के परामर्श के अनुसार कार्य किया करता था। जब यह ख़ाने जहाँ सुल्तान के समक्ष होता तो वह किसी अन्य की ओर बात करने के लिए मुख न करता।

जब बादशाह यात्रा से लौट कर आता और राजधानी देहली की ओर वापस होता और जब वह नगर में प्रविष्ट होता तो ख़ाने जहाँ पा बोस[3] के लिये पहुँचता। जिस प्रकार सुल्तान ख़ाने जहाँ से पहली बार भेंट करने के लिये घोड़े से उतर कर उसका आलिंगन करता उसी प्रकार इस ख़ाने जहाँ से भी प्रथम बार भेंट करने हेतु वह घोड़े से उतर पड़ता और उसका (४२७) आलिंगन करता। उस पर अत्यधिक कृपादृष्टि, अनुकम्पा रखता तथा उसका पोषण एवं संरक्षण करता। ख़ाने जहाँ मक़बूल मुक़्तों से उपहार लिया करता था और उसके विषय में राजसिंहासन के समक्ष सूचना प्रस्तुत कर दिया करता था। उनके द्वारा वह राजसिंहासन के समक्ष उपहार प्रस्तुत किया करता था और उन्हें ख़ास कारख़ानों (सुल्तान के व्यक्तिगत

१ दफ़न हुआ।
२ मेरा पुत्र।
३ चरण चुम्बन।

कारख़ानों) में पहुँचा देता था। यह ख़ाने जहाँ मुक़्तों तथा किसी अन्य से एक दाँग अथवा दिरम न लेता था। प्रत्येक वर्ष सुस्वभाव वाले वज़ीरों के समान ४ लाख तन्के राज-सिंहासन के समक्ष उपहार स्वरूप भेंट करता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने देवी प्रेरणा से राज्य के सभी कार्य तथा सल्तनत की बागडोर ख़ाने जहाँ बिन (पुत्र) ख़ाने जहाँ को सौंप दी थी किन्तु भाग्यवश सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल के अन्त में ईर्ष्या रखने वालों ने राज्य की नीवँ में विघ्न डाल दिया और शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ (जो बाद में सुल्तान मुहम्मद हो गया था) तथा ख़ाने जहाँ में घोर शत्रुता उत्पन्न करादी और रत्न रूपी राज्य में अव्यवस्था पैदा करादी। इस कारण ईश्वर के आदेशानुसार देहली का समस्त राज्य उलट पलट हो गया। प्रत्येक गृह के निवासी वृद्ध से लेकर युवक तक सात मार्गों को हो लिये।[1] उन लोगों की (४२८) व्याकुलता का उल्लेख सम्भव नहीं। सभी छोटे बड़े मुग़लों द्वारा विध्वंस कर दिये गये। वज़ीर तथा शाहज़ादे की शत्रुता का हाल इस तुच्छ इतिहासकार ने सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह के हाल में लिखा है।

अध्याय ८

मलिक नायब बारबक के गौरव का हाल।

कहा जाता है कि मलेकुश्शर्क़ मलिक नायब बारबक शहंशाह का भाई था किन्तु अन्य माता से। उसका नाम इबराहीम था। वह शहंशाह का हितैषी रहने का बड़ा प्रयत्न किया करता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपने हितैषी भाई से बड़ा प्रेम किया करता था और नायब बारबक के पुत्रों को अपना पुत्र समझता था। उन दिनों उसके ख़ेल[2] को सिपाह (सेना) कहा जाता था और समस्त ख़ेलों से बढ़कर समझा जाता था। फ़ीरोज़ शाह ने मलिक नायब बारबक के पुत्रों को ख़ान की उपाधि प्रदान कर रखी थी। उनमें से एक ख़ेल ख़ाँ, दूसरा नुसरत ख़ाँ तथा तीसरा उमर ख़ाँ था। इसी प्रकार शहंशाह ने छः (४२९) बहुत बड़े हाथी मलिक नायब बारबक को बारगीरी[3] के लिये दे दिये थे। जब मलिक नायब बारबक राज-भवन के द्वार पर आता तो हाथी मलिक के आगे आगे आते थे। हितैषी मलिक नायब बारबक तथा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह में इतना प्रेम था कि जब सुल्तान भोजन करता तभी वह भी भोजन करता। यदि कभी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह नफ़ल[4] रोज़े की नीयत करता तो मलिक नायब बारबक भी उससे अत्यधिक प्रेम के कारण रोज़े की नीयत करता। जिस दिन सुल्तान पान न खाता मलिक बारबक भी मुँह में पान न डालता। जब सुल्तान पान मुँह में रखता तो आबदाराने ख़ास, जो सुल्तान के विश्वास-पात्र होते थे, इस बात की सूचना मलिक नायब बारबक को पहुँचा देते थे कि अन्नदाता ने इस समय पान खाया है। उस समय मलिक भी पान खाता था। यदि कभी सुल्तान रुग्ण अथवा अस्वस्थ होने के कारण उपवास करता तो उस दिन मलिक नायब बारबक भी उपवास करता। इस प्रकार (४३०) का प्रेम बहुत कम लोगों में देखा गया है।............

मलिक नायब बारबक के सद्व्यवहार तथा उसकी नैतिकता की कहानी।

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपने राज्यकाल के अन्त में शिकार के लिये

---

१ छिन्न भिन्न हो गये।

२ परिजन।

३ बोझ लादने के लिये।

४ वह रोज़ा जो अनिवार्य न हो।

प्रस्थान करता तो मलिक नायब बारबक शहर ही में रहता था। शाही महल में निवास (४३१) करता। यद्यपि ख़ाने जहाँ सर्वदा नायबे ग़ैबत रहता था और राज्य तथा धन सम्बन्धी बातों में प्रयत्न किया करता था तब भी शहंशाह प्राचीन बादशाहों के समान मलिक नायब बारबक को भी शहर में रखता था। वज़ीर तथा मलिक बारबक दोनों शहर में रहते थे। दोनों में परस्पर बड़ा प्रेम तथा निष्ठा थी।

जब खाने जहाँ दरबार में विज़ारत की चौखंडी पर आसीन होने के उद्देश्य से आता तो सर्वप्रथम कूश्क में (राजभवन में) मलिक नायब बारबक के पास आता और अभिवादन करता। उन दिनों में सुप्रसिद्ध मलिक सुल्तान के कूश्के मियानगी में बैठता था। जब खाने जहाँ मलिक नायब बारबक के पास आता तो वह उसका बड़ा आदर सत्कार करता। कुछ पग अग्रसर होकर बड़े समारोह से उसका स्वागत करता। एक दूसरे के प्रति अत्यधिक शिष्टता प्रदर्शित करते। कुछ क्षण के पश्चात् खाने जहाँ उस स्थान से उठ कर वापस हो जाता और बाहर आकर मसनद पर आसीन होता। मलिक नायब बारबक भी सहन मियानगी में बैटता। उस स्थान पर मलिक के समक्ष नित्य तलवार चलाने वाले पंक्ति बाँधे खड़े रहते। मलिक उनको बैठ जाने का आदेश दे देता। उन्हें देर तक न खड़ा रहने देता। जिस स्थान पर वे पंक्ति बाँधे खड़े होते वहीं बैठ जाते। नित्य संध्या समय मलिक के आदेशानुसार दो दो टिकियाँ और एक एक परकाला पकाया जाता था और सभी नौबत वालों को दिया जाता (४३२) था। यह सब उसके उत्कृष्ट स्वभाव के कारण था। जब वह सुल्तान के बारजा[1] के स्थान पर खड़ा होता तो कभी छज्जये चोबीं के महल के समक्ष खड़ा होता और कभी द्वार के समक्ष खड़ा होता, किन्तु अत्यधिक गौरव एवं श्रेष्ठता प्राप्त होने पर भी किसी को कठोरता से न पुकारता।

कारकुनों से हिसाब किताब का हाल

कहा जाता है कि सुल्तान ने मलिक नायब बारबक को अत्यधिक अक़्तायें तथा मामले सौंप रखे थे। मलिक ने उन अक़्ताओं और परगनों में अपनी ओर से मुक़्ता नियुक्त कर दिये थे। जब कभी कोई मुक़्ता, अक़्ता से आता तो मलिक अपने खेलखाने[2] के पदाधिकारियों को आदेश देता कि वे उनसे हिसाब किताब करें। जब उनका हिसाब किताब किया जाता और उन कारकुनों के ज़िम्मे धन शेष निकलता तो वे मलिक के समक्ष प्रस्तुत किये जाते। इस पर मलिक नायब बारबक आदेश देता कि 'उस दुष्ट के सिर से पगड़ी उतार ली जाय', चाहे अत्यधिक धन क्यों न शेष होता। यदि २० हज़ार अथवा ३० हज़ार अपितु एक लाख तन्का भी (४३३) होता तो वह यही शब्द कहता कि "इस दुष्ट के सिर पर से पगड़ी उतार लो।" उन दिनों यह वाक्य बड़ा प्रसिद्ध हो गया था। बालक भी क्रीड़ा के समय कहा करते थे कि "तेरे सिर से पगड़ी उतरवाता हूँ।" मलिक इस प्रकार कहता था और इस प्रकार न था[3]। मलिक नायब बारबक कहा करता था कि जब किसी के सिर से पगड़ी उतारी गई तो मानो उसका सिर काट डाला गया। मनुष्य की प्रतिष्ठा पगड़ी द्वारा होती है। मलिक उनके अपमान के लिये ये शब्द कहता था। अपने कारकुन की धन के कारण पगड़ी उतरवा लेता था[4] और इस प्रकार उनका अपमान करता था।

---

१ दरबार।

२ वंश।

३ उसका उद्देश्य साधारण न होता था।

४ पुस्तक में फ़रस्तादे "भेज देता था" है। एक पोथी में फ़रूद आवुरदे "उतरवा लेता था" है। फ़रूद आवुरदे उचित है।

जब धन शेष होने के कारण किसी मुक़्ते के सिर से पगड़ी उतार ली जाती थी तो इसके उपरान्त जब कभी वह मुक़्ता मलिक नायब बारबक के पास जाता तो बिना पगड़ी के जाता। जब मलिक नायब बारबक उसे बिना पगड़ी के देखता तो उसे देखते ही उसकी ओर से मुख मोड़ लेता और कहता, "धत् निर्लज्ज दुष्ट! जब किसी मनुष्य की पगड़ी उतार ली गई तो फिर उसकी क्या प्रतिष्ठा शेष रही?" जब वह मुक़्ता कई बार नंगे सिर मलिक के समक्ष जाता तो मलिक अपने कारकुनों को आदेश देता कि उसकी पगड़ी दे दी जाय और जितना भी शेष धन उससे प्राप्त हो सकता हो प्राप्त कर लिया जाय। (इस प्रकार धन ले लिया जाता) और जो शेष रह जाता वह क्षमा कर दिया जाता। यह उसके सद्व्यवहार के कारण था।

मलिक नायब बारबक की रहमदिली

(४३४) कहा जाता है कि एक बार मलिक नायब बारबक के समक्ष बहुमूल्य सुन्दर वस्त्र लाया गया। मलिक को वह वस्त्र बड़ा अच्छा लगा। उसने कहा, "इस कपड़े का मेरे लिए पीराहन[1] तैयार कराया जाय।" जब कुशल दर्ज़ी ने कपड़ा ब्योंता तो उसे ज्ञात हुआ कि उस कपड़े में पीराहन नहीं तैयार हो सकता, कम है। विशेष व्यक्तियों ने मलिक के समक्ष निवेदन किया कि उस कपड़े में पीराहन नहीं तैयार हो सकता। इस पर मलिक नायब बारबक ने कहा कि "यदि पीराहन नहीं होता तो यकता सी दिया जाय।" निस्सन्देह इस शब्द को बे बदी शब्द कहते हैं। यह नहीं ज्ञात कि यकता में पीराहन से अधिक कपड़ा लगता है। जब पीराहन न हुआ तो यकता किस प्रकार सिया जा सकता है। .... मुहम्मद साहब ने कहा है कि 'स्वर्ग के अधिकाँश लोग बेबदी होते हैं।' मलिक नायब बारबक भी उन्हीं लोगों में से एक था।

(४३५) मलिक बारबक (किसी के) वेतन में एक दांग को भी हाथ न लगाता था। यदि कोई (सैनिक) किसी कष्ट में होता तो मलिक अपने ख़ासे[2] में से उसे कुछ दिला देता था। इस प्रकार के शुद्ध तथा पाक दीन (धर्म) के लोग सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में विद्यमान थे। केवल इस प्रकार का गौरव एवं प्रतिष्ठा मलिक बारबक ही में न थी, अपितु प्रत्येक राज्य का सहायक तथा स्तम्भ एक से एक बढ़कर था। दीनों तथा दरिद्रियों की सहायता हेतु प्रत्येक प्रयत्नशील रहता था। मलिक नायब बारबक का निधन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पूर्व हुआ। जब तक वह जीवित रहा सुल्तान के हितों की रक्षा का अत्यधिक प्रयत्न करता रहा। किसी के घोर अपराध करने पर भी सुल्तान के समक्ष उसने उसकी निन्दा न की और किसी को कभी तृणमात्र भी कष्ट न पहुँचाया।

मलिक (उल) मुल्कुश्शर्क़ एमादुलमुल्क बशीर सुल्तानी के गौरव का हाल।

(४३६) कहा जाता है मलिक एमादुलमुल्क का नाम बशीर था। वह सर्वदा सुल्तान के हितैषियों के समान उसका हित-चिन्तक रहा करता था। कुछ लोगों का कथन है कि एमादुलमुल्क को सुल्तान फ़ीरोज़ की माता ने अपने पिता द्वारा दहेज़ में प्राप्त किया था। जब सुल्तान की माता का विवाह सिपेह सालार रजब से हुआ तो शाह की माता के पिता ने एमादुलमुल्क को उसे दहेज़ में दिया था। कुछ का कथन है कि जब सुल्तान की माता का सिपेह सालार रजब से विवाह हुआ तो सुल्तान की माता को अपने पिता द्वारा अत्यधिक

१ एक प्रकार का कुर्ता।

२ व्यक्तिगत व्यय।

ग्राभूषण प्राप्त हुये। कुछ दिन उपरान्त सिपेह सालार रजब ने उसमें से कुछ ग्राभूषण बेचकर एमादुलमुल्क को मोल लिया। कुछ का कथन है कि सुल्तान ने ग्रपने सिंहासनारोहण के उपरान्त सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की एक पुत्री से जो ग्रत्यन्त रूपवती तथा बड़ी ही योग्य थी विवाह किया। एमादुलमुल्क उसका दास था। उसने एमादुलमुल्क को सुल्तान को दे दिया था।

(४३७) सब का निष्कर्ष यह है कि एमादुलमुल्क सुल्तान का विशेष यशस्वी दास था ग्रौर बैतुल माल के धन से क्रय किया हुग्रा दास न था। वह सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को मीरास के रूप में प्राप्त हुग्रा था। बादशाह की मिल्क (सम्पत्ति) था। प्राचीन दास तथा सेवक था। सर्वप्रथम जो सुल्तान की मिल्क में ग्राया, वह एमादुलमुल्क था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सिंहासनारोहण के पश्चात् सर्वप्रथम उसको पद प्राप्त हुग्रा। इसका सविस्तार उल्लेख सुल्तान के सिंहासनारोहण के विवरण में किया जा चुका है।

वह बड़ा बुद्धिमान् तथा ग्रद्वितीय दास था। बादशाह के प्रति उसे बड़ी निष्ठा थी। बादशाह एकान्त में राज्य की गोपनीय बातों में उससे परामर्श लेता था ग्रौर वह उचित उत्तर दिया करता था। बादशाह उन्हें पसन्द करता था। जिस किसी को वह ग्रक़्ता ग्रथवा परगना दिलवाना चाहता तो जैसे ही वह उसके विषय में निवेदन करता, सुल्तान बिना किसी संकोच तथा चिन्ता के उसे ग्रक़्ता प्रदान कर देता था। जिस किसी को एमादुलमुल्क पदच्युत कराना चाहता तो उसके कहते ही शहंशाह उसे तुरन्त पदच्युत कर देता था। एमादुलमुल्क की सेना में ५००० वीर सवार तथा प्रसिद्ध पहलवान सम्मिलित थे। बहुत से बड़े बड़े ख़ान तथा प्रसिद्ध मलिक जो सेना में सम्मिलित थे, शहंशाह के ग्रादेशानुसार उसकी सेवा करते थे। बहुत सी ग्रक़्तायें तथा परगने सैनिकों के वेतन हेतु तथा ग्रपने इनाम में शहंशाह द्वारा उसके लिए निश्चित हुये थे। समस्त सेनाग्रों का सरदार फ़ीरोज़ शाह था। वह समस्त सैनिकों तथा सेवकों के कष्ट निवारण में ग्रत्यन्त प्रयत्नशील रहता था। उसने सुल्तान के ४० वर्षीय राज्यकाल में किसी सैनिक पर कोई ग्रत्याचार न किया। किसी ग्रवसर पर उसने न तो खुल कर ग्रौर न संकेत में सेना की राजसिंहासन के समक्ष निन्दा की। सर्वदा सेना को सम्पन्न रखता था।

ईश्वर को धन्य है कि फ़ीरोज़ शाह का राज्यकाल ऐसा था। दरबार के समस्त ख़ान तथा मलिक बड़े ईमानदार थे। वे सद्व्यवहार तथा नैतिकता के लिये प्रयत्नशील रहते थे। यह सब ईमानदारी तथा सत्यता फ़ीरोज़ शाह के सद्व्यवहार तथा उसकी नैतिकता के ग्राशीर्वाद से थी। प्रत्येक राज्यकाल में बादशाह के व्यवहार तथा ग्राचरण का ग्रनुकरण उसकी प्रजा करती है। क्योंकि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ग्रपने राज्यकाल में सद्व्यवहार तथा सहनशीलता से पूर्ण रूपेण कार्य करता था, इसी कारण उसके राज्यकाल में समस्त राज्य के स्तम्भ सहनशीलता तथा नेकी से कार्य करते थे।

एमादुलमुल्क की धन सम्पत्ति का हाल

(४३८) कहा जाता है कि एमादुलमुल्क के पास ग्रपार धन सम्पत्ति थी। उसके धन की संख्या करोड़ों से ग्रधिक हो गई थी। मुझे शिष्ट घटना का उल्लेख करने वालों ने बताया है कि एक बार एमादुलमुल्क के धन (रखने) के लिये टाट के थैलों की ग्रावश्यकता हुई। २५०० तन्के के टाट के थैले मोल लिये गये। टाट के थैले का मूल्य ४ जीतल होता है। इसका निष्कर्ष यह है कि एमादुलमुल्क के पास इतना ग्रधिक धन था कि २५०० तन्के के टाट के थैले मोल लिये गये।

जब मलिक के कारकुनों ने एमादुलमुल्क के घर के सामान का रोज़नामा (लेखा) उसके समक्ष प्रस्तुत किया और जब टाट के थैलों का मूल्य २५०० तन्के पढ़ा गया तो उसने कहा कि इस कारण कि थैलों में धन रखने से धन का अनुमान लग जाता है, अतः धन को इस प्रकार थैलों में रखना उचित नहीं। उस समय मलिक एमादुलमुल्क ने अपने कार-कुनों को विदा कर दिया और आदेश दिया कि कूप खोदे जायँ और उन्हें पलस्तर करवा दिया जाय तथा यह सब धन अनाज के समान उन कुँओं में डाल दिया जाय। उसके आदेशा-नुसार ऐसा ही किया गया।

सुल्तान के राज-कोष, ख़ज़ाने तथा दफ़ीने में निश्चित धन था। इस कारण कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने दैवी प्रेरणा से अपने राज्य का कर समस्त प्रजा में बाँट दिया था, अतः बैतुल (४४०) माल के ख़ज़ानों में निश्चित धन पहुँचता था। एमादुलमुल्क के पास अपार धन तथा दफ़ीने थे। वह सर्वदा धन एकत्र करने का प्रयत्न किया करता था। सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में दासों ने जो अशान्ति की तथा उपद्रव फैलाया वह धन के कारण था। इसका उल्लेख सुल्तान मुहम्मद शाह के राज्यकाल में किया जायगा।

संक्षेप में एमादुलमुल्क बशीर के पास अपार धन सम्पत्ति थी। इसी प्रकार राज्य के अधिकांश खान तथा मलिक धनी थे। किसी भी धनी के पास इतना धन न था अपितु किसी भी राज्यकाल में किसी भी खान तथा मलिक के पास इतना धन न था।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा एमादुलमुल्क का ९ करोड़ का धन लिया जाना।

कहा जाता है मलिक एमादुलमुल्क ने १३ करोड़ धन एकत्र किया था और अधिक धन एकत्र करने के लिये बड़ा प्रयत्न किया करता था। मलिक एमादुलमुल्क के पास रापरी (४४१) (रिवाड़ी) की अक़्ता थी। वह उसकी समृद्धि का बड़ा प्रयत्न किया करता था। एमादुलमुल्क के आतंक के कारण दीवाने विज़ारत (के अधिकारी) अक़्ताओं के हिसाब किताब तथा उसके मामलों में टाल मटोल किया करते थे। उसके कारकुनों को कोई भी दीवान में न बुलवाता था। जब कुछ वर्ष उपरान्त रापरी (रिवाड़ी) की अक़्ता का हिसाब किताब हुआ तो बहुत धन शेष निकला। सुल्तान के समक्ष इसका उल्लेख किया गया। सुल्तान ने कहा, "मेरा धन क्या और बशीर का धन क्या।" जब एमादुलमुल्क ने सुना कि शहंशाह ने रापरी (रिवाड़ी) अक़्ता के शेष का जोकि ख़ज़ाने में अदा करना था, हाल सुनकर इस प्रकार से अनुकम्पा प्रदर्शित की तो उसने अपने धन का लेखा तैयार कराके राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया और स्वयं सुल्तान से निवेदन किया कि "दास के पास इतना धन है।" उस अवसर पर शहंशाह ने वह लेखा पढ़ा और एक शब्द भी नहीं कहा। वह लेखा पुनः एमादुलमुल्क को दे दिया। दूसरे दिन सूर्योदय के उपरान्त सुल्तान ने बारजा के महल में दरबार किया। एमादुलमुल्क एक करोड़ धन थैलों में करके सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दरबार में ले गया। सुल्तान का आदेश हुआ, "बशीरा! यह क्या है?" एमादुलमुल्क ने निवेदन किया, "दास कुछ धन शाही दासों के लिये लाया है।" सुल्तान ने धन लेना (४४२) स्वीकार न किया किन्तु एमादुलमुल्क ने बड़ी विनति की। सुल्तान ने इस पर कहा "बशीर मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति है। जो कुछ उसकी सम्पत्ति है वह मेरी सम्पत्ति है। यह एक करोड़ धन बैतुल माल के ख़ज़ानों में न भेजा जाय क्योंकि ख़ज़ाना बैतुल माल का भण्डार है। यह एक करोड़ धन मक़बूल इब्रदार को सौंप दिया जाय। सुल्तान के आदेशों का

पालन किया गया। जब कभी भी खाने जहाँ को सुल्तान की यात्रा के समय सामग्री एकत्र करने के लिए किसी वस्तु की आवश्यकता होती तो वह राजसिंहासन के समक्ष निवेदन करता। उस एक करोड़ धन से, जो मक़बूल इत्रदार को सौंपा गया था, ऋण ले लिया जाता और कारखानों की सामग्री का प्रबन्ध कर दिया जाता। तत्पश्चात् जब अक्ताओं तथा मामलों से धन आता तो मलिक मक़बूल इत्रदार का ऋण अदा हो जाता। जब तक सुल्तान फ़ीरोज़-शाह राजसिंहासन पर आरूढ़ रहा उस एक करोड़ धन में से कुछ भी व्यय न हुआ।

मलिक (एमादुलमुल्क) तथा खाने जहाँ

(४४३) कहा जाता है कि जब सुल्तान के राज्यकाल के अन्त में मलिक एमादुलमुल्क वृद्ध हो गया तो उसके शरीर के सभी अंगों में दोष आ गया। जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शिकारगाह की यात्रा को जाता तो मलिक एमादुलमुल्क को शहर में छोड़ जाता। मलिक कभी-कभी शहर फ़ीरोज़ाबाद के कूश्क में रहता, अधिकांशतः अपने घर में रहता था। जब एमादुलमुल्क दृष्टिगत होता तो खाने जहाँ, यद्यपि मसनद पर बैठा होता, तुरन्त खड़ा हो जाता और आगे बढ़कर अभिवादन करता तथा अत्यधिक आदर सत्कार करता और शीघ्राति-शीघ्र मलिक एमादुलमुल्क की ओर दौड़ता। मलिक एमादुलमुल्क भी आदर सत्कार करता। खाने जहाँ के हाथों को सहारा देता। दोनों एक दूसरे से प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते। फ़ीरोज़ाबाद में खाने जहाँ तथा एमादुलमुल्क के घर पास पास थे। सर्वदा खाने जहाँ एमादुल-मुल्क के द्वार की ओर से गुज़रता। खाने जहाँ वज़ीरों के समान ऐश्वर्य से सवार रहता था। जब वह एमादुलमुल्क के द्वार के समक्ष पहुँचता तो खाने जहाँ पहले ही से अपने मित्रों को उस मार्ग से फिरवा देता इसलिए कि कहीं एमादुलमुल्क को द्वार पर ढोल व शहनाई बजने से कष्ट न हो और वह रुष्ट न हो। ईदों के दिनों में जब खाने जहाँ शहंशाह की अनुपस्थिति में अपने घर से सवार होकर निकलता तो एमादुलमुल्क के द्वार के समक्ष खड़ा हो जाता। जब एमादुलमुल्क अपने घर से निकलता तो दोनों प्रतिष्ठित व्यक्ति वार्तालाप करते हुये नमाज़ (४४४) के स्थान के लिए प्रस्थान करते थे। उस अवसर पर वज़ीर एमादुलमुल्क के सम्मान हेतु अपना चत्र अपने सिर से पृथक् करा देता। यद्यपि लाव लश्कर के अधिकारी खाने जहाँ के साथ होते किन्तु खाने जहाँ मक़बूल एमादुलमुल्क के अतिरिक्त किसी अन्य ओर कोई ध्यान न देता था।

दासों का स्वतन्त्र किया जाना

कहा जाता है कि जब एमादुलमुल्क वृद्ध हो गया और उसकी अस्थियों में शिथिलता आ गई तो उसने सर्वप्रथम स्वयं को सुल्तान फ़ीरोज़ से स्वतन्त्र करा लिया और स्वतन्त्रता पत्र लिखा गया। तत्पश्चात् उसने अपने धन से क्रय किये हुये ४००० घरेलू दास स्वतन्त्र कर दिये और उनमें से सभी को स्वतन्त्रता-पत्र दे दिये। प्रत्येक घरेलू दास को उसकी आवश्यकता-नुसार धन दिया जिससे उन्हें जीविका सम्बन्धी कठिनाई न हो। संक्षेप में कुछ समय उपरान्त मलिक एमादुलमुल्क का निधन हो गया। जिस प्रकार सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) सुल्तान तुग़लुक़ शाह के समस्त खान तथा हितैषी मलिक उसके जीवनकाल ही में मृत्यु को प्राप्त हो गये इसी प्रकार भाग्यवश सुल्तान फ़ीरोज शाह के हितैषी तथा परामर्शदाता खान (४४५) एवं मलिक उसके जीवनकाल ही में मर गये। उनके उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का भी निधन हो गया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने कहा, "बशीर का धन मेरा धन है।" १३ करोड़ धन था। ९ करोड़ सुल्तान फ़ीरोज शाह ने ले लिया और तीन करोड़ मलिक इसहाक़, जामाताओं, पत्नियों तथा उन लोगों को जिन्हें (एमादुलमुल्क) ने अपना पुत्र बना लिया था,

दे दिये। मलिक इसहाक़ एमादुलमुल्क के पास भी अपनी व्यक्तिगत बहुत बड़ी सम्पत्ति थी। पिता के धन की उसे आवश्यकता न थी। उपर्युक्त धन तथा अन्य सामग्री के अतिरिक्त ४००० ज़रदोज़ी क़बा २००० सफ़ेद बन्द तथा बन्दे जर कमर उसके पास थे।

अध्याय १०

मलिक सैयिदुल हुज्जाब की नदीमी[१]।

कहा जाता है कि मलिक सैयिदुल हुज्जाब का नाम मारुफ़ था। वह तथा उसका पिता ख्वाजा वहीद क़ुरैशी शेखुल इस्लाम शेख निज़ामुद्दीन के मुरीद (चेले) थे। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि जिस दिन मलिक सैयिदुल हुज्जाब का जन्म हुआ तो ख्वाजा वहीद (४४६) मलिक ने सैयिदुल हुज्जाब को शेख की सेवा में ले जाकर प्रस्तुत किया। उस समय शेख वज़ू कर रहे थे। जैसे ही सैयिदुल हुज्जाब को शेख की सेवा में प्रस्तुत किया गया, शेख ने कहा "ख्वाजा वहीद इस दोनों लोक के मारूफ़ (प्रसिद्ध) को आगे लाओ।" जब उसे आगे ले गये तो शेख ने अत्यधिक अनुकम्पा प्रदर्शित करते हुये मलिक सैयिदुल हुज्जाब के मुँह में थोड़ा सा वज़ू का जल डाल दिया। ख्वाजा वहीद शेख के समक्ष उसे इसी आशय से ले गया था कि वे उसका नाम निश्चित करदें। क्योंकि ख्वाजा की जिह्वा से मारूफ़ शब्द निकला, अतः उसका नाम ख्वाजा मारूफ़ हो गया।

निष्कर्ष—मलिक मक़सूद बड़ा ही धार्मिक, पवित्र तथा सदाचारी व्यक्ति हुआ। उसने हाजियों के साथ काबे की यात्रा की। सर्वदा बुद्धिमानों के समान व्यवहार करता रहा। वह विद्वता, पांडित्य तथा बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण था। सर्वदा सुल्तानों के दरबार में बड़े योग्य बुद्धिमानों के समान व्यवहार करता रहा। सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ के राज्यकाल में वह राजसिंहासन के समक्ष रहता था। फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में उसकी उपाधि मलिक सैयिदुल हुज्जाब हो गई और वह बड़ा ही यशस्वी हो गया। वह सुल्तान फ़ीरोज़ का नदीम था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह उसकी अत्यधिक बुद्धिमत्ता तथा राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी बातों के पूर्ण ज्ञान होने के कारण मलिक सैयिदुल हुज्जाब से परामर्श किया करता था। यदि सुल्तान फ़ीरोज़ किसी कारण मलिक सैयिदुल हुज्जाब से रुष्ट होकर कुछ दिन उसे अपने समक्ष न (४४७) आने देता तो मलिक दोनों समय बिला नाग़ा सुल्तान के द्वार के समक्ष उपस्थित होता था। जब दो तीन दिन तक मलिक सैयिदुल हुज्जाब राजसिंहासन के समक्ष न आता तो सुल्तान उसे याद करता और यह कहता, "मेरी वार्ता तथा मेरी बातों का रहस्य मारूफ़ के अतिरिक्त किसी को ज्ञात नहीं और न कोई समझ सकता है।" उसे तत्काल बुला लिया जाता। ईश्वर को धन्य है कि मलिक सैयिदुल हुज्जाब ने अनेक अपराधियों को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से, उस समय जब कि वह अत्यन्त रुष्ट तथा क्रोधित था, मुक्ति दिलवाई। बहुत से लोगों का अपनी बुद्धिमत्ता एवं समझ से स्थायीकरण कराया। जब सुल्तान किसी से रुष्ट होता और उससे कठोर शब्द कहता तो सैयिदुल हुज्जाब यथासम्भव उसके गुणों की चर्चा करता। यदि उसे ऐसा अनुभव हो जाता कि सुल्तान उसको क्षमा न करेगा और वह उसके गुणों का उल्लेख न कर पाता तो फिर वह उसकी निन्दा न करता। उस अवसर पर बड़ी सावधानी से मौन रहता। सर्वसाधारण को मलिक सैयिदुल हुज्जाब से बड़ा लाभ पहुंचता रहता था। इसी प्रकार यदि वह किसी के विषय में राजसिंहासन के समक्ष कुछ कहना चाहता

१ मुसाहिबत

तो वह उसका उल्लेख किसी दूसरे बहाने से करता था। इस प्रकार उस दुखी दीन की उद्देश्य-पूर्ति हो जाती।

(४४८) घटनाओं का उल्लेख करने वाले बुद्धिमानों ने बताया है कि एक दिन एक तुच्छ भिक्षुक मलिक सैयिदुल हुज्जाब के पास आया और अपनी दीन दशा की उससे चर्चा की और कहा, "मैं बड़ा ही दीन तथा दरिद्र हूँ। इस दीनता के साथ-साथ मेरे पुत्रियाँ भी हैं और उनका विवाह करने की क्षमता मुझ में नहीं। ईश्वर तथा मुहम्मद साहब के लिये मेरी सहायता कीजिये।" मलिक सैयिदुल हुज्जाब ने कहा, "हे मूर्ख भिखारी, जा। पाँच सेर गेहूं साफ़ कर और एक रूमाल में बाँध कर कल उस ओर खड़ा होजा जिस ओर सुल्तान की सवारी जाय। देख ईश्वर तेरे लिये क्या आज्ञा करता है।" उस भिखारी ने ऐसा ही किया। सुल्तान की सवारी के समय गेहूँ हाथ में लेकर खड़ा हो गया। जब मलिक की दृष्टि उस पर पड़ी तो वह शीघ्रातिशीघ्र उसके पास पहुंचा और गेहूँ लाकर शहंशाह के समक्ष प्रस्तुत करते हुये उसने निवेदन किया, "यह भिखारी कहता है कि मैंने इस गेहूँ के प्रत्येक दाने पर एक बार सुल्तान के लिये इखलास[1] का सूरा पढ़ा है।" जब मलिक सैयिदुल हुज्जाब ने शाह के समक्ष ये शब्द कहे तो सुल्तान ने फ़क़ीरों के प्रति निष्ठा होने के कारण तथा अपने आप को उन लोगों की शरण में रखने के कारण उस गेहूँ को (४४९) सैयिदुल हुज्जाब के हाथों से अपने हाथ में ले लिया और अपनी आँखों पर रखा। इस अवसर पर सुल्तान ने आदेश दिया कि 'इस गेहूँ को रसोई में भेज दिया जाय तथा उसके भोजन हेतु रोटियाँ पकाई जायें।' शहंशाह ने मारूफ़ से पूछा, "इस फ़क़ीर को किस चीज़ की आवश्यकता है?" मलिक ने कहा, "इसके पुत्रियाँ हैं जिनका वह विवाह नहीं कर सकता।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "उसे एक तन्का रोज़ शहर के उश्र तथा ज़कात से दिया जाय।" मलिक सैयिदुल हुज्जाब ने इस प्रकार उसकी जीविका का प्रबन्ध कराया। उसका यह कार्य इस सीमा को पहुँच गया था कि उसने किसी को सुल्तान फ़ीरोज़ से अक़्ता दिलवाई, किसी को रोटी (वृत्ति)। सैयिदुल हुज्जाब को जो गौरव प्राप्त था वह किसी नदीम को नहीं प्राप्त होता। वह जो कुछ भी कहता सुल्तान को उसकी बात पसन्द आती थी।

जो कोई भी सैयिदुल हुज्जाब के पास अपनी आवश्यकतायें ले जाता तो वे उसकी कृपा द्वारा, उसकी इच्छानुसार पूरी हो जाती थीं। लोगों से उनका कार्य पूरा हो जाने के उपरान्त वह शुकराना अवश्य लेता था। यह बात, सुल्तान तक पहुँचती किन्तु वह कुछ न कहता। जब मलिक सैयिदुल हुज्जाब सुल्तान के महल के द्वार से वापस होता और अपने घर में आता (४५०) तो वह अधिक समय तफ़सीरों के अध्ययन में व्यतीत करता था। वह भोजन तथा वस्त्र के सम्बन्ध में बड़ी सावधानी से कार्य करता था और इस विषय में रात दिन अत्यधिक प्रयत्नशील रहता था। यद्यपि यह कहा जाता है किन्तु आलिमों तथा सूफ़ियों ने इसका बड़ा महत्त्व बताया है और इसको क़र्ज़े हसना[2] के बराबर कहा है। मलिक सैयिदुल हुज्जाब सर्वदा क़र्ज़ के धन से भोजन करता था। वस्त्र के विषय में भी वह बड़ा सावधान रहता था और जो शरा के अनुकूल होता था, वही पहनता था। जो शरा के विरुद्ध होता उसके पास भी न फटकता था। मलिक सैयिदुल हुज्जाब में सभी प्रकार के गुण तथा उत्कृष्ट बातें थीं। दरबार के खानों तथा मलिकों से वह मज़े-मज़े की बातें तथा परिहास करता था। शहंशाह को उसकी मज़े-मज़े की बातें तथा परिहास बड़ा रुचिकर था।

१ क़ुरान का एक संक्षिप्त अध्याय।

२ मुसलमानों के लाभार्थ बिना व्याज का ऋण, जिसे ऋण लेने वाला अपनी सुविधानुसार अदा कर सकता है।

बहुत से ऐसे लोग जिन पर सुल्तान क्रोधित होता उनका वह परिहास द्वारा कल्याण करा देता। सुल्तान के चालीस वर्षीय राज्यकाल में मलिक सैयिदुल हुज्जाब राजसिंहासन के समक्ष, (४५१) दरबार में तथा महफ़िलों में नदीमी का कार्य करता रहा। उसकी मृत्यु सुल्तान के निधन के पूर्व हुई।

अध्याय ११

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा का हाल जो सुल्तान फ़ीरोज के राज्यकाल में मुस्तौफ़िये ममालिक हो गया था।

कहा जाता है मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा, मलिक मुजीर अबू रिजा का भतीजा था। वह सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ के राजसिंहासन के समक्ष बड़े रहस्यमयी कार्य किया करता था। इस मलिक मुजीर के प्रसिद्ध मलिक कबीर ने सुल्तान मुहम्मद के राजभवन के समक्ष दो टुकड़े करा दिये थे। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि यद्यपि मलिक मुजीर के पास सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ के राज्यकाल में देहली की अक़्ता थी, किन्तु जब सुल्तान दुष्ट तग़ी का पीछा (४५२) करने के लिये थट्टा की ओर गया (इसकी विस्तृत चर्चा सुल्तान मुहम्मद के हाल में की जा चुकी है) तो उसने थट्टा से मलिक मुजीर को बुलवाया। मलिक मुजीर अपनी अक़्ता से सवार तथा प्यादों सहित सुल्तान मुहम्मद की ओर रवाना हुआ। उन दिनों देहली में मलिक कबीर नायब ग़ैबत था। जब मलिक मुजीर देहली के निकट पहुंचा तो मलिक कबीर के कारण अभिमानवश देहली छोड़ कर यमुना के घाट की ओर बढ़ा तथा मलिक कबीर से भेंट न की।

जब मलिक मुजीर दोआब में उतरा था तो कुछ विशेष लोगों ने मलिक कबीर से गुप्त रूप से कहा कि "मलिक मुजीर के मस्तिष्क में कुछ और ही भावनायें हैं इसलिये कि वह अभिमानवश बिना मलिक से भेंट किये हुये दोआब में उतरा हुआ है और देहली नगर से जानबूझ कर उसने मुंह मोड़ लिया है। मलिक कबीर ने, जो देहली में सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ की अनुपस्थिति में पूर्ण रूप से अधिकार-सम्पन्न था, मलिक मुजीर को बुलाने का बड़ा प्रयत्न किया। बहुत से लोगों की सम्मति एवं परामर्श से मलिक कबीर ने मलिक मुजीर को दोआब से बुला भेजा। मलिक मुजीर विवश होकर शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुँचा और अपनी सेना भी दोआब में छोड़ दी। जब मलिक मुजीर मलिक कबीर के पास पहुंचा तो उस समय मलिक कबीर शासन की मसनद पर आसीन था। मलिक मुजीर ने पीछे की ओर हाजिबों के स्थान पर अभिवादन न किया। अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी मूर्ख मलिक मुजीर ने (४५३) सब से पीछे के स्थान पर अभिवादन करना स्वीकार न किया। जब मलिक मुजीर को आगे ले गये तो उसने दूसरे स्थान पर भी अभिवादन न किया। जब मलिक मुजीर मलिक कबीर के निकट पहुंचा तो उसने 'अस्सलामु अलैकुम" कहा। मलिक कबीर ने मलिक मुजीर की ओर बड़ी तीव्र दृष्टि से देखा और कहा, "मैं सुल्तान मुहम्मद की ओर से शासन कर रहा हूं। मुझे नियाबते ग़ैबत के कारण पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं। तेरे मस्तिष्क में कौनसी हवा भरी है कि मुझ से भेंट किये बिना देहली से मुख मोड़ कर और मेरी चिन्ता किये बिना (शाही) सेना की ओर जाने का साहस किया; ज्ञात होता है कि तू किसी अन्य हवा में है।" मलिक मुजीर ने मलिक कबीर से अशिष्टता के शब्द कहे और कहा, "प्रत्येक सिंह के लिये पृथक् बन होता है। एक को दूसरे से कदापि युद्ध न करना चाहिये। संसार का नियम यही है।" जब मूर्ख मलिक मुजीर ने ये शब्द

कहे तो मलिक कबीर का क्रोध और बढ़ गया। मलिक कबीर ने इस पर कहा, "इस हराम खोर दुष्ट को दरबार से जिस प्रकार चोरों को ले जाते हैं उस प्रकार ले जाया जाय और खूंख्वार कोड़े लगाने वाले उसे दो टुकड़े कर दें। कठोर अवान[1] तथा भयानक सरहंग[2] मलिक मुजीर की आस्तीन को अपराधियों के समान पकड़ कर दंड देने के स्थान पर ले गये। इस अवसर पर मूर्ख मलिक मुजीर सफ़ेद हो गया और उसने अपनी अंगुलियों को मुंह में डाल लिया तथा मलिक कबीर के समक्ष विनति करने लगा। संक्षेप में, दुष्ट मलिक मुजीर की सुल्तान मुहम्मद के दाखूल[3] के समक्ष हत्या करदी गई।

(४५४) जब मलिक को प्रसिद्ध अपराधियों के समान हत्या हो गई तो मलिक कबीर ने तत्काल सुल्तान मुहम्मद के पास इस घटना का पूर्ण विवरण लिख भेजा। सुल्तान मुहम्मद ने मलिक कबीर के पास फ़रमाने तुग़रा भेजा और उसमें मलिक कबीर ने उस अभिमानी के विरुद्ध जो कार्यवाही की थी उसकी स्वीकृति प्रदान की।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा मलिक मुजीर अबू रिजा का भतीजा था। वे अबू रिजा इस कारण कहलाते हैं, कि अबू रिजा लोग ऊपर के देश[4] के निवासी थे। मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा बड़ा बुद्धिमान्, योग्य तथा कवि था और गूढ़ बातें करने में बड़ा निपुण था। प्रारम्भ में मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा शहंशाह के राज्यकाल में दीवाने विज़ारत के बारीदेहों[5] में नियुक्त हुआ था। कुछ समय तक बारीदेहों में रहा। तत्पश्चात् सामाने की अक़्ता का नायब हो गया। उन दिनों सामाने की अक़्ता का मुक़्ता मलिक क़ुबूल क़रा ख़ाँ[6] अमीर मजलिस[7] था। जब मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा सामाने की अक़्ता में पहुंचा तो अक़्ता के प्रत्येक कार्य को बड़ी निपुणता से करने लगा। अपनी योग्यता, बुद्धिमत्ता एवं सूझ बूझ के कारण मलिक क़ुबूल को सामाने के कार्य के निकट भी फटकने न दिया। प्रत्येक कार्य में अनेक ऐसी बातें प्रारम्भ कीं जिनकी अन्य लोग कल्पना भी न कर सकते थे। मलिक क़ुबूल (४५५) की फ़ीरोज शाह के सभी विश्वासपात्रों से अधिक घनिष्ठता थी। प्रत्येक विश्वासपात्र मलिक शम्सुद्दीन के कार्यों के सम्बन्ध में प्रयत्न किया करता था। मलिक शम्सुद्दीन को सामाने की अक़्ता से पदच्युत कर दिया गया। तत्पश्चात् मलिक शम्सुद्दीन को गुजरात की अक़्ता की नयाबत प्रदान की गई। वह गुजरात की ओर चल दिया।

उस समय राजसिंहासन की ओर से गुजरात की अक़्ता ज़फ़र ख़ाँ बिन (पुत्र) ज़फ़र ख़ाँ अर्थात् दरिया ख़ाँ को प्राप्त थी। मलिक शम्सुद्दीन ने गुजरात की अक़्ता में पहुंच कर बहुत सी नई बातें प्रारम्भ कीं तथा बहुत से बारीक कार्य शुरू किये। इस कारण उसे वहां से भी पदच्युत होना पड़ा। कुछ समय उपरान्त मलिक शम्सुद्दीन गुजरात की अक़्ता से पदच्युत कर दिया गया और गुजरात वालों को मुक्ति प्राप्त हो गई। मलिक शम्सुद्दीन गुजरात से देहली पहुँचा।

जब सुल्तान फ़ीरोज शाह अपने राज्य के अन्तिम काल में बदायूँ तथा आंवले की ओर शिकार खेलने गया तो मलिक शम्सुद्दीन को मुस्तौफ़िये ममालिक बनाया गया। उसकी उपाधि

---

१ पुलिस के सिपाही।
२ पुलिस के सिपाही।
३ महल के द्वार।
४ भारतवर्ष की उत्तरी पश्चिमी सीमा।
५ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
६ पुस्तक में क़ुरान ख़ाँ है किन्तु एक पोथी में क़रा ख़ाँ है।
७ सुल्तान की गोष्ठियों का प्रबन्ध करने वालों का अधिकारी।

ज़ियाउलमुल्क निश्चित हुई। इस प्रकार उसके वाह्य तथा आंतरिक रूप को सजा दिया (४५६) गया। मलिक शम्सुद्दीन को दीवाने विज़ारत में स्थान प्राप्त हो गया। भाग्यवश सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के हृदय में यह आ गया कि दीवाने विज़ारत के पदाधिकारी अपने कार्य में कमी करते हैं और उसके शुभचिन्तक नहीं रहे हैं। उसने सोचा यदि मैं शम्सुद्दीन अबू रिजा को जो बुद्धिमत्ता एवं योग्यता में अद्वितीय है दीवाने विज़ारत में नियुक्त करदूँ तो सभी कार्य भली भाँति सम्पन्न हो जायेंगे। उसने यह न सोचा कि उसके सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व के कारण अनेक कठिनाइयाँ उठ खड़ी होंगी और राज्य में उथल पुथल मच जायगी इसलिये कि ईश्वर की कृपा से उस दयालु सुल्तान के ४० वर्षीय राज्यकाल में लोग सुख और शान्ति के अभ्यस्त हो गये थे। जब मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा को भाग्य से मुस्तौफ़िये ममालिक का पद मिल गया तो वह उसके आदेशों के पालन कराने का प्रयत्न करने लगा। ऐसी ऐसी बातें पैदा कीं जो चालीस वर्ष में न हुई थीं, मानो देहली के उपद्रव तथा अशान्ति का कारण वह था।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा की कृपणता एवं उपद्रव की कथायें तथा शहंशाह

(४५७) जब सुल्तान फ़ीरोज़ के हृदय में दीवाने विज़ारत के अधिकारियों की ओर से शंका उत्पन्न हो गई तो उसने बैतुल माल के कार्यों की बागडोर मलिक शम्सुद्दीन के हाथ में दे दी। मलिक शम्सुद्दीन को अपना विश्वासपात्र बना लिया। उसे इतना विश्वास प्राप्त हो गया कि वह छोटे बड़े सभी लोगों की ओर से सुल्तान के हृदय में शत्रुता पैदा कराने लगा। सुल्तान जिस स्थान पर होता तो चाहे समय होता अथवा न होता वह पहुँच जाता। वह उसका इतना बड़ा निकटवर्ती हो गया कि वह रुस्तम को ज़ाल समझने लगा। जब मलिक शम्सुद्दीन सुल्तान के पास एकान्त में जाता तो सुल्तान समझ जाता कि वह दीवाने विज़ारत वालों के विषय में कुछ कहेगा। बादशाह अपने सभी विश्वासपात्रों को वहाँ से हटवा देता। मलिक के हृदय में जो कुछ होता कह कर लौट जाता। यह बात इस सीमा तक पहुँच गई कि जब मलिक शम्सुद्दीन एकान्त में पहुँचता तो शहंशाह के सभी विश्वासपात्र बिना कहे ही उस स्थान (४५८) से बाहर चले जाते। मलिक शम्सुद्दीन के दिल में जो कुछ होता वह कह कर लौट जाता, यहाँ तक कि यदि मलिक शम्सुद्दीन कोई गोपनीय बात सुल्तान से दरबार में कहना चाहता तो वह उसी समय राजसिंहासन के निकट पहुंच जाता और अपनी आस्तीन अपने मुख पर रख लेता और सुल्तान के कान में (बात) कह देता।

इन बातों के कहने का उद्देश्य यह है कि मलिक शम्सुद्दीन इतना बड़ा विश्वासपात्र हो गया था, उसने अपनी कृपणता तथा उपद्रवकारिता से बादशाह को इतना मार्ग-भ्रष्ट कर दिया था कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की जिह्वा इतने वैभव के होते हुये भी "शम्स शम्स" ही कहते सूखती थी। दीवाने विज़ारत के सभी कार्य मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा द्वारा सम्पन्न होते थे।

मुस्तौफ़ी के कर्त्तव्य

राज्य के व्यय में, जो राज्य के लोगों पर होता है, सावधानी से कार्य करे। उसे जमा व बाक़ी से कोई सम्बन्ध नहीं। किन्तु मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा ने शहंशाह के अत्यधिक विश्वासपात्र होने के कारण वज़ीर, नायब वज़ीर, मुशरिफ़, मुस्तौफ़ी, मजमूआदार, बरीद, (४५९) नाज़िर, वुक़ूफ़ सभी अपने अधिकार में कर लिये थे। सभी लोगों ने काम से हाथ

खींच लिया था। मलिक शम्सुद्दीन ने सांसारिक वैभव के कारण राज्य के सभी अधिकारियों की चिन्ता त्याग दी। शहंशाह का विश्वास प्राप्त हो जाने के कारण उसने समस्त राज्य को विस्मृत कर दिया। सुल्तान के समस्त विश्वासपात्रों के हृदय में शत्रुता उत्पन्न करादी तथा घूस लेने का प्रयत्न करने लगा। सुल्तान फ़ीरोज़ को भी सभी राज्य वालों की ओर से सशंकित करा दिया। समस्त खानों तथा मलिकों को भी अपना विरोधी बना लिया। प्रजा को भी उसका दुश्चिन्तक बना दिया। समस्त सरदार तथा अधिकारी सुल्तान से भयभीत रहने लगे। अन्त में दुष्ट शम्सुद्दीन ने अपना विनाश कर लिया।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा के दीवाने विज़ारत में आसीन होने का हाल

जब खाने जहाँ बादशाहों के वज़ीरों के समान विज़ारत की मसनद पर आसीन होता (४६०) और कार्य में तल्लीन होता तो समस्त पदाधिकारी अपने-अपने स्थान पर बैठते। उन दिनों ख्वाजा हुसामुद्दीन जुनैदी दीवाने विज़ारत का मजमूआदार जीवित था। राज्य के कार्यों के विषय में प्रयत्नशील रहता था। मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा खाने जहाँ के दाईं ओर प्राचीन मुस्तौफ़ियों के स्थान पर बैठता था। जब राज्य तथा शासन सम्बन्धी कार्यों की पूछताछ मुहासबा, मुकातबा, धन का मुतालबा तथा खर्च में कमी तथा अधिकता प्रमाणित तथा अप्रमाणित ठीक अथवा ग़लत बाक़ी—दीवान के नवीसिन्दे एवं मुहर्रिर पिछले सुल्तानों के अधिनियमों के अनुसार अक़्ताओं के मुक़्तों तथा आमिलों से करते और मसनद के समक्ष ले जाकर प्रस्तुत करते तो काग़ज़ के पढ़ते ही मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा मुस्तौफ़िये ममालिक प्रत्येक छोटे बड़े मामले में हस्तक्षेप करता और ऐसी ऐसी बातें पैदा करता कि सभी मौन हो जाते। किसी को बोलने का साहस न होता कि उसके प्रश्नों का उचित उत्तर दे सके।

मलिक ज़ियाउलमुल्क बड़ा ही विद्वान्, योग्य, मर्हरिर, योग्य वक्ता, कूटनीतिज्ञ तथा अभिमानी था। अपने समक्ष वह सुल्तान के अतिरिक्त किसी की चिन्ता न करता था और किसी को आदमी न समझता था। उसने अपने छन्दों के दीवान[1] लिख कर राजसिंहासन के (४६१) समक्ष प्रस्तुत किये थे और शेख सादी से बढ़ जाने का दावा किया करता था। वह कामों में इतना बढ़ गया था कि वज़ीर, मुशरिफ़, मजमूआदार, नाज़िर, बरीद, वुक़ूफ़, नायब मुशरिफ़ तथा नायब मुस्तौफ़ी मसनद पर बैठे रह जाते और जो बात मलिक ज़ियाउद्दीन मुस्तौफ़िये ममालिक कह देता, खाने जहाँ उसी के अनुसार आदेश दे देता। मलिक ज़ियाउल मुल्क समस्त संसार से बुराई किया करता था और क़यामत की कोई चिन्ता न करता था।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा प्रत्येक अधिकारी के कार्य की इस प्रकार कटु आलोचना करता कि खाने जहाँ वज़ीर तथा मलेकुश्शर्क़ निज़ामुलमुल्क नायब वज़ीर तथा मुशरिफ़े ममालिक आदि मौन हो जाते। मलिक बहुत बड़ा वक्ता था और बात-चीत में बड़ा तेज़ था। जिस बात का अन्य लोग खूब सोच समझ कर उत्तर देते उसका वह तत्काल उत्तर दे देता था और बड़ी गूढ़ बात करता था। समस्त मुहर्रिरों तथा नवीसिन्दों से वाद-विवाद प्रारम्भ कर देता।

इस स्थान पर यह इतिहासकार शम्स सिराज कुछ ऐसी बातें लिख रहा है जिससे बुद्धिमानों को लाभ हो। बुज़ुर्गों का कथन है कि मनुष्य का स्वभाव तीन प्रकार का होता है: (१) हाफ़िज़ (४६२) (स्मृति वाला) अर्थात् जो सुन ले वह याद रह जाय। (२) मुदरिक जो

१ कविताओं का संग्रह।

प्राप्त हो जाय उसे याद रखे (३) मुतसर्रिफ़ा जो प्राप्त करे उसे उचित स्थान पर व्यय[1] करे।.........मलिक शम्सुद्दीन में ये तीनों बातें पाई जाती थीं। इन्हीं के कारण उसने ऐसे वैभव वाले बादशाह को मार्ग-भ्रष्ट कर दिया था और समस्त राज्य की ओर से सशंकित कर दिया था। दीवाने विज़ारत के ऐसे अधिकारी मलिक शम्सुद्दीन की बातों पर मौन रहा करते थे।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा का सुल्तान से दीवाने विज़ारत के अधिकारियों की शिकायत करना

(४६३) जब मलिक शम्सुद्दीन को राज्य के कार्यों में पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया तो वह एक दिन सुल्तान के पास एकान्त में गया। बादशाह ने पूछा, "शम्स कहाँ था और क्या कर रहा था ?" मलिक शम्सुद्दीन ने कहा, "दीवान में था।" यह कह कर वह मौन हो गया। शहंशाह ने बार बार पूछा, 'शम्स सब कार्य ठीक है ?' इस पर मलिक शम्सुद्दीन ने सिर नीचे कर लिया और कुछ न कहा। बादशाह ने तीसरी बार पूछा, "शम्स मैं तुझसे पूछता हूँ। तू उत्तर क्यों नहीं देता ?" मलिक ने बादशाह से कहा, "बेचारा शम्स क्या करे। सब लोग मिलकर कुछ दिन में सेवक की हत्या करा देंगे।" मलिक शम्सुद्दीन ने अपने भविष्य के विषय में अपशब्द कहे और वही देख लिया। शहंशाह ने पूछा, "सब के मिल जाने का क्या कारण है ?" मलिक शम्सुद्दीन ने कहा, 'जब सब संगठित हो जायँगे तो किसी दिन कोई बात (४६४) कहकर मुझे नष्ट करा देंगे। जब सब लोग मिल जायँगे तो मेरी बात कौन स्वीकार करेगा ?" यह बात सुनकर बादशाह ने कहा, "हे शम्स ! मैं तेरे विरुद्ध किसी की भी बात एक क्षण के लिये न सुनूंगा। तू निश्चिंत होकर दीवान के कार्य में तल्लीन रह। यदि ईश्वर ने चाहा तो (देख) दीवान के अधिकारियों के साथ क्या करता हूँ।"

दूसरे दिन सुल्तान ने दरबार किया और खाने जहाँ को आदेश दिया कि दीवाने विज़ारत के समस्त पदाधिकारी तथा उनके नवीसिन्दे, दीवान के अन्य कर्मचारी, एवं नक़ीब सभी राजसिंहासन के समक्ष उपस्थित किये जायँ। ख़ाने जहाँ तत्काल सबको सामने ले गया। सुल्तान ने उन्हें देख कर आगे बुलवाया और खाने जहाँ की ओर मुख करके कहा, "ख़ाने जहाँ ! यह कौन है ?" वज़ीर ने उत्तर दिया, "मुस्तौफ़िये ममालिक।" सुल्तान ने फिर पूछा, "मुस्तौफ़ी क्या होता है ?" खाने जहाँ ने कहा, "राज्य के व्यय को ठीक करता है।" उस अवसर पर मलिक निज़ामुलमुल्क नायब वज़ीर उपस्थित था और यह (कार्यवाही) देख रहा था। उसने तुरन्त उत्तर दिया कि "मलिक ज़ियाउलमुल्क, मुस्तौफ़िये ममालिक, दीवाने (४६५) विज़ारत का कारगुज़ार।" निज़ामुलमुल्क की यह बात सुल्तान को बड़ी अच्छी लगी और उसने कहा, "निःसन्देह ऐसा ही है। दीवाने विज़ारत का कारगुज़ार शम्स।" बादशाह ने, ख़ाने जहाँ से फिर पूछा, 'खाने जहाँ ! शम्स से, तेरे दीवान का कुछ काम निकलता है ?" खाने जहाँ ने उत्तर दिया, "जब से ज़ियाउलमुल्क दीवाने विज़ारत में नियुक्त हुआ है तब से मैं राज्य के कार्य से पूर्णतः निश्चिन्त हो गया हूँ।" फ़ीरोज़ शाह ने उत्तर दिया, "खाने जहाँ ! जिसे कार्य पर पूर्ण अधिकार होता है उससे राज्य के सभी लोग शत्रुता रखने लगते हैं। यदि कोई अत्यधिक शत्रुता के कारण तुझ से यह कहे कि ज़ियाउलमुल्क तेरी पीठ पीछे तेरी निन्दा करता था तो तू उस स्वार्थी की बात पर ध्यान न देना। तू कोई बात अपने हृदय में रखकर शम्स से शत्रुता प्रारम्भ न कर देना। इससे मेरे कार्य को हानि पहुँचेगी। यह किस प्रकार हो सकेगा ?" खाने जहाँ ने उत्तर दिया, "मलिक ज़ियाउलमुल्क कदापि

१ प्रयोग करे।

निन्दा न करेगा। सेवक मलिक ज़ियाउलमुल्क के विषय में किसी की बात पर ध्यान न देगा।" वज़ीर ने इस विषय पर शपथ ली। तत्पश्चात् शहंशाह ने दीवानों के मुहर्रिरों की ओर मुख करके कहा, "हे ख्वाजा लोग! तुम राज्य के मुहर्रिर तथा नवीसिन्दे हो! (४६६) तुम में कोई मुशरिफ़ का नवीसिन्दा है, कोई मुस्तौफ़ी का, कोई वज़ीर का तथा कोई बरीद का। यदि शम्स दीवान में हो और तुम्हारे स्वामी किसी कार्य से अपने घर पर हों और शम्स को किसी काग़ज़ अथवा पंजिका की आवश्यकता हो तो तुम्हें उस अवसर पर यह कहने के अतिरिक्त कोई उपाय न होगा कि सर्वप्रथम अपने स्वामी को सूचना दे दें, तत्पश्चात् दें। इससे हमारे कार्य में विलम्ब होगा।" जब बादशाह ने ये शब्द कहे तो सभी मुहर्रिरों एवं नवीसिन्दों ने धर्ती-चुम्बन करके तथा बादशाह के लिये शुभ कामनायें करते हुये कहा, "यदि मलिक ज़ियाउलमुल्क हमसे कोई काग़ज़ अथवा पंजिका अवलोकन हेतु माँगेगा तो हम कदापि अपने स्वामियों से न पूछेंगे और उन्हें तुरन्त दे देंगे।" इस अवसर पर खाने जहाँ ने बुद्धिमान वज़ीरों के समान कहा, "जो कोई मुहर्रिर मलिक ज़ियाउलमुल्क के आदेश में एक क्षण भर विलम्ब करेगा तो मैं उसे दंड दूँगा।" सुल्तान यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने मलिक शम्सुद्दीन का गौरव बढ़ाने के लिये अपने शरीर से बारानी उतार कर उसे पहना दी। दीवान के समस्त अधिकारियों को उसका मित्र बना दिया। उस दिन से दीवाने विज़ारत के अधिकारियों ने राज्य के समस्त कार्य से हाथ खींच लिया।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा का ख्वाजा हुसामुद्दीन जनैदी से, जो ईश्वर का चुना हुआ दास था, कठोर वचन कहना

(४६७) जब दीवाने विज़ारत के मुहर्रिर तथा मुक्ते पूर्ण रूप से मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा के अधीन हो गये तो वह दोनों समय दीवान में बैठने लगा और समस्त छोटा बड़ा विवरण उसके समक्ष प्रस्तुत होने लगा। खाने जहाँ वज़ीरों की प्रथानुसार एक समय मसनद पर बैठता था। एक पहर दिन तक नियम से बैठा रहता था। कामों से मुख मोड़ कर कुपित रहता। तत्पश्चात् मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा २½ पहर तक समस्त लोगों के साथ दीवान में बैठता था और अपना आतंक आमिलों पर बैठाये रखता था। दिन के अन्तिम समय सायंकाल की नमाज़ के उपरान्त एक पहर रात्रि तक दीवाने विज़ारत में बैठा रहता और अक्ताओं के मुक्तों के हिसाब किताब का निरीक्षण किया करता।

(४६८) जब मलिक अभिमान से भरा हुआ राजभवन से लौटता तो साधारण तथा विशेष व्यक्तियों की इतनी बड़ी भीड़ उसके साथ बाहर निकलती कि लोगों के वक्षस्थल एक दूसरे से संघर्षित होते थे। मलिक शम्सुद्दीन ने दीवानों के नवीसिन्दों से कह दिया था, अपितु पत्र लिखकर दे दिया था कि "जो कोई मेरे आने के पूर्व दीवान में न आयगा और मेरे जाने के पश्चात् दीवान से न जायगा उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही करूँगा। उसको जीविका से वंचित कर दूँगा और उसकी आशाओं के उपवन में काँटे बो दूँगा।" बेचारे नवीसिन्दे तथा मुहर्रिर जो सुल्तान के राज्यकाल में ४० वर्ष से सुख सम्पन्नता एवं निश्चिन्तता-पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे अचानक इतनी कठिनाई में पड़ गये और व्याकुल रहने लगे।

संयोग से एक रात्रि में मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा तथा ख्वाजा हुसामुद्दीन जुनैदी दीवान में बैठे थे; दीवान के नवीसिन्दे प्रथानुसार कारखाने का विवरण तथा उस कारखाने के मुतसर्रिफ़ को दीवान के समक्ष ले गये थे। प्रत्येक चीज़ पेश की जाती थी। मलिक शम्सुद्दीन प्रत्येक चीज़

के विषय में योग्य पदाधिकारियों से पूछताछ और कठोर वाद-विवाद करता था। इसी बात चीत तथा कार्य के मध्य में मलिक शम्सुद्दीन ने एक कारखाने के विषय में जिसमें पिछले वर्षों में अनुचित व्यय हुआ था, वाद-विवाद प्रारम्भ कर दिया और उस कारखाने के मुतसर्रिफ़ (४६९) से कहा 'हे अमुक ! बता कि यह अनुचित व्यय क्यों किया ?" मुतसर्रिफ़ ने उत्तर दिया कि दीवान ने व्यय कराया। इस पर मलिक शम्सुद्दीन ने ख्वाजा जुनैदी की ओर मुख करके, अभिमान से भरे हुये, ये शब्द कहे, "हे ख्वाजा ! यह गन्दिगी तथा अनुचित कार्य तुम्हारे कारण है। जिन कार्यों को मैं बैठा-बैठा ठीक किया करता हूँ, यदि तुम उसमें सावधानी से कार्य करो तो मुझे इतना कष्ट न भोगना पड़े।" मलिक शम्सुद्दीन इतने शब्द कहकर तथा कठोरता प्रदर्शित करके दीवान के जामखाने (फ़र्श) पर खड़ा हो गया और ख्वाजा जुनैदी को जामखाने (फ़र्श) पर छोड़ कर चल दिया। यह तुच्छ इतिहासकार उस गोष्ठी में उपस्थित था और यह हाल देख रहा था।

जब मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा उस स्थान से चला गया तथा ख्वाजा वहीं रह गया तो ख्वाजा जुनैदी क़िबला (पश्चिम) की ओर खड़ा होगया और अपने अपमान के कारण अपने दायें हाथ से अपनी दाढ़ी पकड़ कर आँखों में आँसू भर कर उसने आकाश की ओर देखा और यह शब्द कहे, "हे ईश्वर ! तू सभी का बादशाह है। मेरे ऊपर दया करके मुझे पुनः इस जामखाने में न ला जिससे मैं इस वृद्धावस्था में इस दुष्ट द्वारा अपमानित न हूँ और आदरपूर्वक इस संसार से विदा होजाऊँ।" ख्वाजा जुनैद यह बात कह कर जामखाने से अपने घर की ओर चल (४७०) दिये। उसी रात्रि में ईश्वर की दया से ख्वाजा को ज्वर चढ़ा और छः दिन उपरान्त उनका निधन हो गया।.........

ख्वाजा जुनैद बड़े पवित्र, पूज्य, ईमानदार, सच्चे तथा सदाचारी थे। वे शेख़ अबुल फ़तह के चेले थे। उनका एक चमत्कार यह था कि ईश्वर ने उनकी प्रार्थना तुरन्त स्वीकार करली। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में ईश्वर के इतने बड़े भक्त थे और दीनों तथा दरिद्रियों की आवश्यकतायें पूरी किया करते थे।.........

मलिक ने अपने अभिमान तथा दुष्टता के कारण प्रसिद्ध ख्वाजा जुनैद से पूछताछ की और उनके पवित्र चरित्र में दोष निकाला और निःसंकोच अपशब्द कहे। वास्तव में ऐसी (४७१) बात न थी कि जुनैद कार्य को न जानता हो अथवा कारकुनी की समझ न रखता हो अथवा राज्य के कार्य के लिये जिस प्रमाण की आवश्यकता होती है, उसे न जानता हो। वह सब कुछ जानता था। यह प्राचीन प्रथा है कि जिस प्रकार से राज्य का वाली मुहरा चलता है उसी प्रकार से उसके समस्त अधीन उसकी इच्छानुसार कार्य करते हैं। यदि किसी काल में कोई बादशाह अत्याचार करता है तो जितने लोग उसके अधीन होते हैं, सिंह के समान प्रजा पर अत्याचार करने लगते हैं। प्रत्येक काल, समय तथा संसार में यदि वैभवशाली तथा दीन (इस्लाम) की रक्षा करने वाला योग्य तथा गुणवान बादशाह किसी नगर में न्याय तथा दान करता है तो उससे सम्बन्धित लोग भी दान एवं न्याय के मार्ग पर अग्रसर होते हैं और अपने वाली का अनुसरण करते हैं, इसलिये कि प्रजा राजा के धर्म पर होती है।

छन्द

'जो बादशाह दीनों पर अत्याचार होने देता है,
उसका मित्र भी कठिनाई के समय उसका शत्रु हो जाता है।
प्रजा से ठीक प्रकार रह और शत्रु के युद्ध से सुरक्षित रह,
इसलिये कि न्यायकारी शहंशाह के लिये प्रजा सेना होती है।'

इसी प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपने गौरव तथा वैभव के काल में ईश्वर के भय से समस्त प्रजा के साथ नेकी करता था और शरा के अनुसार आदेश देता था। सहनशीलता (४७२) पूर्वक जीवन व्यतीत करता था। राज्य के सभी अपहरण-कर्त्ताओं को क्षमा कर देता था। उसने अपने ४० वर्षीय राज्यकाल में किसी कारकुन को दण्ड न दिया। भूतपूर्व सुल्तानों के राज्यकाल में ज़रा से धनअपहरण एवं अल्पधन शेष होने पर असावधान आमिलों से नाना प्रकार की कठोरता की जाती थी एवं मृत्यु दण्ड दिया जाता था। फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में किसी कारकुन अथवा कारदार को महोबे के मुक़्ता क़ाज़ी सद्रुलमुल्क के अतिरिक्त किसी को कोई मृत्यु-दण्ड न दिया गया।

क़ाज़ी सद्रु ल मुल्क पर ५० लाख सिक्के का मामला निकलता था।[1] उसने उस सब को नष्ट कर दिया था। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि क़ाज़ी सद्रुलमुल्क के पुत्र के पास एक वैश्या थी। वह उसको विभिन्न प्रकार से प्रसन्न रखता था। उसे नित्य ५ सेर मोती चूने के स्थान पर खाने की आवश्यकता होती थी। क़ाज़ी के पुत्र के आदमी उस वैश्या को उतना मोती चूने के स्थान पर खिला देते थे। संक्षेप में, महोबा के मुक़्ता क़ाज़ी सद्रुल मुल्क पर दीवानी का इतना धन शेष निकला, उसपर भी सुल्तान फ़ीरोज़ न फिरा[2]। वह कहता था कि जो तुझ जैसे व्यक्ति का रक्त बहाये उसके सिर पर उसका खून हो। उसने स्वयं निवेदन किया कि "मैंने अपना रक्त क्षमा कर दिया। कहा जाता था कि क़ाज़ी सद्रुल मुल्क को एक ऐसा रोग हो गया था जिससे वह मुक्ति असम्भव समझता था। इस कारण (४७३) क़ाज़ी सद्रुलमुल्क ने महोबे में अनेक युद्ध किये। मौत न होने के कारण वह बच गया। जब उसके ज़िम्मे अक़्ता का धन निकला तो उसने स्वयं निवेदन किया कि मैंने अपना रक्त क्षमा कर दिया। तत्पश्चात् सुल्तान के दरबार के समक्ष उसकी हत्या करदी गई।

संक्षेप में, फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में यह प्रथा थी कि समस्त मुहर्रिरों एवं नवीसिन्दों को, जो असावधान आमिलों तथा कारकुनों से सम्बन्धित थे, क्षमा कर दिया जाता था और अधिक रोक टोक न थी अन्यथा ईश्वर न करे ख्वाजा जुनैदी तथा मालवा के ख्वाजा शरफ़ द्वारा ज़रा भी धन का अपहरण होता अथवा वे लोग धोकेबाज़ी करते या बिना आदेश या फ़रमाने तुग़रा के कोई अनुचित व्यय करते। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने अनेक बार यह कहा था कि 'मैं अपने बायें हाथ को दृढ़ नहीं समझता किन्तु मालवा के ख्वाजा शरफ़ को दृढ़ समझता हूँ।' इसका निष्कर्ष यह है कि उस राज्यकाल में ऐसे-ऐसे लोग थे। सभी सन्तुष्ट रहते थे और मेल जोल से रहना चाहते थे।

जब लोभी मलिक शम्सुद्दीन दीवाने विज़ारत में बैठा, तो उसने प्राचीन सुल्तानों की प्रथा के अनुसार आचरण करना प्रारम्भ कर दिया। इस कारण सच्चे तथा ईमानदार लोगों में दोष निकालने लगा। यह सब मूर्खता, अभिमान, लोभ तथा शैतान द्वारा सशंकित हो जाने (४७४) के कारण था। इन बातों से लज्जा तथा बुराई पैदा होती है। बुद्धिमान् तथा बड़े लोग इस प्रकार की अस्थायी मसलहत के कारण प्रतिष्ठित लोगों को अपमानित एवं दंडित नहीं करते। कारकुन तथा आबिद (आमिल) विचित्र लोग हैं। प्रत्येक लिखने तथा निर्णय के विषय में सब कुछ जानता है किन्तु सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ईश्वर की प्रेरणा से सर्वदा लोगों पर दया, नेकी तथा उनका उद्धार करना चाहता था अतः राज्य के सभी कारगुज़ार आमिलों के मुहासबे में सुगमता से कार्य लेते थे और अपने स्वामी का अनुसरण करते थे।

---

१ शेष था।

२ कठोरता प्रदर्शित न की।

मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा का दीवाने विज़ारत के अधिकारियों को त्रुटि निकालना

जब मलिक (शम्सुद्दीन अबू रिजा) शहंशाह का विश्वासपात्र होने के कारण दीवाने विज़ारत में हितैषियों के समान शासन करने लगा तो समस्त अधिकारी उससे नीचे बैठने लगे। मलिक शम्सुद्दीन दीवान के अधिकारियों की निन्दा किया करता था। कुछ को वह मुश्ते मख़लूलियान कहा करता था, अर्थात् उनके पिता दीवाने विज़ारत के पदाधिकारी थे। (४७५) जब उनकी मृत्यु हो गई तो बादशाह ने दया करके उनके पिता का पद उन्हें प्रदान कर दिया। वे लोग दीवाने विज़ारत का कार्य तथा सेवा करने के योग्य नहीं। उन्हें कोई समझ अथवा योग्यता नहीं। वे लोग मख़लूलियों के समूह से सम्बन्धित हैं। कुछ का नाम जामख़ाने का लंगर रख दिया था। अर्थात् जिस प्रकार फ़र्श के कोनों पर फ़र्राश लंगर बाँध देते हैं जिससे वायु के झोंके से वह उड़ न जाय उसी प्रकार मलिक शम्सुद्दीन के अनुसार दीवाने विज़ारत के कुछ अधिकारी जो बुद्धि तथा ज्ञान से शून्य हैं वज़ीर के मसनद पर बैठने के समय फ़र्श के लंगर के समान फ़र्श पर आकर बैठ जाते हैं। उन्हें राज्य के कार्यों का कोई ज्ञान नहीं होता मानो वे पत्थर हैं। इसी प्रकार मलिक शम्सुद्दीन अपने विश्वासपात्रों से कहा करता था और अपने प्रेम का परिचय दिया करता था। वह कहा करता कि 'ख़ाने जहाँ को कुएँ के किनारे पहुँचा दिया है। केवल यही एक सीढ़ी शेष है।' कुछ असावधानी तथा भूल के कारण यह समझने लगे थे कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ख़ाने जहाँ को दीवाने विज़ारत से पदच्युत करना चाहता है।.........

जिस दिन मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा को बन्दी बनाया गया और देश निकाला प्रदान हुआ तो एक व्यक्ति ने उसके पास जाकर कहा, "हे ज़ियाउलमुल्क ! तू अपने आप को बुद्धिमान् (४७६) योग्य तथा ज्ञानी एवं निपुण कहलवाता था किन्तु अपने आपको इस दशा को पहुँचवा देना बुद्धिमानी नहीं।" मलिक शम्सुद्दीन ने कहा, "क्या करूँ ? मेरी दुष्ट तथा मूर्ख वज़ीर से संगति हो गई। वह सर्वदा मूर्खता की बातें किया करता था। इस प्रकार एक दिन एक व्यक्ति का हाल वज़ीर के समक्ष प्रस्तुत हुआ। उसने कुछ धन का अपहरण किया था और यह अपराध प्रमाणित हो चुका था। मैंने उससे वाद-विवाद किया और कार्य सम्बन्धी शब्द कहे। उस अवसर पर ख़ाने जहाँ ने कहा, 'मलिक ज़ियाउल मुल्क ! ईश्वर के दासों से अधिक न उलझो। यदि ईश्वर अपने दासों से न्याय करने लगे तो उनका चिह्न भी शेष न रहेगा।' इस विषय में मुहम्मद साहब की हदीस है 'नेकी का बदला नेकी से दो।' ख़ाने जहाँ ने क़ुरान के इस वाक्य को हदीस बना दिया। मैंने कहा कि ख़ुन्द ख़ाँ यह क़ुरान की आयत है जो ईश्वर के वाक्य हैं हदीस नहीं। ख़ाने जहां को जब ज्ञात हुआ कि उसने क़ुरान के वाक्य को हदीस का वाक्य बना दिया तो उसने कहा चाहे यह क़ुरान का वाक्य हो चाहे हदीस का, नेकी प्रत्येक दशा में उत्कृष्ट है। इस समय ऐसा वज़ीर है जिसे क़ुरान तथा हदीस का भेद ज्ञात नहीं। वह क्या विज़ारत करेगा।" निष्कर्ष यह कि मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा सभी पदाधिकारियों में दोष निकाला करता था और अभिमान से भरे शब्द कहा करता था अपितु समस्त दीवानों[1] में हस्तक्षेप किया करता था।

(४७७) इस प्रकार दीवाने अर्ज़, दीवाने रिसालत तथा दीवाने बन्देगान उसके अधीन हो गये। मुक़्तों का कार्य इस सीमा को प्राप्त हो गया था कि जब मुक़्ते अक़्ताओं से दरबार में आते तो सर्वप्रथम मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा के घर जाते थे, उससे भेंट करने

१ विभागों।

के पश्चात् सुल्तान फ़ीरोज़ के पाबोस[1] के लिए जाते थे। बेचारे कारखानों के मुतसर्रिफ़ सर्वदा उसके चरणों के नीचे रहते थे। खाने जहाँ भी समझदार लोगों की भाँति वही आदेश देता था जो मलिक शम्सुद्दीन की इच्छा होती थी।

जब मलिक शम्सुद्दीन ने देखा कि फ़ीरोज़ शाह उससे पूर्णतः सम्बन्धित हो गया है और वज़ीर उसकी बातों का मुहताज है तथा अक़्ताओं के सभी मुक़्ते तथा मामलों के आमिल उसके अधीन हो गये हैं, तो मलिक शम्सुद्दीन के लोभ का मार्ग, जिसका उसने प्रबन्ध किया था, चालू हो गया। वह इस कार्य में दिल व जान से तल्लीन हो गया और घूस की ओर हाथ बढ़ाने लगा। लोगों पर कठोरता करने लगा। प्रजा से भी घूस लेता।

कोई दूसरा तथा तीसरा दिन खाली न जाता, जब सुल्तान अत्यधिक अनुकम्पा प्रदर्शित करते हुए उसे अपने पहनने की खास बारानी प्रदान न करता। जो कोई भी सुल्तानों तथा धर्म के इमामों के भक्त होते हैं और उनके आज्ञाकारी बनते हैं उनकी इच्छा यह होती है कि इन चार चमकते हुये मोतियों में से कोई मोती उन्हें प्राप्त हो जाय। इन लोगों के चार गरोह होते हैं। एक समूह बादशाह का हितैषी इसलिये होता है कि वह उसका शुभचिन्तक होता है। वह सर्वदा उसका भक्त रहता है और उसके राज्य तथा शासन के चिरस्थाई रखने का प्रयत्न किया करता है। उसके हृदय में ज़रा भी लोभ नहीं होता। यह मित्र तथा (४७८) भक्त समूह धन्य है। दूसरा समूह अपनी प्रसिद्धि तथा नाम के लिये अभिमान के कारण हितैषी होता है और सांसारिक पद तथा आदर की वृद्धि हेतु शुभचिन्तक होता है। व्यर्थ तौफ़ीरात बादशाह के समक्ष प्रस्तुत करता है। नई-नई बातें निकालता है और इस कारण ईश्वर के दासों का विनाश हो जाता है। शरफ़ुद्दीन क़ासी[2] ने भी अलाउद्दीन के राज्यकाल में व्यर्थ तौफ़ीरात द्वारा राज्य का विनाश करा दिया। इसका उल्लेख लेखक ने अलाई राज्यकाल के हाल में विस्तार से किया है। यद्यपि ये लोग हितैषी होते हैं किन्तु एक प्रकार से विनाशक होते हैं, इसलिये कि वे अत्यधिक तौफ़ीरात तथा पूछताछ से राज्य में खराबी पैदा करा देते हैं। तीसरा समूह छल तथा धूर्तता के कारण सुल्तान का हितैषी होता है, जिससे उनके प्राण को मुक्ति प्राप्त रहे। बादशाह तथा धर्म के इमाम विचित्र लोग होते हैं। कलीला व दिमना में लिखा है कि वे तरुण की सुन्दरता एवं स्त्री की युवावस्था के समान होते हैं। चौथा समूह अपने स्वार्थ के लिये हितैषी होता है। मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा ने ऐसा ही किया। अपनी भक्ति दिखाने के लिये सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को समस्त राज्य की ओर से शंकित कर दिया और उसने स्वयं अपने लोभ का हाथ आगे बढ़ाया। अक़्ताओं के समस्त (४७९) मुक़्तों, परगनों के आमिलों तथा कारखानों के मुतसर्रिफ़ों से घूस लेकर ही उनकी प्रशंसा करता। उसकी घूस इस सीमा को पहुंच गई कि वह आमिलों से बिना आवश्यकता बुरी तरह उलझता। वे आश्चर्यचकित रहते। जब उनसे घूस ले लेता तब उन्हें छोड़ता।

सर्वप्रथम जब मलिक शम्सुद्दीन किसी से उलझना तथा उस पर कठोरता प्रदर्शित करना चाहता तो उसे वज़ीर के समक्ष प्रस्तुत करता। जब उससे घूस ले लेता तो खाने जहाँ के समक्ष उसकी चर्चा इस प्रकार करता कि उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती। खाने जहाँ भलीभाँति जानता था कि मलिक घूस के कारण ऐसा करता है। खाने जहाँ मलिक शम्सुद्दीन की सहमति से आदेश दे देता जिससे वह दुष्ट वज़ीर को कष्ट न पहुँचाये और बादशाह को ज्ञात हो जाय कि हितैषी कौन है तथा विरोधी कौन है। जो कोई शम्सुद्दीन को घूस देता वह तत्काल खाने जहां के पास आकर समस्त हाल बता जाता कि "मैं ने इस समय इतनी घूस

१ चरणों के चुम्बन।
२ क़ाई।

दो है।" इस पर खाने जहाँ कहता "हे मूर्ख राय (?) अबू रिजा जो कुछ माँगे देता जा। देख ईश्वर का क्या आदेश होता है!"

एक बार मलिक सैयिदुल हुज्जाब का काम शम्सुद्दीन से पड़ा। उन दिनों मलिक सैयिदुल हुज्जाब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सवारी के साथ रहता था। मलिक सैयिदुल (४८०) हुज्जाब के आदमी मलिक शम्सुद्दीन के घर आया जाया करते थे और अपना कार्य सम्पन्न कराने का प्रयत्न करते थे। जब उन लोगों ने उसे बहुत टालमटोल करते देखा तो समस्त हाल मलिक सैयिदुल हुज्जाब को लिख भेजा और प्रार्थना की कि 'मलिक ज़ियाउलमुल्क आप के कार्य में बड़ी टालमटोल कर रहा है, अतः उसे पत्र लिख दिया जाय।' मलिक सैयिदुल हुज्जाब ने मलिक शम्सुद्दीन को पत्र लिखा और उसमें अपने प्रेम का बड़ा परिचय दिया और पत्र के अन्त में यह छन्द लिखा।

छन्द

'कुछ दिन तक यदि चोर ने सम्पत्ति (प्राप्त करने) का विचार किया।
घर भी रिक्त है और घर का स्वामी भी नहीं जाग रहा है।'

इस प्रकार फ़ीरोज़ शाह के दरबार के समस्त खान तथा मलिक उसके शत्रु हो गये और उसके पीछे पड़ गये। उन दिनों मलिक ताजुद्दीन तुर्क (जो क़ुतलुग़ शाह के राज्यकाल में देशों में रह चुका था और खाने जहाँ की उपाधि प्राप्त कर चुका था) के पुत्र मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ को बड़ा सम्मान प्राप्त था। एक दिन मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ तथा मलिक शम्सुद्दीन एक स्थान पर बैठे थे। उस समय मलिक शम्सुद्दीन के समक्ष अक़्ता का हिसाब किताब प्रस्तुत हो रहा था। प्रत्येक शब्द पर मलिक उलझने वाले शब्द कहता था। उस कारकुन के चरणों के नीचे से धर्ती निकली जा रही थी। उस अवसर पर मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ ने बड़ी उत्कृष्ट बात कही। "मलिक ज़ियाउलमुल्क ये दो चीज़ें कदापि नहीं चल सकतीं। लम्बी जिह्वा भी तथा (४८१) लम्बा हाथ भी। यदि जिह्वा को बढ़ाते हो तो हाथ को छोटा करो।" उस अवसर पर मलिक ज़ादा ने मलिक ज़ियाउलमुल्क से गुप्त रूप से कहा, "मैंने सुना है कि तुमने दीवाने अर्ज़ में भी प्रारम्भ कर दिया है[1] जिससे सैनिकों में भी उथल पुथल हो जाय।" मलिक शम्सुद्दीन ने कहा, "मैं क्या करूँ। कुछ चोर डाकुओं के समान एकत्र हो गये है और चोरी कर रहे हैं।" मलिक ज़ादा ने यह बात सुनकर कहा, "मलिक ज़ियाउलमुल्क भी हो गया है जिससे सभी एक हो जायँ तथा संगठित हो जायँ। ऐसा न हो कि वे शक्ति प्राप्त करके तेरे लिये कठिनाई पैदा करदें।"

निहालिस्तान के मरक़ात में सुल्तान फ़ीरोज़ द्वारा मलिक शम्सुद्दीन को देश निकाला मिलना

खाने जहाँ को शम्सुद्दीन से एक बड़ा महत्वपूर्ण कार्य पड़ गया। दीवाने विज़ारत में कोई ऐसा व्यक्ति न था कि मलिक शम्सुद्दीन से भली भाँति उचित रूप से वार्ता कर सकता क्योंकि मलेकुश्शर्क़ व मलिक निज़ाम नायब वज़ीरे ममालिक व योग्य ख्वाजा हुसामुद्दीन जुनैदी एवं ख्वाजा शरफ़ मालवा (का अधिकारी) जो लिखने तथा बोलने में अद्वितीय थे, सब के सब मृत्यु को प्राप्त (४८२) हो चुके थे। यद्यपि ख्वाजा जुनैदी का पुत्र ख्वाजा रुक्नुद्दीन तथा ख्वाजा शरफ़ुद्दीन मालवा (के अधिकारी) का पुत्र ख्वाजा यमीनुद्दीन अपने पिता का पद प्राप्त कर चुके थे और अपने अपने

१ वहाँ भी घूस लेने लगा है।

कार्यालय में बैठते थे किन्तु मलिक शम्सुद्दीन के अत्यधिक विश्वासपात्र होने के कारण सांस न ले सकते थे। उस समय खाने जहाँ ने दीवाने विज़ारत के कार्य सम्पन्न कराने के लिये नायब इशराफ़े ममालिक मलिक खतीरुद्दीन को, जो बड़ा योग्य, सदाचारी, बुद्धिमान् तथा राज्य एवं धन सम्बन्धी कार्यों में पूर्ण था, पा रक्खा था। वह आमिलों के कार्य को समझता था। लिखने तथा बात चीत एवं गूढ़ बातों के वाद-विवाद में पूर्ण था। खाने जहाँ ने अपने हृदय के रहस्य को मलिक (खतीरुद्दीन) के समक्ष खोला और मलिक शम्सुद्दीन के हाल का परिचय देकर कहा कि ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि यह खराब काँटा इस उपवन से निकल जाय।

खाने जहाँ से यह सुनकर दीवानों के समस्त पदाधिकारी एकत्र हुये। मलिक फ़ज़्ले इलाह अली वलखी यद्यपि नायब मुस्तौफ़ी था किन्तु मुहर्रिर हो गया था। निष्कर्ष यह कि दीवान के सभी अधिकारियों ने मलिक शम्सुद्दीन के विषय में जानकारी प्राप्त करनी प्रारम्भ करदी। अबू रिजा के समस्त कार्यों पर दृष्टि रखते हुये सामाना तथा गुजरात की अक़्ता की पंजिकायें भी दृष्टि में रखी गईं। प्रत्येक कार्य के रहस्य की जानकारी का प्रयत्न किया गया। अबू रिजा के दोषों का पता लगा कर वज़ीर को बताया गया।

(४८३) बादशाह का उसकी (अबू रिजा की) ओर से हृदय शुद्ध होने के कारण खाने जहाँ कुछ निवेदन करने में विलम्ब कर रहा था। इसी बीच में मलिक अब्दुल्लाह कारकुन का, मलिक शम्सुद्दीन से एक मामला पड़ा। मलिक अब्दुल्लाह ने सुल्तान के समक्ष स्पष्ट रूप से अबू रिजा के विरुद्ध अपशब्द कहे और ठीक-ठीक एवं कठोरता से तथ्य कहा। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि मलिक अब्दुल्लाह कारकुन खुरासान के बादशाहों के वंश से था और फ़ीरोज़ शाह के यहाँ सेवा करता था। यद्यपि मलिक के अधिकार में दो परगने थे किन्तु दोनों परगनों से दीवानी की रक़म तथा क़ानूनी महसूल अधिक प्राप्त होता था। मलिक शम्सुद्दीन उसके परगनों (के मामले में भी) उलझा और उसके कारकुनों को कष्ट पहुँचाया तथा उनसे हिसाब किताब एवं वाद-विवाद किया। खाने जहाँ ने भी समझदार लोगों के समान मसलेहत के कारण मामले के शब्द कहे। अब्दुल्लाह कारकुन ने मलिक शम्सुद्दीन से बड़ी विनति की और दिल व जान से उसे अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया। क्योंकि अबू रिजा का उद्देश्य उलझना था अतः उसने अब्दुल्लाह की विनति न सुनी। मलिक अब्दुल्लाह कारकुन ने खाने जहाँ से यह हाल कहा ताकि अबू रिजा उसका पीछा छोड़ दे। खाने जहाँ ने अब्दुल्लाह से कहा कि 'अबू रिजा का यह कुत्सित स्वभाव है कि जब तक वह कुछ ले नहीं लेता उस समय तक उलझने से कदापि बाज़ नहीं आता।' वज़ीर ने उससे (४८४) बहुत कुछ कह कर उसे इस बात पर तैयार किया कि वह सब हाल तथा उसकी दुष्टता की चर्चा सुल्तान से करे और संसार को अबू रिजा की दुष्टता से मुक्ति दिला दे।

एक दिन सुल्तान बारजा में दरबार कर रहा था। मलिक अब्दुल्लाह ने राजसिंहासन के समक्ष निवेदन किया कि "शहंशाह के उत्सर्ग से सेवक के अधिकार में दो परगने हैं। मलिक ज़ियाउलमुल्क दास के परगनों में घूस लेने के लिये अत्यधिक उलझता है।" फ़ीरोज़ शाह ने मलिक शम्सुद्दीन को बुलवाया और अपनी हानि न पहुँचाने वाली जिह्वा से यह कहा, "अब्दुल्लाह क्या कहता है ?" अबू रिजा ने उत्तर दिया "मलिक अब्दुल्लाह के परगनों का महसूल थोड़ा है तथा प्राप्ति अपार एवं असंख्य है।" मलिक अब्दुल्लाह ने कहा, "संसार के बादशाह के उत्सर्ग से ईश्वर की कृपा के कारण शहंशाह के राज्यकाल में खराज तथा महसूल एक से दस तक पहुँच गया है[1]। जिससे तू (शम्सुद्दीन) घूस ले लेता है उसे

१ 'महसूलहाय कि दस्त यके ब देह रसीदह'।

क्षमा कर देता है और जो तुझे घूस नहीं देता उसे तू कष्ट पहुँचाता है। मेरे पास घूस नहीं। मैं तुझे किस प्रकार रोकूँ ? इसी कारण मेरे कार्य में बहुत उलझा जाता है और मुझे बड़ा कष्ट पहुँचाया जाता है।" इस अवसर पर राज्य के समस्त स्तम्भों ने, जो उपस्थित (४८५) थे, संगठित होकर एक स्वर में कहा कि मलिक अब्दुल्लाह ने, जो कुछ कहा वह सत्य है। फ़ीरोज़ शाह बड़ा समझदार बादशाह था। वह समझ गया कि शम्स अबू रिजा ने राज्य के उपवन में शत्रुता के बीज बो दिये हैं। बादशाह बड़े सोच में पड़ गया और उस समय वहाँ से उठ गया और खाने जहाँ भी लौट गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो दीवानों के कारकुनों ने मलिक शम्सुद्दीन के धन अपहरण के विषय में जो कुछ खोज लगा कर एकत्र किया था, प्रस्तुत किया। उनमें से एक यह थी कि जब मलिक शम्सुद्दीन को गुजरात की अक़्ता के नयाबत प्राप्त हुई थी तो उसने राजसिंहासन के समक्ष ६० हज़ार सिक्के तैयारी के लिये राजकोष से ऋण के रूप में प्राप्त किये थे। वह रक़म उसने मुस्तौफ़ी होने तक अदा न की थी। उसके ऋण का पत्र भी उसी स्थान पर था। खाने जहाँ ने ख़ज़ाने के अधिकारियों को बुलाकर उनसे कहा कि वे उसकी अनुपस्थिति में वह ६० हज़ार का पत्र एकान्त में राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत कर दें। जब हितैषी ख़ज़ाने के अधिकारियों ने राजसिंहासन के समक्ष उस पत्र की चर्चा की तो बादशाह ने कहा, "इस समय तक उस पर यह रक़म क्यों छोड़ी गई ?" बादशाह ख़ज़ाने के अधिकारियों पर (४८६) बड़ा रुष्ट हुआ। वे लोग मौन रहे और उन्होंने कोई उत्तर न दिया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह समझ गया कि अबू रिजा के राज्य में पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने के कारण सभी लोग असावधान हो गये और उसके भय के कारण कोई भी यह धन न माँग सका। बादशाह ने खाने जहाँ को आदेश दिया कि अबु रिजा से यह धन तुरन्त प्राप्त कर लिया जाय। मलिक निज़ामुलमुल्क की मृत्यु हो चुकी थी।

जब वज़ीर को ज्ञात हुआ कि तन्दूर गरम हो गया है और दूसरी चोट लगानी चाहिये उसने दीवान के अधिकारियों को बुलवाया और उनसे परामर्श किया। सबने एक मत होकर कहा कि जब अभिमानी मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा गुजरात में था तो शहंशाह का आदेश यह था कि "जो व्यापारी नील नदी के टापुओं से सुल्तान के लिये हाथी लाये और जो हाथी मार्ग में मर जाय तो उस हाथी का मूल्य भी उस व्यापारी को ख़ज़ाने से दे दिया जाय।' इस आज्ञा के अनुसार दुष्ट मलिक शम्सुद्दीन ने झूठ बोल कर कुछ हाथियों का मूल्य दीवाने विज़ारत से मुजरा कराके अपनी सम्पत्ति में सम्मिलित कर लिया। खाने जहाँ ने दीवान के अधिकारियों से यह सुन कर उन व्यापारियों को उपस्थित किया और अपने अधिकारियों को उनकी अनुपस्थिति में राजसिंहासन के समक्ष यह हाल प्रस्तुत करने के लिये भेज दिया। (४८७) दीवाने विज़ारत के अधिकारियों ने जब निपुण लोगों के समान राजसिंहासन के समक्ष इस अपहरण का हाल कहा तो बादशाह को दुष्ट अबू रिजा के प्रति पूर्णतः अविश्वास हो गया।

दूसरे दिन खाने जहाँ सुल्तान के मुलूक़ खाने में बैठा था और मलिक शम्सुद्दीन खाने जहाँ के समक्ष अकड़ दिखला रहा था। उस अवस्था में शहंशाह ने मलिक अब्दुल्लाह की ओर क्रोध से देखकर पूछा, "अब्दुल्लाह ! मुलूक खाने में कौन कौन लोग बैठे हैं ?" मलिक अब्दुल्लाह ने कहा, "खाने जहाँ तथा मलिक ज़ियाउलमुल्क बैठे हैं।" इस पर शहंशाह ने कहा, "अबू रिजा में खाने जहाँ के समक्ष बैठने का क्या साहस। अब्दुल्लाह जाकर अबू रिजा को खड़ा करदे। मलिक अब्दुल्लाह तत्काल शहंशाह के समक्ष से मुलूक खाना पहुंचा और अबू रिजा की कमर

पकड़ कर कहा, "शाही फ़रमान होता है कि तेरा क्या साहस जो तू ख़ाने जहाँ के समक्ष बैठे।"

ईश्वर को धन्य है। यह इतिहासकार शम्स सिराज अफ़ीफ़ उस गोष्ठी में उपस्थित (४८८) था और यह कार्यवाही देख रहा था। दीवाने विज़ारत के बारीदेहों में सेवा करता था। जब मलिक अब्दुल्लाह ने अबू रिजा को कमर पकड़ कर उठाया तो अबू रिजा तत्काल खड़ा हो गया। ज्ञान का परदा जो उसके शरीर पर था उतार डाला। भाग्य (अधिकार) की टोपी जो उसके सिर पर थी उतार दी; वह ख़ाने जहाँ के समक्ष खड़ा होकर विवरण दिया करता था। ....

दूसरे दिन बादशाह ने आदेश दिया कि अबू रिजा को राजसिंहासन के समक्ष बन्दी बनाया जाय तथा उसके दोनों हाथ पीछे की ओर बाँध दिये जायँ। उसके आदेशों का पालन हुआ और उसे दारुण कष्ट पहुँचाया जाने लगा तथा शेष धन माँगा जाने लगा। उसे ख़ाने जहाँ को सौंप दिया गया। उसके घर की समस्त सम्पत्ति लाई गई। उसे राजभवन के द्वार के बीच में खड़ा किया गया। उसके घर की सामग्री में से प्रत्येक वस्तु बहुत बड़ी संख्या में लाई गई और उन्हें राजभवन के द्वार के मध्य में ढेर कर दिया गया। उस दिन अबू रिजा की सम्पत्ति देखने चारों नगरों की अपार भीड़ तथा बाज़ारी एकत्र हुये। अपार भीड़ के कारण बाज़ार वालों के वार्तालाप की आवाज़ शहंशाह के कानों में पड़ी। बादशाह ने पूछा, "यह शोर कैसा है?" दरबार के उपस्थित जनों ने उत्तर दिया कि "चारों नगरों के बाज़ारी (४८९) अबू रिजा की सम्पत्ति की लीला देखने एकत्र हुये हैं।" बादशाह ने कहा कि "यदि अबू रिजा ने बुराई की तो मेरे राज्य वालों के साथ की। इन बाज़ारियों के साथ क्या किया जो वे प्रसन्नतापूर्वक लीला देखने एकत्र हुये हैं।" सुल्तान के विश्वासपात्रों ने उत्तर दिया कि "अबू रिजा राज्य पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने के उपरान्त जिस किसी की सामग्री क्रय करता था तो उसे परेशान करता था और वास्तविक मूल्य से कम देता था। उसके आतंक के भय से कोई कुछ कह न सकता था। जब बाज़ारियों (व्यापारियों) ने शम्सुद्दीन की दुर्दशा का हाल सुना तो वे उसे तथा उसकी सम्पत्ति को देखने आये हैं।" उस पर शहंशाह ने कहा, "क्या ही दुष्ट जीवन है जिसे इस बदनामी से व्यतीत किया।" बादशाह ने यह छन्द पढ़ा :

छन्द

'हे सादी ! बुद्धिमान मनुष्य कदापि नहीं मरता।
मृतक वह है जो नेकनामी से जीवन व्यतीत नहीं करता।'

शहंशाह ने आदेश दिया कि 'लोगों को भीतर प्रविष्ट होने से न रोका जाय। लोग आ आ कर देखें। निष्कर्ष यह कि मलिक शम्सुद्दीन की सम्पत्ति का मूल्यांकन किया गया। ८० हज़ार तन्का मूल्य निश्चित हुआ। उससे शत्रुता रखने वालों ने फ़ीरोज़ शाह से कहा कि 'अबू रिजा का एक घर हिसारे जहाँ पनाह में है। उस घर में एक ऐसा स्थान है जहाँ उसके सोने के तन्के हैं।' उस घर में पूछताछ करने पर ३००० सोने के तन्के निकले। तत्पश्चात् (४९०) ख़ाने जहाँ ने कहा, "हे छली शम्स ! अन्य धन निकाल।" दुष्ट अबू रिजा ने कहा, "मेरे पास अन्य धन नहीं।" शहंशाह के समक्ष यह सब हाल प्रस्तुत किया गया। बादशाह ने हितैषी वज़ीर से मज़ाक़ में कहा, "ज्ञात होता है कि तू धन लेना नहीं जानता। सर्वदा सुगमतापूर्वक जीवन व्यतीत करता है।" ख़ाने जहाँ ने, जो अबू रिजा का शत्रु था, उसे बन्दी बनाकर, इस दुर्दशा तक पहुंचा दिया।

अबू रिजा के घर की सम्पत्ति लाकर राजभवन के द्वार में ढेर की गई। एक सन्दूक़ में घातक विष की तीन थैलियाँ तथा सुनहले फरसे निकले। उन थैलियों को शहंशाह के समक्ष प्रस्तुत किया गया और समस्त हाल बताया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि अबू रिजा से पूछा जाय कि इतना घातक विष किस कारण एकत्र किया था। अबू रिजा ने उत्तर भेजा कि "यह विष अपने परिवार के लिये एकत्र किया था।" इस बात पर सुल्तान ने कहा, "अबू रिजा छली तथा धूर्त है। मुसलमानों के प्राण के लिये एकत्र कर रखा होगा। ईश्वर ने उन्हें उसके छल तथा उसकी धूर्तता से मुक्त कर दिया।" आदेश हुआ कि उन तीनों विष की थैलियों को फ़ीरोज़ाबाद के कूश्क के नीचे यमुना तट पर जला डाला जाय।

(४६१) संक्षेप में, कुछ दिन के उपरान्त फ़ीरोज़ शाह शिकार खेलने बदायूँ में काफ़िरों की दिशा में चला गया। अबू रिजा को खाने जहाँ को इस आशय से सौंप दिया गया कि वह उससे धन प्राप्त करे। छः मास तक हितैषी वज़ीर नित्य मसनद पर आसीन होता था। मलिक शम्सुद्दीन को इतना पीटा जाता कि लकड़ी टूट कर चूर-चूर हो जाती किन्तु वह इतना धृष्ट था कि इतनी मार खाकर भी 'तोबा' शब्द मुख से न निकालता था। मार खाते-खाते उसमें शक्ति न रहती। उसके पाँव पकड़ कर खींचते हुये खाने जहाँ की मसनद के सामने से बाहर ले जाया जाता। दूसरे दिन पुनः इतनी ही मार खाता। छः मास तक हितैषी वज़ीर शम्सुद्दीन को बुरी तरह पिटवाता तथा दण्ड देता रहा। तत्पश्चात् शहंशाह का फ़रमान खाने जहाँ को प्राप्त हुआ कि शम्सुद्दीन अबू रिजा को मरूत व तहलक में भेज दिया जाय। तहलक व मरूत पश्चिम दिशा में जंगलों व बियाबानों में है। यहाँ जल का बड़ा अभाव है।

जब तक सुल्तान फ़ीरोज़ शाह जीवित रहा तथा सिंहासनारूढ़ रहा, मलिक शम्सुद्दीन (४६२) अबू रिजा तहलक व मरूत में रहा। मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह ने अपने राज्यकाल में, उसे बड़े सम्मान से वहाँ से बुलवाया किन्तु खाने जहाँ द्वारा पहुंचाई गयी क्षती के कारण वह घोड़े पर सवार न हो सकता था, पालकी पर सवार होता था। कुछ समय उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। वह तीन वर्ष तक दीवाने विज़ारत में बैठा और सबको अपने अधीन करके उसने समस्त राज्य छिन्न भिन्न कर दिया। तत्पश्चात् ७८९ हि० (१३८७ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई।

अध्याय १२

मलिक शम्सुद्दीन दामग़ानी के पत्र का उल्लेख तथा सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के चमत्कार का हाल।

(४६३) कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल में १८ स्थानों पर विद्रोह हुये और सुल्तान मुहम्मद को उनके कारण बड़ा परेशान होना पड़ा किन्तु ईश्वर की कृपा से फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में ४० वर्ष तक उसकी अत्यधिक योग्यता के कारण कोई क्षण भर को भी मलिक शम्सुद्दीन दामग़ानी के अतिरिक्त विरोध न कर सका। सिंहासनारोहण से लेकर ७७७ हि० (१३७५-७६ ई०) तक ईश्वर की कृपा से सब हंसी खुशी व्यतीत हो गया। नित्य राज बढ़ता रहा। २६ वर्ष तक फ़रीदूँ के समान राज्य में वृद्धि होती रही। ७७८ हि० (१३७६-७७ ई०) में सुल्तान शिकार खेलने क़तबर की ओर गया। इस वर्ष के आरम्भ में अकस्मात् सुल्तान के पुत्र शाहज़ादा फ़तह खाँ की मृत्यु हो गई। सुल्तान यात्रा (४६४) से लौट आया था। वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो गई थी। बादशाह ने अजगर के समान

गंगा नदी पार की। फ़तह खाँ की मृत्यु हो चुकी थी। इस यात्रा में यह तुच्छ लेखक शम्स सिराज अफ़ीफ़ सुल्तान के साथ था। शाहज़ादे की मृत्यु का सुल्तान को बड़ा शोक हुआ। उस वर्ष जब सुल्तान शहर में पहुँचा तो वह तैयारी जो उसके पहुँचने पर होती थी रुकवा दी गई।

इसके उपरान्त वह ७८० हि० (१३७८-७६ ई०) में शहर में रहा। इस वर्ष एक खुरासानी ने सहने पाशेब में मलिक नेक आमदी कोतवाले ममालिक पर तलवार द्वारा प्रहार किया। सुल्तान फ़ीरोज़ के राज्यकाल में पहली बार राजभवन में तलवार खींची गई थी। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि एक खुरासानी जो कि खुरासानी व्यापारियों में से था, किसी अपराध के कारण कोतवाल के बन्दीगृह में बन्दी था। इस अवस्था में उसे बड़ा कष्ट पहुँचा। कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने बन्दीगृह के बन्दियों का विवरण प्रस्तुत करने का आदेश दिया। इस फ़रमान के अनुसार मलिक नेक आमदी कोतवाल के अधिकारियों ने नियमानुसार उस खुरासानी का हाल सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया। बादशाह ने आदेश दिया कि वह परदेशी है, उसे प्रस्तुत किया जाय।

मलिक नेक आमदी अपने अन्तिम समय उस खुरासानी को मुक्त करके अपने साथ (४६५) राजसिंहासन के समक्ष ले चला। जब दोनों ज़ीने पर, उस स्थान के प्रांगण में, पहुँचे तो मलिक नेक आमदी आगे आगे था और वह खुरासानी पीछे पीछे था। उस स्थान पर कुछ दास तलवारें लिये नौबत[१] में बैठते थे। खुरासानी ने अभिमानवश एक तलवार चलाने वाले की तलवार खींच ली और उसे मियान से निकाल कर मलिक नेक आमदी के सिर पर मारी। उस समय मलिक खुरासानी की बग़ल में हो गया। तलवार का उस पर प्रभाव न हुआ और वह बच गया किन्तु थोड़ी सी तलवार मलिक नेक आमदी के सिर में प्रविष्ट हो गई। सीढ़ियों में शोर मच गया। वह खुरासानी, प्रसिद्ध ख्वाजा, बड़े अधिकार वाला तथा व्यापारियों में विशेष सम्मानित था। किसी अपराध के कारण मलिक नेक आमदी के दीवान में कोतवाले ममालिक के हाथों बन्दी बना लिया गया था। उसे बन्दी गृह में कड़ी क़ैद में रखा गया। उसका अभियोग मलिक ने कई बार खाने जहाँ के समक्ष प्रस्तुत किया। जब खाने जहाँ मसनद पर विराजमान होता उसे वज़ीर की हुकूमत की मसनद के समक्ष प्रस्तुत किया जाता। खाने जहाँ दीवान के समस्त अधिकारियों से प्रश्न करता था। खाने जहाँ को कठिनाई होती। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह शिकार खेलने गया था। खाने जहाँ ने यह अभियोग राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये स्थगित रखा।

जब सुल्तान राजभवन में पहुँचा तो उसने बन्दियों के विषय में पूछताछ कराई। उसे (खुरासानी को) खुला हुआ ले जा रहे थे। उसने तलवार चलाई। सभी लोग उधर कान लगाये थे।

(४९६) जब बड़ा शोर गुल होने लगा तो वह आवाज़ सुल्तान के कानों में पहुंची। उस समय सुल्तान बड़े वैभव से छज्जये चोबीं के महल में बैठा था। सुल्तान बड़े आतंक से कूश्क के कोठे पर आया। खुरासानी प्राण के शत्रुओं के समान मलिक नेक पर तलवार चलाकर कोतवाले ममालिक से बचकर सीढ़ियों की ओर भाग कर निकल जाना चाहता था। उसके हाथ में नंगी तलवार होने के कारण कोई ढाल वाला खुरासानी के निकट जाने का साहस न कर सकता था। जब उस खुरासानी ने सीढ़ियों से उतरना चाहा तो दौड़ते समय उसके पाँव डगमगा गये और वह भूमि पर गिर पड़ा। कुछ तलवार वाले, जो सीढ़ियों के पास

---

१ पहरे।

के नौबती थे, उसकी ओर झपटे और उन्होंने अपनी ढाल उस पर डालकर उसे बन्दी बना लिया। जब यह सब विवरण सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो सुल्तान ने कहा, "हे वीर! तू ख़ुरासान का निवासी है। तू ने इस कोतवाल के ऐसी तलवार लगाई कि वह जीवित न रहा। तू यह न देखता था कि जब अपराधी को हमारे समक्ष लाया जाता है तो उसके पाँव से बेड़ी नहीं निकाली जातीं।" तत्पश्चात् सुल्तान ने कहा, "उसे क्या दंड दिया जाय इसलिये कि वह परदेशी है। उस ख़ुरासानी को दरबार के समक्ष खड़ा किया जाय और उसके समस्त समूह को दरबार के सम्मुख खड़ा किया जाय। समस्त ख़ुरासानियों को आदेश दिया (४९७) जाय कि वे इस ख़ुरासानी के मुंह में थूकें। तत्पश्चात् रक्षक उसे हमारे राज्य से बाहर निकाल आये।

जिस समय ख़ुरासानी उसके मुंह में थूक रहे थे उसने अपने पेट में चाकू भोंक कर आत्म हत्या करली। जब सुल्तान को यह हाल बताया गया तो उसने कहा, "भेड़ को उसके पांव द्वारा लटका दिया गया।" इस स्थान पर इस चर्चा का उद्देश्य यह है कि सर्वप्रथम जो तलवार सुल्तान के महल में निकली, वह यह थी जो ७८० हि० (१३७८-७९ ई०) में उस ख़ुरासानी ने मियान से निकाली और मलिक आमदी कोतवाल के सिर पर लगाई। वह क्या ही अशुभ समय था।

तत्पश्चात् ७८१ हि० (१३७९-८० ई०) में फ़ीरोज़ शाह ने शिकार खेलने हेतु एटावा तथा तिलाई की ओर प्रस्थान किया। इसी वर्ष में ईश्वर की दया से दूसरी सेना ने वर्षा ऋतु में उसी ओर प्रस्थान किया। उस वर्ष में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के बहुत से मलिकों की मृत्यु हो गई। अधिकाँश शव शहर में आये। प्रत्येक मलिक की मृत्यु से सुल्तान को अत्यन्त दुःख एवं शोक हुआ।

७८२ हि० (१३८०-८१ ई०) में शम्सुद्दीन दामग़ानी ने गुजरात में विद्रोह कर दिया। ७८३ हि० (१३८१-८२ ई०) में अबू रिजा मुस्तौफ़िये ममालिक नियुक्त हुआ और ७८५ हि० (१३८३-८४ ई०) तक अबू रिजा का उत्पात राज्य के नगरों तथा क़स्बों में समस्त उत्पातों (४९८) से बढ़ कर रहा। ७८६ हि० (१३८४-८५ ई०) में सुल्तान रुग्ण हो गया। ७८९ हि० (१३८७-८८ ई०) में देहली के राज्य का जहाज़ हिल उठा। शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ तथा ख़ाने जहाँ में घोर युद्ध हुआ। ७९० हि० (१३८८-८९ ई०) में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का निधन हो गया।

दुष्ट दामग़ानी के विद्रोह का हाल

(४९९) शम्सुद्दीन दामग़ानी गुजरात के ज़फ़र ख़ाँ का सम्बन्धी था। वह सुल्तान का बड़ा विश्वासपात्र था। अपने समकालीन मलिकों में उसे बड़ा सम्मान प्राप्त था। शाह फ़ीरोज़ के नदीमों ने सर्व सम्मति से निवेदन किया कि 'किसी विश्वासपात्र को गुजरात की नयाबत दी जाय। ज़फ़र ख़ाँ बिन (पुत्र) ज़फ़र ख़ाँ को सुल्तान अपने पास रखे।' उन दिनों भाग्य से ज़फ़र ख़ाँ बुज़ुर्ग (ज्येष्ठ) का निधन हो चुका था। उसके पुत्र दरया ख़ाँ ने अपने स्वर्गवासी पिता द्वारा ज़फ़र ख़ाँ की उपाधि तथा गुजरात की अक़्ता प्राप्त की थी। कुछ वर्षों तक उसने गुजरात का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया। फलतः दौलताबाद काँप उठा। फ़ीरोज़ शाह कुछ समय तक इसी चिन्ता में रहा। प्रत्येक को किसी न किसी कार्य के लिए निश्चय किया।

दामग़ानी ने मलिक एमादुलमुल्क से गुप्त रूप से मिल कर उसे मध्यस्थ बनाया। एमादुलमुल्क ने सुल्तान से समय-समय पर दामग़ानी की चर्चा की। प्रत्येक बार बादशाह ने उत्तर दिया कि शम्सुद्दीन दामग़ानी योग्य पुरुष है किन्तु उसके स्वभाव में षड्यन्त्र भरा

है। अन्त में षड्यन्त्रकारी दामग़ानी इतना बड़ा विद्रोह खड़ा कर देगा कि समस्त संसार को उससे घोर कष्ट होगा। किन्तु एमादुलमुल्क दिल व जान से इस विषय में प्रयत्नशील रहा। (५००) क्योंकि भाग्य में ऐसा ही लिखा था, बादशाह ने शम्सुद्दीन के विषय में एमादुलमुल्क की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसके सम्बन्ध में गुजरात के नायब बनाये जाने का फ़रमान लाने का आदेश दिया।

कुछ दिन उपरान्त उसे सुल्तान फ़ीरोज के चरणों में डाल दिया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि "शम्स तू अपने विषय में मुझे जमानत दे।" दामग़ानी ने यह सुनकर कहा, "जिस किसी के विषय में सुल्तान का आदेश हो।" इस पर सुल्तान ने कहा, "शेखुल इस्लाम शेख निज़ामुद्दीन औलिया को ज़मानत में दो।" दामग़ानी ने स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन सुल्तान सवार होकर दामग़ानी को साथ लेकर शेखुल इस्लाम के रौज़े (समाधिक्षेत्र) पर गया। दामग़ानी ने शेखुल इस्लाम की क़बर का ग़िलाफ़ पकड़ कर तथा क़िबला (पश्चिम) दिशा की ओर मुख करके शेख को अपनी ज़मानत में दिया। बादशाह ने उस आकांक्षी को गुजरात भेज दिया।

संक्षेप में, दामग़ानी सुल्तान से विदा होकर कुछ दिन उपरान्त गुजरात पहुंचा। परगनों, व्यापार तथा ग्रामों के कर एवं अन्य धन बहुत बड़ी संख्या में प्राप्त किया और हृदय में विद्रोह करना निश्चय कर लिया। अस्त्र शस्त्र अधिकार में कर लिये। गुजरात के कर में से एक दाँग अथवा दिरम भी राजधानी में न भेजा। जो रक्षक उसके साथ भेजे गये थे उनमें से किसी को भी सूचना न दी।

(५०१) कुछ समय उपरान्त महत्वाकांक्षी दामग़ानी ने यह हाल गुजरात वालों को बताया। प्रत्येक को मीठी-मीठी बातों से लुभाया। गुणवान अमीराने सदा एक स्थान पर संगठित हो गये और उन्होंने दामग़ानी की हत्या कर दी। इसके विषय में पत्र शहंशाह की सेवा में प्रेषित किये गये। पत्र राजसिंहासन के समक्ष पढ़े जा ही रहे थे कि दामग़ानी का सिर पहुंच गया। अमीराने सदा के उलाग़ शीघ्रातिशीघ्र उनके पत्र लेकर पहुँचे। उन पत्रों में लिखा था कि हरामखोर शम्सुद्दीन दामग़ानी का सिर काट कर शहंशाह की सेवा में भेजा जा रहा है।

दामग़ानी के सिर पहुंच जाने पर सुल्तान ने आदेश दिया कि उसे दरबार के समक्ष रखा जाय। यह सुल्तान फ़ीरोज शाह के धर्म में विश्वास का आशीर्वाद है कि बिना किसी युद्ध के दामग़ानी का सिर अचानक कट गया। बुजुर्गों ने कहा है अपितु हदीस[1] है कि जो कोई ईश्वर के साथ है तो ईश्वर की अनुकम्पा भी उसके साथ होती है।

दामग़ानी की हत्या का हाल जिससे बुद्धिमान् लोग शिक्षा ग्रहण कर सकें

(५०२) इस तुच्छ इतिहासकार को विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि शम्सुद्दीन दामग़ानी के सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर देने पर समस्त गुजरात वाले उस पर हँसते थे। समस्त बड़े-बड़े खान, प्रतिष्ठित मलिक तथा सफल अमीराने सदा एवं अधिकार-सम्पन्न निषंगधारी एक स्थान पर एकत्र हुये। सभी संगठित हुये, विशेष कर मलिक शेख फ़ख तथा उस जैसे अन्य लोगों ने एकबारगी आक्रमण कर दिया। प्रातःकाल उसका रक्त बहाया गया और उसका घर रिक्त हो गया। ये सब पहलवान भाले लेकर दामग़ानी के घर में प्रविष्ट हो गये और उन्होंने उसकी हत्या करदी।

---

१ मुहम्मद साहब की वाणी।

उन्हीं सूत्रों से यह भी ज्ञात हुआ है कि जैसे ही शम्सुद्दीन दामग़ानी ने अपनी मूर्खता के कारण अपने हृदय में विद्रोह तथा विरोध करने का विचार किया तो समस्त छोटे बड़े मित्र तथा विरोधी, जो उसकी चौखट पर थे, उसे धिक्कार के पत्थर मारते थे। यह सब (५०३) ईश्वर की अनुकम्पा का प्रभाव है।

अध्याय १३

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा ख़ूनियों की बड़े समारोह से हत्या कराना

कहा जाता है कि फ़ीरोज़ शाह बादशाहों के नियम तथा प्रथानुसार किसी भी ख़ूनी को न छोड़ता था और तुरन्त उससे ख़ून का बदला ले लेता था। उसके राज्यकाल के प्रारम्भ में मलिक यूसुफ़ बुग़रा के पुत्रों ने परस्पर युद्ध कर दिया। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि मलिक यूसुफ़ बुग़रा सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) सुल्तान तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल में बड़े ऐश्वर्य एवं सेना का अधिकारी था। सुल्तान के विश्वासपात्रों से उसकी बड़ी घनिष्ठता थी। उसके वैभव के सम्बन्ध में समस्त संसार वाले सहमत हैं।

संक्षेप में, मलिक यूसुफ़ बुग़रा के दो पुत्र थे। दोनों का पालन पोषण उसने बड़े परिश्रम से किया। इन दोनों पुत्रों की मातायें भिन्न-भिन्न थीं। संयोगवश सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में दोनों भाई यूसुफ़पुर क़स्बे में, जो मलिक यूसुफ़ बुग़रा का प्राचीन स्थान (५०४) था, पहुंचे। बड़ा भाई, छोटे भाई की हत्या करके पृथक् कर देना चाहता था किन्तु उसे अवसर नहीं मिलता था। जब दोनों भाई यूसुफ़पुर क़स्बे में पहुंचे और कुछ दिन तक वहाँ रहे तो बड़े भाई ने छोटे भाई की हत्या कर दी। उसकी माता ने यह हाल फ़ीरोज़ शाही राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया। बादशाह यह सुनकर चकित हो गया इसलिये कि बड़ा भाई शहंशाह का बड़ा विश्वासपात्र था और वह उसके प्रति बड़ी अनुकम्पा एवं कृपा-भाव रखता था।

बड़े भाई द्वारा छोटे भाई की हत्या का प्रमाण मिलते ही शहंशाह बड़े सोच विचार में पड़ गया। बड़े सोच विचार के उपरान्त शहंशाह ने आदेश दिया कि बड़े भाई की बादशाह के द्वार के समक्ष गर्दन मार दी जाय। शहंशाह ने बड़े भाई के प्रति अत्यन्त कृपा एवं दया भाव होने पर भी ख़ून का बदला लेने का आदेश दे दिया।

इसी प्रकार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्य के अन्तिम काल में एक नवीसिन्दा था जो शाही ख़ज़ाने में लिखने पढ़ने का कार्य करता था। एक अध्यापक उसके घर में उसके बालकों को शिक्षा देने के लिये आया करता था। उसका घर शहर देहली में था। ख़्वाजा अहमद फ़ीरोज़ाबाद नगर में रहता था। ख़्वाजा अहमद तथा उस अध्यापक के मध्य में प्रेम का मामला भी रहता था। इत्तेफ़ाक़ से ख़्वाजा अहमद को उस अध्यापक पर ख़्यानत का सन्देह (५०५) हो गया। उस अध्यापक का एक स्त्री से बड़ा प्रेम था जिसे उसने अपना हृदय प्रदान कर दिया था।

वह अध्यापक शनिवार को देहली से फ़ीरोज़ाबाद आता था। ५ दिन तक ख़्वाजा अहमद के घर रहता था। उसके बच्चों को पढ़ाता था। वृहस्पतिवार को देहली चला जाता था। एक रात्रि में छली ख़्वाजा अहमद ने अपने दो ग़ुलाम बच्चों को मिलाकर उस अध्यापक को मदिरापान में लगा लिया। मदिरापान करते समय अभिमानवश उन तीनों ने मिलकर उस बेचारे अध्यापक की चाक़ू से हत्या कर दी और उसी आधी रात्रि में उसे अपने घर से

बाहर ले जाकर पुल मलिक पर जो सालूरा के मार्ग में है डाल दिया। भय के कारण अपने रक्त लगे हुये वस्त्र धोबी को धोने को दे दिये।

दूसरे दिन सूर्योदय के उपरान्त बादशाह इत्तेफ़ाक़ से उस पुल की ओर से गुज़रा। उस लाश को देखकर वहीं ठहर गया। उस समय मलिक नेक आमदी कोतवाल की मृत्यु हो चुकी थी। उसका पुत्र हुसामुद्दीन कोतवाली करता था। बादशाह ने हुसामुद्दीन को उसी स्थान पर बुलाकर कहा, "यदि इस मृतक के हत्यारे का पता न लगा सका तो मैं तेरी हत्या करा दूँगा।" मलिक हुसामुद्दीन इस आदेश से चकित तथा बड़ा परेशान हुआ। वह सोच में पड़ गया कि किसे पकड़े और इस ख़ून का दोष किस पर रक्खे।

(५०६) निष्कर्ष यह कि लाश का सिर व मुंह धोया गया और उसका रक्त दूर किया गया और उसे एक खाट पर इस आशय से रक्खा गया कि सम्भव है कि कोई उसे पहचान सके और पता बता सके कि वह कहाँ का है, कहाँ उसकी जन्मभूमि है और वह कहाँ का निवासी है। जब वहाँ लोगों की बहुत भीड़ हो गई और फ़ीरोज़ाबाद के सभी लोग तमाशा देखने पहुंच गये तो एक व्यक्ति ने उसे पहचान लिया और कहा कि "इसका घर हिसारे सीरी में अमुक मुहल्ले में है।" मलिक हुसामुद्दीन ने पता पाकर अपने आदमियों को हिसारे सीरी में भेजा। खोज करने पर जिसका बध हुआ था, उसके घर का पता चल गया। उसके घर में सूचना भेजी गई। वे सब बेचारे हैरान व परेशान फ़ीरोज़ाबाद नगर की ओर भागे। जब उसके निकट पहुँचे तो पता चला कि वह उन्हीं में से है। विलाप तथा शोक प्रकट करने के उपरान्त उन लोगों ने बताया कि वह ख्वाजा अहमद खज़ाने के नवीसिन्दे के बालकों को शिक्षा दिया करता था। ख्वाजा उससे शंकित रहता था। सम्भव है कि इसी कारण उसने उसकी हत्या कराई हो।

ख्वाजा अहमद को कोतवाल के समक्ष उपस्थित किया गया। ख्वाजा अहमद ने छल के कारण अपराध स्वीकार न किया। कोतवाल ने यह हाल सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया। सुल्तान ने आदेश दिया कि अहमद के घर के दासों तथा दासियों से कठोरतापूर्वक व्यवहार (५०७) किया जाय। जब कोतवाल ने अभिमानी ख्वाजा अहमद के दासों तथा दासियों से कठोरता की तो उन्होंने सच-सच हाल बता दिया और कहा कि, "ख्वाजा अहमद तथा दो गुलाम बच्चे और यह बध्य एक स्थान पर मदिरापान किया करते थे। उसी समय उसकी हत्या की गई।" अन्त में जो गुलाम ख्वाजा अहमद के मित्र बन गये थे, लाये गये। उन्होंने स्वीकार किया कि 'हम लोग इस अध्यापक को पकड़े थे और ख्वाजा अहमद ने उसके गले पर चाक़ू चलाया था।' इस पर ख्वाजा अहमद ने कहा कि "ये गुलाम झूठ बोलते हैं। मैंने ज़िबह (बध) नहीं किया, इन्हीं ग़ुलामों ने ज़िबह (बध) किया है।" ग़ुलामों ने कहा, ख्वाजा के रक्त रंजित वस्त्र धोबी को दे दिये गये हैं। जब धोबी को बुलवाया गया तो धोबी ख्वाजा के धुले हुये वस्त्र लाया। उस वस्त्र पर रक्त के स्थान पर पीले धब्बे थे। ख्वाजा अहमद से पूछा गया, "यह क्या है?" ख्वाजा अहमद ने उत्तर दिया, "मैंने एक जानवर ज़िबह (बध) किया था, ये उसी के चिह्न हैं।" सुल्तान ने आदेश दिया कि क़स्साब बुलाये जायं। जब क़स्साब उपस्थित किये गये और उन्हें पीले चिह्न दिखाये गये तो उन्होंने देख कर कहा कि "यह पीलापन जानवर के ज़िबह (बध) करने का नहीं है किन्तु जब मनुष्य का रक्त धोया जाता है तो पीलापन रह जाता है।" जब क़स्साबों ने यह कहा तो शाह फ़ीरोज़ ने आदेश दिया कि अहमद ख़ूनी को उस स्थान पर ले जाओ जहाँ लोगों को मृत्यु-दंड दिया जाता है। ख्वाजा अहमद खाने जहाँ के चरणों में गिर पड़ा और विनती करने लगा कि इस

(५०८) बध्य के रक्त का मूल्य ८० हज़ार तन्के देता हूँ। ख़ाने जहाँ ने ख्वाजा अहमद का हाल सुल्तान से कहा कि "ख्वाजा अहमद ८० हज़ार तन्के रक्त का मूल्य देता है।" सुल्तान ने ईश्वर का भय करते हुये कहा "हे मूर्ख वज़ीर! जिस किसी के पास धन होगा वह निर्भीक होकर लोगों की हत्या किया करेगा। यदि धन लेकर मुसलमानों की हत्या को क्षमा कर दिया जाय तो लोग बड़ी कठिनाई में पड़ जायँगे और कल क़यामत में ईश्वर के सिंहासन के समक्ष लज्जित होना पड़ेगा।" इस पर ख़ाने जहाँ ने कहा, "इस अहमद के ज़िम्मे ख़ज़ाने का लाखों का हिसाब किताब है। यदि ठहर जायँ तो उससे हिसाब ले लिया जाय और बैतुल माल का धन नष्ट न हो।" इस पर बादशाह ने कहा, "लाखों की चिन्ता नहीं। अहमद का बध किया जाय।" संक्षेप में ख्वाजा अहमद तथा उन दोनों ग़ुलाम बच्चों का सभी ख़ास व आम लोगों के समक्ष बध करा दिया गया और शाही न्याय जोकि मुहम्मद साहब के कथनानुसार इस प्रकार है, 'एक क्षण का न्याय ६० वर्ष की उपासना से बढ़कर है' पूरा हो गया। यदि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की प्रत्येक श्रेष्ठता का उल्लेख किया जाय तो पुस्तकें भर जायेंगी।

अध्याय १४

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का अपनी अन्तिमावस्था में तीन वस्तुओं में संलग्न रहना (१) बन्दियों की स्मृति रखना (२) मस्जिदों को सजाना (३) शोषितों के प्रति न्याय करना।

(५०९) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह अपनी अन्तिमावस्था में। योग्य सुल्तानों के समान इन तीन बातों पर विशेष ध्यान देता था: (१) दीन बन्दियों के विषय में। जब जब वह शिकार से लौट कर आता और फ़ीरोज़ाबाद में उतरता तो दीन बन्दियों के विषय पर ध्यान देता। उनके विषय में पूछताछ करता। जो कोई मुक्त किये जाने के योग्य होता उसे तुरन्त मुक्त कर देता। जो कोई देश से बहिष्कृत होने योग्य होता उसे तत्काल निकलवा देता। सबसे अच्छा यह था कि जब सुल्तान किसी को निकलवाता तो जिस स्थान पर वह उसे भिजवाता वहाँ उसके लिए वृत्ति भी निश्चित कर देता ताकि उसे जीविका सम्बन्धी कोई कष्ट न हो।

(५१०) वह अपने कर्मचारियों को चेतावनी पर चेतावनी देता रहता था कि बन्दियों को अधिक समय तक बन्दी न रक्खा जाय ....

(५११) दूसरा कार्य मस्जिदों की उन्नति से सम्बन्धित था। सुल्तान ने दरबार के कर्मचारियों तथा अधिकारियों को आदेश दे दिया था कि चारों नगरों की मस्जिदों की सूची तैयार की जाय और उसे उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाय, इस लिये कि कुछ के निर्माताओं की मृत्यु हो चुकी थी तथा कुछ के निर्माता दरिद्र हो चुके थे। इन सब का सविस्तार उल्लेख सुल्तान के समक्ष किया गया। सुल्तान ने समस्त मस्जिदों के लिये इमाम तथा मुअज़्ज़िन नियुक्त किये। दीपक के लिये तेल तथा बोरिये के लिये धन निश्चित किया। जो मस्जिदें मरम्मत के योग्य थीं उनकी मरम्मत कराई। इस प्रकार समस्त मस्जिदों को उन्नति तथा शोभा प्राप्त हो गई।.........

(५१२) सुल्तान का तीसरा कार्य शोषितों के प्रति न्याय करने से सम्बन्धित था। वह प्रतिष्ठित बादशाहों के समान इस कार्य में बड़ा प्रयत्नशील रहता था। यदि कोई उसकी सवारी (के प्रस्थान) के समय उसे कोई प्रार्थना-पत्र देता तो वह उसी स्थान पर अपने घोड़े की

लगाम खींच लेता और उसे अपने निकट बुलवा कर उसका समस्त हाल सुनता और तत्पश्चात् कहता, "हे दुखी ! मैंने पिछले सुल्तानों की प्रथानुसार दीनों के कष्ट निवारण के लिये इतने दीवान नियुक्त कर रखे हैं; तू ने उनसे प्रार्थना क्यों न की ?" यदि वह कहता, "मैंने उनसे अनेकों बार प्रार्थना की किन्तु उनकी टालमटोल देखकर राजसिंहासन के समक्ष निवेदन करना पड़ा", तो सुल्तान इस पर उन दीवानों के अधिकारियों को अपने समक्ष बुलवाता और उनके प्रति अत्यधिक कठोरता प्रदर्शित करता तथा प्रार्थी की आवश्यकता की पूर्ति करा देता। यद्यपि (५१३) वह दीवाने रिसालत के अधिकारियों की शिकायत न करता तो भी सुल्तान प्रार्थी की आवश्यकता पूरी कराने के पश्चात् ही आगे बढ़ता। सुल्तान फ़ीरोज शाह ने अपनी अन्तिम अवस्था इन्हीं बातों में व्यतीत की। पिछले सुल्तानों में जितने भी उत्कृष्ट गुण पाये जाते थे वे सब के सब अपितु कुछ अधिक सुल्तान फ़ीरोज शाह में विद्यमान थे। उसमें कुछ वलियों (सन्तों) के गुण भी पाये जाते थे।.........एक बार मुहम्मद साहब ने जिबरील से पूछा, "यदि ईश्वर तुम्हें मनुष्य के वेश में भेजता तो तुम क्या कार्य करते?" जिबरील ने उत्तर दिया, "सुल्तानों की सहायता।" इसी लिये दीनों तथा दुखियों की सहायता के कार्य का सम्बन्ध दीवाने रिसालत से है। फ़ीरोज शाह भी न्याय करने तथा अत्याचारियों की रोकथाम में कमी न करता था।

अध्याय १५

सैयिदुस्सादात सैयिद जलालुद्दीन की सुल्तान फ़ीरोज शाह से अन्तिम विदा।

(५१४) कहा जाता है कि सैयिद जलालुद्दीन बुखारी एक वर्ष तथा दो वर्ष पश्चात् उच्च से सुल्तान की भेंट के लिये आया करते थे। दोनों में बड़ा प्रेम था और दोनों एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम बढ़ाने का हृदय से प्रयत्न किया करते थे। जब जलालुद्दीन उच्च से आते तथा फ़ीरोज़ाबाद पहुँचते तो बादशाह मन्द (?) तक जाकर उनका स्वागत करता। दोनों एक दूसरे से भेंट करते और सुल्तान उन्हें बड़े सम्मान से शहर में लाता था। वे कभी मीनारे के निकट फ़ीरोज़ाबाद के कूश्क में, कभी चिकित्सालय में और कभी शाहज़ादा फ़तह खाँ के समाधि क्षेत्र में ठहरते। जैसे ही सैयिदुस्सादात सुल्तान के समक्ष पहुँचकर हाजिबों के स्थान पर सलाम करते तो बादशाह राजसिंहासन पर खड़ा हो जाता तथा आदरपूर्वक अभिवादन करता। दोनों जामखाने (फ़र्श) पर आसीन हो जाते। जब सैयिद वापस जाते तो सुल्तान (५१५) पुनः जामखाने से खड़ा हो जाता। जिस समय तक सैयिद हाजिबों के स्थान पर न पहुँच जाते फ़ीरोज शाह जामखाने पर खड़ा रहता। जब सैयिद हाजिबों के स्थान पर सलाम करते तो सुल्तान भी सलाम करता। जब सैयिद शहंशाह की दृष्टि से लुप्त हो जाते तब वह राजसिंहासन पर बैठता। सुल्तान सैयिद की प्रतिष्ठा का जितना ध्यान रखता था वह प्रशंसनीय है।

बादशाह भी महान शासकों के समान सैयिद से भेंट करने के लिये दूसरे तीसरे दिन जाया करता था। दोनों एक स्थान पर बैठते थे और प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते थे। उच्च के अधिकांश लोगों तथा देहली के लोगों की प्रायः जो आवश्यकतायें होतीं उसे वे सैयिद से कह देते। सैयिद के आदेशानुसार उनके सेवक उन लोगों की आवश्यकतायें लिख लेते। जब बादशाह सैयिद के दर्शनार्थ आता तो सैयिद अपने सेवकों को आदेश देते कि उन पत्रों को

सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया जाय। फ़ीरोज़ शाह उन पत्रों का अवलोकन करता और प्रत्येक की आवश्यकता उसकी इच्छानुसार पूरी कर देता। जब सैयिद कुछ समय शहर में रह कर (५१६) उच्च वापस जाते तो बादशाह एक मंज़िल तक उन्हें पहुंचाने जाता था।

संक्षेप में कुछ वर्षों तक ऐसा ही होता रहा। जब अन्तिम बार सैयिद जलालुद्दीन विशेष कर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से भेंट करने शहर आये तो वे कुछ अधिक समय तक शहर में रहे और फिर उच्च लौट गये। विदा होते समय सैयिद ने कहा, "सम्भव है यह अन्तिम विदा हो इस लिये कि हितैषी अपनी अन्तिमावस्था को प्राप्त हो चुका है। तुम भी वृद्ध हो गये। अब तुम्हारे लिये देहली के बाहर दूर-दूर की यात्रा करना उचित नहीं।" सैयिद ने यह उपदेश दिया[१]।.........

---

१ किसी भी हस्तलिखित पोथी में इससे अधिक प्राप्त न हो सका, अतः इतना ही मुद्रित कर दिया गया।

तारीखे मुबारकशाही

[लेखक—यह्या बिन अह्मद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी]
(प्रकाशन—कलकत्ता १९३१ ई०)

सुल्तानुल आजम अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज़ शाह

(११८) वह सुल्तान ग़ाज़ी ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह के अनुज अस्पदार[1] रजब का पुत्र था। जब उस पवित्र तथा महान ईश्वर ने, जो उस व्यक्ति को जिसे वह चाहता है राज्य प्रदान करता है, इस फ़रिश्तों जैसे स्वभाव तथा मुहम्मद साहब जैसे गुणों वाले सज्जन, दयालु एवं न्यायी सम्राट् (फ़ीरोज़ शाह) को राज्यत्व प्रदान किया, तो क्रूरता, अत्याचार, आतंक तथा हिंसापूर्ण प्रत्येक कार्य तथा प्रजा का उपद्रव एवं विद्रोह जो उसके स्वामी स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह के शासनकाल में दृष्टिगोचर थे, उनके स्थान पर न्याय तथा औचित्य, देश का शृङ्गार तथा उत्थान, और सड़कों की सुरक्षा प्रस्थापित हुई। (देश में) विद्या की बाहुल्यता हो गयी और अनेक आलिम तथा सूफ़ी पैदा हो गये।

उपर्युक्त वर्ष के मुहर्रम मास की २३वीं तारीख़ (२२ मार्च १३५१ ई०) को वह (फ़ीरोज़ शाह) सिन्ध नदी के तट पर राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। सभी श्रेणी के लोग उसके दरबार में एकत्र हुये। अमीरों तथा सरदारों ने पूर्णरूप से तथा हृदय से उसकी अधीनता स्वीकार की और उसके कृत्यों का अनुमोदन किया।

सुल्तान ने पूर्व की भाँति अपनी सेनायें एकत्र कीं तथा अगले दिन देहली को प्रस्थान करने हेतु संकल्प करके अपनी सेना की पंक्तियों को ठीक किया।

(११९) उस दिन मुग़लों ने, जो (सुल्तान मुहम्मद) की सहायतार्थ आये थे, अभागे नौरोज़ करकज़ के भड़काने से, शाही सैनिकों पर आक्रमण कर दिया। एक राजाज्ञा प्रसारित हुई कि ख़ेमों डेरों को सिन्ध नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ाया जाय तथा सेनायें इनके पीछे चलें। मुग़ल वहाँ पर पहुँच गये और उन्होंने शिविर वाहनों को हानि पहुँचाई। शाही सेना कुछ और आगे बढ़ी। मुग़ल पराजित होकर अपने देश को लौट गये। सुल्तान निरन्तर कूच करता हुआ सिविस्तान पहुँचा और शुक्रवार को वहाँ उसके नाम का ख़ुत्बा पढ़ा गया।

इस अभियान में ही मलिक इबराहीम को नायबे बारबक की उपाधि प्राप्त हुई, मलिक बशीर को आरिज़े मुल्क का पद प्रदान हुआ और उसने एमादुलमुल्क की उपाधि भी प्राप्त की। इस स्थान से मलिकुश्शर्क़ मलिक कबीर के दबीर[2] कमरुद्दीन को गुजरात, बहराम ग़ज़नी, मलिक नूर सरदावतदार, मलिक नवा, शेख़ हसन सरबरहना एवं अन्य मलिकों के विरुद्ध जो वहाँ रह गये थे विशेष ख़िलअत एवं अत्यधिक पुरस्कार देकर भेजा गया। सैयिद अलाउद्दीन रसूलदार, सैफ़ुद्दीन एवं मलिक सैफ़ुद्दीन शहनये पील को देहली में ख्वाजये जहाँ के विरुद्ध भेजा गया। मौलाना मुहम्मद एमाद तथा मलिक अली गोरी को सिन्ध तथा थट्टा के सरदार तग़ी के विरुद्ध नियुक्त किया गया। अन्य सन्देशवाहकों को मुल्तान में ख़ुदावन्दज़ादा क़िवामुद्दीन तथा ऐनुलमुल्क के पास भेजा गया। कुछ सुन्नाम में मलिक महमूद बक के पास तथा कुछ को अन्य प्रदेशों

१ शाही घोड़ों की देख रेख करने वाला।
२ सचिव।

और क़स्बों में भेजा गया। राज्य के विभिन्न भागों में प्रजा को दया कृपा तथा शिक्षा के निमित्त सामान्य राजाज्ञा प्रेषित की गई। सुल्तान मुहम्मद का जनाज़ा[1] शाही चत्र से आच्छादित एक हाथी पर रखा गया और उत्तरोत्तर कूच करके देहली ले जाया गया।[2]

सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु के सम्बन्ध में समाचार प्रेषित करने के उद्देश्य से मलीह नामक ख़्वाजये जहाँ का एक दास (थट्टा से) तीसरे दिन चला तथा शहर (देहली) पहुंचकर (१२०) उसने अपने स्वामी के पास यह समाचार पहुंचाये। जल्दी में तथा सावधानी से छानबीन तथा सोच विचार किये बिना, ख़्वाजये जहाँ ने एक युवक को, जिसका मूल वंश अज्ञात था, सुल्तान मुहम्मद का पुत्र बताकर (प्रजा के सम्मुख) प्रस्तुत किया। देहली के मलिकों तथा अमीरों की स्वीकृति से उसने उसे (युवक को) सुल्तान ग़यासुद्दीन महमूद की उपाधि से उपर्युक्त वर्ष के सफ़र मास की तीसरी तारीख (१ अप्रैल) को सिंहासनारूढ़ किया तथा स्वयं राज्य के कार्यों का प्रबन्ध करने लगा। सैयिद रसूलदार तथा मलिक सैफ़ुद्दीन देहली पहुंचे और उन्होंने शहंशाह (फ़ीरोज शाह) का शुभ फ़रमान (राजाज्ञा) उन लोगों (ख़्वाजये जहाँ तथा उसके सहयोगियों) को दिखाया। चूँकि ख़्वाजये जहाँ ने बिना किसी सोच विचार के यह सब कार्य किया था, अतः आवश्यकतानुसार वह अपने कृत्यों पर दृढ़ रहा। कुछ अमीरों तथा मलिकों, उदाहरणार्थ मलिक नत्थू ख़ास हाजिब, आज़म मलिक हुसामुद्दीन, शेख़ ज़ादा बिस्तामी, मलिक हसन मुल्तानी तथा मलिक हुसामुद्दीन अधक, ने उसे सहयोग प्रदान किया। शर्फ़ुलमुल्क, मलिक देलान, अमीर कतलबग़ा,[3] मलिक खलजीन, मलिक हसन अमीरे मीरान, क़ाज़ी मिस्र, ख़्वाजा बहाउद्दीन थीकरा, मलिक मुन्तखब बलखी, मलिक बद्रुद्दीन बुखारी जैसे अन्य अमीरों ने निष्कपटता प्रदर्शित करते हुये गुप्त रूप से प्रार्थना-पत्र शहंशाह (ईश्वर उसका उत्थान करे) के पास भेजे। ख़्वाजये जहाँ ने सुन्नाम से महमूद बक को बुलवाया परन्तु (१२१) उसने उदासीनता प्रकट की तथा सहायता प्रदान करने का आश्वासन देते हुये एक प्रार्थना-पत्र उत्कृष्ट सिंहासन के समक्ष भेजा। मुल्तान में ख़ुदावन्दज़ादा तिरमिज़ तथा ऐनुलमुल्क को भी पत्र भेजे गये परन्तु उन्होंने ख़्वाजये जहाँ के पत्र सुल्तान के पास प्रेषित कर दिये और (इस प्रकार) सुल्तान को ख़्वाजये जहाँ की शत्रुता का ज्ञान हो गया। तत्पश्चात् ख़ुदावन्दज़ादा तथा ऐनुलमुल्क शाही शिविर में उपस्थित हो गये। उन्हें विशेष उपहारों तथा दया से सम्मानित किया गया।

यह ज्ञात करके कि बादशाह निरन्तर कूच करता हुआ उसके विरुद्ध आ रहा है और बहुत से व्यक्ति उसके ध्वज के नीचे एकत्र हो गये हैं, ख़्वाजये जहाँ ने सैयिद जलालुद्दीन करमती, मलिक देलान, मौलाना नज्मुद्दीन राज़ी और अपने मौलाज़ादे दाऊद को (फ़ीरोज़ शाह को यह समझाने के उद्देश्य से) दूत बनाकर भेजा कि राज्य सुल्तान मुहम्मद के परिवार वालों के अधिकार में अब भी है और फ़ीरोज़ शाह या तो मलिक तथा नायब का पद स्वीकार करके राज्य के कार्यों के प्रतिपादन में अपनी शक्ति के/साथ संलग्न हो जावे अथवा हिन्दुस्तान की जो अक़्तायें चाहें पसन्द कर लें और जिस अमीर को भी चाहें अपने साथ ले जायँ। उपर्युक्त दूतों के पहुँचने पर फ़ीरोज़ ने एक गोष्ठी आयोजित की और सुल्तानुल मशायख़ क़ुतुबुल औलिया नसीरुल हक़ वश् शरावद्दीन (ईश्वर उन पर दया रखे) मौलाना कमालुद्दीन सामाना एवं मौलाना शम्सुद्दीन बाख़रज़ी को एक साथ बुलाकर कहा कि 'आप लोगों को ज्ञात है कि मैं स्वर्गीय सुल्तान का कितना बड़ा विश्वासपात्र था। आप लोगों ने सुना होगा कि ख़्वाजये

१ अरथी।

२ इस विषय के सम्बन्ध में तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, परिशिष्ट 'द' पृ० १६-१७ देखिये।

३ एक पोथी में क़बतग़ा।

जहाँ ने किस प्रकार एक बालक को झूठमूठ सुल्तान मुहम्मद का पुत्र बताकर सिंहासनारूढ़ कर दिया है। यदि स्वर्गीय सुल्तान ने कोई भी सन्तान छोड़ी होती तो मुझे उसका ज्ञान अवश्य ही होता, और यदि उसके कोई पुत्र होता तो उसे वह मेरे अभिभावकत्व में देता क्योंकि मुझ से श्रेष्ठ उसका न तो कोई मित्र था और न सहायक। उसे (बनावटी उत्तराधिकारी को) ख्वाजये जहाँ ने सिंहासनारूढ़ कर दिया है और देहली के लोगों ने उसे अपना शासक स्वीकार कर लिया है।" अन्त में सुल्तान ने पूछा, "आप लोगों की सम्मति में समय को देखते हुये क्या उचित है ? आप लोग मुझे क्या परामर्श देते हैं, और (इस समय) कौनसा उचित पग उठाना चाहिये ?" मौलाना कमालुद्दीन ने इस प्रकार उत्तर (१२२) दिया, "जिस किसी ने भी आरम्भ से ही राज्य के कर्त्तव्यों का पालन अपने ऊपर से लिया है उसी के अधिकार को प्राथमिकता है तथा वही बादशाह है।"

जो दूत उसके पास आये थे उनमें से सैयिद जलालुद्दीन करमती, मौलाना नज्मुद्दीन राज़ी तथा मलिक देलान भी फ़ीरोज़ शाह की सेना में रह गये। सुल्तान ने (शेख़) दाऊद ख्वाजये जहाँ के मौला ज़ादे को वापस लौटा दिया और उसे आदेश दिया कि वह ख्वाजये जहाँ से कहदे कि यदि सुल्तान के उपकारों को, जिनकी सुल्तान ने उसके ऊपर वृष्टि की थीं, तथा अपनी पूर्वगामी सेवाओं का स्मरण करता है, तो वह अपनी मूर्खता तथा पथ-भ्रष्टता से जन्य विरोध को त्याग दे और आज्ञाकारिता के पथ पर चलने में अपना हित समझे, क्योंकि उस दशा में उस पर और भी कृपावृष्टि होगी तथा उसके दोष तथा पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। देहली लौटने पर (शेख़) दाऊद ने (उपर्युक्त) आदेश ख्वाजये जहाँ के पास पहुँचाया। उसने देखा कि ख्वाजये जहाँ की शक्ति, वैभव, बल तथा धन में वृद्धि हो रही है और चारों ओर से लोग उससे आ आकर मिल रहे हैं।

इसी बीच में मलिक महमूद बक के पुत्र मलिक अबू मुस्लिम तथा मलिक शाहीन बक सुल्तान के पास अपने प्रार्थना-पत्र तथा उपहार लेकर आये और (शाही) दया से सम्मानित हुए। जब सुल्तान सरसुती पहुँचा तो मलिक क़िवामुलमुल्क बृहस्पतिवार, उसी वर्ष के जमादी उल आख़िर मास के अन्तिम दिवस (२३ अगस्त १३५१ ई०) को सशस्त्र होकर अपने समस्त सेवकों एवं स्त्रियों सहित देहली से बाहर आया और उसने सुल्तान से शरण की याचना की। अमीर मुअज्जम क़तबग़ा भी क़िवामुलमुल्क से मिल गया तथा उसके दूत उसी दिन सुल्तान के पास फ़तेहाबाद में पहुँचे। इसी स्थान पर शाहज़ादा फ़तह खाँ का जन्म हुआ तथा गुजरात से तग़ी की मृत्यु के भी समाचार सुल्तान के पास पहुँचे। अगले दिन क़िवामुलमुल्क के पृथक् हो जाने के कारण ख्वाजये जहाँ आवश्यकतावश सुल्तान के पास रवाना हुआ और हौज़ खास पर उतर कर हाँसी में सुल्तान के अन्य अमीरों से मिला। अपनी गर्दन में पगड़ी लपेट (१२३) कर हाजिबों के स्थान पर खड़ा हो गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि अहमद अयाज़ (ख्वाजये जहाँ) को हाँसी के कोतवाल को सौंप दिया जाय। मलिक खत्ताब को तबरहिन्दा भेजा जाये। मन्थू ख़ास हाजिब को सुन्नाम की ओर भेज दिया जाय तथा शेख़ ज़ादा बिस्तामी के निर्वासन का आदेश हुआ। हुसामुद्दीन अधक एवं मसन को उस बन्दी-गृह में जो सेनापति की देख रेख में था डलवा दिया।

उपर्युक्त वर्ष के रजब मास में (७५२ हि० अगस्त-सितम्बर १३५१ ई०) सुल्तान देहली के निकट उतरा। समस्त प्रजा ने उसका स्वागत किया तथा शाही कृपा को प्राप्त किया। शुभ नक्षत्र में २ रजब (२५ अगस्त १३५१ ई०) को सुल्तान राजप्रासाद में उतरा तथा राज्य का शासन संचालित करने और राज्य-व्यवस्था एवं शासन-प्रबन्ध में संलग्न हो गया।

७५३ हिजरी के सफ़र मास में (मार्च-अप्रैल १३५२ ई०) फ़ीरोज शाह ने सिरमूर की ओर प्रस्थान किया और ४ मास के पश्चात् वह देहली लौट आया।

उसी वर्ष की तीसरी जमादी उल अव्वल सोमवार को (१७ जून १३५२ ई०) शाहज़ादा मुहम्मद खाँ का जन्म हुआ। यह आनन्दपूर्ण तथा सुखद समाचार एवं शुभ सूचना सुल्तान को प्रेषित की गई। आशिष-प्राप्त शाहज़ादे का जन्म शुभ समझा गया।

पद्य

'शुभ सौभाग्यशाली सुखद तथा समृद्धशाली हो,
राशिचन्द्र (जहाँ) सूर्य (है) के चिह्न में इस नक्षत्र का आना।'

शहंशाह ने शाहज़ादे के जन्म की खुशी में जश्न तथा आनन्दोल्लास का आयोजन कराया। यह शाहज़ादा सुल्तान की प्रभुता के काल में उत्पन्न हुआ था तथा उसके जन्म दिन से ही राज्य का वैभव तथा उसकी समृद्धि में वृद्धि होने लगी।

(१२४) उसी वर्ष में कुछ मास पश्चात् सुल्तान ने कलानूर की ओर प्रस्थान किया और मनभूर में शिकार खेलता हुआ देहली वापस आया।

उसी वर्ष राजप्रासाद के निकट जामा मस्जिद तथा हौज़े खास पर एक मदरसे का सुल्तान ने निर्माण कराया। उसने शेखुल इस्लाम की उपाधि शेख कबीर, क़ुतुबुल औलिया बहाउल हक़ वश्शरा वद्दीन ज़करिया (ईश्वर उन पर दया करे) के पौत्र शेखज़ादा सद्रुद्दीन को प्रदान की। नायब वज़ीर क़िवामुलमुल्क मलिक मक़बूल को वज़ीर बनाया और खाने जहाँ की उपाधि से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उसने सोने के काम के तकिये भी प्राप्त किये। खुदावन्दज़ादा क़िवामुद्दीन ने खुदावन्द खाँ की उपाधि प्राप्त की तथा वकीलदर हुआ; मलिक तातार, तातार खाँ कहलाया। प्रत्येक तीनों अमीरों ने विभिन्न प्रकार के चत्र प्राप्त किये। मलिकुश्शर्क़ शरफ़ुलमुल्क नायब वकीलदर बनाया गया; सैफ़ुलमुल्क को शिकार बेग, खुदावन्द ज़ादा एमादुलमुल्क को सर सिलाहदार बनाया गया; ऐनुलमुल्क ने मुशरिफ़े ममालिक का पद प्राप्त किया। मलिक हुसेन अमीरे मीरान को मुस्तौफ़िये ममालिक नियुक्त किया गया।

७५४ हि० के शव्वाल मास में (नवम्बर, १३५३ ई०) सुल्तान ने एक बहुत बड़ी सेना के साथ लखनौती पर आक्रमण हेतु प्रस्थान किया[1]। छोटे तथा बड़े सभी कार्यों की देख-रेख खाने जहाँ को सौंप कर सुल्तान निरन्तर कूच करता हुआ लखनौती की ओर बढ़ा। बादशाह के गोरखपुर के निकट पहुँचने पर उदय सिंह उसकी सेवा में उपस्थित हुआ तथा उसने २० लाख तन्के तथा २ हाथी भेंट किये और शाही कृपा को प्राप्त किया।

(१२५) २७वीं रबी उल अव्वल ७५५ हि० (२१ अप्रैल १३५४ ई०) को सुल्तान एकदला के दुर्ग पर पहुँचा और वहाँ पर ऐसा भीषण युद्ध हुआ जिसका उल्लेख सम्भव नहीं। बंगालियों की पराजय हुई और बहुत से लोग मारे गये। पदातियों का मुक़द्दम सतिदानों[2] उस दिन मारा गया। इस मास की २६ तारीख (२३ अप्रैल) को सुल्तान ने उस स्थान से प्रस्थान करके गंगातट पर पड़ाव डाला। इलियास हाजी ने एकदला के क़िले में शरण ली

१ फ़ीरोज देहली से १० शव्वाल ७५४ हि० को रवाना हुआ और १२ शाबान ७५५ हि० को वापस हुआ।

२ एक पोथी में सदरेव है। पुस्तक में मुक़द्दमे नायकाँ है किन्तु एक अन्य पोथी के आधार पर मुक़द्दमे पायकां पढ़ना उचित है।

तथा ५वीं रबी उल आखिर (२९ अप्रैल १३५४ ई०) को वह अपने सामान, सेवकों तथा अगणित बंगालियों सहित मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त क़िले के बाहर निकला।

सुल्तान ने युद्ध हेतु सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित कीं। हाजी की दृष्टि जैसे ही सुल्तान पर पड़ी वह भयभीत हो गया और पलायन कर गया। शाही सैनिकों ने उस पर वेग से आक्रमण किया और उसके चत्र तथा ४० हाथियों पर अधिकार जमा लिया। इलियास के अत्यधिक अश्वारोहियों तथा पदातियों को तलवार का भोजन बनाया। सुल्तान वहाँ २ दिन तक ठहरा और तीसरे दिन उसने देहली की ओर कूच किया।

कुछ मास पश्चात् शहंशाह ने फ़ीरोज़ाबाद नगर—ईश्वर सब प्रकार के कोप से उसकी रक्षा करे—की स्थापना की।

७५६ हि० (१३५५ ई०) में सुल्तान ने दीबालपुर की ओर प्रस्थान किया और उसने सतलदार से झज्झर तक की ४८ कुरोह की दूरी में एक नहर खुदवाई। अगले वर्ष उसने मनदती तथा सिरमूर पहाड़ियों के समीप से फ़ीरोज़ाबाद नहर खुदवाई और ७ अन्य (१२६) नहरों को उससे मिलाकर उसे हाँसी तक पहुँचवाया। उस स्थान से वह नहर को अरासन[1] तक ले गया और वहाँ पर एक सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण करके उसका नाम हिसार फ़ीरोज़ा रखा। राजप्रासाद के नीचे एक विशाल जलाशय का निर्माण कराया जिसे नहर के जल से भरा जाता था। खक्खर से एक अन्य नहर खुदवाई और सरसुती के दुर्ग के नीचे से होती हुई वह हरनी खेरह तक ले जाई गई। इन नहरों के मध्य में एक क़िले का निर्माण कराया और उसका नाम फ़ीरोज़ाबाद रक्खा। एक अन्य नहर बद्धी जोन[2] से निकाली गयी और वहाँ से फ़ीरोज़ा के दुर्ग के एक हौज़ तक पहुंचाई गयी और वहाँ से उसे कुछ दूर आगे तक लेजाया गया।

उसी वर्ष के ज़िलहिज्जा मास में (७५६ हि०, दिसम्बर १३५५ ई०) ईदुज्ज़ुहा के दिन एक मिस्र के खलीफ़ा अल हाकिम बे अमरिलाह अबुल फ़तह अबू बक्र इब्न अबिर्रबी सुलेमान के पास खिलअत तथा मन्शूर से हिन्दुस्तान के प्रदेशों के राज्य को प्रदान करते हुये प्राप्त हुआ।

उसी वर्ष लखनौती के इलियास हाजी के पास से दूत बहुमूल्य उपहार लेकर उपस्थित हुये। उन्होंने अत्यधिक कृपा तथा असीमित दया भाव प्राप्त किये। तत्पश्चात् वे वापस हुये। एक अन्य अवसर पर, इलियास हाजी के पास से पुनः उपहार आये और (दूतों ने) हिसार फ़ीरोज़ा में पाबोस[3] किया। सुल्तान ने उन्हें आदेश दिया, "मेरे तुच्छ सेवक उन वस्तुओं से श्रेष्ठ वस्तुयें रखते हैं जो तुम यहाँ लाये हो; अतः तुमको बन्दरगाहों से चुने हुये हाथी लाना चाहिये।"

७५८ हि० (१३५७ ई०) में ज़फ़र खाँ फ़ारसी सुनारगाँव से नदी के मार्ग द्वारा दो हाथियों सहित आया और शाही दरबार से सम्बन्धित हो गया। शाही कृपा द्वारा उसको सम्मानित किया गया और उसे नायब वज़ीर का पद प्रदान कर दिया गया।

(१२७)-७५९ हि० के ज़िलहिज्जा मास में (नवम्बर १३५८ ई०) सुल्तान सामाना की ओर चला और वहां शिकार खेलने में संलग्न हो गया। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुये कि मुग़लों की एक सेना दीबालपुर की सीमा पर आ पहुँची है। मलिक क़ुबूल सरपर्दादार

१ शम्से सिराज (तारीखे फ़ीरोज़ शाही) के अनुसार लरास।

२ सम्भवतः यमुना के किसी स्थान से।

३ चरणों का चुम्बन किया।

अक्तूबर-नवम्बर १३६० ई०) सुल्तान बिहार के मार्ग से जाजनगर की ओर गया। उसने (१२९) आदेश दे दिया कि सामान से लदे हुये जानवर, स्त्रियाँ, विकृत घोड़े तथा वृद्ध पुरुष आगे न जायँ। उसने ज़फ़र खाँ वज़ीर के भ्राता मलिक क़ुतुबुद्दीन को हाथियों तथा सामान सहित कड़ा में छोड़ा और स्वयं निरन्तर कूच करता हुआ आगे बढ़ा। सिकरा[1] पहुँच कर उसने उसे लूटा और वहाँ का राय भाग गया। राय साधन की पुत्री शकर खातून[2] तथा उसकी धाया सुल्तान के हाथ लगीं। सुल्तान ने उसका पालन-पोषण अपनी पुत्रियों के साथ-साथ किया। सुल्तान फिर आगे बढ़ा और उसने एमादुलमुल्क को कुछ सेवकों एवं सामान सहित एक मंज़िल पीछे छोड़ा। अहमद खाँ, जो लखनौती से पलायन कर गया था तथा रणथम्बोर की पहाड़ियों में शरण लिये हुये था, सुल्तान से मिल गया तथा महान कृपाओं से सम्मानित हुआ। वहाँ से सुल्तान (जाजनगर के) राय के निवास स्थान बनारसी (कटक) नगर की ओर गया और महेन्द्री को पार किया। राय भाग कर तिलंग की ओर चल दिया। सुल्तान ने उसका पीछा करने में एक दिन की यात्रा की, परन्तु जब यह ज्ञात हुआ कि राय बहुत आगे चला गया है तो उसने उसका पीछा करना त्याग दिया और निकटवर्ती स्थानों में शिकार खेलना आरम्भ कर दिया। राय बीर भानदेव[3] ने कुछ व्यक्ति इस आशय से सन्धि करने के लिये भेजे कि उसकी प्रजा का विनाश न हो। अपने स्वभावानुकूल सुल्तान एक ओर को चला गया और (राय ने) ३३ हाथी एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुयें ख़राज के रूप में भेजीं। वहाँ से सुल्तान पीछे लौट पड़ा तथा हाथियों के चरने के स्थान पद्मावती[4] तथा बरमतलाओली में शिकार खेलता रहा। उसने दो हाथी मारे और ३३ को जीवित पकड़ (१३०) लिया। इस अवसर पर ज़ियाउलमुल्क ने निम्नलिखित रुबाई की रचना की:

रुबाई

'शाह, जिसने न्याय से स्थाई शक्ति प्राप्त की,
समस्त संसार को सूर्य के समान प्रदीप्त किया।
जाजनगर में हाथियों का शिकार करने के लिये आया,
तथा उसने दो हाथी मारे और ३३ को जीवित बन्दी बनाया।'

उस स्थान से सुल्तान निरन्तर कूच करके कड़ा पहुँचा और कड़ा से प्रस्थान करके रजब ७६२ हि० (मई-जून १३६१ ई०) में विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली पहुँचा।

कुछ समय पश्चात् सुल्तान को ज्ञात हुआ कि बरवार[5] के निकट मिट्टी का एक पर्वत है जिसमें से एक धारा प्रवाहित होकर सतलदर[6] में गिरती है। इसका नाम सरसुती है। पर्वत के दूसरी ओर एक अन्य नहर है जिसका नाम सलीमा है। यदि मिट्टी का पर्वत काट दिया जाय तो सरसुती का जल (सलीमा) में गिरेगा; तब दोनों ही सरहिन्द तथा मन्सूरपुर में

---

१ होदीवाला का विचार है कि राय सरनगढ़ का राजा होगा। यह पश्चिम दिशा में बिलासपुर तथा पूर्व दिशा में सम्बलपुर के मध्य में है और महानदी इसे रायगढ़ के बीच से काटती है। यह सम्बलपुर के उत्तर-पश्चिम में २२ मील पर स्थित है।

२ सम्भवतः यह नाम बाद में रक्खा गया होगा।

३ राजा वीर भानु देव जिसने १३५२-३ से १३७८-९ ई० तक राज्य किया।

४ सम्भवतः पदम क्षेत्र, जो पुरी से २० मील उत्तर पूर्व में है।

५ सम्भवतः रूपार। सतलज, सिवालिक से निकल कर मैदान में रूपार नामक स्थान में प्रविष्ट होती है।

६ सतलज।

बहती हुई सुन्नाम तक जायेंगी और इस प्रकार जल निरन्तर प्राप्त होता रहेगा। वहाँ पहुँच कर कुछ समय तक वह मिट्टी के पर्वत को खुदवाता रहा। सरहिन्द तथा उसके आगे १० कोस तक का भाग सामाना की शिक़ से पृथक् करके इस आशय से मलिक ज़ियाउलमुल्क शम्सुद्दीन अबू रिजा के अधीन कर दिया गया कि वह उसे आबाद करे। वहाँ एक क़िले का निर्माण किया गया तथा उसका नाम फ़ीरोज़पुर रखा गया।

(१३१) यह ज्ञात करके कि उपर्युक्त पर्वत को काटने में कोई लाभ नहीं, सुल्तान उस स्थान से नगरकोट चला गया और उसे विजय करने के उपरान्त थट्टा की ओर प्रस्थान किया। जिस समय बाबशाह थट्टा पहुँचा, तो थट्टा के शासक जाम बांभनिया ने स्थान के जल से घिरे हुये होने के कारण उसकी दृढ़ता की वजह से उसमें शरण ली और कुछ समय तक युद्ध करता रहा। सामग्री तथा चारे की कमी के कारण शाही सेना में लोग भूख से मरने लगे अतः आवश्यकतावश तथा अत्यधिक प्रयत्न के बावजूद सुल्तान गुजरात जाने पर विवश हुआ। वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो चुकी थी। वर्षा ऋतु के पश्चात् सुल्तान ने थट्टा के विरुद्ध कूच किया। गुजरात की अक़्ता ज़फ़र खाँ को प्रदान कर दी गई तथा निज़ामुलमुल्क को, जिसे (गुजरात) से पदच्युत कर दिया गया था, अपने घरबार सहित देहली भेज दिया गया। वहाँ कुछ समय पश्चात् वह राज्य का नायब वज़ीर नियुक्त हुआ। जब सुल्तान थट्टा में पुनः पहुँचा तो जाम बांभनिया ने शरण याचना की तथा सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। उसे (शाही) कृपा के अधीन कर लिया गया तथा सुल्तान उसे उस ओर के मुक़द्दमों के साथ देहली ले गया। उसने कुछ समय तक सुल्तान की सेवा की अतः सुल्तान ने उसे पुनः थट्टा की अक़्ता प्रदान कर दी और उसे बड़े समारोह के साथ विदा कर दिया।

७७२ हि० (१३७०-७१ ई०) में खाने जहाँ (वज़ीर) की मृत्यु हो गयी तथा उसका ज्येष्ठ पुत्र जूना शाह उसकी पदवी का उत्तराधिकारी हुआ। ७७३ हि० (१३७१-७२ ई०) में गुजरात में ज़फ़र खाँ की मृत्यु हो गई[1]। उसके ज्येष्ठ पुत्र को उसकी अक़्ता प्रदान कर दी गई। तत्पश्चात् १२ सफ़र ७७६ हि० (२३ जुलाई १३७४ ई०) को शाहज़ादा फ़तह खाँ का कन्थूर[2] में स्वर्गवास हो गया जिसके कारण सुल्तान शोकातुर हुआ तथा उसके स्वास्थ्य (१३२) को प्रत्यक्ष रूप से धक्का पहुँचा।

७७८ हि० (१३७६-७७ ई०) में शम्स दामग़ानी ने प्रतिवर्ष ४० लाख तन्के, १०० हाथी, २०० अरबी घोड़े, मुक़द्दमों तथा हबशियों की सन्तान के ४०० दास, गुजरात के बदले में वर्तमान कर के अतिरिक्त देने का प्रस्ताव रक्खा। सुल्तान ने आदेश दिया कि यदि गुजरात का वर्तमान नायब ज़ियाउलमुल्क शम्सुद्दीन अबू रिजा इन बढ़ाई हुई शर्तों को स्वीकार करता है, तो उसे अपने पद पर रहने दिया जाये। यह समझते हुये कि मैं इन शर्तों के अनुसार धन नहीं अदा कर सकता तथा शम्सुद्दीन दामग़ानी डींग मारता है, अबू रिजा ने इस शर्त को स्वीकार न किया। दामग़ानी ने तत्पश्चात् एक सुनहरी पेटी एवं एक चाँदी की चुडवल[3] प्राप्त की तथा गुजरात का नायब नियुक्त हुआ।

गुजरात पहुँचने पर व्यर्थ के विचार उसके मस्तिष्क में प्रविष्ट हुये और उसने विद्रोह कर दिया; उसने यह देखा कि वह अपना बचन पूरा करने में असमर्थ है। अन्ततोगत्वा मलिक शेख मलिक फ़खरुद्दीन जैसे अमीर सदा ने दामग़ानी पर आक्रमण कर दिया और ७७८ हि०

१ तबक़ाते अकबरी बदायूनी की मुन्तखबुत्तवारीख तथा ज़फ़रुल वालेह के अनुसार ७७३ हि०, तारीखे फ़िरिश्ता के अनुसार ७७५ हि०।

२ सम्भवतः कीथोर, मेरठ (उत्तर प्रदेश) की मवाना तहसील में।

३ एक प्रकार की पालकी।

(१३७६-७७ ई०) में उन लोगों ने उसका वध करके उसका शीश काट दिया और उसे दरबार में प्रेषित किया। (इस प्रकार) यह विद्रोह शान्त हो गया। उस नेक तथा दयालु बादशाह के समृद्धशाली शासन में उसके राज्य के प्रत्येक कोने में उसकी उत्कृष्टता तथा उदारता का ऐसा प्रभाव पड़ा कि दामग़ानी के विद्रोह से पूर्व किसी स्थान पर भी न तो विद्रोह हुआ और न किसी ने किसी भी भूभाग में विद्रोह करने का साहस किया और न ही कोई अपने पाँव आज्ञाकारिता के मार्ग से हटा सका। दामग़ानी ने शीघ्र ही अपने विश्वासघात का दंड भोगा।

(१३३) राज्य की सीमाओं को प्रतिष्ठित अमीरों तथा सुल्तान के शुभचिन्तकों के अधीन करके सुरक्षित किया गया। इस प्रकार हिन्दुस्तान[1] के भाग में बंगाल की सीमा पर कड़ा व महोबा की अक़्तायें तथा दमवा[2] की शिक़ मलिकुश्शर्क़ मर्दान दौलत को, जिसे नसीरुलमुल्क की उपाधि प्राप्त थी, प्रदान की गईं। अवध तथा संडीला की अक़्तायें और कोल की शिक़ हुसामुलमुल्क हुसामुद्दीन नवा के अधीन की गईं। जौनपुर तथा ज़फ़राबाद की अक़्ता मलिक बहरोज़ सुल्तानी को तथा बिहार की अक़्ता मलिक बीर अफ़ग़ान को प्रदान की गई। इन अमीरों ने इन भागों के उपद्रवियों को आतंकित करने तथा सीमाओं की भूमि को सुव्यवस्थित रखने में कोई शिथिलता प्रदर्शित नहीं की। इस प्रकार सुल्तान को अपने राज्य के उन भागों की सुव्यवस्था तथा नियंत्रण के विषय में कोई चिन्ता न रही, परन्तु ख़ुरासान की ओर कोई भी ऐसा अमीर नहीं था जो मुग़लों के आक्रमणों का मुक़ाबला करने में समर्थ होता, अतः विवश होकर मलिकुश्शर्क़ नसीरुलमुल्क को कड़ा तथा महोबा की अक़्ता से बुलवा कर दुष्ट (मुग़लों) का उपद्रव शान्त करने तथा उनके आक्रमण की रोक थाम के लिये मुल्तान भेज दिया गया। इस भाग की अक़्ताओं तथा उनके अधीन स्थानों को उसके अधिकार में दे दिया गया। हिन्दुस्तान की अक़्ता, कड़ा एवं महोबा को मलिक मर्दान दौलत के पुत्र मलिकुश्शर्क़ मलिक शम्सुद्दीन सुलेमान को प्रदान कर दिया गया। दामग़ानी के बध किये जाने के पश्चात् गुजरात की अक़्ता मलिक मुफ़र्रह सुल्तानी को, जिसने फ़रहतुलमुल्क की उपाधि प्राप्त की थी, दे दी गई।

(१३४) ७७९ हि० (१३७७-७८ ई०) में सुल्तान ने इटावा तथा अकहल की ओर प्रस्थान किया। इटावा के मुक़द्दम, राय सबीर[3] एवं अधरन को, जो (पहले) सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह करने पर पराजित किये जा चुके थे, आश्वासन तथा प्रोत्साहन दिया गया और उन्हें उनके स्त्री, बच्चों, घोड़ों तथा सेवकों सहित देहली ले जाया गया। अकहल तथा पतलाही नामक स्थानों में क़िलों का निर्माण कराया गया। इन स्थानों पर मलिक ताजुद्दीन तुर्क के पुत्र मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ को बहुत से अनुयाइयों तथा प्रसिद्ध अमीरों सहित नियुक्त कर दिया गया। फ़ीरोज़पुर एवं पतलाही की अक़्तायें उसको तथा अकहल की अक़्ता मलिक बली अफ़ग़ान को प्रदान करके सुल्तान देहली की ओर लौट गया।

इस वर्ष में अवध के अमीर मलिक निज़ामुद्दीन नुआकी, जो सुल्तान की सेवा में था, सेना में मृत्यु हो गई। अवध की अक़्ता उसके ज्येष्ठ पुत्र मलिक सैफ़ुद्दीन को दे दी गई।

७८१ हि० में (१३७९-८० ई०) में सुल्तान ने सामाना की ओर कूच किया। सामाना पहुँचने पर सामाना के अमीर मजलिसे ख़ास[4] अमीर मलिक क़ुबूल क़ुरान ख्वां[5] ने जो सामाने

---

१ भारतवर्ष का पूर्वी भाग।

२ एक पोथी के अनुसार दलमऊ। यही उचित है।

३ सम्भवतः राय सुमेर।

४ सुल्तान की विशेष गोष्ठियों का प्रबन्धक।

५ क़ुरान पढ़ने वाला।

का मुक्ता था अत्यधिक उपहार प्रस्तुत किये। सुल्तान ने उस पर महान कृपा-दृष्टि की। तत्पश्चात् अम्बाला तथा शाहाबाद से होता हुआ वह सान्तूर की उपत्यकाओं में प्रविष्ट हुआ और सिरमूर के राय तथा पहाड़ी के रायों से ख़राज तथा उपहार प्राप्त करके राजधानी की ओर वापस गया।

(१३५) इसी समय कटिहार के मुक़द्दम खरकू के विद्रोह का समाचार प्राप्त हुआ। इस खरकू ने बदायूं की शिक़ के मुक्ता सैयिद मुहम्मद तथा उसके भाई सैयिद अलाउद्दीन को अपने निवास स्थान पर एक प्रीति भोज में आमंत्रित किया और विश्वासघात करके उनकी हत्या करवा दी। ७८२ हि० (१३८०-८१ ई०) में सुल्तान ने सैयिदों के प्रतिकार हेतु कटिहर की ओर प्रस्थान किया और उस प्रदेश को विध्वंस कर दिया। बादशाह लोग अवश्यम्भावी रूप से, जब कभी किसी नगर में प्रविष्ट होते हैं तो उसका विनाश कर देते हैं और वहाँ के प्रतिष्ठित लोगों को भी नीचा कर देते हैं। खरकू ने इस कहावत के अनुसार आचरण किया पैग़म्बर लोग उन वस्तुओं को त्याग देते हैं जो उनकी शक्ति के बाहर होती हैं वह कुमायों के पर्वतीय प्रदेशों के महतरों[1] के प्रदेश की ओर बच कर भाग गया। सुल्तान ने उन पर भी आक्रमण किया। इस अभियान की समाप्ति के उपरान्त बादशाह ने बदायूं को सरपर्दादारे खास मलिक क़ुबूल क़ुरान ख्वाँ के अधीन कर दिया। उसने मलिक ख़त्ताब अफ़ग़ान को संभल में (विद्रोहियों के) दंड देने तथा कटिहर को दृढ़तापूर्वक अपने अधिकार में रखने के लिए नियुक्त किया। शिकार के बहाने से सुल्तान प्रतिवर्ष कटिहार जाता था और वह प्रदेश इतना उजाड़ हो गया कि शिकार के अतिरिक्त कुछ भी वहाँ न रह गया।

७८७ हि० (१३८५-८६ ई०) में सुल्तान ने बियोली, में जो बदायूँ से ७ कोस की दूरी पर है, एक क़िला निर्मित कराया तथा उसका नाम फ़ीरोज़पुर रखा परन्तु लोग उसे पूरे आख़रीन[2] कहते थे। उसके पश्चात् सुल्तान दुर्बल तथा शक्तिहीन हो गया। उसकी अवस्था ६० वर्ष के लगभग हो चुकी थी।'

उसके वज़ीर ख़ाने जहाँ ने (राज्य के) पूर्ण अधिकार अपने हाथ में कर लिये और राज्य के कार्य उसके अधिकार में आ गये। फ़ीरोज़शाही अमीर तथा मलिक पूर्ण रूप से (१६६) उसके अधीन थे। जिसे वह (वज़ीर) अपना विरोधी पाता यथा सम्भव उसकी शिकायत करके उसकी हत्या करा देता तथा अन्य को बन्दी बना लेता। अन्ततोगत्वा, स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि ख़ाने जहाँ जो कुछ कहता था सुल्तान उसका पालन करता था। इसी कारण राज्य के कार्य मन्द गति से चलने लगे तथा प्रतिदिन कुछ न कुछ हानि होने लगी।

एक दिन ख़ाने जहाँ ने सुल्तान से निवेदन किया कि शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ, कुछ अमीरों तथा मलिकों, जैसे गुजरात के अमीर ज़फ़र ख़ाँ के पुत्र दरया ख़ाँ मलिक याक़ूब मुहम्मद हाजी, आख़ुर बक, मलिक राजू, मलिक समाउद्दीन तथा मलिक अत्र आरिज़े बन्देगां के पुत्र मलिक कमालुद्दीन और बादशाह के विशेष दासों से मिलकर विद्रोह करने में लगा हुआ है। सुल्तान ने राज्य के कार्य ख़ाने जहाँ को सौंप दिये थे, अतः उसने सोच विचार के बिना आदेश दिया कि उन लोगों को बन्दी बना लिया जाये। शाहज़ादे ने जब यह सुना तो वह कुछ समय तक सुल्तान की सेवा में उपस्थित न हुआ और यद्यपि वज़ीर उसे बुलवाता रहा किन्तु वह बहाने बना देता। तत्पश्चात् वज़ीर ने शेष कर का हिसाब ठीक करने के बहाने से महोबा के अमीर ज़फ़र ख़ाँ के पुत्र दरया ख़ाँ को अपने मकान में बन्दी बना लिया। इससे शाहज़ादा और भी अधिक भयभीत हुआ और उसने अपनी स्थिति से अपने पिता को अवगत कराया। सुल्तान ने वज़ीर के पदच्युत करने तथा दरया ख़ाँ को मुक्त कराने

१ एक पोथी में महनको।

२ अन्तिम स्थान जो बसाया गया अथवा बनवाया गया।

का आदेश दे दिया। मलिक याकूब आखुरबक, पायगाह के समस्त घोड़ों तथा मलिक कुतुबुद्दीन फ़रामुर्ज़, शहनयेपील हाथियों को हौदे तथा कवच सहित तैयार करके शाहज़ादे के पास लाया। फ़ीरोज़ शाह के दास तथा अमीर एवं नगर के लोग भी शाहज़ादे के सहायक बन गये।

(१३७) रजब ७८९ हि० (जुलाई-अगस्त १३८७ ई०) में शाहज़ादा पूरी तैयारी के साथ एक रात्रि के उत्तरार्द्ध में अपने बहुत से अनुयाइयों सहित खाने जहाँ के घर पहुँचा। जब उसे यह सूचना मिली तो उसने दरया ख़ाँ को बन्दीगृह से बाहर निकाला और उसकी हत्या करा दी और स्वयं तैयार होकर, कुछ चुने हुये अनुयाइयों को लेकर शाहज़ादे से युद्ध करने लगा। अन्त में विरोध का सामर्थ्य न पाकर वह अपने घर लौट गया और घर में प्रविष्ट होते समय आहत हो गया। अधिक विरोध करने का सामर्थ्य न देखकर वह एक अन्य मार्ग से (अपने घर से बाहर) निकला और कुछ अनुयाइयों के साथ मेवात की ओर भाग गया तथा महारी[1] में कोका चौहान के पास शरण ली।

शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ ने खाने जहाँ के घर का सोना, धन, सम्पत्ति तथा अस्त्र शस्त्र, घोड़े तथा सामान लूट लिये। तत्पश्चात् वह बहुत बड़े दल सहित दरबार के समक्ष पहुँचा। तदोपरान्त उसने मलिक बहज़ाद फ़तह ख़ाँ, मलिक एमादुद्दौला, मलिक शम्सुद्दीन बज़बान तथा मलिक मुसलेह मुकसरान को, जिन्होंने खाने जहाँ का साथ दिया था, दरबार के समक्ष लाकर मरवा डाला।

जब इन घटनाओं की सूचना सुल्तान को की गई, तो उसने शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ को वज़ीर नियुक्त कर दिया। अमीर मलिक एवं सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दास तथा सर्वसाधारण शाहज़ादे के चारों ओर एकत्र हो गये। सुल्तान वृद्ध तथा निर्बल हो गया था। अतः आवश्यकतावश उसने अन्त में राज्य के विशेष अधिकार, घोड़े, हाथी, साज़ व सामान शाहज़ादे को सौंप दिया। उसने उसे नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की उपाधि भी प्रदान की और स्वयं ईश्वर की उपासना में संलग्न रहने लगा। समस्त राज्य की प्रत्येक जामा मस्जिद में दोनों बादशाहों के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा जाता था।

(१३८) शाबान ७८९ हि० (अगस्त-सितम्बर १३८७ ई०) में शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ जहांनुमा महल में सिंहासनारूढ़ हुआ। उन समस्त उपाधियों, पदों, अक़्ताओं, वृत्तियों, वेतनों, अदरार तथा इनाम की, जो लोगों को विगत शासन काल में प्राप्त था, पुष्टि की गई। मलिक याक़ूब आखुरबक को सिकन्दर ख़ाँ की उपाधि दी गई तथा गुजरात की अक़्ता प्रदान की गई। मलिक अज्जू को मुबारिज़ ख़ाँ, कमाल उमर को दस्तूर ख़ाँ तथा समाउमर को मुईनुलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई। मलिक समाउद्दीन तथा कमालुद्दीन उसके विश्वासपात्र बन गये। दीवान का कार्य उनको प्रदान कर दिया गया। मलिक याक़ूब सिकन्दर ख़ाँ को एक सेना सहित खाने जहाँ के विरुद्ध महारी भेजा गया। जब यह सेना महारी पहुँची तो दुष्ट कोका ने खाने जहाँ को बन्दी बनाकर सिकन्दर ख़ाँ को सौंप दिया जिसने उसकी हत्या करादी, तथा वह उसका शीश दरबार में लाया। उसे गुजरात की अक़्ता की ओर भेज दिया गया। शाहज़ादा शासन कार्य में संलग्न हो गया।

ज़िलहिज्जा ७८९ हि० (दिसम्बर-जनवरी १३८७-८८ ई०) में मुहम्मद ख़ाँ ने सिरमूर पहाड़ियों की ओर कूच किया। वहाँ वह दो मास तक भेड़ियों तथा गोज़न[2] का शिकार करता रहा। जब वह इस प्रकार (शिकार खेलने में) व्यस्त था, तो उसे खम्बायत के अमीर मलिक मुफ़र्रह तथा गुजरात के अमीराने सदा द्वारा सिकन्दर ख़ाँ की धोखेबाज़ी से हत्या के

१ सम्भवतः मचारी अथवा मचेरी, अलवर के दक्षिण में २३ मील पर एक ग्राम।

२ एक प्रकार का पर्वतीय बैल, मृग अथवा बारहसिंघा।

समाचार प्राप्त हुये। वह सेना, जो मृत (सिकन्दर ख़ाँ) के साथ गई थी, सयिद सालार के साथ देहली लौट आई। उनमें से कुछ आहत तथा कुछ लुटे हुये लौटे। इस सूचना के कारण शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ चिन्तित हुआ तथा राजधानी की ओर लौट गया। अनुभव-शून्य होने के कारण वह आनन्दोल्लास तथा विलास में ग्रस्त हो गया और सिकन्दर ख़ाँ की हत्या को उसने साधारण सी बात समझा। ५ मास तक राज्य के कार्य (प्राचीन) नियमों तथा प्रबन्धों के (१३९) अनुसार चलते रहे। अन्त में राज्य अत्यधिक अव्यवस्थित हो गया। फ़ीरोज़शाही दासों ने, जिनकी संख्या १ लाख थी और जिन लोगों ने देहली एवं फ़ीरोज़ाबाद में निवास ग्रहण कर लिया था, मलिक समाउद्दीन तथा मलिक कमालुद्दीन द्वारा प्रदर्शित विरोध से उत्तेजित होकर शाहज़ादे का साथ छोड़ दिया और वे फ़ीरोज़ शाह से मिल गये। शाहज़ादे को जब यह बातें ज्ञात हुईं, तब उसने मलिक ज़हीरुद्दीन लोहरी को उन दासों से, जो मैदाने नज़ूल में एकत्र हो गये थे, वार्ता करने के लिये भेजा। उन लोगों ने उस पर पत्थरों तथा ईंटों की वर्षा की और ज़हीरुद्दीन को इस प्रकार आहत करके अपने दल से निकाल दिया और किसी प्रकार संधि के लिये राज़ी न हुये। मलिक इस प्रकार घायल होकर शाहज़ादे के पास पहुँचा। शाहज़ादा युद्ध के लिये तैयार था। वह अपने अश्वारोहियों, पदातियों तथा हाथियों सहित विद्रोहियों के विरुद्ध मैदान की ओर बढ़ा। जब उसने उन पर आक्रमण किया तो वे महल की ओर भाग गये तथा सुल्तान के पास शरण हेतु पहुँचे। दो दिन तक युद्ध होता रहा। तीसरे दिन भी जब शहज़ादा पुनः युद्ध के लिये तैयार होकर निकला तो राजद्रोही सुल्तान को महल से बाहर ले आये। सैनिकों तथा महावतों ने जब अपने पिछले सुल्तान को देखा, तो उन्होंने शाहज़ादे का साथ छोड़ दिया और सुल्तान की ओर आ गये। यह देखकर कि युद्ध जारी रखने में वह असमर्थ है, शाहज़ादा अपने घोड़े से अनुयाइयों सहित सिरमूर की पहाड़ियों की ओर भाग गया। उपर्युक्त दासों ने शाहज़ादे तथा उसके अनुयाइयों के घरों को लूट लिया। नगर में एक भीषण हिंसायुक्त दृश्य था।

शान्ति स्थापना के पश्चात् सुल्तान ने अपने (ज्येष्ठ) पुत्र फ़तह ख़ाँ के पुत्र शाहज़ादा तुग़लुक़ शाह को जो उसका पोता था अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और राज्य के कार्य (१४०) उसे सौंप दिये। इसी प्रकार सुल्तान का जामाता अमीर हुसेन अहमद इक़बाल, जो शाहज़ादे के दल से पृथक् हो गया था, हिन्दू अमीरों द्वारा बन्दी बना लिया गया तथा तुग़लुक़ शाह के पास ले जाया गया। उसने महल के द्वार के सामने उसकी हत्या करवा दी। सामाना के अमीर सदा लोगों को ग़ालिब ख़ाँ अमीर को बन्दी बनाने तथा उसे दरबार में लाने के निर्देश सम्बन्धी आदेश दिये गये। मलिक सुल्तान शाह ख़ुशदिल, मलिक मक़बूल फ़राज़ ख़ाँ के मौला ज़ादा आली ख़ाँ[1] को अपनी देख रेख में देहली लाया। जब वह लाया गया तो शाहज़ादे ने उसे बन्दी के रूप में बिहार भेज दिया तथा सामाने की अक़्ता सुल्तान शाह को प्रदान कर दी।

१८ रमज़ान ७९० हि० (२० सितम्बर, १३८८ ई०) को सुल्तान फ़ीरोज़ (उसका मक़बरा पवित्र हो) निर्बलता से जर्जर होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। ईमानदार इतिहासकारों तथा सम्मान योग्य आयु वाले सच्चे इतिहासवेत्ताओं ने यह लिखा है कि स्वर्गीय सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के पुत्र नासिरुद्दीन के बाद जो दूसरा नौशीरवाँ था अब तक देहली में इतना न्यायशील एवं दयालु विनम्र तथा ईश्वर से भय करने वाला बादशाह स्वर्गीय फ़ीरोज़ शाह (उसका मक़बरे को आशिश प्राप्त हो तथा वह स्वर्ग में निवास करे) की भाँति बादशाह कोई नहीं हुआ है।

यदि कोई दीन यात्री भाग्यवश, मार्ग में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता था तो मुफ़्ते, (१४१) पदाधिकारी तथा आस पास के मुक़द्दम इमामों, क़ाज़ियों एवं समस्त मुसलमानों को

---

१ ग़ालिब ख़ाँ उचित होगा।

एकत्र करके उस शव की परीक्षा करते तथा क़ाज़ी की मुहर लगवा कर यह लिखवा लेते थे कि उसके शरीर पर घाव का कोई चिह्न नहीं था, तदोपरान्त उसे दफ़न कर देते थे। इस प्रकार अभियोगों की पूछताछ तथा शरा के समस्त आदेशों का अक्षरशः पालन होता था। उसके राज्यकाल में शक्तिशाली पुरुष निर्बल के ऊपर अत्याचार करने का साहस न कर सकता था।

छन्द

"परीक्षा लेने वाले इस भूचक्र के बहुत से चक्करों के पश्चात्,
उसके (सुल्तान के) न्याय की कहानियाँ रहती हैं (यद्यपि वह स्वयं मर चुका हो)।"

सर्व शक्तिमान ईश्वर इस नम्र परोपकारी तथा न्यायी बादशाह को दैवी करुणा में स्थान दे तथा अपनी दया एवं स्वर्ग में उसे स्थान प्रदान करे। स्वर्गीय सुल्तान फ़ीरोज़ शाह (उसका मक़बरा पवित्र हो) का शासन ३८ वर्ष तथा ६ मास तक रहा[1]। ईश्वर ही सत्य को जानता है।

फ़तह खाँ का पुत्र सुल्तान तुग़लुक़ शाह जिसकी उपाधि ग़यासुद्दीन थी

फ़तह खाँ बिन (पुत्र) तुगलुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह स्वर्गीय सुल्तान फ़ीरोज़ का पौत्र था और उसे सुल्तान अपना पुत्र कहता था। स्वर्गीय सुल्तान की मृत्यु के पश्चात् (१८वीं रमज़ान ७९० हि० में उसके देहावसान के दिन ही वह फ़ीरोज़ाबाद के राजप्रासाद में कुछ अमीरों, मलिकों तथा फ़ीरोज़शाही दासों की सहमति से सिंहासनारूढ़ हुआ और उसने सुल्तान ग़यासुद्दीन की उपाधि धारण की।

(१४२) सुल्तान ने विज़ारत का (पद) मलिक ताजुद्दीन के पुत्र मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ को प्रदान किया तथा खाने जहाँ की उपाधि से उसे सम्मानित किया। ख़ुदावन्दज़ादा ग़यासुद्दीन तिरमिज़ी को सरसिलाहदार नियुक्त किया। मलिक फ़ीरोज़ अली को कारागार से बाहर निकाला गया। सरजानदार का पद जिस पर उसका पिता नियुक्त था, प्रदान हुआ। गुजरात की अक़्ता मलिक मुफ़र्रह सुल्तानी को सौंपी गई, जिस पर वह विगत शासन काल में भी आसीन था। अक़्ताओं तथा अन्य पदों को जिन पर अन्य अमीर आसीन थे, उन्हीं के पास रहने दिया गया।

मलिक फ़ीरोज़ अली एवं बहादुर नाहिर को एक बड़ी सेना के साथ शाहज़ादा मुहम्मद खाँ के विरुद्ध भेजा। अक़्ताओं के अमीरों को जैसे सामाना का अमीर सुल्तान शाह राय कमालुद्दौलत वद्दीन मतीन तथा अन्य अमीरों को उनके अधीन नियुक्त किया गया।

उपर्युक्त वर्ष के शव्वाल मास (७९० हि०, सितम्बर–अक्तूबर १३८८ ई०) में सेना सिरमूर की पहाड़ियों में प्रविष्ट हुई। शाहज़ादा मुहम्मद खाँ उस स्थान से भागकर अनभिज्ञ मार्ग से होता हुआ बकनारी पर्वत की चोटी पर पहुँचा। शाही सेना पहाड़ियों के आंचल के सहारे सहारे आगे बढ़ी और जब वह बकनारी की घाटी में पहुँची तो दोनों सेना में साधारण युद्ध हुआ, परन्तु पर्वत के दृढ़ होने के कारण शाहज़ादे को कोई हानि न पहुँची। वहाँ से वह पहाड़ों के

१ वह २४ मुहर्रम ७५२ हि० को सिंहासनारूढ़ हुआ था अतः उसने ३८ वर्ष ७ मास तथा २४ दिन तक (हिजरी सनों) के अनुसार राज्य किया।

ऊपर-ऊपर होता हुआ सखेत की ओर गया। शाही सेना ने बकनारी से कूच किया और अरुबर के ग्राम में पहुँची तथा अरुबर की घाटी में चबूतरये क़ीमार के निकट पड़ाव किया। शाहज़ादे ने तत्पश्चात्, सखेत छोड़ दिया और वह नगरकोट के दुर्ग में चला गया। शाही सैनिकों ने गुलियर[1] की सीमाओं तक उसका पीछा किया, परन्तु मार्ग में उन्हें तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा; अतः मलिक फ़ीरोज़ अली एवं अन्य अमीरों ने पीछा करना छोड़ दिया और वापस लौट गये। शाहज़ादे ने नगरकोट में स्थान ग्रहण किया।

तुग़लुक़ शाह युवक तथा अनुभवशून्य था। राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों से वह (१४३) अनभिज्ञ था तथा परिवर्तनशील भाग्य के छल कपट का उसे कोई अनुभव न था। उसने मदिरापान तथा भोग विलास को प्रारम्भ कर दिया। राज्य का समस्त कार्य उपेक्षित हुआ तथा फ़ीरोज़शाही दासों ने धृष्टता तथा निर्भीकता प्रदर्शित करनी प्रारम्भ करदी और राज्य की सुव्यवस्था का अन्त हो गया।

इसी बीच में, सुल्तान तुग़लुक़ ने अपने भाई अस्पदार शाह को अकारण ही बन्दी बना लिया। ज़फ़र खाँ का पुत्र अबू बक्र शाह शरण हेतु भाग गया। नायब वज़ीर मलिक रुक्नुद्दीन जन्दा[2] तथा कई अन्य अमीरों एवं फ़ीरोज़ शाह के दासों ने उससे (अबू बक्र शाह से) मिलकर विद्रोह कर दिया। उन्होंने फ़ीरोज़ाबाद के महल में मलिक मुबारक कबीर की जबकि वह महल के द्वार से होकर लौट रहा था, अपनी तलवार से हत्या करदी। इस पर दीवान में बड़ा कोलाहल हुआ। सुल्तान तुग़लुक़ शाह इसे सुनकर यमुना नदी की ओर के द्वार से भाग गया। मलिक फ़ीरोज़ वज़ीर उसके साथ था, परन्तु राजद्रोही दुष्ट रुक्न जन्दा ने उसके निकल भागने का हाल जानकर अपने अनुयाइयों तथा फ़ीरोज़शाही दलों सहित उसका पीछा किया। यमुना नदी के घाट पर पहुँचने पर उन्होंने सुल्तान तुग़लुक़ शाह तथा मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ की हत्या करादी। उनके शीश धड़ से पृथक् कर दिये गये और दरबार के सामने लटका दिये गये। यह घटना २१वीं सफ़र ७९१ हि० (१९ फ़रवरी १३८९ ई०) को घटी।

पद्य

"धूलि में मिला दिया गया भाग्य का वह गुलाब का फूल, जिसे देश के उद्यान ने,
सौ हज़ार नाज़ से अपनी गोद में पाला था।"

ईश्वर की शक्ति कितनी आश्चर्यजनक है! वह उस द्वार से एक बादशाह से मुकुट तथा सिंहासन सहित वैभव के साथ बाहर लाता है और पलक मारते ही उसका शीश काट कर उसी द्वार से बाहर फेंक देता है। "तू उसे ही गौरव प्रदान करता है जिसे तू चाहता है और उसे ही तुच्छ बनाता है, जिसे तू चाहता है, तेरे ही हाथ में भलाई है; निःसन्देह तुझे समस्त बातों का पूर्ण अधिकार है।"

रुबाई

(१४४) "तूने देखा है कितने वैभव से अलप अरसलाँ का मुकुट आकाश तक पहुँचा था,
उसकी मृत्यु हो गई तथा उसका शरीर उसकी मृत्यु पर भूमि के नीचे देखो।
जब उसकी पेटी में न तो सितारे थे और न चन्द्रमा-तुल्य आकृति के (दास),
न उसकी जाँघ के नीचे घोड़ा न लगाम उसके हाथ में।"

---

१ गूलेर अथवा गुलर, बान गंगा के बायें तट पर, कांगड़ा के २० मील दक्षिण पश्चिम में।

२ सम्भवतः रुक्नुद्दीन जुनैदी।

सुल्तान अबू बक्र शाह ।

इसके पश्चात्, उन्होंने (अर्थात् अमीरों ने) अबू बक्र शाह को उसके निवास स्थान से बाहर निकाला तथा उसे एक हाथी पर बैठाकर सिर पर चत्र लगाकर सुल्तान अबू बक्र शाह की उपाधि देकर सुल्तान घोषित किया। विज़ारत का पद दुष्ट रुक्न जन्दा को, जिसने अपने स्वामी की हत्या की थी, दिया गया। कुछ दिवस पश्चात्, रुक्न जन्दा ने अबू बक्र शाह की हत्या करने तथा अपने आपको बादशाह बनाने के विचार से कुछ फ़ीरोजशाही दासों से मिलकर षड्यंत्र रचा। अबू बक्र शाह को इसकी सूचना हो गई। कुछ दासों ने, जो उससे (रुक्न जन्दा) मित्रता के भाव नहीं रखते थे, उसकी हत्या करदी। पैग़म्बर ने (जिनको शान्ति प्राप्त हो) कहा है, "जिसने अपने भाई के लिये कुँआ खोदा वह स्वयं ही उसमें गिर गया।"

पद्य

"जिस मनुष्य ने दारा पर अत्याचार किया,
अब तक, चित्रकार उसके शरीर को सूली पर लटका हुआ चित्रित करते हैं।"

निःसन्देह ही, जो अपने परोपकारक का बध करता है, उसे इसी प्रकार बदला मिलता है। संक्षेप में दास, जिन्होंने उस अभागे तथा दुष्ट राजद्रोही (रुक्न जन्दा) का साथ दिया था, निर्दयी तलवार का भोजन बना दिये गये। अबू बक्र शाह ने शाही हाथियों तथा (१४५) ख़ज़ाने पर अधिकार करके देहली पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया। उसकी शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती गयी। इसी बीच में, सामाना के अमीराने सदा ने अपनी तलवारों एवं कटारों से मलिक सुल्तान शाह खुशदिल के सुन्नाम के हौज़ पर २४ सफ़र ७९१ हि०, (२२ फ़रवरी १३८९ ई०) को टुकड़े-टुकड़े कर दिये। तत्पश्चात्, उसी दिन सामाना पर अधिकार जमा लिया और मलिक सुल्तान शाह तथा उसके घरबार को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने मलिक सुल्तान शाह का शीश काट कर, शाहज़ादा मुहम्मद खां के पास नगरकोट भेज दिया। मलिक सुल्तान तुग़लुक़ शाह का शासन ५ मास एवं कुछ दिन तक रहा।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का कनिष्ठ पुत्र सुल्तान मुहम्मद शाह ।

सुल्तान मुहम्मद शाह स्वर्गीय सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का कनिष्ठ पुत्र था। मलिक सुल्तान शाह की हत्या के समाचार पाकर सुल्तान ने नगरकोट से प्रस्थान किया और निरन्तर कूच करता हुआ जालन्धर के मार्ग से सामाना पहुंचा। उपर्युक्त वर्ष के रबी उल आखिर मास की छठी तारीख को (४ अप्रैल १३८९ ई०) मुहम्मद शाह द्वितीय बार सामाना में राज-सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। सामाना के अमीराने सदा तथा पर्वतीय क्षेत्रों के मुक़द्दम उससे मिल गये और उन्होंने उसकी बैअत करली[१]। देहली के कुछ मलिक तथा अमीर अबू बक्र शाह का साथ छोड़कर मुहम्मद शाह से मिल गये। इस प्रकार सामाना में लगभग २०००० अश्वारोही तथा अगणित पदाति उसके पास एकत्र हो गये। सामाना से उत्तरोत्तर कूच (१४६) करता हुआ वह देहली की ओर रवाना हुआ। देहली के समीप में पहुंचने के समय तक सवारों की संख्या बढ़कर ५०,००० हो गई। सारांश में, अबू बक्र शाह को उसके पहुँचने की सूचना मिली, और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दास, सुल्तान (मुहम्मद शाह) से (सर्वप्रथम) विरोध करने के कारण अब उससे मिल गये।

२५वीं रबी उल आखिर ७९१ हि० (२३ अप्रैल १३८९ ई०) को सुल्तान मुहम्मद

१ अधीनता स्वीकार करने की शपथ ली।

ने जहाँ नुमा नामक राजप्रासाद में स्थान ग्रहण किया। अबू बक्र शाह भी अपने अनुयाइयों तथा सेना सहित फ़ीरोज़ाबाद में था। उपर्युक्त वर्ष में दूसरी जमादी उल अव्वल को (२६ अप्रैल) अबू बक्र के अनुयाइयों ने फ़ीरोज़ाबाद की सड़कों तथा दीवारों पर अधिकार करने के पश्चात् सुल्तान (मुहम्मद शाह) के सैनिकों से युद्ध किया। उसी दिन बहादुर नाहिर अपने अनुयाइयों सहित शहर (देहली) में आया। अबू बक्र शाह उसके आने पर प्रोत्साहित होकर अगणित अश्वारोहियों, पदातियों तथा प्रसिद्ध हाथियों सहित फ़ीरोज़ाबाद में पहुंचा। उन दोनों के मध्य में भीषण संघर्ष तथा युद्ध हुआ और अन्त में, सर्वोच्च ईश्वर के आदेश से सुल्तान की सेना पराजित होकर अपने ही प्रदेशों की ओर वापस चली गई। २००० अश्वारोहियों के दल के साथ सुल्तान ने यमुना नदी पार की और दोआब में प्रविष्ट हो गया। वहाँ से उसने अपने मंझले पुत्र हुमायूँ खाँ को सेना एकत्र करने के लिये सामाने भेजा और उसके साथ मलिक ज़ियाउलमुल्क अबू रिजा, राय कमालुद्दीन मईन एवं राय जुलजी भट्टी को, जिनकी अक्तायें उसी ओर थीं, भेजा। सुल्तान ने स्वयं गंगा तट पर जतेसर ग्राम में स्थान ग्रहण किया। हिन्दुस्तान के अमीर जैसे मलिक सरवर, शहनये शहर, मुल्तान का मुक्ता मलिकुश्शर्क़ नसीरुलमुल्क, बिहार का मुक्ता खवासुलमुल्क, अवध के अमीर मलिक हुसामुद्दीन नवा के पुत्र मलिक सैफ़ुद्दीन तथा मलिक कद्दू, क़न्नौज के अमीर मलिक दौलतयार कम्बद[1] के पुत्र, राय सबीर तथा अन्य राय एवं राना लोग लगभग (१४७) ५०००० अश्वारोहियों एवं अगणित पदातियों सहित सुल्तान से मिल गये। मलिक सरवर ने ख्वाजये जहाँ की उपाधि तथा विज़ारत का पद प्राप्त किया। मलिक नसीरुलमुल्क खिज्र खाँ हुआ, खवासुलमुल्क खवास खाँ बनाया गया तथा सैफ़ुद्दीन सैफ़ खाँ हुआ।

उसी वर्ष (७९१ हि०/१३८९ ई०) शाबान मास में (जुलाई-अगस्त) (सुल्तान मुहम्मद) ने पुनः देहली की ओर कूच किया। अबू बक्र खां उससे युद्ध करने के लिये अग्रसर हुआ और कंदली[2] ग्राम में पहुँचा। दोनों के मध्य में युद्ध तथा घोर रक्तपात हुआ। सर्वोच्च ईश्वर के आदेश से सुल्तान (मुहम्मद) की सेना पराजित हुई। अबू बक्र विजयी हुआ। शिविर का साजो सामान विजयी सेना ने लूट लिया। उन्होंने तीन कोस तक उनका पीछा किया। सुल्तान पराजित होकर पुनः जतेसर में निवास करने लगा। अबू बक्र शाह देहली लौट गया।

१९वीं रमज़ान को उसी वर्ष (७९१ हि०/११ सितम्बर १३८९ ई०) फ़ीरोज़ शाह के दासों की, जो प्रदेशों तथा क़स्बों में थे जैसे मुल्तान, लाहौर, सामाना, हिसार फ़ीरोज़ा तथा हाँसी, नगर के मुक्तों तथा प्रजा द्वारा एक ही दिन में सुल्तान मुहम्मद के आदेशानुसार हत्या कर दी गई। राजसिंहासन के लिये मुसलमानों में संघर्ष के परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान के काफ़िर शक्तिशाली बन गये। उन्होंने जिज़या तथा खराज देना बन्द कर दिया और मुसलमानों के ग्रामों को लूट लिया।

७९२ हि० मुहर्रम मास (दिसम्बर-जनवरी १३८९-९० ई०) में शाहज़ादा हुमायूँ खाँ ने, उन अमीरों तथा मलिकों को एकत्र करके, जो उसके अधीन नियुक्त किये गये थे, जैसे ग़ालिब खाँ सामाना का अमीर, मलिक ज़ियाउलमुल्क अबू रिजा, मुबारक खाँ हलाजून तथा हिसार फ़ीरोज़ा का अमीर शम्स खाँ, पानीपत में पड़ाव किया तथा देहली के आस पास (१४८) में लूट मार की। अबू बक्र शाह को जब इसकी सूचना हुई, तो उसने मलिक

१ एक पोथी में कम्बल, सम्भवतः यह क़म्बर होगा।

२ सम्भवतः काँधला, देहली से लगभग ४६ मील उत्तर-पश्चिम दिशा में।

शाहीन एमादुलमुल्क को ४००० अश्वारोहियों तथा अगणित पदातियों एवं दासों सहित पानीपत की ओर भेजा : दोनों सेनाओं की पानीपत के निकट नसमीना[1] ग्राम में युद्ध हुआ। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अबू बक्र शाह की सेना को विजय प्रदान की और शाहजादे की सेना पराजित होकर सामाना की ओर भाग गई। उसका शिविर, सामान व सामग्री विजेताओं द्वारा लूट लिये गये। वास्तव में, जब देहली की सेनाओं ने, ईश्वर की कृपा से विजय पर विजय प्राप्त की तो सुल्तान मुहम्मद एवं उसकी सेना शत्रुओं का विरोध पुनः न कर सकी। फलस्वरूप वह अत्यधिक निराश हो गया, तथापि, अमीर, मलिक तथा उस प्रदेश की प्रजा सुल्तान की पूर्णतः सहायक थी और अबू बक्र शाह ने शहर (देहली) खाली छोड़कर पराजित शत्रुओं का पीछा करना उचित न समझा।

उसी वर्ष (७९२ हि०/१३९० ई०) के जमादी उल अव्वल मास (अप्रैल-मई) में अबू बक्र शाह ने अपनी सेना एकत्र की और जतेसर पर चढ़ाई की। उसने देहली से लगभग २० कोस की दूरी पर पड़ाव किया। सुल्तान मुहम्मद ने इसकी सूचना पाने पर अपनी समस्त सेना तथा सामग्री जतेसर में छोड़ दी और अश्वारोहियों सहित देहली की ओर प्रस्थान किया। उन दास रक्षकों में से कुछ ने, जो शहर देहली की देख रेख के लिये छोड़ दिये गये थे, बदायूँ द्वार पर थोड़ा बहुत युद्ध किया परन्तु आक्रमणकारियों ने द्वार में आग लगा दी और रक्षकों ने पलायन किया। सुल्तान मुहम्मद ने इस द्वार से शहर (देहली) में प्रवेश किया तथा शुभ राजप्रासाद में निवास ग्रहण किया। नगर के समस्त जन साधारण तथा सम्मानित व्यक्ति एवं बाजारी सुल्तान (१४६) से मिल गये। जब इसकी सूचना अबू बक्र शाह को प्राप्त हुई, वह उसी दिन शीघ्र ही अपने अनुयाइयों का एक दल लेकर चल दिया और उसी द्वार से नगर में प्रविष्ट हो गया। मलिक बहाउद्दीन जंगी की, जो सुल्तान मुहम्मद द्वारा द्वारों की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया था, उसी स्थान पर हत्या कर दी गई। जब अबू बक्र शाह शुभ राजप्रासाद के निकट पहुँचा तो सुल्तान निश्चिंत था। उसे अचानक यह समाचार पहुँचाये गये! वह थोड़े से अश्वारोहियों सहित महल के पीछे के द्वार से निकल भागा और हौजे खास के द्वार से होकर शहर के बाहर निकला और जतेसर अपनी सेना तथा सामान के पास वापस पहुँच गया। उन अमीरों, मलिकों तथा सैनिकों में से, जो नगर से बच निकलने में असमर्थ रहे, कुछ तो बन्दी बना लिये गये और कुछ मार डाले गये, उदाहरणार्थ खलील खाँ बारबक[2] एवं स्वर्गीय सुल्तान (फ़ीरोज़ शाह) का भागिनेय मलिक आदम इस्माईल को जीवित बन्दी बना लिया गया तथा उनकी हत्या कर दी गई।

उपर्युक्त वर्ष के रमज़ान मास (अगस्त-सितम्बर १३९० ई०) में मुबश्शिर जब[3] सुल्तानी, जिसकी उपाधि इस्लाम खाँ थी, फ़ीरोज़ शाह के अनेकों दासों के साथ कारणवश अबू बक्र शाह के विरुद्ध हो गया तथा उसने सुल्तान से गुप्त रूप से पत्र व्यवहार आरम्भ कर दिया। अन्त में जब यह बात सब को ज्ञात हो गई तो अबू बक्र शाह में ठहरने की शक्ति न रही अतः उसने थोड़े से अश्वारोहियों तथा अपने कुछ अनुरक्त अनुयाइयों जैसे मलिक शाहीन एमादुलमुल्क, मलिक बहरी तथा सफ़दर खाँ सुल्तानी के साथ देहली त्याग दी[4] और बहादुर नाहिर के कोटला[5] की ओर प्रस्थान किया।

---

१ एक पोथी में बसीना, पसीना, पानीपत से दक्षिण की ओर ९ मील।

२ एक पोथी में नायब बारबक।

३ हाजिब।

४ सम्भवतः वह उपर्युक्त लोगों को अपने हित की रक्षा हेतु देहली छोड़ गया था।

५ नूह (गुड़गाँव जिले) के दक्षिण में ८ मील पर।

उसी वर्ष १६वीं रमज़ान (२८ अगस्त) को मुबश्शिर जब तथा फ़ीरोज़शाही दासों ने अबू बक्र शाह के पलायन कर जाने की सूचना देते हुये सुल्तान के पास पत्र भेजे। उन्होंने सुल्तान के कनिष्ठ पुत्र खाने खानां को एक हाथी पर बैठाया और उसके सिर पर चत्र लगाया।

(१५०) तीसरे दिन १९वीं रमज़ान (३१ अगस्त) को सुल्तान जतेसर से शहर (देहली) पहुँचा तथा फ़ीरोज़ाबाद के प्रासाद में राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। मुबश्शिर जब ने विज़ारत का पद प्राप्त किया तथा इस्लाम खाँ की उपाधि पाई। फ़ीरोज़ शाह के दास तथा नगर के लोग सुल्तान से मिल गये। कुछ दिनों पश्चात् (सुल्तान) फ़ीरोज़ाबाद छोड़ कर जहाँ पनाह के क़िले में शुभ प्रासाद में पहुँचा। उसने फ़ीरोज़शाही दासों से हाथियों को ले लिया तथा उन्हें प्राचीन महावतों की देख रेख में कर दिया। फलत: प्राचीन दासों ने विद्रोह कर दिया। चूँकि सुल्तान शक्तिशाली था और समस्त हाथी उसके सेवकों की देख रेख में थे अत: वे उसका सामना न कर सके।

वे अपने स्त्री बच्चों सहित रातों रात भाग कर तथा बहादुर नाहिर के कोटला में अबू बक्र शाह से मिल गये। उपर्युक्त दासों में से जो नगर में रह गये थे उनके विषय में शाही आदेश हुआ कि वे नगर को ३ दिन के भीतर रिक्त करदें। इस प्रकार नगर उन अशुद्ध व्यक्तियों से रिक्त हो गया। कहा जाता है कि जब इन घृणित दासों में से अधिकांश सुल्तान द्वारा बन्दी बना लिए गये तो प्रत्येक अपने आपको असील[1] बताता था। सुल्तान उनसे कहता था 'तुममें से जो कोई भी खरा खरी करजना का उच्चारण करदे वह असीलि है।' इसी कारण अधिकाँश हिन्दुस्तानियों की हत्या कर दी गई तथा फ़ीरोज़शाह के दासों को तलवार के घाट उतार दिया गया। समस्त हिन्द तथा सिन्ध में यह कहानी प्रसिद्ध है। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न भागों के अमीर तथा मलिक उसके दरबार में आ गये और सुल्तान की शक्ति (१५१) तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि हो गई, अबू बक्र शाह तथा फ़ीरोज़शाही दासों का दमन एवं विनाश करने के लिये शाहज़ादा हुमायूँ खाँ, इस्लाम खाँ, ग़ालिब खाँ, राय कमालुद्दीन एवं राय जुलजी[2] को एक शक्तिशाली सेना देकर भेजा गया। उपरोक्त अमीर महेन्दवारी[3] क़स्बे में पहुँचे। मुहर्रम ७९३ हि० (दिसम्बर-जनवरी १३९०-९१ ई०) में अबू बक्र शाह, बहादुर नाहिर तथा फ़ीरोज़शाही दासों ने एक साथ एकत्र होकर प्रातःकाल उपर्युक्त सेना पर आक्रमण कर दिया और बहुत से आदमी मार डाले। इस्लाम खाँ अपनी सेना सुव्यवस्थित करके आक्रमणकारियों से युद्ध करने लगा। शाहज़ादा अपने अनुयाइयों सहित घोड़े पर सवार हुआ और उसने पहले ही आक्रमण में शत्रुओं को पराजित कर दिया। शाही सैनिकों ने पलायन करने वालों का पीछा किया। उनमें से अधिकाँश ने कोटला में शरण ली। कुछ मार डाले गये तथा कुछ बन्दी बना लिये गये। इस समाचार के पहुंचते ही सुल्तान ने युद्ध-स्थल की ओर प्रस्थान किया और कोटला पहुंच कर उसने धाँड (झील) के तट पर पड़ाव किया। अबू बक्र शाह तथा बहादुर नाहिर ने शरण की प्रार्थना की और वे सुल्तान से मिलने आये। बहादुर नाहिर ने एक खिलअत प्राप्त की और वह वापस भेज दिया गया। अबू बक्र शाह को सुल्तान खण्डो ले गया जहाँ से वह अमरहा (अमरोहा)[4] भेज दिया गया। वहीं उसके बन्दी बनाने का आदेश हुआ और बन्दीगृह में ही उसकी मृत्यु हो गई।

१ शुद्ध वंश से सम्बन्धित।

२ एक पोथी में जुलजेन।

३ सम्भवतः मेवात में हिंदवारी।

४ एक पोथी में मेरठ है और यही उचित ज्ञात होता है।

पद्य

"यदि तू सर्प की पूँछ पर प्रहार करता है तो तुझे उसका सिर भी कुचल देना चाहिये,
सर्प की पूँछ को घायल करना सुरक्षित कार्य नहीं है।"

उसके शासन-काल की अवधि १½ वर्ष थी। सुल्तान स्वयं इटावा की ओर गया और वहाँ उसकी सेवा में राय बर सिंह उपस्थित हुआ जिसे उसने एक खिलअत दी और वापस भेज दिया। वहाँ से यमुना नदी के किनारे किनारे चलकर सुल्तान देहली पहुँचा।

(१५२) ७९४ हि० में (१३९१-९२ ई०) बर सिंह[1], सबीर,[2] अधरन तथा बीर भान के विद्रोह की सूचना प्राप्त हुई। सुल्तान ने बर सिंह के विरुद्ध इस्लाम खाँ को भेजा और वह स्वयं सबीर, अधरन एवं अन्य काफ़िरों के विनाश हेतु रवाना हुआ। दुष्ट बर सिह ने इस्लाम खाँ की सेना का मुक़ाबला किया किन्तु ईश्वर की कृपा से इस्लामी सेना को विजय प्राप्त हुई। दुष्ट बरसिंह पराजित हुआ और पलायन कर गया। विजेताओं ने (भागने वालों का) पीछा किया। बहुत से काफ़िरों को नरक भेज दिया तथा उनके प्रदेश को उजाड़ दिया। 'निःसन्देह बादशाह जब वे किसी नगर में प्रवेश करते हैं, उसका विनाश कर देते हैं तथा उत्तम मे उत्तम लोगों को नीचा बना देते हैं।" अन्त में, बर सिंह ने दया की याचना की और इस्लाम खाँ की सेवा में उपस्थित हुआ जो उसे देहली ले आया। दुष्ट सबीर तथा अधरन ने बलाराम[3] क़स्बे पर आक्रमण किया, परन्तु जब सुल्तान ब्यास नदी के तट पर पहुंचा तो वे भाग गये और इटावा में अपने को बन्द करके बैठ रहे। सुल्तान निरन्तर कूच करता हुआ इटावा पहुंचा। प्रथम दिन कुछ युद्ध हुआ। रात्रि में वह इटावा का दुर्ग छोड़ कर भाग गया और अगले दिन सुल्तान ने इटावा के दुर्ग को विध्वंस कर दिया। वहाँ से उसने क़न्नौज की ओर कूच किया और गंगा पार करके उसने क़न्नौज तथा डलमऊ के काफ़िरों को दंड दिया। तत्पश्चात् लौटते हुये जतेसर गया। वहाँ उसने एक क़िला बनवाया जिसका नाम उसने मुहम्मदाबाद रखा।

(१५३) इस वर्ष के रजब मास (मई-जून १३९२ ई०) में ख्वाजये जहाँ के पास से, जो देहली में सुल्तान का नायबे ग़ैबत था, यह पत्र प्राप्त हुआ कि इस्लाम खाँ विद्रोह के विचार से मुल्तान तथा लाहौर की ओर प्रस्थान करने वाला है। सुल्तान ने यह समाचार पाते ही तुरन्त जतेसर छोड़ कर देहली की ओर प्रस्थान किया, जहाँ उसने दरबार किया और इस्लाम खाँ से उन विचारों के विषय में पूछताछ की जिनका उस पर दोष लगाया जाता था। उसने इन दोषों को अस्वीकार किया, परन्तु इस्लाम खाँ के भतीजे तथा जाजर नामक एक दुष्ट काफ़िर ने, जो उससे घृणा रखते थे, उसके विरुद्ध झूठी गवाही दी और इस्लाम खाँ की दरबार के समक्ष अन्यायपूर्ण हत्या कर दी गई। ख्वाजये जहाँ को वज़ीर बनाया गया तथा मलिक मुक़र्रबुलमुल्क को जतेसर में (मुहम्मदाबाद में) एक सेना देकर भेज दिया गया।

७९५ हि० (१३९२-९३ ई०) में सूचना प्राप्त हुई कि सबीर, अधरन, जीत सिंह राठौर तथा भौंव गाँव के मुक़द्दम बीर भान, चन्दवार के मुक़द्दम अभयचन्द ने विद्रोह कर दिया है। सुल्तान ने मलिक मुक़र्रबुलमुल्क को किसी प्रकार विद्रोह शान्त करने के लिये आदेश दिया। मलिक मुक़र्रबुलमुल्क ने क़न्नौज की ओर प्रस्थान किया। उपरोक्त काफ़िरों ने भी अपने अनुयाइयों को लेकर उसका सामना किया। मुक़र्रबुलमुल्क ने मैत्रीपूर्ण भाव ग्रहण किया और

---

१ बीरसिंह अथवा वीर सिंह तोमर।

२ सम्भवतः सुमेर।

३ एटा ज़िले की कासगंज तहसील में।

(१५४) वचनों तथा प्रण देकर सरदारों को अधीनता स्वीकार करने पर लालायित किया। वे मलिक से मिलने गये। मलिक उन सब को अपने साथ क़न्नौज ले गया, जहाँ वह परामर्श करने के बहाने से उनको क़िले के भीतर ले गया। दुष्ट सबीर के अतिरिक्त, जो पीछे रह गया, प्रत्येक वहाँ चला गया। अन्त में उन सब को बन्दी बना कर नरक भेज दिया गया। सबीर इटावा की ओर भाग गया। विजय तथा सफलता से परिपूर्ण होकर मलिक मुक़र्रबुल-मुल्क मुहम्मदाबाद लौटा।

शव्वाल ७९५ हि० (अगस्त-सितम्बर १३९३ ई०) में सुल्तान ने मेवात के विरुद्ध कूच किया और उसे विध्वंस करने के पश्चात् मुहम्मदाबाद जतेसर लौट गया जहाँ वह रुग्ण हो गया। उसका रोग दिन प्रति दिन बढ़ता ही गया। उसी समय उसे सूचना मिली कि बहादुर नाहिर ने देहली के समीपवर्ती स्थानों को लूट लिया है। सुल्तान ने अपनी बीमारी पर ध्यान न करते हुये एक चुडवल[1] में प्रस्थान किया। बहादुर नाहिर ने कोटला से निकल कर उससे मुक़ाबला किया किन्तु प्रथम आक्रमण में ही पराजित हुआ और कोटला में शरण ली। शाही सेनाओं ने उसका पीछा किया और कोटला के बहुत से आदमी बन्दी बना लिये गये तथा उनके घोड़ों, अस्त्र शस्त्रों एवं सामानों को लूट लिया गया। बहादुर नाहिर कोटला से भाग खड़ा हुआ तथा जहर नामक पर्वत में छिप गया। वहाँ से सुल्तान मुहम्मदाबाद लौट आया तथा जतेसर को आबाद कराने तथा वहाँ भवनों का निर्माण कराने में संलग्न हो गया परन्तु सुल्तान का रोग प्रति दिन बढ़ता ही गया।

रबी उल अव्वल ७९६ हि० (जनवरी-फ़रवरी १३९४ ई०) में सुल्तान ने शाहज़ादा हुमायूँ को शैख़ खोखर के विरुद्ध, जिसने विद्रोह कर दिया था तथा लाहौर पर अधिकार जमा लिया था, कूच करने के लिये नियुक्त किया। शाहज़ादा प्रस्थान करने ही वाला था कि उसे १७वीं रबी उल अव्वल (२० जनवरी) को उसी वर्ष (७९६ हि०/१३९४ ई०) सुल्तान की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ।

पद्य

'हे सादी! यद्यपि आकाश शकर से तेरा पोषण करता है,
उसकी उत्तमता कहाँ रहती है यदि वह तुझे विष से मारता है।'

(१५५) सुल्तान का शव मुहम्मदाबाद से देहली ले जाया गया जहाँ हौज़े खास के ऊपर अपने पिता के मक़बरे में दफ़न कर दिया गया। सुल्तान के शासन-काल की अवधि ६ वर्ष तथा ७ मास थी।

सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दर शाह।

सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दर शाह सुल्तान मुहम्मद शाह का मंझला पुत्र था। उसकी उपाधि हुमायूँ खाँ थी। सुल्तान मुहम्मद शाह की मृत्यु पर वह ३ दिन तक शोक सम्बन्धी कार्यों में संलग्न रहा और १९वीं रबी उल अव्वल को (२२ जनवरी) (७९६ हि०/१३९४ ई०) वह अमीरों, मलिकों, इमामों[2] तथा क़ाज़ियों की सहमति से शुभ महल में सिंहासनारूढ़ हुआ। ख्वाजये जहाँ को विज़ारत प्रदान की गई तथा विभिन्न पद एवं सेवायें प्राचीन कर्मचारियों के पास ही रहीं। इसी बीच में, मलिक मुक़र्रबुलमुल्क एवं अन्य अमीर तथा मलिक मृत सुल्तान के शव को देहली ले गये और उन्होंने सुल्तान अलाउद्दीन की अधीनता

१ एक प्रकार की पालकी।

२ इस्लाम के नेता। वे लोग जो मुसलमानों को नमाज़ पढ़ाते हैं।

स्वीकार करली। उन्होंने उसे हाथी, सामान तथा बादशाही की अन्य सामग्री भी सौंप दी। वह इसी प्रकार एक मास तक राज्य करता रहा परन्तु ईश्वर के आदेश से सुल्तान रुग्ण हो गया और उसका रोग बढ़ता ही गया यहाँ तक कि ५वीं जमीद उल अव्वल (८ मार्च १३९४ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई।

पद्य

"बादशाहों के रक्त के अतिरिक्त इस थाल (अर्थात् संसार) में कुछ भी नहीं है,
रूपवानों की धूल के अतिरिक्त इस मरुस्थल (अर्थात् संसार) में कुछ भी नहीं है।"

उसका शासनकाल १ मास तथा १६ दिन रहा।

सुल्तान महमूद नासिरुद्दीन शाह।

सुल्तान महमूद नासिरुद्दीन सुल्तान मुहम्मद शाह का सबसे छोटा पुत्र था। अलाउद्दीन (१५६) की मृत्यु के उपरान्त अधिकांश अमीर एवं मलिक जिनकी अक़्तायें पश्चिम दिशा के प्रदेशों में थीं उदाहरणार्थ ग़ालिब ख़ाँ सामाना का अमीर, राय कमालुद्दीन मईन, मुबारक ख़ाँ हलाजून, इन्द्री एवं करनाल के अमीर ख़वास ख़ाँ, शहर (देहली) से बाहर निकले और उन्होंने उद्यान के निकट पड़ाव किया। वे अपनी-अपनी अक़्ताओं को (सुल्तान से बिना) भेंट किये जाना चाहते थे। इस सूचना के प्राप्त होते ही ख़्वाजये जहाँ अमीरों को देहली लाया तथा सुल्तान महमूद की अधीनता स्वीकार कराई। २०वीं जमादी उल अव्वल (७९६ हि०/२३ मार्च १३९४ ई०) को सुल्तान महमूद ने नासिरुद्दीन महमूद शाह की उपाधि धारण की और शुभ राजप्रासाद में अमीरों, मलिकों, इमामों, सैयिदों, आलिमों तथा सूफ़ियों की सहमति से सिंहासनारूढ़ हुआ।

वज़ीर का पद ख़्वाजये जहाँ को प्रदान हुआ। मुक़र्रबुलमुल्क मुक़र्रब ख़ाँ कहलाया और राज्य का उत्तराधिकारी मनोनीत हुआ। अब्दुर्रशीद सुल्तानी को सआदत ख़ाँ की उपाधि दी गई तथा बारबेगी नियुक्त हुआ। मलिक सारंग की उपाधि सारंग ख़ाँ और दीबालपुर की अक़्ता उसे सौंप दी गई। मलिक दौलतयार दबीर को दौलत ख़ाँ की उपाधि से सम्मानित किया गया। उसने एमादुलमुल्क का पद प्राप्त किया एवं आरिज़े ममालिक नियुक्त हुआ। तुच्छ काफ़िरों के प्रभुत्व के कारण हिन्दुस्तान की अक़्ता की व्यवस्था असन्तोषजनक थी। ख़्वाजये जहाँ को सुल्तानुश्शर्क़ की उपाधि प्रदान हुई तथा हिन्दुस्तान की व्यवस्था क़न्नौज से बिहार तक उसी के सिपुर्द हुई।

रजब ७९६ हि० (मई १३९४ ई०) को ख़्वाजये जहाँ ने २० हाथियों सहित हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया। इटावा, कोल, खोर,[1] कम्बिल[2] तथा क़न्नौज के समीप के काफ़िरों को (१५७) दंड देने के पश्चात् उसने जौनपुर की ओर प्रस्थान किया तथा क़न्नौज, कड़ा, अवध, सन्डीला, दलमऊ, बहराइच, बिहार, तथा तिरहुत, को अपने अधीन कर लिया। अधिकाँश काफ़िरों का समूलोच्छेदन कर दिया गया। उन क़िलों को जिनको उन्होंने विध्वंस कर दिया था पुनः ठीक कराया गया। सर्वोच्च ईश्वर ने मुसलमानों को शक्ति तथा विजय प्रदान की। जाजनगर के राय तथा लखनौती के शासक ने, जो प्रतिवर्ष हाथी देहली भेजा करते थे, अब ख़्वाजये जहाँ को भेजने प्रारम्भ कर दिये।

लगभग इसी समय सारंग ख़ाँ को शेख खोखर का विद्रोह शान्त करने तथा उसकी

१ खोर शम्साबाद से ३ मील तथा फ़र्रुख़ाबाद के उत्तर-पश्चिम में १२ मील पर।
२ कम्पिल, फ़तहगढ़ से २६ मील उत्तर पश्चिम।

अक़्ता पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से दीबालपुर भेजा गया। उपरोक्त वर्ष (७९६ हि०/१३९४ई०) के शाबान (जून) मास में सारंग खाँ ने दीबालपुर के लिये प्रस्थान किया। उसने दीबालपुर के सैनिकों तथा दासों को सुव्यवस्थित और तैयार किया तथा दीबालपुर की अक़्ता अपने अधिकार में करली।

ज़ीक़ाद ७९६ हि० (अगस्त-सितम्बर १३९४ ई०) में राय जुलजी[1] भट्टी एवं राय दाऊद कमाल मईन ने मुल्तान की सेना अपने साथ लेकर बरहारा[2] ग्राम के निकट सतलदर[3] तथा दोहाली के निकट व्यास नदी को पार किया और लाहौर पहुँच गये। सारंग खाँ के आगमन के समाचार पाकर शेखा खोखर ने अपनी सेना तैयार की और दीबालपुर के आस पास के भागों पर आक्रमण किया तथा अजोधन को घेर लिया। उसी समय उसे यह सूचना मिली कि सारंग खाँ भन्दोइत को विध्वंस करके उतर पड़ा है, अतः खोखर ने रात्रि में अजोधन छोड़ दिया और लाहौर पहुँच गया। दूसरे दिन दोनों सेनायें युद्ध के लिए तैयार होकर आगे बढ़ीं। लाहौर से १२ कोस की दूरी पर सामूथला के स्थान पर युद्ध हुआ सर्वशक्तिमान (ईश्वर) ने सारंग खाँ को विजय प्रदान की। शेखा खोखर पराजित (१५८) होकर लाहौर की ओर चला गया और वहाँ से रातों रात अपने परिवार को लेकर जम्मू के पर्वतों की ओर चल दिया। अगले दिन सारंग खाँ ने लाहौर का क़िला विजय कर लिया और अपने भाई कन्धू को आदिल खाँ की उपाधि देकर लाहौर में नियुक्त कर दिया और स्वयं दीबालपुर लौट आया।

शाबान (७९६ हि०/जून १३९४ ई०) में सुल्तान ने सआदत खाँ को अपने साथ लेकर बयाना की ओर प्रस्थान किया। मुक़र्रब खाँ को कुछ शाही सेवकों तथा हाथियों सहित नगर में छोड़ दिया। जब सुल्तान ग्वालियर के निकट पहुँचा तो मलिक अलाउद्दीन धारवाल मलिक राजू के पुत्र मुबारक खाँ एवं सारंग खाँ के भाई मल्लू ने सआदत खाँ से विश्वासघात किया। इसकी सूचना पाकर सआदत खाँ ने अलाउद्दीन तथा मुबारक खाँ को बन्दी बना लिया और उनकी हत्या करदी। मल्लू भाग खड़ा हुआ और देहली में मुक़र्रब खाँ के पास शरणार्थ पहुंचा। सुल्तान भी वहाँ से वापस होकर देहली के निकट पहुँचा। मुक़र्रब खाँ उससे मिलने के लिए आगे गया और चरण चूमने का सम्मान प्राप्त किया, परन्तु भय तथा आतंक के कारण जो उसके हृदय पर आरूढ़ थे वह नगर को वापस लौट आया और युद्ध की तैयारी करने लगा। अगले दिन सुल्तान तथा सआदत खाँ समस्त अमीरों, मलिकों एवं हाथियों को एकत्रित तथा तैयार करके मैदान के द्वार के सामने पहुँचे। मुक़र्रब खाँ क़िले में से ही युद्ध करता रहा। यह व्यवस्था ३ मास तक रही। इसी प्रकार सुल्तान के सम्बन्धी मुहर्रम ७९७ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १३९४ ई०) में उसे नगर के भीतर ले गये परन्तु हाथी, पदाति तथा समस्त राजसी (१५९) ठाठ बाट के सामान सआदत खाँ के अधिकार में ही रहे। सुल्तान की उपस्थिति ने मुक़र्रब खां की स्थिति और भी दृढ़ करदी। अगले दिन उसने नगर के लोगों—सैनिकों से लेकर साधारण लोगों तक—को एकत्र किया और नगर द्वार के बाहर युद्ध हेतु निकला। सआदत खाँ को जब यह समाचार मिला तो वह भी अपनी सेना मैदान् में लाया। दोनों के मध्य में घोर युद्ध हुआ। अन्त में मुक़र्रब खाँ पराजित होकर शहर को लौट आया और शहर के अत्यधिक निवासी पददलित हो गये परन्तु सआदत खाँ क़िले पर अधिकार करने में असफल रहा और पीछे

---

१ एक पोथी में जुलजेन।
२ एक पोथी में तिरहारा। तिरहारा लुधियाना ज़िले में है।
३ सतलज।

हट कर उसने हौज़े ख़ास में पड़ाव किया। चूँकि देहली के क़िले पर विजय पाना संभव न था और वर्षा ऋतु निकट थी, अतः सआदत खाँ वहाँ से प्रस्थान करके फ़ीरोज़ाबाद चला गया। जो अमीर उसकी ओर थे उनसे मिलकर उसने निश्चय किया कि फ़ीरोज़ाबाद में फ़ीरोज़ शाह (ईश्वर का आशिष उसकी क़ब्र पर हो और वह स्वर्ग में निवास करे) के पुत्रों में से किसी को सिंहासनारूढ़ कर दिया जाय। नुसरत खाँ बिन (पुत्र) फ़तह खाँ बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह मेवात में था। उसे लाकर फ़ीरोज़ाबाद के महल में रबी उल अव्वल ७९७ हि० (दिसम्बर-जनवरी १३९४-९५ ई०) में नासिरुद्दीन नुसरत शाह की उपाधि देकर सिंहासनारूढ़ कर दिया, परन्तु वह केवल कठपुतली मात्र ही था और सआदत खाँ शासन प्रबन्ध करता था।

इसके पश्चात् शीघ्र ही फ़ीरोज़ शाह के कुछ दास तथा कुछ महावत सुल्तान नासिरुद्दीन से मिल गये। सआदत खाँ निश्चिंत था। उन्होंने अचानक सुल्तान नासिरुद्दीन को एक हाथी पर बैठाया और सभी लोग उसके सहायक बन गये। सआदत खाँ तैयार न (१६०) था अतः वह कोई विरोध न कर सका। वह अन्तःपुर के द्वार के मार्ग से होकर महल के बाहर निकल गया। उसके कुछ सैनिक उससे मिल गये और कुछ प्रत्येक दिशा में छिन्न भिन्न हो गये। सआदत खाँ देहली में अपने दल सहित प्रविष्ट हुआ और मुक़र्रब खाँ से भेंट करने गया। कुछ दिवस पश्चात् मुक़र्रब खाँ ने विश्वासघात करके उसकी हत्या कर दी।

जो अमीर तथा मलिक, फ़ीरोज़ाबाद में रह गये थे, जैसे मुहम्मद मुज़फ़्फ़र, शिहाब नाहिर, फ़ज़्लुल्लाह बलख़ी तथा फ़ीरोज़ शाह के दास, सुल्तान नासिरुद्दीन से मिल गये, और उन्होंने पुनः अधीनता सम्बन्धी शपथ ली। मुहम्मद मुज़फ़्फ़र वज़ीर हो गया। उसे तातार खाँ की उपाधि प्रदान हुई। शिहाब नाहिर, शिहाब खाँ हुआ, तथा फ़ज़्लुल्लाह बलख़ी ने क़ुतलुग़ खाँ की उपाधि प्राप्त की। मलिक अलमास सुल्तानी ने शाही दासों के नेतृत्व का पद प्राप्त किया।

उस समय दो बादशाह थे—एक देहली में तथा दूसरा फ़ीरोज़ाबाद में। मुक़र्रब खाँ ने बहादुर नाहिर तथा उसके अनुयाइयों को अपने साथ मिला लिया और उसे प्राचीन देहली के दुर्ग का रक्षक बना दिया। मल्लू को इक़बाल खाँ की उपाधि तथा सीरी का क़िला प्रदान हुआ। देहली तथा फ़ीरोज़ाबाद में प्रतिदिन युद्ध होता रहता था। मुसलमानों में परस्पर रक्तपात होता था, परन्तु कोई भी दल किसी अन्य दल पर विजय प्राप्त न कर सकता था। दोआब के बीच की शिक़, सीपंथ[1], पानीपत, झज्झर तथा रोहतक सुल्तान नासिरुद्दीन के अधिकार में रहे। सुल्तान महमूद के अधिकार में उपर्युक्त क़िलों के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान न था। राज्य के अमीर तथा मलिक स्वतंत्र राज्य करते थे तथा कर एवं (१६१) ख़राज अपने अधिकार से व्यय करते थे। यह व्यवस्था ३ वर्ष तक रही। देहली तथा फ़ीरोज़ाबाद में प्रतिदिन युद्ध तथा रक्तपात होता रहता था। कभी तो फ़ीरोज़ाबाद वाले विजयी होते थे, और देहली का घेरा डालते थे और कभी देहली वाले फ़ीरोज़ाबाद के क़िले तक लूट मार करते थे।

ऐसी स्थिति में ७९८ हि० (१३९५-९६ ई०) में सारंग खाँ तथा मुल्तान के अमीर मसनदे आला ख़िज्र खाँ में शत्रुता उत्पन्न हो गई। दोनों में भीषण युद्ध तथा रक्तपात हुआ। अन्त में, मलिक मर्दान भट्टी के कुछ दास सारंग खाँ की ओर मिल गये। मुल्तान की शिक़

१ एक पोथी में सम्भल है। सम्भव है यह सोनीपथ हो।

सारंग ख़ाँ के अधिकार-क्षेत्र में आ गयी। रमज़ान ७९९ हि० (मई-जून १३९७ ई०) में सारंग ख़ाँ ने एक बड़ी सेना एकत्र की और सामाना की ओर प्रस्थान किया। सामाना के अमीर ग़ालिब ख़ाँ ने अपने आपको क़िले में सुरक्षित कर लिया और युद्ध प्रारम्भ कर दिया, परन्तु विरोध करने की शक्ति न होने के कारण पराजित होकर वह कुछ अश्वारोहियों तथा पदातियों सहित पानीपत चला गया और तातार ख़ाँ से मिल गया। नुसरत शाह को जब यह सूचना प्राप्त हुई, तो उसने दासों के पदाधिकारी मलिक अल्मास को १० हाथी तथा थोड़ी सी सेना देकर तातार ख़ाँ के पास यह आदेश देते हुये भेजा कि वह सामाना के विरुद्ध कूच करे तथा सारंग ख़ाँ को निर्वासित करके सामाना ग़ालिब ख़ाँ को सौंप दे।

(१६२) १५ मुहर्रम ८०० हि० (८ अक्तूबर १३९७ ई०) को उन दोनों में कोहलह के स्थान पर युद्ध हुआ। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने तातार ख़ाँ को विजय प्रदान की। सारंग ख़ाँ मुल्तान की ओर भाग गया और तातार ख़ाँ ने सारंग ख़ाँ को छिन्न-भिन्न करके सामाना ग़ालिब ख़ाँ को सौंप दिया, और स्वयं राय कमालुद्दीन मईन के साथ तलवन्दी तक सारंग ख़ाँ का पीछा करते हुये गया। अन्त में वह वहाँ से वापस लौट आया।

रबी उल अव्वल ८०० हि० (नवम्बर-दिसम्बर १३९७ ई०) में ख़ुरासान के बादशाह अमीर तैमूर के पोते पीर मुहम्मद ने एक बड़ी सेना सहित सिन्ध नदी पार करके उच्छ के क़िले को घेर लिया। अली मलिक ने, जो सारंग ख़ां की ओर से उच्छ का वाली था, एक मास तक क़िले के भीतर से युद्ध किया। सारंग ख़ां ने अपने नायब मलिक ताजुद्दीन को अन्य अमीरों तथा मलिकों और ४००० अश्वारोहियों की सेना के साथ अली मलिक की सहायतार्थ उच्छ भेजा। मलिक ताजुद्दीन तथा सेना के पहुँचने के समाचार पाकर पीर मुहम्मद ने घेरा उठा लिया और व्यास नदी के तट पर स्थित तरमतमह पर, जहाँ मलिक ताजुद्दीन पड़ाव किये हुये था, आक्रमण कर दिया। सेना वाले असावधान थे। वे सामना न कर सके। कुछ लोगों की वहीं हत्या करदी गई, कुछ लोग नदी में कूद पड़े और डूब कर मछलियों का भोजन बन गये। पराजित होकर मलिक ताजुद्दीन अपने थोड़े से सैनिकों सहित मुल्तान की ओर वापस चला गया। पीर मुहम्मद ने भी वहाँ अपनी सेना सहित उसका पीछा किया। (१६३) सारंग ख़ाँ मैदान में उसका विरोध करने का साहस न देख कर क़िले में शरण लेने पर विवश हो गया। ६ मास तक युद्ध होता रहा। अन्त में, १९ रमज़ान ८०० हि० (५ जून १३९८ ई०) को खाद्य सामग्री समाप्त होने पर सारंग ख़ाँ ने क्षमा-याचना की और पीर मुहम्मद से मिलने गया। पीर मुहम्मद ने ख़ान को उसके परिवार, आश्रितों, सेना तथा नगर के लोगों सहित बन्दी बना लिया। पीर मुहम्मद ने मुल्तान पर अधिकार जमा लिया। वहीं उसने अपनी सेना के शिविर लगवा दिये।

शव्वाल ८०० हि० (जून-जुलाई १३९८ ई०) में इक़बाल ख़ाँ सुल्तान नासिरुद्दीन से मिल गया और दोनों में एक समझौता शेख़ुल मशायख़ क़ुतुबुलहक़ वश्शरा वद्दीन के मक़बरे में हुआ। वह सुल्तान नासिरुद्दीन को हाथियों तथा सेना सहित जहाँ-पनाह के हिसार में ले गया। सुल्तान महमूद, मुक़र्रब ख़ाँ तथा बहादुर नाहिर प्राचीन देहली के दुर्ग में बन्द होकर बैठ गये। तीसरे दिन इक़बाल ख़ाँ ने विश्वासघात किया। सुल्तान नासिरुद्दीन असावधान था। इस प्रकार अचानक आक्रमण के कारण उसने जहाँ-पनाह को अपने हाथियों तथा छोटे से दल सहित छोड़ दिया। इक़बाल ख़ाँ ने उसका पीछा किया और उसने पलायन करने वालों के हाथियों को अपने अधिकार में कर लिया। सुल्तान नासिरुद्दीन ने पराजित होकर फ़ीरोज़ाबाद की ओर प्रस्थान किया और वहाँ से वह अपने सेवकों तथा सम्बन्धियों सहित

यमुना नदी पार करके अपने वज़ीर तातार ख़ाँ के पास चला गया। फ़ीरोज़ाबाद पर इक़बाल ख़ाँ ने अधिकार कर लिया। तदोपरान्त मुक़र्रब ख़ाँ एवं इक़बाल ख़ाँ के बीच दो मास तक नित्य युद्ध होता रहा। अन्त में कुछ अमीरों तथा मलिकों ने मध्यस्थ बन कर दोनों में मैत्री करा दी।

(१६४) मुक़र्रब ख़ाँ ने सुल्तान महमूद के साथ जहाँ-पनाह में प्रवेश किया। इक़बाल ख़ाँ भी सीरी में ही था। अकस्मात्, इक़बाल ने अपने आदमियों को साथ लेकर मुक़र्रब ख़ाँ के मकान का घेरा डाल दिया और उसे शरण देकर उसकी हत्या करदी, यद्यपि उसने सुल्तान महमूद को कोई हानि न पहुँचाई, किन्तु राज्य का समस्त प्रबन्ध उसने अपने अधिकार में कर लिया और सुल्तान को कठपुतली मात्र रखा।

ज़ीक़ाद ८०० हि० (जुलाई-अगस्त १३९८ ई०) में इक़बाल ने तातार ख़ाँ के विरुद्ध पानीपत की ओर कूच किया। जब तातार ख़ाँ को यह सूचना मिली तो उसने अपना सामान तथा हाथी पानीपत के क़िले में छोड़ दिये और स्वयं भारी सेना लेकर देहली की ओर प्रस्थान किया। इक़बाल ने पानीपत को घेर लिया और उसे २, ३ दिन में विजय कर लिया। अन्त में तातार के सामान, हाथी तथा घोड़ों पर अधिकार जमा लिया। तातार ख़ाँ ने भी देहली के क़िले के विषय में बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु उस पर अधिकार करने में असफल हुआ। इसी बीच में पानीपत के समाचार प्राप्त हुये किन्तु पानीपत को विजय करने का उसे साहस न हो सका। विवश होकर वह अपनी सेना सहित गुजरात में अपने पिता के पास चला गया। इक़बाल ख़ाँ विजयी होकर हाथियों, घोड़ों तथा युद्ध के लूट के सामान को लेकर देहली वापस हुआ। तातार ख़ाँ के एक सम्बन्धी मलिक नसीरुलमुल्क को उसे (इक़बाल ख़ाँ को) सहयोग प्रदान करने तथा पानीपत के क़िले पर चढ़ाई करने के कारण आदिल ख़ाँ की (१६५) उपाधि प्रदान की गई और इसके अतिरिक्त दोआब में सामाना की अक़्ता भी उसे प्रदान करादी गई। इक़बाल ख़ाँ राज्य के कार्यों को संचालित करने में संलग्न हो गया।

सफ़र ८०१ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १३९८ ई०) में यह समाचार प्रसारित हुआ कि ख़ुरासान के बादशाह अमीर तैमूर ने तलम्बा पर आक्रमण करने के पश्चात् मुल्तान में अपनी सेना का पड़ाव किया है तथा सारंग ख़ाँ के उन समस्त सैनिकों को, जो पीर मुहम्मद द्वारा बन्दी बना लिये गये थे, तलवार के घाट उतार दिया है। इस कारण इक़बाल ख़ाँ बड़ी चिन्ता तथा सोच में पड़ गया।

अमीर तैमूर ने भटनीर की ओर प्रस्थान किया और क़िले के राय ज़ुलजी[1] भट्टी को बन्दी बना कर घिरे हुये लोगों की हत्या करदी। वहाँ से वह सामाना की ओर गया जहाँ दीबालपुर, अजोधन तथा सरसुती के उन निवासियों में से, जो आक्रमणकारी के भय से शहर देहली की ओर भागे जा रहे थे, कुछ बन्दी बना लिए गये और बहुत से लोगों की हत्या कर दी गई। विजेता ने तब यमुना नदी पार की और दोआब में प्रवेश किया जहाँ के अधिकांश भाग उसने नष्ट कर दिये। वह नमोली[2] में रुका और उसने उन समस्त बन्दियों की हत्या करादी जो सिन्ध तथा गंगा के मध्य (भाग) में पकड़े गये थे और जिनकी संख्या लगभग ५०,००० थी। नगर तथा ग्रामों के निवासी हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही आतंकित होकर भाग खड़े हुये। कुछ तो पर्वतों में, कुछ मरुस्थल में, कुछ नदियों की ओर और कुछ पुनः देहली के दुर्ग में प्रविष्ट हो गये। जमादी उल अव्वल ८०१ हि० (जनवरी-फ़रवरी १३९९ ई०) (१६६) में तैमूर ने यमुना नदी पार की और फ़ीरोज़ाबाद में उतरा। अगले दिन हौज़े ख़ास पर

१ एक पोथी में ज़ुलजीन।
२ ज़फ़र नामे में लोनी।

शिविर लगवाये। इक़बाल सेना तथा अपने हाथियों सहित मैदान में निकला और तैमूर से उसने युद्ध किया। पहले ही आक्रमण में खान पराजित हुआ। उसके कुछ हाथी अमीर तैमूर के सैनिकों के हाथ लगे। शेष हाथियों को लेकर सहस्रों कठिनाइयों को सहते हुये शहर (देहली) को वापस हुआ। पीछे हटते समय, नगर के अधिकांश निवासी तथा सेना वाले पद-दलित हो गये और मृतकों के ढेर के ढेर लग गये। रात्रि में इक़बाल ख़ाँ तथा सुल्तान महमूद अपने परिवार को छोड़ कर शहर(देहली) से बाहर निकले। सुल्तान महमूद ने गुजरात का मार्ग पकड़ा और इक़बाल ख़ाँ ने यमुना को पार किया और बरन चला गया।

अगले दिन तैमूर ने शहर (देहली) के निवासियों को सुरक्षा का आश्वासन दिया और उनसे उसके बदले में धन वसूल किया। चौथे दिन उसने आदेश दिया कि शहर (देहली) के समस्त निवासियों को बन्दी बना लिया जाये। उसकी आज्ञा का पालन हुआ।

कुछ दिन पश्चात् मसनदे आला ख़िज़्र ख़ाँ (उसका मक़बरा पवित्र हो), जिसने अमीर तैमूर के भय से मेवात के पर्वतों में शरण ले ली थी, तथा बहादुर नाहिर, मुबारक ख़ाँ एवं ज़ीरक ख़ाँ अमीर तैमूर की भेंट द्वारा सम्मानित हुये परन्तु ख़िज़्र ख़ाँ के अतिरिक्त सब को बन्दी बना लिया गया। तैमूर ने देहली से वापसी पर पहाड़ियों के आँचल में चलना आरम्भ किया। ख़िज़्र ख़ाँ को जाने की अनुमति प्रदान कर दी गई और अमीर तैमूर ने उससे कहा "देहली को विजय करने के पश्चात् मैं उसे तुझे प्रदान करता हूँ।" उसकी वापसी के समय जो लोग पहाड़ियों में रह गये थे वे भी बन्दी बना लिये गये। लाहौर की सीमा पर पहुँचने पर (१६७) अमीर तैमूर ने शेखा खोखर को, जो सारंग ख़ाँ से शत्रुता के कारण सर्वप्रथम तैमूर से मिल गया था और उसका मार्ग-दर्शक बन गया था, उसके परिवार तथा उन लोगों सहित जिन्होंने उसके पास शरण ले ली थी, बन्दी बना लिया। अमीर तैमूर ने ख़िज़्र ख़ाँ को मुल्तान तथा दीबालपुर की अक़्तायें प्रदान करदीं और उसे वहाँ भेज दिया। तत्पश्चात् वह अपनी राजधानी समरक़न्द को काबुल होता हुआ चला गया।

तारीखे मुहम्मदी

[लेखक—मुहम्मद बिहामद खानी]

(ब्रिटिश म्यूज़ियम मैनुसक्रिप्ट, रियू भाग १ पृ० ८४ अ)

सुल्तान फ़ीरोज़

(४०६अ) जब सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह का थट्टा के क्षेत्र में निधन हो गया, तो इस कारण कि उसके कोई पुत्र न था जो राज्य का उत्तराधिकारी होता, अमीरों ने आवश्यकतानुसार सुल्तानुल आज़म फ़ीरोज़ शाह को शुभ नक्षत्र में २४ मुहर्रम ७५२ हि० को सिंहासनारूढ़ किया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के निधन के कारण जो विभिन्न प्रकार के उपद्रव उठ खड़े हुये थे, वे शान्त हो गये और इस्लामी सेनाओं ने थट्टा से राजधानी की ओर प्रस्थान किया। अल्तून बहादुर, जिसे अमीर क़रग़न ने सुल्तान की सहायतार्थ भेजा था, अपने प्रदेश को लौट गया। सुल्तानुल आज़म फ़ीरोज़ शाह ने बड़े बड़े मलिकों तथा प्रतिष्ठित मशायख (सन्तों) अर्थात् मख़दूम ज़ादये अब्बासी, शेखुश् शयूख मिस्री तथा शेखुल इस्लाम शेख नसीरुद्दीन महमूद अवधी के साथ राजधानी की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में बादशाह ने समस्त प्रदेशों तथा क़स्बों के आलिमों, सैयिदों, सूफ़ियों (सन्तों) तथा क़ाज़ियों को इनाम एवं खिलअत (४०६ब) प्रदान किये और उनके वज़ीफ़ों (वृत्ति) तथा इदरारों में वृद्धि कर दी।

जब शाही पताकायें उच्छ पहुँचीं तो देहली से आने वालों से प्रमाणित रूप से ज्ञात हो गया कि ख्वाजये जहाँ अहमद अयाज़ ने कुछ प्रतिष्ठित अमीरों को मिलाकर देहली में विद्रोह कर दिया है और एक व्यक्ति को सुल्तान मुहम्मद का पुत्र बताकर सिंहासनारूढ़ कर दिया है। जब यह समाचार सुल्तान के शुभ कानों तक पहुँचे तो उसने ईश्वर पर आश्रित होकर निरन्तर प्रस्थान करना प्रारम्भ किया। जब शाही विजयी सेनायें सरसुती के निकट पहुँचीं, मलिक मक़बूल क़िवामुलमुल्क नायब वज़ीर कुछ अन्य अमीरों को लेकर खुल्लम खुल्ला देहली के बाहर निकला और सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से मिल गया। सुल्तान ने उसे बहुमूल्य खिलअत तथा खाने जहाँ की उपाधि प्रदान की। तत्पश्चात् शेखज़ादा बिस्तामी, मलिक नत्थू खास हाजिब,.........सुल्तान से मिले। जब शाही पताकायें देहली के समीप पहुँचीं, ख्वाजये जहाँ अयाज़, जो अपनी योग्यता तथा बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था, विवश होकर क़िले के बाहर निकला और उसने बड़ी नम्रता से उसकी चौखट का चुम्बन किया और समस्त धन सम्पत्ति, (४०७ अ) हाथी, फ़र्श आदि दरबार में प्रस्तुत किये। वह एक शुभ नक्षत्र में देहली नगर में पहुँचा और राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। अपराधियों को क्षमा कर दिया। कवि मुतहर ने इस बादशाह की प्रशंसा में एक सविस्तार क़सीदा लिखा और उसमें सिंहासनारोहण के समय से शाही पताकाओं के राजधानी पहुँचने तक की बड़े विस्तार से चर्चा की।.........

(४०८ अ) इस बादशाह के राज्यकाल में बहुत सी बुरी प्रथाओं का निराकरण हुआ और जिन पर अत्याचार हुये थे उनका उपकार हुआ। क्योंकि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के राज्य के अंत में बंगाल देहली के अमीरों के हाथ से निकल गया था; अतः सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उसे पुनः अपने अधिकार में करने के लिये एक बहुत बड़ी सेना लेकर ७५४ हि० (१३५३ ई०) में बंगाल की ओर प्रस्थान किया। उस समय सुल्तान शम्सुद्दीन इलयास

शाह बंगाल का शासक था। जब विजयी सेनायें सरयू तट पर पहुँचीं तो गोरखपुर के राय ने, जो उस प्रदेश का प्रतिष्ठित राय था, दो हाथी तथा अत्यधिक धन सम्पत्ति लेकर सुल्तान के समक्ष धर्ती-चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। दूसरे दिन विजयी सेनाओं ने सरयू नदी पार की और निरन्तर कूच करती हुई कोसी नदी के तट पर पहुँचीं। उस नदी को पार करके सेना ने शीघ्रातिशीघ्र लखनौती की ओर प्रस्थान किया। जब विजयी सेनायें बन्दा के क्षेत्र में पहुँचीं तो सुल्तान शम्सुद्दीन इलयास ने बिना युद्ध के बन्दा नगर को छोड़कर एकदला में, जो बंगाल का सबसे दृढ़ क़िला है, शरण लेली।

(४०८ ब) दूसरे दिन सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने सेना सहित उस नदी के तट पर जो एकदला के समक्ष बहती है पड़ाव किया और वह नदी पार करने की तैयारियाँ करने लगा। जब विजयी सेनायें उस स्थान पर कुछ दिन ठहर गईं तो मनुष्यों की अधिकता तथा पशुओं की भीड़ से वायु में दुर्गन्ध फैल गई। सुल्तान ने वापसी का आदेश दे दिया। जब सेना तैयार होकर प्रस्थान करने लगी तो सुल्तान शम्सुद्दीन इलयास को भ्रम हुआ कि विजयी सेनायें पराजित होकर वापस हो रही हैं। वह समस्त हाथियों तथा सवारों को लेकर क़िले के बाहर निकला और युद्ध करने लगा। जब फ़ीरोज़ शाह की विजयी सेनाओं ने आक्रमण किया तो सुल्तान शम्सुद्दीन इलयास युद्ध की शक्ति न पाकर भाग खड़ा हुआ और पुन: एकदला के क़िले में घुस गया। बंगाल के शासक के तीन चार हज़ार पदाति तथा अश्वारोही युद्ध में मारे गये। उसके ४५ हाथी तथा समस्त हथियार छीन लिये गये। एकदला की यह दशा हो गई कि इस्लामी सेनायें (सुबिधा से) विजय प्राप्त कर लेतीं किन्तु इस्लाम के विचार से समय दिया गया। जब सुल्तान शम्सुद्दीन इलयास को अपनी कमी तथा परेशानी ज्ञात हो गई तो उसने आलिमों तथा सन्तों को बीच में डाल कर लगभग ६० हाथी तथा अन्य उपहार सुल्तान की सेवा में (४०९ अ) भेजे और संधि करनी चाही। सुल्तान सन्धि के लिये तैयार हो गया और उसने उन अपराधियों को क्षमा कर दिया। सुल्तान ने शम्सुद्दीन इलयास के लिये अत्यधिक इनाम तथा खिलअतें एकदला में भेजीं और स्वयं विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली लौट आया।

जब वह देहली के समीप पहुँचा, आज़म हुमायूँ ख़ाने जहाँ मलिक मक़बूल सुल्तानी दस्तूरे ममालिक तथा क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात सद्रे सुदूरे जहाँ, सैयिद जलालुल हक़ वश्शरा वद्दीन तथा अन्य प्रतिष्ठित आलिमों एवं मलिकों ने सुल्तान का स्वागत किया और हाथ चूमने के सम्मान से सम्मानित हुये। शाही पताकायें १२ शाबान ७५५ हि० (१ सितम्बर १३५४ ई०) को देहली पहुँचीं। सुल्तान ने बंगाल के युद्ध की लूट की सामग्री द्वारा आलिमों तथा मलिकों को लाभ प्रदान किया। शहर में उसके लौटने की खुशी मनाई गई। लोगों ने मुतहर कवि के इन छन्दों द्वारा इस हर्ष के प्रति शुभ कामनायें प्रकट कीं।.........

(४०९ ब) तारीखे फ़ीरोज़शाही के संकलनकर्त्ता ज़ियाउद्दीन बरनी ने सुल्तानुल आज़म फ़ीरोज़ के राज्यकाल के चार वर्ष ७५२ हि० (१३५१ ई०) से ७५५ हि० (१३५४ ई०), तक का विवरण अपने इतिहास में सविस्तार लिखा है। इसका उल्लेख इस तारीखे मुहम्मदी में किया गया और अब उसका तथा उसकी सन्तान का शेष हाल विश्वस्त सूत्रों एवं सच्ची घटनाओं का उल्लेख करने वालों के विवरण के आधार पर किया जायगा।

जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बंगाल से लौटा और बिहार के क्षेत्र में उतरा तो वहां से उसने एक शुभ नक्षत्र में जाजनगर की ओर प्रस्थान किया और निरंतर कूच करता हुआ भक्कर के क़िले के नीचे, जो जाजनगर का एक बहुत बड़ा नगर है, पहुँचा और उस दृढ़ क़िले (४१० अ) पर अधिकार जमा लिया तथा लूट मार प्रारम्भ कर दी। भक्कर के राय ने जहाज़ पर बैठ कर समुद्र में शरण ले ली। सुल्तान ने एक बहुत बड़ी सेना लेकर समुद्र-तट पर

पड़ाव डाल दिये। दुष्ट राय ने इस्लामी सेनाओं की शक्ति देखकर विवश होकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। कुछ हाथी तथा उत्तम प्रकार के जवाहरात भेज कर क्षमा तथा संधि की याचना की। सुल्तान ने उन्हें क्षमा कर दिया। सुल्तान ने अपनी स्वाभाविक दयालुता के कारण उसे क्षमा कर दिया और विजय तथा सफलता पाकर खुश-खुश वापस हो गया। मार्ग में कुछ जंगली हाथियों का शिकार हुआ।

देहली पहुँचने के कुछ समय उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने एक शुभ नक्षत्र में नगर कोट के क़िले की ओर, जो सिवालिक का बहुत बड़ा क़िला है, प्रस्थान किया और निरन्तर कूच करता हुआ उस नगर की ओर रवाना हुआ और दुर्गम मार्ग को कुशलतापूर्वक उसने पार कर लिया। जब विजयी सेनायें नगरकोट के क़िले के नीचे पहुँचीं तो क़िले को चारों ओर से घेर लिया गया। काफ़िरों तथा दुष्टों ने अपनी दीनता एवं विवशता देख कर अपनी समस्त धन (४१० ब) सम्पत्ति सुल्तान की सेवा में भेज कर क्षमा तथा संधि की याचना की। सुल्तान ने अपनी स्वाभाविक दयालुता एवं उदारता के कारण उन्हें क्षमा प्रदान करदी और उन्हें बहुमूल्य ख़िलअ़त प्रदान कर दीं। सुल्तान विजय तथा सफलता प्राप्त करके राजधानी की ओर लौट आया।

तत्पश्चात् सुल्तान ने एक शुभ अवसर पर एक भारी सेना लेकर थट्टा की ओर, जो सिन्ध का एक बहुत बड़ा नगर है, प्रस्थान किया। जब विजयी सेनायें निरन्तर कूच करती हुई उस प्रदेश में पहुँचीं तो आस पास की अधिकाँश विलायतें विध्वंस करदीं और थट्टा से कुछ कोस की दूरी पर पड़ाव किया। थट्टा निवासियों ने पंजाब (पाँच नदियों) के बीच के पुश्ते पर शरण ली। इस्लामी सेना को दीर्घ काल तक उस स्थान पर ठहरना पड़ा। दूरी एवं विलायतों (प्रदेशों) के विध्वंस हो जाने के कारण अनाज तथा अन्य सामग्रियों का मूल्य बहुत बढ़ गया और वे दुष्प्राप्य हो गईं। विवश होकर विजयी सेनाओं को वापस होना पड़ा और वे देहली न गईं और गुजरात में पड़ाव करके तैयारियाँ करने लगीं। वर्षा के उपरान्त विजयी सेनाओं ने एक शुभ नक्षत्र तथा शुभ अवसर पर पुनः थट्टा की ओर प्रस्थान किया और उस प्रदेश के क्षेत्र में निरंतर पड़ाव डाल दिये। इस बार क़िले वाले बड़ी दीन अवस्था को प्राप्त हो गये तथा परेशानी में पड़ गये। वे आलिमों तथा संतों को बीच में डाल कर क्षमा तथा संधि की याचना करने लगे। सुल्तान ने मुहम्मद (४११ अ) साहब के धर्म पर ध्यान देते हुये उन्हें क्षमा कर दिया। उसने मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ बिन (पुत्र) ताजुद्दीन तुर्क को, जो अपनी सत्यता एवं निष्ठा के लिये प्रसिद्ध था, थट्टा में इस आशय से भेजा कि थट्टा के वाली राय जाम तथा उसके भाई बँभनियाँ को सांत्वना देकर दरबार में ले आये। उन्हें अत्यधिक धन-सम्पत्ति तथा ख़िलअ़तें प्रदान की गईं। सिन्ध के वीर अपने सहायकों सहित शाही सवारों के साथ देहली रवाना हो गये। सुल्तान एक शुभ मुहूर्त्त में राजधानी में पहुँचा। आलिमों, सैयिदों, पूज्य व्यक्तियों तथा क़ाज़ियों को अत्यधिक इनाम एवं ख़िलअ़तें प्रदान कीं। उन वीरों को देहली में निवास स्थान प्रदान कर दिया। समस्त सिन्ध में उसके नाम का ख़ुत्बा तथा सिक्का चलने लगा।

उस बादशाह में अत्यधिक गुण तथा उसके बहुत से स्मारक हैं। उसके स्मारकों में भव्य भवन हैं जिनका उसने देहली तथा उसके आसपास निर्माण कराया। फ़ीरोज़ाबाद का कूश्क (महल) उत्कृष्टता एवं ऊँचाई में आकाश के समान है। इसका निर्माण यमुना तट पर हुआ। बड़े-बड़े मलिक तथा प्रतिष्ठित अमीर भी उसी के आसपास निवास करने लगे। (४११ ब) सुल्तान ने अपने शुभ नाम पर उस नगर का नाम फ़ीरोज़ाबाद रक्खा और उसे

अपनी राजधानी बनाया। तत्पश्चात् कूश्के जहाँ (पनाह) का, जो ऊँचाई में आकाश के समान है, निर्माण कराया। उसने मुइज़्ज़ी मीनारे की जो वज्रपात के कारण गिर पड़ा था पुनः मरम्मत कराई और उसे कई गज़ ऊँचा करा दिया। इसी प्रकार उसने समस्त मस्जिदों, मदरसों, पिछले सुल्तानों एवं सूफ़ियों के मक़बरों की जो ध्वस्त हो गये थे, मरम्मत कराई, और उनका निर्माण कराया। उनके लिये रक्षक नियुक्त किये। इसके उपरान्त उसने देहली से कुछ कोस पर एक हिसार (कोट) का निर्माण कराया और उसका नाम अपने शुभ नाम पर फ़ीरोज़ा रक्खा। उस हिसार (कोट) में कई हज़ार सवारों को बसाया। वह नगर तथा हिसार इस समय तक शेष हैं और हिन्दुस्तान के एक बहुत बड़े नगर बन गये हैं।

कुछ समय उपरान्त एक विद्रोह इस प्रकार हो गया। जब मलिक सरूक़ (?) की मृत्यु हो गई तो उसका पुत्र सर्वदा शाहज़ादों के साथ रहने लगा था। वह शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ का, जो सुल्तान का उत्तराधिकारी हो गया था, विश्वासपात्र हो गया। शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ उससे रुष्ट हो गया और उसके केश कटवा डाले। जहता इस कारण भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ और उसने चौहानों के पास पहुँच कर इटावा के क़िले में शरण लेली। सुल्तान ने यह सुन कर एक बहुत बड़ी सेना लेकर चौहानों के विनाश हेतु प्रस्थान करने का संकल्प कर लिया और (४१२ अ) निरन्तर प्रस्थान करता हुआ इटावा के क़िले के निकट पहुँच गया। काफ़िर तथा दुष्ट जिनकी युद्ध सम्बन्धी डींग निकट तथा दूर वालों के कानों तक पहुँच चुकी थी, बिना युद्ध किये, रात्रि के अंधेरे में क़िले से भाग खड़े हुये और उन्होंने पराजय को पर्याप्त समझा। मलिक जहता ने सुल्तान से क्षमा याचना की। इस विजय के ईश्वर की कृपा से प्राप्त होने के कारण सुल्तान ने चौहानों की समस्त विलायत में क़ामत एवं अज़ान का आदेश दे दिया। मन्दिरों के स्थान पर अल्लाह की एबादत के लिये मस्जिदें निर्मित कराईं। इटावा से वह आँजक की ओर पहुँचा और उस स्थान पर एक शहर-पनाह तथा एक दृढ़ क़िला बनवाया। उसका नाम तुग़लुक़पुर रक्खा। मलिक मुहम्मद शाह अफ़ग़ान को वहाँ नियुक्त किया। उरछा, शाहपुर, राठ तथा चन्देरी आदि की सेनायें तुग़लुक़पुर भेजी गईं और सुल्तान स्वयं विजय तथा सफलता प्राप्त करके राजधानी की ओर लौटा। कुछ वर्ष उपरान्त जब इस गुणवान मलिक का निधन हो गया तो तुग़लुक़पुर की अक़्ता उसके पुत्र यलख़ाँ को प्रदान करदी गई। उस समय काफ़िरों के प्रभुत्व के समाचार उस बादशाह के कानों तक पहुँच चुके थे। वह एक शुभ मुहूर्त में उस प्रदेश में युद्ध करने तथा उसे सुव्यवस्थित बनाने के लिये चल खड़ा हुआ। निरन्तर कूच करता हुआ जब वह उस प्रदेश में पहुँचा तो, जो विद्रोही एकत्र हो चुके थे, वे छिन्न (४१२ ब) भिन्न हो गये। सुल्तान ने यमुना तट पर कनाओराँ ग्राम के सामने पड़ाव किया और अपने शुभ नाम पर हिसारे फ़ीरोज़ का निर्माण प्रारम्भ किया। जब हिसार का कार्य पूर्ण हो चुका तो उसने उसे मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ बिन (पुत्र) ताजुद्दीन तुर्क को, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, प्रदान कर दिया। किनार का हिसार (कोट) मलिक हसन मकन को प्रदान कर दिया गया। तुग़लुक़पुर तथा उसके समीप के स्थान, उरछा, चन्देरी, राठ, शाहपुर, राबरी (रेवाड़ी ?) को उपर्युक्त फ़ीरोज़पुर का शिक़ निश्चित किया। मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ को विभिन्न प्रकार की शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित करके विशेष ख़िलअत प्रदान की। मलिक मुहम्मद शाह अफ़ग़ान की संतान को फ़ीरोज़पुर की शिक़ की सेना में प्रविष्ट करा दिया और स्वयं विजय तथा सफलता प्राप्त करके राजधानी को लौट गया। मलिक ज़ादा ने शिक़ फ़ीरोज़ा के चारों ओर के स्थान को अपने न्याय द्वारा सुव्यवस्थित कर दिया। वह प्रजा पर किसी प्रकार का अत्याचार न करता था। उसने काफ़िरों के बहुत बड़े-बड़े स्थानों अर्थात् भोगाँव, भतूँद, चन्दवार आदि को इस्लामी क़स्बे बना दिया। वहाँ इस्लामी

नियमों का प्रचार होने लगा। उसने फ़ीरोज़पुर शिक़ के आक्रमण का कार्य अपने ज्येष्ठ पुत्र आज़म हुमायूं महमूद खाँ को प्रदान कर दिया। मुग़लों के आक्रमण के उपरान्त उसने चत्र धारण कर लिया।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ को एक बहुत बड़ी सेना देकर मालवा प्रदेश के निकट के एक स्थान कालरून पर आक्रमण करने के लिये भेजा। (४१३ अ) मलिक सेना तथा अपने सहायकों को लेकर उस क़िले के नीचे पहुँच गया और उसे घेर लिया। उस विलायत तथा उसके आसपास के स्थानों को ध्वंस कर दिया। अन्त में क़िले के अत्यन्त दृढ़ होने के कारण उसने वहाँ वालों से संधि करली और खराज निश्चित करने के उपरान्त प्रसन्नतापूर्वक लौट आया। मौलाना मुतहर ने इस बादशाह की प्रशंसा में एक बड़ा ही उत्तम क़सीदा लिखा है जिसमें उसकी विजयों का सविस्तार उल्लेख किया है।·········

(४१४ अ) जब सुल्तान वृद्ध हो गया तो उसने अपने पोते तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह खाँ को अपना उत्तराधिकारी बनाया और उसे शाही मरातिब (चिह्न) प्रदान किये। वह अपने आप को अन्तःपुर में रखता था और लोगों के समक्ष प्रकट होता रहता था। तुग़लुक़ शाह बड़ा विलासी था और राज्यव्यवस्था के गुणों पर ध्यान न दे सकता था। वज़ीरे मुमलेकत खाने जहाँ जोनाँ बिन (पुत्र) मक़बूल सम्पूर्ण अधिकार-सम्पन्न हो गया। वह शाहज़ादा मुहम्मद खाँ से भयभीत रहता था तथा ईर्ष्या रखता था। यह वज़ीर सर्वदा इस बात का प्रयत्न किया करता था कि शाहज़ादा मुहम्मद खाँ तथा उसके सम्बन्धियों एवं सहायकों का (४१४ ब) विनाश करादे। तत्पश्चात् वह तुग़लुक़ शाह की भी हत्या करके देहली के राज-सिंहासन पर अधिकार जमा लेना चाहता था। उसे सुल्तान फ़ीरोज़ का भी, जिसकी कुछ साँसें शेष थीं, भय न था। वह सर्वदा इस विषय से सम्बन्धित योजनायें बनाया करता था। उसने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह से, जिसकी वृद्धावस्था के कारण बुद्धि ठिकाने न थी, एकान्त में शाहज़ादा मुहम्मद खाँ तथा कुछ बड़े-बड़े अमीरों के बध का फ़रमान प्राप्त कर लिया। वहाँ से वह पूर्ण रूपेण प्रसन्न लौट आया और उसे भ्रम हो गया कि उसकी मनोकामना सिद्ध हो गई। उसे यह ज्ञात न था कि विद्रोह तथा षड्यन्त्र का परिणाम हानि तथा विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। जब उस षड्यन्त्रकारी ने इस षड्यन्त्र का आयोजन किया तो एक अमीर ने शाहज़ादे को इसकी सूचना दे दी, और उसे असावधानी की निद्रा से जगा दिया। शाहज़ादा यह समाचार पाकर दृढ़तापूर्वक अपने स्थान पर डटा रहा। उसने उन सब अमीरों को, जो उसके सहायक थे, अर्थात् मलिक मुहम्मद हाजी आखुर-बक, मलिक समाउद्दीन तथा कमालुद्दीन जो दोनों भाई थे और मलिक उमर अर्ज़े बन्देगान के पुत्र थे, मलिक राजू एवं समस्त बड़े बड़े मलिकों, अधरन तथा सबीर को जो हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित राय थे, आदेश दिया। वे रातों रात शाहज़ादा मुहम्मद खाँ की सेवा (४१५ अ) में उपस्थित हुये। शाहज़ादे ने उनसे परामर्श किया और सबने यह निश्चिय किया कि वे समस्त सेना सहित प्रातःकाल के पूर्व प्रस्थान करें और वज़ीर के द्वार पर पहुँच कर उसके मस्तिष्क से अभिमान दूर करदें। तदनुसार वे रात भर तैयारियाँ करते रहे और सूर्योदय होने के पूर्व समस्त हाथियों एवं सवारों सहित उस हरामखोर के द्वार पर पहुँच गये और युद्ध करने लगे। भाग्य के उससे विमुख हो जाने के कारण उसकी कोई युक्ति सफल न हो सकी। वह तुरन्त अपने घर से, जोकि एक बहुत बड़े दृढ़ क़िले के समान था, अपने दो पुत्रों सहित अपमानित एवं दीन अवस्था में बाहर निकला और भाग कर अपने ससुर तोदी पर कोका के

पास पहुँच गया। शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ ने क्षण भर में उस दुष्ट के घरबार को विध्वंस कर दिया। उनकी समस्त धन सम्पत्ति नष्ट हो गई। कुछ अमीर एक बहुत बड़ी सेना के साथ उस हरामखोर का पीछा करने के लिये इस आशय से भेजे गये कि वे उसका सिर काट लायें और यह विद्रोह शांत हो जाय।

शाहज़ादा मुहम्मद खाँ समस्त प्रतिष्ठित अमीरों के साथ सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की सेवा में उपस्थित हुआ और राजसिंहासन के समक्ष पूरी घटना का उल्लेख किया। सुल्तान ने यह समाचार सुन कर वज़ीर की मृत्यु पर आँसू बहाये और अपने वस्त्र फाड़ डाले। विवश होकर (४१५ ब) उसने शाहज़ादा मुहम्मद खाँ को १० शव्वाल ७८९ हि० (२४ अक्तूबर १३८७ ई०) को अपना वलीअहद नियुक्त किया और स्वयं एकान्तवास ग्रहण कर लिया। तुग़लुक़ शाह को वह अपने साथ रखता था। सुल्तान मुहम्मद के स्वतन्त्र रूप से वलीअहद हो जाने पर समस्त मलिकों एवं अमीरों ने उसकी बैअत कर ली। वह नित्य राजसिंहासन पर आसीन होता और राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी आदेश दिया करता था तथा प्रजा के साथ न्याय किया करता था। राजसिंहासन से उठ कर वह सुल्तान के ख़ास महल को जाया करता था और उसके समक्ष अभिवादन किया करता था।

जब कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये तो नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह फ़ीरोज़ाबाद से बड़े-बड़े सुल्तानों एवं सूफ़ियों के (मक़बरों) के दर्शनार्थ देहली पहुँचा और हज़ार सुतून राजभवन में, जो जहाँपनाह के हिसार के मध्य में है, उतरा। वह वहाँ से नित्य सवार होकर जाता और मशायख़ तथा सुल्तानों के (मक़बरों) के दर्शन करता था। इसी बीच में यह समाचार प्राप्त हुये कि दासों ने तुग़लुक़ शाह से विमुख होकर विद्रोह कर दिया है। अन्य दास जो सुल्तान मुहम्मद शाह के साथ थे भाग कर फ़ीरोज़ाबाद पहुँच गये और एक बहुत बड़ा उपद्रव उठ खड़ा हुआ। सुल्तान मुहम्मद शाह ने यद्यपि उनके पास अनेक क्षमायुक्त पत्र भेजे किन्तु उन लोगों ने उन पर कोई ध्यान न दिया। सुल्तान मुहम्मद (४१६ अ) ने विवश होकर एक बहुत बड़ी सेना लेकर फ़ीरोज़ाबाद की ओर प्रस्थान किया और फ़ीरोज़ाबाद वाले भी युद्ध के लिए तैयार हो गये। जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तो सुल्तान मुहम्मद जोकि अपने समय का बहुत बड़ा योद्धा था, स्वयं युद्ध में सम्मिलित हो गया और प्रथम आक्रमण में समस्त फ़ीरोज़ाबाद वालों को परास्त कर दिया और उन्हें ख़ास शाही महल में ढकेल दिया। जब तुग़लुक़ शाह ने अपने सहायकों तथा विश्वासपात्रों को ख़तरे में देखा तो सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को घोड़े पर सवार करके कूश्के के बाहर निकाला। जैसे ही सुल्तान मुहम्मद की दृष्टि अपने पिता पर पड़ी वह देहली की ओर चल दिया। मुहम्मद शाह के कुछ बड़े-बड़े अमीर शहीद हुये तथा बन्दी बना लिये गये। इस प्रकार मलिक अली शाह उर्फ़ दिलावर खाँ बन्दी बना लिया गया। मलिक असदुद्दीन चेहलगाना शहीद हो गया। सुल्तान मुहम्मद पराजित होकर कुछ सवारों को लेकर देहली के द्वार पर पहुँचा। फ़रहत ख़ाँ, जो सुल्तान फ़ीरोज़ का एक बहुत बड़ा दास था, देहली नगर का शहना था। उसने विरोध किया और द्वार न खोले तथा सुल्तान मुहम्मद को प्रविष्ट न होने दिया। सुल्तान मुहम्मद विवश होकर कुछ सवारों सहित सिवालिक की ओर चल दिया।

(४१६ ब) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने अपने पोते तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह ख़ाँ को पुन: सिंहासनारूढ़ कर दिया। आज़म हुमायूं ख़ाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क को वज़ीर नियुक्त कर दिया और स्वयं एकान्तवास ग्रहण कर लिया। उसका सुल्तान तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल के प्रारम्भ में निधन हो गया। उसने लगभग चालीस वर्ष तक राज्य किया।

उसकी राजधानी—फ़ीरोज़ाबाद।

उसकी संतान—फ़तह खाँ का पिता फ़ीरोज़ खाँ जिसकी मृत्यु सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्यकाल में हो गई।

अबू बक्र शाह, मुहम्मद खाँ अर्थात् नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह शादी खाँ का पिता ज़फ़र खाँ।

उसके मलिक—खाने जहाँ वज़ीर जोनां बिन (पुत्र) बक़लोल सुल्तानी।
निज़ामुलमुल्क नायब वज़ीर।
ज़फ़र खाँ नायब वज़ीर।
इबराहीम खाँ नायब बारबक, सुल्तान का भाई।
मलिक अली, सुल्तान का भागिनेय, राठ का मुक़्ता।
मलिक इस्माइल, मलिक बशीर सुल्तानी-एमादुलमुल्क का भागिनेय।
मलिक मारूफ़, सैयिदुल हुज्जाब।
मलिक क़ुतुबुद्दीन, सुल्तान का भाई।
मलिक याक़ूब मुहम्मद हाजी आखुर बेग।
मलिक सुम्बुल आमदी, राजधानी का कोतवाल।
मलिक सरवर अर्थात् ख्वाजये जहाँ, शहर (देहली) का शहना।
मलिक क़ुतुबुद्दीन, शहनये पील।
मलिक उमर अर्ज़े बन्देगान।
मलिक उमर, शहनये दीवान।
मलिक मुबारक कबीर खलीफ़ी।
(४१७ अ) मलिक रज़ी, आरिज़े ममालिक।

प्रदेशों के अमीर—ज़फ़र खाँ बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ अर्थात् दरया खाँ गुजरात का मुक़्ता।
मलिक जादा फ़ीरोज़ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क फ़ीरोज़पुर की शिक़ का वाली।
तातार खाँ, ज़फ़राबाद का मुक़्ता।
दाऊद खाँ बशीर मलिक बब्बू अफ़ग़ान, बिहार का वाली।
मलिक हुसामुलमुल्क बिन (पुत्र) अवध का मुक़्ता।
मलिक उमर, मुल्तान का मुक़्ता, तत्पश्चात् मलिक।
मरदान दौलतयार, कड़ा का मुक़्ता।
मलिक दौलतयार, क़न्नौज के क़िले का मुक़्ता।
मलिक मुईनुद्दीन, ब्याना का मुक़्ता।
मलिक निज़ामुद्दीन, धार का मुक़्ता।
मलिक मुहम्मद शाह अफ़ग़ान, तुग़लुक़पुर का मुक़्ता।
मलिक दाऊद जुब (हाजिब) उरचा का मुक़्ता, तत्पश्चात् उसका पुत्र सुलेमान खाँ।
मलिक क़ुबूल उर्फ़ नूराबाद आमद बदायूँ।
मलिक क़ुबूल क़ुरान ख्वाँ, सामाना का मुक़्ता।

सुल्तान तुग़लुक़ शाह

इस बादशाह के राज्यकाल में बहुत से शरा के आलिम तथा पूज्य धर्मनिष्ठ व्यक्ति एवं कवि हुये हैं। मौलाना मुतहर सबसे अधिक विश्वासपात्र था और वह प्रत्येक वर्ष उच्च कोटि के क़सीदे तथा कवितायें प्रस्तुत किया करता था और उसे ख़िलअतें तथा इनाम प्रदान हुआ करते थे। इस कवि के बहुत से दीवान इस बादशाह की प्रशंसा से भरे हैं।

(४१७ ब) जब सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह पराजित होकर सिवालिक की ओर भाग गया तो तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह ख़ाँ, जो सुल्तान का उत्तराधिकारी था, पुनः सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने आज़म हुमायूँ मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ ख़ाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क को, जो निष्ठा एवं ईमानदारी में अद्वितीय था, विज़ारत प्रदान की। मलिक रुक्नुद्दीन जुनैदी जो अपने समय का बहुत बड़ा षड्यंत्रकारी तथा उपद्रवी था नायब वज़ीर (४१८ अ) नियुक्त हुआ। उसको निज़ामुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। मलिक इसहाक़ बिन (पुत्र) एमादुलमुल्क बशीर सुल्तानी को एमादुलमुल्क तथा सेना का आरिज़ नियुक्त किया। मुहम्मद शह को बारबक तथा अरसलान शह को आख़ुर बेग नियुक्त किया। वे उसके भाई थे। अपने छोटे भाई फ़ीरोज़ शह को शहनये पील बनाया। तत्पश्चात् कुछ प्रतिष्ठित अमीर एक बहुत बड़ी सेना सहित सुल्तान मुहम्मद का पीछा करने के लिये नियुक्त हुये। उन लोगों ने सिवालिक पर्वत के आँचल तक उनका पीछा किया। सुल्तान मुहम्मद ने एक पर्वत की चोटी पर एक बहुत बड़े दृढ़ स्थान पर शरण लेली। अन्त में देहली की सेनायें उस स्थान के अत्यन्त दृढ़ होने के कारण असफल होकर लौट आईं। प्रदेशों के उपद्रव शांत करने के लिये प्रसिद्ध अमीर नियुक्त किये गये और उन्हें चेतावनी दी गई कि मुहम्मद शाह के दासों को प्रविष्ट न होने दिया जाय।

जब तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह ख़ाँ अपनी युवावस्था में सिंहासनारूढ़ हुआ तो उसके राज्यकाल के प्रारम्भ में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का, जो बड़ा धर्मनिष्ठ बादशाह था, निधन हो गया। तुग़लुक़ शाह ने भोग विलास के द्वार खोल दिये तथा युवावस्था के कारण विनाशक कार्य प्रारम्भ कर दिये। राज्य-व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध की चिन्ता त्याग दी। वज़ीरे (४१८ ब) मुमलेकत आज़म हुमायूँ फ़ीरोज़ ख़ाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क जो, बड़ा योग्य तथा बुद्धिमान् था, राज्य के आदेश अपनी बुद्धि तथा समझ से निकाला करता था और यथा सम्भव राज्य को सुव्यवस्थित रखने का प्रयत्न किया करता था। उसने अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में सरबली ख़ाँ बिन (पुत्र) मुहम्मद शह अफ़ग़ान को, जिसे सुल्तान फ़ीरोज़ ने बन्दी बना दिया था, मुक्त कर दिया। मलिक उमेद शह उर्फ़ दिलावर ख़ाँ को, जो सुल्तान मुहम्मद बिन फ़ीरोज़ शाह की दुर्घटना में बन्दी हुआ था, मुक्त कर दिया। इस कारण समस्त बड़े-बड़े मलिक तथा प्रतिष्ठित अमीर इस अद्वितीय वज़ीर के निष्ठावान् एवं मित्र हो गये।

इसी बीच में इस्लामी सेनाओं की, जो मलिक ज़ादा महमूद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ ख़ाँ के साथ थीं, पराजय के समाचार देहली में प्राप्त हुये। सर्वप्रथम जो सब से बड़ी दुर्घटना एवं विद्रोह राज्य के प्रदेशों में हुआ, यह था। कहा जाता है कि जब सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह पराजित हो गया और उसके सहायक मलिक तथा अमीर छिन्न भिन्न हो गये तो अधरन तथा सबीर, जोकि काफ़िरों तथा दुष्टों के नेता थे, अपने क़स्बे अबजक तथा अतानवा की ओर पहुँच कर विद्रोह एवं उपद्रव मचाने लगे। उन्होंने मासिलपुर ग्राम के निकट अपने शिविर लगा लिये। जब उनके संगठन तथा अनुष्ठान के समाचार मलिक ज़ादा

(४१६ अ) महमूद को प्राप्त हुए तो उसने तुरन्त विजयी सेनाओं सहित मासिलपुर की ओर प्रस्थान किया और उस स्थान को नष्ट तथा ध्वंस कर डाला तथा अपार धन सम्पत्ति प्राप्त की। इस्लामी सेना विजय तथा सफलता प्राप्त करके अपने स्थान को लौट गई। काफ़िरों की सेनाओं ने, जो मासिलपुर के निकट पड़ाव डाले थीं, उनका पीछा किया। मार्ग में इस्लामी सेनाओं से युद्ध हुआ। दुर्भाग्य से इस्लामी सेनायें पराजित हुई। कुछ बड़े-बड़े अमीर तथा प्रतिष्ठित मलिक युद्ध में काफ़िरों के हाथ से शहीद हो गये। मलिक ज़ादा महमूद पराजित होकर मंज क़स्बे में पहुँचा। इसी बीच में जुनैद खाँ तथा कुछ प्रतिष्ठित अमीर-सुलेमान खाँ तथा यल खाँ आदि देहली से अपने बड़े भाई महमूद खाँ से मंज में मिले। मलिक ज़ादा महमूद को विजयी सेनाओं के पहुँचने के कारण प्रसन्नता प्राप्त हुई किन्तु इस्लामी सेना की पराजय तथा प्रतिष्ठित अमीरों के शहीद हो जाने एवं काफ़िरों के प्रभुत्वशाली हो जाने के कारण इस्लामी प्रदेशों तथा क़स्बों में खराबी आ गई थी। सर्वप्रथम मंज क़स्बे की प्रजा मलिक ज़ादा महमूद के साथ फ़ीरोज़ाबाद की ओर रवाना हुई। तत्पश्चात् चन्दवार, भोहगाँव, भतूंद, बारचा, महोनी तथा रतवा आदि इस्लामी अमीरों के अधिकार से निकल गये और दुष्ट तथा (४१६ ब) दुराचारी काफ़िरों के अधिकार में आ गये। मलिक ज़ादा महमूद ने अपने भाई निज़ाम खाँ को अकजल के क़िले में नियुक्त किया। मलिक हसन मकन कनार क़स्बे में रहा। अन्त में जब काफ़िरों का प्रभुत्व बहुत बढ़ गया तो मलिक ज़ादा महमूद अपने समस्त सहायकों सहित शाहपुर प्रदेश की ओर पहुँचा। मलिक हसन मकन भी मलिक ज़ादा महमूद की सवारी के साथ गया। मलिक ज़ादा बहुत समय तक शाहपुर में रहा। कुछ समय उपरान्त मजलिसे आली निज़ाम खाँ ने भी तुग़लुक़पुर का क़िला उर्फ़ अकजल संधि के उपरान्त छोड़ दिया और अपने बड़े भाई मलिक ज़ादा महमूद से मिल गया। यह मलिक ज़ादा शाहपुर के मार्ग से यमुना तट पर पहुँचा और कालपी ग्राम का नाम, जो काफ़िरों तथा दुष्टों का निवास स्थान एवं केन्द्र था, मुहम्मद साहब के नाम पर मुहम्मदाबाद रक्खा। मन्दिरों के स्थान पर अल्लाह की एबादत के लिये मस्जिदों का निर्माण कराया और उस नगर को अपनी राजधानी बनाया।

तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह खाँ युवावस्था के कारण भोग विलास में तल्लीन रहता था और वज़ीरे मुमलेकत आज़म हुमायूँ फ़ीरोज़ खाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन अपनी अत्यधिक योग्यता एवं बुद्धिमत्ता के कारण प्रजा के साथ न्याय किया करता था (४२० अ) किन्तु नायब वज़ीर निज़ामुलमुल्क जुनैदी ने बड़े बड़े अमीरों को गुप्त रूप से अपने साथ मिला लिया और देहली के राजसिंहासन पर अधिकार जमाने की इच्छा करने लगा। इस प्रकार संगठित होकर उस दुष्ट ने शुक्रवार सफ़र मास में विद्रोह कर दिया। उन लोगों ने मलिक मुबारक कबीर खलीफ़ती की हत्या करदी। तत्पश्चात् सुल्तान के कूश्के खास (ख़ास महल) में प्रविष्ट हो गया। अन्त में उन हरामखोरों तथा दुष्टों ने सुल्तान तुग़लुक़ शाह तथा आजम हुमायूँ फ़ीरोज़ खाँ वज़ीर और कुछ बड़े-बड़े अमीरों की हत्या करदी। इसके उपरान्त आज़म हुमायूं फ़ीरोज खाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क की उपाधि खान शहीद हो गई और इस इतिहास की रचना के समय तक चारों ओर के लोग इस गुणवान वज़ीर को इसी उपाधि से पुकारते हैं। हरामखोरों ने सुल्तान, वज़ीर तथा कुछ बड़े-बड़े अमीरों की (४२० ब) हत्या के उपरान्त निज़ामुलमुल्क रुक्नुद्दीन जुनैदी की, जो राजसिंहासन का आकांक्षी था, हत्या करदी और अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ बिन (पुत्र) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को सिंहासनारूढ़ कर दिया।

तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह खाँ की राजधानी—फ़ीरोज़ाबाद।

उसकी राजधानी के मलिक—आज़म हुमायूं फ़ीरोज़ खाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क वज़ीरे ममालिक।
निज़ामुलमुल्क रुक्नुद्दीन जुनैदी, नायब वज़ीर।
मुहम्मद शाह, सुल्तान का भाई, बारबक।
ग़ैरत खाँ बिन (पुत्र) मलिक इबराहीम, नायब बारबक।
अरसलान शाह, सुल्तान का भाई, आख़ुरबक।

राज्य की अन्य दिशाओं के अमीर—मलिक ज़ादा महमूद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ खाँ, वज़ीर, फ़ीरोज़पुर की शिक़ का वाली।
रास्ती खाँ निज़ाम मुफ़र्रह, गुजरात का मुक़्ता।
मलिक सुलेमान बिन (पुत्र) ख़िज़्र खाँ, मुलतान का शासक।
ग़ालिब खाँ, सामाना का मुक़्ता।

सुल्तान अबू बक्र शाह बिन ज़फ़र खाँ बिन फ़ीरोज़ खाँ।

(४२१ अ) सुल्तान तुग़लुक़ शाह बिन फ़तह खाँ के निधन के उपरान्त अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ बड़े-बड़े अमीरों तथा प्रतिष्ठित मलिकों की सहमति से देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। दो प्रतिष्ठित दास ज़फ़र खाँ अर्थात् मलिक बहरी एवं मलिक शाहीन राज्य के कार्यों के अधिकारी बन बैठे और विज़ारत का पद एवं एमादुलमुल्की उनके अधिकार में आगई। यद्यपि वे राज्यव्यवस्था को ठीक करने का बड़ा प्रयत्न करते किन्तु इससे कुछ लाभ न होता। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के निधन के उपरान्त राज्य-व्यवस्था में विघ्न पड़ना प्रारम्भ हो गया तथा विभिन्न प्रकार के विद्रोह उठने शुरू हो गये। सुल्तान अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ युवावस्था की मस्ती के कारण भोग विलास में ग्रस्त रहने लगा। स्वतन्त्र मलिकों तथा फ़ीरोज़ शाह के तुर्क अमीरों ने राज्यव्यवस्था पर अधिकार जमा लिया। वे लोग भी सुल्तान का अनुकरण करते हुये भोग विलास में तल्लीन रहने लगे।

इसी बीच में देहली में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि सुल्तान नासिरुद्दुनिया वद्दीन (४२१ ब) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह ने एक असंख्य सेना सहित सिवालिक से देहली की ओर प्रस्थान कर दिया है और राजसिंहासन पर अधिकार जमाने तथा अबू बक्र शाह के विनाश हेतु वह निरन्तर कूच करता हुआ चला आ रहा है। अबू बक्र शाह के सहायकों तथा सम्बन्धियों ने भी यह सुनकर युद्ध की तैयारी प्रारम्भ करदी। जब सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह की विजयी पताकाओं ने देहली के उपांत पर छाया डाली तो अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ भी एक बहुत बड़ी सेना तथा हाथियों को लेकर कूश्क[1] फ़ीरोज़ाबाद के बाहर निकला और आगे बढ़कर अपने चाचा सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह से युद्ध करने लगा। दोनों ओर के प्रतिष्ठित पहलवान तथा योद्धा तलवारें निकाल कर एक दूसरे से युद्ध करने लगे। देर तक घोर युद्ध होता रहा। यद्यपि सुल्तान मुहम्मद फ़ीरोज़ शाह असंख्य सेना लाया था, किन्तु अबू बक्र शाह के योद्धाओं एवं हाथियों की अधिकता के कारण पराजित हो गया और उसके बहुत से अश्वारोही तथा पदाति नष्ट हो गये। उसने गंगा तट पर जतेसर प्रदेश में पड़ाव किया। अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ पुनः भोग विलास में ग्रस्त हो गया। तत्पश्चात् अधिकांश बड़े-बड़े अमीर जो नीचे की अक़्ताओं के अधिकारी थे, उदाहरणार्थ आज़म हुमायूँ ख़्वाजये जहाँ सरवर सुल्तानी, सैफ़

---

१ महल।

खाँ बिन (पुत्र) हुसामुलमुल्क, मलिक मसऊद बिन (पुत्र) मलिक मरदान, मलिक बुध बिन (पुत्र) मुज़फ़्फ़र शाह मलिक बिन (पुत्र) दौलतयार का भाई, सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (४२२ अ) फ़ीरोज़ शाह से मिल गये। वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ तथा मलिक अमेद शाह उर्फ़ दिलावर खाँ एवं समस्त सहायक विश्वासपात्र बादशाह के साथ थे।

जब सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह ने अत्यधिक सेना एकत्र करली तो उसकी शक्ति के समाचार राज्य के चारों ओर फैल गये। सुल्तान अबू बक्र शाह ने अपनी समस्त सेना, हाथियों तथा सहायकों सहित देहली से सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह से युद्ध करने के लिये जतेसर की ओर प्रस्थान किया और देहली से कुछ कोस दूर पड़ाव किया। जब अबू बक्र शाह के प्रस्थान के समाचार सुल्तान मुहम्मद को प्राप्त हुये तो उसने बड़े-बड़े अमीरों के परामर्श से यह उचित समझा कि कई हज़ार वीर सवार देहली की ओर भेज दे। यदि शहर वाले उसका साथ दें तो बड़ा ही उचित है अन्यथा युद्ध करके हिसार (कोट) पर अधिकार जमा लिया जाय। यह निश्चय करके वह कई हज़ार सवार लेकर अँधेरी रात्रि में शीघ्रातिशीघ्र देहली की ओर रवाना हुआ और रातोंरात अबू बक्र शाह के शिविर को बाईं ओर छोड़ता हुआ, उसने कींचा घाट पर यमुना नदी पार करली। प्रातःकाल के पूर्व देहली के निकट पहुँच कर बरन द्वार में आग लगा दी और उसे जला डाला। जब सद्रों तथा शहर (देहली) के प्रतिष्ठित लोगों को सुल्तान मुहम्मद के आगमन की प्रमाणिक सूचना प्राप्त हो गई तो वे बड़े उत्साह से उसके स्वागतार्थ गये। जब सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह विजय तथा सफलता प्राप्त करके कूश्के हज़ार सुतून में पहुँचा तो दो प्रतिष्ठित (४२२ ब) अमीर सैफ़ खाँ एवं दिलावर खाँ बरन द्वार पर इस आशय से छोड़ दिये कि वे अग्नि द्वारा ध्वंस द्वार का पुनः निर्माण करा दें। सुल्तान अबू बक्र शाह यह समाचार पाकर देहली की ओर सेना ले गया और बरन द्वार में, जो पूर्ण न हो सका था, प्रविष्ट हो गया। सैफ़ खाँ तथा दिलावर खाँ जो द्वार के रक्षक थे, मुक़ाबला न कर सके। सैफ़ खाँ बाहर ही से अवध की ओर चल दिया और दिलावर खाँ अबू बक्र शाह की सेनाओं से युद्ध करता हुआ बाज़ार से होता हुआ सुल्तान के द्वार के समक्ष पहुँचा और एक विश्वासपात्र को भीतर भेज कर सुल्तान मुहम्मद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह को यह समाचार पहुँचाये। सुल्तान जो अपने समय का बहुत बड़ा पहलवान था घोड़े पर सवार हुआ और अपने कुछ विश्वासपात्रों सहित बाहर निकल कर जतेसर की ओर चल दिया। अबू बक्र शाह फिर से सिंहासनारूढ़ हुआ। इसके उपरान्त यद्यपि समस्त बड़े-बड़े अमीर पुनः उससे मिल गये किन्तु कई बार निरन्तर पराजित होने के कारण उसने देहली के राजसिंहासन का विचार त्याग दिया और निराश हो गया तथा समरक़न्द जाकर अमीर तिमुर से सहायता माँगने का संकल्प कर लिया। प्रत्येक प्रतिष्ठित अमीर तथा मलिक को उसकी अक़्ता की ओर विदा कर दिया और आज़म हुमायूं ख्वाजये (४२३ अ) जहाँ की उपाधि सुल्तानुश्शर्क़ निश्चित की। अपने पुत्र हुमायूं खाँ को शिक्षा के लिए उसके पास छोड़ दिया और स्वयं समरक़न्द की ओर रवाना हो गया।

जब वह दोआब में पहुँचा तो उस स्थान से वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ को विदा करना और स्वयं आगे बढ़ना निश्चय किया किन्तु उसे यह शुभ समाचार प्राप्त हुये कि स्वतन्त्र मलिकों तथा तुर्क अमीरों ने देहली में विद्रोह कर दिया और मलिक शाहीन जमालुलमुल्क के घर को घेर लिया और उसकी हत्या कर देने का प्रयत्न करने लगे थे। मलिक शाहीन कुछ सवारों सहित भाग गया। जब मलिक शाहीन के भागने के समाचार सुल्तान अबू बक्र शाह को प्राप्त हुये तो उसे भय हुआ कि कहीं तुग़लुक़ शाह बिन (पुत्र) फ़तह खाँ दुर्घटना में ग्रस्त न हो जाय। इस भय से वह थोड़े से आदमियों को लेकर महल के बाहर निकला और मेवात

की ओर चल दिया और मेवात के वाली (अधिकारी) बहादुर खाँ से मिल गया। देहली का राजसिंहासन रिक्त हो गया। सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह ने यह शुभ समाचार पाकर सहर्ष ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इसी बीच में स्वतन्त्र मलिकों तथा तुर्क अमीरों (४२३ ब) के पत्र सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह को प्राप्त हुये। वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ पत्रों के उत्तर सहित देहली भेजा गया। उसने देहली के समस्त मलिकों तथा अमीरों से प्रतिज्ञा कराई।

सुल्तानुल आज़म नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह।

वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ के देहली पहुँचने पर स्वतन्त्र मलिकों तथा तुर्क अमीरों ने परामर्श करके सुल्तान मुहम्मद बिन फ़ीरोज़ शाह के राज्य के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा की और एक प्रसिद्ध व्यक्ति के हाथ वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ के पास प्रार्थना-पत्र भेजे। इस प्रकार राजधानी के मलिकों की प्रार्थना पर नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह ने देहली की ओर प्रस्थान किया। जब वह यमुना तट पर पहुँचा तो समस्त बड़े-बड़े मलिक एवं (४२४ अ) प्रतिष्ठित अमीर समस्त हाथी घोड़े एवं शहर के द्वारों की कुंजियां लेकर उसके स्वागतार्थ आये और यमुना तट पर सुल्तान से मिले तथा सुल्तान के शुभ चरणों को चूमने का सम्मान प्राप्त किया। सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह विजय तथा सफलता प्राप्त करके कूश्के[1] फ़ीरोज़ाबाद में एक शुभ मुहूर्त में ७९४ हि० (१३९१-९२ ई०) में सिंहासनारूढ़ हुआ। मलिक मुबश्शिर जुब को वज़ीर नियुक्त किया गया। उसकी उपाधि इस्लाम खाँ रक्खी गई। मलिक शेख, जिसकी उपाधि मुजाहिद खाँ है, आरिज़े ममालिक बनाया गया। उसने इस बादशाह को सिंहासनारूढ़ होने की बधाई देते हुये एक उच्च कोटि के क़सीदे की रचना की। उसके कुछ छन्द इस प्रकार हैं।

(४२४ ब) सुल्तानुल आज़म नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह के देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ होने के कारण विभिन्न प्रकार के उपद्रव, जो राज्य में उठ खड़े हुये थे, शान्त हो गये। प्रजा को सुख शांति प्राप्त हो गई। हिन्द तथा सिंध के अधिकांश प्रदेशों में सिक्कों तथा खुत्बे को इस बादशाह के नाम द्वारा शोभा प्राप्त हो गई। समस्त बड़े मलिकों तथा प्रतिष्ठित अमीरों ने, जो राज्य की अक़्ताओं में तथा चारों ओर नियुक्त हुये थे, उस प्रतापी बादशाह की आज्ञाकारिता स्वीकार करली। उस दानी ने अपने राज्य के प्रारम्भ में न्याय तथा दान के द्वार प्रजा पर खोल दिये। आलिमों, सैयिदों, पवित्र लोगों (सन्तों) तथा क़ाज़ियों को अत्यधिक इनाम एवं बहुमूल्य ख़िलअतें प्रदान कीं। मलिकों तथा अमीरों की श्रेणी एवं सम्मान में वृद्धि करदी।

वह तुर्क अमीरों से जो गजशाला तथा अश्वशाला के अधिकारी थे, सर्वदा चिन्तित (४२५ अ) रहता था और गुप्त रूप से उनको हटा देने के विषय में अपने सहायकों तथा विश्वास-पात्रों से परामर्श किया करता था। इस प्रकार वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ तथा समस्त बड़े-बड़े अमीरों के संकेत से वह फ़ीरोज़ाबाद से बड़े-बड़े सुल्तानों एवं धर्मनिष्ठ सूफ़ियों (के मक़बरों) के दर्शन के बहाने से देहली की ओर चल खड़ा हुआ। दर्शन के उपरान्त सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह द्वारा निर्मित कूश्के हज़ार सुतून[2] में ठहरा। रात्रि में वहीं विश्राम किया।

१. महल।

२. हज़ार स्तम्भों वाला महल।

प्रातःकाल उसने दरबार किया और बड़े-बड़े मलिक तथा प्रतिष्ठित अमीर एकत्र हुये। सुल्तान ने भोजन लाने का आदेश दिया। भोजन के उपरान्त समस्त प्रतिष्ठित मलिक एवं अमीर अपने-अपने स्थान पर चले गये और वज़ीरे मुमलेकत आज़म हुमायूँ इस्लाम खाँ राजसिंहासन के समक्ष खड़ा रह गया। सुल्तान ने वज़ीर को आदेश दिया कि इस राजभवन की, जिसका निर्माण उसके पूर्वजों ने कराया था, और जो समय के व्यतीत हो जाने के कारण टूट-फूट गया (४२५ ब) है, मरम्मत कराई जाय जिससे वह संसार में शेष रहे। इस आदेश के मिलते ही वज़ीर ने उस महल की मरम्मत प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार सुल्तान भी कुछ दिनों तक कूश्के हज़ार सुतून में रहा। इस बीच में अधिकांश तुर्क अमीर, जिनके घर फ़ीरोज़ाबाद में थे, चले गये। केवल थोड़े ही से गजशाला एवं अश्वशाला की रक्षा हेतु रह गये। सुल्तान ने अवसर पाकर सम्पूर्ण गजशाले एवं अश्वशाले पर अधिकार जमा लिया। उसने वज़ीरे ममालिक इस्लाम खाँ से पुनः प्रतिज्ञा कराई और तुर्क अमीरों के पास फ़ीरोज़ाबाद में निर्वासन का आदेश भेज दिया। उन्हें तीन दिन तक का समय दिया गया और आदेश हुआ कि तीन दिन के उपरान्त जो तुर्क फ़ीरोज़ाबाद में मिलें उनकी हत्या कर दी जाय। तीन दिन में समस्त फ़ीरोज़शाही दास फ़ीरोज़ाबाद के बाहर निकल गये और उनका संगठन छिन्न-भिन्न हो गया। अधिकांश मेवात में अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह के पास चले गये।

सुल्तानुल आज़म नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह देहली से फ़ीरोज़ाबाद पहुंचा और उसने निश्चिन्त होकर अपने पिता की राजधानी पर अधिकार जमा लिया। देहली का राज्य भी उसे पूर्ण रूप से प्राप्त था किन्तु अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ के पास, जो राज्य का एक उत्तराधिकारी था, तुर्क अमीर बहुत बड़ी संख्या में एकत्र हो (४२६ अ) गये। मेवात के वाली बहादुर खाँ ने अबू बक्र शाह को अपनी शरण में ले लिया और उसके सिर पर चत्र रख दिया। एक बहुत बड़ा विद्रोह उठ खड़ा हुआ। सुल्तान मुहम्मद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह एक शुभ मुहूर्त में बहुत बड़ी सेना लेकर मेवात की ओर अबू बक्र शाह को भगाने तथा बहादुर खाँ के विनाश हेतु निकला और निरन्तर प्रस्थान करता हुआ कोतरा क़िले के क्षेत्र में, जो मेवात का सबसे बड़ा क़िला है, उतर पड़ा और युद्ध की तैयारियाँ करने लगा। बहादुर खाँ, जो अपने समय का बहुत बड़ा योद्धा था, अबू बक्र शाह को चत्र पहना कर[1] सुल्तान के मुक़ाबले में युद्ध कराने के लिये लाया। सुल्तान ने उनसे युद्ध करके उन्हें पहले आक्रमण में ही पराजित कर दिया। अबू बक्र शाह अपने अत्यधिक पदातियों एवं अश्वारोहियों का विनाश कराके कोतरा के क़िले में घुस गया। सुल्तान मुहम्मद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह ने उसका पीछा किया और हाथी एवं सेना कोतरा के क़िले के द्वार पर ले गया और इस दृढ़ क़िले को विजय कर लिया एवं ध्वंस करा दिया। अबू बक्र शाह तथा (४२६ ब) बहादुर खाँ ने सुनाम[2] पर्वत की कन्दराओं में शरण ले ली। सुल्तान ने उस पर्वत की कन्दराओं की ओर प्रस्थान किया और युद्ध तथा रक्तपात किया। बहादुर खाँ ने अपने आप को विनाश के निकट पाकर अबू बक्र शाह को ढाल बना लिया और उसे अत्यधिक उपहार सहित सुल्तान मुहम्मद शाह की सेवा में भेज कर क्षमा याचना की। सुल्तान ने बहादुर खाँ हरामखोर को क्षमा कर दिया और अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ को बन्दी बना दिया। विजय एवं सफलता प्राप्त करने के उपरान्त राजधानी की ओर लौट आया। अबू बक्र शाह की कुछ समय उपरान्त मृत्यु हो गई।

१ चत्र की छाया में करके।

२ पुस्तक में जिबाले शाम खाँ—शाम खाँ का पर्वत—है।

इस विजय के पश्चात् राज्य सुव्यवस्थित हो गया। बड़ी-बड़ी अक़्तायें तथा ऊँचे-ऊँचे पद मुहम्मद शाह के सहायकों तथा विश्वासपात्रों को, जिन्होंने कठिनाई के समय उसकी सहायता की थी, प्राप्त हो गये। ज़फ़राबाद तथा जोनाँपुर की अक़्तायें आज़म हुमायूँ सुल्तानुश्शर्क़ वल ग़र्ब ख्वाजये जहाँ सुल्तानी को प्रदान हुई। गुजरात, वजीहुलमुल्क ज़फ़र ख़ाँ को प्राप्त हुआ। मुल्तान ख़िज्र ख़ाँ बिन (पुत्र) सुलेमान बिन (पुत्र) मरवान (मरदान ?) को प्राप्त हुआ। मालवा की अक़्ता उमेद शाह उर्फ़ दिलावर ख़ाँ को प्राप्त हुई। सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज शाह के उपरान्त ये चार प्रतिष्ठित अमीर, जो उस राज्य के स्तम्भ थे, बादशाही की श्रेणी को प्राप्त हो गये और ख़ुत्बे तथा सिक्के के अधिकारी हो गये।

(४२७ अ) प्रथम सुल्तानुश्शर्क़ ख्वाजये जहाँ सरवर सुल्तानी था जो जोनाँपुर में सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने प्रजा के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार किया और बहुत समय तक राज्य करता रहा। उसके उपरान्त मुबारक शाह, जिसे वह प्रिय पुत्र के समान समझता था, राजसिंहासन पर बैठा। उसने भी प्रजा के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार किया तथा अत्यधिक दान-पुण्य किया, किन्तु उसका राज्य बहुत समय तक स्थापित न रह सका और शीघ्र ही समाप्त हो गया। उसके पश्चात् उसका भाई जिसकी उपाधि मुख़तस ख़ाँ थी सिंहासनारूढ़ हुआ। उसकी उपाधि शम्सुद्दुनिया वद्दीन अबुल फ़तह इबराहीम शाह अस्सुल्तान हुई। इस बादशाह ने प्रजा के साथ न्याय किया और उसके राज्यकाल में बड़े उत्कृष्ट कार्य हुये। लगभग चालीस वर्ष से इस बादशाह के नाम का ख़ुत्बा तथा सिक्का हिन्दुस्तान के समस्त प्रदेशों में चालू हो गया। इस समय ८३९ हि० (१४३५-३६ ई०) में, जोकि इस इतिहास के (४२७ ब) संकलन की तिथि है, उसने बंगाल की ओर प्रस्थान किया है और एकदला का क़िला, जोकि बंगाल का बहुत बड़ा एवं दृढ़ क़िला है, घेरे हुये है। ईश्वर उसे विजय प्रदान करे।

(२) वजीहुलमुल्क ज़फ़र ख़ाँ, जो गुजरात में ख़ुत्बे तथा सिक्के का अधिकारी बना, उसकी उपाधि ज़फ़र ख़ाँ हुई। कुछ समय उपरान्त मुज़फ़्फ़र शाह के जीवनकाल में उसका पुत्र, जिसकी उपाधि तातार ख़ाँ थी, सिंहासनारूढ़ हुआ। उसकी पदवी मुहम्मद शाह हुई किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) मुज़फ़्फ़र शाह की मृत्यु के उपरान्त, सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह ने अपने पोते अहमद शाह बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह को सिंहासनारूढ़ किया और राज्य के समस्त आदेश उसको सौंप दिये। सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह, जोकि बड़ा ही धर्मनिष्ठ बादशाह था, सुल्तान अहमद शाह बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह के राज्यकाल के प्रारम्भ ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। सुल्तान अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह ने समस्त गुजरात एवं समुद्र तट अपने अधिकार में कर लिये। उसके राज्यकाल में बड़े-बड़े कार्य हुये। उसने कई बार मालवा पर चढ़ाई की और सुल्तान होशंग शाह बिन (पुत्र) दिलावर ख़ाँ से घोर युद्ध एवं रक्तपात किया। दोनों ओर के कई हज़ार अश्वारोही तथा पदाति क़त्ल हुये। अन्त में उसे सफलता प्राप्त किये बिना लौटना पड़ा।

सुल्तान होशंग की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र ग़ज़नी ख़ाँ शादियाबाद उर्फ़ मांडू के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ किन्तु शीघ्र ही उसकी भी मृत्यु हो गई। उसकी उपाधि (४२८ अ) ताजुद्दुनिया वद्दीन सुल्तान मुहम्मद शाह हुई। उसके उपरान्त महमूद ख़ाँ बिन (पुत्र) नेमत ख़ाँ वज़ीरे ममालिक शादियाबाद उर्फ़ माँडू का शासक हो गया। उसने अपनी उपाधि अलाउद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह रक्खी। इस समय गुजरात के शासक सुल्तान अहमद बिन मुज़फ़्फ़र शाह[1] ने पुनः मालवा पर चढ़ाई की और शादियाबाद के क्षेत्र में पड़ाव

---

१ सुल्तान अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह।

डाल दिये। वह वहाँ एक वर्ष तथा कुछ मास तक पड़ाव डाले रहा किन्तु क़िले के अत्यन्त दृढ़ होने के कारण उसे असफल होकर लौट जाना पड़ा। इस समय तक अर्थात् ८३६ हि० (१४३५-३६ ई०) में गुजरात का राजमुकुट एवं राजसिंहासन सुल्तान अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह के नाम से सुशोभित है।

(३) खिज्र खाँ बिन (पुत्र) सुलेमान बिन (पुत्र) मरवान सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद बिन फ़ीरोज़ शाह के उपरान्त देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसकी मृत्यु के उपरान्त, मुबारक शाह बिन खिज्र खाँ के पुत्र सिंहासनारूढ़ हुये और कुछ समय राज्य करने के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हो गये। उसके उपरान्त खिज्र खाँ का पोता तथा उसका चाचा मलिक बुद्ध देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसने अपनी उपाधि सुल्तान मुहम्मद रक्खी। वह इस समय ८३६ हि० (१४३५-३६ ई०) तक, जो इस इतिहास के संकलन की तिथि है, देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ है।

(४) मलिक उमेद शाह उर्फ़ दिलावर खाँ ने धार में चत्र ग्रहण किया और समस्त मालवा प्रदेश अपने अधिकार में कर लिया। वह बहुत समय तक काफ़िरों से ईश्वर के लिये युद्ध करता रहा और उसके उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके उपरान्त होशंग बिन (पुत्र) दिलावर खाँ अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ़ हुआ और मालवा के आसपास के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। उसने कहरेला को, जो प्रतिष्ठित काफ़िरों की खान तथा गढ़ था, ध्वंस कर दिया। भोबनगाँव के बाली, रायसेन, कसोधन, काकरून तथा बोयेद को, जो हिन्दुओं के बहुत बड़े-बड़े नगर थे, इस्लाम के खित्ते एवं क़स्बे बना दिये। उसने जाजनगर पर भी चढ़ाई की और उसे ध्वंस कर दिया। वहाँ से लगभग १०० हाथी अपने आतंक से अपने अधिकार में कर लिये। उसने अपने समकालीन बादशाहों से युद्ध किया। किसी स्थान पर उसे विजय हुई और कुछ स्थानों पर वह पराजित हुआ। उसके राज्यकाल में बहुत बड़ी-बड़ी विजयें हुईं। कुछ वर्ष उपरान्त जब उसके गुणवान भाई क़दर खाँ की मृत्यु हो गई तो चन्देरी सुल्तान होशंग के अधीन हो गया। उसने अपनी अन्तिम अवस्था में अपनी उपाधि सुल्तान हुसामुद्दुनिया वद्दीन होशंग शाह रक्खी। बहुत समय तक राज्य करने (४२९ अ) के उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। उसके उपरान्त उसका पुत्र ग़ज़नी खाँ शादियाबाद उर्फ़ माँडू के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसने अपनी उपाधि ताजुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह रक्खी। उसने अपने तीनों भाइयों, उस्मान खाँ, फ़तह खाँ तथा हैबत खाँ की जो मलकये जहाँ के पुत्र थे, हत्या करा दी। उसकी थोड़े ही समय में मृत्यु हो गई। उसके उपरान्त महमूद खाँ बिन (पुत्र) मुग़ीस खाँ शादियाबाद उर्फ़ माँडू का अधिकारी हो गया। उसने अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दुनिया वद्दीन महमूद शाह रक्खी। वह इस समय ८३९ हि० (१४३५-३६ ई०) तक, जो इस इतिहास के संकलन की तिथि है, मालवा का शासक है।………

कहा जाता है कि सुल्तान नासिरुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह अबू बक्र शाह बिन (पुत्र) ज़फ़र खाँ के कार्य से निश्चिन्त होकर तथा अपने सहायकों एवं (४२९ ब) विश्वासपात्रों को बड़ी-बड़ी अक़्तायें प्रदान करने के उपरान्त अन्य कार्यों के सम्पन्न करने में व्यस्त हो गया। एक बहुत बड़ी सेना लेकर अकजल तथा इटावा के काफ़िरों को नष्ट करने का संकल्प कर लिया। अधरन तथा सबीर ने, जो काफ़िरों तथा दुष्टों के नेता थे, अत्यधिक सेना एकत्र करके इस्लाम के खित्तों तथा क़स्बों का विनाश एवं विध्वंस प्रारम्भ कर दिया। बलादराम क़स्बे को ध्वंस कर दिया और वहाँ के समस्त निवासियों की हत्या कर दी तथा

बन्दी बना लिया। जब सुल्तान संजर को ये समाचार प्राप्त हुये तो उसने शीघ्रातिशीघ्र काफ़िरों पर चढ़ाई की और दुष्टों को पराजित कर दिया। शेष इटावा के क़िले में घुस गये। उन्हें घेर लिया गया। क़िले के अत्यन्त दृढ़ होने के कारण इस्लामी सेना को प्रतीक्षा करनी पड़ी। इटावा के क़िले वाले धृष्ट बन गये। इसी युद्ध के बीच में आज़म हुमायूं महमूद खाँ बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ खाँ बिन (पुत्र) मलिक ताजुद्दीन तुर्क मुहम्मदाबाद उर्फ़ कालपी से सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ शाह की सेवा में उपस्थित हुआ। आज़म हुमायूं महमूद खाँ के (४३० अ) आने के समाचार पाकर दुष्ट काफ़िर पदाति एवं अश्वारोही अँधेरी रात्रि में इटावा के क़िले से भाग गये। इस्लामी सेनाओं ने इटावा के क़िले को ध्वंस कर दिया और चौहानों के ऊँचे ऊँचे भवनों का खंडन करा दिया।

आज़म हुमायूँ महमूद खाँ बिन (पुत्र) फ़ीरोज़ खाँ को शाही कृपादृष्टि से सम्मानित किया गया। उसे बहुमूल्य खिलअत तथा महोबा की, जोकि हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा नगर है, अक़्ता प्रदान की गई। समस्त खित्ते तथा क़स्बे जो फ़ीरोज़पुर की शिक़ से सम्बन्धित थे, उसे प्रदान कर दिये गये। सुल्तान आज़म हुमायूँ, महमूद खां को बड़े सम्मान से विदा करके देहली पहुँच गया। शहर में बड़ी खुशी मनाई गई।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने गंगा तट पर जतेसर में अपनी राजधानी बनानी (४३० ब) निश्चय की। इस उद्देश्य से वह देहली से जतेसर पहुँचा और उसे अपनी राजधानी बना लिया। देहली का नायब अमीर (शासक), अपने पुत्र हुमायूं खाँ को नियुक्त कर दिया। वज़ीरे मुमलेकत इस्लाम खाँ को राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी आदेश देने के लिये नियुक्त कर दिया। सुल्तान मुहम्मद बिन फ़ीरोज़ शाह जतेसर में भोग विलास में ग्रस्त हो गया। इसी बीच में वज़ीरे मुमलेकत इस्लाम खाँ के विरोधी कुछ अमीरों ने षड्यंत्र एवं धूर्तता से बादशाह के हृदय को उससे विमुख कर दिया। सुल्तान ने बिना कुछ सोच विचार किये हुये जतेसर से देहली पहुँच कर उस वज़ीर की हत्या करा दी। सुल्तान के इस कार्य को लोगों ने उचित न समझा। उसका भी शीघ्र ही निधन हो गया। इस बादशाह में अनेक गुण थे। इस स्थान पर केवल मुजाहिद खाँ के कुछ छन्दों का उल्लेख किया जायगा जो उसने सुल्तान की प्रशंसा में लिखे थे।.........

(४३१ अ) उसकी राजधानी—फ़ीरोज़ाबाद, तत्पश्चात् जतेसर।

संतान—हुमायूँ खां, महमूद खाँ।

मलिक तथा अमीर—आज़म हुमायूँ इस्लाम खाँ वज़ीर महमूद खाँ बिन फ़ीरोज़ खाँ बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क।

(४३१ ब) सुल्तानुश्शर्क़ ख्वाजये जहाँ सरवर सुल्तानी।
वजीहुलमुल्क ज़फ़र खाँ मुअज़्ज़म।
खिज्र खाँ बिन मलिक सुलेमान बिन मलिक मरदान।
मलिक उमेद शाह उर्फ़ दिलावर खाँ।
सैफ़ खाँ बिन हुसामुलमुल्क।
मलिक मसऊद बिन मलिक मरदान।
मलिक याक़ूब मुहम्मद हाजी सिकन्दर खाँ।
मलिक खुर्रम मनी ख्वास खाँ।
फ़ीरोज़ खाँ बिन अली मलिक।

मलिकुश्शर्क़ मलिक राजू।
शेख मलिक उर्फ़ मुजाहिद खाँ।
मलिक बुद्ध बिन मुज़फ़्फ़र, दौलतयार का भतीजा।
यगाना खाँ बिन मलिक क़बूल।
तातार खाँ बिन वजीहुलमुल्क।
ग़ालिब खाँ बिन मलिक क़बूल क़ुरान ख्वाँ।
दौलत खाँ बिन अहमद खाँ।
आज़म खाँ बिन मलिक ज़हीरुद्दीन लाहौरी।

सुल्तान अलाउद्दुनिया वद्दीन सिकन्दर शाह बिन महमूद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह।

(४३२ अ) सुल्तान मुहम्मद शाह के निधन के उपरान्त उसका पुत्र हुमायूं खाँ देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दुनिया वद्दीन सिकन्दर शाह हुई। वह बड़ा ही सुव्यवस्थापक, वीर, पराक्रमी तथा न्यायकारी था। उसने सिंहासनारूढ़ होते ही प्रजा के साथ न्याय किया और नाना प्रकार के विद्रोह, जो उठ खड़े हुये थे, शान्त हो गये। अपने पिता के समान, लखनौती के शासक सुल्तान ग़यासुद्दुनिया वद्दीन आज़म शाह से प्रेम बनाये रक्खा। दोनों ओर से सर्वदा राजदूत तथा उपहार आया जाया करते थे। संक्षेप में, यह बादशाह बड़ा गुणवान था, किन्तु उसका राज्यकाल अधिक दिनों तक स्थापित न रह सका और उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। उसके उपरान्त उसका भाई महमूद, जिसकी उपाधि ख़ाने ख़ानाँ थी, सिंहासनारूढ़ हुआ।

ग़यासुद्दुनिया वद्दीन महमूद शाह बिन महमूद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह।

(४३२ ब) उसके राज्यकाल में राज्य के उच्च पद उसके प्रतिष्ठित दासों अर्थात् मुक़र्रब खाँ, सआदत खाँ, मल्लू खाँ आदि को प्राप्त हो गये और वे पूर्ण अधिकार-सम्पन्न हो गये। अन्त में, तुर्क अमीरों में विरोध उत्पन्न हो गया। मुक़र्रब खाँ, बहादुर खाँ तथा मल्लू खाँ ने पुराने देहली के हिसार जहाँ पनाह तथा कूश्के सीरीं पर अधिकार प्राप्त कर लिया। सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह फ़ीरोज़ाबाद में रहता था और सआदत खाँ तथा तातार खाँ बिन वजीहुलमुल्क उसके समक्ष समस्त कार्य सम्पन्न करते थे। अन्त में सआदत खाँ तथा तातार खाँ सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह को सेना सहित कूश्के फ़ीरोज़ाबाद के बाहर लाये और मुक़र्रब खाँ, बहादुर खाँ तथा मल्लू खाँ पर आक्रमण करने का उन्होंने संकल्प कर लिया। उन्होंने समस्त सेना एवं हाथियों सहित हौज़े ख़ास पर पड़ाव किया एवं युद्ध में लग (४३३ अ) गये। इसी बीच में सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह, मुक़र्रब खाँ के बहकाने से शाही शिविर के बाहर निकला और गुप्त रूप से मुक़र्रब खाँ से जाकर मिल गया। सुल्तान के पहुँचने पर नगर में खुशी के ढोल बजाये गये, और बहुत से लोग नगर से निकल कर युद्ध करने लगे। सआदत खाँ, तातार खाँ तथा समस्त बड़े-बड़े अमीर जो हौज़े ख़ास पर उतरे हुये थे, समस्त हाथियों एवं सेना को लेकर आगे बढ़े और उन्होंने देहली वालों को हरा दिया। १००० प्यादे तथा सवार मार डाले और विजय एवं सफलता पाकर

कारण मल्लू खाँ के साथ था और कभी उसकी बात का उल्लंघन न करता था। मल्लू खाँ नित्य क़ूश्के सीरी से सुल्तान महमूद के पास आता था और समस्त शिष्टा सम्बन्धी नियमों का ध्यान रखता तथा स्वामि-भक्ति प्रदर्शित करता था।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह को वह सेना सहित इटावा के चौहानों के क़िले पर आक्रमण करने के लिये देहली के बाहर लाया और निरन्तर यात्रा करते हुये उसने उपर्युक्त क़िले के क्षेत्र में पड़ाव डाल दिये। वह क़िले को घेरने ही वाला था कि कुछ दुष्टों के बहकाने से सुल्तान महमूद बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह सेना के शिविर से कुछ वीर सवारों को लेकर शिकार के बहाने से निकल गया और घोड़े भगा कर क़न्नौज के क़िले की ओर पहुँचा। क़न्नौज के क़िले के समस्त प्रतिष्ठित व्यक्तियों, अमीरों, सद्रों एवं बड़े-बड़े आदमियों ने उसका स्वागत किया और उसकी सेवा में प्रविष्ट हो गये और उसे बड़े सम्मान से नगर में ले गये तथा क़ूश्के खास में ठहराया। उससे प्रतिज्ञायें कीं एवं वचनबद्ध हुये। मल्लू खाँ सुल्तान का पीछा करता हुआ एक भारी सेना लेकर क़न्नौज के क़िले के उपान्त में पहुंचा और उस अत्यन्त दृढ़ क़िले को जो हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है अपने अधिकार में कर लिया। क़िले वालों ने भी युद्ध किया। मल्लू खाँ जो अपने समय का बहुत बड़ा पहलवान था दीर्घकाल तक क़िले के नीचे पड़ाव डाले रहा एवं वोर युद्ध करता रहा। अन्त में (४३५ अ) क़िले के अत्यन्त दृढ़ होने के कारण असफल लौट गया।

सुल्तान महमूद क़न्नौज के क़िले में जो कुछ उसे प्राप्त हो जाता उससे संतुष्ट था। इसी बीच में सुल्तान शम्सुद्दुनिया वद्दीन अबुल फ़तह इबराहीम शाह ने, जो जौनाँ के राज्य का अधिकारी था, और जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, क़न्नौज के क़िले पर आक्रमण करने का दृढ़ संकल्प कर लिया और एक बहुत बड़ी सेना लेकर क़िले के नीचे पड़ाव डाल दिया एवं युद्ध करने लगा। क़िले वालों ने इस बार भी सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह का साथ दिया। अन्त में उन लोगों की शक्ति के कारण, सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह ने संधि के लिये अनुमति दे दी और सुल्तान इबराहीम की सेवा में सम्मिलित हो गया। सुल्तान इबराहीम ने उसका बड़ा आदर सम्मान किया और बहुमूल्य खिलअत प्रदान की। जब सुल्तान इबराहीम शाह वापस हुआ तो सुल्तान (महमूद) ने भी उसके साथ प्रस्थान किया किन्तु मार्ग से लौट कर वह पुनः क़न्नौज के क़िले में पहुँच गया। सुल्तान इबराहीम शाह ने, जो धर्मनिष्ठ एवं गुणवान बादशाह था, उसका पुनः पीछा न किया और क़न्नौज का क़िला चरित्रवान बादशाह के पास छोड़ दिया। बादशाह क़न्नौज के क़िले में पहुँच कर भोग विलास में ग्रस्त हो गया। यद्यपि वह देहली के राजसिंहासन से निराश हो गया था, किन्तु फिर भी ईश्वर पर आश्रित था।

(४३५ ब) इसी बीच में उसे यह सुखद समाचार प्राप्त हुये कि मल्लू खाँ, जिसने देहली का राजसिंहासन अपने अधिकार में कर लिया था, खिज्र खाँ बिन (पुत्र) सुलेमान बिन (पुत्र) मरदान से युद्ध करता हुआ मारा गया और देहली के सद्र एवं प्रतिष्ठित लोग उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सुल्तान महमूद यह समाचार पाकर शीघ्रातिशीघ्र देहली की ओर प्रस्थान करने के लिये तैयार हो गया। उसने अपने एक बहुत बड़े अमीर मलिक मुहम्मद तिरमिज़ी को क़न्नौज में अपना नायब बनाकर छोड़ दिया, और स्वयं निरन्तर कूच करता हुआ राजधानी की ओर चल दिया। शहर (देहली) वालों ने उसके आगमन के समाचार पाकर उसका निष्ठापूर्वक स्वागत किया। सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह शुभ मुहूर्त में शहर (देहली) में प्रविष्ट होकर देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। खुत्बे तथा सिक्के

को उसके नाम से शोभा प्राप्त हुई। बड़े-बड़े अमीरों एवं प्रतिष्ठित मलिकों को बहुमूल्य खिलअत प्रदान हुये। उसने आज़म हुमायूं मुहम्मद ख़ाँ बिन फ़ीरोज़ ख़ाँ बिन मलिक (४३६ अ) ताजुद्दीन तुर्क को मजेदुलमुल्क मलिक महमूद बिन मलिक उमर शहनये दीवान के हाथ चत्र, दूरबाश एवं तास भेजे और उसे सुल्तान की उपाधि प्रदान की।

सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह ने अपने पूर्वजों के सिंहासन पर आरूढ़ होने के पश्चात् युवावस्था में कठिनाइयाँ एवं कष्ट सहन करने के कारण भोग विलास प्रारम्भ कर दिया। राज्य-व्यवस्था एवं सेना का प्रबन्ध त्याग दिया। लोगों के साथ न्याय करता और जो कुछ प्राप्त था, उससे सन्तुष्ट था किन्तु इसी बीच में उसका निधन हो गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बिन रजब के वंश से राज्य निकल कर विभिन्न प्रदेशों के मलिकों के अधिकार में चला गया।

अधिकांश आलिमों तथा देहली के प्रतिष्ठित मलिकों ने सुल्तान नासिरुद्दुनिया वद्दीन महमूद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क से, जो मुहम्मदाबाद उर्फ़ कालपी में (४३६ ब) बड़ा शक्तिशाली था, देहली आने की प्रार्थना की। वह मुग़लों की दुर्घटना के उपरान्त सुल्तान हुआ।

ज़फ़र नामा भाग २

[लेखक—शरफ़ुद्दीन अली यज़दी]
(प्रकाशन—कलकत्ता १८८५-८८ ई०)

साहेब क़िरान (अमीर तैमूर) के हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के कारण।

(१४) साहेब क़िरान ने क़ुनदुज़, बक़लान, काबुल, ग़ज़नी तथा क़न्धार एवं उससे सम्बन्धित तथा अधीन स्थान, हिन्दुस्तान की सीमा तक शाहज़ादा पीर मुहम्मद जहाँगीर को प्रदान कर दिये थे। जब यह राज्य शाहज़ादे के अधीन हो गया तो उसने उसे नाना प्रकार के न्याय, तथा परोपकार सम्बन्धी कार्यों द्वारा उन्नति प्रदान करने का प्रयत्न किया। उसके आदेशानुसार चारों ओर से उसके पास सेनायें एकत्र हो गईं और वह दूसरे प्रदेशों की विजय हेतु प्रवृत्त हुआ। अमीर सैफ़ल क़न्धारी, अमीर सुलेमान शाह के चचाज़ाद भाई अमीर क़ुतुबुद्दीन तथा बदख़शाँ के बादशाहों—शाह लश्कर शाह, शाह बहाउद्दीन बहलोल, मुहम्मद दरवेश बरलास क़ेमारी इनाक़, तिमुर ख़्वाजा आक़ बूग़ा सैफ़ल निकोदरी, हसन जानदार, महमूद बरात ख़्वाजा तथा अन्य अमीरों को लेकर उसने सुलेमान पर्वत के ऊग़ानियों पर आक्रमण किया। सिन्ध नदी पार करके उच्छ नगर को युद्ध द्वारा अपने अधिकार में कर लिया। वहां से प्रस्थान करके मुलतान पहुँचा तथा मुलतान नगर को घेर लिया। वहाँ का शासक मल्लू का ज्येष्ठ भ्राता सारंग था। सुल्तान फ़ीरोज शाह की मृत्यु के उपरान्त उसके अमीरों में से उन दो भाइयों को बड़ा प्रभुत्व प्राप्त हो गया था। उन्होंने फ़ीरोज शाह के पौत्र सुल्तान (१५) महमूद को बादशाह बनाकर हिन्दुस्तान का राज्य अपने हाथ में ले लिया था। मल्लू सुल्तान महमूद के साथ देहली में था। सारंग विजयी सेना[1] से नित्य दो बार युद्ध करता था। विजयी सेना की ओर से तिमुर ख़्वाजा आक़ बूग़ा अधिकाँशतः प्रयत्नशील रहता था। जब यह समाचार साहेब क़िरान (तैमूर) को प्राप्त हुये तो उस समय उन्होंने ख़िता की ओर के मार्ग-भ्रष्ट लोगों तथा मूर्ति-पूजकों के विनाश का निश्चय कर लिया था और सेनायें उनके दरबार में एकत्र हो रही थीं।

इससे पूर्व उन्होंने यह सुना था कि यद्यपि हिन्दुस्तान में देहली तथा इसी प्रकार अन्य स्थानों में भी इस्लाम को प्रभुत्व प्राप्त है और तौहीद[2] के वाक्य[3] दिरहम तथा दीनारों पर लिखे जाते हैं[4] किन्तु उसके आसपास के बहुत से प्रदेश अब भी काफ़िरों के अधीन हैं और वहाँ मूर्ति पूजा तथा दुराचार होता है। हिन्दुस्तान का बादशाह उन मार्ग-भ्रष्ट लोगों से थोड़ी सी वस्तु[5] लेकर संतुष्ट है और उन्हें कुफ़्र तथा दुराचार एवं व्यभिचार की अनुमति दे रखी है। इस कारण तैमूर के हृदय में हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का विचार दृढ़ हो गया।

---

१ शाहज़ादा पीर मुहम्मद की सेना।

२ एकेश्वरवाद।

३ अर्थात् इस्लाम का कलमा, लां इलाहा इलल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

४ इस्लामी सिक्के चलते हैं अथवा इस्लामी राज्य है।

५ ख़राज।

साहेब क़िरान का युद्ध के लिए हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

(१७) साहेब क़िरान धर्म-युद्ध हेतु रजब ८०० हि० (मार्च १३९८ ई०) में हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए।

(१८) अमीर जादा मीरान शाह के पुत्र अमीर जादा उमर को समरक़न्द के शासन के लिये नियुक्त कर दिया।

(४६) साहेब क़िरान ने परनियाँ क़बीले के निकट से लौट कर नग़ज़ क़िले के निकट पड़ाव किया। अमीर सुलेमान शाह को सेना देकर अमीर जादा पीर मुहम्मद के पास मुल्तान भेजा। शाह अली फ़राही को ५०० पदातियों सहित नग़ज़ के क़िले में नियुक्त कर दिया और वहाँ से ईश्वर की रक्षा में प्रस्थान करके बानू नामक ग्राम में पड़ाव किया। पीर अली सल्दूज़ तथा अमीर हुसेन क़ूर्ची को एक सेना देकर उस स्थान पर रखा। विजयी सेनायें[१] बानू से प्रस्थान करके शुक्रवार ८ मुहर्रम (२० सितम्बर १३९८ ई०) को सिन्ध नदी के तट पर पहुँचीं। जिस स्थान पर सुल्तान जलालुद्दीन ख्वारज़्म शाह ने चंगेज़ ख़ाँ से भाग कर नदी पार की थी तथा चंगेज़ ख़ाँ ने जिस स्थान पर पड़ाव किया था और नदी न पार करके लौट गया था उसी स्थान पर खिलाफ़त पनाह (तैमूर) के शिविर लगे। शाही आदेश हुआ कि सिन्ध नदी पर पुल तैयार किया जाय। आज्ञाकारियों ने तत्काल अपनी कुशलता का परिचय देते हुये दो दिन में नौकाओं तथा बाँसों का पुल बाँध लिया। इसी बीच में राज्य के विभिन्न भागों से जो राजदूत आये थे उनमें से कुछ को वापस भेज दिया गया, उदाहरणार्थ सैयिद मुहम्मद (४७) मदनी जोकि मक्के तथा मदीने से आया था। कश्मीर के शासक इस्कन्दर शाह (सिकन्दर शाह) का दूत अपने शासक की ओर से दासता एवं निष्ठा का संदेश लाया था। उसे भी सम्मानित करके लौटा दिया गया और आदेश दिया गया कि इस्कन्दर शाह अपनी सेना लेकर दीबालपुर नगर में विजयी सेनाओं के शिविर में उपस्थित हो।

साहेब क़िरान का सिन्ध नदी पार करना

मंगलवार १२ मुहर्रम ८०१ हि० (२४ सितम्बर १३९८ ई०) को विजयी सेनाओं ने सिन्ध नदी पार की और चौलजरौ नामक स्थान पर शाही शिविर लगे। यह स्थान एक बड़ा लम्बा चौड़ा मरुस्थल था और इसके आसपास जल अथवा आबादी का कोई भी चिह्न न था। इतिहास की पुस्तकों में यह चौल (चौले जलाली) के नाम से प्रसिद्ध है। इसका यह कारण है कि सुल्तान जलालुद्दीन ख्वारज़्म शाह ने चंगेज़ ख़ाँ से युद्ध करने में असमर्थ होने के कारण भाग कर नदी पार की थी और इस चौल में प्रविष्ट होकर कष्टों से मुक्ति प्राप्त की थी।

(४८) जब विजयी पताकाओं की छाया उस ओर पड़ी तो जूद पर्वत[२] के मुक़द्दम तथा राय अपने सौभाग्य के कारण बादशाह की आज्ञाकारिता के लिए उपस्थित हुए और उन्होंने मालगुज़ारी तथा उपहार प्रस्तुत किये। इससे कुछ मास पूर्व रुस्तम तग़ी बूग़ा बरलास ने शाही आदेशानुसार सेना लेकर मुल्तान की ओर प्रस्थान किया था और जूद पर्वत में पहुँचकर वहाँ उसने कुछ दिन विश्राम किया था। इन्हीं रायों ने दासता प्रदर्शित करते हुए समस्त प्रबन्ध किये थे और उचित सेवायें की थीं। निःसंदेह बादशाह की कृपादृष्टि उनकी ओर हुई और बादशाह ने उनको सुविधा प्रदान करने का आदेश दिया और वे प्रसन्नतापूर्वक अपने स्थान को लौट गये।

---

१ तैमूर की सेनायें।

२ साल्ट रेंज।

शिहाबुद्दीन मुबारक शाह तमीमी तथा अधीनता के उपरान्त उसका विरोध करना

(४९) शिहाबुद्दीन मुबारक शाह जमद नदी के किनारे के टापू का शासक था और उसके पास अत्यधिक सेना, परिजन तथा धन सम्पत्ति थी। इससे पूर्व जब जब अमीर जादा पीर मुहम्मद जहाँगीर मुल्तान क्षेत्र में पहुँचा था तो शिहाबुद्दीन उसकी अधीनता स्वीकार करते हुए दासता प्रदर्शित करने के लिए उपस्थित हुआ करता था और शाहज़ादे के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ करता था; किन्तु अपने स्थान पर लौट आने के उपरान्त उसका मस्तिष्क अभिमान से भर गया और टापू के दृढ़ होने के कारण उसने विरोध प्रारम्भ कर दिया।

जब साहेब क़िरान ने चौल को पार करके जमद नदी के किनारे शिविर लगाये तो उस अभागे के विरोध का हाल ज्ञात हुआ। उन्होंने बृहस्पतिवार १४ मुहर्रम (२६ सितम्बर) को आदेश दिया कि अमीर शेख़ नूरुद्दीन अपने तूमान[1] लेकर उस टापू की ओर प्रस्थान करे और उस दुष्ट के अभिमान का अंत कर दे। अमीर शेख़ नूरुद्दीन ने आदेशानुसार प्रस्थान किया। जब वह टापू के निकट पहुंचा तो उसने देखा कि शिहाबुद्दीन ने एक गहरी खाई खोद रक्खी (५०) थी और एक विस्तृत गढ़बन्दी करके उसे दृढ़ बना लिया था। उस अत्यन्त दृढ़ स्थान के निकट जल की एक बहुत बड़ी झील थी। विजयी सेनायें बिना ठहरे हुए उस झील में प्रविष्ट हो गईं और घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। रात्रि में शिहाबुद्दीन ने दूसरी ओर से १० हज़ार मनुष्य लेकर छापा मारा और घोर युद्ध हुआ। अमीर शेख़ नूरुद्दीन विजयी सेना द्वारा उन लोगों पर निरन्तर आक्रमण करता था। शिहाबुद्दीन की सेना मछली के समान जल के निकट तड़पती थी। जब उन लोगों ने किसी प्रकार बचने का उपाय न देखा तो बहुत से लोग नदी में कूद पड़े और डूब कर मर गये।

(५१) उस रात्रि में तैमूर के घर के कुछ विशेष लोगों ने अर्थात् मन्सूर बूरज चूरा एवं उसके भाइयों ने वीरता तथा पौरुष से युद्ध किया। उसी समय साहेब क़िरान शीघ्रता से प्रस्थान करके उस टापू के निकट पहुँच गये। शिहाबुद्दीन ने २०० नौकायें एकत्र कर रखी थीं। रात्रि के आक्रमण में पराजय हो जाने तथा भाग्य के पलट जाने के उपरान्त वह उस कष्ट से बाहर निकला और उसी रात्रि में अपने सहायकों सहित नौकाओं पर बैठ कर उच्छ की ओर जोकि हिन्दुस्तान का एक प्रदेश है जमद नदी के नीचे, चल खड़ा हुआ। अमीर शेख़ नूरुद्दीन शाही आदेशानुसार विजयी सेनाओं सहित उनके पीछे पीछे नदी के किनारे युद्ध करता हुआ चल खड़ा हुआ। हिन्दुस्तान के बहुत से लोग मारे गये। जब शेख़ नूरुद्दीन विजयी सेनाओं सहित वापस हुआ तो बादशाह ने उन लोगों के प्रति जिन्होंने रात्रि में बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया था और आहत हुये थे बड़ी कृपादृष्टि प्रदर्शित की और खिलअत तथा पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया।

(५२) जब शिहाबुद्दीन की नौकायें मुल्तान के निकट पहुँचीं तो पीर मुहम्मद तथा उसके अमीरों एवं अमीर सुलेमान शाह तथा उसकी सेनाओं एवं अमीर जादा शाहरुख़ ने जोकि सामाना से आ रहे थे उनका मार्ग रोक लिया और उन अभागों को नदी में बन्दी बनाकर तलवार के घाट उतार दिया। शिहाबुद्दीन अपने परिवार सहित नौका से पानी में कूद पड़ा और अधमरा होकर बड़ा कष्ट भोगने के उपरान्त नदी तट पर पहुँचा।

---

१ १०,००० सैनिकों का दल।

साहेब क़िरान ने अमीर शाह मलिक को इस आशय से भेजा कि वह जंगलों में घुसकर, जहाँ-जहाँ विरोधी भाग कर पहुँचे थे, वहीं उनके अभिमान को नष्ट कर दे। वह आदेशानुसार वीरों सहित जंगलों में घुस गया और उसने बहुतों की हत्या कर दी तथा अत्यधिक लूट की सम्पत्ति, असंख्य दास एवं अनाज से भरी हुई नौकायें प्राप्त कीं और उन्हें लेकर वह शाही शिविर में पहुंचा।

शिहाबुद्दीन से युद्ध के उपरान्त सेनाओं ने वहाँ से प्रस्थान किया और ५-६ दिन तक नदी के तट पर यात्रा करके रविवार २४ मुहर्रम (६, अक्तूबर) को चनावा नदी के तट पर क़िले में शिविर लगाये। उस क़िले के समक्ष जमद तथा चनावा नदियाँ मिलती हैं। बादशाह ने (५३) पुल बाँधने का आदेश दिया। शाही आदेशानुसार उस विस्तृत नदी पर पुल बँध गया और बुधवार २७ मुहर्रम (९ अक्तूबर) को एक अद्भुत पुल तैयार हो गया। पिछले बादशाहों द्वारा उस नदी पर पुल बाँधने का कोई उल्लेख नहीं मिलता। तुर्माशीरीं खाँ ने, जिसने वह नदी पार की थी, पुल न बँधवाया था। साहेब क़िरान की दृष्टि में यदि कठिन से कठिन कार्य भी आजाता था तो वह सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो जाता था।

शुभ पताकाओं का तलमी नामक क़िले पर पहुँचना

साहेब क़िरान ने संसार को विजय करने वाली सेनाओं को लेकर पुल पार किया (५४) और वहाँ से प्रस्थान करके तलमी नदी के तट पर नगर के समक्ष पड़ाव किया। तलमी से मुल्तान तक ३३ कोस की दूरी है। नगर के मलिक तथा राय, सैयिदों एवं आलिमों को लेकर तत्काल शुभ दरबार में उपस्थित हुये और भूमि चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार सम्मानित किया गया।

उसी दिन बादशाह ने नदी पार की और शुक्रवार २९ मुहर्रम (११ अक्तूबर) को नदी के उस पार इस आशय से पड़ाव किया कि सेना वाले सुगमतापूर्वक नदी पार कर लें। शनिवार १ सफ़र ८०१ हि० (१३ अक्तूबर १३९८ ई०) को तलमी क़िले के पास के मैदान में पड़ाव हुआ। तलमी नगर वालों पर २ लाख रु० का अमानी[1] कर लगाया गया। सैयिदों तथा आलिमों को सम्मानित किया गया। साहेब क़िरान की उन लोगों की ओर विशेष कृपादृष्टि थी। (५५) तलमी वालों से जो धन प्राप्त होने वाला था उसमें से कुछ तो प्राप्त हो गया और कुछ शेष रहा। उसी समय समस्त सेना, जो असंख्य तथा अगणित थी, पहुंच गई। उसे अनाज की आवश्यकता थी। शाही आदेश हुआ कि जहाँ कहीं भी अनाज मिले प्राप्त कर लिया जाय। सेना वालों ने घरों में घुस-घुस कर जो कुछ भी उन्हें मिला उसे लूट लिया। लोगों को बन्दी बना लिया। सैयिदों तथा आलिमों के अतिरिक्त किसी को भी उस कष्ट से मुक्ति न प्राप्त हुई। साहेब क़िरान को यह सूचना दी गई कि तलमी के आसपास के बहुत से रईस तथा सरदार अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद के आज्ञाकारी थे और उन्होंने उसकी दासता स्वीकार करली थी किन्तु बाद में उन्होंने विद्रोह तथा पाप का मार्ग ग्रहण कर लिया। शाही आदेश हुआ कि अमीर शाह मलिक तथा शेख मुहम्मद ईको तिमुर अपने-अपने तूमानों को लेकर उस ओर आक्रमण करें और जिन लोगों ने विरोध करने का दुस्साहस किया था तथा जो लोग शत्रुता पर कटिबद्ध हुए थे उनको दण्ड दें ताकि अन्य लोग शिक्षा ग्रहण कर सकें। वे लोग आदेशा-(५६) नुसार उन पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुए और उन जंगलों में जहाँ उन मार्ग भ्रष्ट लोगों ने शरण ग्रहण करली थी आक्रमण किया। दो हज़ार हिन्दुओं की हत्या करदी गई और उनके पुत्रों को बन्दी बना दिया गया। वे लूट की अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा असंख्य बहुमूल्य

१ शरण प्रदान करने का कर।

वस्तुयें लेकर बादशाह के दरबार में वापस हुए। मंगलवार ७ सफ़र (१६ अक्तूबर) को सफल पताकायें तलमी से रवाना हुईं और दूसरे दिन जाल के पास जो व्यास नदी के तट पर है शाह नवाज़ के समक्ष पड़ाव हुआ।

विजयी पताकाओं का नुसरत कोकरी के विरुद्ध प्रस्थान

इस पड़ाव पर शुभ कानों तक यह समाचार पहुँचाये गये कि शेख़ केकरी का भाई नुसरत दो हज़ार वीरों सहित जाल ग्राम में जलाशय को क़िला बनाकर पड़ाव डाले हुए है। वह जलाशय बड़ा ही लम्बा चौड़ा तथा गहरा है। साहेब क़िरान ने स्वयं सवार होकर सेना सहित उस जलाशय के किनारे पड़ाव किया और सेना के मध्य के भाग तथा बाज़ू सुव्यवस्थित (५७) किये। दाहिना भाग, अमीर शेख़ नूरुद्दीन तथा अमीर अल्लाह दाद द्वारा सुशोभित किया और बायें भाग को अमीर शाह मलिक तथा अमीर शेख़ मुहम्मद ईको तिमुर द्वारा शोभा प्रदान की। मध्य भाग के सामने अली सुल्तान तवाची ख़ुरासान के पदातियों सहित युद्ध के लिए तैयार हुआ। नुसरत १००० हिन्दुओं को लेकर जलाशय के तट पर आया और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अली सुल्तान पदातियों सहित युद्ध करने लगा और वीरता प्रदर्शित करने लगा। वह तथा कुछ अन्य लोग आहत हुए। अमीर शेख़ नूरुद्दीन तथा अल्लाह दाद उनके पीछे से सहायतार्थ पहुंच गये और तुच्छ विरोधियों को तलवार के घाट उतारने लगे! (५८) विजय के उपरान्त विजयी सेना ने उन नरक वासियों के घरों में आग लगा दी और उनकी धन सम्पत्ति लूट ली। सोमवार १० सफ़र (२२ अक्तूबर) को विजयी सेना ने वह जलाशय तथा जाल को पार किया और शाह नवाज़ ग्राम में शिविर लगाये। शाह नवाज़ बहुत बड़ा ग्राम है। यहाँ अनाज के बहुत बड़े-बड़े ढेर थे। सेना वालों ने अपनी इच्छानुसार अनाज ले लिया फिर भी कुछ अनाज शेष रह गया। कुछ अमीर बादशाह के आदेशानुसार उस ग्राम से रवाना हुए और व्यास नदी पार करके उन लोगों पर, जो नुसरत की सेना से बच कर भाग निकले थे, आक्रमण किया और उनका विनाश करके अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त की। साहेब क़िरान ने उस स्थान पर दो दिन तक पड़ाव किया और आदेश दिया कि जो अनाज रह गया हो उसे काफ़िरों को कष्ट पहुंचाने के लिए जला डाला जाय।

बृहस्पतिवार १३ सफ़र (२५ अक्तूबर) को विजयी पताकाओं ने शाह नवाज़ से सम्मान पूर्वक प्रस्थान किया और व्यास नदी के तट पर जन्जान नामक ग्राम के समक्ष पड़ाव किया। शाही आदेश हुआ कि सेना वाले नदी पार करें।

शाहज़ादा पीर मुहम्मद जहाँगीर का मुल्तान से पहुँचना

(५९) इससे पूर्व हिन्दुस्तान पर आक्रमण के कारण के सम्बन्ध में यह उल्लेख हो चुका है कि अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद जहाँगीर ने मुल्तान नगर को घेर लिया था। जब इसको छः मास व्यतीत हो गये तो भीतर वाले शक्तिहीन होने के कारण परेशान हो गये। उस प्रदेश के शासक सारंग ने विवश होकर दीनता प्रकट की, और मुल्तान पर विजय प्राप्त हो गई। दूतों द्वारा शाही राजसिंहासन के समक्ष इस विजय के समाचार भेजे गये। उसी समय एक प्रकार के पिस्सू के उत्पन्न हो जाने के कारण शाहज़ादे के समस्त घोड़े नष्ट हो गये। शाहज़ादे (६०) को नगर के भीतर जाना पड़ा। हिन्दुस्तान तथा उसके आसपास के हाकिम तथा सरदार जो आज्ञाकारी तथा निष्ठावान् हो चुके थे विरोध करने लगे और अपने मस्तिष्क में कुत्सित विचार लाने लगे। कुछ स्थान पर दारोग़ाओं[1] की हत्या कर दी गई। ऐसी दशा

१ विभिन्न स्थानों के रक्षक।

में जब कि अमीर जादा पीर मुहम्मद के समस्त सैनिक पैदल हो गये थे[1] और बुद्धिहीन विरोधी विरोध करने लगे थे, वह बड़ा चिन्तित रहने लगा। अचानक साहेब क़िरान की विजयी पताकाओं का सूर्य उस ओर चमका। इस सूचना से विरोधी परेशान हो गये और शाहज़ादे को उस विषम परिस्थिति से मुक्ति प्राप्त हो गई। शुक्रवार १४ सफ़र (२६ अक्तूबर) को वह व्यास नदी के तट पर शाही शिविर में प्रविष्ट हुआ और साहेब क़िरान के चरणों के चुम्बन करके सम्मानित हुआ। बादशाह ने उससे आलिंगन किया और उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की।

जुनैद बुरल दाई तथा उसका भाई बायज़ीद और मुहम्मद दरवेश तायख़ानी ख्वारज़म के युद्ध में अमीर जहाँ शाह से भागकर बड़ी कठिनाई से हिन्दुस्तान पहुँचे थे। जिस (६१) समय अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद ने मुल्तान पर विजय प्राप्त करली तो वे हिन्दुस्तान की ओर से शाहज़ादे के समक्ष आये। शाहज़ादा उन्हें अपने साथ लाया और वे भी भूमि चुम्बन के सम्मान द्वारा सम्मानित हुये। बादशाह ने उनकी हत्या न कराई और पिटवा कर निकलवा दिया।

शनिवार १५ (२७ अक्तूबर) को विजयी पताकाओं ने व्यास नदी को पार किया तथा जन्जान ग्राम में पहुंचीं। वहाँ से मुल्तान ४० कोस की दूरी पर है। उन दो तीन दिनों में समस्त सैनिकों में से कुछ नौकाओं पर सवार हुये और कुछ ने तैर कर नदी पार की। बादशाह के उन्नतिशील भाग्य के कारण किसी को कोई हानि न पहुँची। ४ दिन और रात जन्जान ग्राम में विश्राम हुआ। मंगलवार १८ (३० अक्तूबर) को अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद ने उस ग्राम में दावत करके बादशाह को अत्यधिक उपहार भेंट किये, जिनमें मुकुट, सुनहरी पेटियाँ, ज़ीन सहित अरबी घोड़े, अन्य बहुमूल्य उपहार, उत्तम प्रकार के वस्त्र, सामान, नाना प्रकार के बर्तन, लगने, जल पीने के बर्तन, आफ़ताबे[2] इत्यादि जो सोने चाँदी के थे भेंट किये। दीवान[3] (६२) के लेखा तैयार करने वाले दो दिन तक उन वस्तुओं का लेखा तैयार करते रहे। साहेब क़िरान ने उन समस्त बहुमुल्य वस्तुओं तथा उपहारों को अमीरों, वज़ीरों एवं दरबार के सेवकों को प्रदान कर दिया और प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानित किया।

क्योंकि अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद के सैनिकों के घोड़े पिस्सुओं के कारण नष्ट हो गये थे और उन्होंने यात्रा में बड़े कष्ट भोगे थे तथा अधिकांश बैलों पर सवार होकर और कुछ लोग पैदल ही शुभ शिविर में पहुंचे थे अतः उस दिन उन्हें तीस हज़ार घोड़े प्रदान किये गये।

(६३) तत्पश्चात् विजयी पताकाओं ने जंजान ग्राम से प्रस्थान किया और सहवाल ग्राम में पहुँचीं। शुक्रवार २१ (२ नवम्बर) को सहवाल ग्राम से प्रस्थान करके अस्वान में पड़ाव हुआ। वहाँ एक दिन विश्राम किया गया। दूसरे दिन अस्वान से प्रस्थान हुआ। दीबालपुर के निवासी इससे पूर्व अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद के अधीन थे। शाहज़ादे ने मुसाफ़िर काबुली को १ हज़ार वीरों सहित उनकी दारोगगी के लिए भेज दिया था। शाहज़ादे की सेना में (६४) महामारी के कारण उन लोगों ने मूर्खता की वजह से सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दासों का साथ देना प्रारम्भ कर दिया था और मुसाफ़िर की उन हज़ार वीरों सहित हत्या करदी थी।

विजयी पताकाओं के उस ओर पहुँचने का समाचार पाकर वे दुष्ट प्राणों के भय से भाग खड़े हुए और बतनीर[4] के क़िले में प्रविष्ट हो गये। जब साहेब क़िरान जहवाल पहुंचे

१ घोड़े मर गये थे।
२ एक प्रकार का लोटा।
३ वित्त विभाग।
४ भटनीर।

तो उन्होंने अमीर शाह मलिक तथा दौलत तिमुर तवाची को आदेश दिया कि वे सेना को लेकर दीबालपुर के मार्ग से प्रस्थान करें और सेना सहित देहली के निकट सामाना ग्राम में उनसे मिलें।

साहेब क़िरान ने उस स्थान से १० हज़ार सवारों सहित शीघ्रातिशीघ्र रात दिन यात्रा करना प्रारम्भ करदी और अजोधन की ओर बढ़े। सोमवार २४ (५ नवम्बर) को प्रातःकाल विजयी पताकायें अजोधन पहुँचीं। इससे पूर्व अभागे शेख़ मुनव्वर तथा अभिमानी शेख़ साद ने (६५) जो शेख़ नूरुद्दीन के पौत्र थे, उस नगर के अधिकांश निवासियों को मार्गभ्रष्ट कर दिया था और उन्हें अपने साथ लेकर बतनीर की ओर जो हिन्दुस्तान का एक क़स्बा है भाग खड़े हुए थे। कुछ लोग अभागे शेख़ मुनव्वर के साथ देहली की ओर पहुंच गये थे। सैयिदों तथा आलिमों का समूह साहेब क़िरान पर आश्रित होकर उसी स्थान पर रुका रहा। वे उनके आने के समाचार सुनकर उनकी ओर लपके और अत्यधिक कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित हुए। बादशाह ने मौलाना नासिरुद्दीन उमर तथा ख़्वाजा महमूद के पुत्र शिहाब मुहम्मद को उस नगर की दारोग़गी तथा रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया ताकि वे उस ओर के निवासियों की रक्षा करते रहें और सेना के पार करते समय सेना वालों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। जो लोग साहेब क़िरान के प्रति विश्वास करके अपने स्थान ही पर रहे, वे सुरक्षित रह गये, (६६) और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट एवं हानि न हुई। जो लोग कुत्सित विचारों से भाग खड़े हुए थे तथा मार्ग-भ्रष्ट शेखों के साथ चले गये थे, उनकी हत्या हो गई और वे या तो बन्दी बना दिये गये या नष्ट हो गये।

बतनीर के क़िले तथा नगर की विजय और वहाँ के छोटे बड़े सभी का विनाश

(६७) बतनीर (भटनीर) का क़िला बड़ा ही दृढ़ बना था और हिन्दुस्तान का प्रसिद्ध क़िला समझा जाता था। उसके चारों ओर प्रत्येक दिशा से ५० कोस तक रेगिस्तान था और सौ कोस तक जल नहीं प्राप्त होता था। वहाँ के लोग एक बहुत बड़ी झील से जल प्राप्त करते थे। कोई भी बाहरी सेना वहाँ कदापि न पहुँची थी। हिन्दुस्तान के बादशाहों में से भी किसी ने उसका विरोध न किया था और कोई भी वहाँ सेना न ले गया था। इस कारण दीबालपुर तथा अजोधन एवं अन्य स्थानों के बहुत से निवासी शाही सेनाओं के कष्टों से सुरक्षित रहने के विचार से वहाँ पहुँच गये थे और उस स्थान पर एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई थी। भीड़ की अधिकता के कारण वे लोग नगर में न समाते थे और चौपाये तथा माल असबाब से भरी हुई गाड़ियाँ आसपास के स्थानों पर छोड़ दी थीं।

साहेब क़िरान मंगलवार २५ (६ नवम्बर) को प्रातःकाल अजोधन में प्रविष्ट हुए और शेख़ फ़रीदगंज शकर के रौज़े पर प्रार्थना तथा सहायता का आग्रह करने के लिए पहुंचे। वहाँ से निकल कर वे बतनीर (भटनीर) की विजय का संकल्प करके रवाना हुए और अजोधन की नदी, जोकि हिन्दुस्तान की बड़ी नदियों में समझी जाती है, पार की तथा ख़ालिस कोतली (६८) में पड़ाव किया। वहाँ से अजोधन १० कोस और बतनीर (भटनीर) ५० कोस अर्थात् ३ कोस तथा १ फ़रसख़ें शरई है। साहेब क़िरान उसी दिन ख़ालिस कोतली नामक क़िले में पहुंचे और मध्याह्न की नमाज़ के उपरान्त सवार हुए। दिन का शेष भाग तथा रात्रि में यात्रा करके उस रेगिस्तान की एक मंज़िल पार की। जब दिन हुआ तो साहेब क़िरान की रक्षा करने वाली सेना का शत्रु की रक्षा करने वाली सेना से युद्ध हुआ। शत्रु के रक्षक मारे गये। शेख़ दरवेश अल्लाही दो व्यक्तियों को पकड़ लाया।

बुद्धवार २६ (७ नवम्बर) को प्रातःकाल विजयी सेनायें बतनीर (भटनीर) पहुंचीं। सेना के शोर से हाहाकार मच गया। जो कुछ नगर के बाहर था वह सब का सब नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। उस नगर तथा क़िले का शासक राव दुलचीन कहलाता था। हिन्दुस्तान की भाषा में वीर को राव कहते हैं। उसके पास बहुत भारी सेना तथा सहायक थे। उस प्रदेश के समस्त अधिकार उसके हाथ में थे। उस क्षेत्र के आने जाने वालों से वह कर वसूल किया करता था। उस ओर के व्यापारी तथा कारवान वाले उसके कारण सुरक्षित न थे। अपनी शक्ति के अभिमान के कारण उसने आज्ञाकारिता एवं दासता स्वीकार न की।

विजयी सेना की ओर से दाहिने बाजू से अमीर सुलेमान शाह, अमीर शेख नूरुद्दीन (६९) तथा अल्लाह दाद ने और बायें बाजू से अमीर ज़ादा खलील सुल्तान, शेख मुहम्मद ईको तिमुर तथा अन्य अमीर विलम्ब किये बिना नगर की विजय के लिये वीरता का प्रदर्शन करने लगे और पहले ही आक्रमण में नगर की दीवारों पर अधिकार जमा लिया। हिन्दुओं के एक समूह की हत्या कर दी गई। अत्यधिक धन सम्पत्ति सेना को प्राप्त हुई। तूमान तथा क़ूशून[1] के अमीर क़िले के निकट तत्काल पहुँच गये और क़िले को घेर कर वीरता का प्रदर्शन करने लगे। राव दुलचीन हिन्दुस्तान के वीरों सहित क़िले के द्वार पर खड़ा था तथा युद्ध करने पर उद्यत था। शाही अमीरों में अमीर ज़ादा शाहरुख, अमीर सुलेमान शाह तथा सैयिद ख्वाजा और जहान मलिक ने आक्रमण किया। सैयिद ख्वाजा तलवार चला रहा था। जहान मलिक ने भी कई बार आक्रमण किया और वीरों के समान प्रयत्नशील हुआ। शाही सेना के वीर सिंहनाद करके बड़े उत्साह से आक्रमण करने लगे। वे क़िले पर अपने आक्रमण द्वारा विजय प्राप्त करने ही वाले थे कि राव दुलचीन बुरी तरह आतंकित हो गया तथा दीनता और परेशानी का प्रदर्शन करने लगा। उसने साहेब क़िरान के पास एक सैयिद को भेज कर प्रार्थना की कि उसे उस दिन क्षमा कर दिया जाय। दूसरे दिन वह बादशाह के (७०) दरबार में उपस्थित होगा। तैमूर ने सैयिद पर कृपा करके विजयी सेना को युद्ध करने से रोक दिया और क़िले के द्वार से लौट कर नगर के बाहर चले गये। दूसरे दिन जब राव दुलचीन ने अपने वचन का पालन न किया और बाहर न निकला तो शाही आदेश हुआ कि प्रत्येक अमीर अपने समक्ष नक़ब (खाई) तैयार करके क़िले की दीवार के नीचे पहुँच जाय। वे शाही आदेशानुसार नक़ब खोदने में लग गये। यद्यपि क़िले के ऊपर से पत्थर तथा बाणों की वर्षा होती थी किन्तु वे उसकी कोई भी चिन्ता न करते थे। राव दुलचीन तथा उसके बड़े-बड़े सहायकों ने जब यह देखा तो वे अत्यन्त भयभीत हो गये और बुर्जों पर पहुँच कर विलाप करने लगे और कहने लगे कि "हमने अपनी सीमा को पहचान लिया और अब सचमुच सेवा तथा आज्ञाकारिता के लिए तैयार हैं। हमें बादशाह की कृपा द्वारा यह आशा है कि हमारे पाप तथा दोष क्षमा कर दिये जायेंगे और हमें शान्ति प्रदान करदी जायेगी।"

(७१) बादशाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। राव दुलचीन ने उसी दिन के अन्त में अपने पुत्र को अपने नायब (प्रतिनिधि) के साथ जानवरों तथा अरबी घोड़ों को देकर बादशाह के दरबार में भेजा। बादशाह ने उसके पुत्र के प्रति कृपा प्रदर्शित की और उसे खिलअत तथा सुनहरे काम की तलवार प्रदान की और उसे सान्त्वना देकर वापस किया।

शुक्रवार २८ (९ नवम्बर) को राव दुलचीन क़िले के बाहर निकला। शेख सादुद्दीन अजोधनी उसके साथ थे। बादशाह की चौखट पर माथा रगड़ कर उसने सम्मान प्राप्त किया। अच्छे अच्छे जानवर तथा ३ तक़ूज़[2] सोने के ज़ीन सहित घोड़े भेंट किये। बादशाह ने उस पर

---

१ सेना का दल। मुग़ल सेना तूमानों, क़ूशूनों आदि में विभाजित होती थी।
२ ९ की शुभ संख्या, बादशाह को उपहार भेंट करने के लिये (२७ घोड़े)।

कृपा करके सुनहरे काम के वस्त्र, पेटी तथा मुकुट प्रदान किये। क्योंकि उन स्थानों के बहुत से लोग विशेष कर दीबालपुर तथा अजोधन वाले शाही पताकाओं के भय से भागकर क़िले में एकत्र हो गये थे, अतः अमीर सुलेमान शाह एवं अमीर अल्लाह दाद शाही आदेशानुसार क़िले के द्वार पर अधिकार जमाने में लग गये। शनिवार २६ (१० नवम्बर) को आसपास के जो लोग वहाँ एकत्र हो गये थे शाही सेना के शिविर में उपस्थित हुए। उनके विभिन्न समूह विश्वासपात्रों को सौंप दिये गये। लगभग ३ हज़ार अरबी घोड़े प्राप्त हुए। बादशाह ने उन्हें (७२) अमीरों तथा वीरों को प्रदान कर दिया। क्योंकि दीवालपुर के निवासियों ने मुसाफ़िर काबुली तथा अमीर जादा पीर मुहम्मद के १ हज़ार सैनिकों की छल द्वारा हत्या कर दी थी, अतः उनमें से ५०० प्रतिकार की तलवार के घाट उतार दिये गये और उनके परिवार को बंदी बना लिया गया। अजोधन के जो लोग अपने दुर्भाग्य तथा शाही सेना के कारण भाग गये थे उनमें से कुछ को मृत्यु-दण्ड दिया गया और कुछ को बन्दी बना लिया गया। उनकी धन संपत्ति का विनाश कर दिया गया।

राव दुलचीन के भाई कमालुद्दीन तथा उसके पुत्र ने जब बादशाह को अपराधियों को (७३) कठोर दण्ड देते हुये देखा तो वे व्यर्थ में सशंकित हो गये। भय के कारण उनकी बुद्धि का अन्त हो गया। रविवार ३० सफ़र (११ नवम्बर) को यद्यपि राव दुलचीन शुभ लश्कर में था, उन लोगों ने अपने व्यर्थ के विचारों से प्रेरित होकर क़िले के द्वार बंद कर लिए और अपने ऊपर कष्ट के द्वार खोल लिए। राव दुलचीन को इसी कारण बन्दी बना लिया गया और साहेब क़िरान के क्रोध की अग्नि प्रज्वलित हो गई। शाही सेनायें नक़ब (खाई) के खोदने तथा क़िले की दीवारों के विनाश का प्रयत्न करने लगीं। क़िले वालों को यह विश्वास हो गया कि उस सेना पर विजय प्राप्त करना असम्भव है। राव दुलचीन के भाई तथा पुत्र दीनता तथा विवशता के कारण बाहर निकले। अपना सिर भूमि पर रख कर क्षमा याचना करने लगे। (७४) उन्होंने द्वार की कुञ्जियां शाही सेवकों को सौंप दीं।

सोमवार पहली रबी उल अव्वल (१२ नवम्बर) को अमीर शैख़ नूरुद्दीन तथा अल्लाह दाद क़िले में अमानी का धन एकत्र करने हेतु प्रविष्ट हुए। उस स्थान के राय अपने दुर्भाग्य के कारण अमानी का धन अदा करने तथा कर प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित न हुए। उन लोगों में अग्नि-पूजक[1] तथा मार्गभ्रष्ट बहुत बड़ी संख्या में थे। वे विरोध करने लगे और युद्ध प्रारम्भ हो गया।

जब बादशाह को यह ज्ञात हुआ तो वह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने आदेश दिया कि तलवार द्वारा उन दुष्ट काफ़िरों के अभिमान का अन्त कर दिया जाय। विजयी सेना चारों ओर से क़िले पर कमन्दें[2] तथा रस्सी की सीढ़ियाँ डालकर क़िले पर पहुँच गयी और अग्नि-पूजकों के परिवार का बिनाश कर दिया। जो लोग अपने आपको मुसलमान कहते उनके तथा उनके परिवार के सिर भेड़ों के समान काट डाले गये। दोनों समूह वाले संगठित होकर युद्ध कर रहे थे।[3]

(७५) शाही आदेशानुसार क़िले का द्वार गिरा दिया गया। इस युद्ध में बहुत से ग़ाज़ी शहीद हुए और कुछ घायल हुए। अमीर शेख़ नुरुद्दीन को, जो जेहाद के लिए कटिबद्ध होकर शहर

१ गब्र : इस शब्द का तात्पर्य ईरान के प्राचीन धर्मों के पालन करने वालों से नहीं अपितु सामान्य रूप से मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जातियों से है। यहाँ तात्पर्य हिन्दुओं से है।

२ फंदेदार रस्सी जिसके सहारे ऊँचे घरों पर बिना सीढ़ियों के चढ़ा जा सकता है।

३ बाहरी आक्रमणकारियों के विरुद्ध हिन्दुओं तथा मुसलमानों का संगठित मोर्चा।

में प्रविष्ट हो गया था तथा वीरता का प्रदर्शन कर रहा था, अग्निपूजकों के एक समूह ने, जो तलवारें खींचे हुए था, घेर लिया और उसे बंदी बनाने ही वाले थे कि ऊज़ून मज़ीद बग़दादी तथा फ़ीरोज़ सीस्तानी ने संगठित होकर आक्रमण कर दिया और उन अधर्मियों में से कुछ व्यक्तियों को धूल में मिला दिया तथा अमीर शेख़ नूरुद्दीन को उस कष्ट से मुक्ति दिला दी। अन्त में (७६) इस्लामी सेना को विजय प्राप्त हुई। १० हज़ार हिन्दू मारे गये। उनके शरीर तथा रक्त से पर्वत एवं नदी बन गईं। क्रमशः उनके घरों तथा क़िले में आग लगा दी गई। भवनों को भूमि के बराबर करा दिया गया। उस क़िले से जो कुछ भी सोना चाँदी, घोड़े तथा धन सम्पत्ति लूट द्वारा प्राप्त हुई उसे साहेब क़िरान ने सैनिकों को प्रदान कर दिया। जो लोग आहत हुए थे उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। ऊज़ून मज़ीद तथा फ़ीरोज़ को, जिन्होंने अमीर शेख़ नूरुद्दीन की सहायता में पौरुष का प्रदर्शन किया था तथा वीरता दिखाई थी, विशेष रूप से सम्मानित किया और इनाम प्रदान किया।

शाही पताकाओं का बतनीर से सरस्वती फ़तहाबाद तथा अहरौनी की ओर प्रस्थान

(७७) साहेब क़िरान ने बुद्धवार ३ (१४ नवम्बर) को उस स्थान से प्रस्थान किया और वहाँ से चलकर १४ कोस पर एक स्थान पर, जिसे किनारये हौज़े आब[१] कहते हैं, पड़ाव किया। बृहस्पतिवार ४ (१५ नवम्बर) को वहाँ से प्रस्थान करके वे फ़ीरोज़ा नामक क़िले पर पहुँचे। उसी दिन सरस्वती नगर में पड़ाव किया। वहाँ के अधिकांश निवासी अधर्मी थे तथा अपने घरों में सूअर पालते थे और उसका मांस खाते थे। विजयी पताकाओं के पहुँचने के समाचार के कारण वे भाग खड़े हुए और नगर को छोड़कर चल दिये। शाही सेना ने उनका पीछा किया और उन पथभ्रष्ट लोगों में से बहुत से लोगों को पकड़ कर उनसे युद्ध (७८) किया और तलवार के घाट उतार दिया। जो कुछ भी उनके पास था, घोड़े, धन सम्पत्ति इत्यादि, सब अपने अधिकार में कर लिया। शाही सेना में से सभी आदिल फ़र्राश के अतिरिक्त सुरक्षित लौट गये। केवल वही युद्ध में शहीद हुआ। साहेब क़िरान ने सरस्वती नगर में १ दिन विश्राम किया। दूसरे दिन वहाँ से प्रस्थान करके १८ कोस यात्रा करके क़िला फ़तहाबाद में उतरे। फ़तहाबाद के भी निवासी मार्ग-भ्रष्ट होकर वहां से भाग खड़े हुए थे। विजयी सेना का एक समूह उनके पीछे भेजा गया और उनमें से अधिकांश की हत्या कर दी गई और उनके पशु तथा सम्पत्ति अधिकार में कर लिये गये। शनिवार ७ (१८ नवम्बर) को विजयी सेनायें फ़तहाबाद से प्रस्थान करके रजब नामक क़िले को पार करके अहरौनी नामक क़िले पर पहुंचीं। क्योंकि उस स्थान पर कोई ऐसा योग्य कर्मचारी न था जो बादशाह के स्वागतार्थ उपस्थित होकर उसकी कृपा द्वारा सम्मानित होता। अतः वहां के निवासियों में कुछ तो तलवार का (७९) शिकार हुए और कुछ बन्दी बना लिए गये। सेना वालों ने अत्यधिक अनाज एकत्र करके घरों में आग लगा दी और उस स्थान पर राख के ढेर के अतिरिक्त कुछ न रह गया। विजयी सेना ने अहरौनी ग्राम से प्रस्थान करके तोहना नामक ग्राम के मैदान में पड़ाव किया। उस क्षेत्र के निवासियों ने जिन्हें राजतान कहते हैं बहुत समय से सत्य के मार्ग को छोड़कर लूट मार तथा चोरी व डाका डालना अपना व्यवसाय बना लिया था। आने जाने वालों के मार्ग को रोक दिया था। कारवान वालों को नाना प्रकार के कष्ट देकर उनकी हत्या कर देते थे। विजयी

१ जलाशय का तट

पताकाओं के उस स्थान को प्रज्वलित बनाते ही वे मार्ग-भ्रष्ट, जंगलों में घुस गये। शाही आदेशानुसार विजयी सेना का एक भाग उन चोरों का पीछा करने के लिए रवाना हुआ। लगभग दो सौ व्यक्ति मारे गये। उनके पशुओं पर अधिकार जमा लिया गया। बहुत से लोग बन्दी बना लिये गये और उन्हें शाही शिविर में प्रस्तुत किया गया।

साहेब क़िरान का अभियान तथा दुष्ट जतान[1] का विनाश

(८०) क्योंकि साहेब क़िरान दुष्टों के विनाश तथा मार्ग एवं यात्रियों की रक्षा में व्यस्त थे अतः मंगलवार ९ रबी उल अव्वल (२० नवम्बर) को उन्होंने तोहना से प्रस्थान किया। बन्दियों तथा धन सम्पत्ति को अमीर सुलेमान शाह के सिपुर्द करके सामाना की ओर कूच किया। उसने भी उसी दिन मूंग[2] नामक क़िले को पार करके पड़ाव किया। साहेब क़िरान ने जतों (जाटों) के विनाश हेतु जो जंगलों में छुपे हुए थे शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। उस दिन देव के समान लगभग दो हज़ार जत (जाट) विजयी सेना द्वारा तलवार के घाट उतार दिए गये। उनके परिवारों को बन्दी बनाकर उनकी धन सम्पत्ति तथा पशुओं का विनाश कर (८१) दिया गया। उस क्षेत्र में सैयिदों का एक समूह रहता था। वे अपने सौभाग्य के कारण बादशाह के दरबार में उपस्थित हुये। साहेब क़िरान को मुहम्मद साहब की सन्तान के प्रति जो निष्ठा तथा श्रद्धा थी उसके कारण उन्होंने उनके मुक़द्दम[3] को सम्मानित किया।

बुद्धवार १० (२१ नवम्बर) को अमीर सुलेमान शाह मूंग के निकट के डाकुओं को (८२) लेकर सामाना नगर में पहुँच गया। वह रात्रि में वहीं रहा। वृहस्पतिवार ११ (२२ नवम्बर) को वे ख़ुक्खर नदी के किनारे पहुँचे। विजयी पताकायें, जिन्होंने तोहना से जतों (जाटों) के विनाश हेतु शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया था, उस दिन ख़ुक्खर नदी के तटी पर सामाना के निकट उनसे मिलीं; ४ दिन वहाँ प्रतीक्षा की गई। सोमवार १५ (२६ नवम्बर) को वहाँ से प्रस्थान करके पुल कोपला के निकट पड़ाव हुआ। बायें बाज़ू की सेना के अमीरों में से सुल्तान महमूद ख़ाँ, अमीर ज़ादा सुल्तान हुसेन, अमीर ज़ादा रुस्तम, अमीर जहान शाह, ग़यासुद्दीन तरख़ान, हमज़ा तग़ी बूग़ा बरलास, शेख़ अरसलान, सोनजक बहादुर, मुबश्शिर, जो क़ाबुल से शाही आदेशानुसार एक निश्चित मार्ग से रवाना हुये थे, मार्ग के नगरों तथा शत्रुओं के क़िलों को विजय करते और वहां के निवासियों का विनाश करते हुये उस दिन विजयी सेना से मिले। मंगलवार १६ (२६ नवम्बर) को वहाँ से प्रस्थान करके कोपला के पुल को पार करके विजयी पताकाओं का पुल के उस ओर पड़ाव हुआ। शेष सेना दीबालपुर के मार्ग से आ रही थी। वह अमीर शाह मलिक के अधीन थी। उस दिन वे शाही पड़ाव पर पहुंचे। बुद्धवार १७ (२८ नवम्बर) को उस मंज़िल पर पड़ाव हुआ। वृहस्पतिवार १८ (२९ नवम्बर) को पुल कोपला से शाही सेना का प्रस्थान (८३) हुआ और ५ कोस का मार्ग चलकर फ़ौल बकरान के पड़ाव में शिविर लगे। शुक्रवार १९ (३० नवम्बर) को वहाँ से प्रस्थान करके कतियल[4] ग्राम में पहुँचे। सामाना तथा कतियल (कैथल) के बीच की दूरी १७ कोस थी जो ५ शरअी फ़रसख़ तथा २ मील के बराबर होती है।

१ जाटों।

२ देहली से फ़ीरोज़ाबाद के मार्ग पर, देहली से १४० मील उत्तर-पश्चिम में।

३ नेता।

४ कैथल।

सेना का यसाल[1] की प्रथानुसार प्रस्थान

क्योंकि शाहज़ादे अमीर तथा सैनिक शाही आदेशानुसार विभिन्न मार्गों से प्रस्थान कर रहे थे और अब एकत्र होकर शाही सवारी से मिल गये थे, अतः शाही आदेश हुआ कि दाहिनी तथा बाईं ओर के समस्त अमीर अपने-अपने मोर्चे में नियमानुसार प्रस्थान करें। दायें बाज़ू की सेना में अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद, अमीर ज़ादा रुस्तम, अमीर सुलेमान शाह, यादगार बरलास, अमीर शेख़ नूरुद्दीन, अमीर मिज़राब क़ेमारी, तिमुर ख़्वाजा आक़ बूग़ा तथा अन्य अमीर नियुक्त हुये। बायें बाज़ू की सेना सुल्तान महमूद ख़ाँ, अमीर ज़ादा ख़लील सुल्तान, अमीर ज़ादा सुल्तान हुसेन, अमीर जहान शाह, अमीर शाह मलिक, शेख़ अरसलान, शेख़ इको तिमुर, सोनजक बहादुर तथा अन्य अमीर नियुक्त हुये। मध्य भाग में तूमान सान सेज़, तूमान कलां, अमीर अल्लाह दाद, अली सुल्तान तवाची तथा अन्य तूमानों एवं क़ूशूनों के अमीर नियुक्त हुये। इस प्रकार वे २० कोस की यात्रा करके देहली की ओर रवाना हुए।

(८४) सोमवार २२ (३ दिसम्बर) को वे असन्दी नामक क़िले में पहुंचे। कतियल से असन्दी ७ कोस पर है। सामाना, कतियल तथा असन्दी के अधिकांश निवासी अग्निपूजक थे। ये लोग अपने दुर्भाग्य के कारण अपने घरों को जलाकर देहली की ओर भाग गये। विजयी सेना ने उस प्रदेश में किसी व्यक्ति को न देखा।

मंगलवार २३ (४ दिसम्बर) को असन्दी के क़िले से प्रस्थान हुआ। ६ कोस यात्रा करके तुग़लुक़पुर का क़िला इस्लामी सेना का केन्द्र बना। वहाँ के निवासी अधर्मी अग्नि-पूजक[2] थे।

(८५) संक्षेप में, उस क़िले के निवासी, जिन्हें सालून कहते थे, भाग खड़े हुये। विजयी सेनाओं ने तुरन्त क़िले में आग लगा दी और सबको जलाकर किसी का चिह्न शेष न छोड़ा। मंगलवार २४ (५ दिसम्बर) को विजयी सेनायें पानीपत नगर पहुँचीं। तुग़लुक़पुर से पानीपत १२ कोस है। पानीपत निवासी परेशान होकर भाग खड़े हुये और वहाँ किसी व्यक्ति का पता न था। उस क़िले में गेहूँ का एक बहुत बड़ा ढेर था जोकि बड़ी तौल से १० हज़ार मन, जो १६० हज़ार शरई मन के बराबर था, प्राप्त हुआ। वह उस सेना को प्रदान कर दिया गया।

बृहस्पतिवार २५ (६ दिसम्बर) को वहाँ से प्रस्थान किया गया। ६ कोस यात्रा करके पानीपत की नदी के किनारे पड़ाव किया गया। शुक्रवार २६ (७ दिसम्बर) को दाहिनी तथा बाईं ओर के अमीर युद्ध के लिए तैयार होकर रवाना हो गये। शनिवार २७ (८ दिसम्बर) को शाही आदेश हुआ कि दाहिने बाज़ू की सेना के अमीर जहाँनुमा नामक स्थान पर, जोकि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा निर्मित एक भवन है और जो देहली से पर्वत पर दो फ़रसख़ पर स्थित है तथा पर्वत के आँचल में यमुना नदी, जोकि एक बहुत बड़ी नदी है, बहती है, आक्रमण (८६) करें। सेना वालों ने कान्ही कज़ी ग्राम से जहाँनुमा तक आक्रमण किया और वहाँ के निवासियों की हत्या करदी तथा उन्हें बन्दी बना लिया। विजयी होकर वे वहाँ से खुश खुश वापस हुये।

सोमवार २९ (१० दिसम्बर) को बादशाह ने पल्ला नामक ग्राम के समक्ष यमुना नदी पार की और लोनी नामक क़िले की ओर प्रस्थान किया। उसी दिन लोनी नामक क़िले पर पहुँच कर पड़ाव किया। यह क़िला दो नदियों के मध्य में है, एक यमुना नदी और दूसरी

१ सेना को बाज़ुओं में विभाजित करके।
२ हिन्दू।

हैकन[1]। हैकन एक बहुत बड़ी नहर है जिसे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने कालपी[2] नदी से निकाला था और वह फ़ीरोज़ाबाद के निकट यमुना नदी से मिलती है।

अमीर जहान शाह अमीर शाह मलिक तथा अमीर अल्लाह दाद शाही आदेशानुसार उस क़िले के नीचे पहले से पहुँच चुके थे। उस क़िले का शासक अभागा मैमून था। वहाँ के निवासी मूर्खता के कारण आज्ञाकारिता प्रदर्शित करने के लिये उपस्थित न हुए और विरोध प्रकट करते हुये युद्ध में तल्लीन हो गये। जब विजयी पताकायें उस स्थान पर पहुँचीं तो एक बुद्धिमान शेख[3] बाहर आया और उसने आज्ञाकारिता प्रदर्शित की। वहाँ के अन्य निवासी, अग्निपूजक तथा मल्लू खाँ के सेवक, अज्ञानता तथा मूर्खता प्रदर्शित करते रहे। बादशाह ने उनके विनाश हेतु आदेश दिया और शाही सेनायें विजय हेतु अग्रसर हुईं और चारों ओर से सुरंगें खोद कर मध्याह्न तथा सायंकाल के नमाज़ के बीच में विजयी पताकाओं के पहुंचने के पूर्व क़िले पर विजय प्राप्त करली।

(८७) कोट के भीतर के अधिकांश अग्निपूजकों ने अपने घरों तथा अपने परिवार को जला डाला। साहेब क़िरान ने रात्रि में कोट के बाहर विश्राम किया। मंगलवार ३० रबी उल अव्वल (११ दिसम्बर) को आदेश हुआ कि मल्लू खाँ के सेवकों तथा उस क़िले के निवासियों में से जो लोग मुसलमान हों उन्हें पृथक् कर दिया जाय और अधर्मी अग्निपूजकों को तलवार के घाट उतार दिया जाय। कोट के सभी निवासियों को, सैयिदों को छोड़ कर, तलवार के घाट उतार दिया गया। क़िले में आग लगा दी गई।

बुद्धवार रबी उल आखिर (१२ दिसम्बर) को साहेब क़िरान सवार होकर इस आशय से यमुना तट पर जहाँनुमा के समक्ष उतरे कि वे स्वयं नदी पार करने के स्थान का पता लगायें। अस्र[4] के समय वापस होकर विजयी शिविर में पहुँचे।

क्योंकि देहली निकट थी अतः शाहज़ादे तथा अमीरों को उसे घेरने के विषय में आदेश हुआ। यह निश्चय हुआ कि सर्वप्रथम विजयी सेना के लिये अनाज एकत्र किया जाय। तत्पश्चात् शहर को घेरने तथा विजय करने का प्रयत्न किया जाय। तदनुसार अमीर सुलेमान शाह अमीर जहान शाह तथा अन्य सेवक पहली तारीख को शाही आदेशानुसार रवाना हुये और उन्होंने देहली के दक्षिण दिशा तक धावे मारे।

(८८) दूसरे दिन बादशाह ने स्वयं ७०० सशस्त्र सवारों को लेकर जहाँनुमा की ओर इस आशय से प्रस्थान किया कि युद्ध के लिये उचित स्थान का पता लगाया जाय। अली सुल्तान तवाची तथा जुनैद बुरल दाई, जोकि अग्रिम दल में भेजे गये थे, लौट आये। अली सुल्तान, मुहम्मद सलफ़ को बन्दी बना कर लाया। जुनैद ने अन्य लोगों से पूछताछ के उपरान्त मुहम्मद सलफ़ की हत्या कर दी। इसी बीच में मल्लू खाँ ४ हज़ार अश्वारोहियों, ५००० पदातियों और २७ हाथियों को लेकर वृक्षों के बीच से निकल कर जहाँनुमा के निकट पहुँचा।

(८९) साहेब क़िरान नदी से अपनी सेना के शिविर की ओर पहुंच चुके थे। विजयी सेना के अग्रिम दल में से सैयिद ख्वाजा तथा मुबशिर ने ३०० वीरों सहित युद्ध किया और युद्ध करते हुये नदी के निकट तक पहुँच गये। उस स्थान पर भी युद्ध छिड़ गया। साहेब क़िरान ने सोनजक बहादुर तथा अल्लाह दाद को आदेश दिया कि वे सैयिद ख्वाजा की सहायतार्थ

१ हिन्डन।

२ काली नदी।

३ सम्मानित धार्मिक व्यक्ति (सूफ़ी)

४ तीसरे पहर के उपरान्त।

पहुंचें। वे शाही आदेशानुसार दो सेना के दो भाग लेकर वायु के समान नदी पार करके सैयिद ख्वाजा के पास पहुँचे। उन्होंने संगठित होकर आक्रमण किया और बाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। विरोधियों ने विजयी सेना की वीरता देखकर अपनी मुक्ति भागने ही में समझी और प्रथम आक्रमण में ही देहली की ओर भाग गये। सैयिद ख्वाजा ने पीछा करके उनकी हत्या करनी प्रारम्भ कर दी। उनमें से बहुत से लोग मारे गये। भागते समय युद्ध का हाथी भी गिर कर नष्ट हो गया।

विजयी पताकाओं का पूर्व में स्थित, लोनी के क़िले की ओर प्रस्थान तथा शाही शिविर में बन्दी काफ़िरों की हत्या

(९०) शुक्रवार ३ रबी उस्सानी (१४ दिसम्बर) को विजयी पताकाओं ने जहाँनुमा के सामने से जिसका इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है प्रस्थान किया और पूरब की ओर लोनी के क़िले की तरफ पड़ाव किया। उस आक्रमण के समय प्रतिष्ठित शाहज़ादे, अमीर, तथा सरदार, जोकि युद्ध के लिये भेजे गये थे, राजसिंहासन के पास आये। साहेब क़िरान ने स्वयं इतने युद्धों में भाग लिया था कि किसी भी सरदार ने भाग न लिया होगा।

(९१) साहेब क़िरान ने युद्ध के विषय में सविस्तार आदेश दिया और बताया कि किस प्रकार लोग दाईं तथा बाईं ओर एवं आगे तथा सेना के मध्य भाग में रहें और वे किस प्रकार एक दूसरे के साथ हों तथा विरोधियों के आक्रमण का किस प्रकार उत्तर दें। जो लोग उपस्थित थे उन्होंने अधीनता प्रदर्शित करते हुए निष्ठापूर्वक बादशाह के लिए शुभकामनायें (९२) कीं। उस दिन अमीर जहान शाह तथा अन्य अमीरों ने यह बात बादशाह तक पहुँचाई कि सिन्ध नदी के तट से इस मंज़िल तक लगभग १ लाख मनुष्य—हिन्दू अग्निपूजक तथा मूर्तिपूजक—बन्दी बनाये जा चुके हैं तथा विजयी सेना के शिविर में एकत्र हो चुके हैं। सम्भव है कि युद्ध के दिन देहली वालों की ओर प्रवृत्त होकर उनसे मिल जायँ। संयोग से जिस दिन मल्लू ख़ाँ सेना तथा हाथियों को लेकर निकला था तो उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की थी। शाही आदेश हुआ कि लश्कर में जितने भी हिन्दू हैं उन सब की हत्या करदी जाय। जो कोई इस आदेश का पालन करने में विलम्ब करे उसकी भी हत्या कर दी जाय। जो कोई विलम्ब की सूचना दे उसे विलम्ब करने वाले के परिवार तथा धन सम्पत्ति को प्रदान कर दिया जाय। शाही आदेशानुसार कम से कम १ लाख अधर्मी हिन्दू जेहाद[1] की तलवार द्वारा मार डाले गये। इनमें से नासिरुद्दीन उमर के दल में १५ हिन्दू थे। उसने कभी किसी भेड़ की भी हत्या न की थी। उस दिन शाही आदेशानुसार समस्त १५ को तलवार का भोजन बना दिया। बादशाह ने यह भी आदेश दिया कि सेना के १० व्यक्ति में से एक व्यक्ति ठहर कर हिन्दुओं की स्त्रियों (९५) तथा बालकों की एवं लूट द्वारा प्राप्त पशुओं की रक्षा करे। तदुपरान्त शहर की ओर प्रस्थान करने का दृढ़ संकल्प कर लिया गया। ज्योतिषी शुभ नक्षत्रों के विषय में वाद विवाद कर रहे थे किन्तु साहेब क़िरान ने नक्षत्रों पर विश्वास न करके ईश्वर के भरोसे प्रस्थान करने का आदेश दे दिया।

(९६) साहेब क़िरान ने रविवार ५ (१६ दिसम्बर) को यमुना-तट से ईश्वर की सहायता से प्रस्थान किया और नदी पार करके दूसरी ओर पड़ाव किया। सेना वालों ने सावधानी के विचार से खाई खोद कर एक पुश्ता बनाया—उस पुश्ते को "पुश्तये बहाली" कहते हैं—और वृक्षों की डालियों तथा छप्पर से दीवार तैयार कर ली। खाई के समक्ष भैंसों को गर्दन

---

१ धर्म-युद्ध।

तथा पाँव बाँध कर डाल दिया। छप्परों के पीछे ख़ेमे लगा दिये तथा पशुओं को सुला दिया।[1]

(९८) हिन्दुस्तान के बादशाह सुल्तान महमूद से साहेब क़िरान का युद्ध तथा साहेब क़िरान की विजय।

७ रबी उस्सानी (१८ दिसम्बर) मंगलवार को साहेब क़िरान ने युद्ध का आदेश दिया। सेना के दाहिने बाज़ू में शाहज़ादा पीर मुहम्मद जहाँगीर, अमीर यादगार बरलास, अमीर सुलेमान शाह, अमीर मिज़राब, क़ुमारी तिमुर ख़्वाजा आक़ बूग़ा तथा अन्य शाहज़ादे थे। (९९) बाईं ओर अमीर ज़ादा सुल्तान हुसेन, शाहज़ादा ख़लील सुल्तान, अमीर जहान शाह, शेख़ अरसलान तथा अन्य अमीर थे। अग्रिम दल में अमीर ज़ादा रुस्तम, अमीर शेख़ नूरुद्दीन, अमीर शाह मलिक तथा अन्य अमीर थे। मध्य भाग में सुल्तान स्वयं था।

(१००) शत्रुओं के सेना के मध्य भाग में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का पौत्र सुल्तान महमूद था। उसके साथ मल्लू ख़ाँ था। बायाँ भाग तग़ी ख़ाँ तथा मीर अली हौजा तथा हिन्दुस्तान के अन्य सरदारों के अधीन था। दाहिना भाग मलिक मुईनुद्दीन मलिक हाती तथा उस भू-भाग के समस्त सिपहसालारों के अधीन था। सेना में १० हज़ार अश्वारोही तथा ४० हज़ार पदाति अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित युद्ध के लिए उद्यत थे। पर्वत रूपी हाथियों को विशेष रूप से तैयार किया गया था और उनके दांतों को विष से भरे हुए फालों से दृढ़ बनाया गया था। प्रत्येक की पीठ को पुरते के समान लकड़ियों से घेर कर मज़बूत किया गया था।[2] प्रत्येक तख़्ते पर कुछ बाण चलाने वाले तथा चरख[3] चलाने वाले बैठे थे। यद्यपि संख्या में वे साहेब क़िरान की सेना से अधिक थे परन्तु वीरता में इस सेना का कोई भी मूल्य न था; किन्तु अन्य लोगों ने हाथियों को न देखा था और यह जनश्रुति सुनी थी कि "उनके ऊपर बाण तथा तलवार का प्रभाव नहीं होता। उनका बल इतना अधिक होता है कि (१०१) उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। वे बड़े-बड़े वृक्षों को आक्रमण के समय जड़ से उखाड़ फेंकते हैं और भव्य भवनों को संकेत में तहस नहस कर डालते हैं। युद्ध के समय वे सवारों को घोड़े सहित सूड़ में लपेट कर हवा में उछाल देते हैं।" अतिशयोक्ति से परिपूर्ण इन समाचारों को सुनकर कुछ सैनिक भयभीत थे। साहेब क़िरान ने कुछ आलिमों से, जो सर्वदा उनके साथ रहते थे और जिनमें मौलाना शेख़ुल इस्लाम, सैयिद जलालुल हक़ वद्दीन क़िशी के पुत्र ख़्वाजा अफ़ज़ल तथा मौलाना अब्दुल जब्बार जो क़ाज़ी मौलाना नोमानुद्दीन ख़्वारज़्मी के पुत्र थे प्रश्न किया कि "तुम्हारा स्थान कहाँ होगा?" उन्होंने भयप्रद समाचारों से प्रभावित होकर उत्तर दिया कि "सेवकों का स्थान जहाँ स्त्रियाँ होती हैं वहाँ होगा।"

जब साहेब क़िरान को सेना वालों के उस भय का पता चल गया तो उनके संतोष हेतु आदेश हुआ कि सेना की पंक्तियों को सामने से स्तम्भों की पंक्ति द्वारा सुरक्षित कर दिया जाय; (१०२) उनके समक्ष खाइयाँ खोदी जायँ; खाइयों के सामने भैंसों के गर्दन तथा पाँव, गाय की खाल से बाँध दें। लोहे के बहुत बड़े-बड़े काँटे तैयार किये गये और यह निश्चय हुआ कि पदाति उन्हें सुरक्षित रखें और जब हाथी आक्रमण करें तो वे उनको हाथियों के सामने डाल दें।

---

१ फ़ानशा का विचार है कि तैमूर का शिविर पहाड़ी पर रहा होगा, और युद्ध सफ़दरजंग के मक़बरे में क़ुतुब मीनार के मध्य के मैदान में हुआ होगा। ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ ने भी ख़ुसरो को उसी स्थान पर पराजित किया था। (होदीवाला पृ० ३६१)

२ हौदज लगाये गये थे।

३ पहिये दार आग तथा पत्थर इत्यादि फेंकने की एक मध्य-कालीन मशीन।

इस कारण कि ईश्वर की सहायता सर्वदा साहेब क़िरान को प्राप्त होती रही है, अतः वे दोनों ओर की सेनाओं की मुठभेड़ होने के समय पुश्ता बहाली के आँचल में सेना के शिविर के मध्य में खड़े थे और चारों ओर सावधानी से दृष्टिपात कर रहे थे। दोनों ओर दृष्टिपात करने के पश्चात् प्रथानुसार उन्होंने घोड़े से उतर कर ईश्वर से प्रार्थना की।

(१०३) जिस समय साहेब क़िरान ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे तथा नमाज़ पढ़ रहे थे, कुछ अमीरों, जो अग्रिम भाग में थे उदाहरणार्थ अमीर शेख नूरुद्दीन, अमीर शाह मलिक तथा अल्लाह दाद, के हृदय में यह बात आई कि यदि साहेब क़िरान मध्य भाग से दायें भाग को तथा हमें सहायता भेजें तो अवश्य ही विजय प्राप्त हो जायेगी। नमाज़ के उपरान्त बादशाह ने आदेश दिया कि अली सुल्तान तवाची तथा रुस्तम तग़ी, जो मध्य के भाग में तैयार खड़े थे, तथा उल्तून बख्शी, बस्तरी तथा मूसा रकमाल अपने दलों को लेकर दायें भाग की सहायतार्थ जायें। इसके अतिरिक्त बादशाह ने क़ूशून के अमीरों में से बहुतों को अग्रिम दल की सहायतार्थ (१०४) भेजा। उनके हृदय दृढ़ हो गये और उन्होंने निर्भय होकर विरोधियों पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया और हाथियों को बैलों के समान भगाने लगे। उन योद्धाओं की वीरता को (१०५) संसार में प्रसिद्धि प्राप्त हो गई। विजयी सेना के अग्रिम भाग के सरदारों में से सोनजक बहादुर, सैयिद ख्वाजा बहादुर, अल्लाह दाद, नुसरत क़ेमारी, सायन तिमुर बहादुर, मुहम्मद दरवेश तथा अन्य वीरों ने जब विरोधी सेना को देखा तो वे बाईं ओर से निकल कर उनकी घात में बैठ गये। जब शत्रु की सेना का अग्रिम भाग सामने आया तो वे तलवारें लेकर उन पर टूट पड़े और एक ही आक्रमण में पाँच छः सौ की हत्या कर दी।

(१०६) दायें भाग से शाहज़ादा पीर मुहम्मद ने अपनी असंख्य सेना को लेकर शत्रुओं पर आक्रमण किया। अमीर सुलेमान शाह ने भी अपने घोड़े पर सवार होकर वीरता का प्रदर्शन किया। शाहज़ादा पीर मुहम्मद ने ईश्वर की कृपा से (एक) हाथी पर तलवार का वार किया। दाईं ओर के वीरों ने शत्रु की सेना के बायें भाग पर, जो तग़ी ख़ाँ के कारण अपने स्थान पर डटी हुई थी, आक्रमण किया और उन्हें हौज़े ख़ास से भगा दिया। दायें भाग की सेना में अमीर ज़ादा सुल्तान हुसेन, जहान शाह बहादुर, ग़यासुद्दीन तरखान तथा अन्य वीरों ने शत्रु की सेना के बायें भाग पर आक्रमण किया। शत्रु का बायाँ भाग जो मलिक मुईनुद्दीन तथा मलिक ह्यती के कारण लोहे का पर्वत ज्ञात होता था पूर्णतः छिन्न भिन्न हो गया। अमीर जहान शाह शत्रुओं के पीछे से निकल कर द्वार के निकट पहुँच गया।

जब शत्रु के मध्य भाग ने, जोकि हाथियों से सुसज्जित था, आक्रमण किया तो अमीर ज़ादा रुस्तम, अमीर शेख नूरुद्दीन तथा अमीर शाह मलिक ने उनके सामने निकल कर बड़ी (१०७) वीरता से युद्ध किया और अमीर शेख नूरुद्दीन ने तलवार का वार किया। अमीर शाह मलिक ने वीरता दिखलाई। दौलत तिमुर तवाची, मंगली ख्वाजा तथा अन्य दलों के अमीरों एवं वीरों ने साहेब क़िरान के सौभाग्य से हाथियों की पंक्ति पर आक्रमण किया और उन अजगरों के बीच में प्रविष्ट हो गये और उन महावतों को उन पर्वत की चोटियों से भूमि पर गिरा दिया और उन अजगर रूपी हाथियों को बाणों तथा तलवार से आहत कर दिया। शत्रु पराजित होकर भाग खड़े हुये। हिन्दुस्तान के योद्धा प्राणों के भय से यथासम्भव वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे किन्तु जिस प्रकार आँधी के सामने मच्छर नहीं ठहर सकते, (उसी प्रकार) वे युद्ध न कर सके।

(१०८) सुल्तान महमूद तथा मल्लू ख़ाँ भाग कर नगर में प्रविष्ट हो गये और नगर के द्वार बन्द करा दिये। अमीर ज़ादा ख़लील सुल्तान ने दायें भाग से अपने वीरों की सहायता से

उन हाथियों में से एक को बन्दी बनाकर तथा महावतों को पराजित करके हाथी को भैंस के समान बादशाह के समक्ष लाया।

(१०९) शत्रुओं के भाग जाने के उपरान्त साहेब क़िरान मध्याह्न की नमाज़ के समय देहली के द्वार की ओर बढ़े और हौज़े ख़ास के निकट पड़ाव किया। हौज़े ख़ास एक जलाशय है जिसे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने तैयार कराया था[१]। यदि उसके एक ओर से बाण फेंका जाय तो दूसरी ओर तक नहीं पहुँच सकता। वह वर्षा के जल से भर जाता है और देहली के समस्त निवासी उसी से जल प्राप्त करते हैं। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का मक़बरा उसी के निकट है। साहेब क़िरान के उस स्थान पर उतर पड़ने के कारण दरबार के अन्य अमीर भी वहाँ उपस्थित हुए और उन्होंने बादशाह को बधाई देने के उपरान्त शाहज़ादों, अमीरों तथा वीरों की वीरता का वृत्तान्त एक-एक करके सुनाया। साहेब क़िरान ने आँखों में आँसू भर कर ऐसे पुत्रों, सहायकों तथा मित्रों के ईश्वर द्वारा प्रदान किया जाने पर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता (११०) प्रकट की। वास्तव में ईश्वर ने साहेब क़िरान को एक विचित्र व्यक्ति बनाया था। योग्यता तथा वीरता में वे अद्वितीय थे।

सुल्तान महमूद तथा मल्लू ख़ां का शहर देहली से भागना, देहली की विजय तथा साहेब क़िरान का उनका पीछा करने के लिए सेना भेजना

(११५) जब सुल्तान महमूद, मल्लू ख़ाँ के साथ पराजित होकर शहर को लौटा तो उसने जो कार्य किया था तथा जो धृष्टता प्रदर्शित की थी उसके लिए वह बड़ा लज्जित हुआ; किन्तु लज्जा से कोई लाभ न हो सकता था। बुद्धवार को आधी रात्रि में सुल्तान महमूद, हूदरानी नामक द्वार से तथा मल्लू ख़ाँ बरका नामक द्वार से जो जहाँपनाह के दक्षिण में स्थित हैं देहली के बाहर निकल कर भाग खड़ा हुआ तथा जंगलों और बियाबानों की ओर चल दिया। जब साहेब क़िरान को ज्ञात हुआ कि सुल्तान महमूद तथा मल्लू ख़ाँ भाग गये तो उन्होंने अमीर सईद, तिमुर ख़्वाजा, आक़ बूग़ा ख़ान सईद, सल्दूज़ तथा अल्तून बख़्शी इत्यादि (११६) को उनका पीछा करने के लिए भेजा। उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया और भागने वालों को अधिकार में करके अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त की। मल्लू ख़ाँ के दो पुत्र, सैफ़ ख़ाँ जो मलिक शरफ़ुद्दीन के नाम से प्रसिद्ध था तथा ख़ुदादाद, बन्दी बना दिये गये और उन्हें लौटा लाया गया। उसी रात्रि में अमीर अल्लाह दाद तथा अन्य दलों के अमीरों को आदेश हुआ कि जिन द्वारों से वे लोग भागे थे उन द्वारों एवं अन्य द्वारों पर वे लोग ठहरें ताकि कोई भी नगर के बाहर न जा सके।

बुद्धवार ८ (१९ दिसम्बर) को साहेब क़िरान मैदान दरवाज़े से ईदगाह में पहुँचे। वह द्वार जहाँपनाह नगर का द्वार है और हौज़े ख़ास के समक्ष स्थित है। वहाँ बारगाह लगाई गई और दरबार हुआ। शहर के सैयिद, क़ाज़ी तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में उपस्थित हुए और भूमि चुम्बन के सम्मान से सम्मानित हुए। फ़ज़्लुल्लाह बलख़ी, जोकि मल्लू ख़ाँ का नायब था, देहली के दीवान[२] वालों को लेकर भूमि चुम्बन करने हेतु उपस्थित हुआ। सैयिदों, आलिमों तथा सूफ़ियों ने शाहज़ादों द्वारा शरण की

१ यह ठीक नहीं। हौज़े ख़ास का विवरण, इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण में देखिये। (तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० १७६)।

२ राजकीय विभाग वालों।

प्रार्थना की। अमीर जादा पीर मुहम्मद, अमीर सुलेमान शाह, अमीर जहान शाह तथा अन्य अमीरों ने उनकी प्रार्थनायें बादशाह के समक्ष प्रस्तुत कीं। बादशाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार (११७) करके देहली वालों को शरण प्रदान कर दी। प्रथानुसार विजयी पताकायें तथा नक्कारे द्वारों के ऊपर चढ़ाये गये और विजय तथा सफलता के सुखद समाचार हिसार फ़ीरोज़ा से आकाश तक गूँजने लगे। नगर में जितने भी हाथी थे उन्हें सजाकर इस्लाम को शरण प्रदान करने वाले दरबार में उपस्थित किया गया। हाथियों ने ख़ाकबोस[1] की प्रथानुसार भूमि पर (११८) सिर रखा और जिस प्रकार लोग शरण चाहते हैं उन्होंने भी एक साथ नारा लगाया। १२० हाथी बादशाह के अधिकार में आ गये। लौटने के उपरान्त उनमें से कुछ को शाहज़ादों के लिए उनके राज्यों में भेज दिया गया। कुछ को समरक़न्द में लाया गया। उनमें से दो को तबरेज़ भेजा गया।

शुक्रवार १० (२१ दिसम्बर) को मौलाना नासिरुद्दीन उमर को इस बात के लिए नियुक्त किया गया कि वह अन्य प्रतिष्ठित लोगों को नगर में लायें और साहेब क़िरान के नाम का खुत्बा पढ़ा जाय। इससे पूर्व यह प्रथा थी कि फ़ीरोज़ शाह तथा भूतकाल के सुल्तानों का खुत्बा पढ़ा जाता था। यह प्रथा समाप्त कर दी गई। खुत्बे को साहेब क़िरान के नाम से सम्मान प्राप्त हुआ। दबीरों[2] तथा मुन्शियों ने प्रसिद्ध विजय का उल्लेख विभिन्न प्रदेशों में (११९) पहुँचा दिया। साहेब क़िरान की विजय तथा युद्ध का हाल संसार के कोने-कोने में प्रसारित हो गया। दीवान के मुन्शियों ने शाही आदेशानुसार नगर में प्रविष्ट होकर अमानी के धन का विवरण तैयार करके कर वसूल करने वालों को कर वसूल करने के लिए नियुक्त कर दिया।

(१२१) वृहस्पतिवार १६ (२७ दिसम्बर) को एक शाही सेना (तैमूर की सेना) देहली द्वार पर एकत्र हो गई थी। बादशाह ने उनके विषय में आदेश दिया कि प्रतिष्ठित अमीर उन लोगों को ऐसा करने से रोकें; किन्तु उस स्थान वालों के भाग्य में विनाश लिखा जा चुका था, अतः उसके कारण उपस्थित हो गये।

इस बीच में कुछ बेगमें, चलपान मलिक आग़ा[3] तथा अन्य बेगमें हज़ार सुतून को, जिसे मलिक जौनां ने जहाँपनाह में बनवाया था, देखने के लिए शहर में प्रविष्ट हुईं। प्रतिष्ठित दीवान के अमीर तथा मुन्शी उदाहरणार्थ जलालु इस्लाम तथा अन्य लेखक द्वार पर बैठे हुए थे और अमानी के धन का लेखा तैयार कर रहे थे। इसी बीच में कई हज़ार सवारों ने, जो शकर तथा अनाज से सम्बन्धित शाही आदेश लिए हुए थे, शहर की ओर प्रस्थान किया। शाही आदेश दिया जा चुका था कि उस प्रदेश के निवासियों तथा अमीरों में से जो लोग विद्रोही हो गये थे और शहर से भाग गये थे उन्हें बन्दी बना लिया जाय। इसी कारण भीतर भी शाही सेना का ज़ोर हो गया। क्योंकि शत्रु की सेना के बहुत से लोग भाग कर नगर में प्रविष्ट हो गये थे और अग्निपूजक हिन्दुओं के समूह देहली से सीरी, जहाँपनाह तथा प्राचीन देहली पर आक्रमण कर रहे थे और वहाँ के बहुत से अधर्मियों ने अपने घरबार को परिवार सहित जला डाला था, अतः शाही सेना वालों ने लूट मार प्रारम्भ कर दी। हिन्दुओं की धृष्टता के बावजूद अमीरों ने द्वार बन्द कर लिए थे ताकि बाहर की सेना भीतर प्रविष्ट न हो पाये और भीतर (१२२) अशान्ति न हो, किन्तु उस शुक्रवार की रात्रि में विजयी सेना के लगभग १५ हज़ार व्यक्ति कोट के भीतर थे। वे रात्रि के प्रारम्भ से प्रातःकाल तक लूटमार करते रहे तथा घरों में आग

१ भूमि चुम्बन।

१ पत्र व्यवहार करने वालों।

३ वह तैमूर की पत्नी थी।

लगाते रहे। कुछ स्थानों पर धृष्ट अग्निपूजक भी लूटमार कर रहे थे। प्रातःकाल समस्त सेना शहर में प्रविष्ट हो गई और सेना में लूट के कारण हाहाकार मच गया।

शुक्रवार १७ (२८ दिसम्बर) को खुली लूटमार होती रही। सीरी तथा जहाँपनाह के बहुत से महल लूट लिए गये। शनिवार १८ (२९ दिसम्बर) को भी इसी प्रकार लूट होती रही। शाही सेना के प्रत्येक व्यक्ति ने लगभग डेढ़-डेढ़ सौ स्त्री पुरुष तथा बालक बन्दी बनाये। साधारण से साधारण व्यक्ति को २० दास प्राप्त हो गये थे। जवाहरात, मोती, याक़ूत, हीरे, नाना प्रकार के वस्त्र तथा सोने चाँदी के बर्तन और सुल्तान अलाउद्दीन के समय के जो तन्के प्राप्त हुये उनका यदि उल्लेख किया जाय तो उनमें से एक भाग की जो कल्पना हो सकती है उससे नौ गुना अधिक प्राप्त हुआ था।

(१२३) रविवार १९ (३० दिसम्बर) को प्राचीन देहली की ओर आक्रमण किया गया। बहुत से अधर्मी हिन्दू उस नगर में भाग गये थे और जामा मस्जिद में एकत्र हो गये थे। वे अपनी रक्षा तथा युद्ध के लिए तैयार थे। अमीर शाह मलिक तथा अली सुल्तान तवाची ५०० वीरों को लेकर उस ओर बढ़े और उन्होंने शत्रुओं को तलवार के घाट उतार दिया। हिन्दुओं के सिरों का बुर्ज आकाश तक पहुँच गया और उनका शरीर पक्षियों का भोजन हो गया।

उस दिन प्राचीन देहली के सब लोग नष्ट कर दिए गये। वहाँ के निवासियों में से जो लोग शेष रहे उन्हें बन्दी बना लिया गया। कुछ दिनों तक लगातार बन्दियों को नगर के बाहर लाया जाता था, तूमानों तथा क़ूशूनों के अमीरों में से प्रत्येक एक समूह को बन्दी बना लेता (१२४) था। उनमें से कई हज़ार कलाकार थे। शाही आदेश हुआ कि कलाकारों को शाहज़ादों, आग़ाओं तथा अमीरों में, जोकि उपस्थित थे, बाँट दिया जाय। जो शाहज़ादे तथा आग़ा अपने अपने स्थान पर थे उनके लिये कलाकारों को उनके सेवकों को दे दिया जाय।

साहेब क़िरान की यह आकांक्षा थी कि वे समरक़न्द में तराशे हुए पत्थरों की एक जामा मस्जिद का निर्माण करायें, अतः उन्होंने यह आदेश दिया कि पत्थर काटने वालों को शाही सेवा के लिए पृथक् कर लिया जाय।

(१२५) इन तीन नगरों, जिनका उल्लेख किया गया, में से सीरी एक गोल चहारदीवारी से घिरा हुआ है। प्राचीन देहली भी उसी प्रकार की एक चहारदीवारी से, जो उससे बड़ी है, घिरा हुआ है। सीरी तथा सीरी की चहारदीवारी से, जो उत्तर-पूर्व में स्थित है, प्राचीन देहली की चहारदीवारी तक, जोकि दक्षिण पश्चिम में है, दोनों ओर दीवार खिंची हुई है। उसे जहाँपनाह कहते हैं। वह देहली से बड़ी है। सीरी से जहाँपनाह की ओर तीन द्वार खुलते हैं और चार द्वार बाहर की ओर। जहाँपनाह में १३ द्वार हैं, ६ उत्तर-पश्चिम और ७ दक्षिण-पूरब की ओर। देहली से जिनमें यह तीन नगर हैं ३० द्वार बाहर की ओर खुलते हैं।

साहेब क़िरान का देहली से विजय प्राप्त करके हिन्दुस्तान के अन्य स्थानों की ओर युद्ध के उद्देश्य से प्रस्थान

(१२६) साहेब क़िरान ने १५ दिन तक देहली में विश्राम किया। तत्पश्चात् उन्होंने हिन्दुस्तान के अन्य स्थानों की ओर मुशरिकों[१] तथा विद्रोहियों के विनाश का आदेश हुआ। प्रस्थान के समय साहेब क़िरान ने आदेश दिया कि सैयिद, क़ाज़ी, आलिम तथा सूफ़ी जहाँपनाह

१ एक ईश्वर की सत्ता के साथ अन्य ईश्वरों को मानने वाले।

की जामा मस्जिद में एकत्र हों। विशेष सेवकों में से एक को उनके ऊपर इस आशय से दारोग़ा[1] नियुक्त किया गया कि विजयी सेना के प्रस्थान करने के कारण उन लोगों को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

बुद्धवार २२ रबी उल आख़िर ८०१ हि० (२ जनवरी १३९९ ई०) को बादशाह ने एक पहर दिन के उपरान्त जहाँपनाह से प्रस्थान किया और फ़ीरोज़ाबाद पहुँचे, जो वहाँ से तीन कोस की दूरी पर है। कुछ क्षण वहाँ पर रुक कर उस स्थान के पवित्र स्थानों के दर्शन किये। फ़ीरोज़ाबाद की मस्जिद में, जो यमुना-तट पर तराशे हुये पत्थर की बनी हुई है, नमाज़ पढ़ी तथा ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। जब वे सवार होकर फ़ीरोज़ाबाद द्वार के बाहर निकले तो सैयिद शम्सुद्दीन जोकि तिरमिज़ के सैयिदों से सम्बन्धित थे तथा अलाउद्दीन नायब शेख़ कोकरी जोकि इससे पूर्व विजयी शिविर से राजदूत बनाकर लाहावुर (लथा) तथा कोटला[2] की ओर भेजे गये थे पहुँचे और उन्होंने निवेदन किया कि उस स्थान के शासक बहादुर नहार[3] ने आज्ञाकारिता प्रदर्शित की है। शुक्रवार के दिन वह दरबार में भूमि चूमने का सम्मान प्राप्त करेगा।

(१२८) जब वज़ीराबाद के निकट जहाँनुमा के उस ओर पड़ाव हुआ तो बहादुर नहार के भेजे हुए दो तोते राजदूतों ने प्रस्तुत किये और यह निवेदन किया कि वे दोनों तोते तुग़लुक़ शाह के राज्यकाल से जीवित हैं और बहुत समय तक वे सुल्तानों की सभाओं में मीठी मीठी बातें करते रहे हैं। साहेब क़िरान ने उन पक्षियों की प्राप्ति को अपने लिए बड़ा शुभ समझा और वे वज़ीराबाद से कूच करके यमुना नदी पार करके ६ कोस यात्रा के उपरान्त मौदूला ग्राम में उतरे। शुक्रवार २४ (४ जनवरी) को मौदूला ग्राम से प्रस्थान करके ६ कोस की यात्रा के उपरान्त कत्ता नामक ग्राम में शाही शिविर लगे। उस दिन बहादुर नहार तथा उसका पुत्र कुल्ताश उचित प्रकार के उपहार लेकर शाही दरबार में उपस्थित हुये और भूमि चूमने के सम्मान से सम्मानित हुये।

(१२९) शनिवार २५ (५ जनवरी) को कत्ता से प्रस्थान करके बाग़पत में पड़ाव हुआ। इन दोनों स्थानों के बीच में ६ कोस की दूरी है। रविवार २६ (६ जनवरी) को बाग़पत से प्रस्थान करके ५ कोस यात्रा के उपरान्त असार नामक ग्राम में, जो दो नदियों के मध्य में है, पड़ाव हुआ। दो दिन तक उसी मंज़िल पर पड़ाव रहा।

मेरठ के क़िले की विजय

क्योंकि मेरठ का क़िला हिन्दुस्तान के क़िलों में बड़ा प्रसिद्ध था अतः साहेब क़िरान ने रविवार २६ रबी उल आख़िर (६ जनवरी) को रुस्तम तग़ी बूग़ा, अमीर शाह मलिक तथा अमीर अल्लाह दाद को आसार नामक ग्राम से उस कोट के द्वार पर भेजा। उन लोगों ने मंगलवार २८ (८ जनवरी) को वहाँ से समाचार भेजे कि इलयास ऊग़ानी, मौलाना अहमद थानेश्वरी का पुत्र तथा सफ़ी अग्निपूजक अपने अग्निपूजक दलों को लिए हुए मेरठ के क़िले में बन्द हैं और युद्ध के लिए उद्यत हैं। वे कहते हैं कि तुर्माशीरीं बादशाह इस क़िले के द्वार तक आया किन्तु उसे विजय न कर सका। साहेब क़िरान इस बात से बड़े कुपित हुए और उन लोगों ने तुर्माशीरीं ख़ान के प्रति जो धृष्टता की थी, उससे वे बड़े क्रोधित हुए। वे उसी दिन मंगलवार को मध्याह्नोपरान्त की नमाज़ के बाद १० हज़ार सवारों को लेकर चल खड़े हुए और २० कोस यात्रा की। बुधवार २९ (९ जनवरी) को मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के समय विजयी पताकाओं

---

१ रक्षक, प्रबन्धक।

२ आईने अकबरी के अनुसार आगरा प्रान्त के तिजारा सरकार में।

३ बहादुर नाहिर।

(१३०) ने मेरठ के क़िले पर छाया डाली। उसी समय आदेश हुआ कि दलों के अमीर अपने अपने समक्ष खाइयाँ खोदें। रात्रि के समय प्रत्येक बुर्ज तथा बारे[1] के समक्ष १०,१५ गज़ खाई खोद दी गई। अग्निपूजक यह हाल देखकर घबड़ा उठे और विस्मित हो गये और उनके हाथ पैर बेकार हो गये।

दूसरे दिन अमीर अल्लाह दाद अपने अधीन दलों सहित जो वफ़ादार[2] कहलाते थे तथा क़ूचीनों[3] में से थे क़िले के द्वार पर आये। ग़ाज़ी तकबीर[4] के नारे लगाने लगे। उसके सेवकों में से एक व्यक्ति सराय नामक ने जो क़लन्दर का पुत्र था सबसे आगे बढ़कर क़िले के बुर्ज पर कमन्द फेंकी और बारे के ऊपर पहुँच गया। तत्पश्चात् अन्य वीर भी क़िले पर पहुँच गये और रुस्तम बरलास प्रतीक्षा किये बिना क़िले के सरदारों अर्थात् इलयास ऊग़ानी तथा थानेश्वरी के पुत्र की गर्दनें कुत्तों के समान बांधकर बादशाह के दरबार में उपस्थित हुआ। अग्निपूजक सफ़ी जोकि उस क़िले वालों में सबसे अधिक प्रतिष्ठित था, मारा गया।

(१३१) वृहस्पतिवार पहली जमादी उल अव्वल (१० जनवरी) को क़िले के शेष अग्निपूजकों की तलवार द्वारा हत्या होने लगी और उनके स्त्री तथा बालक बन्दी बनाये जाने लगे। बादशाह के आदेशानुसार खाइयों में आग डाल दी गई और उस क़िले के बुर्ज तथा बारे को भूमिसार कर दिया गया। यह विजय अन्य विजयों की अपेक्षा बड़ी महत्वपूर्ण थी। (१३२) जो क़िला तुर्माशीरीं द्वारा भी विजय न हुआ था उसे ईश्वर ने साहेब क़िरान के लिए सरल बना दिया।

साहेब क़िरान ने इतनी अधिक योग्यता तथा वीरता के बावजूद क़िले के विजय के पूर्व क़िले वालों को पत्र लिखने का आदेश दिया। मुन्शियों ने पत्र में लिखा कि 'हमारी तुर्माशीरीं बादशाह से क्या तुलना ?' जब यह वाक्य पढ़े गये तो साहेब क़िरान ने असंतुष्ट होकर मुन्शियों के प्रति क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि वे लिखें कि "तुर्माशीरीं ख़ाँ मेरे पूर्व हो चुका है और मुझ से श्रेष्ठ है।"

(१३३) इससे पता चलता है कि अत्यधिक सम्मान तथा गौरव प्राप्त कर लेने के बाद भी साहेब क़िरान में किसी प्रकार का अभिमान उत्पन्न न हुआ था।

अग्निपूजकों से गंगा नदी पर युद्ध

मेरठ के क़िले पर विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त साहेब क़िरान ने उसी वृहस्पतिवार पहली जमादी उल अव्वल (१० जनवरी) को आदेश दिया कि अमीर जहाँपनाह बायें भाग की सेना को लेकर युद्ध हेतु यमुना नदी के ऊपरी भाग की ओर प्रस्थान करे और उस ओर के अग्निपूजकों का विनाश करे। उन लोगों ने आदेश के पालन हेतु क़रासू नदी के तट से प्रस्थान किया। संसार को विजय करने वाली पताकाओं[5] ने गंगा नदी की ओर प्रस्थान किया। मेरठ के क़िले तथा गंगा नदी के बीच में १४ कोस की दूरी है। उस मार्ग में अमीर (१३४) सुलेमान शाह विजयी सेनाओं से मिला। उन लोगों ने उस स्थान के आसपास के अग्निपूजकों से युद्ध करने के उद्देश्य से ६ कोस यात्रा की और मंसूरा नामक ग्राम में शाही शिविर लगे। रात्रि में वहीं विश्राम किया गया। शुक्रवार २ (११ जनवरी) को प्रातःकाल वहाँ से प्रस्थान हुआ। शाही सेनायें गंगा नदी की ओर बढ़ीं और पीरोज़पुर ग्राम में पहुँचीं।

१ सम्भवतः क़िले का कोई भाग।
२ हितैषी।
३ काशग़र के सैनिक।
४ अल्लाहो अकबर— 'अल्लाह' महान है।
५ तैमूर की सेना।

नदी के पार करने के स्थान का पता लगाने के लिए ३ कोस की यात्रा की गई। १ पहर दिन व्यतीत हो जाने के उपरान्त वे नदी को पार करने के स्थान पर पहुँचे किन्तु वहाँ जल छिछला न था तथा सुगमतापूर्वक नदी पार न की जा सकती थी। सेना के कुछ सवारों ने तैर कर नदी पार कर ली। जब साहेब क़िरान ने नदी पार करना निश्चय किया तो जो अमीर उपस्थित थे उन्होंने निवेदन किया कि 'अमीरज़ादा पीरमुहम्मद, अमीर सुलेमान शाह ने दायें भाग की सेना सहित पीरोज़पुर के पास से नदी पार की थी। यदि साहेब क़िरान की अनुमति हो तो उस दिन नदी के इस ओर ही ठहरा जाय।' बादशाह ने उनकी बात स्वीकार कर ली। शाही आदेश हुआ कि कुछ वीर नदी पार कर लें। अमीर ज़ादा शाह-रुख़ तथा शेख़ अली बहादुर के पुत्र सैयिद ख़्वाजा तथा मलिकत के पुत्र जहान मलिक के तूमानों एवं अन्य वीरों ने शाही आदेशानुसार नदी पार कर ली और साहेब क़िरान ने नदी तट पर २ कोस यात्रा करके पड़ाव किया।

(१३५) उसने शनिवार ३ (१२ जनवरी) को गंगा नदी पार की और तुग़लुक़पुर की ओर, जो गंगा नदी के ऊपर है, प्रस्थान किया। उस स्थान से तुग़लुक़पुर २० कोस की दूरी पर है। १५ कोस यात्रा करने के उपरान्त बादशाह को यह समाचार प्राप्त हुआ कि गंगा नदी के नीचे की ओर हिन्दुओं का एक बहुत बड़ा समूह एकत्र हो गया है। शाही आदेश हुआ कि तूमान के अमीर उदाहरणार्थ अमीर मुबश्शिर, अली सुल्तान तवाची तथा क़ूशूनों के अन्य अमीर ५ हज़ार सवार लेकर उस ओर प्रस्थान करें। विजयी पताकायें तुग़लुक़पुर की ओर बढ़ीं। मार्ग में साहेब क़िरान, जिन पर संसार की दृढ़ता का आधार है, रुग्ण हो गये। उनके बाज़ू में एक फोड़ा निकल आया और पीड़ा होने लगी। सेवक उपचार में व्यस्त हो गये। उस समय समाचार प्राप्त हुआ कि अग्निपूजकों का एक बहुत बड़ा समूह ४८ नौकाओं पर सवार होकर नदी की ओर से आ रहा है, प्रत्येक नाव पर्वत के एक टुकड़े के समान है।

(१३६) जब साहेब क़िरान को यह समाचार प्राप्त हुआ तो शत्रुओं तथा मुशरिकों से युद्ध करने के उत्साह में साहेब क़िरान के ऊपर बीमारी का कोई चिह्न न रहा और वे तुरन्त सवार होकर सेवकों सहित नदी की ओर बढ़े। जेहाद[1] करने वाले, शत्रुओं के समक्ष पहुँच गये और कुछ बिना भय के नदी में कूद पड़े और गहरे जल में अजगरों के समान तैरते हुए शत्रुओं के पास तक पहुँच गये। कुछ लोगों ने नदी तट ही से उन लोगों पर बाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। जो लोग नदी में घोड़े डाल कर तैर रहे थे वे शत्रुओं के पास पहुँच गये तथा नौकाओं को पकड़ कर वे उनके भीतर प्रविष्ट हो गये। कुछ वीरों ने बहुत सी नौकाओं को पकड़ कर अग्निपूजकों को तलवार के घाट उतार दिया और उनकी स्त्रियों तथा बालकों को (१३७) बन्दी बना लिया। १० नौकाओं के शत्रुओं ने नदी के मध्य में युद्ध करने की विशेष धृष्टता की किन्तु अन्त में शाही सेना को विजय प्राप्त हुई और सभी बाणों तथा तलवार द्वारा मार डाले गये।

तीन युद्ध जो साहेब क़िरान ने एक ही दिन में अग्निपूजकों से किये

(१३८) साहेब क़िरान ने नाव वालों से युद्ध के उपरान्त तत्काल नदी तट से प्रस्थान किया और विजयी पताकायें तुग़लुक़पुर की ओर बढ़ीं। उसी रात्रि में रविवार ४ (१३ जनवरी) को अमीर अल्लाह दाद, बायज़ीद, क़ूजीन तथा अल्तून बख़्शी के पास से, जो अग्रिम दल की (१३९) सेना के साथ भेजे गये थे, दो व्यक्ति पहुँचे और उन्होंने बादशाह से निवेदन किया कि नदी के उस ओर काफ़िरों का एक बहुत बड़ा समूह अत्यधिक सामान तथा तैयारी सहित एकत्र

१ इस्लाम के लिए धर्म-युद्ध।

हो गया है और उनका अशुभ सरदार मुबारक ख़ां है, उसने शत्रुता की पताकायें फैला रखी हैं और युद्ध के लिए उद्यत हैं।

जब साहेब क़िरान को यह हाल ज्ञात हुआ तो वे युद्ध के लिए तैयार हुए और प्रातः-काल के पूर्व १ हज़ार सवार लेकर गंगा नदी पार की तथा १ कोस यात्रा करके प्रातःकाल की नमाज़ पढ़ी। सेना ने युद्ध के लिए अस्त्र शस्त्र लगाये। जब वे शत्रु की सेना के निकट पहुँचे तो मुबारक ख़ाँ ने १० हज़ार अश्वारोहियों तथा पदातियों को सुव्यवस्थित कर दिया था तथा ढोल, पताकाओं तथा परिजन सहित खड़ा था।

(१४०) उस समय साहेब क़िरान के हृदय में यह आया कि 'अधर्मी हिन्दुओं की सेना की संख्या अधिक है और इस्लामी सेना इस समय बहुत थोड़ी है। दाहिनी तथा बाईं ओर की सेनायें इधर उधर भेजी जा चुकी हैं और दूर-दूर के स्थानों पर हैं। इस स्थान पर इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं है कि ईश्वर के ऊपर भरोसा किया जाय।' वे इसी सोच में थे कि अमीर ज़ादा शाह रुख़ के तूमानों के ५ हज़ार सवार, जो इससे पूर्व सैयिद ख्वाजा तथा जहान मलिक के साथ नदी पार करके आक्रमण के लिये भेजे गये थे, शुभ शिविर में पहुँचे। साहेब क़िरान ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और आदेश दिया कि अमीर शाह मलिक तथा अमीर अल्लाह दाद १० हज़ार विशेष शाही सेवकों के साथ शत्रु पर आक्रमण करें और उनकी संख्या पर कोई ध्यान न दें।

(१४१) योद्धाओं ने शाही आदेश का पालन किया और वे निर्भय होकर उन अग्निपूजकों पर टूट पड़े। इस्लाम के सौभाग्य की शक्ति तथा साहेब क़िरान के इक़बाल से उन दुष्टों के हृदय में आतंक आरूढ़ हो गया और वे भाग खड़े हुए, तथा जंगलों में घुस गये। विजयी सेनाओं ने उनका पीछा किया और उन अधर्मियों की बहुत बड़ी संख्या तलवार के घाट उतार दी गई। उनके स्त्री तथा बालक बन्दी बना लिए गये। सेना वालों को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई।

साहेब क़िरान ने थोड़ी देर तक वहाँ पड़ाव किया। उसी समय समाचार प्राप्त हुआ कि कोपला[1] दर्रे के आंचल में जो गंगा नदी के तट पर है बहुत से अग्निपूजक एकत्र हो गये हैं। वे तत्काल ५०० सवार लेकर कोपला की ओर बढ़े। शेष सेना लूट की सम्पत्ति एकत्र करने में व्यस्त हो गई। जब विजयी सवारी उस दर्रे के निकट पहुँची तो वहाँ शत्रुओं की बहुत बड़ी संख्या मिली, किन्तु अमीर शाह मलिक तथा अली सुल्तान तवाची ने ग़ाज़ियों[2] की संख्या की न्यूनता के बावजूद तकबीर के नारे लगाते हुए उन पर आक्रमण कर दिया।

(१४२) यद्यपि अधर्मी बहुत बड़ी संख्या में थे किन्तु वे पराजित हुए और शाही सेना को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई।

जब कि सेना वाले लूट की धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा रहे थे और शाही सेना में १०० सवार से अधिक न थे, उस समय मलिक शेख़ा नामक अग्निपूजक ने १०० अश्वारोहियों तथा पदातियों को लेकर फ़िदाइयों[3] की भाँति तलवारें खींच कर उन पर आक्रमण कर दिया। साहेब क़िरान उन अग्निपूजकों की ओर बढ़े। जब वे निकट पहुँचे और उन पर बाण खींचने लगे तो शाही सेना में से एक मूर्ख ने बिना पता लगाये कहा कि यह शेख़ कोकरी है। विजयी सेना के साथ जितने दास थे वे सब यह सुनकर पर्वत की ओर चल दिये और शेख़ा अग्निपूजक ने कुछ मुसलमान सैनिकों की हत्या कर दी। जब साहेब क़िरान को यह हाल ज्ञात हुआ

१ सम्भवतः हरिद्वार।
२ मुसलमान योद्धाओं।
३ जो कोई किसी कठिन कार्य हेतु अपने प्राणों की बलि देने को उद्यत हो जाता है।

तो वे उस दुष्ट की ओर बढ़े और उस पर आक्रमण करके उसे घोड़े पर से भूमि पर गिरा दिया गया। उसकी ग्रीवा में रस्सी बाँध कर साहेब क़िरान के पास लाया गया। साहेब क़िरान ने उससे उसके विषय में पूछा, किन्तु उत्तर देने के पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई।

(१४३) उसी समय यह समाचार प्राप्त हुआ कि कोपला के दर्रे में जो इस स्थान से दो कोस की दूरी पर है अग्निपूजक, हिन्दुओं का एक बहुत बड़ा दल एकत्र है। इस यात्रा में एक जंगल मिलता है जिसमें इतने अधिक वृक्ष हैं कि वायु भी बड़ी कठिनाई से उसे पार कर सकती है। साहेब क़िरान ने उस दिन दो बार स्वयं युद्ध में भाग लिया था और यह विश्राम का समय था। जब उन्हें यह सूचना प्राप्त हुई तो वे अपने कुछ विश्वस्त दासों तथा क़ूशून के अमीरों को लेकर उस दर्रे की ओर बढ़े। क्योंकि मार्ग में बड़ा कठिन जंगल था तथा हिन्दुओं की संख्या अधिक थी और शाही सेना कम थी अतः साहेब क़िरान के हृदय में यह बात आई कि इस समय पुत्र पीर मुहम्मद तथा सुलेमान शाह पहुँच जायँ तो यह परमेश्वर की विचित्र लीला होगी। उन्हें ३ दिन पूर्व आक्रमण हेतु एक दूर के स्थान भेजा गया था और यह आशा न की जा सकती थी कि वे उपस्थित हो जायेंगे। क्योंकि उन्होंने पीरोज़पुर के (१४४) युद्ध में नदी पार की थी और उनका यह विचार था कि विजयी सेनायें उस ओर नदी को पार न करेंगी, अतः उसी दिन रविवार को मध्याह्नोत्तर तथा सायंकाल की नमाज़ के समय के मध्य में वे पहुँच गये और सबने मिल कर उन अग्निपूजकों पर आक्रमण किया। उन मार्गभ्रष्टों में से बहुत से लोगों को तलवार के घाट उतार दिया और इस्लामी सेना को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। उस एक ही दिन में साहेब क़िरान ने स्वयं काफ़िरों से ३ युद्ध किये और वह एक विचित्र बात है। सायंकाल विजयी सेनायें लूट की अपार धन सम्पत्ति लेकर दूसरे युद्ध के पड़ाव पर लौट आईं।

कोपला दर्रे के अग्निपूजकों का विनाश तथा एक पत्थर का उल्लेख जो गाय के समान था और जिसे मार्ग-भ्रष्ट हिन्दू पूजते थे।

(१४५) कोपला दर्रा ऐसे पर्वत के आँचल में है जहाँ से गंगा नदी बहती है। वहाँ से १५ कोस की दूरी पर एक ऐसा पत्थर है जिसका रूप गाय के समान है। उस नदी का जल उस पत्थर से निकलता है। हिन्दुस्तान के मार्गभ्रष्ट उस पत्थर की पूजा करते हैं और चारों ओर से उस दर्रे में पहुँच कर लोग उसके द्वारा ईश्वर के निकट पहुँचने की इच्छा करते हैं और अपने मुर्दों को जला कर उनकी राख उस नदी में डालते हैं और इसे अपनी मुक्ति का साधन (१४६) समझते हैं। वे सोना चाँदी भी उस नदी में फेंकते हैं। जीवित लोग भी उस नदी में प्रविष्ट होकर अपने सिर पर जल डालते हैं तथा अपने सिर तथा दाढ़ी के बाल मुंडवाते हैं। इसे वे उसी प्रकार से पूजा समझते हैं जिस प्रकार से मुसलमान हज करते हैं। अबू नसर उतबी ने हिन्दुस्तान के काफ़िरों का हाल तथा इस नदी के सम्बन्ध में उनके अपवित्र विश्वासों का उल्लेख 'किताबे यमीनी' में किया है। नासिरुद्दीन सुबुक्तिगीन तथा उसके पुत्र सुल्तान महमूद ने वर्षों तक हिन्दुस्तान में युद्ध किया तथा वहाँ के प्रदेश एवं क़िलों पर विजय प्राप्त की। सुल्तान महमूद ने अपने राज्य के अन्त में इस ओर की विजय पर ध्यान दिया और इस्लामी सेना को इस स्थान तक पहुँचाया। यमीनी के लेखक ने महमूद के इस युद्ध का बड़ा महत्त्व बताया है। साहेब क़िरान ने पहले ही आक्रमण में हिन्दुस्तान की ओर इस प्रकार प्रस्थान किया कि कुछ शाहज़ादों तथा अमीरों को सेना सहित एक मार्ग से भेज दिया और स्वयं सेना लेकर दूसरे मार्ग से अग्रसर हुये। दोनों दलों ने मार्ग में जितने भी प्रदेश, क़िले, ग्राम तथा सामान थे, सब पर विजय प्राप्त कर ली और दुष्ट काफ़िरों को पराजित कर दिया

और देहली तक, जो उस देश की राजधानी है और जिसका सविस्तार उल्लेख हो चुका है, पहुँच गये। देहली की विजय के उपरान्त गंगा नदी पार करके उस स्थान तक, जिसकी चर्चा हो रही है, युद्ध करने के लिए पहुँचे।

(१४७) उस दर्रे में अग्निपूजकों का एक समूह उस समय तक विद्यमान था और उनके पास अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा मवेशी इत्यादि थे। सोमवार ५ जमादी उल अव्वल (१४ जनवरी) को विजयी पताकायें कोपला दर्रे की ओर बढ़ीं। दुष्टों को अपनी संख्या की अधिकता पर अभिमान था और वे युद्ध के कुत्सित विचार से उस स्थान पर डटे हुए थे। शाही सेना में दाहिनी ओर अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद तथा अमीर सुलेमान शाह थे। बाईं ओर भी प्रतिष्ठित अमीर नियुक्त किये गये थे। मध्य भाग में अमीर शाह मलिक तथा अन्य शाहज़ादे थे। इस्लामी सेना के तकबीर के नारों को सुनकर शत्रु पर्वतों में भाग गये, और इस्लामी सेना (१४८) ने उनका पीछा करके उनकी हत्या करनी प्रारम्भ करदी। अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई।

उस प्रदेश के मुशरिकों के अशुभ अस्तित्व के समाप्त हो जाने के कारण विजयी पताकायें उसी दिन वापस हुईं और गंगा नदी पार करके नदी तट पर मध्याह्नोत्तर की नमाज़ पढ़ने के लिए रुकीं। तत्पश्चात् उन्होंने गंगा नदी के बहाव की ओर ५ कोस की यात्रा करके पड़ाव किया।

साहेब क़िरान की हिन्दुस्तान से वापसी

(१४९) मंगलवार ६ जमादी उल अव्वल (१५ जनवरी) को साहेब क़िरान ने गंगा नदी के तट से प्रस्थान किया। अमीर सरदार अपने-अपने मोर्चों की ओर पहुँच गये। साहेब क़िरान ने आदेश दिया कि ख़ेमे लगाने वाले चले जायँ और ख़ेमों को शाही सवारी को सौंप जायँ। बुद्धवार ७ (१६ जनवरी) को ६ कोस की यात्रा के उपरान्त पड़ाव हुआ। इस मंज़िल तथा ख़ेमों के बीच में ४ कोस की दूरी थी। उस स्थान पर यह समाचार प्राप्त हुआ कि सिवालिक पर्वत के दर्रों में अत्यधिक अग्निपूजक तथा दुष्ट हिन्दू उपस्थित हैं।

(१५०) जब साहेब क़िरान को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने आदेश दिया कि जो विजयी सेना ख़ेमों में है वह उस पर्वत की ओर प्रस्थान करे। साहेब क़िरान स्वयं शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके उस स्थान तक पहुँच गये। सिवालिक पर्वत ६ कोस रह जाता था। उन्होंने वहाँ पड़ाव किया। उस स्थान पर ख़लील सुल्तान तथा अमीर शेख़ नूरुद्दीन ख़ेमों से आकर शुभ सवारी से मिले। अमीर सुलेमान शाह तथा अन्य अमीरों ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि विजयी पताकायें लौट जायें तथा साहेब क़िरान विश्राम करें और हम लोग इन हिन्दुओं पर आक्रमण करेंगे तथा उनके अभिमान को नष्ट कर देंगे।

(१५१) उसी दिन साहेब क़िरान ने आदेश दिया कि अमीर जहान शाह, जो बायें भाग की सेना का अमीर था और जो इससे पूर्व यमुना नदी के ऊपर आक्रमण के लिए भेजा गया था, उपस्थित हो। अमीर जहान शाह शाही आदेशानुसार उपस्थित हुआ।

सिवालिक पर्वत पर आक्रमण

साहेब क़िरान ने शनिवार १० जमादी उल अव्वल (१९ जनवरी) को सिवालिक पर्वत पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया। उस दर्रे में एक राय था जिसका नाम बहरोज़ था। वास्तव में वह बड़ा अभागा था। उसने अत्यधिक मनुष्य एकत्र कर लिये थे और पर्वत की दृढ़ता पर अभिमानी था। विजयी सेना के दाहिने भाग के अमीर ज़ादा पीर

(१५२) मुहम्मद तथा अमीर सुलेमान शाह, बायें भाग के अमीर ज़ादा सुल्तान हुसेन तथा अमीर जहान शाह, मध्य भाग के अग्रिम दल के अमीर शेख नूरुद्दीन तथा अमीर शाह मलिक एवं दायें, बायें तथा मध्य भाग के समस्त अमीरों ने वीरता प्रदर्शित करते हुए काफ़िरों से युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया। साहेब क़िरान ने उस दर्रे के दहाने पर पड़ाव किया और (१५३) अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त की। साहेब क़िरान ने आदेश दिया कि शक्तिशाली लोगों में से जिस किसी ने ३, ४ सौ गायें पकड़ी हों वे उनको शक्तिहीन लोगों को बांट दें। उस परोपकार के कारण सेना के समस्त अश्वारोहियों, पदातियों तथा छोटे बड़े लोगों को लाभ हुआ और कोई भी उस लाभ से वंचित न रहा। रविवार की रात्रि में साहेब क़िरान ने अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद के शिविर में विश्राम किया।

(१५४) विजयी पताकाओं ने उस स्थान से प्रस्थान करके बहरा ग्राम में, जो बकरी के निकट था तथा मियांपुर की विलायत (प्रदेश) के नाम से प्रसिद्ध था, विश्राम किया। सोमवार १२ (२१ जनवरी) को बहरा से प्रस्थान हुआ और ४ कोस यात्रा की गई और सारसादा की शिक़ के स्थान पर पड़ाव हुआ। सेना के पास लूट की अत्यधिक धन-सम्पत्ति होने के कारण प्रस्थान धीरे-धीरे हो रहा था। नित्य ४ कोस से अधिक चलना संभव न था। मंगलवार १३ (२२ जनवरी) को वहाँ से प्रस्थान करके विजयी सेनाओं का कुन्दुज़ ग्राम में पड़ाव हुआ। इन दोनों पड़ावों के बीच की दूरी लगभग ४ कोस थी।

सिवालिक पर्वत के अन्य क्षेत्रों के जंगलों में युद्ध

बुद्धवार १४ जमादी उल अव्वल (२३ जनवरी) को साहेब क़िरान ने कुनदुज़ से प्रस्थान किया और यमुना नदी पार करके सिवालिक पर्वत के दूसरे क्षेत्र में पड़ाव किया। उसी दिन समाचार प्राप्त हुआ कि हिन्दुस्तान के रतन नामक एक राय ने बहुत बड़ी भीड़ एकत्र (१५५) कर रखी है। अग्निपूजक तथा हिन्दुओं के बहुत से समूह इधर उधर से आकर उससे मिल गये हैं। उन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली है तथा कठिन पर्वतों एवं जंगलों में शरण ग्रहण कर ली है। साहेब क़िरान ने वृहस्पतिवार १५ (२४ जनवरी) की रात्रि में आदेश दिया कि क़ूशूनों के अमीर मशालें जलाकर तथा सेना सुव्यवस्थित करके प्रस्थान करें। वृक्षों को काटने तथा मार्ग बनाने का प्रयत्न करें। शाही सौभाग्य के कारण उस रात्रि में १२ कोस की यात्रा की गई और मार्ग बनाया गया। वृहस्पतिवार १५ (२४ जनवरी) को विजयी सेनायें सिवालिक पर्वत तथा कोका पर्वत के मध्य भाग में पहुँच गईं।

(१५६) राय रतन ने उस स्थान पर दाहिने तथा बायें भाग की सेनाओं को सुव्यवस्थित करके युद्ध की तैयारी कर ली थी किन्तु ग़ाज़ियों के तकबीर के नारों के पर्वतों में गूंजने के पूर्व ही वे मार्गभ्रष्ट भाग खड़े हुए। क़ूशूनों के अमीरों तथा सैनिकों ने उनका पीछा किया और उनके अभिमान का अन्त कर दिया। उन दुष्टों में से बहुतों को नरक पहुँचा दिया। इस यात्रा में उनको इतनी अधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई कि उनका उल्लेख करना सम्भव नहीं। सैनिकों में से प्रत्येक को १००, २०० गायें तथा १०, २० दास प्राप्त हो गये।

उसी दिन दायें भाग के अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद तथा अमीर सुलेमान शाह ने एक अन्य दर्रे में जेहाद किया और काफ़िरों को तलवार के घाट उतार दिया। इस्लामी सेना को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। बायें भाग के अमीर जहान शाह ने पृथक् दूसरे दर्रे पर आक्रमण किया था और बहुत से अधर्मी हिन्दुओं को तलवार के घाट उतार दिया था किन्तु (१५७) उन्हें अधिक धन सम्पत्ति न प्राप्त हुई थी। शुक्रवार की रात्रि में दायें तथा बायें भाग की सेनायें दोनों पर्वतों के मध्य में पहुँचीं और शुभ शिविर से मिलीं।

शुक्रवार १६ (२५ जनवरी) को साहेब क़िरान उन दो पर्वतों के दर्रों के मध्य से पुनः सिवालिक पर्वत में पहुँच गये। उस मंज़िल से नगर कोट तक १५ फरसख़[1] की दूरी थी। उस दर्रे में इतने कठिन जंगल थे कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। अग्निपूजकों तथा दुष्ट हिन्दुओं की संख्या उससे भी अधिक थी। साहेब क़िरान ने काफ़िरों के विनाश हेतु ऐसे भयप्रद जंगलों में प्रविष्ट होना स्वीकार किया। क्योंकि बायें भाग की सेना, जो अमीर जहान शाह के अधीन थी, तथा खुरासान की दो सेनाओं ने दो दिन पूर्व बहुत कम लूट की धन सम्पत्ति प्राप्त की थी अतः शाही आदेश हुआ कि वे लोग युद्ध के लिए अग्रसर हों। उस दिन सायेन तिमुर अग्रिम भाग में था। उसने एक पहर दिन के उपरान्त विजयी शिविर में आकर निवेदन किया कि अग्निपूजकों तथा हिन्दुओं का इतना बड़ा समूह एकत्र हो गया है कि उसका अनुमान भी नहीं किया जा सकता। साहेब क़िरान स्वयं खड़े हो गये। दाहिने भाग की सेना तथा ख़ुरासान की सेना ने आदेशानुसार युद्ध के लिए प्रस्थान किया और उन्होंने एक वृत्त बनाकर हिन्दुओं (१५८) की हत्या प्रारम्भ कर दी और अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त की। उसी दिन मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय अमीर शेख़ नूरुद्दीन तथा अली सुल्तान तवाची के क़ूशून से यह समाचार प्राप्त हुआ कि बाईं ओर एक दर्रा है और उस स्थान पर इतने अधिक अग्निपूजक एकत्र हैं कि उनका अनुमान नहीं किया जा सकता। साहेब क़िरान ने तत्काल उस दर्रे की ओर प्रस्थान किया और आदेश दिया कि अमीर शेख़ नूरुद्दीन तथा अली सुल्तान तवाची उन मार्गभ्रष्टों पर आक्रमण करें। उन्होंने आदेशानुसार प्रस्थान किया और प्रत्येक दिशा से रक्त प्रवाहित हो गया। विजयी पताका पर्वत की चोटी पर गाड़ दी गई।

साहेब क़िरान उस पर्वत की चोटी से देख रहे थे कि वीरता तथा जंगल के सिंह उस दर्रे में पैदल प्रविष्ट होकर किस प्रकार जेहाद कर रहे हैं। जब बहुत से काफ़िरों की हत्या (१५९) हो गई तो शेष भाग खड़े हुए। विजयी सेना अपार धन सम्पत्ति लेकर वापस हुई और वे बादशाह द्वारा सम्मानित किये गये। साहेब क़िरान सायंकाल की नमाज़ तक उस पर्वत पर विराजमान रहे। उन्होंने आदेश दिया कि सैयिदों में जिस किसी को लूट की धन सम्पत्ति न प्राप्त हुई हो उसे भी उसमें से कुछ दिया जाय। लूट की धन सम्पत्ति के अत्यधिक होने के कारण जो कोई जितनी भी अपने अधिकार में कर सकता था उसने वह अपने अधिकार में की।

एक मास के भीतर अर्थात् १६ जमादी उल अव्वल (२५ जनवरी) के प्रारम्भ से १६ जमादी उल आख़िर (२३ फ़रवरी) तक शाही सेनायें सिवालिक पर्वत तथा कोका पर्वत के मध्य में रहीं और तदुपरान्त जम्मू पहुँचीं। इस बीच में काफ़िरों, मुशरिकों तथा अग्निपूजकों से २० युद्ध हुये।

(१६०) इस ३० दिन के मध्य में हिन्दुओं के बड़े-बड़े क़िलों में से ७ क़िलों पर अधिकार प्राप्त हुआ। यह क़िले अत्यन्त दृढ़ थे। वे एक दूसरे से एक या दो फ़रसख़ की दूरी पर स्थित थे। उन स्थानों के प्रत्येक क़िले वाले दूसरे क़िले वालों के विरुद्ध थे और अधिकांश उन स्थानों के निवासी पिछले सुल्तानों के राज्य-काल में जिज़या अदा करते थे। इस बीच में उन्होंने मुसलमानों की अधीनता समाप्त कर दी थी और जिज़या देना बन्द कर दिया था, अतः उन लोगों से युद्ध करना तथा उनका रक्तपात शरीअत के अनुसार उचित था।

उन क़िलों में से एक क़िला शेख़ू का था। वह मलिक शेख़ कोकर के सम्बन्धियों का था। वहाँ के निवासी मुसलमानों के एक समूह द्वारा, जो उन लोगों के मध्य में था, आज्ञाकारी

१ एक फ़रसख़ लगभग १८००० फ़ीट के बराबर होता था।

बन गये और बाह्य रूप से उन्होंने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। असानी का धन प्राप्त करने (१६१) के लिए शाही सेना द्वारा एक व्यक्ति को नियुक्त किया गया। उसने बड़ी युक्ति से उन लोगों के बहुमूल्य सामानों को बाहर निकलवा कर बिकवा दिया और इस प्रकार कोई भी अस्त्र-शस्त्र न रहने दिया।

तत्पश्चात् शाही आदेश हुआ कि ४० अग्निपूजक हिन्दू शाह ख़ाज़िन[1] के दासों में सम्मिलित हो जायँ किन्तु उन लोगों ने विरोध किया और कुछ मुसलमानों की हत्या कर दी। मुसलमान ग़ाज़ियों के लिए उन भ्रष्टों से प्रतिकार लेना आवश्यक हो गया और मुजाहिदों ने उस क़िले पर विजय प्राप्त कर ली। २ हज़ार अग्निपूजक मार डाले गये।

जम्मू के क्षेत्र में साहेब क़िरान का युद्ध

(१६२) रविवार १६ जमादी उल आख़िर (२३ फ़रवरी) को विजयी पताकाओं ने ईश्वर की शरण में मंसार नामक स्थान से प्रस्थान किया और ६ कोस यात्रा करके पायला (१६३) नामक ग्राम में जोकि जम्मू के निकट है पड़ाव किया। उसी दिन अमीर शेख़ मुहम्मद इको तिमुर, मुबश्शिर तथा अमीर ज़ादा ख़लील सुल्तान के तूमान से इस्माईल बरलास पायला ग्राम की ओर रवाना हुआ। वहाँ के निवासी बड़े वीर थे और उनके जंगल बड़े दृढ़ थे। जंगल के किनारे उन्होंने कटघरा तैयार करके युद्ध की तैयारी प्रारम्भ करदी। इस्लामी योद्धा विलम्ब किये हुए बिना उन काफ़िरों पर आक्रमण करना चाहते थे किन्तु इसी बीच में शाही आदेशानुसार एक व्यक्ति ने आकर कहा कि युद्ध रोक दिया जाय और जब दूसरे दिन शाही पताकायें पहुँच जायँ तब युद्ध प्रारम्भ हो। सोमवार १७ (२४ फ़रवरी) को साहेब क़िरान ने सवार होकर दाहिने तथा बायें भाग एवं मध्य भाग और अन्तिम दल की सेनायें सुव्यवस्थित कीं। अधर्मी दुष्टों के हृदय तकबीर के नारों को सुनकर दहल उठे और विलम्ब किये बिना ही वे ग्राम को छोड़कर भाग गये और लोमड़ियों के समान जंगल में छिप गये। शाही सेना के वीर कटघरों को तोड़ कर जंगल के समक्ष खड़े हो गये ताकि सेना वाले निश्चिन्त (१६४) होकर नगर में प्रविष्ट हों तथा अत्यधिक अनाज अपने अधिकार में कर लें। इस्लामी सेना ने तैयार होकर उस स्थान से उसी दिन प्रस्थान किया और ४ कोस यात्रा करके पड़ाव किया।

उसी दिन उलचा तिमुर तुनक़ताज, कुलादू, अमीर ज़ादा रुस्तम तथा मोतमद ज़ैनुद्दीन, जो देहली से दूत बना कर कश्मीर भेजे गये थे और वहाँ के शासक इस्कन्दर के पास शाही फ़रमान लेकर गये थे, इस्कन्दर के दूतों सहित शाही शिविर में उपस्थित हो गये और उन्होंने निवेदन किया कि शाह इस्कन्दर दासता प्रदर्शित करते हुये स्वागतार्थ आ रहा है और जिबहान नामक ग्राम तक पहुँच गया है। इसी पड़ाव पर मौलाना नूरुद्दीन ने, जोकि इस्कन्दर की ओर से दूत बन कर आया था, शाही शिविर में उपस्थित होकर कहा कि 'सम्मानित दीवान[2] के अमीरों ने यह निश्चय किया है कि ३० हज़ार घोड़े और ढाई मिस्क़ाल[3] की तोल के १ लाख सिक्के[4] कश्मीर से प्राप्त किये जायँ।' वह इस आदेश के पालन हेतु लौट गया ताकि इस कार्य के सम्पन्न कराने के उपरान्त इस्कन्दर भूमि चूमने का सौभाग्य प्राप्त करे। जब साहेब क़िरान को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उन्हें यह पसन्द न आया और उन्होंने कहा कि

१ कोषाध्यक्ष।

२ वित्त विभाग।

३ एक मिस्क़ाल ७० अथवा ७२ ग्रेन के बराबर होता था।

४ सम्भवतः चाँदी के।

"इस्कन्दर शाह को बहुत कष्ट दिया गया और जितना उसके राज्य से प्राप्त हो सकता है उससे (१६५) अधिक माँगा गया है।" साहेब क़िरान के दूतों ने इस्कन्दर शाह के पास यह संदेश पहुँचा दिया और लौट कर उसकी अत्यधिक निष्ठा तथा दासता का उल्लेख किया। मंगलवार १८ (२५ फ़रवरी) को इस्कन्दर शाह के दूतों तथा मोतमद ज़ैनुद्दीन को कश्मीर की ओर भेजा गया और यह निश्चय हुआ कि उस तिथि के २८ दिन उपरान्त सिन्ध नदी के तट पर शाही सेनायें पहुँच जायेंगी।

इस मंज़िल से पर्वत के आँचल में एक ग्राम था। वहाँ शत्रुओं का एक समूह विद्यमान था। विजयी सेनाओं ने उस ग्राम पर आक्रमण किया। अभागे हिन्दुओं ने अपने घर बार की चिन्ता न करके उन्हें अपने हाथ से जला डाला। इस्लामी सेना को उस ग्राम से अत्यधिक अनाज प्राप्त हुआ। उसी दिन दो अन्य ग्रामों पर, जो निकट थे, मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त आक्रमण किया गया और वहाँ का समस्त अनाज तथा सामग्री अधिकार में कर ली गई। उस मार्ग में आरा तिमुर जोकि शाही सेवक था बाण द्वारा आहत हुआ।

बुद्धवार १९ (२६ फ़रवरी) को उस पड़ाव से कूच करके जम्मू के क़स्बे के सम्मुख (१६६) पड़ाव हुआ। ४ कोस यात्रा की गई। इन मंज़िलों में लगभग ४ फ़रसख़ तक एक दूसरे से मिले हुए बहुत से खेत थे। शाही मवेशियों को वहाँ अत्यधिक चारा प्राप्त हुआ। बृहस्पतिवार २० (२७ फ़रवरी) को विजयी पताकायें जम्मू क़स्बे की ओर बढ़ीं और उस दर्रे में जोकि जम्मू नदी का दहाना है, प्रविष्ट हुईं। विजयी सेनाओं ने कई बार उस नदी को पार किया। पर्वत के आँचल में बाईं ओर जम्मू क़स्बा था। दाहिने हाथ की ओर मन्नू ग्राम था। इन दोनों स्थानों में बड़े बलवान तथा मूर्ख हिन्दू थे। पर्वत तथा जंगल अत्यन्त दृढ़ थे और वहाँ प्रवेश पाना बड़ा कठिन था। उन दुष्टों ने अपने स्त्रियों तथा बालकों को पर्वतों में भेज दिया। उनका राय काफ़िर तथा जाहिल हिन्दुओं का समूह लेकर मरने मारने के लिए उद्यत था और वह पर्वत में एक दृढ़ स्थान में शरण ग्रहण किये था।

(१६७) साहेब क़िरान ने इस्लामी सेना को हानि पहुँचाये बिना उन देव रूपी व्यक्तियों पर विजय प्राप्त करने के हेतु आदेश दिया कि इस समय उनसे कुछ न बोला जाय और मन्नू ग्राम पर आक्रमण किया जाय। विजयी सेनाओं ने शाही आदेशानुसार उस ग्राम को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और लौटते समय वे जम्मू क़स्बे में प्रविष्ट हुए। भोजन तथा पशुओं के चारे के लिए अत्यधिक अनाज प्राप्त किया। साहेब क़िरान ने आदेश दिया कि कुछ वीरों के क़ूशून (दल) जंगलों में घात लगाये बैठे रहें और प्रतीक्षा करते रहें। विजयी सेनाओं ने वहाँ से प्रस्थान कर दिया।

शुक्रवार २१ (२८ फ़रवरी) को जम्मू नदी पार करके ४ कोस यात्रा की गई और चनावा नदी के किनारे शिविर लगे। उस स्थान पर ४ फ़रसख़ के वर्गाकार क्षेत्र में कृषि होती थी। (१६८) जब शुभ सेनायें जम्मू तथा मन्नू दर्रे को पार कर चुकीं तो लोमड़ी रूपी हिन्दुओं ने यह विचार किया कि जंगल सिंहों से रिक्त हो गया है और वे असावधानी की अवस्था में जंगल के बाहर निकले। उन्हें यह ज्ञात था कि विजयी सेना के कुछ क़ूशून (दल) घात लगाये बैठे हैं। वे उन अधर्मी मार्ग-भ्रष्टों पर टूट पड़े और उनमें से बहुतों की हत्या कर दी। अमीर शेख़ नूरुद्दीन के तूमान से दौलत तिमुर तवाची तथा हुसेन मलिक कूचीन ने जम्मू के राय को ५० अग्निपूजकों सहित बन्दी बना लिया और साहेब क़िरान के दरबार में उपस्थित किया। साहेब क़िरान ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। तत्काल उन दुष्टों की हत्या कर दी गई। जम्मू का राय युद्ध में आहत हो गया था। धन प्राप्त करने के लिए उसका उपचार किया गया,

(१६६) और उसको बहुत से वचन दिये गये किन्तु उसने इस्लाम का कलमा पढ़ लिया तथा गऊमांस जोकि उन लोगों में निषिद्ध है, मुसलमानों के समान खा लिया। अतः उसे खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया। रविवार २३ (२ मार्च) को विजयी सेनाओं ने उस मंज़िल पर पड़ाव किया और कई सेनायें जो लाहाउर (लाहौर) गई थीं वे शाही शिविर में आ गईं।

लाहाउर (लाहौर) नगर तथा शेखा कोकर

उसी मंज़िल में सूचना प्राप्त हुई कि शाहज़ादों तथा अमीरों ने जो शाही आदेशानुसार उस ओर गये हुये थे लाहाउर (लाहौर) नगर पर अधिकार प्राप्त कर लिया और अमानी का धन भी वसूल किया। शेखा कोकर को भी, जिसके कार्य उसकी दशा के अनुकूल न थे, बन्दी (१७०) बना लिया। शेखा कोकर साहेब क़िरान के अभियानों के प्रारम्भ में शाही दरबार में उपस्थित हुआ था और बादशाही कृपा-दृष्टि द्वारा सम्मानित हुआ था। जिस स्थान के भी (१७१) हिन्दू यह कहकर क्षमा माँगते थे कि वे शेखा कोकर के अधीन हैं तो उन्हें न तो बन्दी बनाया जाता था और न उनको लूटा जाता था। गंगा तथा यमुना के दोआब से उसने अपने प्रदेश में जाने की अनुमति माँगी थी और व्यास नदी के तट पर, जो लाहाउर (लाहौर) नदी भी कहलाती है, विजयी शिविर से मिलने का वचन दिया था। अनुमति पाकर जब वह अपने स्थान पर पहुँच गया तो उसने भोग विलास प्रारम्भ कर दिया। उसने अपने वचन को भुला कर शत्रुता प्रदर्शित करनी आरम्भ कर दी और शाही दासों के एक समूह की, जो मावरा-उन्-नहर से उस स्थान पर पहुँचा था और जिसमें मौलाना अब्दुल्लाह् सद्र, हिन्दू शाह ख़ाज़िन तथा अन्य प्रतिष्ठित लोग थे, जिनके सम्मान को उसे बड़ा महत्त्व देना चाहिये था, (१७२) उसने कोई चिन्ता न की अतः शाही आदेश हुआ कि उसके राज्य को नष्ट कर दिया जाय और उसे बन्दी बनाकर उपस्थित किया जाय।

सोमवार २४ (३ मार्च) को विजयी सेनाओं ने चनावा नदी पार की और ५ कोस यात्रा करके पड़ाव किया। उस दिन अमीर ज़ादा मीरान शाह के सेवक तबरेज़ से पहुँचे और उन्होंने शाहज़ादों, पुत्रों तथा समस्त सेवकों एवं हितैषियों की, जो उस ओर थे, सुरक्षा के समाचार पहुँचाये। उसी दिन हिन्दू शाह ख़ाज़िन को राजधानी समरक़न्द की ओर भेजा गया ताकि वह विजयी पताकाओं के वहाँ पहुँचने का समाचार पहुँचा दे।

(१७३) बुद्धवार २६ (५ मार्च) को चनावा नदी के तट से प्रस्थान हुआ और ६ कोस यात्रा करके जंगल में पड़ाव हुआ। उसी दिन तबरेज़ के एक राजदूत को समरक़न्द भेजा गया।

बृहस्पतिवार २७ (६ मार्च) को साहेब क़िरान ने प्रस्थान किया और ६ कोस यात्रा करके एक जंगल के किनारे पड़ाव किया। उस दिन उस जंगल में एक सिंह दृष्टिगत (१७४) हुआ। विजयी सेना ने प्रत्येक दिशा से उस पर आक्रमण किया। अमीरों में से अमीर शेख नूरुद्दीन ने जो सबसे अधिक वीर था उस पर आक्रमण किया और उस सिंह को गिरा दिया।

इसी बीच में अमीर ज़ादा पीर मुहम्मद, अमीर ज़ादा रुस्तम, अमीर सुलेमान शाह तथा अमीर जहान शाह लाहाउर (लाहौर) से वापस होकर शुभ शिविर में पहुँचे। उन्होंने युद्ध करके अधर्मी हिन्दुओं को जेहाद की तलवार द्वारा मार डाला और अत्यधिक धन सम्पत्ति एकत्र की। उन्होंने धरती चुम्बन के उपरान्त अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति प्रस्तुत की। दानी साहेब क़िरान ने तत्काल जितने भी वीर खड़े थे वह धन सम्पत्ति उन्हें प्रदान कर दी।

उनकी दृष्टि मुहम्मद आज़ाद पर पड़ी और उन्होंने उसे विशेष रूप से सम्मानित किया और ख़िलअ्त तथा निपंग प्रदान किया और उसे उसके समकालीनों में सम्मानित किया।

(१७५) उसी दिन यह आदेश हुआ कि बायें तथा दायें भाग की सेना के अमीर तथा क़ूशूनों के समस्त अमीर अपने अपने स्थान को निश्चित मार्ग से लौट जायँ। समस्त शाहज़ादों सम्बन्धियों, तूमानों, हज़ारों[1] तथा क़ूशूनों के अमीरों को उनकी श्रेणी के अनुसार बहुमूल्य ख़िलअ्त प्रदान किये। शाहज़ादा पीर मुहम्मद जहाँगीर को जड़ाऊ पेटी तथा विशेष मुकुट प्रदान किया गया। हिन्दुस्तान से जिन अमीरों तथा सैयिदों के समूह बादशाह की सेवा में सम्मिलित थे; उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें वापस होने की अनुमति दे दी गई।

ख़िज़्र ख़ाँ ने जिसे सारंग ने बन्दी बना लिया था और क़िले में बन्द कर दिया था, और जो भाग कर ब्याने में जो देहली की विलायत में है अहोदन के पास जो मुसलमान मलिक था पहुँच गया था, निष्ठा प्रदर्शित करते हुए धरती का चुम्बन किया और वह शाही शिविर का (१७६) सेवक बन गया। इस समय बादशाह ने उसके प्रति विशेष कृपा प्रदर्शित की तथा मुल्तान की विलायत उसे सौंप दी।

क्योंकि उस स्थान पर बहुत अच्छी शिकारगाहें थीं जहाँ सिंह, जंगली गधे, हिरन इत्यादि और जंगली अन्य शिकार के जानवर बहुत बड़ी संख्या में थे तथा नाना प्रकार के पक्षी तोते इत्यादि थे, अतः बादशाह ने आदेश दिया कि उनको जिरगे[2] में घेर लिया जाय। सिंहों के शिकार के उपरान्त अन्य जानवरों तथा पक्षियों के शिकार किये गये। उस स्थान पर इतना अधिक शिकार प्राप्त हुआ कि उनकी संख्या का अनुमान नहीं किया जा सका।

(१७७) शुक्रवार २८ (७ मार्च) को शिकार के उपरान्त ८ कोस यात्रा करके जिबहान नामक स्थान पर जो कश्मीर की सीमा पर है, शाही शिविर लगे।

(१८१) साहेब क़िरान ने २९ (८ मार्च) को जिबहान ग्राम से प्रस्थान किया और ४ कोस यात्रा करके दन्दाना नदी के तट पर शाही शिविर लगे। शनिवार को विजयी पताकाओं ने, उस पुल से जो शाही आदेशानुसार तैयार हुआ था, नदी पार की।

साहेब क़िरान की शीघ्रातिशीघ्र अपने राजधानी की ओर वापसी।

शनिवार की प्रातःकाल ३० जमादी उल आख़िर (९ मार्च) को साहेब क़िरान ने लश्कर के प्रस्थान करने के पूर्व समरक़न्द की ओर शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया और दन्दाना नदी के किनारे सान बिस्त नामक स्थान पर जोकि जूद पर्वत से सम्बन्धित है, पड़ाव किया।

(१८२) सोमवार १ रजब (१० मार्च) को सान बिस्त से प्रस्थान करके बरूजा नामक क़िले के निकट पड़ाव हुआ। वहाँ से प्रस्थान करके चौल जलाली पहुँचे। वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके एक तालाब के किनारे पड़ाव हुआ। बरूजा ग्राम से इस स्थान तक ३० कोस की दूरी है। चौले जलाली के नामकरण का वृत्तान्त इससे पूर्व किया जा चुका है। मंगलवार २ (११ मार्च) को एक पहर दिन चढ़े शाही शिविर सिंध नदी के तट पर पहुँचा। उस स्थान के प्रबन्ध हेतु जो अमीर नियुक्त हुए थे, उदाहरणार्थ पीर अली सल्दूज़ तथा अन्य सरदार, उन्होंने आदेशानुसार सिन्ध नदी पर पुल तैयार किया। साहेब क़िरान ने वहाँ से प्रस्थान करके १० कोस पर पड़ाव किया। बुद्धवार ३ (१२ मार्च) को उस स्थान से रवाना

१ एक हज़ार सैनिकों का अधिकारी।

२ शिकार का घेरा।

होकर बानों में पड़ाव हुआ। पीर अली ताज, अमीर हुसेन कूचीन तथा अन्य सरदार, जो ऊग़ानियों के विद्रोह को शांत करने के लिए बानों में थे, ७ मास के उपरान्त ज़मीनबोसी के (१८३) सम्मान से सम्मानित हुए। उन्होंने एक तक़ूज़[1] घोड़े तथा एक हज़ार गायें भेंट कीं। साहेब क़िरान ने आदेश दिया "कि घोड़े उन्हीं वीरों को दे दिये जायँ और गायें जिनसे प्राप्त की गई थीं उन्हें वापस कर दी जायँ। पीर अली तथा उसके साथी उस समय तक प्रतीक्षा करें जब तक सेना उस स्थान को पार न करले।"

---

१ ९ की संख्या में कोई उपहार, सम्भवतः ९ घोड़े।

भाग ब

समकालीन राजनीति सम्बन्धी ग्रन्थ

ज़ियाउद्दीन बरनी

(क) फ़तावाये जहाँदारी

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह

(ख) फ़तूहाते फ़ीरोज़शाही

फ़तावाये जहाँदारी

[लेखक—ज़ियाउद्दीन बरनी]

[इण्डिया आफ़िस मैनुसकिरिप्ट न० २५६३]

बादशाह से लाभ

(२ अ) ईश्वर ने जिन लोगों को पैदा किया है उनमें बादशाह अद्भुत होता है। मनुष्य में ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लालच तथा दुष्कर्म स्वाभाविक रूप से पाये जाते हैं। ऐसे बहुत (२ ब) कम लोग होते हैं, जिनमें ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लालच तथा दुष्कर्म न पाया जाता हो। यद्यपि बादशाह वैभव तथा ऐश्वर्य और धन-सम्पत्ति एवं राजकोष के कारण समस्त मनुष्यों से पृथक् होता है, और उसके ऐश्वर्य के कारण लोगों को ऐसे कार्यों के विषय में जो करने चाहिये तथा ऐसे कार्यों के विषय में जो न करने चाहिये संसार वालों को आदेश प्राप्त होते रहते हैं, किन्तु समस्त दुष्ट, ईर्ष्यालु, द्वेष रखने वाले, लालची तथा धूर्त बादशाह द्वारा अपनी इच्छानुसार अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न किया करते हैं। अतः बुद्धिमान बादशाह वह है जो ईर्ष्यालुओं तथा दुष्टों की धूर्तता एवं विश्वासघात से सुरक्षित रहे और उनके जाल में न फंसे।

बादशाह को कोई भय न होना चाहिये

(३ अ) बहुत से ऐसे लोग होते है जिन्हें बादशाह द्वारा कष्ट पहुंचा होता है और वे सर्वदा प्रतिकार का प्रयत्न किया करते हैं। मुसलमानों का बादशाह, जिसे क़ुरान पर दृढ़ विश्वास होता है, उसे उन लोगों की धूर्तता तथा विश्वासघात एवं अन्य कष्टों का भय नहीं होता और वे अपने आपको तथा अपने देश और राज्य को क़ुरान के पाठ द्वारा जिसके कारण किसी विश्वासघाती, धूर्त तथा दुष्ट को सफलता नहीं प्राप्त होती, सुरक्षित रखते हैं।

[अमीर इस्माईल सामानी तथा अमर लैस की कहानी से उपर्युक्त सिद्धान्त की पुष्टि]

बादशाह के मुहम्मद साहब के धर्म पर विश्वास का प्रभाव

(६ ब) बादशाह के उत्कृष्ट विश्वास के सम्बन्ध में सुल्तान महमूद का कथन है, "हे महमूद के पुत्रो! तुम्हें भली भाँति ज्ञात होना चाहिये कि मुसलमानों के बादशाह के कार्यों की अच्छाई उनके भली भाँति अथवा बुरी तरह सम्पादित होने एवं बादशाह के उत्कृष्ट तथा दूषित विचारों पर अवलम्बित है। यदि बादशाह का नबियों द्वारा प्राप्त दैवी पुस्तकों पर दृढ़ विश्वास हो तो उसके आशीर्वाद से उसके राज्य सम्बन्धी समस्त कार्य भली भाँति सम्पन्न हो जायँगे और उसकी प्रजा के उद्देश्यों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहेगी। यदि बादशाह का मुहम्मद साहब के धर्म में दृढ़ विश्वास हो और वह अधिक एबादत[1] तथा रोज़ा नमाज न कर सके तो इसमें आपत्ति नहीं। उसके दृढ़ विश्वास तथा दीन-पनाही एवं दीन-परवरी[2] के कारण उसके नमाज रोज़े की कमी एवं दुराचार पर भी ईश्वर ध्यान न देगा। यदि कोई

---

१ उपासना।

२ इस्लाम के सिद्धान्तों की रक्षा तथा अन्य लोगों द्वारा उनका पालन कराना।

बादशाह सदाचारी हो तथा अल्लाह की एबादत करता हो और उसमें उपर्युक्त गुण हों तो वह संसार का क़ुतुब[1] हो जायगा।

बादशाह द्वारा शरीअत का पालन

(७ अ) बादशाह के दृढ़ विश्वास की पहचान यह है कि वह अपने आप को तथा अपनी प्रजा को शरीअत के मार्ग पर रक्खे। यदि वह विलास-प्रिय हो तो अपने बादशाही आतंक एवं ऐश्वर्य द्वारा शरा के आदेशों को इस प्रकार सम्मान प्रदान करे और उन कार्यों को जिनके करने की ईश्वर का ओर से अनुमति प्राप्त है, करने का इस प्रकार आदेश दे, तथा उन कार्यों को जिनके न करने का ईश्वर की ओर से आदेश है, रोकने का इस प्रकार प्रबन्ध करे कि उसके राज्य में कोई शरा द्वारा वर्जित कार्य खुल्लम खुल्ला न हो सके।

दीन पनाह बादशाह

दीन पनाह[2] बादशाह के गौरव की प्रशंसा सम्भव नहीं, कारण कि धर्मनिष्ठ मुसलमान उसकी दीन-पनाही तथा दीन-परवरी के कारण निश्चिन्त होकर ईश्वर की उपासना करते हैं और मुहम्मद साहब की शरीअत के आदेश विभिन्न देशों में जारी होते रहते हैं। इस्लाम को अन्य धर्मों पर प्रभुत्व प्राप्त होता है।..........यदि वह रोज़ा नमाज़ में कमी करे तो वह विलास-प्रिय होने पर भी दीन पनाही के कारण दंडनीय नहीं होता।

बादशाह को स्वयं भोग विलास में ग्रस्त होते हुये भी शरा के आदेशों का पालन कराना चाहिये

(७ ब) बादशाह को मुहम्मद साहब के धर्म की वृद्धि में यथासम्भव प्रयत्न करते रहना चाहिये और दीन-पनाही में किसी कारण कमी न करनी चाहिये। वह स्वीकृत कार्यों के जारी करने तथा वर्जित कार्यों की रोक थाम का प्रयत्न करता रहे। अपनी बादशाही की शक्ति ऐसी बातों में लगाये कि सत्य को केन्द्रीय स्थान प्राप्त हो जाय; इस्लामी प्रथायें उन्नति पायें। कहीं ऐसा न हो कि शैतान तुम्हारे हृदय में यह डाल दे कि जब हम भोग विलास में ग्रस्त हैं और जश्न तथा सभायें करते रहते हैं, राजकोष अपने भोग विलास में व्यय करते हैं और बादशाही ऐश्वर्य तथा वैभव का प्रयोग अधिकांशतः सुन्नत के विरुद्ध करते हैं तो अन्य लोगों को किस प्रकार शरा द्वारा वर्जित तथा निषिद्ध कार्यों को करने से रोकें तथा विभिन्न प्रकार के कठोर दण्डों के भय से उन्हें मना करें और ईश्वर द्वारा स्वीकृत कार्य करने का आदेश दें। इस प्रकार के विचारों को शैतान द्वारा उत्पन्न किया हुआ भ्रम समझना चाहिये। सत्य तो यह है कि बादशाहों को ईश्वर द्वारा स्वीकृत कार्यों के करने तथा वर्जित कार्यों की रोक थाम का स्वयं ही प्रयत्न करना चाहिये, तत्पश्चात् अन्य लोगों को इस प्रकार के आदेश देने चाहिये। किन्तु यदि वे स्वयं भोग विलास के कारण ऐसा न कर सकें और दूसरों से भी इन आदेशों (८ अ) का पालन न करा सकें और सत्यता को केन्द्रीय स्थान न प्रदान कर सकें तो बादशाही ऐश्वर्य एवं वैभव को किस नाम से पुकारा जा सकता है, कारण कि न उन्होंने धर्मनिष्ठता सम्बन्धी कर्तव्यों का पालन किया और न दीन-पनाही सम्बन्धी। उनकी बादशाही व्यर्थ रही। यदि बादशाह संसार में दीन-पनाही में कमी करते हैं और संसार में उनकी बादशाही में कोई दोष उत्पन्न नहीं भी होता तो वे क़यामत में दंड के पात्र होंगे। बादशाह की दीन पनाही तथा

---

१ आधार; सूफ़ियों का विचार है कि कुछ प्रसिद्ध सूफ़ियों के कारण ही संसार में शान्ति है। वे लोग क़ुतुब कहलाते हैं।

२ इस्लाम की रक्षा करने वाला बादशाह।

दीन परवरी की शान तो यह है कि अम्र मारूफ़ तथा निहीये मुन्कर[1] को रौनक़ प्राप्त हो और इस्लाम के समस्त ७२ सम्प्रदायों में शरा के आदेश जारी हों।

कठोर मुहतसिबों एवं अमीर दादों की नियुक्ति

भूतपूर्व आलिमों ने बादशाहों के दृढ़ एवं उत्कृष्ट विश्वासों के चिह्नों के विषय में विस्तार से लिखा है। एक चिह्न यह है कि वह अपनी राजधानी, नगरों, प्रदेशों तथा क़स्बों में कठोर स्वभाव वाले मुहतसिब[2] तथा निष्ठुर अमीर दाद[3] नियुक्त करे और नाना प्रकार की सहायता से उनके अधिकार तथा शक्ति में वृद्धि करे ताकि वे मुसलमानों में अम्र मारूफ़ तथा निहीये मुन्कर को शोभा प्रदान कर सकें, और दंड द्वारा दुराचार की रोक थाम कर सकें। जो लोग खुल्लम खुल्ला पाप तथा दुराचर करते हों उन्हें कठोर दंड दें तथा पाप करने वालों को नाना प्रकार से कष्ट में रक्खें। मदिरापान करने वालों, वंशी बजाने वालों (गायकों) तथा (८ ब) जुआ खेलने वालों को पाप करने से रोक दें। यदि वे रोकने, कठोरता, अपमान तथा अनादर द्वारा न रुकें और इस्लाम के अनुयायी होने पर भी इन अत्यन्त निषिद्ध वस्तुओं को न त्यागें तथा धर्म से लज्जा और बादशाह के निषेध पर ध्यान न दें तो धनी लोगों को निर्धन बनाकर बन्दी कर दें।[4] मदिरापान करने वालों को नगर के बाहर निकाल दें जिससे वे एकान्त में निवास करने लगें। यदि वे मुसलमान हों तो उनसे निर्दयता का व्यवहार करें और ऐसी व्यवस्था करें कि कोई मुसलमान मदिरापान न करे। नीच लोगों की, उनके विलाप के बावजूद, दंड द्वारा रोक थाम करते रहें। उनके ऊपर कठोर तथा निष्ठुर लोगों को नियुक्त कर दें ताकि वे नगरों को त्याग कर ग्रामों में चले जायँ और ग्रामीण जीवन व्यतीत करके तथा शरा द्वारा स्वीकृत कार्यों को करके अपने भोजन तथा वस्त्र की व्यवस्था करें। जो लोग बड़े बड़े पाप खुल्लम खुल्ला करते हों उन्हें मुसलमानों के नगरों में रहने तथा पाप एवं दुराचार न करने दें। भोग विलास के गृहों[5] का निर्माण न होने दें। यदि उनका निर्माण हो चुका हो तो उन्हें धराशायी करा दें।

(९ अ) जो लोग छिप कर वर्जित कार्यों को करते हों उनके विषय में अधिक पूछताछ न करायें। मुहतसिबों तथा अमीर दादों के सामने जो निषिद्ध कार्य होते हों अथवा जो वर्जित कार्य साधारण लोगों की दृष्टि के समक्ष होते हों उनका अन्त करायें और गुप्त रूप से होने वाले कार्यों की खोज तथा उनको स्पष्ट करने का प्रयत्न न करें। जो बिदअतें[6] सुन्नत के मार्ग में बाधक हों उनका यथासम्भव अन्त करादें। मुसलमानों को प्रत्येक मुहल्ले, गली तथा घर में कलमये शहादत[7], नमाज़, ज़कात, रोज़े तथा हज के विषय में चेतावनी देते रहें। मुहतसिबों के लिये

---

१ ऐसे कार्य जिनके करने की शरा द्वारा अनुमति है और ऐसे कार्य जो शरा द्वारा निषिद्ध हैं।

२ मुहतसिब : समस्त ग़ैर इस्लामी बातों को रोकने वाला अधिकारी। शरा के नियमों के पालन के विषय में देख रेख उसी के द्वारा होती थी। वह स्वयं दंड देकर शरा के प्रतिकूल बातें रोक सकता था।

३ अमीर दाद : वह सुल्तान की अनुपस्थिति में दीवाने मज़ालिम का अध्यक्ष होता था और बहुत बड़ा अधिकारी होता था। वह दादबक भी कहलाता था। सेना आदि में भी अमीर दाद होते थे। क़ाज़ी के फ़ैसलों का पालन कराना भी उसी का कर्त्तव्य होता था।

४ उनकी धन सम्पत्ति छीनकर बन्दी बना दें।

५ जिन स्थानों पर भोग विलास होता हो।

६ इस्लाम में नवीन अस्वीकृत बातों का मिलाया जाना।

७ इस्लाम का कलमा।

यह बात अनिवार्य कर दें कि वे नमाज़ न पढ़ने वालों से अत्यधिक कठोरता एवं निष्ठुरता का व्यवहार करें। धनी लोगों से ज़बरदस्ती ज़कात दिलवायें और उनका कोई बहाना न स्वीकार करें। जो धृष्ट लोग खुल्लम खुल्ला रोज़ा न रखते हों अथवा रमज़ान मास में बड़े-बड़े पाप करते हों और उन्हें इस्लाम की लज्जा तथा बादशाह के भय की चिन्ता न हो तो इन लोगों को बन्दी बना कर बादशाह के समक्ष लायें ताकि बादशाह सब लोगों की चेतावनी हेतु इनके बन्दी बनाये जाने, निर्वासन तथा हत्या के विषय में उचित आदेश दे सकें। बादशाह को (९ ब) इस्लाम के विरोधियों तथा मुहम्मद साहब की शरा के शत्रुओं को इस्लाम के कलमे की ओर आमंत्रित करना चाहिये। मुसलमानों को इस्लाम के मार्ग पर रखना चाहिये और मुशरिकों[१] को तौहीद[२] के क्षेत्र में लाना चाहिये।

धर्म-युद्ध तथा उसमें मारा जाना

धर्मनिष्ठ सुल्तान युद्धों में शहीद होने की आकांक्षा किया करते हैं। वे अपनी वीरता के कारण शत्रु पर विजय की आकांक्षा करते हैं और धर्मनिष्ठता के कारण शहीद होने की इच्छा करते रहते हैं। महमूद ने अपना समस्त जीवन ईश्वर के लिये जेहाद करने में लगा दिया था। उसके उद्देश्य के विषय में ईश्वर को ज्ञात होगा। उसने इतने दूरस्थ स्थानों पर जो धर्म-युद्ध किये, उनका उद्देश्य धन-सम्पत्ति की लालसा न था किन्तु बाल्यावस्था से अन्त तक उसकी महत्त्वाकांक्षा यही रही है कि किस प्रकार इस्लाम के समस्त विद्रोहियों तथा शत्रुओं का विनाश किया जाय तथा कुफ़ के इमामों[३] अर्थात् ब्राह्मणों एवं दार्शनिकों तथा उनके अनुयाइयों को तलवार के घाट उतारा जा सके और इस्लाम के प्रकाश द्वारा समस्त संसार प्रज्वलित हो सके। महमूद ने बहुत कम ऐसे धर्म-युद्ध किये होंगे जिनमें वह स्वयं (१० अ) सम्मिलित न हुआ हो। वह सर्वदा शहीद होने की आकांक्षा किया करता था। महमूद को पवित्र आलिमों द्वारा ज्ञात हुआ था कि बादशाह को शहीद होने की आकांक्षा द्वारा जितना पुण्य प्राप्त होता है उतना पुण्य बादशाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को शहीद होने की आकांक्षा में नहीं होता।

धार्मिक पदों पर नियुक्ति सम्बन्धी सावधानी

ग़ज़नी के समस्त निवासियों को ज्ञात है कि महमूद लोगों को पद प्रदान करने में विभिन्न प्रकार से सावधानी बरता करता था। वह लोभियों तथा धूर्तों को धार्मिक पदों के निकट न फटकने देता था और मुहम्मद साहब की शरा के अधिकारियों में बेईमानों को स्थान न प्रदान करता था। उसने अम्रे मारूफ़ तथा निहीये मुन्कर के जारी करने के लिये ग़ज़नी में १३० मुह्तसिब नियुक्त किये थे। नगरों, प्रदेशों तथा क़स्बों में शक्ति तथा वैभव वाले मुह्तसिब नियुक्त किये थे। महमूद सर्वदा इस कार्य को दीन-पनाही तथा दीन-परवरी सम्बन्धी बहुत बड़ा कार्य समझता रहता था और धार्मिक अधिकारियों की नियुक्ति स्वयं करता था। (१० ब) महमूद को यह बात पसन्द न थी कि समस्त ग़ज़नी तथा उसके अधीन अन्य राज्यों में कोई यहूदी, ईसाई, नीच तथा विधर्मी निवास करे तथा अपने ज्ञान का प्रचार कर सकें और अपने झूठे तथा रद्द किये हुये धर्म को प्रचलित कर सके। महमूद के राज्य में सुन्नी आलिमों के अतिरिक्त अन्य धर्म के विद्वानों को निवास करने की अनुमति न प्राप्त होती थी।

---

१ जो एक ईश्वर की सत्ता को न मानते हों और एक से अधिक सत्ताओं पर विश्वास रखते हों।

२ एकेश्वरवाद।

३ ब्राह्मणों।

तावील[1] तथा बहानों से शून्य तफ़सीर[2], हदीस[3] तथा फ़िक़ह[4] के अतिरिक्त किसी अन्य ज्ञान का प्रचार न हो सकता था।

[महमूद द्वारा ख्वारज़्म की विजय के उपरान्त मोतज़लियों[5] का बहिष्कार कराना, गुजरात में सुयूज़ नामक समूह की हत्या तथा बग़दाद के दार्शनिकों, बदमज़हबों एवं दहरियों[6] के विनाश की आकांक्षा]

महमूद द्वारा ब्राह्मणों के विनाश की आकाँक्षा

यदि महमूद एक बार हिन्दुस्तान पर और आक्रमण करता तो ब्राह्मणों को, जो कुफ़ तथा शिर्क के आदेशों को दृढ़ बनाने का साधन हैं, तलवार के घाट उतार देता और लगभग दो सौ तीन सौ हज़ार हिन्दू नेताओं की गर्दन मरवा देता। जब तक समस्त हिन्दुस्तान इस्लाम स्वीकार न कर लेता और कलमा न पढ़ लेता, हिन्दुओं की हत्या करने वाली तलवार को मियान में न रखता, कारण कि महमूद शाफ़ई सम्प्रदाय का अनुयायी था जिनके अनुसार हिन्दुओं के लिये यह आदेश है कि या तो उनकी हत्या करा दी जाय और या वे इस्लाम स्वीकार करें। हिन्दुओं से जिज़या लेने की अनुमति नहीं कारण कि न उनकी कोई किताब थी और न पैग़म्बर। यदि महमूद द्वारा ये दो बड़े कार्य सम्पन्न हो जाते तो पता नहीं ख़ुदा तथा रसूल के निकट उसका क्या सम्मान हो जाता। हे महमूद के पुत्रो, हे मुसलमान बादशाहो! यदि सम्भव हो तो इस धार्मिक कार्य की चेष्टा करो। यदि महमूद को यह सौभाग्य न प्राप्त हो सका तो सम्भव है कि तुम्हें यह सौभाग्य प्राप्त हो जाय।

मुहम्मद साहब के धर्म के विरोधियों का विनाश

हे (महमूद के) पुत्रो! हे धर्मनिष्ठ बादशाहो! तुम्हें समझना चाहिये कि मुहम्मद साहब के धर्म के विरोधियों तथा शत्रुओं के विनाश में इतना अधिक पुण्य है कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। संसार में धर्म के शत्रुओं के विनाश द्वारा जो लाभ होता है, उसका कुछ समय तक महमूद ने भी अवलोकन किया था। जो कोई अपनी समस्त शक्ति ऐश्वर्य तथा वैभव ईश्वर तथा मुहम्मद साहब के धर्म के शत्रुओं के विनाश में लगा देता है और किसी प्रकार का भय तथा लोभ नहीं करता तो इससे सच्चे धर्म को सम्मान प्राप्त होता है तथा शरा के विरोधियों का अपमान होता है। धर्म के शत्रुओं का किसी प्रकार सम्मान न करना चाहिये। जिस व्यक्ति को इतना ऐश्वर्य तथा वैभव प्राप्त हो तो उसके लिये यह बड़ी लज्जा की बात है (१३ अ) कि वह इन शत्रुओं का विनाश न करे। महमूद अपने अल्पकालीन राज्य-काल में सर्वदा धर्म तथा शरीअत के विरोधियों एवं शत्रुओं के विनाश एवं उनके अपमानित करने का प्रयत्न करता रहा। अपनी धर्मनिष्ठता के कारण उन्हें सर्वदा अपना शत्रु समझता रहता था। वह उनके उपहारों तथा उत्तम वस्तुओं को प्रस्तुत करने से प्रभावित न होता था और उनकी ओर प्रेम की दृष्टि से न देखता था। इसी कारण ईश्वर की कृपा से महमूद का कोई शत्रु भी उसपर विजय न प्राप्त कर सकता था। जो कोई महमूद के विरोध का नाम जिह्वा

---

१ अपने उद्देश्य की पूर्ति से सम्बन्धित अर्थ निकालना।
२ क़ुरान की टीका।
३ मुहम्मद साहब की वाणी का संग्रह।
४ इस्लामी धर्म शास्त्रों एवं क़ुरान के अनुसार इस्लामी नियमावली।
५ मोतज़ली: मुसलमान दार्शनिकों का एक समूह।
६ नास्तिकों।

पर लाता अथवा उसके राज्य पर आक्रमण करता तो ईश्वर उसे महमूद के हाथों बन्दी बनवा देता।

[इस उपदेश से सम्बन्धित उदाहरण : असमई की "खुलफ़ाये अब्बासी" से हारूनुर्रशीद का उदाहरण]

परामर्श का महत्त्व

(१७ अ) सुल्तान महमूद का कथन है कि समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ पैग़म्बर हैं और पैग़म्बरों में श्रेष्ठ मुहम्मद साहब हैं। वे अत्यधिक तीव्र बुद्धि तथा वही[1] के बावजूद परामर्श के महत्त्व का विशेष उल्लेख किया करते थे। बादशाहों के लिये जिनमें न तो उत्कट बुद्धि होती है और न जिनके पास वही आती है, अनुभवी हितैषियों के परामर्श के बिना किस प्रकार राज्य-व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध सम्भव है ? मनुष्य अपनी वासना के अनुसार मनमाना कार्य करना चाहता है। बादशाह की वासना में उनके अपार अधिकारों के कारण सहस्रों मस्त हाथियों की शक्ति होती है। यदि बादशाह उस शक्ति तथा मस्ती को अपने वश में रक्खे तथा यथेच्छ कार्य न करे और संसार वालों के कार्य हितैषी परामर्श-दाताओं के परामर्श के अनुसार करे तो केवल उसे ईश्वर ही की दया न प्राप्त होगी अपितु उसकी राज्य-व्यवस्था भली भाँति सम्पन्न हो सकेगी। बादशाहों के महान कार्यों तथा सुदृढ़ नियमों की स्थापना राज्य के हितैषियों के परामर्श पर अवलम्बित है।

[परामर्श द्वारा राज्य की सुव्यवस्था का उल्लेख; जमशेद का उदाहरण तथा उसका परामर्श]

हे क्युमुर्स की संतान[2] ! वज़ीरों तथा दार्शनिकों के परामर्श के बिना राज्य-व्यवस्था (१६ अ) सम्बन्धी कोई कार्य न करो जिससे किसी प्रकार की भूल न हो। इस बात को भली भाँति समझ लेना चाहिये कि बादशाहों की भूल अन्य लोगों की भूल के समान नहीं। बादशाहों की भूल से संसार में उथल पुथल हो जाती है और एक संसार में हलचल मच जाती है। दार्शनिकों ने कहा है कि महान कार्यों में जो अधिकार सम्पन्न बादशाहों की इच्छानुसार होते हैं उसके आतंक तथा शक्ति का हाथ होता है, अतः उनकी असफलता की ओर उसकी दृष्टि नहीं होती। वह समझता है कि जो कुछ वह सोचता है उसमें सफलता प्राप्त हो जायगी। इसी कारण उसके मतानुसार कार्यों में भूल हो जाती है। हे बादशाहो ! तुम्हें परामर्श को शासन प्रबन्ध की पूँजी समझना चाहिये। यथेच्छ को बादशाही का बहुत बड़ा दोष समझना चाहिये।

परामर्श-दाताओं के सत्विचारों तथा सत्परामर्श के चिह्न

हे महमूद के पुत्रो ! तुम्हें समझ लेना चाहिये कि वज़ीरों तथा दार्शनिकों ने बादशाहों के उत्कृष्ट सत्विचारों तथा सत्परामर्श के अनेक चिह्न बताये हैं।

(१) सत्विचारों से प्रजा को भी लाभ होता है और बादशाह को भी।

(२) सत्परामर्श की दूसरी पहचान यह है कि परामर्श देने वालों की दृष्टि कार्य के पूर्ण होने अथवा न पूर्ण होने दोनों ही पर रहे और केवल एक ही ओर दृष्टि न रहे।

---

१ मुहम्मद साहब को जिबरील द्वारा जो ईश्वर के आदेश प्राप्त होते थे। मुसलमानों का विश्वास है कि मुहम्मद साहब वही के बिना कोई कार्य न करते थे।

२ बादशाह।

(१९ ब) (३) सत्परामर्श की तीसरी पहचान यह है कि उस कार्य के सम्पन्न होने से न तो बादशाह के धर्म को हानि हो और न प्रजा के धर्म को।

(४) चौथा चिह्न यह है कि उससे तत्काल लाभ हो तथा क़यामत में भी लाभ हो।

(५) सत्परामर्श का पाँचवाँ चिह्न यह है कि उस कार्य से यश प्राप्त हो, कुप्रसिद्धि नहीं।

(६) उस परामर्श से बड़े से बड़ा शत्रु मित्र बन जाय और शत्रु उत्पन्न न हों।

(७) जिस कार्य के लिये परामर्श दिया जाय लोग उस कार्य में रुचि लेने लगें न कि उससे घृणा करने लगें।

(८) सत्परामर्श का दवाँ चिह्न यह है कि मूर्खों तथा अयोग्य लोगों को वह राय उचित न ज्ञात हो और उनके विचार से उसमें त्रुटि हो।

(९) उससे सुगमता हो न कि अत्यधिक कठिनाई।

(१०) समस्त बुद्धिमान् लोगों को वह ठीक ज्ञात हो और उसमें किसी प्रकार का विरोध न हो।

(११) उसका विचार तथा आचरण लोभ के विरुद्ध हों।

बुद्धिमान् वज़ीर

हे महमूद के पुत्रो! तुम्हें ठीक राय को बहुत बड़ा महत्त्व देना चाहिए और उसे सुगम तथा सरल न समझना चाहिये। जिस बात से एक संसार का कल्याण हो अथवा छिन्न-भिन्न हो जाय उसे साधारण बात न समझना चाहिये। दार्शनिकों ने इसी कारण कहा है कि "सत्परामर्श वही का प्रतिनिधित्व करता है और त्रुटिपूर्ण परामर्श शैतान का। सुलेमान पैग़म्बर के मंत्री आसिफ़ ने सत्परामर्श के यश के विषय में लिखा है कि यह बड़ी ही विचित्र शक्ति है जो ईश्वर की ओर से प्रदान होती है। सत्परामर्श वह है जो ईश्वर की ओर से हृदय में आ जाय।" सुलेमान बड़े प्रतापी पैग़म्बर हुये हैं और सिकन्दर बड़ा प्रतापी बादशाह हुआ है। दोनों के वज़ीर बड़े बुद्धिमान् थे। सुलेमान का वज़ीर आसिफ़ तथा सिकन्दर का वज़ीर अरस्तू था। दोनों के मत सर्वदा ठीक होते थे और वे कभी भूल न करते थे।

अर्दशेर तथा नौशीरवाँ का यशगान यद्यपि वे मुसलमान न थे सभी मित्र तथा शत्रु करते हैं और अरब तथा ईरान के इतिहासों में उनके विषय में लिखा हुआ है। इन लोगों की बादशाही की प्रसिद्धि अब्र शाम तथा बुज़र्चमेहर वज़ीरों के कारण है। इन बादशाहों (२१ अ) तथा वज़ीरों के उल्लेख का उद्देश्य यह है कि यह ज्ञात होजाय कि सत्परामर्श (२१ ब) बड़ी ही उत्कृष्ट तथा विचित्र देन है।..........महमूद के पुत्रों को भली भांति समझना चाहिये कि सत्परामर्श बहुत बड़ी देन है और सत्परामर्श-दाता बड़ा ही अद्‌भुत प्राणी होता है। ऐसा व्यक्ति, जिसकी सम्मति सर्वदा ठीक हो और उसमें कभी भूल न हो, क़रनों (युगों) तथा बहुत समय के उपरान्त पैदा होता है। जिस बादशाह को इस प्रकार का वज़ीर प्राप्त हो जाय और वह उसके परामर्श के अनुसार राज्य-व्यवस्था करे और यथेच्छाचार को पृथक् करदे और सत्परामर्श का मूल्य समझे तथा वासना एवं ऐश्वर्य से सम्बन्धित परामर्श को अपने वश में करले तो वह संसार में सफल होता है और क़यामत में उसे फ़रिश्तों के समान यश प्राप्त हो जायगा। सत्परामर्श के कारण वज़ीर बादशाह के समान हो जाता है और राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्य उसके मतानुसार सम्पन्न होते हैं। बादशाह के लिये बुद्धिमान् वज़ीर से बढ़कर गर्व की कोई वस्तु नहीं होती। क्योंकि बुद्धिमान् वज़ीर के बिना बादशाही के कार्य भली भाँति सम्पन्न नहीं हो पाते, अतः प्राचीन लोगों ने

कहा है; "बादशाह बिना बुद्धिमान् वज़ीर के निराधार राजप्रासाद तथा बिना नमक की रोटी के समान होता है।" यदि वज़ीर बुद्धिमान् होता है तो बादशाह की मूर्खता से राज्य में किसी प्रकार का दोष नहीं उत्पन्न हो पाता। बहुत से बादशाह अल्पावस्था में सिंहासनारूढ़ हो जाते हैं किन्तु उनके वज़ीर राज्य-व्यवस्था का संचालन करते रहते हैं। यदि वज़ीर के परामर्श में दोष होता है तो राज्य के विनाश में किसी प्रकार का सन्देह न होना चाहिये। जब तक सभी विशेष तथा साधारण व्यक्ति वज़ीर की बुद्धिमत्ता से सहमत न हों उस समय तक उसे वज़ीर के पद के योग्य न समझना चाहिये।

सत्परामर्श की विशेषतायें

सत्परामर्श की कुछ विशेषतायें बताई गई हैं।

(१) ईश्वर का भय। यदि सत्परामर्श-दाता में सैकड़ों गुण हों और ईश्वर का भय न हो तो उसे उचित बात के विषय में दैवी ज्ञान कदापि नहीं हो सकता।

(२) सत्परामर्श की दूसरी पहचान उसका ज्ञान है। उसे भूतकाल के बादशाहों का ज्ञान तथा इस बात की जानकारी होनी चाहिये कि विभिन्न परामर्शों से किस प्रकार प्राचीन बादशाह कष्टों से मुक्ति पाते रहे हैं। यदि उसे इस बात का ज्ञान न हो तो अवश्य ही उसके परामर्श में भूल होगी।

(३) उसे राज्य की घटनाओं का ज्ञान हो और वह उनमें भाग लेता रहा हो। राज्य के व्यापार द्वारा मत दृढ़ हो जाते हैं।

(४) पूर्ण सूझ बूझ। इसके कारण थोड़े से सोच विचार द्वारा उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है।

(५) मनुष्यों के समझने का पूर्ण ज्ञान। यदि यह गुण न हो तो वह शासन प्रबन्ध में भूल कर बैठता है।

(६) किसी बात का लोभ न हो। यदि परामर्श-दाता लोभी होता है तो सत्परामर्श लोभी के हृदय में आरूढ़ नहीं होता।

(७) सदाचरण तथा पवित्रता, कारण कि सत्परामर्श पापियों के हृदय में उत्पन्न नहीं होता।

(८) हृदय में शक्ति होनी चाहिये। जिसके हृदय में शक्ति नहीं होती तो आन्तरिक शक्ति-शून्यता के कारण ठीक बात उसके हृदय में नहीं आ सकती।

(९) उसमें सहनशीलता तथा धैर्य होना चाहिये, कारण कि उतावलेपन तथा क्रोध से सत्परामर्श की ओर दृष्टि नहीं जाती।

(१०) बादशाह के प्रति निष्ठा, कारण कि निष्ठावान लोगों के हृदय में सर्वदा ठीक बात ही आती है।

राय देने की शर्तें

राय देने की प्रथम शर्त यह है कि राय देने वाले की समझ में जो कुछ आये वह बिना किसी भय के कह दे; प्रत्येक व्यक्ति अपनी राय के सम्बन्ध में तर्क वितर्क करे और जब उसमें किसी को कोई आपत्ति न रहे और सभी लोग सहमत हो जायें तो उसे राय के अनुसार (२३ ब) कार्य करे। राय देने की परिभाषा में इसे सर्वसम्मति कहते हैं। यदि सर्वसम्मति न प्राप्त हो तो उस राय पर विश्वास न करना चाहिये।

(२) जिन लोगों से परामर्श लिया जाय उन्हें निश्चिन्त होना चाहिये। उन्हें अनुभवी, निष्ठावान तथा एक दूसरे के समान होना चाहिये। एक को बहुत बड़ा ज्ञानी तथा दूसरे को

मूर्ख न होना चाहिये। एक को बहुत ही श्रेष्ठ तथा दूसरे को कम न होना चाहिये अन्यथा परामर्श बेजोड़ हो जायगा।

(३) प्रत्येक परामर्श-दाता को राज्य की समस्त गुप्त बातों का ज्ञान होना चाहिये। उनमें से कुछ लोग ऐसे न होने चाहिये जो विश्वासपात्र बनने के योग्य न हों। जब राय देने वाले राज्य की गुप्त बातों से अनभिज्ञ होंगे तो वह राज्य के हित में परामर्श न दे सकेंगे। जब तक चिकित्सक को रोगी की प्रत्येक बात तथा स्वभाव का ज्ञान नहीं होता उस समय तक उसके उपचार से अधिक लाभ नहीं होता।

(४) परामर्श-दाताओं को बादशाह का विश्वासपात्र होने के कारण प्राणों की रक्षा का विश्वास होना चाहिये, जिससे परामर्श की गोष्ठी में वह किसी प्रकार से नदीमी (चापलूसी) न कर सके और सच बात खुल्लम खुल्ला कहदे और अपनी निष्ठा इसी बात में समझे। बादशाह के क्रोध का भय न करे। जब तक बादशाह का भय हृदय में होता है उस समय तक ठीक परामर्श जिह्वा पर नहीं आता।

(५) बादशाह गोष्ठी में अपना मत व्यक्त न करे और परामर्श-दाताओं की राय को सुने कि वे क्या कहते हैं और परामर्श-दाता किस बात से सहमत हैं। यदि गोष्ठी में बादशाह अपना मत पहले से व्यक्त कर देता है तो उपस्थितजनों के पास इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं रह जाता कि वे उसकी प्रशंसा करें और अपने विचार त्याग दें। बादशाह की राय के विरोध का किसी को साहस नहीं होता और वे तर्क द्वारा बादशाह के मत की पुष्टि करते हैं।

(६) महान कार्यों के परामर्श के लिये बड़े उत्तम समय का चुनाव करना चाहिये। बहुत से बादशाह परामर्श के समय रोज़ा रखा करते थे और परामर्श-दाताओं को भी रोज़ा रखने का आदेश दिया करते थे। इसका कारण यह था कि वे समझते थे कि इस प्रकार बादशाहों तथा परामर्श-दाताओं के हृदय में सच्ची बात ही आयेगी। वे पीरों[1] के दर्शन तथा दान पुण्य द्वारा ईश्वर से सहायता चाहा करते थे। वे परामर्श को व्यर्थ का कार्य न समझते (२४ ब) थे अपितु उसे राज्य के समस्त महान् कार्यों की रक्षा का आधार समझते थे।

(७) यदि कोई बात सर्वसम्मति से निश्चय हो जाय और वह वासना के विरुद्ध न हो और यदि उससे अभिमान उत्पन्न हो तो उससे बचना चाहिये। वासना के अधीन कार्य करने से हानि होती है। परामर्श के सम्बन्ध में बादशाह इसी कारण भूल करते हैं कि वह परामर्श उनकी वासना के अनुकूल होता है और वह उन्हें रुचिकर होता है। अनुचित परामर्श पर आचरण करने से राज्य का विनाश हो जाता है।

सत्य बात तो यह है कि महान् कार्यों का सम्पन्न होना ईश्वर पर निर्भर है और उसकी (२५ ब) भूमिका सत्परामर्श पर, जिसे ईश्वर मनुष्यों के हृदय में डाल देता है।

[*उदाहरण : महमूद ग़ज़नवी की कहानियों से, ख़लीफ़ा उमर से, ख़लीफ़ा उस्मान तथा अली के राज्यकाल की घटनाओं से*]

सत्संकल्प

(३३ अ) सत्संकल्प बादशाही का वस्त्र तथा राज्य-व्यवस्था का रूप है। सत्संकल्प राज्य-व्यवस्था के लिए अनिवार्य है। बादशाह के राज्य-व्यवस्था तथा महान् कार्यों में सत्संकल्प से राज्य में अव्यवस्था नहीं होती। राज्य-व्यवस्था एवं शासन-प्रबन्ध शीघ्र सम्पन्न

१ मुसलमान सन्त।

हो जाता है और विरोधियों तथा मित्रों के हृदय में उसका सम्मान आरूढ़ हो जाता है। सभी लोगों के हृदय में उसकी राज्य-व्यवस्था का स्थायित्व बैठ जाता है। उसका भय उसके बराबर वालों के हृदय से कम नहीं होता और लोगों को पूर्ण विश्वास हो जाता है कि बादशाह जिस महान् कार्य में हाथ डालता है उसे उस समय तक नहीं त्यागता जब तक उसे पूर्ण नहीं कर लेता। बादशाह के दृढ़ संकल्प के विषय में सर्व साधारण को विश्वास हो जाने से राज्य-व्यवस्था में बड़ा लाभ होता है।

यदि बादशाह के विषय में यह प्रसिद्ध हो जाता है कि वह अपने संकल्प में दृढ़ नहीं और लोगों को ज्ञात हो जाता है कि वह अपने कार्यों में परिवर्तन करता रहता है तो न उसके हितैषियों में उसके प्रति निष्ठा एवं प्रेम शेष रहता है और न उसके शत्रुओं को उसके क्रोध का भय रहता है और न प्रजा को उसके आदेशों से संतोष होता है और न उनके किसी (३३ ब) कार्य अथवा उसकी किसी बात का कोई महत्व रहता है और न उसका गौरव उसके बराबर वालों में शेष रहता है।

बादशाहों द्वारा आतंक का प्रदर्शन तथा उनका न्याय

(४५ अ) अभिमान, सब से अलग रहना, गौरव तथा आतंक का प्रदर्शन दासता के गुणों के विरुद्ध है और उपर्युक्त गुण केवल ईश्वर के गुण हैं किन्तु मुसलमान बादशाहों के लिये कुछ सांसारिक आलिमों ने उपर्युक्त गुणों का प्रदर्शन उचित बताया है। इसका कारण यह है कि वह न्याय करता है और उसके वैभव से न्याय उच्च शिखर को प्राप्त होता है और कोई भी विरोधी तथा अवज्ञाकारी किसी दीन पर अत्याचार नहीं कर सकता। इस्लाम तथा शरा के शत्रु इस प्रकार अपमानित, अनादृत तथा तिरस्कृत रहते हैं। इस्लाम के ७२ समुदायों में बादशाह के गौरव के कारण उसकी आज्ञाओं का पालन होता है और न्याय को शोभा प्राप्त होती है। न्याय की शोभा से इस्लाम की उन्नति होती है और धर्म के आदेशों के चालू हो जाने के कारण संसार सुव्यवस्थित तथा सुशासित होता है। समस्त उपकार तथा कल्याण सम्बन्धी एवं अन्य कार्य न्याय के कारण दृढ़ रहते हैं। मुहम्मद साहब ने कहा है, कि "बादशाह का एक क्षण का न्याय जो संसार के सुव्यवस्थित करने के लिये होता है, ७० वर्ष की (४५ ब) उपासना से बढ़ कर तथा लाभदायक होता है।" धर्म के किसी कार्य का इतना उत्कृष्ट फल नहीं होता और न किसी अन्य कार्य के विषय में इतना अधिक पुण्य बताया गया है। इसका कारण यह है कि इसके द्वारा संसार सुव्यवस्थित होता है।.........

अफ़लातूने इलाही ने कहा है कि बादशाह, बादशाही जैसे अद्भुत देन का मूल्य नहीं समझते और इसका प्रयोग भोग बिलास तथा संसार का आनन्द उठाने में करते हैं। इस प्रकार वे बन पशुओं के समान जीवन व्यतीत करते हैं।...... न्याय द्वारा उन्हें इतने अधिक पुण्य प्राप्त होते हैं कि वे भूमि तथा आकाश में भी नहीं समाते।[1]...

स्वाभाविक न्याय

बादशाही का अनिवार्य गुण न्याय है। यदि बादशाह में स्वाभाविक रूप से न्याय के गुण विद्यमान हों और उसमें इस गुण की प्रधानता हो तो नबी होने के गुण के उपरान्त बादशाह होने के गुण से श्रेष्ठ कोई गुण नहीं।......यदि बादशाह में स्वाभाविक रूप से न्याय के गुण न हों तो न्याय को उसके समस्त गुणों में प्रधानता प्राप्त नहीं होती।

१ अत्यधिक पुण्य प्राप्त होता है।

अत्याचार का समूलोच्छेदन

(४६ ब) इस गुण का बादशाह की संतान, सम्बन्धियों, दासों, मित्रों, वालियों[1], क़ाज़ियों तथा आमिलों[2] में, जो शासन प्रबन्ध में उसके सहायक होते हैं, होना परमावश्यक है। जब तक बादशाह के सभी वाली, क़ाज़ी, आमिल तथा आज्ञा प्रदान करने वाले न्यायकारी नहीं होते उस समय तक *सर्वसाधारण के व्यवहार में न्याय नहीं होता तथा अत्याचार का अन्त* नहीं होता। बादशाह उसी समय न्यायकारी हो सकता है जब उसके राज्य में अत्याचार न हो और अत्याचारियों का विनाश न हो। यदि बादशाह के राज्य में एक व्यक्ति भी अत्याचार करता है और अत्याचार उसके ज्ञान में स्थापित रहता है तो वह न्यायकारी नहीं होता।

न्याय का प्रसार एवं स्वाभाविक न्याय

बादशाह के वालियों, क़ाज़ियों, अमीरों तथा आमिलों के न्याय का प्रसार इस प्रकार होना चाहिये कि उसके राज्य में कष्ट तथा उपद्रव कम हो और आकाश से आशीर्वाद की निरन्तर वर्षा होती रहे, अतः बादशाह में स्वाभाविक रूप से न्याय विद्यमान रहना चाहिये। वह स्वाभाविक रूप से अत्यधिक न्याय करता हो और उसके राज्य के ख़ास व आम पर अत्याचार न होता हो।

(४७ अ) सिकन्दर से अरस्तू ने पूछा कि "न्याय तथा अत्याचार विरोधाभासी गुण हैं जो एक स्थान पर तथा एक गोष्ठी में एकत्र नहीं हो सकते। कुछ बादशाहों तथा शासकों की गोष्ठी में दोनों एक स्थान पर देखे गये हैं। इसका क्या कारण है?" अरस्तू ने उत्तर दिया कि 'यदि किसी बादशाह में स्वाभाविक रूप से न्याय पाया जाता हो तो वह किसी भी दशा में तथा कदापि अत्याचार न करेगा।"

व्यय सम्बन्धी सावधानी

(४६ ब) बादशाह बैतुलमाल से अपने सहायकों एवं मित्रों के लिये जो कुछ व्यय करता है वह उसके लिये आवश्यक होता है। यदि बादशाह अपने आपको तथा अपने सहायकों एवं मित्रों को शक्तिशाली नहीं बनाता तो उसे बादशाही करना प्राप्त नहीं होता। बादशाह को इस व्यय में आवश्यकता पर दृष्टि रखनी चाहिये। यदि बादशाह अपने सहायकों तथा मित्रों के व्यय में वासना से प्रेरित हो जाता है तो उसके कार्य ख़तरे में पड़ जाते हैं।

[उमर तथा मामून के दान से उदाहरण]

बे हिम्मत बादशाह

(५० ब) बे हिम्मत बादशाह बादशाही के योग्य नहीं होता। प्रजा के लिये कम हिम्मत बादशाह की आज्ञाकारिता उचित नहीं और न उसे ख़राज तथा जिज़या अदा करना चाहिये। यदि बादशाह अपने व्यवहार में प्रजा से पृथक् नहीं होता और यदि उसका आदर तथा सम्मान संसार वाले नहीं करते तो प्रजा को उसकी आज्ञाओं का पालन करने में लज्जा आती है। बादशाह में गौरव, श्रेष्ठता तथा आतंक इस प्रकार होना चाहिये कि यदि वह जंगल में यात्रा कर रहा हो तो बन पशु उसे सिज्दा करें।

[उमर के जीवन से तथा मामून के इतिहास से उदाहरण]

---

१ प्रान्तों के अधिकारियों।

२ कर्मचारियों।

बादशाह के कार्यों में संतुलन

(५४ ब) राज्य के सहायकों तथा स्तम्भों अपितु राज्य के समस्त विशेष व्यक्तियों में (५५ अ) संतुलन के विषय में सुल्तान महमूद ने परामर्श किया है कि हे महमूद के पुत्रो तथा हे पृथ्वी के बादशाहो ! तुम्हें ज्ञात होना चाहिये कि राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी उत्तम कार्य दो प्रकार के होते हैं :

(१) सर्वसाधारण के हक़ों का अदा करना अर्थात् प्रजा के प्रति कृपा, दया, न्याय तथा उसकी सहायता।

(२) शासक द्वारा दूसरे प्रकार का हक़ अदा करना राज्य के विशेष व्यक्तियों के प्रति होता है। यह नाना प्रकार के होते हैं। सैयिद होने के कारण, ज्ञान के कारण बुद्धि के कारण, पवित्रता के कारण, वंश की शुद्धता के कारण, चरित्रवान होने के कारण, उदाहरणार्थ वीरता, व्यापार, कलाकौशल के कारण। बादशाह के लिये यह आवश्यक है कि वह प्रत्येक गुण का उचित बदला दे। अपने सहायकों तथा मित्रों की निष्ठा का हक़ अदा करे तथा राज्य के विशेष व्यक्तियों के गुणों का हक़ अदा करे। इनाम इकराम देते समय संतुलन का ध्यान रक्खे और प्रत्येक के हक़ को उसकी योग्यतानुसार अदा करे।

पूर्णरूप से बुद्धिमान् ऐसे बादशाह को कहा जा सकता है जो विशेष व्यक्तियों तथा (५५ ब) सर्वसाधारण से जो व्यवहार करे तथा अपने पुत्रों, भाइयों, सम्बन्धियों, दरिद्रियों, सेवकों इत्यादि से जो व्यवहार करे वह संतुलन के बिना न हो। उसका दान पुण्य तथा उसके दरबार वालों के सम्मान में कोई बात बेजोड़ न हो। उसके कार्यों से जो सहायता पाने के अधिकारी हों, वे उससे वंचित न रह जायँ। उसका प्रेम लोगों के हृदय में आरूढ़ हो जाय।

(५६ अ) *(अर्दशेर बाबकाँ के कथन से उदाहरण)*

मुतग़ल्लिब

जो बादशाह बहुत से लोगों को एकत्र करले और उन्हीं के प्रति निष्ठा प्रदर्शित करे तथा दूसरे के हक़ों का ध्यान न रक्खे और उनकी शक्ति के बल पर एक इक़लीम पर राज्य करे, अन्य लोगों से छीने और उन्हें प्रदान करे, नित्य अपने सहायकों एवं मित्रों को सम्मानित करे और उनकी शक्ति में वृद्धि कराता रहे, अपने राज्य का स्थायित्व उन्हीं लोगों पर आधारित समझे, उनके गुण तथा दोष पर कोई दृष्टि न रक्खे तो ऐसे व्यक्ति को मुतग़ल्लिब कहते हैं बादशाह नहीं। ऐसे व्यक्ति की दृष्टि ईश्वर से पृथक् हो जाती है और सर्वदा अपने सहायकों तथा मित्रों पर केन्द्रित रहती है और वह तुच्छ, पतित, कृपण, दोषी, दुष्ट तथा बदअसल एवं कमअसल को अपना सहायक बना लेता है। निःसंदेह संसार में सहस्रों मुतग़ल्लिब हुये हैं जो अपने निष्ठावान सहायकों की शक्ति के बल पर राज्य करते रहे हैं और उन्होंने अपने आपको (५६ ब) तथा अपने सहायकों को नारकी बना लिया। संसार से उनका अन्त हो गया और उनका नाम व निशान न किसी की जिह्वा पर रहा और न किसी के हृदय में।

पदों में संतुलन

जो लोग श्रेष्ठता, योग्यता, धर्मनिष्ठा, बुद्धिमत्ता, कौशल तथा नैतिकता में संतुलन रखते थे और प्रत्येक के हक़ अदा करने का ध्यान रखते थे, उनकी चर्चा लोग क़यामत तक करते रहेंगे और इससे परलोक में उन्हें मुक्ति प्राप्त होगी तथा उनका कल्याण होगा। यह समझना चाहिए कि दरबार के पदों में वज़ीर से लेकर द्वारपाल तक सभी के पदों में संतुलन होना चाहिये।

(अमीर सुबुक्तिगीन का उदाहरण)

(५७ ब) हे महमूद के पुत्रो तथा हे संसार के बादशाहो ! तुम्हें यह न सोच लेना चाहिए कि तुम्हारे राज्य में सभी उत्कृष्ट लोग होते हैं और जो कुछ तुम्हारे दरबार से उन्हें प्रदान होता है, वह उनका हक़ होता है। यह न समझना चाहिये कि वे तुम्हारे प्रति निष्ठावान ही हैं। अधिकांश उनमें से तुच्छ, कमीने, पतित तथा कमअसल होते हैं। उन्हें उत्कृष्ट तथा योग्य लोगों के स्थान पर उन्नति प्राप्त हो जाती है। अपने आपको योग्य तथा उत्कृष्ट समझते हैं और उनके कारण तुच्छ, पतित तथा कमअसल लोगों से मुक्ति नहीं प्राप्त होती।........

(५८ अ) बादशाहों, जिनके लिये धर्म की रक्षा परमावश्यक है, के लिये यह अनिवार्य है कि सम्मान प्रदान करते समय वे ईश्वर द्वारा पथ-प्रदर्शन का ध्यान रक्खें। जिस किसी को भी ईश्वर ने उत्कृष्ट बनाया हो उसे उसी प्रकार उन्नति तथा श्रेष्ठता प्रदान करें। उसे सर्वसाधारण में सम्मानित करें। जिन्हें ईश्वर ने तुच्छ बनाया हो और जिन्हें दुराचार, व्यभिचार तथा अयोग्य एवं शैतान के हाथों कठपुतली तथा संसार का दास और वासना के वश में रक्खा हो उनके सम्बन्ध में दूरदर्शी बादशाह के लिये यह अनिवार्य है कि उससे इस प्रकार व्यवहार करे जिससे खास व आम के हृदय में ईश्वर की श्रेष्ठता आरूढ़ हो सके। जो कोई ऐसे लोगों को जिन्हें ईश्वर ने तुच्छ तथा कमीना बनाया हो सम्मान प्रदान करता है तो वह खलीफ़ा तथा ईश्वर का उत्तराधिकारी होने के योग्य नहीं होता।

(नौशीरवाँ के वसीयतनामे का उल्लेख)

हशम[1] की अधिकता तथा दृढ़ता

(६४ अ) सुल्तान महमूद ने कहा है कि, "हे महमूद के पुत्रो ! तुम्हें तथा जिस किसी को भी ईश्वर ने राज्य-व्यवस्था तथा धर्म की रक्षा द्वारा सम्मानित किया है उसे समझना (६४ ब) चाहिये कि बादशाही करना, शासन प्रबन्ध करना, दिग्विजय करना, एक संसार को अपने अधीन कर लेना, विरोधियों तथा विद्रोहियों को कुचलना, अवज्ञाकारियों तथा आदेशों का पालन न करने वालों को अपना आज्ञाकारी बनाना, झगड़ा करने वालों के झगड़े का अन्त कराना, मुहम्मद साहब के धर्म के शत्रुओं का विनाश, सच्चे धर्म को लोगों में स्पष्ट करना, इस्लाम के ७२ समुदायों में शरा के आदेश जारी करना, अधर्मियों से इक़्लीमें, प्रदेश तथा विलायतें तलवार के जोर से प्राप्त करना, इस्लाम के ग़ाज़ियों, योद्धाओं तथा दीन मुसलमानों के लिये अत्यधिक धन-सम्पत्ति एकत्र करना, देश तथा राज्य के शत्रुओं के विरोध के द्वार बन्द करना, तथा उचित रूप से बादशाही एवं शासन करना, हशम की अधिकता, शक्ति तथा दृढ़ता के बिना सम्भव नहीं होता।

(६५ अ) कैखुसरो की, जो समस्त संसार का बादशाह था, यह लोकोक्ति है कि "बादशाही हशम है और हशम बादशाही है' अर्थात् बादशाही दो स्तम्भों द्वारा स्थापित है प्रथम जहाँदारी[2] द्वितीय जहाँगीरी[3]; दोनों स्तम्भ हशम के कारण स्थापित हैं, कारण कि यदि हशम न हो अथवा कम हो या परेशान तथा छिन्न भिन्न हो तो न जहाँदारी सम्भव होती है और न जहाँगीरी।"

महान् सम्राटों का यह कथन है कि "सर्वप्रथम बादशाह को हशम के कार्य की व्यवस्था में व्यस्त रहना चाहिये। उसी समय हशम का कार्य सम्पन्न हो पाता है। यदि

१ सेना तथा परिजन।
२ राज्य-व्यवस्था अथवा शासन प्रबन्ध।
३ दिग्विजय।

बादशाह हशम के कार्य में असावधानी प्रदर्शित करता है तो अपने हाथ से अपनी सेना तथा राज्य का कार्य नष्ट कर देता है। यदि बादशाह के हृदय में राजकोष एकत्र करने का विचार आ जाता है तो हशम के कार्य कदापि दृढ़ नहीं होते और खजाना कदापि एकत्र नहीं होता अपितु जो कुछ रहता है वह भी छिन्न-भिन्न हो जाता है। यदि बादशाह के हृदय में सेना एकत्र करने का विचार आ जाता है तो हशम के कार्य अवश्य ही दृढ़ हो जाते हैं। हशम की दृढ़ता से इतना धन एकत्र हो जाता है जो किसी भी राजकोष में नहीं समा सकता। बुद्धिमान् लोगों को इस बात के बड़े प्राचीन समय से प्रमाण मिल चुके हैं और अनुभव द्वारा यह बात स्पष्ट हो चुकी है।

ईरान के इतिहासकारों ने लिखा है कि जमशेद से पूछा गया कि 'राज्य-व्यवस्था की पूँजी क्या है?' जमशेद ने कहा "अत्यधिक सुव्यवस्थित सेना, न्याय तथा परोपकार।" जमशेद से तीन बार यही प्रश्न किया गया और तीनों बार उसने यही उत्तर दिया। जमशेद से पूछा (६५ ब) गया कि 'हशम की अधिकता का न्याय तथा परोपकार के पूर्व उल्लेख करने का क्या कारण है?' जमशेद ने उत्तर दिया कि "अत्यधिक परिजन द्वारा जब तक विद्रोहियों तथा विरोधियों को आज्ञाकारी न बनाया जाय और सेना की शक्ति तथा अधिकता से संसार में सुव्यवस्था उत्पन्न न हो तो न्याय तथा परोपकार किसी प्रकार नहीं किये जा सकते।"

सिकन्दर ने अरस्तू से पूछा कि 'हशम की दृढ़ता तथा हशम की अधिकता, जिस पर बादशाही अवलम्बित है किन बातों से सम्बन्धित है?' अरस्तू ने उत्तर दिया कि चार बातों से इसमें अधिकता तथा दृढ़ता प्राप्त होती है:—

(१) हशम के कार्यों की देख रेख किसी भी समय बादशाह के हृदय से न निकले और वह अपना अस्तित्व हशम पर अवलम्बित समझे।

(२) अत्यधिक तथा निःसंकोच धन व्यय करने से सेना की संख्या में अधिकता होती है तथा वह दृढ़ होती है। जिस समय तक अत्यधिक धन नहीं व्यय किया जाता, न तो हशम की संख्या बढ़ती है और न वह दृढ़ होती है।

(३) कृपालु तथा दयालु सेनापतिः—दार्शनिकों ने लिखा है कि बादशाह का सेना से (६६ अ) कभी-कभी कार्य पड़ता है किन्तु सेनापति का रात दिन सेना से कार्य रहता है। यदि सेनापति में किसी प्रकार की कमी हो तो सेना कदापि दृढ़ नहीं हो सकती।

(४) जिस बात से सेना की संख्या बढ़ती है और वह दृढ़ होती है वह आरिज़ का अनुभवी होना है। यदि धन व्यय किया जाय तो अत्यधिक सेना एकत्र हो सकती है किन्तु जब तक सेनापति तथा आरिज़, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, उसी प्रकार के न हों उस समय तक सेना कदापि सुव्यवस्थित नहीं होती और न दृढ़ रहती है। अयोग्य तथा अपहरणकर्ताओं से प्रत्येक मास तथा प्रत्येक सप्ताह विघ्न पड़ता रहता है।

सिकन्दर ने अरस्तू का उत्तर सुनकर उससे पूछा कि "बादशाह को हशम की व्यवस्था में किस सीमा तक प्रयत्नशील रहना चाहिये?" अरस्तू ने उत्तर दिया कि "बादशाह को चाहिये कि वह सेना के लिये घोड़े तथा अस्त्र शस्त्र प्रदान करे ताकि वह सुव्यवस्थित रहे। यदि किसी प्रकार की कमी सेना में देखे या सुने तो वह जब तक उसे पूरा न करले उस समय तक किसी अन्य कार्य की ओर ध्यान न दे और न विश्राम करे।"

सिकन्दर ने पुनः सेनापतियों के गुणों के विषय में पूछा। अरस्तू ने कहा कि "सेनापति में १० गुण अनिवार्य रूप से होने चाहियेः—

(६६ ब) (१) ईश्वर का भय—यदि सेनापति में ईश्वर का भय न हो तो उसे १० अश्वारोहियों पर भी नेतृत्व न प्रदान किया जाय। ईश्वर का भय न करने वाले को किसी प्रकार सेनापति न बनाना चाहिये।

(२) बादशाह के प्रति निष्ठा—यदि सेनापति बादशाह के प्रति निष्ठावान न हो तो उसे सेना का प्रबन्ध, जोकि बादशाही की पूँजी है, न देना चाहिये।

(३) आत्मा की शुद्धता—यदि सेनापति की आत्मा शुद्ध न हो और वह आज्ञाकारियों के समूह को देखकर अन्य समूह की अभिलाषा करता है तो उससे सेना को हानि पहुँचती है।

(४) वंश की शुद्धता—यदि सेनापति शुद्ध वंश से सम्बन्धित नहीं होता तो न उसकी सेना सुरक्षित रह सकती है और न उसके द्वारा कोई ऐसा कार्य ही सम्पन्न हो सकता है जिससे धर्म तथा राज्य की उन्नति प्राप्त हो।

(५) बफ़ादारी—सेना के सरदार को इतना बफ़ादार होना चाहिए कि वह इधर-उधर डाँवाडोल न होता फिरे।

(६) अनुभव—यदि सेनापति को युद्ध का अनुभव न हो तो वह अपनी तथा अपनी सेना की रक्षा नहीं कर सकता।

(७) उसके अत्यधिक सहायक तथा सम्बन्धी होने चाहिये जिससे सेना को उस पर विश्वास हो सके।

(८) वीरता—उसे घुड़सवारी में दक्ष होना चाहिये।

(९) दानशीलता—वह सेना को कभी भी नंगा तथा भूखा न देख सके। कृपण कोई भी सुव्यवस्था नहीं कर सकता।

(६७ अ) (१०) बात का पक्का होना—सेनापति को अपनी बात का पक्का होना चाहिये ताकि लोग उसके वचन तथा उसके कार्य पर भरोसा कर सकें।

वह बात जिससे सेना की संख्या में वृद्धि होती है और वह सुव्यवस्थित रहती है वह आरिज़े असल से सम्बन्धित है जिसे आरिज़े ममालिक कहते हैं। विश्वास में उसे वज़ीर के समान होना चाहिये। उसे बादशाह के प्रति अत्यधिक निष्ठा होनी चाहिये। ईमानदारी, सत्यता, बुद्धिमत्ता, कृपा, शुद्ध तथा उत्तम विश्वास एवं वचन के पालन में किसी को उससे बढ़कर न होना चाहिये। यदि आरिज़े ममालिक उत्कृष्ट गुणों तथा निष्ठा से परिपूर्ण होता है तो बादशाह की सेना में वृद्धि होती रहती और वह सुव्यवस्थित होती है। सेना के समस्त छोटे बड़े कार्य उससे सम्बन्धित होते हैं। आरिज़े असल के बुद्धिमान् तथा निष्ठा से परिपूर्ण होने के कारण समस्त आरिज़ाने हशमे ममालिक[1] उसी के पद-चिह्नों पर चलते हैं। किसी मूर्ख, कमीने, झूठे तथा बेवफ़ा को आरिज़े असल न बनाना चाहिये। हशम के ऊपर शुद्ध आत्मा के तथा नेक एवं सच्चे आरिज़ नियुक्त करने चाहिये। जिस योजना में स्रोत से शाखा तक सभी नेक, बुद्धिमान् तथा दयालु नियुक्त होते हैं तो वह योजना चाहे बहुत बड़ी तथा कठिन ही हो फिर भी बादशाह की इच्छानुसार सम्पन्न हो जाती है और उसके पूर्ण होने से बुद्धिमानों के हृदय में कोई भय नहीं होता।

मआसिरुल वुज़रा नामक पुस्तक में लिखा है कि प्राचीन काल के वज़ीर इस बात से सहमत थे कि बड़े बड़े कार्यों तथा योजनाओं एवं राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी नीतियों में अव्यवस्था एवं परेशानी इसी कारण होती है कि शुद्ध सिद्धान्तों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। मूर्खों

१ आरिज़े हशमे ममालिक, आरिज़े असल के अधीन होता था।

चोरों, बदअसलों, तथा हरामखोरों से बुद्धिमानों, सच्चे लोगों, उच्च विचार वालों तथा वीरों का कार्य लिया जाता है।

अर्दशेर बाबकाँ ने आरिज़े असल की शुद्धता के विषय में लिखा है कि बादशाही की पूँजी हशम तथा बादशाही हशम से दृढ़ रहती है अतः आरिज़ ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जोकि निष्ठा तथा आत्मा की शुद्धता में बादशाह को और हशम पर माता पिता के समान (६८ अ) दयावान हो। हशम की भूलों को क्षमा कर देता हो। आरिज़ को हशम पर उसी प्रकार कठोरता प्रदर्शित करनी चाहिये जिस प्रकार अनुशासनहीन संतान के प्रति दयावान पिता कठोरता प्रदर्शित करता है। उसे कभी कठोरता अथवा दंड को सीमा से अधिक न बढ़ाना चाहिये। वीरों तथा अच्छे सेवकों को अपमानित न करना चाहिये। मूर्खों तथा विलासियों को दंड तथा कोड़े लगवाना एवं सहमुलहशम के सुपुर्द कर देना तथा उन्हें कुछ समय तक पृथक् रखना पर्याप्त होता है। इसमें किसी प्रकार अतिशयोक्ति (अधिकता) न करना चाहिये। सेना के दोष तथा अपराधों को कभी कभी बादशाह के समक्ष प्रस्तुत करते रहना चाहिये। बादशाह को जहाँ तक सम्भव हो हशम को कठोर दंड न देना चाहिये और उनका वध तथा उनकी हत्या न कराना चाहिये। बादशाह को सेना का शत्रु और सेना को बादशाह का शत्रु न हो जाना चाहिये। हशम की कठिनाइयों तथा दुःख को अपना दुःख समझना चाहिये; उनके दुःख में दुखी होना चाहिये और उनकी प्रसन्नता से प्रसन्न होना चाहिये। अपनी मुक्ति तथा आराम सेना को सुव्यवस्थित रखने में समझना चाहिये।

आरिज़ को सर्वदा सेना के प्रति ऐसा व्यवहार करना चाहिये कि किसी प्रकार भी सेना का विश्वास उसके प्रति कम न हो तथा उसका आतंक एवं वैभव सेना के हृदय में (६८ ब) दृढ़ रहे। सेना का अत्यधिक विश्वास, आरिज़ के सहायकों, सम्बन्धियों तथा दासों पर निर्भर समझना चाहिये।

प्राचीन बादशाह हशमगीरी तथा हशमदारी[1] में बड़ी सावधानी से कार्य करते थे और इस महत्वपूर्ण कार्य में ज्ञान तथा बुद्धि से सम्बन्धित किसी प्रकार की कमी नहीं करते थे। महान् कार्य, शासन प्रबन्ध सम्बन्धी उत्कृष्ट बातें तथा दिग्विजय सम्बन्धी योजनायें हशम द्वारा ही सम्पन्न होती हैं और बादशाह का नाम तथा उसकी प्रसिद्धि इन्हीं के कारण क़यामत तक रहेगी। बादशाह के लिये यह अनिवार्य है कि शासन प्रबन्ध में जो बात बादशाही की पूँजी है उसे भली भाँति करता रहे ताकि उसकी प्रसिद्धि संसार में बाक़ी रहे।

(६९ अ) हे महमूद के पुत्रो तथा हे संसार के बादशाहो! तुम्हें ज्ञात होना चाहिये कि महमूद हशम की वृद्धि, सुव्यवस्था तथा दृढ़ता में क्या-क्या प्रयत्न किया करता था। अपने राज्य-काल के प्रथम तीन वर्षों में वह निष्ठावान, बुद्धिमानों से ऐसे नियमों के तैयार कराने में जिससे प्रति वर्ष हशम में वृद्धि होती रहे तथा वह सुव्यवस्थित रहे, परामर्श किया करता था। जब वह उन अधिनियमों को बना चुका तब उसने जहाँगीरी में हाथ डाला। यदि महमूद, अबुल क़ासिम कसीर से बढ़कर किसी अन्य को उच्च वंश से सम्बन्धित, शुद्ध आत्मा वाला, सच्चा, ईमानदार, निष्ठावान, कृपालु तथा धर्मनिष्ठ पाता तो उसे सेना का आरिज़ बनाता। वह (अबुल क़ासिम) ऐसा आरिज़ था कि उसे हशम के वेतन का लाखों प्राप्त होता था किन्तु (६९ ब) वह सब का सब हशम की देख रेख में व्यय कर देता था और हशम के विषय में वह माता पिता से अधिक कृपालु था। वह हशम के विषय में महमूद की बात भी न सुनता था।

---

१ सेना की भर्ती तथा सुव्यवस्था।

सुल्तान मसलहत के कारण यदि कुछ दिलवाता तो वह न देता और तत्काल घरबार त्याग कर तथा सिर मुड़वाकर मक्का मदीना को प्रस्थान करने हेतु तैयार हो जाता था। वह इतने वर्ष तक आरिज़ रहा किन्तु झूठ कभी भी उसकी जिह्वा पर न आया।······महमूद ने हशम पर अत्यधिक व्यय करके उसे इतना दृढ़ तथा आज्ञाकारी बना लिया था कि महमूद उनके द्वारा महान् कार्य सम्पन्न करा सका।······

महमूद ने 'तारीखे ख़ुलफ़ाये अब्बासी' में पढ़ा था कि जब हारूनुर्रशीद ने जहाँगीरी का संकल्प किया तो उसने बरमकियों से जिनमें से प्रत्येक अपने समय का बुज़र्चमेहर तथा आसफ़ था कहा कि "प्राचीन काल की पंजिकाओं तथा नियमों का अवलोकन करके बतायें कि प्राचीन काल के बादशाहों, जो इतनी बड़ी सेना रखते थे और उसके बल पर संसार को विजय करते थे, के लिये यह किस प्रकार सम्भव था ?" बड़े सोच विचार, वाद-विवाद तथा प्राचीन पंजिकाओं के अवलोकन के उपरान्त समस्त वज़ीर सेना की दृढ़ता के विषय में पाँच अधिनियमों पर सहमत हुये। नियम इस प्रकार हैं—

सेना की दृढ़ता सम्बन्धी नियम

(१) सेना की रसद का विवरण प्रत्येक वर्ष बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया जाय और राजसिंहासन के समक्ष (इस बात का उल्लेख हो) कि क्या प्राप्त हुआ तथा कहाँ से प्राप्त हुआ।

(२) बादशाह को यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात होनी चाहिये कि सेना के लिये क्या व्यवस्था की गई और वे किस प्रकार अपने परिवार की ओर से निश्चिन्त रहे।

(३) घोड़ों तथा अस्त्र शस्त्र के विषय में दो बार पूछताछ करानी आवश्यक है। यह पूछताछ ऐसे व्यक्तियों द्वारा होनी चाहिये जिनके विषय में झूठ तथा अपहरण की आशंका न की जासके ताकि युद्ध के समय सेना द्वारा कोई अनुचित कार्य सम्पन्न न हो सके। इस प्रकार की जाँच दो दिन तक होनी चाहिये ताकि एक साथ समाप्त हो जाय।

(४) ग़ाज़ियों[1] तथा मुजाहिदों की[2] की घुड़ सवारी में परीक्षा होनी चाहिये ताकि जो इसकी योग्यता न रखता हो तथा अन्य व्यवसाय से सम्बन्धित हो वह उनके मध्य में न आ जाय क्योंकि अन्य समूह के ग़ाज़ियों में प्रविष्ट हो जाने के कारण बड़ा उपद्रव खड़ा हो जाता है।

(५) सेना के सरदार को चुना हुआ, उच्च वंश से सम्बन्धित, वीर तथा शुद्ध आत्मा का होना चाहिए।

(७१ अ) महमूद यथासम्भव इन पाँचों नियमों पर आचरण करता था और उसने अन्य अधिनियम भी बनाये थे। इस प्रकार उसने ३०,००० अश्वारोही तथा एक लाख पदाति-वेतन[3] पाने वाले एकत्र कर लिये थे। ३० हज़ार सवार दासों में से सुव्यवस्थित किये थे। महमूद कुछ सेना वालों को दूर की अक़्तायें कुछ को नगर के निकट के ग्राम, कुछ को कृषि के योग्य कुछ को अपितु आधी सेना को ख़ज़ाने से सुव्यवस्थित रखता था। वह सर्वदा सेना की देख रेख में प्रयत्नशील रहता था और उनकी देख भाल किया करता था।

दासों की सेना

महमूद १२ वर्ष तक प्रयत्न करता रहा और उसने ३०,००० सवार दासों को एकत्र

१ मुसलमान योद्धाओं।
२ जेहाद करने वालों।
३ मवाजिब ख्वार।

किया और उनको सुव्यवस्थित किया। इनमें से १५,००० हिन्दू दास थे तथा १५००० अश्वारोही चीन तथा खता के थे। यदि उनके सम्बन्धित छोटे बड़े सभी की गणना की जाय तो एक लाख से अधिक व्यक्ति हो जायेंगे। महमूद को दासों की सेना से बहुत से लाभ दृष्टिगत हुये तथा हानियाँ भी।

लाभ यह है कि दासों की अधिकता से बादशाह शक्तिशाली तथा वैभव वाला प्रतीत होता है। हाथियों तथा घोड़ों की अधिकता से बादशाह वैभवशाली तथा शक्तिशाली प्रतीत होता है और इससे दूर तथा निकट के शत्रु भयभीत रहते हैं और दासों की अधिकता से बादशाह का महत्व लोगों की दृष्टि में बढ़ जाता है।

दूसरा लाभ यह है कि दास अपनी विशेषता के लिये सेना के युद्ध तथा क़िले की विजय हेतु प्रयत्न प्रारम्भ करने के पूर्व प्रयत्न आरम्भ कर देते हैं। अपने नाम तथा प्रसिद्धि एवं अपने आप को स्वामि-भक्त प्रदर्शित करने के लिये तथा सेवकों से अपने आप को बढ़ कर प्रमाणित करने के लिये वे हृदय से युद्ध के लिये प्रयत्न करते हैं और बहते हुये जल तथा धधकती हुई अग्नि में फांद पड़ते हैं। समस्त सेना के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि वे भी उसी मार्ग पर चलें। इसमें बड़ा लाभ होता है।

तीसरा लाभ यह है कि उनको देखकर सेना वालों का अभिमान कम हो जाता है। उनके अत्यधिक हो जाने से किसी भी समूह के हृदय में उनके भय के कारण विरोध का विचार उत्पन्न नहीं होता। सेना वाले यह समझते हैं कि दास दूसरे समूह से सम्बन्धित हैं और वे न उनसे मिल सकते हैं और न उनका अनुसरण कर सकते हैं। यह लाभ थोड़ा नहीं है।

(७२ अ) उनके एकत्र करने तथा एक साथ रखने से यह हानि होती है कि उनमें से अधिकांश निर्लज्ज होते हैं तथा भविष्य के विषय में कुछ नहीं सोचते। यद्यपि वे वर्षों से मुसलमानों के साथ छोटी अवस्था से बड़ी अवस्था को प्राप्त होते हैं तथापि मुसलमानों के हृदय में जो ईश्वर का भय होता है वह उनमें उत्पन्न नहीं होता। यद्यपि मुग़लों को वर्षों तक आश्रय प्रदान किया जाय तब भी उनमें स्वामि-भक्ति नहीं उत्पन्न होती और उनके हृदय में अपनी शक्ति बढ़ाने, जंगलीपन तथा विश्वासघात के अतिरिक्त कोई अन्य बात बड़ी कठिनाई से आती है। उनको एकत्र रखने तथा उनकी अधिकता के विचार से महमूद को सर्वदा कष्ट होता था। उनके संगठित हो जाने तथा अपनी शक्ति के बढ़ा लेने का भय बहुत बड़ा भय होता है।

सेना रखने से सम्बन्धित आवश्यक बातें

महमूद के पुत्रों तथा मुसलमान बादशाहों को सेना रखने की गूढ़ बातों का ज्ञान परमावश्यक है। प्रथम आवश्यकता यह है कि जो १०० अश्वारोहियों के योग्य हो और १०० सवार सुव्यवस्थित रख सकता हो उसे १००० तथा २००० सवार का अधिकारी न नियुक्त करना (७२ ब) चाहिये। जो कोई १००० तथा २००० सवारों की व्यवस्था करने के योग्य हो उसे १०० अथवा ५० अश्वारोहियों का अधिकारी न बना देना चाहिये। इससे उसे निराशा होती है और सेना नायकों को किसी प्रकार निराश न करना चाहिये। यदि कोई योग्य व्यक्ति किसी अयोग्य व्यक्ति को किसी उच्च स्थान पर देखता है तो उसकी निष्ठा में कमी आ जाती है और वह सर्वदा अप्रसन्न रहता है।

सेना रखने की शर्तों में एक यह शर्त है कि यदि बादशाह के राज्य के लिए ५०,००० अश्वारोही पर्याप्त हों तो उसे केवल ५०,००० सवारों से संतुष्ट न हो जाना चाहिये। जितने पर्याप्त हों उनसे कम से कम आधे और भी सुव्यवस्थित रखने चाहिये ताकि ये ५०,००० सुव्यवस्थित रहें और यदि कोई दुर्घटना हो जाय तो उस समय नये अनुभव-शून्य सवार न रखने पड़ें। अकस्मात् आवश्यकता पड़ने पर अनुभव-शून्य सरदार किसी कार्य के योग्य नहीं होते अपितु कठिनाई के समय उनसे हानि होती है।

सेना की अधिकता से लाभ

(७३ अ) सेना की अधिकता से राज्य-व्यवस्था में बहुत से लाभ होते हैं। एक लाभ तो यह है कि सेना की अधिकता से बादशाह का आतंक उसके बराबर वालों के हृदय में आरूढ़ हो जाता है। दूसरे यह कि यदि बादशाह को अन्य इक़लीमों तथा प्रदेशों पर अधिकार जमाने की आवश्यकता पड़ जाती है तो अधिक सवार उस स्थान पर काम आते हैं और राज्य व्यवस्था हेतु जितनी सेना की आवश्यकता है उसमें न्यूनता नहीं होती। भविष्य के विषय में इस प्रकार सोचना दूरदर्शी बादशाहों का कार्य है। हे पुत्रो तथा हे बादशाहो! तुम्हें सहस्रों बार यह आवश्यक है कि जो कोई तुम्हारे समक्ष यह कहे कि इतने अश्वारोही ही रखने चाहिये और बिना आवश्यकता के इतना धन व्यय करना अनुचित है और सेना में वृद्धि करने के स्थान पर उसे कम करने के लिये कहे तो तुम्हें उसको अपने धर्म तथा राज्य का शत्रु समझना चाहिये, यद्यपि वह तुम्हारा भाई अथवा पुत्र ही क्यों न हो।

सेना के दीवान की जाँच

सेना के दीवान की अपने समक्ष दो बार जांच करनी चाहिये और संख्या के विषय में पूछताछ करनी चाहिये। यदि संख्या में वृद्धि न हो तो समझना चाहिये कि सेना का कार्य (७३ ब) भली भाँति सम्पन्न नहीं हो रहा है। तुम्हें समझना चाहिये कि यदि तुम्हारे आरिज़ों सेनानायिकों तथा विलायत के वालियों को किसी प्रकार यह पता चल जाय कि तुम सेना की वृद्धि में अधिक प्रयत्न नहीं करते अथवा तुम धन अधिक व्यय हो जाने पर ध्यान देते हो तो तुम समझ लो कि इस प्रकार सेना में कदापि वृद्धि नहीं हो सकती और जो कुछ सेना है भी वह सुव्यवस्थित नहीं हो सकती और नित्य प्रति कम होती रहेगी।

सेना को बेकार न रखना चाहिये

इस सम्बन्ध में तीसरी गूढ़ बात यह है कि सेना को बेकार न रखना चाहिये अपितु धन एकत्र करने, सीमा की रक्षा, जंगलों के विनाश, क़िलों को विजय करने तथा शिकार में लगाये रखना चाहिये, विशेष रूप से उन लोगों को जो सेनापति बनने की इच्छा रखते हों तथा उनसे उपद्रव का भय हो। यदि बादशाह का हृदय अपने राज्य के (आँतरिक) युद्धों से मुक्त हो, उसका राज्य दृढ़ हो चुका हो तो उसे अन्य देशों के विजय करने की ओर ध्यान देना चाहिये। प्रत्येक व्यवसाय तथा कार्य से सम्बन्धित व्यक्ति अपने कार्य में व्यस्त रहे बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार यदि सेना अपने कार्य में व्यस्त न रहे तो उसके मस्तिष्क में अन्य प्रकार के विचार उत्पन्न होने लगते हैं।

सेना को सन्तुष्ट रखना

सेना को सन्तुष्ट रखने में भी बहुत से लाभ हैं, किन्तु इसकी भी एक सीमा होनी

चाहिये। उन्हें इतना भी सन्तुष्ट न होना चाहिये कि उनके मस्तिष्क में अन्य प्रकार के विचार आने लगें।

[उदाहरणः तारीखे अकासेरा से ईरान के प्राचीन बादशाहों से सम्बन्धित]

बरीद[1]

(७९ अ) यदि बादशाह को अपने राज्य वालों के अच्छे बुरे की सूचना न हो तो वह उनके कार्य सम्पन्न कराने के विषय में किस प्रकार प्रयत्न कर सकता है? क़यामत में बादशाह से प्रत्येक व्यक्ति के विषय में प्रश्न किया जायगा। यदि उसे प्रजा के अच्छे बुरे, सुव्यवस्था तथा अव्यवस्था की सूचना न हो तो वह किस प्रकार उत्तर दे सकता है? यदि ईश्वर द्वारा बादशाह से प्रजा के विषय में कोई प्रश्न किया जाय और बादशाह अपने आपको अनभिज्ञ बताये तो बादशाह का उत्तर कदापि न सुना जायगा। उसे उतने ही राज्य पर अधिकार प्राप्त करना चाहिये जितने की उसे सूचना रह सके। अतः बादशाहों के लिये बरीद नियुक्त करना आवश्यक तथा अनिवार्य है। हे पुत्रो! यदि कोई मूर्ख तुम से यह कहे कि क़ुरान में (७९ ब) यह लिखा है कि लोगों के विषय में छान-बीन मत करो तो तुम्हें उसका यह उत्तर देना चाहिये कि यह निषेध, लोगों के एक दूसरे के मामले के विषय में है किन्तु बादशाह प्रजा के अच्छे बुरे हाल, आज्ञाकारिता तथा अवज्ञा के विषय में पूछताछ करते रहें।.........

(८० अ) आजकल अपहरण, बेईमानी, बेवफ़ाई, झूठ, हरामखोरी, अत्याचार, अन्याय, दूसरों का बुरा चाहना, इतना अधिक बढ़ गया है तथा लोभ एवं ईर्ष्या इतनी अत्यधिक हो चुकी हैं और मुहम्मद साहब की सुन्नत बिदअत में इतना परिवर्तित हो गई है कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। बादशाहों के लिये सच्चे समाचार लिखने वाले बरीद, सच्ची बात कहने वाले गुप्तचर, तथा सतर्क मुशरिफ़ नियुक्त करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं। यदि वे ऐसा न करें तो संसार का कार्य छिन्न-भिन्न हो जायगा और नित्य अशान्ति होने लगेगी।

[तारीखे सिकन्दरी से सिकन्दर का उदाहरण]

(८१ अ) बरीद नियुक्त करने से यह लाभ है कि यदि राज्य में कोई विद्रोह होने वाला होता है और उसकी सूचना बादशाह के कानों तक पहुँच जाती है तो बादशाह उसके निराकरण हेतु इस प्रकार प्रयत्नशील हो जाता है कि दुर्घटना के उपरान्त मुसलमानों का जो रक्तपात हो वह बच जाता है। जब उपद्रव करने वालों को यह ज्ञात रहता है कि बादशाह से कोई बात छिपी नहीं रह सकती तो वे अधिकांशतः भय करते रहते हैं और किसी प्रकार का संगठन नहीं करते और यदि उनके हृदय में किसी प्रकार की दुर्भावनायें रहती हैं तो वे उसे व्यक्त नहीं करते।

(८१ ब) बरीदों के नियुक्त करने की आवश्यकता इस कारण से है कि ईश्वर ने अपने दासों को विभिन्न प्रकार की प्रवृत्ति प्रदान की है। कुछ को अच्छा बनाया है और कुछ को बुरा। कुछ में अच्छाई तथा बुराई मिश्रित है। कुछ आज्ञाकारी रहते हैं, कुछ पाप करते हैं। यदि बादशाह को राज्य के अच्छे बुरे का ज्ञान रहता है तो बादशाह धर्म-पालन तथा दूसरों के अधिकार प्रदान करने हेतु इस प्रकार प्रयत्न करता रहता है जिससे अच्छे लोगों के गुणों में वृद्धि होती रहती है और अन्य लोग उनका अनुसरण करते हैं। दुष्ट अपनी दुष्टता को त्याग देते हैं और दूसरे लोग दुष्टता नहीं करते।

[ख़लीफ़ा उमर के इतिहास से उदाहरण]

---

१ समाचार-वाहक। इनके विषय में तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० १५७ देखिये। इब्ने बत्तूता ने बरीद का सविस्तार उल्लेख किया है। इब्ने बत्तूता की यात्रा का विवरण। (पेरिस प्रकाशन १९४९ ई० पृ० ९५)।

(८२ अ) हे पुत्रो ! तुम्हें जानना चाहिये कि बरीद, मुशरिफ़ तथा मुख़बिर नियुक्त करने में बादशाह प्रजा के परोपकार का ध्यान रखते हैं। उनके नियुक्त करने का प्रथम उद्देश्य यह है कि जब दूर तथा निकट के क़ाजियों, वालियों तथा आमिलों को यह ज्ञात होता है कि उनके अच्छे बुरे हाल की जानकारी बादशाह को हो जायगी तो वे प्रजा पर अत्याचार नहीं करते, घूंस नहीं लेते तथा पक्षपात नहीं करते। उत्कृष्ट कार्यों को त्याग कर दुराचार तथा व्यभिचार में ग्रस्त नहीं हो जाते और अपने विशेष मामलों में भी भय करते तथा काँपते रहते हैं। जब प्रजा को भी यह विश्वास हो जाता है कि सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों की अच्छी बुरी बातें बादशाह को ज्ञात होती रहती हैं और इसके लिये पदाधिकारी नियुक्त हैं तो वह अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं और उपद्रव तथा अशान्ति नहीं उत्पन्न करते।

यदि आमिलों तथा मुतसर्रिफ़ों को यह ज्ञात होता है कि उनकी बातें बादशाह तक पहुँचेंगी तो वे चोरी नहीं करते तथा अपमानित नहीं होते।

[*सिकन्दर तथा महमूद के उदाहरण*]

बरीदों की नियुक्ति सम्बन्धी शर्तें

बरीदों को नियुक्त करते समय धर्मनिष्ठ बादशाह बहुत सी शर्तों का ध्यान रखते हैं। सबसे आवश्यक शर्त बरीद का गुण है। बरीद को सच बात कहने वाला, सच बात लिखने वाला, ईमानदार, शुद्ध वंश का, विश्वास के योग्य तथा आदर सम्मान वाला होना चाहिये। उसकी सत्यता के कारण बादशाह ऐसे कार्य करेगा जिससे उसका कल्याण तथा प्रजा का लाभ होगा। यदि बरीद चोर, बेईमान, कमअसल, कृपण, हरजाई, हरदरी, लालची तथा भविष्य के विषय में नहीं सोचता तो प्रजा की उन्नति तथा बादशाह की भलाई का मामला उलटा हो (८४ अ) जाता है। यदि कोई बेईमान तथा बदअसल व्यक्ति बुद्धिमान् हो तो वह इस प्रकार झूठ बोलने लगेगा जो सच सा प्रतीत होगा और जहाँ हानि पहुँचानी आवश्यक है वहाँ लाभ होगा और जहाँ लाभ पहुंचाना आवश्यक होगा वहाँ हानि होगी······

(८४ ब) बादशाह को ऐसे व्यक्तियों को बरीद, मुशरिफ़ तथा गुप्तचर नियुक्त करना चाहिये जो शुद्ध आत्मा के तथा सच्चे हों, जिन्हें संसार का लोभ न हो और जिन्होंने पद की लिप्सा में ईश्वर से मुख न मोड़ लिया हो। यदि बादशाह पद के इच्छुकों में उत्कृष्ट गुणों का अभाव पाये किन्तु एक की अपेक्षा दूसरे में नेकी की अधिकता हो तो जिसमें नेकी की अधिकता हो और जो अपनी नेकी के लिये अधिक प्रसिद्ध हो उसी को महत्वपूर्ण तथा उत्कृष्ट पद प्रदान करने चाहिये और उसी पर विश्वास करना चाहिये ताकि कार्य में विघ्न न पड़े।

[*महमूद का उदाहरण, मामून का तारीखे अब्बासी से उदाहरण*]

बाजार के भाव का सस्ता होना

(९० ब) सुल्तान महमूद ने कहा है कि—हे महमूद के पुत्रो ! तथा हे मुसलमान बादशाहो ! तुम्हें यह समझना चाहिए कि राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्य एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। जिस प्रकार सेना बिना ख़ज़ाने के सुव्यवस्थित नहीं रहती उसी प्रकार भाव के सस्ता हुये बिना सेना के सामान तैयार नहीं होते। जीविका सम्बन्धी सामग्री के सस्ते हुये बिना प्रजा के कार्यों में उन्नति तथा दृढ़ता नहीं होती तथा सर्वसाधारण की सुख-सम्पन्नता दृष्टिगत नहीं होती और न बादशाह के दरबार को ऐसी प्रसिद्धि प्राप्त होती है जहाँ सभी लोग पहुंचने की इच्छा करें। जब तक बादशाह के दरबार में सभी लोग पहुँचने की इच्छा न करें उस समय

तक उसकी जहाँदारी की प्रतिष्ठा दूर तथा निकट वालों के हृदय में आरूढ़ नहीं होती। सभी खास व आम इस बात से सहमत हैं कि जीविका सम्बन्धी सामग्री के मँहगा होने से देश की प्रजा भी परेशान हो जाती है और सभी अथवा अधिकांश नष्ट हो जाते हैं और अपने देश तथा प्राचीन घरों को त्याग कर उस इक़लीम की ओर मुख नहीं करते, अतः जहांदारों के लिये यह अनिवार्य है कि वे सेना से सम्बन्धित सामग्री—घोड़ों, अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य वस्तुओं और खास व आम से सम्बन्धित सामग्री, अनाज तथा कपड़ों का मूल्य सस्ता रखने के लिये अत्यधिक प्रयत्न करें। अपने राज्य की दृढ़ता को सेना तथा सर्वसाधारण की दृढ़ता से सम्बन्धित समझना चाहिये।

अकाल तथा समृद्धि के समय बादशाह के कर्त्तव्य

(९१ ब) अकाल के समय जोकि दैवी दुर्घटना है और जब वर्षा नहीं होती तथा कृषि एवं अनाज में अत्यधिक हानि दृष्टिगत होने लगती है तो ऐसी स्थिति में बादशाह के लिए प्रजा की सहायता के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं होता। बादशाह के लिए ख़राज तथा जिज़ये में कमी करने तथा खज़ाने से सहायता करने के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं होता। बादशाह के लिये मंहगाई रोकने के लिये मूल्य निश्चित करना सम्भव नहीं होता। वह विवश होता है किन्तु उत्पत्ति अच्छी तथा वर्षा होने पर भी जब कारवान वाले तथा व्यापारी अधिक मूल्य पर चीज़ें बेचना अपनी आदत बनालें तथा एहतेकार[1] करें तो बादशाह का यह कर्तव्य है कि जिस प्रकार सम्भव हो मूल्य निश्चित करने का प्रयत्न करे और भाव सस्ता कराने का यथासम्भव प्रयास करे। दुष्टता जिन लोगों की आदत बन चुकी हो और जो अधिक मूल्य पर क्रय-विक्रय के आदी हो चुके हों तो उन्हें इस बात की स्वतन्त्रता न होनी चाहिये। समस्त मूल्य राजसिंहासन के समक्ष निश्चित करने चाहिये। कठोर रईस[2], हाकिम तथा मुंसिफ़ नियुक्त (९२ अ) करने चाहिये। क्रय-विक्रय सम्बन्धी कार्यों को उचित रूप से सम्पन्न कराना चाहिये। तत्सम्बन्धी कार्यों की पूछताछ का अत्यधिक प्रयत्न करते रहना चाहिये।

राज्य-व्यवस्था एवं शासन सबन्धी कार्यों में अनाज तथा कपड़े की सुगमता का प्रयत्न करते रहना चाहिये, अपने राज्य की सुन्दर व्यवस्था तथा न्याय को सामग्री के सस्ते होने से सम्बन्धित समझें। मण्डियों के गुमाश्तों, शहर के शहनों तथा कोतवालों को आदेश दें कि वे राजधानी में एहतेकार कदापि न होने दें। एहतेकार करने वालों के अनाज को जलवा डालें। मुहम्मद साहब एहतेकार करने वालों का अनाज जलवा डालते थे। जो कोई एहतेकार करता है और जिसे एहतेकार की आदत पड़ जाती है उससे ईश्वर के दासों की जीविका बन्द हो जाती है। ईश्वर की अपने दासों के प्रति देन रुक जाती है। यदि कोई बादशाह के आदेश से एहतेकार से बाज़ न आये तो उसे निर्वासित कर देना चाहिये ताकि अन्य लोग इससे शिक्षा ग्रहण करें।

क्रय विक्रय पर नियंत्रण

रईसों को आदेश दे देना चाहिये कि वे बाज़ार वालों को अपने नियंत्रण में रक्खें और बाजार का भाव बाजार वालों के अधिकार में न रहने दें। भाव के निश्चित करने तथा क्रय (९२ ब) विक्रय सम्बन्धी कार्यों में अत्यधिक प्रयत्नशील रहना चाहिये। इस महान् कार्य में

---

१ अनाज को भविष्य में अधिक मूल्य पर बेचने के विचार से इकट्ठा करना। चोर बाज़ारी।

२ बाज़ार का मूल्य तथा क्रय विक्रय की देख रेख रखने वाले (ख़लजी कालीन भारत पृ० ७७-९०)

जिसमें ख़ास व ग्राम को लाभ प्राप्त होता रहता है, कमी न करनी चाहिये और किसी प्रकार का लोभ न करना चाहिये। मूल्य निश्चित करने का कार्य साधारण कार्य न समझना चाहिये। ग्रनभिज्ञ, नाबालिग़, ग्रामीण, निःसहाय तथा वृद्ध क्रय-विक्रय करने वालों की सहायता करते रहना चाहिये। क्रय-विक्रय में न्याय करते रहें। ग्रधिक मूल्य पर चीज़ें बेचने वालों तथा उन लोगों को, जो कहते कुछ हों और बेचते कुछ हों, नाना प्रकार से ग्रपमानित करके दण्ड दें। बाज़ारियों, नक़्क़ालों, शिल्पकारों को दीन-दुखियों, बालकों, ग्रनभिज्ञ लोगों पर ग्रत्याचार न करने दें।

जो लोग ग्रपनी कौड़ी को रत्न तथा रत्न बेचने वालों को कौड़ी बेचने वाला बताते हों उन्हें यदि बादशाह ग्रपने ग्रधिकार तथा शक्ति के बावजूद, दीन दुखियों, दरिद्रियों तथा शक्तिहीनों, बालकों तथा ग्रनभिज्ञ लोगों पर ग्रत्याचार करने से नहीं रोक सकता और उन (६३ ग्र) लोगों को इस बात की ग्रनुमति देता रहता है तथा न्याय नहीं करता तो उसे ईश्वर की छाया नहीं कहना चाहिये। बादशाह क्रय विक्रय से सम्बन्धित जो मार्ग निश्चित कर देता है, सभी उसी मार्ग पर चलते हैं, राज्य के ग्रधिकारी तथा प्रजाजन उसी का ग्रनुसरण करते हैं।

मूल्य कम होने से लाभ

हे महमूद के पुत्रो ! तुम्हें यह समझना चाहिये कि सामग्री का मूल्य कम होने में बड़े लाभ हैं। प्रथम लाभ यह है कि जिस राजधानी तथा प्रदेश में ग्रनाज और जीविका सम्बन्धी सामग्री, कपड़ों, घोड़ों तथा सेना के सामान का मूल्य कम होता है तो वहाँ सेना सुगमतापूर्वक एकत्र हो जाती है। सेना, जो बादशाही की पूँजी है तथा प्रजा की रक्षक है, शीघ्र सुव्यवस्थित हो जाती है और सुव्यवस्थित रहती है। इससे बादशाह, सेना तथा प्रजा सभी को लाभ होता है।

(६३ ब) मूल्य कम होने से दूसरा लाभ यह होता है कि बादशाह की राजधानी में ग्रत्यधिक बुद्धिमान्, कलाकार तथा शिल्पी एकत्र हो जाते हैं। इससे जो लाभ बादशाह तथा प्रजा को होता है वह किसी से छिपा नहीं।

तीसरा लाभ यह है कि जब विरोधी तथा शत्रु बादशाह के कार्यों की रौनक़, सेना की दृढ़ता, ग्राराम तथा निश्चिन्तता के विषय में सुनते हैं तो उस राज्य पर ग्रधिकार जमाने के कुत्सित विचारों का उनके हृदय से ग्रन्त हो जाता है और उसके स्थान पर ग्रातंक तथा भय ग्रारूढ़ हो जाता है। इससे भी बादशाह तथा प्रजा को लाभ होता है।

चतुर्थ यह कि प्रजा की जीविका सम्बन्धी वस्तुग्रों के सस्ता होने से यह लाभ भी होता है कि इसके कारण बादशाह को नेकनामी होती है और यह नेकनामी वर्षों ग्रपितु क़रनों तक लोगों की जिह्वा पर रहती है। ग्रनाज तथा जीविका सम्बन्धी ग्रन्य वस्तुग्रों के सस्ता होने से लोगों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या का ग्रन्त हो जाता है और प्रत्येक दिशा में प्रफुल्लता, सम्पन्नता एवं परोपकार दृष्टिगत होने लगते हैं। महंगाई तथा एह्तेकार के कारण कुछ थोड़े से बेईमान लोगों के घरों में सम्पन्नता रहती है और सहस्रों क्रय करने वालों के घर ग्रव्यवस्थित तथा छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। एह्तेकार करने वालों तथा ग्रधिक मूल्य लेने वालों के प्रति सर्वसाधारण के हृदय में सर्वदा प्रतिकार की भावनायें जाग्रत रहती हैं।

(६४ ग्र) सामग्री के सस्ता होने का पाँचवाँ लाभ यह है कि यदि सामग्री तथा ग्रनाज का मूल्य ग्रधिक होगा तो राज्य-व्यवस्था पर ग्रत्यधिक धन व्यय होगा जिससे ख़ज़ाना रिक्त हो जायेगा। इस कारण बादशाह तथा प्रजा के कार्य एक दूसरे के विरुद्ध प्रतीत होने

लगेंगे क्योंकि ख़ज़ाना प्रजा के धन से बढ़ता है और अनाज तथा अन्य सामानों की मँहगाई के समय ख़ज़ाने का धन प्रजा के घर पहुँच जायेगा और राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी व्यय की कोई सीमा न रहेगी। उदाहरणार्थ पायगाह के एक कारख़ाने में कई हज़ार घोड़ों के चारे का व्यय होता है। मूल्य के अधिक होने की हानि राजधानी के ऊपर ही पड़ती है और राजधानी की हानि का प्रभाव समस्त राज्य में व्यापक हो जाता है।

मूल्य के सस्ता होने का छठा लाभ, जिसका प्रभाव बादशाह तथा प्रजा पर होता है, बादशाही के सबसे उत्कृष्ट उद्देश्य—न्याय—से सम्बन्धित है। यदि बादशाह की राजधानी में, जोकि न्याय की खान है, क्रय विक्रय में खुल्लमखुल्ला अन्याय होने लगे और बादशाह उसका (६४ ब) न्याय न कर सके तथा एहतेकार करने वालों के घर प्रजा के धन से भर जायँ तो यह न्याय न होगा। बादशाह को भाव निश्चित करके अधिक मूल्य पर सामग्री बेचने वालों तथा एहतेकार करने वालों को कठोर दंड देना चाहिये।

जीविका सम्बन्धी सामग्री की अल्पमूल्यता से ७वाँ लाभ यह है कि धनी लोग दरवेशों को धन प्रदान कर सकते हैं।

(६५ अ) अनाज तथा कपड़े के सस्ता होने का ८वाँ लाभ यह है कि एहतेकार तथा अधिक मूल्य पर चीज़ें बेचने का एक प्रकार का व्यापक रोग है और जिससे दूसरों को हानि पहुँचती है अन्त हो जाता है। प्रजा पर अत्याचार तथा अन्याय दैवी कष्टों से सम्बन्धित है। प्रजा के मामलों में न्याय तथा सत्यता का प्रभाव क्रय विक्रय पर होता है और दैवी कष्टों की वृद्धि नहीं हो पाती।

९वाँ लाभ यह है कि एहतेकार करने वाले हिन्दू अग्निपूजक काफ़िर तथा मुशरिक होते हैं। जो मुसलमान एहतेकार करते हैं उन्हें अपने धर्म का कोई भी ज्ञान नहीं होता।

(६५ ब) एहतेकार के कारण मुसलमानों के घर की धन-सम्पत्ति हिन्दुओं तथा अग्नि-पूजकों के घर, जिनकी धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लेना बहुत से धर्मों में उचित बताया गया है और जिनको अपमानित तथा लज्जित करना दीन (इस्लाम) में अनिवार्य है, पहुँच जाती है और उसके द्वारा वे सम्मानित हो जाते हैं। ईश्वर की दृष्टि में जो सम्मानित हैं वे दीनता तथा दरिद्रता के कारण अपमानित हो जाते हैं। यदि बादशाह चीज़ों को सस्ता करने के लिये प्रयत्न करे तो जिन लोगों को ईश्वर की दृष्टि में सम्मान प्राप्त है, उन्हें और भी सम्मान प्राप्त हो जाता है तथा जो लोग ज़लील एवं अपमानित हैं वे और भी अधिक ज़लील तथा अपमानित हो जाते हैं। राज्य-व्यवस्था में यह लाभ बहुत बड़ा लाभ है।

बादशाह तथा प्रजा को मूल्य के सस्ता होने से १०वाँ लाभ यह है कि अनाज तथा जीविका सम्बन्धी सामग्री के सस्ते होने के कारण प्रजा के प्रत्येक समूह तथा गरोह वाले अपने कार्य में तल्लीन रहते हैं। राज्य-व्यवस्था की दृढ़ता की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने व्यवसाय तथा कार्य में व्यस्त रहे। इस प्रकार प्रबन्ध तथा सुव्यवस्था में वृद्धि होती है। यद्यपि महंगाई तथा एहतेकार में अत्यधिक लाभ दृष्टिगत होता है किन्तु वास्तव में इसके कारण अन्य व्यवसाय तथा कार्य में किसी प्रकार का लाभ नहीं होता। (६६ अ) लोग अपने व्यवसाय त्याग देते हैं और सेना में तथा कृषि सम्बन्धी क्षेत्र में कार्य करने लगते हैं। कृषक लाभ को देखते हुये व्यापार करने लगते हैं। एहतेकार करने वाले धन के बल पर बड़े बड़े कार्यों में हाथ डालने लगते हैं और इस प्रकार कोई भी कार्य सुव्यवस्थित नहीं रहता।

जिन लोगों को जहाँबानी तथा जहाँगीरी का कोई ज्ञान नहीं होता वे कहा करते हैं कि बादशाह को मूल्य निश्चित करने का प्रयत्न न करना चाहिये। यह बात देखने में तो (६६ ब) सत्य सी प्रतीत होती है किन्तु बादशाह, जो सर्वसाधारण के उपकार के लिये नियुक्त

है, यदि छान बीन न करे, भाव निश्चित न करे, अपनी शक्ति के अनुसार प्रजा के प्रति अन्याय का अन्त न करे तो उसका उत्तर क़यामत में क्या होगा और उसके इस ओर ध्यान न देने का बहाना किस प्रकार सुना जायगा ?

मूल्य निश्चित करने के नियम

बादशाह मूल्यों को दो प्रकार निश्चित करा सकता है। एक इस प्रकार कि वह न्याय करने का अत्यधिक प्रयत्न करे और अपनी तथा अन्य किसी की इस सम्बन्ध में कोई चिन्ता न (९७ अ) करे। न्याय के प्रति इतना अधिक प्रयत्न करने से लोग न्याय के इतने आदी हो जाते हैं कि व्यापारी अधिक मूल्य पर बेचना त्याग देते हैं। एहतेकार करने वाले तथा बाज़ारी एहतेकारी रोक देते हैं और न्याय करने लगते हैं। उनके राज्य की प्रजा परस्पर न्याय करने लगती है, कारण कि प्रजा बादशाह के धर्म का पालन करती है।

बादशाह मूल्य के निश्चित करने का प्रयत्न इस प्रकार भी कर सकता है कि बादशाह जब यह देखे कि वर्षा होने पर भी तथा फ़स्ल अच्छी होने एवं सम्पन्नता के बावजूद भी व्यापारी तथा कारवान वाले अपनी आदत नहीं छोड़ते और एहतेकार करने वाले एहतेकार से बाज़ नहीं आते और बाजार वाले तथा बक़्क़ाल प्रातःकाल से संध्या समय तक बुद्धिमान् तथा अनभिज्ञ ग्राहकों को जलाते रहते हैं और भाव के हाकिम हो गये हैं और अपनी इच्छानुसार अपनी सामग्री बेचते हैं, न ईश्वर के प्रति लज्जा प्रदर्शित करते हैं और न बादशाह का भय करते हैं, तो ऐसी दशा में (९७ ब) बादशाह के लिये यह आवश्यक तथा अनिवार्य है कि ख़ास व आम के लाभार्थ राज्य वालों के मध्य से इस प्रकार के अन्याय का अन्त करादे और अनाज, कपड़ों तथा अन्य सामग्री का, जिसकी रात दिन आवश्यकता रहती है, मूल्य निश्चित करदे।

बाज़ार के भाव के नियंत्रण हेतु अधिकारी

मूल्य निश्चित करने के उपरान्य कठोर शहनों को नियुक्त करे। मंडी के शहनों, शहर के शहनों तथा राजधानी के कोतवालों को आदेश दे दे कि वे राजधानी के एहतेकार करने वालों को कठोरता से एहतेकार करने से रोकें। राजधानी में १०मन अनाज का भी एहतेकार न होने दें और महँगा सामान बेचने वालों तथा एहतेकार करने वालों को राजधानी से निकाल दें और अन्यायी लोगों को दंड द्वारा न्याय के मार्ग पर लायें। राजधानी में क्रय-विक्रय में न्याय के प्रकट हो जाने से समस्त राज्य के क्रय-विक्रय में न्याय होने लगता है। बादशाहों के प्रयत्न से इस दिशा में बड़े लाभ प्राप्त हो जाते हैं और धर्म तथा राज्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। सेना जो धर्म तथा देश की रक्षक होती है सुव्यवस्थित हो जाती है तथा अन्य समूह वालों में भी सुव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है।.........

नबूवत[1] तथा बादशाही

(९९ अ) नबूवत पूर्णतः धर्मनिष्ठता है तथा बादशाही पूर्णतः सांसारिक वस्तु है। दोनों गुण एक दूसरे के विरुद्ध हैं और दोनों का एक स्थान पर एकत्र होना सम्भव नहीं। दीनदारी के लिए दासता और दासता के लिये नम्रता एवं दीनता परमावश्यक है। बादशाही के लिए जो पूर्णतः संसार है अभिमान, आतंक, शान व शौक़त, दूसरों की ओर ध्यान न देना, ऐश्वर्य तथा वैभव परमावश्यक है। ये सब ईश्वर के गुण हैं। बादशाही ख़ुदा की न्याबत[2] तथा खिलाफ़त[3] है। दासता के गुणों के साथ बादशाही सम्भव नहीं अतः खलीफ़ाओं तथा

---

१ नबी—ईश्वर के दूत होने से सम्बन्धित कार्य।

२ नायब होना, प्रतिनिधि होना।

३ खलीफ़ा होना, उत्तराधिकारी होना।

इस्लाम के सुल्तानों के लिए यह आवश्यक है कि इस्लाम के प्रभुत्व, शत्रुओं के विनाश तथा दीन (इस्लाम) के सिद्धान्तों की प्रसिद्धि के लिए वे अपनी समस्त शक्ति दीन-पनाही, कुफ्र तथा शिर्क के विनाश और धर्म के शत्रुओं की हत्या में लगादें।

ईरान के सुल्तानों की प्रथा

(९९ ब) ईरान के सुल्तान राजसिंहासन तथा राजमुकुट के कारण अभिमान तथा आतंक प्रदर्शित करते हैं। वे भव्य भवनों के निर्माण, दरबार करने, लोगों को अपने समक्ष सिज्दा कराने, खज़ाना एकत्र करने, लोगों को धन प्रदान करने, जवाहरात तथा रेशम धारण करने तथा दूसरों को पहनाने, अपने राज्य के हित के लिए लोगों की हत्या कराने, अत्यधिक स्त्रियों के रखने, अपार धन व्यय करने तथा अन्य जितनी बातें आतंक तथा अभिमान के लिये आवश्यक हैं, उनमें व्यस्त रहते हैं। इन बातों के बिना (ईरान वाले) बादशाह को बादशाह नहीं समझते। धर्मनिष्ठ बादशाहों के लिये यह आवश्यक है कि वे रात्रि में ईश्वर के समक्ष दीनता प्रदर्शित करते हुये विलाप करते रहें और राज्य-व्यवस्था की समस्त प्रथाओं को मुहम्मद साहब की सुन्नत[1] के विरुद्ध समझें।

मुसलमान बादशाहों के गुण

(१०० अ) हे पुत्रो! तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि ईरान के बादशाहों की प्रथाओं का अनुसरण किये बिना राज्य-व्यवस्था सम्भव नहीं। समस्त आलिमों को यह बात ज्ञात है कि ईरान के सुल्तानों की प्रथायें मुहम्मद साहब की सुन्नत के विरुद्ध हैं। यदि प्रत्येक बादशाह, जो ईरान के बादशाहों की प्रथाओं का अनुसरण करता है और अपना वैभव तथा ऐश्वर्य इस्लाम के कलमे को उत्कृष्ट रखने तथा जिन बातों की ईश्वर द्वारा अनुमति है उनके पालन का प्रयत्न करने तथा जिन बातों का निषेध है उनको रोकने, दिन रात काफ़िरों तथा (१०० ब) मुशरिकों के विनाश में तल्लीन रहने, समस्त बिदअतों तथा बिदअत को चलाने वालों का विच्छेदन कराने, शरीअत के विरोधियों तथा दीन (इस्लाम) एवं राज्य के शत्रुओं को जड़ से उखाड़ फेंकने तथा इस्लाम के ७२ समुदायों को शरा का आज्ञाकारी बनाने के प्रयत्न में अपने आपको नहीं लगाता और एक काफ़िर अथवा मुशरिक को आवश्यकतानुसार भी सम्मान प्रदान करता है और सच्चे दीन की सहायतार्थ समस्त शक्ति नहीं लगाता, अपने आप को ईश्वर के लिये जेहाद हेतु वक़्फ़ नहीं कर देता, अल्लाह के शत्रुओं से युद्ध के समय अपने शहीद हो जाने की अभिलाषा नहीं करता और न्याय नहीं करता और इस्लाम के समस्त मामलों में न्याय तथा सच्चाई से कार्य नहीं करता तो वह किस प्रकार अपने आप को मुसलमान समझ सकता है तथा मुसलमान कहला सकता है?.........

(१०१ अ) यदि बादशाह इस्लाम के ७२ समुदायों से सम्बन्धित कार्य में आतंक द्वारा न्याय तथा सत्यता नहीं पैदा करता तो फिर उसकी शक्ति व्यर्थ है। हे महमूद के पुत्रो! यदि (१०१ ब) तुम संसार की थोड़े समय की सुव्यवस्था एवं क़यामत में सुर्खरूई चाहते हो तो अनाज तथा जीविका सम्बन्धी वस्तुओं के सस्ता करने का प्रयत्न करते रहो। एहतेकार तथा बाज़ार वालों, एवं व्यापारियों के क्रय-विक्रय सम्बन्धी अत्याचार का अपने राज्य से अन्त करा दो।

[*तारीखे मआसिरे सहाबा से खलीफ़ा उमर का उदाहरण*]

बादशाह को अपने समय की रक्षा करना तथा उसके मूल्य का पहचानना

(१०४ अ) सुल्तान महमूद का कथन है कि 'हे महमूद के पुत्रो तथा हे मुसलमान

[1] मुहम्मद साहब का दर्शाया हुआ मार्ग।

बादशाहो ! तुम्हें समझना चाहिये कि बादशाही को संसार में सबसे उत्कृष्ट उत्पन्न किया गया (१०४ ब) है।.........यदि बादशाह इस उत्कृष्ट देन का मूल्य न समझे और उसे दीन पनाही में व्यय न करे और इस देन का उपयोग भोग विलास में करे और ईश्वर तथा मुहम्मद साहब की आज्ञाओं का पालन न करे तो संसार में उसके समान कोई भी कृतघ्न नहीं कहा जा सकता। इस विचित्र देन के महत्व को समझने का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि बादशाह अपने समय तथा अपनी अवस्था का मूल्य समझे और अपने समय को व्यर्थ नष्ट न करे। उसे जहाँबानी तथा जहाँदारी में इस प्रकार व्यय करे कि इस बात से वह ईश्वर के निकट पहुँच सके।

(१०५ अ) जब तक बादशाह अपने समय का विभाजन नहीं करता तथा प्रत्येक कार्य में व्यस्त रहने का समय नहीं निकालता और निश्चित कार्य को निश्चित समय पर नहीं करता तथा अन्य कार्यों में हाथ डालता है उस समय तक उसके जहाँबानी के कार्य सम्पन्न नहीं हो सकते।

[तारीखे किसरवी से कैखुसरो तथा क्यूमुर्स का, सिकन्दर नामये रूमियाँ से सिकन्दर तथा अरस्तू का उदाहरण]

बादशाहों द्वारा समय विभाजन

(१०६ ब) बादशाह अपने समय तथा प्रत्येक क्षण की रक्षा दो प्रकार से करते हैं। प्रथम इस प्रकार कि कुछ बादशाह सच्चे दीन का अनुसरण करते हुये अपनी समस्त आयु का मूल्य समझते हैं। वे प्रत्येक क्षण की रक्षा करते हैं। वे धर्म तथा राज्य के कार्य हेतु अपने समय का विभाजन करते हैं। वे अपनी अवस्था का एक क्षण भी व्यर्थ नष्ट नहीं करते हैं। इस प्रकार बादशाह मुसलमानों में बड़े महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।

द्वितीय इस प्रकार कि सफलता तथा सम्पन्नता के बावजूद वे राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों को न भूलते हैं। राज्य-व्यवस्था को वे सफलता तथा सम्पन्नता के बावजूद भलीभाँति करते हैं। भोग विलास के साथ-साथ राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों में व्यस्त रहते हैं।

[महमूद का उदाहरण]

(११० अ) महमूद कुछ चीज़ों को सर्वोपरि समझता था।

(१) वह किसी भी गोष्ठी में इतनी अधिक मदिरा न पीता था कि नमाज़ छूट जाय। महमूद ने अपने जीवन-काल में कभी भी जमाअत[1] की नमाज़ न त्यागी थी।

(२) राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों को भोग विलास से सर्वोपरि समझता था। जिस (११० ब) समय तक उन कार्यों को सम्पन्न न कर लेता था, मदिरापान न करता था और किसी प्रकार का संगीत तथा परिहास उसे अच्छा न लगता था।

(३) यदि धर्म सम्बन्धी तथा सांसारिक कार्य दोनों एक साथ ही पेश आ जाते तो वह धर्म के कार्य को सर्वोपरि समझता था। जब तक दोनों कार्य सम्पन्न न कर लेता, भोग विलास, शिकार तथा गेंद खेलने की ओर प्रवृत्त न होता था।

महमूद अपनी गोष्ठियों में व्यर्थ के कार्यों में तल्लीन न होता था अपितु प्राचीन बादशाहों के इतिहास सुनने अथवा उत्कृष्ट एवं दुष्ट बादशाहों के कथन सुनने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न करता था। महमूद उनके कथनों द्वारा शिक्षा ग्रहण करता था। शिकार के समय भी जिस बात की अभिलाषा महमूद के रोम रोम में थी। वह राज्य व्यवस्था एवं शासन सम्बन्धी बातों पर वाद विवाद करने की होती थी। वह बादशाही के सम्मान की भोग विलास की गोष्ठियों में भी पूर्ण रक्षा किया करता था।

[इमाम मुहम्मद इसहाक़ की तारीखे मआसिरे सहाबा से खलीफ़ा उमर का उदाहरण]

---

१ पाँचों समय की सामूहिक नमाज़।

सत्य का केन्द्रीय स्थान ग्रहण करना

(११८ ब) सत्य के केन्द्रीय स्थान ग्रहण करने का अर्थ यह है कि सत्य को असत्य पर विजय प्राप्त हो। सत्य को उस समय तक असत्य पर विजय नहीं प्राप्त होती जब तक कि तौहीद[1] को सम्मान तथा इस्लाम को गौरव नहीं प्राप्त होता तथा शिर्क और कुफ़ अपमानित नहीं होते। जब तक बादशाह अपनी समस्त शक्ति कुफ़ तथा शिर्क के विनाश, काफ़िरों के नेताओं की हत्या [कुफ़ के नेता ब्राह्मण हैं], काफ़िरों तथा मुशरिकों को दास बनाने और अपमानित तथा लज्जित करने में नहीं लगा देता और अपना समस्त ऐश्वर्य मुसलमान मुजाहिदों[2] को खुदा की राह में जेहाद कराने और इस्लाम के कलमे को उत्कृष्ट बनाने में नहीं लगा देता उस समय तक सच्चे दीन (इस्लाम) को झूठे धर्मों के मुक़ाबले में सम्मान प्राप्त नहीं होता और तौहीद तथा इस्लाम को इज़्ज़त नहीं हासिल होती।

काफ़िरों का विनाश तथा अपमान

यदि बादशाह अपने गौरव, आतंक तथा अधिकार के बावजूद केवल ख़राज तथा जिज़्या लेने से संतुष्ट हो जाता है और कुफ़, काफ़री, शिर्क तथा मुशरिकों के विनाश का प्रयत्न नहीं करता और कुफ़ तथा काफ़री को सुरक्षित रहने देता है तो ऐसी अवस्था में मुसलमान (११९ अ) बादशाहों तथा कुफ़ के धर्मों में क्या अन्तर रह जायगा? काफ़िरों के राय भी समस्त हिन्दुओं से जिज़्या तथा ख़राज वसूल करते हैं अपितु इसके अतिरिक्त सैकड़ों अन्य कर प्राप्त करते हैं। वे हिन्दुओं के धन से, जो उन्हीं के धर्म के अनुयायी होते हैं, अपने ख़ज़ाने को भरते है। यदि मुसलमान बादशाह अपने ऐश्वर्य तथा वैभव के बावजूद काफ़िरों तथा मुशरिकों से जिज़्या तथा ख़राज लेकर संतुष्ट हो जाते हैं तो कुफ़ तथा काफ़िरी, शिर्क तथा मुशरिकी का विनाश नहीं हो सकता है जिसके लिए १,२४००० पैग़म्बर[3] भेजे गये और जिसके लिये इस्लाम के नबी को भेजा गया।

यदि मुसलमान बादशाह काफ़िरों तथा मुशरिकों के विनाश एवं उनको अपमानित करने (११९ ब) में अपनी समस्त शक्ति नहीं लगाते और इस कार्य में तल्लीन नहीं होते और हिन्दुओं से, जोकि मूर्ति तथा गोबर की पूजा करते हैं, जिज़्या तथा ख़राज लेकर संतुष्ट हो जाते हैं तो वे कुफ़ एवं काफ़िरी को उन्नति प्रदान करते हैं। इस प्रकार सत्य को किस तरह केन्द्रीय स्थान प्राप्त हो सकता है? यदि मुसलमान बादशाह मुसलमानों की राजधानी तथा नगरों में कुफ़ तथा क़ाफ़िरी की प्रथाओं को चलने दें, मूर्तियों की खुल्लम खुल्ला पूजा होने दें और कुफ़ तथा काफ़िरी की शर्तों की रियायत करें, और उन लोगों को अपने झूठे धर्म के सिद्धान्तों का निर्भय होकर प्रचार करने दें, मन्दिरों को सुरक्षित रहने दें, मूर्तियों को सजाने दें और संगीत वादन तथा नृत्य के साथ खुशी खुशी अपने धर्म का पालन करने दें और कुछ सिक्के जिज़्ये के रूप में प्राप्त करके कुफ़ तथा क़ाफ़िरी की प्रथाओं को चलने दें, उन्हें अपने झूठे धर्म की पुस्तकों की शिक्षा प्रसारित करने की अनुमति दे दें तो सच्चे दीन को अन्य धर्मों पर किस प्रकार प्रभुत्व प्राप्त हो सकता है और इस्लामी प्रथाओं को किस प्रकार सम्मान प्राप्त हो सकता है तथा ईश्वर द्वारा जिन बातों का आदेश दिया गया है उनका पालन किस प्रकार (१२० अ) हो सकता है और जिन बातों का निषेध हुआ है उन्हें किस प्रकार रोका जा सकता है?

---

१ एकेश्वरवाद।

२ योद्धाओं।

३ मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर ने आदि काल से मुहम्मद साहब के समय तक १,२४,००० पैग़म्बर मनुष्य के पथ-प्रदर्शन हेतु भेजे।

यदि बादशाह काफ़िरों तथा मुशरिकों को खराजी एवं ज़िम्मी होने के कारण सम्मानित रक्खें, उन्हें तबल[1], पताका, सुनहरी ख़िलअत, ज़ीन सहित घोड़े, विलायतें[2] तथा पद प्रदान करें और अपनी राजधानी में जहाँ इस्लाम की प्रथाओं को उन्नति (होनी चाहिये ताकि उससे) इस्लामी प्रथायें सभी नगरों में उन्नति पायें, काफ़िरों, मुशरिकों, मूर्ति तथा गोबर की (१२० ब) परिस्तिश करने वालों को राजप्रासाद के समान भवनों के निर्माण की अनुमति दें, सुनहरे वस्त्र पहनने दें, अरबी घोड़ों पर सुनहरी-रुपहली ज़ीनों को लगा कर सवार होने की आज्ञा दें, उन्हें भोग विलास तथा सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने दें, उन्हें मुसलमानों को नौकर रखने की अनुमति दें, मुसलमानों को उनके घोड़ों के आगे दौड़ने दें, मुसलमान फ़क़ीरों को उनके द्वार पर भिक्षा माँगने दें और उन्हें इस्लामी राजधानी में, राय, राना, ठाकुर, साह, महन्त तथा पण्डित की उपाधियों से पुकारें तो फिर इस्लामी प्रथाओं को किस प्रकार उन्नति प्राप्त हो सकती है? इस्लाम के कलमे को इस प्रकार कैसे सम्मान प्राप्त हो सकता है, सच्चे दीन को झूठे धर्मों पर किस प्रकार प्रभुत्व प्राप्त हो सकता है और सत्य किस तरह केन्द्रीय स्थान ग्रहण कर सकता है? यदि मुसलमान बादशाह सच्चे दीन (इस्लाम) की सहायता करते हुये तथा मुहम्मद साहब की शरा के आदेशों का प्रचार करते हुये, मुसलमानों को घोर पाप में ग्रस्त रहने दें और गली कूचों तथा बाज़ारों में मदिरापान करने दें, जुआ खेलने दें, दुराचारी, व्यभिचारी निर्भय होकर दुराचार एवं व्यभिचार करते रहें और उनसे खराज लिया जाता रहे तो फिर इस्लामी प्रथाओं को किस प्रकार उन्नति प्राप्त हो सकती है?

(१२१ अ) यदि बादशाह दार्शनिकों तथा बदमज़हबों को अपने ग्रन्थों के ज्ञान के प्रचार की, जोकि मुहम्मद साहब के धर्म के विरुद्ध हैं, अनुमति देता है, यूनान निवासियों के ज्ञान का, जो नबियों के कथन के विरुद्ध है और जिसे इल्मे माक़ूल[3] कहते हैं और जिसमें संसार का प्रारम्भ व अन्त नहीं समझा जाता और ईश्वर को सभी बातों का ज्ञानी स्वीकार नहीं किया जाता और जिनको क़यामत का हिसाब, स्वर्ग नरक का जिसका प्रमाण नबियों के ३६० ग्रन्थों में विद्यमान है, नहीं स्वीकार होता और जो अपने निषेध को माक़ूलात कहते हैं, बादशाहों की राजधानी में सम्मान होने लगे और उन्हें अपने ज्ञान के प्रचार की अनुमति दी जाय, माक़ूल को मनक़ूल[4] से बढ़कर समझा जाय तो ऐसी दशा में सत्य, झूठे धर्मों पर किस प्रकार विजय प्राप्त कर सकेगा? किस प्रकार इस्लाम की प्रथाओं की उन्नति होगी और सत्य को केन्द्रीय स्थान प्राप्त होगा?

हे महमूद के पुत्रो, हे मुसलमान बादशाहो! यदि तुम अपनी मुक्ति चाहते हो और ईश्वर तथा मुहम्मद साहब के समक्ष लज्जित नहीं होना चाहते तो अपनी शक्ति तथा अधिकार (१२१ ब) काफ़िरों एवं मुशरिकों के विनाश में लगा दो। उनसे जिज़या तथा खराज लेकर संतुष्ट न हो जाओ। इतना अधिकार प्राप्त होने पर कुफ़्र तथा शिर्क को सुरक्षित न रहने दो। रात दिन कुफ़्र तथा काफ़िरों के अपमान का प्रयत्न करते रहो।.........

[मआसिरुल खुलफ़ा से, हारूनुर्रशीद के पुत्रों का उदाहरण]

अदालते जिबिल्ली (स्वाभाविक न्याय)

(१३३ ब) यदि किसी शासक में स्वाभाविक रूप से न्याय विद्यमान नहीं होता और

---

१ बड़ा ढोल।

२ प्रान्त।

३ तर्क वितर्क पर आधारित ज्ञान, दर्शन तथा विज्ञान।

४ कथनों पर आधारित ज्ञान।

वह इसमें विलम्ब, बनावट, लोभ, नीति तथा भय प्रदर्शित करता है तो वह न्याय तथा अत्याचार में भेद भाव नहीं कर सकता। दार्शनिकों ने स्वाभाविक न्याय के अनेक चिह्न बताये हैं :

(१) जिस पर अत्याचार किया गया हो, तथा शक्तिहीन की सहायता एवं अत्याचारी के प्रति शत्रुता।
(२) शत्रु को आदेश देते समय हृदय में प्रतिकार की भावनाओं का उत्पन्न न होना।
(३) न्याय के समय, टालमटोल, पक्षपात तथा सीमा से बढ़ जाने की भावनायें उत्पन्न न होना।
(१३४ अ)(४) पीड़ित का हृदय प्रतिकार के कारण भयभीत रहे।[1]
(५) न्याय के समय कृपा तथा दया ध्यान में रहे।
(६) आदेश देते समय किसी प्रकार के व्यंग का कोई विचार न रहे।
(७) किसी प्रकार की हानि का भय उसे न रोके।
(८) वह सत्य की खोज करता हो।
(९) दूसरों को अधिक न बढ़ाये और अपने दावे को कम न करे।
(१०) जब तक शक्तिशाली लोगों से शक्तिहीनों का हक़ दिलवा न दे उस समय तक संतुष्ट न हो।
(११) वह किसी का ऋणी न हो। किसी के परोपकार के कारण उसके हृदय में अत्याचार के विचार उत्पन्न न हों।
(१२) बाह्य रूप से कठोरता करे किन्तु हृदय से कृपालु तथा दयालु रहे। यह बड़ा विचित्र गुण है।
(१३४ब) (१३) उसके आतंक के कारण कोई बन-पशु भी न हिल सके।
(१४) ....[2]
(१५) झूठ तथा सच का पता तुरन्त चल जाय।
(१६) अभियोगी की अभिलाषा यही हो कि उसका निर्णय उसके द्वारा हो।
(१७) उसके न्याय के प्रति छोटे बड़े के हृदय में प्रेम उत्पन्न हो। यद्यपि उसके आदेश से हानि ही क्यों न हो किन्तु हृदय से लोग उसके आज्ञाकारी बने रहें।
(१८) यदि उसे पूर्व तथा पश्चिम कहीं भी किसी अत्याचार का पता चल जाय तो वह उसका निराकरण करे।
(१९) सर्वदा वह इसी सोच में रहे कि अत्याचार का अन्त किस प्रकार हो सकेगा और अत्याचारों का संसार से किस प्रकार विनाश हो सकेगा।

(२०) वह सर्वदा सदाचरण की रक्षा करे। सदाचारियों से सुन्दर व्यवहार करे परन्तु (१३५ अ) अत्याचारियों तथा व्यभिचारियों के प्रति ऐसा व्यवहार न करे।

बादशाहों के निकट न्याय का प्रथम तथा अन्तिम अर्थ न्यायाधीशों के मध्य में निष्पक्ष भाव उत्पन्न कराना है। निष्पक्ष भाव को आलिम दो भागों में विभाजित करते रहे हैं : एक विशेष निष्पक्षता दूसरी साधारण निष्पक्षता।

विशेष निष्पक्षता इस प्रकार है कि ख़लीफ़ा, बादशाह, क़ाज़ी, वाली, शासक, अथवा हाकिम वादी तथा प्रतिवादी को समान समझे। उनके प्रति निष्पक्ष रहे और किसी के साथ

---

१ प्रतिकार के कारण वह अत्यधिक प्रसन्न न हो जाय।
२ यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

पक्षपात न करे। आदेश देते समय, शक्तिशाली, धनवान, हाकिम, किसी का मुँह न देखे और कोई भी उत्कृष्टता, कला अथवा गुण न्याय में बाधक न हों। अपने पराये, अज़ीज़ सम्बन्धी, हाकिम, सेवक, धनी, निर्धन, सर्वसाधारण, शरीफ़, सहायक, विरोधी, मित्र तथा शत्रु को (१३५ ब) आदेश देते समय एक ही आंख से देखे। किसी से किसी प्रकार का घूंस तथा उपहार स्वीकार न करे। आदेश देते समय पिता, माता, भाई तथा पुत्र के प्रति प्रेम, राज्य की मसलहत, सम्मान के पतन का भय, शत्रुता तथा विरोध का भय, कोई चीज़ भी उसका मार्ग न रोकने पाये। इस प्रकार के न्याय का पुण्य ७० वर्ष की उपासना से अधिक है। उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिसमें न्याय की शक्ति जन्मजात है किसी में भी-इस प्रकार के गुण नहीं हो सकते।

साधारण निष्पक्ष भाव का सम्बन्ध पवित्र जीवन व्यतीत करने से है और यह विशेषता (१३६ अ) मुहम्मद साहब के ख़लीफ़ाओं की है। यह बात ऐसे जीवन से सम्बन्धित है जिनमें बादशाही अधिकार प्राप्त होने के बावजूद मनुष्य फ़क़ीरों के समान जीवन व्यतीत करता है। बैतुलमाल से केवल आवश्यकतानुसार ही अपने लिए व्यय करता है।

[ख़लीफ़ा उमर तथा नौशीरवाँ के उदाहरण]

अत्याचारियों का विनाश

(१३९ ब) हे महमूद के पुत्रो तथा संसार के बादशाहो! तुम्हें चाहिये कि सप्ताह में एक दिन भोग विलास, शिकार तथा सवारी त्याग कर एक खुले मैदान में आम दरबार करो। एक उच्च स्थान पर बैठ कर जिन पर अत्याचार हुआ हो उनके प्रार्थनापत्र स्वयं प्राप्त करो। ऐसा न हो कि बादशाही वैभव, स्वभाव, की कोमलता तथा राज्य का ऐश्वर्य, जोकि ऐसे कार्यों में पाप तथा कुफ़ के समान हैं, तुम्हें किसी बात से रोक दें। अत्याचार पर दृष्टिपात करो। यदि यह सिद्ध हो जाय कि अत्याचार प्रथम बार भूल के कारण किया गया है तो पीड़ित का हक़ अत्याचारी को अपमानित करके उसे दिलवा दो और उससे तोबा करवा कर उसे क्षमा (१४० अ) करदो। यदि उसने कई बार अत्याचार किया हो और अत्याचार उसके स्वभाव में प्रविष्ट हो गया हो तो पीड़ित का हक़ दिलवा कर उसे अपने राज्य से निकलवा दो। यह बात भली भाँति समझ लो कि जब तक अत्याचारी का विनाश नहीं हो जाता अत्याचार का राज्य से अन्त नहीं होता।

न्याय हेतु अधिकारियों की नियुक्ति

अपने राज्य के समस्त पदों के लिए ऐसे व्यक्ति नियुक्त करें जिनमें धर्म की इच्छा संसार से अधिक हो ताकि उनके आदेशों के कारण बादशाह को संसार में सफलता तथा क़यामत में मुक्ति प्राप्त हो।............कठोर मुतफ़हहिस[1] तथा सख्त अमीन[2] नियुक्त करने चाहिये और उन्हें आदेश दे देना चाहिये कि सामानों के मूल्य इस प्रकार निश्चित करें जिससे विक्रेता को अधिक लाभ न हो। क्रय करने वालों तथा विक्रेताओं को बाज़ार में जो कुछ बिकता हो उसका हाकिम न रहने दें। दीवाने रयासत[3] द्वारा जो मूल्य निश्चित हो जाय, यदि कोई उसका उल्लंघन करे तो उसको कठोर दंड दिया जाय।

---

१ जाँच करने वाले।

२ निरीक्षक, देखभाल करने वाले।

३ बाज़ार के भाव का नियंत्रण करने वाला विभाग।

क्षमा तथा दण्ड

(१४० ब) हे महमूद के पुत्रो ! क्षमा, माफ़ी, तथा टाल जाना राज्य-व्यवस्था के लिये (१४१ अ) परमावश्यक है। यदि बादशाह अपनी प्रजा के अपराधों को क्षमा न करे और अपने राज्य के सहायकों एवं मित्रों के अपराधों को न छिपाये तो उसके राज्य को दृढ़ता नहीं प्राप्त हो सकती। इसी प्रकार यदि बादशाह अपराधियों, उपद्रव मचाने वालों, चोरों, लुटेरों, अपहरणकर्त्ताओं, धृष्टों, निर्लज्ज लोगों को कठोर दंड न दे, बन्दीगृह में न डलवाये, मृत्यु दंड न प्रदान करे, तो आदमी, आदमी को खा जायगा। किसी की धन सम्पत्ति, स्त्री तथा बालक सुरक्षित न रह सकेंगे। अतः बादशाह के लिए क्षमा तथा दंड दोनों परमावश्यक हैं।

यदि बादशाह सर्वदा कृपा तथा दया करता रहे तो राज्य के आज्ञाकारी विद्रोही बन जाते हैं। यदि वह सर्वदा कठोर दण्ड दिया करे तथा कठोरता प्रदर्शित किया करे तो उसके (१४१ ब) स्त्री-बालक, हितैषी तथा मित्र सभी उसके शत्रु हो जायँगे और राज्य नष्ट हो जायगा। इस प्रकार बादशाह की कोई भी महत्त्वाकाँक्षा पूरी नहीं हो पाती है। प्रजा उसकी शत्रु और वह प्रजा का शत्रु हो जाता है। राज्य की सुख-सम्पन्नता, कठोर-दण्ड के कारण अव्यवस्था में परिवर्तित हो जाती है। कठोर-दण्ड का उद्देश्य संसार के कार्यों को सुव्यवस्थित करना है। जब तक संसार सीधे मार्ग पर नहीं आता और संसार वाले न्याय के मार्ग पर दृढ़ नहीं होते, तब तक सत्य केन्द्रीय स्थान ग्रहण नहीं करता।

बादशाह के प्रजा के प्रति व्यवहार की कई क़िस्में हैं। उनमें से कृपा, प्रोत्साहन, दान, पुण्य हैं जिनसे राज्य के बहुत से लोग सुव्यवस्थित हो जाते हैं। कठोर-दण्ड भी प्रजा को सुव्यवस्थित करने का एक साधन है। कठोर-दण्ड, अपमान, पदच्युत करने तथा धन के ज़ब्त करलेने से क़ौमें सुव्यवस्थित हो जाती हैं।

कठोर-दण्ड की क़िस्में

(१४२ अ) कठोर दण्ड कई प्रकार के हैं। उनमें में एक क़िस्म बन्दी बनाना है। इससे राज्य के कार्य सुव्यवस्थित होते हैं और अन्य लोग भयभीत रहते हैं।

दूसरी क़िस्म निर्वासन है। यह कई प्रकार से सम्भव है।

अपनी राजधानी से देश के अन्य भाग में निर्वासित करदें और आवश्यकतानुसार अदरार तथा ग्राम निश्चित करदें। किसी के लिये समय निर्धारित करदें और विश्वासपात्र न रहने दें। दूर तथा निकट के किसी स्थान पर भेज दें। कुछ को दूर के स्थानों पर भेज दें। तीनों प्रकार का निर्वास सयासते मुल्की कहलाता है। मुसलमानों तथा मोमिनों की हत्या का प्रयत्न न करना चाहिये। उन्हें बन्दीगृह में डालने, निर्वासन का तथा अन्य दण्ड देने चाहिये।

हक़ शिनासी

प्राचीन बादशाहों ने कहा है कि जहाँदारी का आवश्यक गुण हक़ शिनासी[1] है। जो बादशाह हक़ शिनास नहीं होता उसका शासन प्रबन्ध सुव्यवस्थित नहीं होता और उसका यश संसार में विद्यमान नहीं रहता तथा उसे क़यामत में मुक्ति नहीं प्राप्त होती। हक़ शिनास बादशाह के बहुत से चिह्न बताये जाते हैं। बादशाह की हक़ शिनासी की सब से बड़ी पहचान उसका ईश्वर के आदेशों का पालन करना तथा निषिद्ध कार्यों से बाज़ रहना है।

(१४२ ब) बादशाह की अपने भाइयों, परिवार वालों, मित्रों तथा प्राचीन निष्ठावानों के प्रति हक़ शिनासी इस प्रकार सम्भव है कि बादशाही प्राप्त करने के उपरान्त उनके साथ जिस प्रकार इससे पूर्व जीवन व्यतीत करता था उसी प्रकार उनके सम्मान की रक्षा करे।

---

१ दूसरे के हक़ का पहचानना।

(१४३ अ) बादशाह वास्तव में परमेश्वर होता है। जिस प्रकार ईश्वर कुछ पापियों के पाप क्षमा कर देता है, कुछ की तोबा स्वीकार कर लेता है, कुछ को दण्ड देता है, कुछ को क़यामत में दण्ड देगा संसार में दण्ड नहीं देता, कुछ को संसार में दण्ड देता है क़यामत में दण्ड न देगा, कुछ को संतुष्ट रखता है, कुछ पर कृपा तथा दया रखता है, कुछ को सम्मानित करता है तथा गौरव प्रदान करता है, कुछ को अपमानित करके भूमि में मिला देता है, कुछ को धन-सम्पत्ति प्रदान करता है, कुछ को औसत दर्जे का जीवन देता है, कुछ को नष्ट कर देता है और भिखारी बनाये रखता है तथा उपवास करने पर विवश रखता है, प्रत्येक समूह, क़ौम तथा गरोह से विभिन्न प्रकार के व्यवहार करता है और संसार को सुव्यवस्थित रखता है। (१४३ ब) वास्तव में बादशाह को उसी प्रकार आचरण करना चाहिये। बादशाही[1] में भी ईश्वर का अनुसरण करना चाहिये और प्रत्येक वर्ग, समूह, गरोह तथा कौम से उनके गुणों तथा आदत के अनुसार व्यवहार करना चाहिये। सदाचारियों तथा आज्ञाकारियों के प्रति दया, भूल करने वालों को क्षमा, असावधान लोगों के अपराध को छिपाना तथा विरोधियों, विद्रोहियों, अवज्ञाकारियों, षड्यंत्र रचने वालों, अत्याचारियों, अपहरणकर्त्ताओं, चोरों, लुटेरों तथा निर्लज्ज लोगों को नाना प्रकार के दण्ड देने चाहिये। प्रत्येक दण्ड की एक सीमा होनी चाहिये और यथा-सम्भव मनुष्य के प्राणों की रक्षा करनी चाहिये। शरा द्वारा निर्धारित दण्डों के आगे न बढ़ना चाहिये।

(१४४ अ) राज्य-व्यवस्था बिना क्षमा तथा दंड के सम्भव नहीं। दूरदर्शी बादशाह उसको ही कहा जा सकता है जो दंड तथा क्षमा का उचित अवसर समझ सके तथा उसकी मात्रा को भलीभाँति जान सके। जिस व्यक्ति से कृपा तथा दया द्वारा कार्य निकल सकता हो उसे बन्दी बनाना दंड नहीं कहा जा सकता, अपितु अव्यवस्था और परेशानी। जो कोई बन्दी बनाये जाने, मृत्यु-दंड अथवा निर्वासन के योग्य हो और उसे सम्मानित किया जाय तथा विलायत प्रदान की जाय तो इस प्रकार राज्य-व्यवस्था का प्रासाद नष्ट हो जाता है। महान् कार्यों में साधारण अपराधों को अपराध न समझना चाहिये।

(१४४ ब) बादशाह अपने प्राचीन दासों तथा सेवकों के प्रति हक़ शिनासी को उन्हें सम्मानित करके प्रदर्शित कर सकता है किन्तु यह उसी दशा में होना चाहिये, जब वे उसके योग्य हों। बिना योग्यता के सम्मान न प्रदान करना चाहिये; इसलिये कि इससे राज्य के कार्य में विघ्न पड़ जाता है।............प्रजा के प्रति बादशाह की हक़ शिनासी इस प्रकार हो सकती है कि वह उनके अपराधों को क्षमा करे, उनकी तोबा स्वीकार करे, उनके कार्यों की नुक्ताचीनी न (१४५ अ) किया करे और यथासम्भव उनके प्रति कृपादृष्टि रक्खे। कृपा, दया तथा परोपकार द्वारा प्रजा को अपना हितैषी बना ले। यदि बादशाह के विषय में यह प्रसिद्ध हो जाय कि वह हक़ शिनास है और अपने वचन का पालन करता है तो उसकी राज्य-व्यवस्था दृढ़ हो जाती है। उसकी प्रजा तथा सेना उसकी सहायक तथा मित्र बन जाती है।

दण्ड की क़िस्में

(१४६ अ) धर्मनिष्ठ बादशाहों को सबसे अधिक कठिनाई दंड प्रदान करने के समय होती है। बादशाह के राज्य का हित उससे सम्बन्धित है। अपने क्षणिक राज्य की रक्षा हेतु मुसलमानों का जो रक्तपात होता है, उसका ईश्वर के समक्ष उत्तर देना होगा।

प्रथम प्रकार का दंड क़सासे शरई कहलाता है। इसे सयासते मुल्की भी कहते हैं। महमूद के निकट किसी एकेश्वरवादी की हत्या समस्त संसार की सुख शान्ति प्राप्त करने के

१ जहाँदाराने मजाज़ी, ईश्वर को जहाँदार बिल हक़ीक़त कहा गया है और बादशाहों को जहाँदारे मजाज़ी।

बावजूद उचित नहीं। महमूद के पुत्रों को समझना चाहिये कि जिन दंडों के प्रदान करने की (१४६ ब) आलिमों ने सुल्तानों को अनुमति दी है, उनकी कई क़िस्में हैं। यदि कोई षड्यन्त्र रचे अथवा विश्वासघात करे या इसके लिये किसी प्रकार का संगठन बनाये और उसकी योजना का पता चल जाय तथा प्रमाण मिल जाय तो षड्यन्त्रकारियों तथा विश्वासघातियों को, यद्यपि वे दस-बीस अथवा इससे अधिक हों, तो षड्यन्त्र तथा विश्वासघात के प्रकट होने के पूर्व राज्य के हित के लिये तथा दूसरों के विश्वास हेतु कठोर दण्ड[1] देना चाहिये, चाहे वे मुसलमान ही क्यों न हों। उनकी तोबा स्वीकार न करनी चाहिये।

आलिमों ने षड्यन्त्रकारियों तथा विश्वासघातियों के विषय में स्पष्ट रूप से मृत्यु-दण्ड प्रदान करने के लिये नहीं लिखा है और संक्षेप में लिखा है कि मृत्यु-दण्ड का अधिकार बादशाह को दिया गया है। शरा के अनुसार जब तक कोई किसी की अकारण हत्या न करदे, मुरतद[2] न हो जाय, किसी सती सावित्री से व्यभिचार न करे, उस समय तक मृत्यु-दण्ड की अनुमति नहीं दी गई है।

(१४७ अ) बादशाह अपने तथा सहायकों के हित के लिये और दूसरों की शिक्षा के लिये मृत्यु-दण्ड देते हैं। जो लोग ऐसे बादशाह के विरुद्ध जो मुतग़ल्लिब[3] न हो विद्रोह करें तथा युद्ध करें और प्रजा को नष्ट भ्रष्ट करें और ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध युद्ध में मुसलमान सेना की हत्या हो तो इसके विषय में आलिमों को कोई आपत्ति नहीं, किन्तु विवादास्पद बात यह है कि यदि वे जीवित बन्दी बना लिये जायँ, और विद्रोह तथा षड्यन्त्र से तोबा करलें तो उनकी तोबा स्वीकार की जाय अथवा नहीं? इस विषय में बादशाहों का मत है कि इन लोगों की तोबा स्वीकार न की जाय और उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाय। कुछ धर्मनिष्ठ बादशाहों का मत है कि सभी की हत्या न करानी चाहिये। दुष्टों तथा सदाचारियों में भेदभाव करना चाहिये। जो लोग किसी आवश्यकतावश अथवा जाल के कारण दुष्ट हो गये हों उनसे विभिन्न प्रकार का व्यवहार किया जाय। दास सेवक तथा बाज़ार वाले एवं सर्वसाधारण इसी श्रेणी में आते हैं।

(१४७ ब) जो लोग निरन्तर विद्रोह एवं षड्यन्त्र रचते हों उन्हें मृत्यु-दण्ड देना चाहिये। दूसरे वर्ग वालों को उनके अपराध के अनुसार दण्ड देना चाहिये। धर्मनिष्ठ बादशाह मुसलमान बन्दियों की हत्या नहीं कराते थे। जो इस प्रकार विद्रोह तथा षड्यन्त्र करने पर मुसलमानों की हत्या न कराते थे, वे मुसलमानों की धन-सम्पत्ति भी नष्ट न करते थे और उनके परिवार को हानि न पहुँचाते थे।

महमूद के पुत्रों को समझना चाहिये कि राज्य का लोभ तथा बादशाही का प्रेम दूसरी ही वस्तु हैं। शरा के प्रति आँखें इस अवस्था में बन्द हो जाती हैं। ईश्वर का भय, (१४८ अ) क़यामत में उत्तर, तथा दूसरे जीवन में दंड का भय अन्य प्रकार के संसार से सम्बन्धित हैं।

बादशाहों को विलम्ब किये बिना, जो लोग नबी होने का दावा करें, मुसलमान होते हुये भी मुहम्मद साहब के प्रति अपशब्द कहें उनकी तुरन्त हत्या करा देना आवश्यक है और उनकी तोबा कदापि स्वीकार न की जाय।

ज़िम्मी के विषय में आलिमों के मध्य में मतभेद है किन्तु सर्वोचित मत यही है कि ज़िम्मी को भी जीवित न छोड़ना चाहिये। उनकी तोबा स्वीकार की जाय अथवा नहीं इसमें

१ हत्या करादे।

२ मुसलमान होने के उपरान्त इस्लाम त्याग न दे।

३ ज़बरदस्ती अथवा बिना किसी के अधिकारों के राज्य प्राप्त करने वाला, अपहरणकर्त्ता।

मतभेद है। यदि कोई मुसलमान, क़ुरान, पैग़म्बरों की हदीस को पाँव के नीचे कुचले, खुल्लम खुल्ला मदिरा-पान करे, स्त्रियों तथा बालकों से व्यभिचार करे, रमज़ान का अपमान करे, (१४८ ब) जुमा मस्जिद में खुल्लम खुल्ला मदिरा-पान करे, तो अन्य लोगों की शिक्षा हेतु उसकी हत्या करा देनी चाहिये। यदि कोई रमज़ान में खुल्लाम खुल्ला रोज़ा न रक्खे और उसके प्रति षड्यंत्र की आशंका न हो तो उसे अन्य प्रकार से दंड देना चाहिये।

इस्लामी प्रथाओं का अपमान करने वालों के प्रति किसी प्रकार की कृपा अथवा दया न प्रदर्शित करनी चाहिये। यदि कोई मुशरिक अथवा काफ़िर अपमान करे तो, चाहे वह ज़िम्मी ही क्यों न हो, उसकी हत्या करा देनी चाहिये। यदि अपमान करने वाला मुसलमान है तो देखना चाहिये कि वह कार्य शरा के विरुद्ध है अथवा अनुकूल। चाहे वह शरा के अनुकूल हो अथवा प्रतिकूल, मृत्युदंड न देना चाहिए किन्तु जो कार्य शरा के प्रतिकूल है उसके लिये न तो हत्या कराई जा सकती है और न कोई अन्य दंड दिया जा सकता है।

(१४९ अ) आलिमों ने मुहम्मद साहब की हदीस के आधार पर बताया है कि जो कोई अबू बक्र के विषय में अपशब्द कहे उसे शारीरिक दंड दिया जाय तथा बन्दी बनाया जाय। जो कोई आयशा[1] के प्रति अपशब्द कहे उसकी हत्या करा दी जाय इसलिये कि मुसलमानों की माताओं के विषय में अपशब्द मुहम्मद साहब तक पहुँचते हैं।

बैतुलमाल के धन के अपहरण के लिये मृत्यु-दंड न देना चाहिये और न हाथ कटवाने चाहिये। बैतुलमाल का धन सभी मुसलमानों की सम्पत्ति होता है। यदि प्रमाण मिल जाय तो उसे वसूल कर लेना चाहिये। यदि अपहरणकर्त्ता षड्यन्त्र रचता हो तो फिर उसके प्रति कठोरता प्रदर्शित करनी चाहिये, उसे बन्दी बना देना उचित बताया गया है। जो लोग बैतुल माल के धन का अपहरण करते हैं और जिन्होंने ख़यानत अपना पेशा बना लिया है तो बादशाहों को चाहिये कि ऐसे लोगों को बन्दी बनाकर धन को वसूल करें। बैतुलमाल में गड़बड़ी हो जाने से बादशाहों को बड़ी हानि होती है।

जरायमे मुल्की

(१४९ ब) महमूद के पुत्रों तथा मुसलमान बादशाहों को जानना चाहिए कि अपराधियों के अपराध कई प्रकार के होते हैं। जरायमे मुल्की भी दो प्रकार की होती है।

जिनसे देश के पतन का भय हो और जिनसे बादशाह के अपमान तथा उसके सम्मान में कमी हो जाने का भय हो। कठोर शासक तथा प्राचीन फ़िरऔन[2], जो दासता से मुख मोड़ कर ईश्वर होने का दावा करते हैं, दोनों प्रकार के अपराधों में मृत्यु-दंड देते थे तथा हज़ारों लाखों की हत्या कर देते थे।

मुसलमान बादशाहों को इन बादशाहों का अनुसरण न करना चाहिये। मुसलमानों की हत्या कराते समय बड़े सोच विचार की आवश्यकता है। बहुत से अपराधियों को एक छड़ी का भी दंड नहीं दिया जाता और इस विषय में सोच विचार किया जाता है। लोग मुसलमानों की हत्या कराते समय बेंत के समान काँपते हैं और जिस स्थान पर अपराध का पूर्ण प्रमाण मिल जाता है और किसी अन्य प्रकार का दंड देना सम्भव नहीं होता तो भी कम से कम

१ मुहम्मद साहब के प्रथम ख़लीफ़ा अबू बक्र की पुत्री तथा मुहम्मद साहब की धर्मपत्नी। वे उम्मुल मोमिनीन, धर्मनिष्ठ मुसलमानों की माता कहलाती हैं।

२ मूसा पैग़म्बर के समकालीन मिस्र के सम्राट् वलीद बिन मुसाब की उपाधि जो अपने आतंक के लिये प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि उसने ईश्वर होने का दावा किया था। मिस्र के बादशाहों की उपाधि फ़िरऔन है।

(१५० अ) मनुष्यों की हत्या कराते हैं। उन हत्याओं से, जब तक जीवित रहते हैं, कांपते रहते हैं। यदि किसी को मृत्यु दंड देने के उपरान्त उसके निरपराध होने का प्रमाण मिल जाता है तो उसके उत्तराधिकारियों को उसके खून का मूल्य अदा कर देते हैं और उन पर कृपा-दृष्टि रखते हैं। मुसलमान बादशाह मृत्यु-दंड देते समय कभी भी सीमा से आगे नहीं बढ़ते और एक व्यक्ति के अपराध के कारण १० व्यक्तियों की हत्या नहीं कराते। मृत्यु-दंड के उपरान्त उसके घरबार को छिन्न भिन्न नहीं करते। जो लोग ईश्वर से भय नहीं करते तथा शरीअत की चिन्ता नहीं करते वे एक व्यक्ति के स्थान पर सौ तथा हज़ार व्यक्तियों की हत्या कराते हैं।

(१५० ब) मृत्यु-दंड तथा अन्य सज़ायें देते समय बहुत सी बातों का ध्यान रखना चाहिये। जरायमे मुल्की में कठोर-दंड देते समय इस बात के ऊपर दृष्टि रखनी चाहिये कि थोड़े से मनुष्यों की हत्या से अत्यधिक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करें। यदि बहुत से मनुष्यों की कोई भी हत्या कराता है तो इस प्रकार की १००, २००, ५०० की हत्या को सयासत नहीं कहते अपितु देश की परेशानी तथा उसकी अव्यवस्था कहते हैं।

(१५१ अ) जरायमे मुल्की में दंड के विषय में सावधानी की दूसरी शर्त यह है कि जिस प्रकार का अपराध हो उसी के अनुसार दंड दिया जाय। कुछ को बन्दीगृह में डलवा दिया जाय, कुछ को दूर के स्थानों पर भिजवा दिया जाय और कुछ को मृत्यु-दंड दिया जाय।

(१५१ ब) महमूद अपने राज्य के विश्वासपात्रों तथा सहायकों एवं सम्मानित व्यक्तियों को दंड देते समय एक अन्य बात का भी ध्यान रखता था। तुम्हें भी उस बात का ध्यान रखना चाहिये ताकि तुम्हारा विश्वास लोगों के प्रति अधिक हो जाय और जरायमे मुल्की (१५३ अ) के लिये दंड के कारण राज्य का पतन न हो। जो दंड सर्वसाधारण को दिया जाता था वह दण्ड महमूद अपने विश्वासपात्रों, सहायकों तथा सम्मानित व्यक्तियों को न देता था। उनके विषय में जो कुछ भी आदेश देता उसमें इस बात का ध्यान रखता था कि उनका अपमान न हो। यदि वे अपना सम्मान नष्ट होते हुये देखते तो अवश्य ही महमूद के राज्य के शत्रु बन जाते और तत्पश्चात् किसी प्रकार के प्रोत्साहन से कोई भी लाभ न होता। सम्मानित व्यक्तियों, जो वर्षों तक परिश्रम करते हैं, बादशाह की सेवा करते हैं तथा विद्रोहियों का विनाश करते रहते हैं, की धन सम्पत्ति की रक्षा करते रहना चाहिये। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो सम्मानित व्यक्ति किस प्रकार बादशाह के प्रति निष्ठा रख सकेंगे।

सिफ़ारिश

कठोर-दंड देते समय बड़े-बड़े बादशाह सिफ़ारिश की ओर भी ध्यान दिया करते थे। (१५३ ब) सिफ़ारिश का द्वार खुले होने के कारण राज्य वालों को बड़ी आशायें होती हैं। खास व आम के हृदयों में बादशाह के प्रति निष्ठा में वृद्धि हो जाती है तथा जो लोग पूर्णतः बादशाह से घृणा करने लगते हैं वे भी निराश नहीं होते। सिफ़ारिश के द्वार खुले रखते समय बादशाह को कुछ शर्तों की ओर ध्यान रखना चाहिये।

(१) यदि सिफ़ारिश करने वालों में पुत्र भाई तथा विश्वासपात्र हों तो उसे ऐसा व्यक्ति न होना चाहिये जो अन्य लोगों से घृणा करता हो और उसे बादशाह का निकटतम तथा उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जिससे अधिक विश्वासपात्र कोई अन्य न हो। इस प्रकार लोग समझते रहते हैं कि केवल कुछ ही लोगों की बात स्वीकार की जाती है। यदि सिफ़ारिश करने

वाला कोई सूफ़ी[1] हो तो उससे बढ़कर कोई सम्मानित तथा श्रेष्ठ न हो। यदि सिफ़ारिश करने वाला आलिम हो तो पवित्रता, ईमानदारी तथा ज्ञान में उससे बढ़कर किसी अन्य को न होना चाहिये।

(२) सिफ़ारिश का द्वार खुले रखने की दूसरी शर्त यह है कि सर्वदा यह द्वार खुला न रहना चाहिये और सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कभी कभी सुननी चाहिये। यदि सर्वदा सिफ़ारिश स्वीकार होती रहेगी तो राज्य तथा धन के समस्त अपराधी यही मार्ग ग्रहण कर लेंगे।

(१५४ अ) हे महमूद के पुत्रो तथा हे मुसलमान बादशाहो! आतंक तथा अभिमान के वश में न हो जाओ। शैतान तुम्हारे हृदय में नाना प्रकार के विचार उत्पन्न न कर दे; तुम अपने आपको सफलता तथा उन्नति के शिखर पर न समझने लगो। यह कभी मत सोचो कि जो कुछ भी करोगे वह तुम स्वयं करोगे और किसी अन्य से इस विषय पर बातचीत करने की आवश्यकता नहीं। ईश्वर सभी बादशाहों का बादशाह है। वह इस लोक तथा परलोक में सिफ़ारिश के द्वार नहीं बन्द करता। यदि बादशाह संसार में सिफ़ारिश के द्वार बन्द कर देगा तो क़यामत (१५४ ब) में उसके लिये भी सिफ़ारिश के द्वार बन्द हो जायँगे। सिफ़ारिश के द्वार खुले रखने में अनेकों लाभ हैं। राज्य व्यवस्था में दंड बड़ा ही विचित्र तथा कठिन कार्य है। शैतान को किसी प्रकार इस कार्य में हस्तक्षेप न करने देना चाहिये।

[*तारीख़े अब्बासियान से मामून का उदाहरण*]

राज्य के अधिनियमों की दृढ़ता

(१५७ अ) सुल्तान महमूद कहा करता था कि हे पुत्रो! तुम्हें यह समझना चाहिये कि बादशाही बड़ा ही विचित्र तथा महान् कार्य है क्योंकि संसार वालों का कार्य, उनके झगड़ों का निर्णय तथा न्याय एक व्यक्ति की शक्ति पर निर्भर होते हैं। एक ही व्यक्ति के कारण संसार में सुव्यवस्था रहती है, शरा के आदेशों का पालन होता है, इस्लाम की प्रथाओं को उन्नति प्राप्त होती है, सत्य केन्द्रीय स्थान ग्रहण करता है, उत्कृष्ट बातें ज़ाहिर होती हैं और नीच बातों का पतन होता है, न्याय तथा परोपकार प्रकाश में आते हैं और अत्याचार तथा (१५७ ब) ज़ुल्म का अन्त होता है। खुल्लमखुल्ला लोग अच्छे कार्य करने लगते हैं तथा अत्याचार का अन्त होने लगता है, दैवी कष्टों में कमी हो जाती है और पुण्य प्राप्त होता है; अतः महान् कार्य बिना अधिनियमों के, जोकि ज्ञान तथा बुद्धि के अनुसार हों, सम्पन्न नहीं हो सकते।

राज्य-व्यवस्था का उद्देश्य वर्त्तमान का उपकार तथा भविष्य का भला करना है। यदि वर्त्तमान में कोई लाभ हो और उसका कुप्रभाव भविष्य पर पड़े तो बुद्धिमान् लोग उसे लाभ नहीं कहते। शरीफ़ों की इज़्ज़त तथा कमीनों का अपमान बुद्धि तथा ज्ञान दोनों ही के निकट इसी कारण उत्कृष्ट हैं, अतः बादशाह को चाहिये कि वह अपने राज्य के पद तथा कार्य सम्मानित व्यक्तियों को सौंपे और कमीनों को कोई भी पद न प्रदान करे। यदि सम्मानित व्यक्तियों को पद प्रदान करने में तत्काल कोई लाभ न दृष्टिगत होता हो और कमीनों को पद देने में तत्काल लाभ दृष्टिगत होता हो तो भी शरीफ़ों को ही पद देने चाहिये और कमीनों को तथा कमअस्ल लोगों को पद के निकट न फटकने देना चाहिये।

यदि बादशाह अधिनियमों के बनाने से सम्बन्धित किसी भी एक कमीने अथवा कमअस्ल को अपने राज्य में पद प्रदान कर देगा तो उसके अधिनियम, अधिनियम न रहेंगे, उसके अधिनियमों का उद्देश्य पूरा न हो सकेगा। राज्य-व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध में अत्यधिक

---

१ मुसलमान संत।

न्याय की आवश्यकता होती है। बादशाह को चाहिये कि वह ऐसे अधिनियमों की व्यवस्था करे जिससे न्याय में वृद्धि हो। उसके राज्यकाल तथा समय के लिये जो अधिनियम उचित हों उन्हीं की व्यवस्था कराये।

(१५८ ब) हे महमूद के पुत्रो ! अधिनियम के प्रयोग तथा उनकी दृढ़ता के बिना राज्य व्यवस्था के कार्य में विघ्न समझना चाहिये। राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्यों में पर्याप्त सोच विचार तथा वादविवाद के उपरान्त हाथ डालना चाहिये। वर्त्तमान तथा भविष्य पर दृष्टि रखनी चाहिये। यद्यपि महमूद दूसरों से छोटा था किन्तु तुमसे बड़ा था; तुम्हें उसके अधिनियमों के पालन में गर्व करना चाहिये।

महमूद ने अपने बादशाही के समय एक वर्ष तक अधिनियमों के बनाने में बड़ा परिश्रम किया था। इस कार्य में अहमद हसन, अली खेशावन्द, अबुसहल सिफराई तथा अन्य (१५९ अ) बुद्धिमानों ने खून पसीना एक कर दिया था। अधिनियमों के समय चार शर्तों पर ध्यान देना चाहियेः—

(१) राज्य-व्यवस्था के अधिनियम शरा के आदेशों के विरुद्ध न होने चाहिये और उनसे इस्लाम के आदेशों में किसी प्रकार का भय न होना चाहिये।

(२) दूसरी शर्त यह है कि अधिनियमों की ओर खास लोग आकर्षित हों सर्वसाधारण की उससे आशायें बंधें, नेक लोग उसकी ओर ध्यान दें तथा उन अधिनियमों के कारण लोगों की नम्रता में वृद्धि हो और किसी को उसके प्रति घृणा न हो।

(३) तीसरी शर्त यह है कि उन अधिनियमों से सम्बन्धित धर्मनिष्ठ बादशाहों के उदाहरण प्राप्त हों। अधर्मी तथा कठोर बादशाहों के नियमों का उन नियमों द्वारा पुनरुद्धार न हो।

(४) यदि उन नियमों में कोई बात सुन्नत के विरुद्ध हो और उस पर आचरण करने से अविश्वासी लोगों का भला होता हो तो तुम्हें उस अधिनियम से लज्जा आनी चाहिये।

(१५९ ब) जिस प्रकार कठोर बादशाहों के दरबार में इस प्रकार की प्रथाएँ थीं जैसे भूमि पर सिर रखना, लोगों के पाँव पर शीश नवाना, अपने आपको आतंक से परिपूर्ण तथा अभिमानी प्रदर्शित करना, इसी प्रकार के नियम धर्मनिष्ठ सुल्तानों के दरबार में भी आ गये हैं। हे पुत्रो ! तुम्हें समझना चाहिये कि राज्य-व्यवस्था के नियमों का बनाना बड़ा कठिन कार्य है। जब तक अधिनियम बनाने वाले पूर्ण रूप से बुद्धिमान्, योग्य तथा अनुभवी न हों और पिछले सुल्तानों के अधिनियमों से परिचित न हों और उनकी बुद्धि को भोग विलास तथा क्रोध ने अपने वश में न कर लिया हो, जो संसार की अभिलाषा करते हों, उनके अधिनियम बनाने के कारण राज्य में बड़ी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाने का भय है।

(१६० अ) हे महमूद के पुत्रो ! तुम्हें समझना चाहिये कि बादशाही की पूंजी यह है कि बादशाह के आदेशों का संसार में पालन होता रहे और बादशाह के प्रति विद्रोह, षड्यन्त्र, विरोध तथा मुखालफ़त न हो। अथवा वह स्वयं खो न जाये। संसार तथा संसार वाले सुव्यवस्थित रहें। इस्लाम के ७२ समुदाय अपने अपने कार्यों में व्यस्त रहें।

कुछ बुद्धिमानों ने जो अपने आपको भूमि पर ईश्वर कहलवाते थे, ऐसे अधिनियम बनाये थे जिनके अनुसार ईश्वर, नबियों तथा परलोक पर कोई ध्यान न दिया जाता था।

(१) जो कोई उनके आदेशों का पालन न करता था और यदि एक लाख अथवा दो लाख भी अवज्ञाकारी होते थे तो उनकी हत्या करादी जाती थी।

रहती है। इस प्रकार न्याय करने में किसी को कोई भी झिझक न होती थी। न तो कोई अपहरण करता था और न कोई अन्य गड़बड़। प्रजा के विषय में जानकारी होने से मुझे बड़ा लाभ होता था।

(९) मैं नेकों, सदाचारियों, अनुभवी लोगों, निष्ठावानों, ईश्वर का भय करने वालों तथा लज्जा करने वालों को पद प्रदान किया करता था।

(१०) संसार को त्याग देने वालों, बुद्धिमानों तथा कलाकारों का आदर व सम्मान करना चाहिये। यदि मैं यह सुन पाता था कि किसी ने संसार को त्याग दिया है तो मैं उसका आदर-सम्मान करता था और उससे अपने राज्य के लिये सहायता की याचना किया करता था।

(११) राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में सन्तुलन : मैं अमीराने तुमन, अमीराने हज़ारा तथा वृद्ध लोगों के सम्मान में सन्तुलन रखता था। उन्हें सम्मानित करने, खिलअत तथा (१६३ ब) इनाम प्रदान करने में सूई की नोक के बराबर कमी न करता था। उनके सम्मान तथा उनके प्रति कृपादृष्टि रखने में कोई बेजोड़ कार्य न करता था।

(१२) मैंने अपने राज्य के प्रारम्भ में कुछ बुद्धिमान् तथा अनुभवी लोग राज्य-व्यवस्था में परामर्श देने के लिये चुन लिये थे और उनके प्रति कृपा तथा दया प्रदर्शित किया करता था और उनसे राज्य-व्यवस्था से सम्बन्धित बातों में परामर्श किया करता था।

(१३) मैं वर्ष में दो बार सेना के विषय में पूछताछ किया करता था। जिस किसी सेना-नायक की सेना को उन्नति देते हुये देखता उसे सम्मानित करता तथा उच्च पद प्रदान करता था। जिस किसी की सेना को अव्यवस्थित पाता तो उसके प्रति कृपादृष्टि न रखता और उसकी सेना दूसरे को दे देता।

(१४) मैंने अपने समस्त राज्यकाल में व्यापारियों तथा कारवान वालों से एक दिरम की भी अनुचित आशा न की अपितु उन्हीं को सम्मानित किया और उन्हें खिलअत तथा इनाम प्रदान किये। मेरे राज्यकाल में अनाज तथा कपड़े का मूल्य गिर गया।

(१५) ख़राज तथा जिज़ये में मध्य का मार्ग ग्रहण करना : यदि किसी को ख़राज तथा जिज़ये में १० दिरम देने होते तो उन्हें छोड़ देता। जो कोई अधिक आज्ञाकारिता (१६४ अ) प्रदर्शित करता तो उसके लिये और भी कम कर देता। क़िस्मात,[1] मुहदेसात[2] तथा बेगार शिकार की, चाहे कम हो अथवा अधिक, अनुमति न देता था।

(१६) वचन देने के उपरान्त उसका पालन करता था अपितु वचन से अधिक प्रदान कर देता था।

(१७) मैंने किसी से विश्वासघात नहीं किया। जिस किसी ने भी विश्वासघात किया उसका नाम व निशान भी शेष न रहने दिया। इस दंड के भय से मेरे राज्य में कोई भी विश्वासघात न करता था।

(१८) मैं अपने राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्बन्ध में साइयों[3] तथा ईर्ष्यालुओं की

१ यहाँ इसका अर्थ कर है।

२ वह कर जो विलायतों के खेतों तथा अचल सम्पत्ति पर अनुचित रूप से बढ़ा दिया जाता था अथवा दण्ड देकर या समझौते से वसूल किया जाता था। (दस्तूरुल अलबाबः रामपुर पोथी, पृ० ९ ब, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० ७।

३ इसका अर्थ "चुग़ल ख़ोर तथा कर वसूल करने वाला" है। सम्भवतः अभिप्राय ऐसे कर वसूल करने वालों से हो जो ठीक स्थिति दीवाने विज़ारत के समक्ष न बनाते हों। (तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० ७)।

बात न सुनता था। यदि माली से आयत[1] होती थी तो उसे अपने आश्रितों के विषय में न सुनता था। यदि उसे अन्य लोगों के विषय में पाता तो उन्हें अधिकारियों को सौंप देता और साई को अपने समक्ष सम्मान प्रदान न करता। यदि मुल्की से आयत होती और साई की बात को ठीक पाता तो उसे इनाम इकराम प्रदान करता। यदि झूठ पाता तो उस पर अधिक कठोरता न करता ताकि यह द्वार बन्द न हो जाय।

(१६४ ब) (१६) स्त्रियों तथा बालकों, भाइयों एवं सम्बन्धियों से व्यवहार के समय बादशाही के सम्मान का पूर्ण ध्यान रखता था।

(२०) मैं यथासम्भव राज्य की गुप्त बातें किसी को बहुत कम बताता था। केवल ऐसे लोगों को बताता था जिनके प्रति विश्वास होता था कि वे अन्य लोगों को न बतायेंगे।

(१६५ अ) क़दर ख़ाँ ने अपने अधिनियम बताकर महमूद से अपने लाभार्थ उसके अधिनियमों के विषय में प्रश्न किया। सुल्तान महमूद ने उत्तर दिया कि मैं मुसलमान हूँ। मेरा उद्देश्य मुहम्मद साहब की शरा को प्रसारित करना है। मैं ३८ वर्ष से राज्य कर रहा हूँ। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं उसके धर्म के विरोधियों का विनाश कर दूँगा और उसकी शरा के आदेश समस्त संसार में प्रसारित कर दूँगा। इसी उद्देश्य से मैंने इतने मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया है। मनात[2] का, जिसकी मुशरिक तथा काफ़िर २-३००० वर्ष से पूजा कर रहे थे, समूल विच्छेदन कर दिया है तथा ग़ज़नी के द्वार पर उनके सिर कटवा लिये हैं।

(२) मैं मुहम्मद साहब की शरा का प्रबन्ध पवित्र लोगों, ईमानदारों तथा ईश्वर का भय करने वालों के सिपुर्द करता हूं। किसी भी लोभी, लालची, संसार की अभिलाषा करने वाले, अविश्वसनीय तथा बहाने बाज़ को शरा का क़ाज़ी नहीं नियुक्त करता। सांसारिक पद कुलीनों को प्रदान करता हूँ, तथा कमीनों को धर्म तथा संसार के उच्च पदों के निकट नहीं फटकने देता।

(३) परीक्षा के उपरान्त जब मैं किसी को अपना विश्वासपात्र बना लेता हूँ तथा उच्च पद प्रदान कर देता हूँ तो साधारण अपराध के कारण उसे पदच्युत नहीं करता। किसी की सेवा तथा निष्ठा का हक़ नष्ट नहीं होने देता। अपने तथा अपने पिता के वृक्ष[3] साधारण अपराध पर नहीं कटवाता। अपने पुत्रों, विश्वासपात्रों तथा सहायकों के साथ इस प्रकार जीवन व्यतीत करता हूँ कि मेरा सम्मान कम नहीं होता और उनकी निष्ठा में वृद्धि होती रहती है।

(४) मैं जो धन सम्पत्ति एकत्र करता हूँ सेना को अपने सामने बाँट देता हूँ। जितना अधिक दान करता हूँ उतना ही अधिक प्रसन्न होता हूँ। सेना के विषय में किसी व्यय पर ध्यान नहीं देता और यथासम्भव सेना का अपमान नहीं सहन कर सकता।

(५) मैं ज्ञान, बुद्धि, न्याय, धर्मनिष्ठा, कला, नैतिकता तथा सत्यता को यथासम्भव प्रिय रखता हूँ। उपर्युक्त गुण वालों को बिना किसी सिफ़ारिश के सम्मानित करता हूँ। उन्हें अदरार, इनाम, ग्राम तथा उद्यान प्रदान करता रहता हूँ ताकि मेरा राज्य आलिमों,

---

१ साइयों का कार्य।

२ मुहम्मद साहब के पूर्व काबा का प्रसिद्ध देवता। यहाँ सोमनाथ के देवता से अभिप्राय है।

३ आश्रितों की हत्या नहीं करता।

बुद्धिमानों ईमानदारों, कलाकारों, सत्यवादियों तथा सदाचारियों से सुशोभित रहे। यह भी मेरी प्रसिद्धि का साधन है।

(१६६ अ) (६) मैं अपने पुत्रों, सम्बन्धियों, वालियों, तथा प्रान्तों के अधिकारियों से लेकर ज़मींदारों, मुक़द्दमों तथा प्रजा तक की जानकारी रखता हूँ। इस प्रकार राज्य वालों के कार्य सुव्यवस्थित रहते हैं।

(७) मैं प्रत्येक कार्य तथा नीति के उचित अवसर को खूब पहचानता हूँ और समय नष्ट नहीं करता। मै अपने समय का मूल्य भली भांति समझता हूँ और राज्य-व्यवस्था के संचालन हेतु अपने समय का उचित विभाजन करता हूँ ताकि आयु व्यर्थ नष्ट न हो।

(८) किसी अभियान का संकल्प करने के पूर्व उसके विषय में बहुत सोच विचार करता हूं। परामर्श-दाताओं से परामर्श करता हूं। तत्पश्चात् दृढ़ संकल्प करता हूँ ताकि ईश्वर उसमें सफलता प्रदान करे।

(९) सर्वदा, प्रजा तथा आज्ञाकारियों से कृपा एवं दयापूर्वक व्यवहार करता हूँ। सदाचारियों तथा नेकों को आश्रय प्रदान करता हूँ। खराज की वसूली में न इतना अत्याचार करता हूँ कि प्रजा दरिद्र हो जाय और न इतना छोड़ देता हूँ कि धन की अधिकता से वे अवज्ञाकारी बन जायँ। निर्लज्जों, भविष्य पर ध्यान न देने वालों, बन-पशुओं के समान व्यक्तियों, (१६६ ब) अंधों[1], ईश्वर का भय न करने वालों, मादकों, कठोर लोगों के प्रति क्रोध तथा आतंक प्रदर्शित करता रहता हूँ।

(१०) मैं झूठों की बातों से धोखे में नहीं आ जाता और कवियों की प्रशंसा से अभिमानी नहीं हो जाता। अपने आपको साधारण मुसलमान समझता हूँ। सर्वदा अपने आपको दीन-पनाही करने में पूर्ण नहीं पाता। तीन-चार वर्ष से यह भय किया करता हूँ कि यदि कल महमूद से क़यामत में पूछा जायगा कि, 'हे महमूद! तुझे इतने अधिकार तथा शक्ति प्रदान की; तूने हिन्दुओं के शिर्क तथा कुफ़्र का क्यों अन्त नहीं किया, हिन्दुओं को मुसलमान क्यों नहीं बनाया, समस्त ब्राह्मणों की जो कुफ़्र के नेता हैं हत्या क्यों न करादी, तो मैं क्या उत्तर दूंगा? मैं जब कभी भी हिन्दुस्तान पर आक्रमण करता था तो मेरी आकांक्षा यही रहती थी कि कुफ़्र तथा शिर्क का तलवार द्वारा अन्त करदूँ और सब को मुसलमान बना लूँ। अहमद हसन मैमन्दी के घर का विनाश हो जाय कि उसने मुझे इस सम्मान की प्राप्ति से रोक दिया।

(११) ईश्वर, मुहम्मद साहब क़यामत तथा शत्रुओं के भय से मैं किसी रात में भी निश्चिन्त होकर नहीं सोता। यह अधिनियम मुझे अत्याचार तथा ज़ुल्म से बाज़ रखता है।

(१६७ अ) (१२) मैं धन के अपराधियों को, जो अपहरण करते हैं, इस प्रकार दंड देता हूं कि वे अपने पाँव पर नहीं खड़े हो पाते। धन की नष्ट होने से रक्षा किया करता हूँ। इस प्रकार राज्य के किसी भी पद तथा कार्य में विघ्न नहीं पड़ता।

(१३) मैं किसी के भी हक़ को नहीं भूलता।

(१४) मैंने उपर्युक्त अधिनियमों की ऐसी व्यवस्था कराई है कि उनके उल्लंघन का मेरे हृदय में कभी कोई विचार नहीं आता।

उच्च साहस

बादशाह में स्वाभाविक रूप से उच्च साहस तथा श्रेष्ठता होनी चाहिये। सुल्तान महमूद

१ किसी बात पर ध्यान न देने वालों। यहाँ साधारण अन्धों से अभिप्राय नहीं।

ने अपनी वसीअतों[1] में कहा है, "हे महमूद के पुत्रो तथा संसार के बादशाहो ! तुम्हें जानना चाहिये कि बादशाह के उत्कृष्ट गुणों में उच्च साहस बहुत बड़ा गुण है। बादशाही तथा उच्च साहस दोनों एक दूसरे के लिये आवश्यक हैं। बादशाही, ख़ुदा का ख़लीफ़ा तथा नायब होना (१६७) है। यदि बादशाह बलन्द हिम्मत, श्रेष्ठ तथा श्रेष्ठता-प्रिय न हो तो वह जहाँदारी एवं जहाँबानी का हक़ अदा नहीं कर सकता। जब तक वह सभी को दान नहीं करता उसका सम्मान ख़ास व आम के हृदय में आरूढ़ नहीं हो पाता। बादशाह के दान पुण्य में भी अन्य लोगों की अपेक्षा विशेषता होनी चाहिये।

(१६८ अ) हतोत्साह तथा कमीनों के लिये राज्य करना सम्भव नहीं। बादशाही की सब से बड़ी आवश्यकता श्रेष्ठता की अभिलाषा है। श्रेष्ठता, कंजूसी तथा कृपणता द्वारा नहीं उत्पन्न हो सकती। हतोत्साह, कृपणों तथा कंजूसों के प्रति सर्वसाधारण घृणा करते रहते हैं। यदि बादशाह के प्रति प्रजा के हृदय में अपमान की भावनायें उत्पन्न हो जाती हैं तो उससे उसकी आज्ञाओं के पालन में कमी हो जाती है।

(१६८ ब) बादशाही दो स्तम्भों पर आधारित है अर्थात् कृपा एवं क्रोध। हतोत्साह न तो कृपा प्रदर्शित कर सकता है और न क्रोध। कंजूस, प्रजा के पास जो उत्तम वस्तुयें देखता है अथवा जिन उत्तम वस्तुओं के विषय में सुनता है उनका लालच करने लगता है। अपनी कम हिम्मती के कारण जिस प्रकार सम्भव होता है, प्रजा की उत्तम वस्तुयें तथा धन सम्पत्ति प्राप्त करने का प्रयत्न किया करता है। जो कठिन कार्य उपस्थित होते हैं, उनमें धन व्यय नहीं करता, अपितु अपनी शक्ति सर्वदा अत्याचार करने में लगाया करता है।

(१६९ अ) दार्शनिकों का कथन है कि उच्च साहस वाले व्यक्ति में सबसे अधिक गुण होने चाहिये। साहस वाला वही कहा जा सकता है, जो बाह्य तथा आँतरिक गुणों में अन्य लोगों से श्रेष्ठ हो। यह श्रेष्ठता कम हिम्मत लोगों को नहीं प्राप्त हो सकती।

स्वाभाविक साहस

(१७० अ) स्वाभाविक साहस के चिह्नों के विषय में दार्शनिकों ने बहुत कुछ लिखा है।

(१) संसार के राज्य का उसकी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं होता और वह भविष्य के जीवन की उन्नति की आकाँक्षा किया करता है। यदि वह संसार की अभिलाषा करने लगता है तो समस्त संसार को अपने अधीन कर लेना चाहता है। यदि यह भी सम्भव नहीं होता तो वह संसार के बादशाहों की अपेक्षा अत्यधिक उत्कृष्ट गुणों की अभिलाषा किया करता है।

(२) समस्त संसार के प्रति वह कृपा करना चाहता है और ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की कृपा की आकांक्षा नहीं करता।

(३) संसार के समस्त परोपकार सम्बन्धी कार्य वह स्वयं करना चाहता है और इसका कोई बदला न तो इस लोक में और न परलोक में चाहता है।

(४) बादशाह सर्वदा इस बात की आकांक्षा किया करता है कि वह किसी मनुष्य से कुछ न ले अपितु सर्वदा वह स्वयं प्रदान किया करे।

(१७० ब) (५) वह राज्य-व्यवस्था की उत्कृष्टता एवं अपनी आत्मा की शुद्धता का प्रयत्न किया करे।

(६) वह इस बात का प्रयत्न किया करे कि समस्त जिन्नात[2] तथा मनुष्य उसके यहाँ

---

१ शिक्षाओं।

२ मुसलमानों के विश्वास के अनुसार एक तैजस योनि।

भोजन करें। समस्त बन पशुओं तथा पक्षियों को भोजन प्रदान करे और संसार के समस्त नंगे लोग उसके वस्त्रों के भंडार से वस्त्र प्राप्त करें।

(७) सातों इक़लीमों को आदेश देने की आकांक्षा किया करे।

(८) जितना भी बादशाह उन्नति करता जाय उसका हृदय संतुष्ट न हो और उससे अधिक की आकांक्षा किया करे।

(९) वह समस्त संसार की आवश्यकताओं की पूर्ति की अभिलाषा किया करे और किसी प्रार्थी को अपने द्वार से न लौटाये।

(१०) वह स्वयं बन्दियों को मुक्त करने की इच्छा किया करे और अपने राज्य में किसी को परेशान न देख सके।

(११) बादशाही की बलन्द हिम्मती का सर्वोच्च स्थान यह है कि वह असम्भव कार्य करने का प्रयत्न करने लगे।

(१७५ अ) जहाँगीरी के सम्बन्ध में बादशाहों के लिये जिन शर्तों का पालन करना आवश्यक है वे इस प्रकार हैं :

(१) जो सेना बादशाह के साथ प्रस्थान करने के लिये नियुक्त हो उसका अपने सम्बन्धियों, परिवार वालों तथा धन-सम्पत्ति की ओर से निश्चिन्त रहना परमावश्यक है और यदि वे दस वर्ष भी (अपने घर से) अनुपस्थित रहें तो भी उन्हें किसी प्रकार की चिन्ता न रहे।

(२) प्रजा को जिस चीज़ की इच्छा तथा आवश्यकता हो वह उसे राजधानी में तत्काल प्राप्त हो जाय। बादशाह के लिये भोजन सम्बन्धी समस्त वस्तुयें, वस्त्र तथा नाना प्रकार के फल और मेवे, माजूने, मिठाइयाँ, अचार, मदिरा, भंग, बुकनी इत्यादि उपलब्ध रखनी चाहिये। दूर के अभियानों के समय आलिमों, सूफ़ियों, फ़क़ीहों, चिकित्सकों, ज्योतिषियों, कलाकारों, (१७५ ब) बाज़ारियों, व्यापारियों, गायकों, खेल तमाशा करने वालों, क़िस्से कहानी कहने वालों, मल्ल-युद्ध करने वालों तथा विदूषकों को उपस्थित रहना चाहिये ताकि उन्हें देखकर सेना वाले अपने आपको राजधानी में समझें और उनके हृदयों को परदेश के कारण कष्ट न हो। धर्म तथा संसार से संबंधित एवं भोग-विलास से सम्बन्धित वस्तुओं के बाहुल्य के कारण वे सेना के शिविर को राजधानी समझें और अपने सम्बन्धियों से पृथक् होने का उन्हें कष्ट न हो।

(३) बादशाह के लिये यह आवश्यक है कि जो सेना दूर के स्थानों पर गई हो उसकी खुम्स तथा ग़नीमत[1] की सावधानी से व्यवस्था की जाय। ऐसा न हो कि सेना में रूपवान दासियों तथा दासों की अधिकता के कारण एवं लूट की उत्तम वस्तुओं की बहुतायत से वे अपने घरबार को भूल जायँ और अपने सम्बन्धियों के लिये उनके हृदय में कोई ध्यान न आये।

(४) बादशाह को बुद्धिमान् वज़ीरों से परामर्श करके अधिनियम बनाना चाहिये। उलाग़, पैक, जमाज़ा तथा क़ासिद[2] सेना के शिविर से राजधानी में निरन्तर पहुँचते रहें ताकि दोनों ओर के लोगों को किसी प्रकार की चिन्ता न हो।

(१७६ अ) (५) जब बादशाह दिग्विजय में व्यस्त रहता है और सेना की दृष्टि संसार के नगरों तथा अन्य भू-भागों पर पड़ती है तो बहुत से लोगों को वे नगर तथा भू-भाग रुचिकर

१ फ़तूहाते फ़ीरोज़ शाह का अनुवाद देखिये।

२ विभिन्न प्रकार के समाचार-वाहक, उलाग़ का उल्लेख इसके पूर्व हो चुका है। पैक, पैदल डाक ले जाने वाला, क़ासिद : समाचार-वाहक, जमाज़ा : सम्भवतः ऊँट पर डाक ले जाने वाले।

लगने लगते हैं और वे उसी स्थान पर निवास करने की अभिलाषा करने लगते हैं। बादशाह को चाहिये कि अपने सैनिकों को वह दूसरे स्थानों तथा राज्यों में रहने की अनुमति न दे, अपितु यथासम्भव कलाकारों तथा प्रत्येक कला में दक्ष व्यक्तियों, उच्च वंश वालों और अनेक लोगों को प्रोत्साहन देकर संसार के विभिन्न भागों से अपनी राजधानी में लाये।

[*सिकन्दर का उदाहरण*]

राज्य के रोगों का उपचार

(१७८ ब) सुल्तान महमूद का कथन है कि हे महमूद के पुत्रो तथा हे मुसलमान बादशाहो! तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि बादशाही संसार में बहुत बड़ा सौभाग्य है। यदि दुर्भाग्य से बादशाह अभिमानी हो जाता है और किसी बात की चिन्ता नहीं रखता तो राज्य में बहुत से रोग उत्पन्न हो जाते हैं। उनका उपचार आवश्यक होता है। यदि उपचार के बावजूद रोग बढ़ता जाय तो राज्य नष्ट हो जाता है। यदि उपचार का प्रभाव अच्छा हो तो इससे राज्य स्थापित रहता है। दार्शनिकों का कथन है कि भाग्यशाली बादशाह के राज्य में किसी प्रकार का रोग अथवा कोई दुर्घटना उत्पन्न नहीं होती। यदि रोग उत्पन्न हो जाता है तो वे उसके उपचार का शीघ्रातिशीघ्र प्रयत्न करते हैं और वज़ीरों, दार्शनिकों तथा बुद्धिमानों के परामर्श से उन दुर्घटनाओं के निराकरण का प्रयास करते हैं। कभी ऐसा होता है कि यदि राज्य के महल की १० ईंटें भी गड़बड़ हो जायँ तो समस्त सेना के प्रयत्न से भी वे ठीक नहीं होतीं। यदि दो ईंटों में ही कोई गड़बड़ी हुई हो और उसकी ओर शीघ्र ध्यान दे दिया जाय (१७६ अ) तो उसका उपचार हो जाता है। राज्य में विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हुआ करते हैं। एक क़िस्म महामारी तथा अकाल है। इन दोनों रोगों का उपचार बादशाह तथा प्रजा के प्रयत्न से सम्भव नहीं हो पाता और इस रोग में बादशाह तथा प्रजा की समान स्थिति हो जाती है किन्तु अकाल के समय बादशाह को चाहिये कि वह प्रजा की, खराज तथा जिज़्ये में कमी करके, सहायता करे। जहाँ तक सम्भव हो दरिद्रियों तथा भिखारियों की राजकोष से सहायता करे, व्यापारियों को अन्य प्रदेशों से अनाज लाने के लिये आदेश दे और कम मूल्य पर प्रजा के हाथ अनाज बिकवाये। यदि घोर अकाल पड़ जाय तो बादशाह खराज तथा जिज़या लेना बन्द कर दे, राज्य के धनी व्यक्तियों को आदेश देदे कि वे कुछ भिखारियों तथा दरिद्रियों को भोजन कराया करें और उन्हें भूख के कारण मरने न दें।

बादशाह के हाथ महामारी के समय बँध जाते हैं। इस कष्ट के निवारण हेतु बादशाह अधिक सहायता नहीं कर पाता।

राज्य में दूसरे प्रकार की दुर्घटना तथा रोग इस तरह उत्पन्न हो सकते हैं कि प्रजा से अत्यधिक धन प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाय, कठोरता, मृत्यु-दण्ड तथा अन्य कठोर-दण्डों में अधिकता हो जाय, किसी के अपराध को क्षमा न किया जाय, वेतन कम प्रदान किया जाय (१७९ ब) तथा खराज अधिक लिया जाय। ऐसी अवस्था में सेना तथा प्रजा बादशाह से घृणा करने लगती है। प्राचीन बादशाह तथा वज़ीर इस दुर्घटना तथा रोग को बहुत बड़ा रोग समझते थे और इसे घर की आग कहा करते थे क्योंकि प्रजा की घृणा तथा उनका बादशाह का हित न चाहने के कारण बादशाह के हृदय में भी प्रजा की ओर से शत्रुता के भाव उत्पन्न हो जाते हैं और राज्य स्थाई नहीं रह पाता और प्रबन्ध तथा सुव्यवस्था नष्ट हो जाती है। प्रत्येक दिशा में विद्रोह होने लगता है और विद्रोही तथा उपद्रवी उत्पन्न होने लगते हैं, बादशाह के आदेशों का पालन नहीं हो पाता, सेना तथा खज़ाने में, जो बादशाही की पूँजी हैं, विघ्न पड़ जाता है और बड़ी हानि दृष्टिगत होने लगती है। इस रोग का उपचार बड़ा कठिन है।

इसका फल तथा परिणाम बादशाह के गुणों से सम्बन्धित है। जब तक बादशाह प्रजा की सुव्यवस्था तथा प्रजा के स्वभाव को समझने योग्य नहीं हो जाता उस समय तक प्रजा के हृदय में घृणा में कमी नहीं होती।

(१८० अ) बादशाह स्वयं जब यह देखता था कि सभी लोग उससे घृणा करने लगे हैं और राज्य का रोग बढ़ गया है तो वह राज्य अपने किसी पुत्र अथवा भाई को प्रदान कर देता था और स्वयं एकान्त-वास ग्रहण करके विनाश से बच जाता था। वह अपनी प्रजा को नष्ट न करता था अपितु अपनी वासना का नष्ट हो जाना ही स्वीकार कर लेता था।

राज्य में तीसरी प्रकार की दुर्घटना इस प्रकार होती है कि कोई शक्तिशाली शत्रु, जो बादशाह से सेना, खज़ाने तथा वैभव में अधिक हो, बादशाह के राज्य पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दे। राज्य के लिये यह महान दुर्घटना कही जा सकती है। इसके उपचार के बहुत से साधन बताये गये हैं।

(१) शत्रु के सेनापतियों, विश्वासपात्रों, अथा निकटवर्तियों के पास जिस प्रकार भी सम्भव हो सके उपहार तथा नाना प्रकार की वस्तुयें भेजना चाहिए और युक्ति से उनके विनाशकारी प्रभाव को समाप्त कर देना चाहिये। अपनी सेना को बढ़ाने तथा अपने ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि का प्रयत्न करते रहना चाहिये। ऐसी दुर्घटना की अवस्था में प्रजा तथा खज़ाने की धन सम्पत्ति तथा समस्त राज्य के नष्ट हो जाने का भय होता है। जिसमें (१८० ब) घुड़सवारी की योग्यता हो उसे सेना में सम्मिलित कर लेना चाहिये। अपने साधनों तथा अनाज इत्यादि के ढेरों को अधिक बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये, शक्तिशाली शत्रु के प्रविष्ट होने का मार्ग नष्ट कर देना चाहिये; पुलों को तुड़वा देना चाहिये और जलाशयों को खाली करा देना चाहिये; चारे को जलवा देना चाहिये।

यदि बादशाह थोड़ा बहुत खराज अदा करने के लिये तैयार हो जाय तो इससे बादशाह का सम्मान नष्ट हो जाता है। युद्ध करने में यद्यपि नष्ट होने का भय होता है किन्तु फिर भी बादशाह उसी को अच्छा समझते हैं और खराज अदा करने तथा शत्रु की अधीनता स्वीकार करने के अपमान को अच्छा नहीं समझते।

ऐसी महान् दुर्घटना के समय बादशाह अपने सहायकों, सम्बन्धियों, विश्वासपात्रों तथा वीरों को लेकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है; वह प्राण तथा धन सम्पत्ति की चिन्ता नहीं करता और न वैभव के ऊपर ध्यान देता है। वह उस पर इस प्रकार आक्रमण करता है कि या तो उसे विजय ही प्राप्त हो जाय, या वह स्वयं नष्ट हो जाय।

(२) शत्रु से बचने का दूसरा साधन उससे सम्बन्ध स्थापित कर लेने से सम्भव हो जाता है। यदि बादशाह यह समझता है कि शत्रु से सम्बन्ध स्थापित करने पर बचना सम्भव है तो वह इसे स्वीकार कर लेता है। वह केवल दूसरा धर्म स्वीकार करना पसन्द नहीं करता और और जब यह स्थिति हो तो इस उपाय से कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता।

(१९१ अ) (३-४) यदि शत्रु उत्तम प्रकार के उपहार भेजने से संतुष्ट न हो तो उसके प्रतिष्ठित सहायकों, मित्रों तथा सेना-नायकों को गुप्त रूप से अत्यधिक धन सम्पत्ति भेजकर प्रलोभन दिलाना चाहिये और उसके द्वारा जो हानि हो रही हो उसका अन्त करा देना चाहिये। प्रसिद्ध तथा चुने हुए सहायक मित्र तथा सेना-नायक किसी भी अभियान में हृदय से बादशाह के मित्र नहीं होते और उसके विरुद्ध प्रयत्न किया करते हैं।

यदि शक्तिशाली शत्रु से बचना किसी प्रकार सम्भव न हो और युद्ध तथा शत्रु के

प्रतिष्ठित व्यक्तियों को मिला लेने से काम न चलता हो तो बादशाह को चाहिये कि राजधानी छोड़कर वह अन्य किसी प्रदेश में चला जाय। अपने राज्य के विशेष तथा योग्य व्यक्तियों को अपने साथ ऐसे स्थान पर ले जाना चाहिये जहाँ शत्रु का पहुंचना कठिन हो, यद्यपि अपने राज्य तथा इक़लीम से इस प्रकार चला जाना बड़ा कठिन होता है।

राज्य के ऊपर दुर्घटना की एक क़िस्म यह है कि बादशाह अपनी सेना तथा खज़ाने सहित अपनी राजधानी में निवास कर रहा हो और दो ओर से शत्रु उस पर आक्रमण करदें, उदाहरणार्थ पूर्व तथा पश्चिम से अथवा उत्तर तथा दक्षिण से। ऐसी अवस्था में बादशाह (१८१ ब) एक शत्रु से तो युद्ध कर सकता है किन्तु दो शत्रुओं से मुक़ाबला करने के लिये उसके पास पर्याप्त सेना नहीं होती। ऐसी अवस्था में बादशाह को बड़ी कठिनाई होती है। ऐसी स्थिति में बादशाह के लिये यह आवश्यक है कि यथा-सम्भव वह अपनी राजधानी तथा क़िले की रक्षा करे ताकि, यदि शत्रु युद्ध को त्यागकर आवश्यकतानुसार लौट जाय, बादशाह की राजधानी नष्ट न हो। इस प्रकार की दुर्घटनायें बहुत ही कम घटती हैं।

राज्य की दुर्घटना की एक क़िस्म यह है कि बादशाह किसी अभियान की तैयारी में व्यस्त हो और उसी समय कोई शत्रु उस पर आक्रमण करदे। ऐसी अवस्था में भी अपनी राजधानी तथा क़िले की रक्षा करनी चाहिये ताकि उसकी तथा उसकी प्रजा के विशेष व्यक्तियों की रक्षा हो सके।

अन्य प्रकार की दुर्घटनायें यह हैं कि बादशाह ने किसी अन्य प्रदेश को अपने अधिकार में कर लिया हो किन्तु उसके सहायक तथा सम्बन्धी उससे संतुष्ट न हों और सेनापति परस्पर विरोध करें। ऐसी दशा में यदि कोई शत्रु उसके राज्य पर आक्रमण करदे तो युद्ध करना उचित नहीं केवल अपनी रक्षा का प्रयत्न करना चाहिये। दुर्घटना की एक क़िस्म यह है कि (१८२ अ) कोई शत्रु तैयारी करके किसी बादशाह के राज्य पर आक्रमण करदे और उस बादशाह के पास इतना खज़ाना न हो कि उससे युद्ध कर सके। ऐसी अवस्था में प्रजा से युद्ध के लिये, चाहे उसकी इच्छा हो अथवा न हो, ऋण लेना चाहिये तथा युद्ध की तैयारी एवं शत्रु से मुक़ाबला करने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि शत्रु पहुंच जाय और उससे युद्ध करना सम्भव न हो तथा नई सेना की भरती के लिये धन भी एकत्र न किया जा सकता हो तो ऐसी अवस्था में समस्त प्रजा को सेना में भरती करना चाहिये।

महमूद के पुत्रों को समझना चाहिये कि महान् युद्धों में बहुत बड़ा खतरा होता है। इस प्रकार के बड़े युद्धों से राज्य को अत्यधिक हानि होती है। बुद्धिमान् लोगों ने कहा है कि यथा-सम्भव इस प्रकार के बड़े बड़े युद्धों में हाथ न डालना चाहिये। यह कोई बुद्धिमानी नहीं है कि अपने प्राण, राज्य, परिवार तथा धन सम्पत्ति को इन बड़े बड़े युद्धों के कारण (१८२ ब) खतरे में डाल दिया जाय। युद्ध तराजू के दो पल्लों के समान होता है। एक पल्ले का भारी होना, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो, उस पल्ले को भारी ही रखता है और संसार छिन्न-भिन्न हो जाता है, वंश तथा घरबार का विनाश हो जाता है और वे दूसरों के अधीन हो जाते हैं, प्रदेशों तथा इक़लीमों का समूल विच्छेदन हो जाता है तथा परिवार, जिनकी रक्षा के लिए मनुष्य इतना अधिक प्रयत्न करता है, शत्रुओं के हाथ में पड़ जाते हैं। दो बादशाहों के लिये इन महान् युद्धों में पराजय के समय भागने का भी मार्ग नहीं शेष रहता। सेनापतियों के युद्ध में यदि किसी एक पक्ष की पराजय हो जाती है तो राज्य हाथ से नहीं निकलता और केवल वही सेना पराजित तथा छिन्न भिन्न होती है। बादशाह की पराजय से संसार में लूट मार हो जाती है और किसी प्रकार से रक्षा का कोई मार्ग शेष नहीं रहता।

इस कारण कि महान् युद्धों में ग्राम परेशानी का भय होता है। बुजुर्गों ने कहा है कि महान् युद्धों से बचना चाहिये क्योंकि इनसे समस्त संसार का दूसरा ही रूप हो जाता है।

(१८३ अ) दार्शनिकों ने कहा है कि बादशाहों को युद्धों में अपनी सेना की अधिकता तथा शत्रु की सेना की कमी पर दृष्टि न रखनी चाहिये। कभी-कभी छोटी सेनायें बड़ी सेनाओं पर विजय प्राप्त कर लेती हैं। सेना की विजय ईश्वर के हाथ में है तथा भाग्य पर निर्भर है। ईश्वर के कामों में मनुष्य की बुद्धि का कोई स्थान नहीं होता।

[तारीख़े ख़्वारज़्मशाही से ख़लीफ़ा मोतसिम का उदाहरण]

अत्यधिक मान से बचना

(१८६ ब) हे महमूद के पुत्रो तथा मुसलमान बादशाहो! राज्य-व्यवस्था कृपा तथा दया एवं सुगमता-पूर्वक कार्य करने पर निर्भर है। जो बादशाह अपने राज्य वालों से सुगमता पूर्वक कार्य कराने की व्यवस्था करता है उसका राज्य सुव्यवस्थित रहता है और उसका गुण गान बहुत समय तक संसार में होता रहता है।

ईश्वर ने मनुष्य को हीन, दरिद्र, भिखारी तथा अन्य लोगों पर आश्रित बनाया है। वह प्रत्येक कार्य को सुगमतापूर्वक तथा आसानी से सम्पन्न कराना चाहता है। वह कठिनाई तथा परिश्रम से सर्वदा बचने का प्रयत्न करता है। यदि बादशाह ऐसे आदेश देने लगे जिनकी (१८७ अ) आदत प्रजा को न हो तो उससे प्रजा को बड़ा कष्ट होता है। प्रजा को भी उन आदेशों का पालन करना बड़ा कठिन प्रतीत होता है और प्रजा आज्ञाओं का उल्लंघन करने का प्रयत्न करने लगती है। इस कारण बादशाह प्रजा का शत्रु हो जाता है तथा प्रजा बादशाह की दुश्मन हो जाती है। राज्य-व्यवस्था में विघ्न पड़ने लगता है और चारों ओर विद्रोह तथा पाप दृष्टिगत होने लगते हैं।

बादशाह को राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों में ईश्वर का अनुसरण करना चाहिये कारण कि वह ईश्वर का प्रतिनिधि तथा ख़लीफ़ा होता है। ईश्वर ने धर्म में अतिशय का निषेध किया है और ऐसे आदेश दिये हैं जिनका पालन कठिन नहीं होता।

(१८६ ब) यदि बादशाह सर्वदा प्रजा की इच्छाओं का पालन करने लगे तो उसके राज्य के कार्यों में विघ्न पड़ जाता है और वे बड़ी बुरी दशा को प्राप्त हो जाते हैं। यदि बादशाह सर्वदा प्रजा के प्रति कठोरता प्रदर्शित करता रहे और उससे अत्यधिक आशायें रखे तो प्रजा उससे घृणा करने लगती है और उसकी शत्रु बन जाती है अतः बादशाह को मध्य का मार्ग ग्रहण करना चाहिये और अत्यधिक कठोरता न प्रदर्शित करनी चाहिये। जहां मलहम की आवश्यकता हो वहां मलहम का प्रयोग किया जाय और जहाँ जलाने की आवश्यकता हो वहाँ जलाया जाय ताकि राज्य सुव्यवस्थित हो सके।

[किताब शरहे अलसना से मुहम्मद साहब का उदाहरण]

बादशाह में विरोधाभासी गुणों की आवश्यकता

(१९३ अ) राज्य-व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध में दृढ़ता के लिये बादशाह में विरोधाभासी गुणों का होना परमावश्यक है। सुल्तान महमूद का कथन है कि 'हे महमूद के पुत्रो तथा हे मुसलमान बादशाहो! तुम्हें यह बात समझनी चाहिये कि ईश्वर ने मनुष्यों में विरोधाभासी गुण उत्पन्न किये हैं। यद्यपि ईश्वर ने मनुष्यों को बन-पशुओं के क्षेत्र से बाहर निकाल दिया है तथापि क्रोध, आतंक तथा अभिमान मनुष्य द्वारा भी प्रदर्शित होते रहते हैं। बादशाह

(१९३ ब) में प्रत्येक गुण (विरोधाभासी) बहुत सीमा तक पाया जाता है और उन विरोधाभासी गुणों के होते हुये भी वह ईश्वर का प्रतिनिधि तथा खलीफ़ा है। जिस प्रकार एक मनुष्य का रूप रंग दूसरे के रूप रंग से भिन्न होता है उसी प्रकार एक मनुष्य का स्वभाव भी दूसरे मनुष्य से भिन्न होता है। प्रत्येक के गुण तथा अवगुण अलग अलग होते हैं। किसी मनुष्य में गुणों की प्रधानता हुई है तो किसी में अवगुणों की; किसी में अवगुणों की इतनी अधिक (१९४ अ) प्रधानता होती है कि उसमें गुण बिल्कुल नहीं रहते। इस प्रकार अनेकों उदाहरण हैं।

बादशाह जो सभी का हाकिम तथा शासक है, में क्रोध तथा कृपा, ऐश्वर्य तथा दया, कठोरता तथा नम्रता, अभिमान तथा आश्रय जो एक दूसरे के विरुद्ध गुण हैं, पूर्ण रूप से विद्यमान होने चाहिये। यदि बादशाह में केवल क्रोध ही हो और दया न हो तो आज्ञाकारी (१९४ ब) प्रजा की क्या दशा हो जायगी। यदि उसमें केवल दया ही दया हो और कठोरता न हो तो विद्रोही, विरोधी, उपद्रवी तथा अवज्ञाकारी, विरोध तथा विद्रोह एवं अवज्ञा से बाज नहीं आ सकते और आज्ञा-पालन नहीं कर सकते। कठोरता के स्थान पर बादशाह को दया न प्रदर्शित करनी चाहिये और न दया के स्थान पर कठोरता।

ईश्वर का प्रतिनिधि एवं खलीफ़ा होने के योग्य वही व्यक्ति होता है जिसमें स्वाभाविक रूप से विरोधाभासी गुण पाये जाते हों। इस प्रकार यह गुण केवल ईश्वर की देन द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं।

[*ख़लीफ़ा उमर का उदाहरण*]

(२०६ ब) हे महमूद के पुत्रो! तुम्हें समझना चाहिये कि बादशाहों को धर्म तथा संसार से सम्बन्धित जो कष्ट पहुँचते हैं वे उनके सहायकों, मित्रों तथा विश्वासपात्रों के कारण पड़ते हैं। वे अपने राज्य पर अभिमान करते हुए अयोग्य लोगों को पद प्रदान करने में सावधानी से कार्य नहीं करते। कमीने तथा बदअस्लों की निष्ठा के कारण वे अंधे हो जाते हैं तथा अपने भविष्य के विषय में कोई विचार नहीं करते। ईश्वर की देन अर्थात् राज्य-व्यवस्था में अयोग्य लोगों को सम्मिलित कर लेते हैं; इससे उन्हें इस लोक तथा परलोक में कठिनाई होती है।

(२०७ अ) दार्शनिकों का कथन है कि बादशाह के सहायकों, निकटवर्तियों तथा विश्वासपात्रों के गुण एवं अवगुण बादशाह के गुणों तथा अवगुणों को प्रमाणित करते हैं। उत्कृष्ट बादशाह किसी पतित को अपना विश्वासपात्र तथा सहायक नहीं बनाता। इसी प्रकार तुच्छ बादशाह किसी गुणवान को अपना सहायक तथा विश्वासपात्र नहीं नियुक्त करता। (२०७ ब) गुण तथा अवगुण एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं। गुणवान किसी कमीने को तथा कमीना किसी शरीफ को नहीं चाहता और दोनों एक दूसरे को अपना शत्रु समझते हैं।

बादशाह तथा प्रभुत्व

(२१४ अ) बादशाही का अर्थ प्रभुत्व है चाहे कोई व्यक्ति किसी इक़लीम पर जबरदस्ती आक्रमण करके प्रभुत्व प्राप्त कर ले चाहे वह उसका अधिकारी हो चाहे मुतग़ल्लिब हो, चाहे उसका कोई अधिकार न हो। प्रभुत्व के कारण वह बादशाह कहलाता है। यदि बादशाह के पुत्रों, विश्वासपात्रों, स्त्रियों तथा दासी दासों में से कोई अधिकार प्राप्त करले और बादशाह के लिये उनकी बातों तथा इच्छाओं का उल्लंघन सम्भव न हो तो प्रभुत्व का विषय उलटा ही हो जाता है। आदेश देने वाला, आदेश पालन करने वाला तथा प्रभुत्वशाली, सेवक बन जाता है। राज्य में प्रजा के गुण उत्पन्न हो जाते हैं। यदि कोई बादशाह पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करले

तो इससे उसका अन्त नहीं हो जाता। बादशाह पर, धर्म तथा मजहब के विरुद्ध बातें सिखाने वालों, जादू, कीमिया, कामुक औषधियों की शिक्षा देने वालों को प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है। बादशाहों को वे प्रभावित कर लेते हैं और अपने धर्म का प्रचार करने लगते हैं। बादशाह को भी मार्ग भ्रष्ट कर देते हैं।

[ख़लीफ़ा उस्मान का उदाहरण]

बादशाह की रुचि

(२३३ अ) प्राचीन दार्शनिकों ने लिखा है कि बादशाह के गुणों तथा अवगुणों का प्रभाव उसकी प्रजा पर पड़ता है। बादशाह के गुणों का प्रभाव प्रजा पर पड़ता है चाहे वह आदेश दे अथवा न दे।·········यदि बादशाह किसी कला से विशेष रुचि रखता है तो राज्य (२३३ ब) के समस्त विशेष व्यक्ति उस कला में निपुणता प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगते हैं। यदि बादशाह स्वयं एबादत करता है तो समस्त व्यक्ति, जिनमें मनुष्यता होती है, एबादत करने लगते हैं। यदि बादशाह को सुलेख से रुचि होती है तो समस्त विशेष व्यक्ति सुलेख सीखने लगते हैं। यदि बादशाह को कविता से रुचि होती है तो सभी लोग कविता करने लगते हैं। यदि बादशाह आलिम होता है तो चाहे वह रोटी अथवा अदरार का प्रबन्ध करे या न करे, लोग इल्म हासिल करने लगते हैं। इसी प्रकार अवगुणों के विषय में भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है। यदि बादशाह झूठ बोलता तथा झूठ को पसन्द करता है तो उसके राज्य के समस्त व्यक्ति झूठ बोलने लगते हैं। यदि बादशाह मदिरापान करता है तो सभी लोग मदिरापान करने लगते हैं।

बादशाही के लिये शर्त

(२३४ अ) बादशाही के लिये न्यूनतम शर्त यह है कि वह दुराचार में ग्रस्त न हो। वास्तव में बादशाह ख़ुदा का नायब तथा खलीफ़ा होता है। इतने उत्कृष्ट पद को दुराचार से मिश्रित न करना चाहिये।

झूठ बड़ा सरल कार्य है और वासना के अनुकूल है। बादशाही को सम्मान सत्य बोलने से ही प्राप्त होता है। प्रजा के गुण बादशाह के गुणों से बढ़ कर न होने चाहिये। सिकन्दर ने अपनी शिक्षा में बताया है कि वह भी कोई बादशाह है जो झूठ बोले अथवा कोई अन्य उसके समक्ष झूठ बोल सके?

दूसरा अवगुण जो बादशाही के गुणों से नहीं मिश्रित हो पाता परिवर्तन है। परिवर्तन का अर्थ अपने वचन तथा कर्म से फिर जाना है। आलिमों तथा बुद्धिमानों के अनुसार बादशाही के लिये दृढ़ता परमावश्यक है। यही बादशाहों का आभूषण है। परिवर्तन इसके विरुद्ध है। क्योंकि दृढ़ता बादशाही का गुण है अतः वह परिवर्तनशील बादशाहों के योग्य नहीं होता।

(२३५ ब) यदि बादशाह किसी अधिकार के बिना राजसिंहासन पर आरूढ़ हो जाता है तो प्रजा को उसके वचन तथा कर्म पर कोई विश्वास नहीं रहता। बादशाही केवल विश्वास का नाम है। विश्वास के समाप्त हो जाने के उपरान्त बादशाही का कोई मूल्य नहीं रहता। बादशाहों ने कहा है कि बादशाही का प्रभाव या तो वचन से होता है या कर्म से। यदि बादशाह अपने कर्म तथा वचन पर दृढ़ नहीं रहता तो उसकी बातें पर्वत के समान दृढ़ नहीं रहतीं।

(२३६ ब) तीसरा अवगुण जिसका मेल बादशाही के गुणों से नहीं हो पाता विश्वासघात तथा छल है। विश्वासघात ईश्वर के भय तथा नम्रता के अभाव से उत्पन्न होता है।

छल, झूठ द्वारा उत्पन्न होता है। बादशाही विश्वासघात तथा छल द्वारा, जो बहुत बड़े अवगुण हैं स्थापित नहीं रह सकती। बड़े-बड़े बादशाह, शत्रुओं से युद्ध के समय विश्वासघात तथा छल करने का घात लगा कर बैठने तथा रात्रि में छापा मारने का आवश्यकतानुसार प्रयत्न किया करते हैं किन्तु वे उस पर गर्व नहीं करते।

(२३७ अ) चौथा अवगुण ग़ुज़ूबी है। ग़ज़ब[1] तथा ग़ुज़ूबी में बड़ा अन्तर है। यदि ग़ज़ब का समय पर प्रयोग हो तो उसे मनुष्य के उत्कृष्ट गुणों में समझा जाता है। ग़ुज़ूबी (२३७ ब) अवगुण इस कारण है कि ग़ज़ब मध्य का मार्ग है और ग़ुज़ूबी अन्तिम सीमा है। मध्य का मार्ग ही गुण कहा जा सकता है। बिना किसी योजना के अत्यधिक दान अपव्यय है और दान का पूर्णतः अभाव कंजूसी है। दान मध्य का मार्ग है। यदि मनुष्य में ग़ज़ब न हो तो उसे दुष्टों से मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती तथा निषिद्ध कार्यों को सम्पन्न होते हुये देखकर उसे क्रोध नहीं आता और वह शरा के आदेशों का पालन नहीं करा सकता।

(२३८ अ) पांचवां अवगुण, जिसका मेल बादशाही के गुणों से नहीं हो सकता और यदि उसका मिश्रण भी हो जाय तो उससे अव्यवस्था एवं अशान्ति उत्पन्न हो जाती है, अत्याचारियों को प्रोत्साहन देना है। यदि बादशाह अत्याचारियों को सम्मानित करे और उनको प्रोत्साहन दे, अपना विश्वासपात्र बनाये तो वह समस्त राज्य वालों पर अत्याचार करेगा। अत्याचारियों को प्रोत्साहन देना समस्त अत्याचारों से बढ़ कर है। उसके द्वारा अत्याचारियों को प्रोत्साहन देने से समस्त संसार में अत्याचार प्रसारित हो जाता है। यदि बादशाह अत्याचारी न हो तथा उसके (२३९ ब) स्वभाव में अत्याचार न हो तो वह अत्याचार को कदापि प्रोत्साहन नहीं दे सकता और न सम्मान प्रदान कर सकता है। बादशाह के न्याय का स्पष्ट चिह्न यह है कि वह अत्याचार को अपना शत्रु समझे और अत्याचारी को उससे बढ़कर शत्रु समझे। सर्वदा अत्याचार तथा अत्याचारियों के विनाश हेतु कटिबद्ध रहे।

---

१ आतंक।

फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही

[लेखक—सुल्तान फ़ीरोज़ शाह]

[प्रकाशन—अलीगढ़ विश्वविद्यालय]

(१) ईश्वर को बहुत बहुत धन्य है कि मुझ तुच्छ फ़ीरोज़ बिन (पुत्र) रजब को जो मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह का दास है सुन्नत के पुनरुत्थान, बिदअतों के निराकरण, निषिद्ध के खंडन तथा हराम बातों के रोकने और (इस्लाम के लिये बताई गई) अनिवार्य बातों को करने की शक्ति प्रदान की। मुहम्मद साहब को, जो अनुचित प्रथाओं तथा रवाजों को समाप्त करने के लिए भेजे गये, तथा उनकी संतान एवं मित्रों को, जिनके परिश्रम से अज्ञानता के काल की प्रथाओं का अन्त हो गया, असंख्य स्वर्गीय वरदान प्राप्त थे।

(२) क्योंकि वास्तविक प्रदान करने वाले (ईश्वर) के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी परमावश्यक है और देनों का उल्लेख करना उसके प्रति आभार प्रदर्शन करने के समान है, मानव जाति के नेता को देनों का उल्लेख करने का आदेश हुआ है (ईश्वर का आशीर्वाद उन पर हो) अतः इस दीन तथा तुच्छ प्राणी ने जिसे ईश्वर ने अत्यधिक नेमतें प्रदान की हैं, उन सब देनों के प्रति मनुष्य की शक्ति के अनुसार कृतज्ञता प्रकट करना आवश्यक समझा। इस प्रकार मुझे आशा है कि मैं ईश्वर के कृतज्ञ दासों में सम्मिलित हो सकूँगा।

महान् ईश्वर की देनों में से एक यह है कि बिदअतें[1] तथा शरा की अवज्ञा हिन्दुस्तान में प्रचलित हो गई थीं। यह बातें लोगों की आदत एवं स्वभाव में प्रविष्ट हो गई थी, लोग उत्कृष्ट सुन्नत[2] का उल्लंघन कर रहे थे। ईश्वर ने इस तुच्छ को इस योग्य बनाया कि उसने बिदअतों का निराकरण, (शरा द्वारा) अस्वीकृत बातों का विनाश, तथा हराम[3] बातों का खंडन अपने लिये अनिवार्य कर लिया और विशेष प्रयत्न द्वारा ईश्वर की सहायता से झूठी प्रथाओं तथा शरा[4] के विरुद्ध रीति रवाजों का पूर्णतः अन्त कर दिया और सत्य असत्य से पृथक् हो गया।

१—प्रथम यह कि भूतकाल में मुसलमानों का अत्यधिक रक्तपात होता था और उन्हें दारुण पीड़ा पहुँचाई जाती थी : (उसके नियम ये थे) हाथ पाँव, नाक, कान काट कर, आंखें निकाल कर, लोगों के गले में पिघला हुआ सीसा डाल कर, हाथ पाँव की हड्डियाँ हथौड़े द्वारा तोड़ कर, शरीर को अग्नि द्वारा जलाकर, हाथ पाँव तथा सीने में खूंटे ठोक कर खाल खींच कर, लोहे की कीलें लगे हुये कोड़ों द्वारा पिटवा कर, पाँव की नस काट कर मनुष्य को आरे से दो टुकड़े करके तथा अन्य विधियों से शरीर के अंग भंग करके। महा दयालु

१ धर्म में उन नई नई बातों का सम्मिलित करना जिनकी स्वीकृति धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार न हो।

२ मुहम्मद साहब का दर्शाया हुआ मार्ग।

३ वे बातें जिनकी स्वीकृति इस्लाम में न हो।

४ इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार नियम।

परमेश्वर ने इस दया के अभिलाषी दास को इस योग्य बना दिया कि उसने मुसलमानों का व्यर्थ रक्तपात न करना तथा दारुण पीड़ा न पहुँचाना एवं किसी मनुष्य के शरीर के अंगों को न कटवाना निश्चय कर लिया।

छन्द

(३) 'मैं किस प्रकार इस देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ,
कारण कि मुझ में लोगों को कष्ट पहुँचाने की शक्ति नहीं।'

यह सब इस कारण किया जाता था कि लोगों के हृदय पर आतंक छा जाय और लोगों के दिल में भय आरूढ़ हो जाय तथा राज्य के कार्यों का संचालन होता रहे। यह बात लोगों ने लोकोक्ति बना रक्खी थी।

छन्द

'यदि तू राज्य को स्थायी रखना चाहता है,
तो तुझे तलवार को बेचैन रखना पड़ेगा[1]।'

इस तुच्छ के ऊपर ईश्वर की जो अनुकम्पा है, उसके फलस्वरूप उन कठोरताओं तथा आतंकमयी बातों का स्थान कृपा एवं दया ने ले लिया है। ख़ास व आम के हृदय में डर और भय पहले से अधिक बढ़ गया है। हत्या, क़त्ल, पीड़ा पहुँचाने, वेदना एवं कठोरता की आवश्यकता नहीं; यह वरदान परमेश्वर की अनुकम्पा के बिना प्राप्त नहीं हो सकता।

पद्य

"कृपा कर, यदि तुझे अधिकार प्राप्त है,
कारण कि क्षमा, क्रोध से उत्कृष्ट है।
तुझे ईश्वर ने जो गौरव प्रदान किया है,
मृत्यु-दंड में शीघ्रता से कार्य करना भूल है।
यदि सर्वप्रथम हत्या कराने के पूर्व प्रतीक्षा कर लेगा,
तो तू मुक्त करने के उपरान्त भी हत्या करा सकेगा।
यदि शरीर छिन्न भिन्न हो गया,
तो फिर तेरे आदेशानुसार जीवित नहीं हो सकता।
(४) तू यह देख कि दयालु माता ने,
अपने उस बालक के कारण कितना कष्ट भोगा होगा।
यह मत कह कि युद्ध में मैंने १०० मनुष्यों की हत्या करदी,
किसी एक को जीवन देले तब अपने आपको मर्द कह।
जब तू अपने लिये एक चीरे को भी उचित नहीं समझता,
तो दूसरे की गर्दन पर तलवार मत चला।
इस बात का प्रयत्न मत कर कि किसी का रक्त बहे,
इसलिये कि प्राण निकल जाने के उपरान्त पुनः लौट नहीं सकते।
लोगों का रक्तपात करके उपद्रव का मित्र मत बन,
तेरी त्वचा में भी तो आख़िर रक्त है।

---

१ तलवार का सर्वदा प्रयोग करना पड़ेगा।

वे नेता हज़ारों प्रशंसा के पात्र हैं,
जो बुज़ुर्गों के समक्ष रक्तपात का प्रयास नहीं करते।
आकाश के डोल से उसी को जल प्राप्त हो सकता है,
जो हत्या कराने में शीघ्रता से कार्य नहीं करता।
जब शत्रु पतित हो जाय तो उससे नेकी कर,
अपने साहस के अनुसार प्राण का दान कर।"

ईश्वर की अनुकम्पा से मैंने यह निश्चय कर लिया कि मुसलमानों का रक्त एवं मौमिन[1] की मान मर्यादा पूर्ण रूपेण सुरक्षित रहे। जो कोई शरा के मार्ग से विचलित हो जाय उससे किताब (कुरान) के आदेश तथा क़ाज़ी के न्याय के अनुसार व्यवहार किया (५) जाय। ईश्वर को धन्य है कि उसने मुझे इस कार्य के योग्य बनाया।

२—परमेश्वर की मेरे प्रति दूसरी अनुकम्पा यह है कि भूतकाल के जिन सुल्तानों की उपाधियाँ (नाम) शुक्रवार तथा दोनों ईदों के ख़ुत्बों से पृथक् कर दी गई थीं और जिन मुसलमान बादशाहों के नाम, जिनकी वीरता तथा साहस के आशीर्वाद से काफ़िरों के प्रदेशों पर विजय प्राप्त हुई और इस्लाम की पताकाओं को प्रत्येक प्रदेश में विजय मिली, मूर्तियों के मन्दिरों का खंडन हुआ, मस्जिदें एवं मिम्बर[2] आबाद तथा उत्कृष्ट हुये, और कलमये तैयिबा[3] का प्रचलन हुआ, मुसलमान शक्ति शाली तथा हरबी[4] ज़िम्मी[5] बने, पूर्णतः भुला दिये गये थे, उनके विषय में मैंने आदेश दिया कि प्राचीन प्रथानुसार उनकी उपाधियों तथा गुणों का उल्लेख किया जाया करे और ईश्वर से उनके लिये मुक्ति की प्रार्थना की जाया करे।

छन्द

'यदि तू अपने नाम को स्थायी बनाना चाहता है,
तो बुज़ुर्गों के उत्कृष्ट नाम को मत छिपा।'

(३) सच्चे पथ प्रदर्शक की दूसरी देन इस प्रकार है कि भूतकाल से अनाधिकृत कर जो शरा के विरुद्ध एवं हराम होते थे बैतुल माल[6] में एकत्र किये जाते थे, अर्थात् मन्डवी बर्ग[7], दलालते बाज़ारहा,[8] जज़ारी,[9] अमीरे तरब,[10] गुल फ़रोशी,[11] जिज़ययेतम्बोल,[12]

१ धर्म-निष्ठ मुसलमान।
२ मस्जिद का मंच।
३ इस्लामी कलमा (वाक्य) जिसमें ईश्वर के एक होने तथा मुहम्मद साहब के ईश्वर के दूत (रसूल) होने का उल्लेख है।
४ जो इस्लामी राज्य के विरुद्ध युद्ध कर रहे हों।
५ जिन लोगों को इस्लामी राज्य की विजय के उपरान्त ग़ैर मुस्लिमों को जिज़या अदा करने पर रक्षा का आश्वासन दिया जाता। वे लोग ज़िम्मी कहलाते थे।
६ इस्लामी राजकोष।
७ तरकारियों पर कर।
८ बाज़ार के क्रय-विक्रय पर दलाली का कर।
९ यह कर कसाइयों से १२ जीतल प्रति गाय के हिसाब से लिया जाता था।
१० मनोरंजन पर कर।
११ फूलों के विक्रय पर कर।
१२ पान पर कर।

चुंगिये ग़ल्ला[1], किताबी[2], नील गरी[3], माही फ़रोशी[4], नद्दाफ़ी[5], साबुन गरी[6], रीसमान फ़रोशी[7], रोग़न गरी[8], नख़बद बिरियाँ[9], तह बाज़ारी, व छत्ता[10], व क़िमार ख़ाना,[11] दाद बेगी[12], कोतावली[13], एहतेसाबी,[14] क़स्साबी,[15] कूज़ा व (६) ख़िश्त पुज़ी,[16] करही[17] व चराई[18] तथा मुसादेरात:[19] मैंने इन सब को पंजिकाओं तथा दीवान से पृथक् कर देने का आदेश दे दिया। विलायत[20] के आमिलों[21] के विषय में मैंने आदेश दे दिया कि जो कोई ये कर लोगों से लेगा तथा एकत्र करेगा वह दण्ड का पात्र होगा।

छन्द

'मित्रों के हृदय को सन्तुष्ट रखना ख़ज़ाने से अच्छा है।
ख़ज़ाने को रिक्त रखना लोगों को कष्ट पहुँचाने से अच्छा है।'

जो धन बैतुलमाल में एकत्र हो, वह उन्हीं साधनों से हो जिनका मुहम्मद साहब की शरा में उल्लेख है और जो धार्मिक (इस्लामी) पुस्तकों द्वारा प्रमाणित हों। एक भूमि के ख़राज द्वारा—उश्र[22] तथा ज़कात[23]; दूसरे हिन्दुओं से जिज़ये द्वारा; इसके अतिरिक्त मृत की

१ अनाज पर चुंगी।
२ पुस्तकें नक़ल करने वालों पर कर। यदि इसे कबाबी पढ़ा जाय तो कबाब बेचने वालों पर कर।
३ नील पर कर, पुस्तक में बेल है।
४ मछली बेचने पर कर।
५ धुनियों पर कर।
६ साबुन बनाने पर कर।
७ रस्सी बेचने पर कर।
८ तेल बनाने पर कर।
९ भुने चने पर कर।
१० दुकानदारों से सरकारी भूमि के प्रयोग पर कर। यदि इसे चप्पा पढ़ा जाय तो 'छपाई कर'।
११ जुआ घरों पर कर।
१२ मुक़दमों पर कर।
१३ नगर में लगने वाले कुछ कर।
१४ मुहतसिब के कारण कर।
१५ क़साइयों पर कर जो जज़ारी से भिन्न होता था।
१६ कुम्हारों पर बर्तन तथा ईंट पकाने के सम्बन्ध में कर।
१७ घरों पर कर।
१८ पशुओं के चराने पर कर।
१९ विभिन्न प्रकार के जुर्माने।
२० प्रदेशों।
२१ कर वसूल करने वालों।
२२ उश्र : इस्लामी राज्य में मुसलमानों की कृषि योग्य भूमि को उश्री भूमि कहते थे। इस भूमि में कुएँ आदि से सिंचाई के बिना जो अनाज पैदा होता था उस पर पैदावार का १/१० लगान के रूप में लिया जाता था। जिस भूमि को सींचने की आवश्यकता होती थी उस पर पैदावार का १/२० लगान के रूप में लिया जाता था। उश्री भूमि के लगान को उश्र कहते थे।
२३ एक प्रकार का कर जो मुसलमानों को अपनी धन सम्पत्ति पर अदा करना होता है। यह कर इस्लामी राज्य में भी केवल मुसलमानों ही से लिया जाता था। जिन वस्तुओं पर ज़कात ली जाती है वे निम्नलिखित हैं : सोना, चाँदी, पशु, व्यापारिक सामग्री इत्यादि। ज़कात लागू करने के लिये प्रत्येक वस्तु के लिये साल भर में एक निश्चित संख्या का एकत्र रहना आवश्यक है। इसे निसाब कहते हैं। निसाब से कम धन-सम्पत्ति पर ज़कात नहीं ली जा सकती।

छोड़ी हुई सम्पत्ति, युद्ध में लूट के धन का ख़ुम्स[1], खानों से प्राप्त धन का ख़ुम्स; जिस कर का एकत्र करना किताब (क़ुरान) के आदेशानुसार किसी प्रकार उचित न हो उसे किसी प्रकार बैतुलमाल के धन में जमा न किया जाय।

४—इसके अतिरिक्त बिदअत के कारण ऐसी प्रथा तथा आदत हो गई थी कि युद्ध के लूट के धन से चार भाग दीवान में जमा कर लिया जाता था और एक भाग युद्ध करने वालों को दिया जाता था। शरा का आदेश यह है कि पाँच में से एक भाग बैतुलमाल में जमा किया जाय तथा शेष चार भाग युद्ध करने वालों को दे दिये जायँ। इस आदेश का पूर्णतः उलटा होने लगा था। क्योंकि वितरण शरा के आदेशानुसार न होता था, अतः युद्ध की लूट की इस सम्पत्ति को जो कोई अपने अधिकार में कर लेता था, वह हराम कार्य करता था। इस प्रकार से प्राप्त कनीज़[2] जिस बालक को जन्म देती थी, वह व्यभिचार द्वारा उत्पन्न समझा जाता था। इसकी समाप्ति के लिये मैंने यह आदेश दिया कि पाँचवाँ भाग बैतुलमाल में जमा किया जाय और शेष चार भाग युद्ध करने वालों को दिये जायँ।

५—(७) शाआ[3] धर्म वाले, जो राफ़ज़ी[4] कहलाते हैं, लोगों को रिफ़्ज़ तथा शीआ धर्म की ओर आमंत्रित करते थे। वे इस धर्म पर पुस्तकें लिख कर उनकी शिक्षा दिया करते थे। खुलफ़ाये राशेदीन,[5] उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा[6] तथा समस्त बड़े-बड़े सूफ़ियों के विषय में खुल्लम खुल्ला अपशब्द तथा दुर्वचन कहते थे। वे बाल-मैथुन करते तथा क़ुरान के विषय में कहा करते थे कि इसे उस्मान ने अनधिकृत रूप से संकलित कर लिया है। मैंने उन सब को बन्दी बना लिया। उनका मार्ग-भ्रष्ट होना तथा उनको अन्य लोगों का मार्ग-भ्रष्ट करना प्रमाणित हो गया। जो लोग बड़े कट्टर थे, उनका मैंने बध करा दिया। अन्य लोगों के प्रति, दण्ड देकर, भय दिला कर, खुले आम अनादर करके, कठोरता दिखाई। उनकी पुस्तकों को खुले आम जलवा डाला। इस प्रकार ईश्वर की कृपा से इन लोगों का उपद्रव पूर्णतः शान्त हो गया।

६—इसके अतिरिक्त मुलहिदों[7] तथा एबाहतियों के समूह एकत्र हो गये थे। वे लोगों को इलहाद तथा एबाहत की ओर आमंत्रित करते थे। वे रात्रि में एक निश्चित स्थान पर एकत्र होते थे। उसमें महरम[8] तथा ग़ैर महरम[9] लोग होते थे। भोजन तथा मदिरा लाई जाती। वे इसे एबादत कहते थे। वे एक मूर्ति बनाकर लोगों को उसके समक्ष

---

१ युद्ध में लूट द्वारा प्राप्त धन सम्पत्ति का पाँचवाँ भाग ख़ज़ाने में तथा शेष चार भाग मुसलमान सैनिकों को मिलने चाहिये।

२ दासी।

३ इस्लाम धर्म की एक मुख्य शाखा। ये लोग मुहम्मद साहब के उपरान्त अली को ख़लीफ़ा (मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी) समझते हैं और प्रथम तीन ख़लीफ़ाओं को अपहरणकर्त्ता समझते हैं।

४ शीओं की समस्त शाखाओं के लिये सामान्यतः राफ़ज़ी शब्द का प्रयोग होता है।

५ अबू बक्र, उमर तथा उस्मान प्रथम तीन मुहम्मद साहब के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी)।

६ अबू बक्र की पुत्री तथा मुहम्मद साहब की पत्नी। जिस समय अली ख़लीफ़ा हुये तो आयशा तथा अली से खुल्लम खुल्ला युद्ध होने लगा। शीआ इस कारण आयशा के ख़ास तौर पर विरोधी हैं। आयशा को उम्मुल मोमिनीन अथवा धर्मनिष्ठ मुसलमानों की माता कहा जाता है।

७ ये शब्द नास्तिकों, अधर्मियों आदि के लिये प्रयोग में आते थे और इनकी ठीक परिभाषा सम्भव नहीं।

८ ऐसे सम्बन्धी जिनसे मुसलमान स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं तथा जिनसे विवाह करने की अनुमति नहीं।

९ दूर के सम्बन्धी तथा अन्य लोग जिनसे मुसलमान स्त्रियाँ पर्दा करती हैं और जिनसे विवाह हो सकता है।

सिज्दा कराते थे। एक दूसरे की पत्नियों, माताओं तथा बहिनों से, जो उस रात्रि में एकत्र (८) होती थीं और जिनके वस्त्र उनमें से किसी के हाथ में आजाते, व्यभिचार करते थे। मैंने उनके नेताओं का, जो शीआ थे, बध करा दिया। अन्य लोगों को या तो बन्दी-गृह में डाल दिया या देश से निकाल दिया अथवा कठोर दंड दिये। इस प्रकार इस्लामी राज्य से उनकी दुष्टता का पूर्णतः अन्त हो गया।

७—इसके अतिरिक्त एक समूह नास्तिकता, त्याग एवं तजरीद[1] के वस्त्र में लोगों को मार्ग-भ्रष्ट करता था। वे अपने चेले बनाते थे तथा कुफ़ के वाक्य कहते थे। उन मार्ग-भ्रष्टों का मुरशिद[2] अहमद बिहारी[3] थी। वह शहर (देहली) में रहता था। बिहार के कुछ लोग उसे ईश्वर कहते थे। उस समूह को बन्दी बना कर तथा ज़ंजीर में जकड़ कर हमारे निकट लाया गया। (बताया गया) कि वह मुहम्मद साहब के विषय में अपशब्द कहता है। उसका कथन है कि "जिसके नौ पत्नियाँ हों, वह किस प्रकार नबी हो सकता है?" उसका एक चेला कहा करता था कि "देहली में ईश्वर प्रकट हुआ है अर्थात् अहमद बिहारी।" जब उनके विषय में इस बात का प्रमाण मिल गया तो मैंने दोनों को बन्दी बनाकर तथा बेड़ियों में जकड़वा करदंड दिया। अन्य लोगों को तोबा करने तथा इस प्रकार का कार्य पुनः न करने की प्रतिज्ञा करने का आदेश दिया। इनमें से प्रत्येक को पृथक्-पृथक् नगरों में इस आशय से भेज दिया कि उन लोगों की दुष्टता का प्रभाव समाप्त हो जाय।

८—इसके अतिरिक्त देहली में रुक्न नामक एक व्यक्ति ने महदी की उपाधि धारण करली थी और कहता था कि "मैं महदी आख़िरुज़् ज़मा[4] हूँ।" मुझे दैवी ज्ञान प्राप्त है। मैंने किसी से शिक्षा नहीं प्राप्त की है। समस्त प्राणियों के नाम जिनका ज्ञान आदम नबी के (९) अतिरिक्त किसी पैग़म्बर को नहीं प्राप्त है वह मुझे ज्ञात है। हुरूफ़[5] के ज्ञान का रहस्य जो किसी को ज्ञात नहीं मुझे ज्ञात है।" उसने इस विषय पर पुस्तकों की रचना की और लोगों को इस कुमार्ग पर ले जाने के लिये आमंत्रित किया करता था और कहता था, "रुक्नुद्दीन रसूल अल्लाह मैं हूँ।" मेरे समक्ष मशायख़[6] ने गवाही दी कि वह इस प्रकार कहता था और हमने उससे सुना है। जब वह मेरे समक्ष लाया गया तो मैंने उसके मार्ग-भ्रष्ट होने तथा अन्य लोगों को मार्ग-भ्रष्ट करने के विषय में प्रश्न किया। दीन[7] के आलिमों ने कहा, "वह काफ़िर हो गया है और उसका बध करा देना उचित है। उसके दुष्ट व्यक्तित्व के कारण यह दुष्टता तथा उपद्रव इस्लाम तथा सुन्नियों में उत्पन्न हो गया है। यदि इसके विनाश में विलम्ब हुआ तो ईश्वर न करे; इसका ऐसा प्रभाव होगा कि बहुत से मुसलमान मार्ग-भ्रष्ट हो जायँगे

१ ब्रह्मचर्य।

२ गुरु।

३ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी, जो एक प्रसिद्ध सूफ़ी थे, के अनुसार अहमद बिहारी देखने में पागल ज्ञात होता था। वह प्रायः यहया मनेरी के पास जाकर एकेश्वरवाद के गूढ़ प्रश्न पूछा करता था। कभी-कभी वह बड़ी महत्वपूर्ण बातें किया करता था। शेख़ यहया से उसके सम्बन्ध बड़े अच्छे थे। कभी-कभी हर्षोन्माद में वह ऐसे वाक्य कहा करता था जिसे जन-साधारण समझ न पाते थे। जब अहमद बिहारी के बध कराने के समाचार शरफ़ुद्दीन को प्राप्त हुये तो उन्होंने कहा, 'मुझे आश्चर्य ही होगा, यदि यह नगर जहाँ ऐसे लोगों का रक्त बहाया जाय बहुत समय तक सम्पन्न रह सके।'

४ वह महदी जिनके प्रकट होने के उपरान्त संसार का अंत हो जायगा और क़यामत आ जायगी।

५ अक्षरों का ज्ञान। ईश्वर की महानता से सम्बन्धित शब्दों का ज्ञान।

६ सूफ़ियों के नेता।

७ इस्लाम।

और इस्लाम धर्म त्याग देंगे। उसके द्वारा ऐसा उपद्रव उठ खड़ा होगा कि उसके कारण बहुत से मनुष्य नष्ट हो जायँगे।"

मैंने आदेश दिया कि "बड़े-बड़े आलिमों की एक सभा में उसकी दुष्टता एवं उसके उपद्रव तथा उसके द्वारा लोगों को मार्ग-भ्रष्ट करने के सम्बन्ध में घोषणा कराई जाय और यह बात हर ख़ास व आम के कानों तक पहुँचाई जाय तथा दीन के आलिमों और शरीअत के इमामों[1] के फ़तवों के अनुसार जो उचित दण्ड हो वह दिया जाय। उसे तथा उसके भक्तों, चेलों तथा सहायकों की हत्या करा दी जाय।" सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों ने पहुंच कर उसका माँस, खाल तथा शरीर के अङ्ग भङ्ग कर दिये और उसकी दुष्टता का इस प्रकार अन्त हो गया और लोगों के लिये चेतावनी हो गई। ईश्वर की सहायता इस तुच्छ दास को इन दुष्टताओं के निराकरण तथा बिदअतों के खण्डन हेतु प्राप्त रही तथा मुझे सुन्नत के पुनुर्त्थान की शक्ति प्राप्त हुई। मेरा उद्देश्य परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है। जिस किसी को (१०) अपने धर्म को ठीक रखने की अभिलाषा है वह इन हराम बातों को सुनकर तथा पढ़ कर सन्मार्ग पर आजाय ताकि उसे पुण्य प्राप्त हो सके। मैं लोगों के पथ-प्रदर्शन के कारण पुण्य की आशा रखता हूँ। ईश्वर ही हमें पुण्यकृत में सहायता देता है।

९—इसके अतिरिक्त ऐने माहरू के एक मौला ज़ादे[2] ने गुजरात में अपने आप को शेख़[3] बना लिया था। वह लोगों को अपना मुरीद (चेला) बनाया करता था और अनल हक़[4] कहा करता था। उसने अपने चेलों को आदेश दे दिया था कि जब वह "अनल हक़" कहे तो वे लोग उत्तर दें "तू ही है, तू ही है।" वह कहा करता था "मैं ही वह महान् शक्ति हूँ जिसे मृत्यु नहीं।" उसने एक पत्रिका की रचना की जिसमें कुफ़ के वाक्य थे। उसे शृङ्खला में जकड़ कर मेरे समक्ष लाया गया। उसके विरुद्ध लोगों को मार्ग-भ्रष्ट करने का (अपराध) प्रमाणित हो गया। मैंने उसकी भी हत्या करा दी। उसने जिस पुस्तक की रचना की थी उसे जलवा दिया ताकि मुसलमान आस्तिकों के मध्य से इस उपद्रव का भी अन्त हो जाय।

१०—इसके अतिरिक्त यह प्रथा तथा रीति हो गई थी, जिसकी आज्ञा इस्लाम में नहीं है कि मुसलमानों के नगरों में शुभ अवसरों पर स्त्रियाँ टोलियाँ बना-बना कर पालकी, गरदून, डोले, घोड़े तथा चौपायों पर सवार होकर बहुत बड़ी संख्या में तथा विभिन्न टोलियों में पैदल भी नगर से बाहर मज़ारों पर जाती थीं। दुष्ट तथा दुर्जन, जो कामुक एवं सत्यनिष्ठा से शून्य थे, उपद्रव एवं दुष्टता करते थे और खुल्लम खुल्ला इस प्रथा से लाभ उठाते थे। स्त्रियों के बाहर निकलने की शरा द्वारा मनाही है। मैंने आदेश दिया कि कोई स्त्री मज़ार पर न जाय (११) और जो जाय उसे दण्ड दिया जाय। इस समय ईश्वर की कृपा से मुसलमानों की स्त्रियाँ तथा पर्दा करने वाली औरतें बाहर निकलने तथा ज़ियारत करने के लिये जाने का साहस नहीं कर सकतीं। यह बिदअत भी समाप्त हो गई।

११—इसके अतिरिक्त ईश्वर की यह कृपा है कि मरमाक[5], हिन्दू तथा मूर्ति-पूजक, जिन्होंने ज़रे ज़िम्मा[6] (अदा करना) तथा जिज़या (देना) स्वीकार कर लिया है तथा जिनके घरबार सुरक्षित हैं, शहर (देहली) तथा उसके आसपास नये मन्दिरों का निर्माण करने

१ नेताओं।
२ स्वतंत्र किये हुये दास के पुत्र।
३ धार्मिक नेता।
४ अहं ब्रह्म।
५ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
६ वह कर जो जिम्मियों को अदा करना पड़ता था; जिज़या।

लगे थे। मुहम्मद साहब की शरा में नये मन्दिरों के निर्माण की अनुमति नहीं। महान् ईश्वर की कृपा से मैंने उन अपवित्र भवनों का खण्डन करा दिया। कुफ़ के नेताओं को, जो अन्य लोगों को मार्ग-भ्रष्ट करते थे, हत्या करा दी। आम लोगों को कठोर-दण्ड दिये जिससे यह उपद्रव पूर्णत: शान्त हो गया।

इसके अतिरिक्त मलवा[1] ग्राम में एक हौज़ है जो कुण्ड कहलाता है। वहाँ मन्दिरों का निर्माण कर लिया गया था। हिन्दुओं का एक समूह अपने अनुयाइयों सहित एक निश्चित दिन पर, एक दूसरे की आदत के अनुसार अस्त्र-शस्त्र लगा कर घोड़े पर सवार होकर जाया करता था। उनकी स्त्रियाँ तथा बालक भी पालकी एवं गरदून पर सवार होकर सहस्रों की संख्या में एकत्र होते थे और मूर्ति-पूजा करते थे। वे इस उद्दण्डता में इतनी अधिकता करते थे कि बाज़ार वाले नाना प्रकार की बहुमूल्य वस्तुयें वहाँ ले जाते थे और उन्हें बेचते थे। अधर्मी मुसलमानों के समूह भी कामुकता के कारण उनके मजमे (मेले) में सम्मिलित होते थे।

(१२) जब मैंने यह सुना तो ईश्वर की कृपा से इस उद्दण्डता का, जिसके दोष इस्लाम में प्रविष्ट हो रहे थे, निराकरण करने का निश्चय कर लिया। जिस दिन वे एकत्र होते थे उस दिन मैं वहां पहुंचा। उनके नेताओं का, जो दूसरों को मार्ग-भ्रष्ट करते थे, बध करा दिये जाने का आदेश दे दिया और समस्त हिन्दुओं को कठोर-दण्ड देकर (इस कार्य से) रोक दिया। मन्दिर का खण्डन करके उस स्थान पर मस्जिद का निर्माण कराया। क़स्बों को आबाद किया। उनमें से एक का नाम तुग़लुक़पुर तथा दूसरे का सालारपुर रक्खा। आजकल जिस स्थान पर इससे पूर्व मरमाक काफ़िरों ने मूर्तियों के मन्दिर बनवा रखे थे, उस स्थान पर महान् ईश्वर की अनुकम्पा से मुसलमान सच्चे खुदा को सिज्दा करते हैं और वहां तकबीर, अज़ान तथा जमाअत[2] स्थापित है। जिस स्थान पर काफ़िरों का निवास था वहाँ अब मुसलमान निवास करने लगे हैं और ला इलाहा इलूल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह[3] का जाप तथा सुमिरन किया करते हैं। अल्लाह की इस्लाम धर्म के लिए प्रशंसा है।

इसके अतिरिक्त सालेहपुर ग्राम में कुछ हिन्दुओं ने नये मन्दिर का निर्माण करा लिया था और वहाँ मूर्ति-पूजा करते थे। वहाँ भी आदमियों को भिजवा कर मैंने मन्दिर का खंडन करवा दिया। जो लोग पथ-भ्रष्ट करने पर तुले थे, उनका विनाश करा दिया।

इसके अतिरिक्त गोहाना[4] क़स्बे में कुछ हिन्दुओं ने नया मन्दिर बनवा लिया था। (१३) वहाँ मुशरिकों की टोलियाँ एकत्र होकर मूर्तिपूजा किया करती थीं। उन्हें बन्दी बना कर मेरे समक्ष लाया गया। उनमें से जो लोग उपद्रव का आधार थे, उनके विषय में मैंने आदेश दिया कि उनकी मार्ग-भ्रष्टता के विषय में घोषणा की जाय और राज भवन के द्वार के सम्मुख उनकी हत्या कर दी जाय। कुफ़ की पुस्तकें, मूर्तियाँ, तथा मूर्तिपूजा की जो सामग्री उनके साथ लाई गई थी, उसके विषय में मैंने आदेश दिया कि उन्हें सर्वसाधारण के समक्ष सयासत[5] के स्थान पर जला दिया जाय। अन्य लोगों को कठोरतापूर्वक एवं दण्ड देकर

---

१ सम्भवतः मलजा अथवा मलचा जहाँ शम्स सिराज के अनुसार सुल्तान फ़ीरोज ने बान्ध बनवाया था। यह कालिका के मन्दिर के पास देहली में ओखला के निकट है।

२ सामूहिक नमाज़।

३ मुसलमानों का कल्मा जिसका अर्थ है 'कोई ईश्वर नहीं है अल्लाह के अतिरिक्त तथा मुहम्मद साहब उसके रसूल (दूत) हैं।'

४ देहली के निकट सम्भवतः रोहतक तहसील में, रोहतक क़स्बे से २० मील उत्तर की ओर।

५ वह स्थान जहाँ लोगों को मृत्यु-दण्ड दिया जाता था।

रोका गया जिससे दूसरों को चेतावनी हो गई और कोई भी जिम्मी इस्लामी प्रदेश में इस प्रकार का साहस न कर सकता था।

१२—इसके अतिरिक्त भूतकाल में यह प्रथा हो गई थी कि भोजन के समय सोने चाँदी के बर्तनों का प्रयोग होता था। तलवार की पेटियाँ, खोल, तथा निषंग सोने तथा जड़ाऊ काम के बनाये जाते थे। मैंने इसकी मनाही कर दी और मैं अपने अस्त्र शस्त्र के खोल शिकार (द्वारा प्राप्त पशुओं) की हड्डियों से बनवाता था। मैंने स्वयं को उन्हीं बर्तनों का आदी बना लिया, जिनकी शरा द्वारा अनुमति है।

१३—इसके अतिरिक्त पिछले समय में यह प्रथा तथा आदत थी कि वस्त्रों पर चित्र बनाये जाते थे और लोगों को सुल्तानों के दरबार से इसी प्रकार के खिलअत प्रदान किये जाते थे। इसी प्रकार लगाम, जीन, घोड़े की गर्दनों के पट्टों, ऊद की अँगीठियों, पलेटों, बड़े-बड़े प्यालों, कूज़ों, तश्तों, आफ़ताबों, खेमों, पर्दों, सिंहासनों, कुर्सियों, तथा समस्त सामानों और सामग्रियों पर चित्र बनाये जाते थे। ईश्वर की कृपा एवं दैवी प्रेरणा से मैंने इन समस्त वस्तुओं के चित्र मिटवा दिये और आदेश दिया कि जो कुछ शरा के अनुसार आपत्तिजनक न (१४) हो और जिसकी शरा द्वारा अनुमति प्राप्त हो वही बनाया जाय। जो चित्र घरों, दीवारों तथा महलों पर बनवाये जाते थे, उन्हें भी मिटवा दिया।

१४—इसके अतिरिक्त इससे पूर्व बड़े-बड़े लोगों के अधिकाँश वस्त्र रेशम तथा गंगा जमनी जरदोज़ी के हुआ करते थे जो शरा के विरुद्ध है। ईश्वर ने मुझे इस योग्य बना दिया कि मैंने वस्त्र भी मुहम्मद साहब की शरा के अनुकूल करा दिये। जरदोज़ी की पताकायें, टोपियाँ तथा जरबफ़्त जिसकी चौड़ाई चार अंगुल से अधिक न होती थी प्रयोग में आने लगे। जो कुछ शरा के प्रतिकूल, अनधिकृत तथा जिसकी शरा द्वारा मनाही थी, उसका अन्त कर दिया गया। अल्लाह की इस्लाम धर्म के लिये प्रशंसा है।

१५—इसके अतिरिक्त इस तुच्छ के प्रति ईश्वर की अनुकम्पा यह है कि उसने मुझे सार्वजनिक हित की वस्तुओं के निर्माण कराने के योग्य बनाया। मैंने बहुत सी मस्जिदें, मदरसे तथा खानक़ाहें बनवाईं ताकि आलिम, सूफ़ी, जाहिद तथा एबादत करने वाले उन स्थानों पर सच्चे खुदा की एबादत कर सकें, और उनके निर्माणकर्त्ता के विषय में शुभ कामनायें कर सकें। नहरों के खुदवाने, वृक्षों के लगवाने और शरा के अनुसार वक़्फ़ करने के विषय में सभी सहमत हैं और इस बात में लेश मात्र भी सन्देह नहीं कि शरीअत के सभी आलिम इससे सहमत हैं। इन्हें, उन (मस्जिदों आदि) के व्यय हेतु उनकी स्थिति के अनुसार निश्चित किया जिससे उनकी प्राप्ति ईश्वर के भक्तों को पहुँचती रहे। इसका सविस्तार उल्लेख वक़्फ़ नामों[1] में कर दिया गया है।

१६—ईश्वर की अन्य अनुकम्पा यह है कि पिछले लोगों, प्राचीन सुल्तानों तथा भूतकाल के अमीरों की जो इमारतें एवं भवन समय व्यतीत हो जाने और सर्वसाधारण के (बुरे) व्यवहार के कारण खराब हो गई थीं, उन्हें मैंने मरम्मत तथा ठीक कराकर सुशोभित (१५) किया। मैंने उनकी दृढ़ता को अपने बनवाये हुये (भवनों) से बढ़कर समझा।

प्राचीन देहली में सुल्तान मुइज्जुद्दीन साम द्वारा निर्मित कराई हुई जामा मस्जिद में प्राचीनता के कारण मरम्मत तथा निर्माण की आवश्यकता हो गई थी, अतः मैंने उसकी ऐसी मरम्मत कराई कि वह पुनः दृढ़ हो गई।

---

१ वक़्फ़ से सम्बन्धित पत्र।

सुल्तान मुइज्ज़ुद्दीन साम के मक़बरे के पश्चिम दिशा की दीवार और द्वार के तख्ते पुराने और बेकार हो गये थे, इन्हें नया किया गया। द्वारों, खिड़कियों तथा ज़ीनों में साधारण लकड़ी के स्थान पर चन्दन की लकड़ी का प्रयोग किया गया।

सुल्तान मुइज्ज़ुद्दीन साम के मीनार (लाट) को, जो बिजली की दुर्घटना के कारण गिर पड़ा था, मरम्मत कराई गई और उसे पहले की अपेक्षा अधिक सुन्दर एवं ऊंचा बनवाया गया।

हौज़े शम्सी के जल के आने के स्थान को दुष्ट लोगों ने ऊपर से बाँध लिया था और जल का आना रुक गया था। मैंने उन धृष्ट तथा उद्धत लोगों को कठोर-दण्ड दिये और जल के स्थान खुलवा दिये।

हौज़े अलाई, जो (मिट्टी से) भर गया था और जिसमें जल न रहा था तथा शहर (देहली) के लोग जिसमें कृषि करते थे और कुँए खोदकर जल बेचते थे, को मैंने एक क़रन[1] के उपरान्त पुनः खुदवाया और अब यह बड़ा तालाब साल भर जल से भरा रहता है।

(१६) इसी प्रकार सुल्तान शम्सुद्दुनिया वद्दीन इल्तुतमिश के मदरसे (विद्यालय) के जो भाग गिर पड़े थे उन्हें पुनः बनवाया और चन्दन की लकड़ी के द्वार लगवाये। मक़बरे के जो खम्भे गिर चुके थे उनके स्थान पर पहले से अच्छे खम्भे लगवाये। मक़बरे के प्रांगण में निर्माण के समय पलस्तर न था, मैंने उस पर पलस्तर कराया। गुम्बद में पत्थर का तराशा हुआ ज़ीना लगवाया और चहार बुर्ज के टूटे हुये कंगूरों की मरम्मत कराई।

सुल्तान शम्सुद्दीन के पुत्र सुल्तान मुइज्ज़ुद्दीन का मक़बरा, जो मलिकपुर में है, इस प्रकार टूट फूट गया था मानो कभी बना ही न हो। वहाँ की इमारत का टूटा फूटा गुम्बद, चबूतरा तथा हाता नया बनवाया गया।

सुल्तान शम्सुद्दीन के पुत्र सुल्तान रुक्नुद्दीन के मक़बरे में जो मलिकपुर में है हाता बनवाया, नये गुम्बद का निर्माण कराया तथा खानक़ाह बनवाई।

सुल्तान जलालुद्दीन के मक़बरे की मरम्मत कराई तथा नये द्वार का निर्माण कराया।

(१७) सुल्तान अलाउद्दीन के मक़बरे की मरम्मत कराई और उसमें चन्दन की लकड़ी के द्वार बनवाये। आबदार ख़ाने[2] की दीवार और एक मस्जिद के पश्चिम दिशा की दीवार की जो मदरसे में है फ़र्श से नीवें तक मरम्मत कराई।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का मक़बरा तथा सुल्तान अलाउद्दीन के पुत्रों, खिज्र ख़ाँ, शादी ख़ाँ, फ़रीद ख़ाँ, सुल्तान शिहाबुद्दीन, सिकन्दर ख़ाँ, मुहम्मद ख़ाँ, उस्मान ख़ाँ तथा उनके पौत्रों एवं उनके पौत्रों के पुत्रों के मक़बरे नये सिरे से मरम्मत कराये।

सुल्तानुल मशायख़ हज़रत निज़ामुल हक़ वद्दीन महबूबे इलाही के मक़बरे के गुम्बद (वाले कमरे) के द्वार तथा जाफ़रियाँ भी चन्दन की बनवाईं। सुनहरी क़न्दीलें जिनमें सोने की ज़ंजीरें लगी थीं गुम्बद के कमरे के चारों कोनों पर लटकवाईं और एक नया जमाअत ख़ाना,[3] जो इससे पूर्व वहाँ न था, निर्मित कराया।

मलिक ताजुलमुल्क काफ़ूरी का मज़ार ध्वस्त हो गया था और मक़बरा टूट गया था। वह सुल्तान अलाउद्दीन का प्रतिष्ठित वज़ीर था तथा बड़ा ही योग्य एवं बुद्धिमान् था।

---

१ क़रन : दस वर्ष अथवा १० और १२० वर्ष के मध्य में कोई अवधि।

२ आबदार ख़ाना : वह स्थान जहाँ पीने का जल एकत्र होता था।

३ ख़ानक़ाह का बड़ा कमरा अथवा हाल जिसमें मेहमान तथा अन्य चेले एकत्र होते थे।

उसने बहुत से ऐसे प्रदेश विजय किये थे जहाँ भूतकाल के बादशाहों के घोड़ों के पाँव भी न पहुँचे थे। उसने वहाँ सुल्तान अलाउद्दीन का ख़ुत्बा पढ़वाया। (उसके मक़बरे का इस कारण निर्माण कराया) कि वह हितैषी तथा राजभक्त था।

(१८) दारुल अमान में, जो मेरे स्वामियों का अन्तिम शयनागार तथा मरक़द (समाधि क्षेत्र) है, चन्दन की लकड़ी के द्वार लगवाये। उन स्वामियों की क़बरों पर काबे के द्वार के पर्दों के सायबान लगवाये। इन मक़बरों तथा मदरसों की मरम्मत तथा निर्माण का प्रबन्ध उनके पिछले वक़्फ़ों से सम्पादित कराया और इनको (वक़्फ़ों को) उन (मक़बरों) से स्थायी रूप से सम्बन्धित रखा। इससे पूर्व जिन स्थानों की आय का साधन निश्चित न था वहाँ आने जाने वालों के लिये फ़र्श, प्रकाश एवं अन्य आवश्यकताओं के लिये ग्राम निश्चित कराये जिससे उनका कर सर्वदा उन्हीं के लिये व्यय होता रहे।

इस प्रकार जहाँ पनाह, जो मेरे स्वामी तथा पोषक सुल्तान मुहम्मद शाह का, जिसके समक्ष मेरा पालन पोषण हुआ, बनवाया हुआ था, आबाद रक्खा।

इसी प्रकार भूतकाल के सुल्तानों द्वारा निर्मित कराये हुये देहली राज्य के सभी क़िलों की मरम्मत कराई।

१७—इसके अतिरिक्त मदरसों तथा भूतकाल के सफल सुल्तानों और बड़े-बड़े सूफ़ियों के मक़बरों एवं मज़ारों पर आने जाने वालों तथा उन पवित्र स्थानों के लिये जिन सामग्रियों की आवश्यकता होती थी, उनके लिये जो भूमि तथा ग्राम पहले से वक़्फ़ थे, उन्हें उसी प्रकार जारी रखा। इससे बढ़कर जिन स्थानों पर वक़्फ़ की आय का तथा कोई अन्य प्रबन्ध न था, उन स्थानों पर मैंने उनका प्रबन्ध कराया जिससे वह उत्कृष्ट स्थान सर्वदा स्थायी रहें और आने (१६) जाने वाले तथा आलिम एवं आरिफ़[1] वहाँ विश्राम कर सकें और उनके तथा मेरे विषय में शुभ कामनायें कर सकें।

१८—इसके अतिरिक्त मुझे ईश्वर ने दारुश्शफ़ा[2] के निर्माण कराने की योग्यता प्रदान की जिससे जो कोई विशेष तथा साधारण व्यक्ति रुग्ण हो जाय अथवा किसी को कोई कष्ट हो वह वहाँ चला जाय। उस स्थान पर चिकित्सक उपस्थित रहें और रोग की छानबीन करके उपचार तथा अपथ्य वस्तुओं के परित्याग के विषय में आदेश तथा औषधि देते रहें। औषधि तथा भोजन का मूल्य वक़्फ़ की आय से दिया जाय। समस्त रोगी, मूल निवासी, यात्री, साधारण तथा सम्मानित, स्वतंत्र तथा दास वहाँ जाकर अपना उपचार करायें और ईश्वर की कृपा द्वारा स्वस्थ हों।

१६—इसके अतिरिक्त महान् ईश्वर ने मुझे इस योग्य बनाया कि जिन लोगों की, मेरे स्वर्गीय स्वामी मुहम्मद शाह सुल्तान ने, जो मेरे पोषक तथा आश्रयदाता थे, भाग्यवश हत्या कर दी थी, और जिन लोगों के शरीर के अंग, आँख, नाक, हाथ, पाँव काट डाले गये थे, उनके उत्तराधिकारियों को धन देकर अपने स्वर्गीय बादशाह से सन्तुष्ट करा लिया और इस आशय के पत्र प्रमाणिक साक्षियों सहित एक बक्स में बन्द कराके स्वर्गीय सुल्तान के मक़बरे के सिरहाने दारुल अमान में रखवा दिये जिससे ईश्वर अपनी महान् दया के कारण मेरे उस स्वामी तथा पोषक को अपनी अनुकम्पा से तृप्त करदे और उन लोगों को धन द्वारा (२०) मेरे पोषक की ओर से प्रसन्न कर दे।

---

१ ज्ञानी।

२ चिकित्सालय

२०—ईश्वर की अन्य अनुकम्पा यह है कि इमलाक[1] की भूमि तथा ग्राम, भूतकाल में कुछ कारणों से छीन लिये गये थे और दीवान में उन लोगों के अधिकार के बाहर दिखा दिये गये थे। मैंने आदेश दिया कि जिसके पास मिल्क का प्रमाण हो वह उसे दीवाने शरई[2] में ले आये और जो भूमि अथवा ग्राम एवं अन्य सम्पत्ति छीन ली गई है उसका प्रमाण देकर अपने अधिकार में कर ले। ईश्वर की इस अनुकम्पा को बड़ा धन्य है कि मुझे यह शक्ति प्राप्त हो सकी कि जो लोग हक़दार थे, उनका हक़ मैंने उन्हें पहुँचा दिया।

२१—इसके अतिरिक्त मुझे ज़िम्मियों को सच्चे धर्म[3] की ओर आमंत्रित करने की योग्यता प्राप्त हुई और मैंने घोषणा करादी कि "जो काफ़िर तौहीद का कलमा पढ़ लेगा तथा इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लेगा तो मुहम्मद साहब के धर्म के आदेशानुसार उसका जिज़या क्षमा कर दिया जायगा। जब यह घोषणा सर्वसाधारण के कानों तक पहुँची तो हिन्दुओं की बहुत बड़ी-बड़ी टोलियाँ आ आ कर मुसलमान होने लगीं। इसी प्रकार वे चारों ओर से आज तक आते हैं और उनका जिज़या क्षमा कर दिया जाता है तथा उन्हें इनाम एवं ख़िलअत से सम्मानित किया जाता है। संसार का रब अल्लाह प्रशंसनीय है।

२२—ईश्वर की अन्य अनुकम्पा यह है कि ईश्वर के दासों की मान-मर्यादा तथा सम्पत्ति मेरे राज्य में सुरक्षित रहे। मैं किसी की सम्पत्ति से कम या अधिक अथवा साधारण से साधारण चीज़ भी लेने की अनुमति नहीं देता। बहुत से पथ-भ्रष्ट करने वालों ने चुग़ली खाई कि "अमुक व्यापारी के पास इतने लाख तथा अमुक आमिल के पास इतने लाख हैं।" मैंने उन चुग़ुल ख़ोरों की कठोर-दंड द्वारा जिह्वा बन्द करादीं, जिससे इन लोगों की (२१) दुष्टता से प्रजा को शान्ति प्राप्त हो गई। इस अनुकम्पा के फलस्वरूप सभी लोग मेरे हितैषी तथा मित्र हो गये।

क़िता[4]

"यशस्वी बनने की अभिलाषा कर, कारण कि दान का कोष,
सैकड़ों बार छीने हुये ख़ज़ाने से अच्छा होता है।
एक प्रशंसा अच्छी है अथवा अनेक ख़ज़ाने के ढेर,
एक शुभ कामना अच्छी है अथवा सैकड़ों गधों पर लदी हुई सम्पत्ति।"

२३—इसके अतिरिक्त ईश्वर की कृपा से मेरे हृदय में फ़क़ीरों तथा दरिद्रियों का आदर सत्कार तथा उनके हृदय को संतुष्ट रखना आरूढ़ हो गया है। मैं जहाँ कहीं भी कोई फ़क़ीर अथवा एकान्तवासी पा जाता हूँ तो उससे भेंट करने को पहुँच जाता हूँ और उससे ईश्वर से शुभकामना करने की इच्छा किया करता हूँ जिससे इस लोकोक्ति के अनुसार मुझे सम्मान प्राप्त हो सके। वह अमीर (बादशाह) बड़ा ही यशस्वी है जो फ़क़ीरों के द्वार पर आता है।

२४—इसके अतिरिक्त जो कोई पदाधिकारी अपनी साधारण अवस्था को पूरी करके वृद्ध हो जाता है तो उसकी जीविका के साधन का प्रबन्ध करके उसे अनुमति देते हुये परामर्श करता हूँ कि वह आख़ेरत (परलोक) की तैयारी करे और शरा तथा धर्म के विरुद्ध जो कार्य युवावस्था में करता रहा है उससे तोबा कर ले और संसार की चिन्ता छोड़कर आख़ेरत (परलोक) के कार्यों में तल्लीन हो जाय।

---

१ धार्मिक लोगों को दी जाने वाली भूमि।
२ शरा का विभाग।
३ इस्लाम
४ पद्य

रुबाई

(२२) "वृद्ध होने के पश्चात् तू युवकों के कार्य न कर सकेगा,
यह वृद्धावस्था है काफ़िरी नहीं, इसे छिपाया नहीं जा सकता।
जो कुछ रात्रि के अन्धकार में तू ने किया वह किया,
दिन के प्रकाश में उसे न कर सकेगा।"

२५—अन्य, जैसा कि कहा गया है,

क़िता

"यह अधिकार-सम्पन्न लोगों की प्रथा एवं नियम है,
कि वे सदाचारी लोगों के पोषक होते हैं।
यदि उनमें से किसी की मृत्यु हो जाती है,
तो वे उसके पुत्रों के साथ सद्-व्यवहार करते हैं।"

जब किसी सम्मान एवं वैभव वाले पदाधिकारी का देहान्त हो जाता था तो मैं वह पद तथा सम्मान उसके पुत्रों को प्रदान कर देता था। इस प्रकार पुत्र जिस सम्मान एवं वैभव के स्वामी होते थे उसमें कोई कमी न हो पाती थी।

क़िता

"बादशाहों का नियम एवं उनकी प्रथा है,
कि वे बुद्धिमानों को अपना मित्र समझते हैं।
उसकी मृत्यु के उपरान्त,
बुद्धिमान् के पुत्र के प्रति भी निष्ठा रखते हैं।"

२६—इसके अतिरिक्त महान् ईश्वर ने मुझे जो सबसे बड़ा सौभाग्य प्रदान किया वह यह है कि उसने मुझे ख़लीफ़ा की, जो रसूल अल्लाह के चाचा की सन्तान हैं, आज्ञाकारिता, निष्ठा, शुभाकांक्षा तथा आदेश पालन की ओर प्रेरित किया इसलिये कि राज्य का औचित्य उसी से प्रमाणित है। यह उचित नहीं कि कोई अपने आप को उनकी सेवा से सम्मानित न (२३) करे और उसके पवित्र दरबार से अधिकार-पत्र न प्राप्त करे। मुझे ईश्वर ने इस योग्य बनाया कि मेरा इसमें दृढ़ विश्वास हो गया और ख़लीफ़ा के पवित्र दरबार से मुझे पूर्ण अधिकार प्राप्त होने एवं ख़लीफ़ा का नायब होने से सम्बन्धित आदेश-पत्र प्राप्त हो गये। अमीरुल मोमिनीन के उत्कृष्ट दरबार से मेरी बैअत[1] के स्वीकृति-पत्र में मुझे सैयिदुस्सलातीन[2] की उपाधि से सम्मानित किया गया। ख़लीफ़ा के दरबार से मुझे निरंतर खिलअत, चादर, पताका, अँगूठी, तलवार तथा (मुहम्मद साहब के) पाँव की छाप उपहार में प्राप्त होती रहीं जिससे मुझे अन्य संसार वालों की अपेक्षा अधिक गौरव एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकी।

इन देनों के उल्लेख का उद्देश्य, जो हज़ार में से एक तथा अत्यधिक में से थोड़ी सी है, यह है कि सच्चे प्रदान करने वाले के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जा सके।

इसके अतिरिक्त जो लोग यश एवं सौभाग्य के आकांक्षी हैं वे इसका अध्ययन करके यह समझ लें कि यह नियम बड़ा ही उत्कृष्ट है। पौरुष तो यह है कि लोग इसके पालन के योग्य बनें। वे इस पर आचरण करके पुण्य प्राप्त करें और मेरा, सदाचरण का मार्ग दर्शाने के कारण, कल्याण हो। "जो कोई सदाचरण का मार्ग दर्शाता है वह उस व्यक्ति के समान है जो उस पर आचरण करता है।"

---

१ अधीनता की स्वीकृति से सम्बन्धित पत्र।
२ सुल्तानों का नेता।

भाग स

बाद के कुछ मुख्य इतिहासकार

निज़ामुद्दीन अहमद

(क) तबक़ाते अकबरी

मीर मुहम्मद मासूम नामी

(ख) तारीख़ सिन्ध

तबक़ाते अकबरी

भाग १

[लेखक—ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद]
[प्रकाशन—कलकत्ता १९११ ई०]

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह

(२२४) वह सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह का भतीजा था। जब सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह सिविस्तान के शिविर में अत्यधिक रुग्ण हो गया और उसका मृत्यु-काल निकट आ गया तो मलिक फ़ीरोज़ नायक ने, जोकि सुल्तान के चाचा का पुत्र था और जिसे वह सुल्तान (मुहम्मद) अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था, सुल्तान के उपचार का बड़ा प्रयत्न किया। ऐसी अवस्था में सुल्तान की उसके प्रति कृपा सहस्रों गुना बढ़ गई। जब सुल्तान ने अपनी दशा बड़ी शोचनीय पाई तो उसने उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया।

उसके थट्टा में निधन के कारण सेना में बड़ी अव्यवस्था फैल गई। मलिक फ़ीरोज़ बारबक ने यही उचित समझा कि सर्व प्रथम उल्तून बहादुर को उन तीन हज़ार मुग़ल अश्वारोहियों सहित, जिन्हें अमीर क़ुरग़ुन ने सुल्तान मुहम्मद की सहायतार्थ भेजा था, किसी न किसी युक्ति से सेना से पृथक् करदे ताकि उनके उत्पात से मुक्ति प्राप्त हो जाय। उसने समस्त प्रतिष्ठित अमीरों एवं सवारों को उनकी श्रेणी के अनुसार इनाम तथा ख़िलअत प्रदान किये और अपने देश को वापस चले जाने का आदेश दे दिया। उसने आदेश दिया कि उस समय वे अपने आदमियों सहित सेना से पृथक् होकर दूर पड़ाव करें।

(२२५) सुल्तान की मृत्यु के दो दिन उपरान्त सेना वाले लूटमार के भय से आतंकित तथा विस्मित थे। नौरोज़ करकीन ने, जो बर्माशीरीं[1] का जामाता तथा सुल्तान मुहम्मद का आश्रित था, विद्रोह कर दिया। उसने समस्त मुग़लों से मिल कर यह निश्चय किया कि (शाही) सेना प्रस्थान करने के समय अव्यवस्थित दशा में होगी; अतः उन्हें लूट लिया जाय और बन्दी बना लिया जाय। उस दिन मुग़लों तथा थट्टा के उपद्रवियों ने अत्यधिक धन संपत्ति तथा लोगों के परिवार नष्ट कर दिये। शाही सेना वालों ने वह दिन बड़े भय की अवस्था में बिताया। दूसरे दिन सुल्तान फ़ीरोज़ ने बड़ी सावधानी से सेना को सुव्यवस्थित किया और प्रस्थान किया। उस दिन भी मुग़ल तथा थट्टा के उपद्रवी उत्पात मचाते रहे यहाँ तक कि सेना नदी के किनारे पहुँच गई।

वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई रक्षक न था। इस कारण वे नष्ट-भ्रष्ट हो रहे थे। मख़दूम ज़ादा अब्बासी, शेख़ नसीरुद्दीन मुहम्मद अवधी जो चिराग़े देहली के नाम से प्रसिद्ध थे और शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के ख़लीफ़ा थे तथा आलिम, सूफ़ी, मलिक एवं अमीर एकत्र हुए और उन्होंने मलिक फ़ीरोज़ बारबक से सिंहासनारूढ़ होने की प्रार्थना की। मलिक फ़ीरोज़ ने हज करने की इच्छा प्रकट की किन्तु उन लोगों के आग्रह पर २४ मुहर्रम ७५२ हि० (२३ मार्च १३५१ ई०) को सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने कई हज़ार मनुष्यों का,

१ तुमाँशीरीन।

जोकि उपद्रवियों के जाल में फँसे हुये थे, उपकार किया। तीसरे दिन उसने बड़े समारोह से प्रस्थान किया और मुग़ल तथा अन्य जिस किसी ने भी आक्रमण किया, वह बन्दी बना लिया जाता तथा उसकी हत्या कर दी जाती थी। बहुत से मुग़ल सरदार बन्दी बना लिये गये और मुग़लों तथा थट्टा के उपद्रवियों का उत्पात समाप्त हो गया।

(२२६) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्य-काल के प्रथम वर्ष में समस्त ख़ास व आम का कल्याण किया गया। तत्पश्चात् सुल्तान निरन्तर यात्रा करता हुआ सिविस्तान पहुँचा। अमीरों, मलिकों, सूफ़ियों तथा सेना वालों को घोड़े, खिलअतें, तलवार तथा पेटियाँ प्रदान कीं। इसी प्रकार सिविस्तान के निवासियों को भी इनाम तथा अदरार द्वारा सम्मानित किया। इसी प्रकार वह हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करते समय जिस नगर तथा स्थान पर भी पहुँचता था उस नगर तथा स्थान वालों को इनाम और अदरार देकर प्रसन्न कर देता था। मार्ग ही में मलिक अहमद अयाज़ के, जो ख्वाजये जहाँ के नाम से प्रसिद्ध था, विद्रोह की सूचना मिली। वह सुल्तान मुहम्मद शाह का विश्वासपात्र था। सुल्तान ने उसे देहली में नायबे ग़ैबत नियुक्त किया था। उसने एक बालक को, जिसके वंश का कोई पता न था सुल्तान मुहम्मद शाह का पुत्र घोषित करके बादशाह नियुक्त कर दिया था और उसकी उपाधि सुल्तान ग़यासुद्दीन महमूद शाह रक्खी थी। उसने अपने आपको उसका स्वतन्त्र वकील बना लिया। सुल्तान ने उसके इस दुष्कार्य को उसकी मूर्खता का कारण बताया। उसके पास क्षमायुक्त फ़रमान भेज कर उसे उचित परामर्श दिये। तत्पश्चात् मलिक सैफ़ुद्दीन शहनये पील ने उसके पास शाही फ़रमान पहुँचाये किन्तु उसने अधीनता स्वीकार न की। उसने सैयिद जलाल, मलिक धीलान, मौलाना नज्मुद्दीन राज़ी तथा दाऊद अपने मौलाना ज़ादे[1] को अपना दूत बना कर सुल्तान फ़ीरोज़ के पास यह संदेश भेजा कि "अब भी राज्य सुल्तान मुहम्मद के वंश में है। तुम्हें उसका नायब बन (२२७) कर स्थाई रूप से शासन प्रबन्ध करना चाहिये। जिन अमीरों के विषय में तुम कहोगे वे तुम्हारा साथ देंगे।" दूतों के पहुँचने के उपरान्त सुल्तान ने एक परामर्श गोष्ठी आयोजित की। शेख़ नसीरुद्दीन मुहम्मद अवधी, मौलाना कमालुद्दीन अवधी, मौलाना कमालुद्दीन सामाना, मौलाना शम्सुद्दीन बाख़र्ज़ी तथा अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति एवं आलिम उपस्थित हुए और स्थिति के ऊपर विचार विमर्श हुआ। सुल्तान ने पूछा कि "तुम लोग इस विषय में क्या कहते हो? शरा के अनुसार मुझे क्या करना चाहिये?" मौलाना कमालुद्दीन ने कहा कि "जिसने प्रारम्भ में राज्य ग्रहण कर लिया वही उचित है।" सुल्तान ने अहमद अयाज़ के दूतों को वापस जाने न दिया, केवल दाऊद मौलाना ज़ादे को उसके पास वापस भेजा और परामर्श भरी हुई बातें उससे कहलाईं। दाऊद के पहुँचने के उपरान्त अहमद अयाज़ ने जब यह देखा कि अधिकाँश अमीर सुल्तान के स्वागतार्थ उसके शिविर में पहुँच चुके हैं, विशेष रूप से मलिक नत्थू हाजिब, मलिक हसन मुल्तानी तथा इसी प्रकार के अन्य लोग जिन्होंने पूर्ण रूप से अहमद अयाज़ का साथ दिया था और उससे धन सम्पत्ति प्राप्त की थी, तो वह समझ गया कि सफलता मिलनी सम्भव नहीं।

इसी समय तग़ी की हत्या के समाचार जो विद्रोह करके गुजरात पहुँच गया था प्राप्त हुये। प्रत्येक दिशा में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के सौभाग्य के चिह्न दृष्टिगत होने लगे। अहमद अयाज़ ने घबरा कर अधीनता स्वीकार करना निश्चय किया और अशरफ़ुलमुल्क, मलिक ख़लजीन मलिक कबीर तथा हसन अमीर मीरान को अपने अपराध की क्षमा याचना करते हुये सुल्तान के पास प्रार्थना-पत्र भेजे। सुल्तान ने उसके अपराध क्षमा कर दिये और उसके

१ मौला ज़ादे-घर के दास-होना चाहिये।

उपस्थित होने का प्रस्ताव रखा। अहमद अयाज़ अपने सहायकों के सिर मुंड़वा कर नंगे सिर ग्रीवा में पगड़ियाँ डाले हांसी के निकट सुल्तान की सेवा के लिये उपस्थित हुआ। सुल्तान ने आदेश दिया कि 'अहमद अयाज़ को हांसी के कोतवाल के सिपुर्द कर दिया जाय। मलिक ग़यासुद्दीन खत्ताब को तबरहिन्दा भेज दिया जाय और शेखज़ादा बिस्तामी को निर्वासित कर दिया जाय।'

(२२८) २ रजब ७५२ हि० (२५ अगस्त १३५१ ई०) को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह स्थाई रूप से देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। ५ सफ़र ७५३ हि० (२३ मार्च १३५२ ई०) को सुल्तान सैर तथा शिकार के लिए सिरमूर पर्वत की ओर रवाना हुआ। उस क्षेत्र के बहुत से ज़मींदार उसकी सेवा में उपस्थित हुये और अधीनता स्वीकार की। उपर्युक्त वर्ष की सोमवार ३ जमादी उल अव्वल (१७ जून १३५२ ई०) को शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ का देहली में जन्म हुआ। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने इस खुशी में जशनों के आयोजन कराये और प्रजा को इनाम द्वारा सम्मानित किया। ७५४ हि० (१३५३-५४ ई०) में वह कलानूर तथा उस स्थान के आसपास के पर्वत के आँचल में शिकार खेल कर लौट आया। लौटते समय उसने सरसुती नदी के तट पर भव्य भवनों का निर्माण कराया। शेख बहाउद्दीन ज़करिया के शेख़ सद्रुद्दीन को शेखुल इस्लाम की उपाधि प्रदान की। मलिक क़ुबूल को जो नायब वज़ीर था (२२९) खाने जहाँ की उपाधि देकर राज्य का वज़ीर नियुक्त कर दिया। ख़ुदावन्दज़ादा क़िवामुद्दीन को ख़ुदावन्द ख़ाँ की उपाधि देकर वकीलदर का पद प्रदान किया। मलिक तातार को तातार ख़ाँ की उपाधि दी। मलिक शरफ़ नायब वकीलदर हुआ। सैफ़ुलमुल्क शिकार बेग तथा ख़ुदावन्दज़ादये एमादुलमुल्क सिलाहदार नियुक्त हुआ। ऐनुलमुल्क दीवान का मुस्तौफ़ी तथा मुशरिफ़ नियुक्त हुआ। मलिक हुसेन अमीर मीरान को इस्तीफ़ाये कुल की उपाधि प्रदान हुई।

शव्वाल ७५४ हि० (नवम्बर १३५३ ई०) में सुल्तान ने खाने जहाँ को पूर्ण अधिकार प्रदान करके शहर देहली में छोड़ दिया और स्वयं एक भारी सेना लेकर इलियास हाजी के अत्याचार के दमन हेतु लखनौती की ओर प्रस्थान किया। इलियास ने सुल्तान शम्सुद्दीन की उपाधि धारण करके पंडुवा को आबाद किया था और बनारस की सीमा तक अपना अधिकार बढ़ा लिया था। जब वह गोरखपुर के निकट पहुँचा तो गोरखपुर का मुक़द्दम उदयसिंह स्वागतार्थ उपस्थित हुआ और उसने उचित उपहार तथा दो हाथी भेंट किये। सुल्तान ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। कपूर के राय ने भी कई वर्षों का ख़राज प्रस्तुत किया; दोनों ने सुल्तान के साथ प्रस्थान किया। इलियास हाजी पंडुवा से निकल कर एकदला के क़िले में, जो बंगाले का सबसे दृढ़ क़िला था, प्रविष्ट हो गया। सुल्तान ७ रबी उल अव्वल ७५५ हि० (१ अप्रैल १३५४ ई०) को एकदला पहुँचा। उसी दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ। उस मास की २९ ता० (२३ अप्रैल) को शाही सेना नगर से पृथक् होकर गंगा तट पर पहुँची।

५ रबी उल आख़िर (२९ अप्रैल) को इलियास हाजी पुन: युद्ध के लिए क़िले से निकला किन्तु बड़े विचित्र प्रदर्शन के उपरान्त भाग कर क़िले में प्रविष्ट हो गया। उसके ४४ हाथी, छत्र, पताका तथा उसकी सेना एवं धन सम्पत्ति शाही सेना को प्राप्त हो गई। उसके बहुत से पदाति मारे गये।

दूसरे दिन सुल्तान ने वहाँ रुक कर आदेश दिया कि लखनौती प्रदेश के बन्दियों को मुक्त कर दिया जाय। २७ रबी उल आख़िर (२१ मई) को वर्षा की अधिकता के कारण

(२३०) सुल्तान संधि करके लौट गया और मानिकपुर के घाट पर गंगा नदी पार की। १२ शाबान (१ सितम्बर १३५४ ई०) को देहली पहुँचा और फ़ीरोज़ाबाद नगर का जो यमुना तट पर है निर्माण कराया।

७५६ हि० (१३५५ ई०) में सुल्तान ने दीबालपुर की ओर शिकार हेतु प्रस्थान किया और सतलज नदी से झज्झर तक जोकि ४८ कोस होगा नहर निकलवाई। दूसरे वर्ष उसने एक नहर यमुना नदी से मंदल के पास से सिरमूर तक निकलवाई। उसके साथ सात अन्य नहरें निकलवा कर उसने हाँसी तक पहुँचाई और वहाँ से उनको रायसेन तक ले गया। वहाँ एक क़िले का निर्माण करवाया, उसका नाम हिसार फ़ीरोज़ा रक्खा। कूश्क (महल) के समक्ष एक बहुत बड़ा हौज़ खुदवा कर उसे उस नहर के जल से भरवाया। दूसरी नहर खक्खर का नदी से निकलवा कर सरसुती के क़िले के नीचे से बहाई और उसे करा नहर तक पहुँचाया। बीच में एक क़िले का निर्माण कराया और उसका नाम फ़ीरोज़ाबाद रखा। दूसरी नहर बद्धी नदी से निकलवा कर उपर्युक्त हौज़ तक पहुँचाई और उसे उसके आगे ले गया।

बक़रीद के दिन (१६ दिसम्बर १३५५ ई०) मिस्र के ख़लीफ़ा अबुल फ़तह का मन्शूर (अधिकार-पत्र) उसे हिन्द तथा सिन्ध का राज्य प्रदान करने से सम्बन्धित प्राप्त हुआ। यह सुल्तान की अत्यन्त प्रसन्नता तथा गौरव का कारण बना। इसी वर्ष इलियास हाजी ने उचित उपहार भेजे और शाही कृपा से सम्मानित हुआ। लखनौती तथा दक्षिण के अतिरिक्त हिन्दुस्तान के समस्त प्रदेश सुल्तान के अधीन थे।

सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान शम्सुद्दीन इलियास हाजी ने लखनौती पर अधिकार जमा लिया था और हसन काँगू को दक्षिण में अधिकार प्राप्त हो गया था। उसने सन्धि करने का प्रस्ताव रक्खा था।

७५८ हि० (१३५७ ई०) में ज़फ़र ख़ाँ फ़ारसी सुनारगाँव से २ हाथी लेकर शाही दरबार में उपस्थित हुआ और नायब वज़ीर नियुक्त हुआ। ७५९ हि० (१३५७-५८ ई०) में सुल्तान ने सामाना की ओर प्रस्थान किया। शिकार के मध्य में उसे सूचना प्राप्त हुई कि मुग़ल सेना लाहौर के पास आकर युद्ध किये बिना लौट गई थी। सुल्तान देहली की ओर वापस लौटा। इस वर्ष के अन्त में ताजुद्दीन अन्य अमीरों सहित लखनौती से आया और उसने उत्तम प्रकार के उपहार प्रस्तुत किये तथा कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित किया गया। सुल्तान ने (२३१) मलिक सैफ़ुद्दीन शहनये फ़ील को अरबी तथा तुर्की घोड़े एवं अन्य उपहार देकर मलिक ताजुद्दीन के साथ सुल्तान शम्सुद्दीन के पास भेजा। बिहार में सूचना प्राप्त हुई कि सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र सुल्तान सिकन्दर उसका उत्तराधिकारी हो गया है। मलिक सैफ़ुद्दीन ने सुल्तान के पास यह समाचार लिख कर भेज दिया। सुल्तान का उत्तर प्राप्त हुआ कि 'सुल्तान शम्सुद्दीन को जो उपहार भेजे जा रहे थे उन्हें लौटा लाया जाय और घोड़े बिहार की सेना को प्रदान कर दिये जायँ। दूतों को कड़ा भेज दिया जाय।'

तत्पश्चात् ७६० हि० (१३५८-५९ ई०) में सुल्तान ने लखनौती की ओर प्रस्थान किया और ख़ाने जहाँ को देहली में नायबे ग़ैबत नियुक्त कर दिया। तातार ख़ाँ को मुल्तान से ग़ज़नी की सीमा तक का शिक़दार नियुक्त कर दिया। वर्षा के कारण ज़फ़रपुर में पड़ाव किया। उस समय शेखज़ादा, बिस्तामी जिसका निर्वासन हो चुका था, मिस्र के ख़लीफ़ा के पास से खिलअत लाया; उसे आज़मुलमुल्क की उपाधि प्रदान हुई। सैयिद रसूलदार को लखनौती के दूतों के साथ सुल्तान सिकन्दर के पास भेजा गया। सुल्तान सिकन्दर ने ५ हाथी तथा बहुमूल्य उपहार सैयिद रसूलदार के हाथ देहली भेजे। सैयिद रसूलदार के पहुँचने के पूर्व

आलम ख़ाँ लखनौती से दूत बन कर आया और सुल्तान ने लखनौती की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ को बादशाही के विशेष चिह्न अर्थात् चत्र, दूरबाश, हाथी तथा लाल खेमे प्रदान किये गये और उसके नाम का सिक्का चलाया गया। उसके पदाधिकारी नियुक्त किये गये।

जब सुल्तान पंडुवा पहुँचा तो सुल्तान सिकन्दर एकदला के क़िले में बन्द होकर बैठ रहा। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उस क्षेत्र में पड़ाव किया और उसको घेरने की व्यवस्था करने लगा। कुछ दिन उपरान्त सिकन्दर ने क्षमा याचना की तथा हाथी एवं कर देना स्वीकार किया; और यह निश्चय हुआ कि वह इन वस्तुओं को प्रति वर्ष उपहार स्वरूप भेजा करेगा। २० जमादी उल अव्वल ७६१ हि० (८ अप्रैल १३६० ई०) को सुल्तान वापस हुआ। पंडुवा में ७ हाथी तथा अन्य बहुमूल्य उपहार, जो सुल्तान सिकन्दर ने प्रस्तुत किये थे, लाये गये।

(२३२) सुल्तान के जौनपुर पहुँचने पर वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो गई। उसने वर्षा वहीं व्यतीत की। उपर्युक्त वर्ष के ज़िलहिज्जा मास (अक्तूबर १३६० ई०) में सुल्तान ने बिहार से जाजनगर की ओर, जो गडहकतंगा की विलायत में है, प्रस्थान किया। जब वह गडहकतंगा पहुँचा तो उसने मलिक क़ुतुबुद्दीन के भाई ज़फ़र ख़ाँ को सेना के शिविर में छोड़ कर जरीदा[1] शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। जब वह सिंगरा पहुँचा तो सिंगरा का राजा राय सार्पन भाग खड़ा हुआ, उसकी पुत्री बन्दी बना ली गई। सुल्तान ने उसे अपनी पुत्री कह कर उसकी रक्षा की।

अहमद ख़ाँ, जो लखनौती से भाग कर रणथम्भोर के क़िले में पहुँचा था, मार्ग में सेवा के लिये उपस्थित हुआ। उसे अत्यधिक दान देकर सम्मानित किया गया। जब महानदी पार करके सुल्तान बनारस नगर में जो जाजनगर के राय का निवास स्थान था पहुँचा तो राय भाग कर तिलंगा की ओर चल दिया। सुल्तान ने उसका पीछा न किया और शिकार में व्यस्त हो गया। उसी बीच में उस राय ने भी अपने आदमियों को भेजकर संधि की सूचना भेजी और ३३ हाथी अन्य बहुमूल्य उपहार सहित भेंट किये।

सुल्तान वहाँ से लौट कर पद्मावती में जोकि हाथियों का जंगल है पहुँचा। ३३ हाथी जीवित बन्दी बना लिये गये और दो हाथियों की हत्या कर दी गई। सुल्तान वहाँ से निरन्तर कूच करता हुआ कड़ा पहुँचा और ७६२ हि० (१३६१ ई०) में देहली पहुँच गया।

(२३३) कुछ समय उपरान्त उसने सलीमा नामक नहर की ओर प्रस्थान किया। यह नहर दो बड़ी-बड़ी नहरों से घिरी हुई है जो सर्वदा बहती रहती हैं। उस नहर के बीच में एक ऊँचा घुस स्थित है। सुल्तान ने आदेश दिया कि ५० हज़ार बेलदारों को एकत्र करके उस नहर को खुदवाया जाय। इस घुस के बीच में हाथियों तथा मनुष्यों की बहुत बड़ी बड़ी हड्डियाँ दृष्टिगत हुईं। मनुष्यों की हड्डियाँ भी ३, ३ गज़ की थीं। कुछ तो पत्थर बन गई थीं और कुछ अब भी हड्डी के रूप में थीं। इसी बीच में सरहिन्द को, जोकि वास्तव में सामाना की जमा में सम्मिलित था, पृथक् करके शहर में १० कोस तक सम्मिलित करके मलिक ज़ियाउलमुल्क शम्सुद्दीन अबू रिजा को सौंप दिया गया। वहाँ पर एक क़िला तैयार करके उसका नाम फ़ीरोज़पुर रखा। वहाँ से नगरकोट की ओर प्रस्थान किया। जब वह पर्वत के आंचल में पहुँचा तो बरफ़ गिरने लगी। सुल्तान ने बताया कि "एक बार मेरे स्वामी स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद शाह इस स्थान पर आये थे; उनके लिए बरफ़ का शर्बत लाया गया, क्योंकि मैं उपस्थित न था। सुल्तान ने उस शर्बत की ओर ध्यान न दिया। मैंने आदेश दिया

१ थोड़े से सैनिकों सहित।

कि कुछ हाथियों तथा ऊँटों पर जो मिश्री लदी हुई थी उसका बरफ़ का शर्बत बनाकर सुल्तान मुहम्मद की स्मृति में बाँटा जाय।" नगरकोट का राजा कुछ समय युद्ध करने के उपरान्त अपने पुत्रों सहित सुल्तान की अधीनता स्वीकार करने हेतु उपस्थित हुआ। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने उसे सम्मानित किया और नगरकोट का नाम स्वर्गीय मुहम्मद के नाम पर मुहमदाबाद रखा।

सुल्तान को यह बताया गया कि "एक बार सिकन्दर जुलक़रनैन[1] इस स्थान पर आया था। यहाँ के लोगों ने नौशाबा की मूर्तियां बनाकर अपने घरों में रख ली हैं और वे उसकी पूजा करते हैं। ब्राह्मणों की १३०० पुस्तकें ज्वालामुखी नामक मन्दिर में प्राप्य हैं।" सुल्तान ने उस समूह के विद्वानों को बुलाकर उनमें से कुछ पुस्तकों का अनुवाद कराया। उन पुस्तकों में से तत्कालीन कवि इज़्ज़ुद्दीन ख़ालिद ख़ानी ने एक पुस्तक, जो भौतिक विज्ञान तथा फ़ालों से सम्बन्धित थी, का रूपान्तर पद्य में तैयार किया और उसका (२३४) नाम दलायले फ़ीरोज़शाही रखा। लेखक ने उस पुस्तक का अध्ययन किया है। वास्तव में वह पुस्तक बड़े गूढ़ विज्ञान से सम्बन्धित है।

सुल्तान फ़ीरोज़ ने नगरकोट की विजय के उपरान्त थट्टा की ओर प्रस्थान किया। जब वह थट्टा पहुँचा तो उस स्थान के शासक जाम ने जल की शक्ति के कारण क़िले को बन्द कर लिया। बहुत समय तक युद्ध होता रहा। सुल्तान अनाज तथा चारे की कमी के कारण वहां से लौट कर गुजरात पहुँचा और वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत की। उससे पुनः थट्टा की ओर प्रस्थान किया और गुजरात ज़फ़र ख़ाँ को प्रदान कर दिया। निज़ामुलमुल्क को पदच्युत कर दिया गया। निज़ामुलमुल्क अपने सहायकों सहित देहली पहुँचकर नायब वज़ीर हो गया। जब सुल्तान थट्टा पहुँचा तो जाम ने क्षमा-याचना करके आज्ञाकारिता स्वीकार करली। सुल्तान उसे तथा उस प्रदेश के समस्त ज़मींदारों को देहली ले आया। कुछ समय उपरान्त जाम को थट्टा प्रदान करके लौटा दिया।

७७२ हि० (१३६०-६१ ई०) में ख़ाने जहाँ की मृत्यु हो गई। उसके ज्येष्ठ पुत्र जौनाँशाह को ख़ाने जहाँ की उपाधि प्रदान कर दी गई।

७७३ हि० (१३७१-७२ ई०) में ज़फ़र ख़ाँ की गुजरात में मृत्यु हो गई। उसके ज्येष्ठ पुत्र को ज़फ़र ख़ाँ की उपाधि प्रदान की गई और गुजरात उसे सौंप दिया गया। १२ सफ़र ७७६ हि० (२३ जुलाई १३७४ ई०) में शाहज़ादा फ़तह ख़ाँ की कटेहवार के पड़ाव पर मृत्यु हो गई।

७७८ हि० (१३७६-७७ ई०) में शम्सुद्दीन दामग़ानी ने निवेदन किया कि "मैं गुजरात की असल जमा से ४ लाख तनके अधिक तथा १०० हाथी २०० घोड़े और ४०० दास प्रति वर्ष देने को तैयार हूँ।" सुल्तान ने कहा कि "यदि ज़ियाउलमुल्क मलिक शम्सुद्दीन अबू रिजा, जो ज़फ़र ख़ाँ का नायब है, यह वृद्धि स्वीकार करे तो गुजरात उसी के पास रहने दिया जाय।" (२३५) मलिक शम्सुद्दीन ने स्वीकार न किया। शम्सुद्दीन दामग़ानी को सुनहरी पेटी, भाला तथा चाँदी का चुड़वल प्रदान किया गया और उसे ज़फ़र ख़ाँ के स्थान पर गुजरात में नियुक्त कर दिया गया। शम्सुद्दीन दामग़ानी ने जो कुछ स्वीकार किया था उसे वह पूरा न कर सका और उसने विद्रोह कर दिया। गुजरात के कुछ अमीर सदा लोगों ने, उदाहरणार्थ शेख़ फ़रीदुद्दीन तथा अन्य नेताओं ने, उसका साथ दिया। सुल्तान ने शम्सुद्दीन दामग़ानी की हत्या हेतु सेना भेजी। उसकी हत्या करके उसका सिर सुल्तान के पास भेज दिया गया। उसकी हत्या के उपरान्त

१ दो सींगों वाला अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसने पूर्व से पश्चिम तक के सभी स्थानों को विजय कर लिया हो।

गुजरात मलिक मुफ़र्रह सुल्तान को प्रदान कर दिया गया और उसकी उपाधि फ़रहतुलमुल्क रखी गयी।

७७६ हि० (१३७७-७८ ई०) में सुल्तान ने इटावा तथा अकहल की ओर प्रस्थान किया। राय सर्वाद हरन तथा इटावा के अन्य समस्त जमींदारों को, जिन्होंने एक बार शाही सेना से युद्ध किया था तथा पराजित हुए थे, प्रोत्साहन प्रदान किया और उन्हें सपरिवार देहली भेज दिया। अकहल तथा पतलाही में क़िलों का निर्माण कराया। मलिक ताजुद्दीन तुर्क के पुत्र मलिक ज़ादा फ़ीरोज़ को बहुत से अमीरों के साथ वहाँ नियुक्त कर दिया। फ़ीरोज़पुर पतलाही भी उसे सौंप दिया। अकहल मलिक अफ़ग़ान को प्रदान करके वह देहली लौट आया। उसी वर्ष अवध के हाकिम निज़ामुद्दीन की, जो सुल्तान के साथ था, मृत्यु हो गई। अवध उसके ज्येष्ठ पुत्र मलिक सैफ़ुद्दीन को प्रदान कर दिया गया। ७८१ हि० (१३७९-८० ई०) में सुल्तान ने सामाना की ओर प्रस्थान किया। सामाना का हाकिम मलिक क़ुबूल अत्यधिक उपहार लाया। सुल्तान अम्बाला तथा शाहाबाद को पार करके सानतूर पर्वत में पहुँचा। सिरमूर के राय तथा अन्य रायों से उपहार प्राप्त करके देहली की ओर लौट आया।

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुआ कि कटिहर के मुक़द्दम खरकू ने बदायूँ के हाकिम सैयिद मुहम्मद तथा उसके भाई सैयिद अलाउद्दीन को अपने घर आमंत्रित किया और दोनों की हत्या कर दी। सुल्तान ने ७८२ हि० (१३८०-८१ ई०) में सैयिदों के रक्त के प्रतिकार हेतु कटिहर की ओर प्रस्थान किया। खरकू भाग गया, कटिहर प्रदेश विध्वन्स कर दिया गया। खरकू कुमायूँ पर्वत की ओर चला गया। सुल्तान ने उस प्रदेश को विध्वन्स करके, बदायूँ मलिक क़ुबूल को सौंप दिया और मलिक ख़त्ताब अफ़ग़ान को खरकू से युद्ध करने के लिए संभल में नियुक्त कर दिया। उस प्रदेश को अपना शिकारगाह बना लिया और वह पूर्णतः (२३६) नष्ट भ्रष्ट हो गया। ७८७ हि० (१३८५-८६ ई०) में सुल्तान ने बदायूँ से ७ कोस पर ब्युली ग्राम में एक क़िले का निर्माण कराया और उसका नाम फ़ीरोज़पुर रखा। क्योंकि उसके उपरान्त किसी अन्य क़िले का निर्माण नहीं हुआ, अतः वह क़िला हजीनपुर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। उस वर्ष में सुल्तान की वृद्धावस्था तथा निर्बलता बहुत बढ़ गई। ख़ाने जहाँ को पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया। वह इस बात की इच्छा करने लगा कि शाहज़ादा मुहम्मद ख़ाँ तथा अन्य अमीरों उदाहरणार्थ ज़फ़र ख़ाँ के पुत्र दरिया ख़ाँ, मलिक याक़ूब मुहम्मद हाजी, मलिक समाउद्दीन तथा मलिक कमालुद्दीन, जो शाहज़ादे के हितैषी थे, को बन्दी बनाकर शक्तिहीन कर दे। उसने सुल्तान से निवेदन किया कि "शाहज़ादा उपर्युक्त अमीरों से मिलकर विद्रोह करना चाहता है।" सुल्तान ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। उसने आदेश दिया कि "उन अमीरों को बन्दी बना लिया जाय।" शाहज़ादा यह समाचार सुनकर कुछ दिनों तक अपने पिता की सेवा में उपस्थित न हुआ। ख़ाने जहाँ ने दरिया ख़ाँ को महोबा के हिसाब के बहाने से अपने घर बुला कर बन्दी बना लिया। शाहज़ादा यह सुनकर बड़ा भयभीत हुआ। उसने अपने पिता को समझाया कि "ख़ाने जहाँ विद्रोह करना चाहता है और बड़े-बड़े अमीरों को नष्ट कर रहा है। तत्पश्चात् वह हमें बन्दी बनाये जाने की योजना बनायेगा।" सुल्तान ने ख़ाने जहाँ की हत्या का आदेश दे दिया। दरिया ख़ाँ को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया गया। शाहज़ादे ने मलिक याक़ूब से कहा कि "तुम शाही अश्वशाला के घोड़ों को तैयार करो। मलिक क़ुतुबुद्दीन शहनये फ़ील हाथियों को तैयार करके युद्ध करे।" रात्रि के अन्त में शाहज़ादा एक बहुत बड़ी सेना लेकर ख़ाने जहाँ के घर पर पहुँच गया। ख़ाने जहाँ ने अपने घर से निकल कर कुछ आदमियों सहित युद्ध किया। अन्त में आहत हुआ

और पराजित होकर अपने घर में प्रविष्ट हो गया और दूसरे द्वार से बाहर निकल गया। उसने मेवात के ज़मींदार कोका चौहान के पास शरण ली। शाहज़ादे ने उसके घर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। मलिक एमादुद्दौला, मलिक शम्सुद्दीन तथा मलिक सालेह की जो युद्ध में बन्दी बना लिये गये थे हत्या करा दी। इस घटना के उपरान्त सुल्तान ने शाहज़ादे को पूर्ण अधिकार-सम्पन्न वज़ीर नियुक्त कर दिया। राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी सामग्री—घोड़े सेना (२३७) तथा हाथी सभी उसको सुपुर्द कर दिये। उसकी उपाधि नासिरुद्दीन वद्दुनिया मुहम्मद शाह रखी और स्वयं ईश्वर की उपासना में व्यस्त रहने लगा। शुक्रवार को दोनों बादशाहों के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा जाया करता था।

सुल्तान मुहम्मद शाह शाबान ७८६ हि० (अगस्त-सितम्बर १३८७ ई०) में सिंहासनारूढ़ हुआ। प्रथानुसार पदाधिकारियों को नियुक्त करके उन्हें ख़िलअतें प्रदान कीं। मलिक याक़ूब की उपाधि सिकन्दर ख़ाँ रखी और गुजरात उसके सुपुर्द कर दिया। मलिक राजू को मुबारिज़ ख़ां, कमाल उमर को दस्तूर ख़ाँ तथा समा उमर को मुईनुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। मलिक याक़ूब, जिसे सिकन्दर ख़ाँ की उपाधि प्रदान हुई थी, उसको बहुत बड़ी सेना देकर ख़ाने जहाँ के विरुद्ध भेजा गया। जिस समय सेना मेवात के निकट पहुँची तो कोका चौहान ने ख़ाने जहाँ को बन्दी बना कर सिकन्दर ख़ाँ के समक्ष उपस्थित किया। सिकन्दर ख़ाँ ने उसकी हत्या करादी और उसका सिर शाहज़ादा मुहम्मद शाह के पास भेज दिया और गुजरात की ओर चल दिया। इसी वर्ष में शाहज़ादा मुहम्मद शाह शिकार के विचार से सिरमूर पर्वत की ओर रवाना हुआ। मार्ग में उसे पता चला कि मलिक मुफ़र्रेह तथा गुजरात के अमीर सदा लोगों ने षड्यन्त्र करके सिकन्दर ख़ाँ की हत्या करदी है। सिकन्दर ख़ाँ के साथ जो सेनायें थीं वह नष्ट हो गईं। उन घायलों में से कुछ सिपहसालार के साथ देहली पहुँचे। मुहम्मदशाह यह समाचार पाकर देहली लौट आया और सिकन्दर ख़ाँ की हत्या के प्रतिकार के विषय में कोई प्रयत्न न किया और भोग विलास में ग्रस्त हो गया। उसकी असावधानी के कारण राज्य में बड़ा विघ्न पड़ गया।

इस घटना के ५ साल के उपरान्त सुल्तान के सैनिक, समाउद्दीन तथा कमालुद्दीन से ईर्ष्या के कारण, मुहम्मद शाह के विरोधी बन गये। मुहम्मद शाह ने ज़हीरुद्दीन लाहौरी को उपद्रव शान्त करने के लिये भेजा। जब मलिक ज़हीरुद्दीन उस मैदान में, जहाँ फ़ीरोज़ शाह की सेना एकत्र थी, पहुँचा, तो सेना वालों ने उसे पत्थर द्वारा घायल कर दिया। वह इस (२३८) दशा में शाहज़ादा मुहम्मद शाह के समक्ष पहुँचा। शाहज़ादे ने सेना एकत्र करके शाही सेना से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अन्त में शाहज़ादे की सेना को विजय तथा सुल्तान की सेना की पराजय हुई। सेना वाले शरण हेतु सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पास पहुँचे। दो दिन तक युद्ध होता रहा। तीसरे दिन फ़ीरोज़ शाह के दासों ने जब अपने आपको पराजित होते हुये देखा तो उन्होंने सुल्तान को रणक्षेत्र में लाकर सबको दिखाया। जब मुहम्मद शाह की सेना के लोगों तथा उसके महावतों ने सुल्तान को देखा तो उन्होंने युद्ध बन्द कर दिया और सुल्तान की ओर पहुँच गये। सुल्तान मुहम्मद की सेना छिन्न भिन्न हो गई। वह उन थोड़े से आदमियों को लेकर जो उसके साथ रह गये थे सिरमूर पर्वत की ओर चल दिया। सुल्तान की सेना वाले जिसमें लगभग १ लाख आदमी-अश्वारोही तथा पदाति-थे मुहम्मद शाह एवं उसके हितैषियों के घरों को नष्ट-भ्रष्ट करने लगे।

सुल्तान ने ईर्ष्यालुओं के कहने से, मुहम्मद शाह से रुष्ट होकर, तुग़लुक़ शाह बिन फ़तह ख़ां को, जो उसका पौत्र था, अपना उत्तराधिकारी बनाकर राज्य प्रदान कर दिया। तुग़लुक़

शाह ने सुल्तान के जामाता अमीर हसन को, जो मुहम्मद शाह का विश्वासपात्र था, दरबार में बुलाकर हत्या करा दी। उसने सामाना के अमीर ग़ालिब ख़ाँ को मुहम्मद शाह का साथ देने के कारण बन्दी बना लिया और उसे निर्वासित करके बिहार भिजवा दिया। सामाना मलिक सुल्तान को प्रदान कर दिया। १८ रमज़ान ७९० हि० (२० सितम्बर १३८८ ई०) में सुल्तान फ़ीरोज़ की मृत्यु हो गई। उसने ३८ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

इस न्याय को शरण देने वाले बादशाह ने न्याय एवं परोपकार के बहुत से अधिनियम तथा शान्ति के अनेक क़ायदे प्रजा के लिए तैयार कराये। उसके अधिनियमों में से ३ अधिनियम उत्तम थे।

(१) मृत्यु-दण्ड को पूर्णतः त्याग दिया और किसी भी मुसलमान अथवा मनुष्य की (२३९) हत्या न कराई। इनामों, अदरारों तथा प्रजा के हित के कार्यों के कारण प्रजा को कठोर-दण्ड की आवश्यकता न होती थी। यद्यपि कठोर-दण्ड राज्य का महत्वपूर्ण अंश है, उसके उत्कृष्ट गुणों तथा चरित्र के कारण प्रजा के प्रति न्याय तथा इन्साफ़ होता था और अत्याचार के द्वार बन्द हो गये थे। उसके राज्यकाल में किसी भी मनुष्य को किसी अन्य मनुष्य को कष्ट पहुँचाने का साहस न होता था।

(२) ख़राज को हासिल (उत्पत्ति) तथा प्रजा के सामर्थ्य के अनुसार निश्चित किया। वृद्धि तथा तौफ़ीर को क्षमा कर दिया। किसी की बात प्रजा के विरुद्ध न सुनता था। इस नियम के कारण प्रजा का कल्याण, उस का परोपकार तथा प्रजा की संख्या में वृद्धि हुई।

(३) उसने राज्य व्यवस्था के लिए सच्चे ईमानदार तथा ईश्वर का भय करने वाले आमिल नियुक्त किये। वह किसी दुष्ट को कोई सेवा न प्रदान करता था और उन्हें हाकिम तथा अमीर न बनाता था। इस नियम के अनुसार कि "प्रजा बादशाह के धर्म का पालन करती है" समस्त प्रजा अपने अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन करती थी। वे लोग न्याय तथा इन्साफ़ से कार्य करते थे। किसी को भी अत्याचार तथा ज़ुल्म करने का साहस न होता था। छोटे बड़े सभी लोग शांति तथा आनन्द का जीवन व्यतीत करते थे। हिन्दुस्तान के अन्य बादशाहों की अपेक्षा उसने अधिक दान-पुण्य के कार्य किये और इनाम तथा अदरार बाँटे।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह ने एक पुस्तक की भी रचना की जिसमें अपने राज्य का हाल संकलित किया और उसका नाम फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही रखा। मैंने उसका अवलोकन किया है। उसमें से कुछ मुख्य बातें प्रस्तुत की जाती हैं ताकि उस फ़रिश्ते जैसे गुणों वाले बादशाह की नेकी तथा उत्कृष्ट गुण के विषय में जानकारी प्राप्त करके लोग शिक्षा ग्रहण करें।

उस न्यायकारी बादशाह ने फ़ीरोज़ाबाद की जामा मस्जिद के उच्च गुम्बद पर, जो अष्टाकार है, उस पुस्तक का वृत्तान्त ८ अध्यायों में विभाजित करके पत्थर पर खुदवा दिया।

इसका एक अध्याय मस्जिद के वक़्फ़ों और तत्सम्बन्धी व्यय के विषय में है जो लिखवाया गया।

दूसरे अध्याय में वह लिखता है कि पिछले सुल्तानों के समय में साधारण अपराधों पर मुसलमानों का रक्तपात होता था और नाना प्रकार के कठोर-दण्ड दिए जाते थे, उदाहरणार्थ (२४०) हाथ-पैर, नाक-कान का कटवा लिया जाना तथा अन्धा और बहरा बना देना। मनुष्य के शरीर की भुजाओं का मुंगरी द्वारा कुटवाना, शरीर को अग्नि से जलवा देना, तथा हाथ पैर और सीने में कीलें ठुकवा देना, खाल खिंचवा लेना तथा पावों की नस कटवा देना, मनुष्य के दो टुकड़े

करा देना तथा इसी प्रकार के अन्य दण्ड। ईश्वर ने मुझे इस योग्य बनाया कि मैंने इन कार्यों को बन्द करा दिया।

पिछले सुल्तानों के नाम, जिनके प्रयत्न से हिन्दुस्तान में इस्लाम प्रसारित हुआ था, खुत्बों से निकाल दिये गये थे। मैंने उनके नामों को खुत्बों में सम्मिलित करवा दिया ताकि इस प्रकार उनकी मुक्ति के लिये सर्वदा प्रार्थना होती रहे।

इसके अतिरिक्त अत्यधिक अनुचित कर लगाये जाते थे और उन्हें कठोरता-पूर्वक वसूल किया जाता था, उदाहरणार्थ चराई, गुल फ़रोशी, नीलगरी, माही फ़रोशी, नद्दाफ़ी, रीसमान फ़रोशी, नखवद बिरियांगरी, निकाही, खुमारखाना, दारोग़गी, कोतवाली तथा एहतेसाब[1], सभी को बन्द करा दिया।

मैंने आदेश दिया कि जो कर मुहम्मद साहब की सुन्नत के विरुद्ध हों वह न लिये जायँ। इससे पूर्व यह प्रथा थी कि युद्ध के ग़नीमत के धन में से ५वाँ भाग सैनिकों को दिया जाता था और शेष ५ भाग दीवान में सम्मिलित कर लिये जाते थे। मैंने पवित्र शरीअत के अनुसार आदेश दिया कि ५वाँ भाग दीवान में दिया जाया करे।

अधर्मियों, मुनुलहिदों तथा इस्लाम में अनुचित नई प्रथायें सम्मिलित करके लोगों को मार्ग-भ्रष्ट करने वालों को अपने राज्य से निकलवा दिया और उनकी प्रथायें, आदतें तथा पुस्तकें नष्ट करा दीं।

इसके अतिरिक्त पुरुषों में यह प्रथा हो गई थी कि वे रेशमी वस्त्र धारण करते थे तथा सोने चाँदी का प्रयोग करते थे, मैंने इसका अन्त करा दिया और शरा के अनुसार चीज़ें प्रयोग करने का आदेश दे दिया।

मुसलमान तथा काफ़िर स्त्रियाँ मज़ारों तथा मंदिरों में जाती थीं और इससे बड़ी खराबी होती थी। मैंने इसे रोक दिया।

मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदों का निर्माण कराया। प्राचीन सुल्तानों की बनवाई हुई (२४१) जो मस्जिदें, खानक़ाहें, मदरसे, कुयें, हौज़, पुल तथा मक़बरे नष्ट हो गये थे उनका मैंने पुनः निर्माण कराया और उनके व्यय हेतु वक़्फ़ की व्यवस्था कराई।

मेरे स्वामी स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद शाह ने जिन लोगों की हत्या करा दी थी तथा जिन लोगों के शरीरों के अङ्ग भङ्ग करा दिये थे, उनके पुत्रों तथा उत्तराधिकारियों में से जो कोई भी मुझे मिल गया उसको मैंने इनाम तथा वृत्ति द्वारा प्रसन्न किया और उनसे यह लिखवा लिया कि सुल्तान मुहम्मद शाह के प्रति उन्हें अब कोई शिकायत नहीं। उन पत्रों पर प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्तियों की मुहरें कराईं और सुल्तान मुहम्मद के मक़बरे में रखवा दिया।

जहाँ कहीं मैं किसी एकान्तवासी तथा फ़क़ीर के विषय में सुन पाता था मैं उसकी सेवा में उपस्थित होता था और उसको प्रसन्न करना अपने लिये आवश्यक समझता था।

जो सैनिक तथा अमीर वृद्ध हो चुके थे उन्हें मैंने तोबा करने की शिक्षा दी और उनके वज़ीफ़े तथा अदरार निश्चित कर दिये ताकि वे परलोक के कार्य में व्यस्त हो जायँ।

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह द्वारा निर्मित जो भवन अथवा अन्य अवशेष मिलते हैं, उनका विवरण इस प्रकार है: नहरों के बाँध ५०, मस्जिदें ४०, मदरसे ३०, खानक़ाहें २०, राज प्रासाद १००, सरायें २००, नगर १००, हौज़ ५, चिकित्सालय १०, मक़बरे १५०, स्नानागार ३०, मीनार १५०, पुल १५०, उद्यान अगणित।

---

१ इसके विषय में फ़तूहाते फ़ीरोज़शाही का अनुवाद देखिये।

(२४३) पद रुक्नुद्दीन को प्रदान हुआ। कुछ समय उपरान्त अबू बक्र शाह को ज्ञात हुआ कि रुक्नुद्दीन जन्दा फ़ीरोज़ शाह के कुछ अमीरों से मिल कर उसे हटा कर स्वयं बादशाह बनने का षड्यन्त्र रच रहा है। अबू बक्र शाह ने कुछ अमीरों से मिल कर पहले ही रुक्नुद्दीन जन्दा की हत्या करा दी और जो लोग रुक्नुद्दीन से मिल गये थे उन्हें भी तलवार के घाट उतार दिया। अबू बक्र शाह ने देहली पर अधिकार जमा कर बादशाहों के हाथियों तथा ख़ज़ानों को अपने अधिकार में कर लिया और पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुआ कि सामाना के अमीर सदा लोगों ने मलिक सुल्तान शाह ख़ुशदिल को जो सामाना का हाकिम था, २४ सफ़र (२२ फ़रवरी १३८९ ई०) को सुनाम के हौज़ पर तलवार तथा कटार से मार डाला और उसके घर को लूट लिया; उसका शीष शाहज़ादा मुहम्मद शाह के पास नगरकोट भेज दिया। सुल्तान मुहम्मद शाह नगरकोट से प्रस्थान करके जलन्धर के मार्ग से सामाना पहुँचा। रबी उल अव्वल मास (फ़रवरी-मार्च १३८९ ई०) में वह सिंहासनारूढ़ हुआ। सामाना के अमीराने सदा तथा पर्वत के आंचल के ज़मींदारों ने उसकी पुनः अधीनता स्वीकार कर ली। देहली के भी कुछ अमीर तथा मलिक अबू बक्र शाह से पृथक् होकर मुहम्मद शाह से मिल गये। २० हज़ार अश्वारोही तथा असंख्य पदाति उसके चारों ओर एकत्र हो गये। जब उसने सामाना से देहली की ओर प्रस्थान किया तो देहली पहुँचते पहुँचते उसकी सेना में ५० हज़ार अश्वारोही सम्मिलित हो गये। २५ रबी उल आख़िर ७९१ हि० (२३ अप्रैल १३८९ ई०) को सुल्तान मुहम्मद शाह जहाँ नुमा के राजप्रासाद में उतरा। अबू बक्र शाह ने मुहम्मद शाह की सेना से युद्ध करने के लिए अपनी सेना फ़ीरोज़ाबाद में छोड़ दी थी। अबू बक्र शाह के सैनिक २ जमादी उल अव्वल (२९ अप्रैल १३८९ ई०) को सुल्तान मुहम्मद के सैनिकों से फ़ीरोज़ाबाद की गलियों में युद्ध करने लगे। उसी दिन बहादुर नाहिर बहुत से सैनिकों को लेकर नगर में पहुँचा। अबू बक्र शाह की बड़ी ढाढ़स बँध गई। दूसरे (२४४) दिन अबू बक्र शाह ने युद्ध की तैयारी करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। मुहम्मद शाह पराजित हुआ। २ हज़ार अश्वारोहियों सहित यमुना नदी पार करके वह दोआब में प्रविष्ट हो गया। उसने अपने मँझले पुत्र हुमायूँ ख़ाँ को सेना एकत्र करने के लिए सामाना भेज दिया। मलिक ज़ियाउलमुल्क अबू रिजा, राय कमालुद्दीन माईन तथा राय ख़लजीन बहती को जो उस ओर के जागीरदार थे, उसके साथ कर दिया और स्वयं गंगा तट पर जलेसर नामक स्थान पर स्थान ग्रहण किया।

फ़ीरोज शाह के कुछ अमीर उदाहरणार्थ मलिक सरवर, शहनये शहर, मलिकुश्शर्क़, मुल्तान का हाकिम नसीरुलमुल्क तथा बिहार का हाकिम ख़वासुलमुल्क, अवध का हाकिम मलिक हुसामुद्दीन, सैफ़ुद्दीन मलिक कबीर, हुसामुद्दीन तथा मलिक दौलत यार क़न्नौज के हाकिम के पुत्र, राय शेर तथा अन्य राय ५० हज़ार अश्वारोहियों तथा अत्यधिक पदातियों को लेकर मुहम्मद शाह से मिले। मलिक सरवर को ख़्वाजये जहाँ की उपाधि दी गई। सैफ़ुद्दीन को सैफ़ ख़ाँ की उपाधि प्रदान की गई। नसीरुलमुल्क को ख़िज़्र ख़ाँ तथा राय शेर को राय-रायाँ की उपाधियाँ प्रदान हुईं।

शाबान मास (जुलाई-अगस्त) में वह पुनः युद्ध करने के लिए देहली की ओर रवाना हुआ। उसने कंदली नामक ग्राम में अबू बक्र शाह से युद्ध किया। क्योंकि सुल्तान मुहम्मद शाह के राज्य का समय अभी नहीं आया था, अतः मुहम्मद शाह की सेना को पराजय हुई। अबू बक्र शाह ३ कोस तक पीछा करके देहली वापस चला गया।

मुहम्मद शाह ने पुनः जलेसर में स्थान ग्रहण किया। उपर्युक्त वर्ष के रमज़ान (अगस्त-सितम्बर) मास में उसने मुल्तान, लाहौर तथा अन्य क़स्बों में यह आदेश भेजा कि जिस मुहल्ले तथा गली में फ़ीरोज़ शाह से दास मिलें उन्हें बन्दी बनाकर उनकी हत्या करा दी जाय। इस आदेश के पहुँचने पर बहुत से स्थानों पर एक ही दिन में अत्यधिक हत्याकाण्ड हुआ और प्रजा के कार्य अव्यवस्थित हो गये। इस प्रदेश की अधिकाँश जनता ने कर तथा खराज अदा करना बन्द कर दिया तथा वह उपद्रव और नाना प्रकार से विद्रोह करने लगी।

(२४५) मुहर्रम ७९२ हि० (दिसम्बर-जनवरी १३८९-९० ई०) में हुमायूँ खाँ ने अन्य अमीरों सहित उदाहरणार्थ सामाना के हाकिम ग़ालिब खाँ, ज़ियाउलमुल्क, अबू रिजा, मुबारक खाँ मल्लाहून तथा हिसार फ़ीरोज़ा के हाकिम शम्स खाँ, सेना एकत्र करके पानीपत पर चढ़ाई की तथा देहली के आस-पास के स्थानों को नष्ट कर दिया। अबू बक्र शाह ने एमादुल-मुल्क को ४ हज़ार अश्वारोही तथा अत्यधिक पदाति देकर उसके पास भेजा। पानीपत के समीप युद्ध हुआ। शाहज़ादा हुमायूँ खाँ की सेना की पराजय हुई और वह सामाना की ओर चल दिया। क्योंकि अबू बक्र शाह को निरन्तर विजय प्राप्त होती रही अतः उपर्युक्त वर्ष के जमादी उल अव्वल मास (अप्रैल-मई १३९० ई०) में अत्यधिक सेना लेकर उसने मुहम्मद से युद्ध करने के लिए जलेसर की ओर प्रस्थान किया। देहली से २० कोस पर पड़ाव हुआ। मुहम्मद शाह जलेसर में अधिकांश सेना को छोड़ कर ४ हज़ार वीरों सहित पृथक् हो गया और अबू बक्र शाह की सेना से युद्ध न करके बाईं ओर के मार्ग से देहली पहुँच गया। अबू बक्र शाह ने जिन लोगों को शहर देहली के द्वारों की रक्षा हेतु नियुक्त किया था उन्होंने थोड़ा बहुत युद्ध किया। मुहम्मद शाह ने बदायूँ द्वार में आग लगा दी और नगर में प्रविष्ट होकर राजप्रासाद में उतरा। शहर के लोग प्रतिष्ठित तथा साधारण व्यक्ति सुल्तान मुहम्मद से मिल गये।

अबू बक्र शाह समाचार पाकर उसी दिन एक पहर दिन चढ़े सेना लेकर शहर (देहली) पहुँचा और बहाउद्दीन जंगी की, जिसे सुल्तान मुहम्मद शाह ने द्वारों की रक्षा हेतु नियुक्त किया था, हत्या करा दी और शुभ राजप्रासाद की ओर रवाना हुआ। मुहम्मद शाह विवश होकर हौज़े खास के द्वार से बाहर निकल गया और पुनः जलेसर पहुँच कर अपनी सेना से मिल गया। मुहम्मद शाह के कुछ अमीर, उदाहरणार्थ खलील खाँ बारबक, मलिक आदम, (२४६) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह का भागिनेय इस्माईल बन्दी बना लिये गये और उनकी हत्या करदी गई। कुछ लोग युद्ध में मारे गये।

इसी वर्ष रमज़ान मास (अगस्त-सितम्बर १३९२ ई०) में मीर हाजिब सुल्तानी ने अबू बक्र शाह का विरोध प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के कुछ दासों ने जो अमीर हो गये थे विरोध शुरू कर दिया। सब लोगों ने गुप्त रूप से मुहम्मद शाह को पत्र लिखा। अबू बक्र शाह विवश होकर बहादुर नाहिर के कोटले की ओर उससे सहायता लेने चल दिया। मलिक शाहीन एमादुलमुल्क, मलिक बहरी तथा सफ़दर खाँ सुल्तानी को देहली छोड़ गया। उसने डेढ़ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह।

१९ रमजान (२८ अगस्त १३९० ई०) को मीर हाजिब तथा फ़ीरोज शाह के कुछ अन्य दासों के इस आशय के प्रार्थना-पत्र मुहम्मद शाह को प्राप्त हुये कि अबू बक्र शाह अपने

कुछ विश्वासपात्रों सहित कोटले की ओर चल दिया है। उन्होंने सुल्तान मुहम्मद के लघु-पुत्र खाने खानाँ को हाथी पर सवार किया और छत्र उसके सिर पर लगाया। १९ रमज़ान (३१ अगस्त १३९० ई०) को मुहम्मद शाह देहली पहुँचा और फ़ीरोज़ाबाद के राजप्रासाद में सिंहासनारूढ़ हुआ। मीर हाजिब सुल्तानी को विज़ारत का पद प्रदान किया और उसकी उपाधि इस्लाम खाँ रखी। फ़ीरोज़ शाह के दास तथा शहर (देहली) के सब लोग मुहम्मद शाह से मिल गये। कुछ दिन उपरान्त वह फ़ीरोज़ाबाद से देहली पहुँचा और शुभ राजप्रासाद में सिंहासनारूढ़ हुआ।

फ़ीरोज़ शाह के दासों के पास जो हाथी थे उन्हें उसने पकड़वा कर प्राचीन महावतों को सौंप दिया। फ़ीरोज़ शाह के दास इस कारण दुखी होकर देहली के बाहर चले गये। वे रातोंरात सपरिवार भाग कर नाहर के कोटले में पहुँच गये और अबू बक्र शाह से मिल गये। मुहम्मद शाह ने आदेश दिया कि शहर (देहली) में सुल्तान का जो कोई दास भी हो वह शहर के बाहर चला जाये। उन्हें तीन दिन का समय दिया जाता है। जो तीन दिन में बाहर न जायेगा और बन्दी बना लिया जायगा उसकी हत्या कर दी जायगी। प्रसिद्ध है कि सुल्तान के कुछ दास तीन दिन उपरान्त बन्दी बनाये गये। वे भय के कारण यह कहते थे कि हम असील[1] (२४७) हैं। सुल्तान मुहम्मद शाह ने कहा कि 'तुम लोगों में से जो कोई 'खराखरी' शब्द का उच्चारण कर ले वह असील है। सुल्तान जिस प्रकार चाहता था वे उस प्रकार उच्चारण न कर पाते थे और पूर्व अथवा बंगाल के मनुष्यों के समान उस शब्द का उच्चारण करते थे और उनकी हत्या कर दी जाती थी। पूर्व के बहुत से लोगों की जो असील थे और शुद्ध भाषा न बोल सकते थे, हत्या करा दी गई। ३ दिन उपरान्त शहर (देहली) फ़ीरोज़ शाह के दासों से, जिन्होंने सुल्तान मुहम्मद शाह का विरोध किया था, रिक्त हो गया।

मुहम्मद शाह अपने राज्य का शासन प्रबन्ध करने लगा। उसने चारों ओर से सेना एकत्र करके प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। उसका पुत्र हुमायूँ खाँ जो सामाना में था बहुत बड़ी सेना लेकर पहुंचा। मुहम्मद शाह की शक्ति बहुत बढ़ गई। हुमायूँ खाँ को इस्लाम खाँ, ग़ालिब खाँ, राय कमालुद्दीन तथा राय खलजीन के साथ अबू बक्र शाह से युद्ध करने के लिए नियुक्त कर दिया। जब यह सेना कोटला पहुँची तो मुहर्रम ७९३ हि० (दिसम्बर-जनवरी १३९१ ई०) में अबू बक्र शाह ने बहादुर नाहिर तथा फ़ीरोज़ शाह के दासों की सहायता से शाहज़ादा हुमायूँ खाँ की सेना पर, जब कि वह असावधान थी, आक्रमण कर दिया। कुछ लोगों को आहत कर दिया। इसी बीच में इस्लाम खाँ एक ओर से तैयार होकर पहुँच गया। इसी प्रकार शाहज़ादे ने अपनी सेना तैयार करके युद्ध आरम्भ कर दिया। प्रथम आक्रमण में अबू बक्र शाह अपने साथियों सहित पराजित होकर कोटला के क़िले में प्रविष्ट हो गया। जब यह समाचार मुहम्मद शाह को प्राप्त हुये तो वह निरन्तर कूच करके वहाँ पहुँच गया। अबू बक्र शाह तथा बहादुर नाहिर ने क्षमा याचना करके आज्ञाकारिता स्वीकार करली। बहादुर नाहिर को ख़िलअत प्रदान करके विदा कर दिया गया। अबू बक्र शाह को अपने साथ लेकर वह कन्दी पहुँचा और वहाँ से उसे पृथक् करके मेरठ के क़िले में भेज दिया। उसकी वहाँ मृत्यु हो गई। मुहम्मद शाह देहली की ओर चल दिया।

इसी बीच में गुजरात के हाकिम मुफ़र्रेह सुल्तानी के विद्रोह तथा अत्याचार का समाचार प्राप्त हुआ। उसने वज़ीहुलमुल्क के पुत्र ज़फ़र खाँ को गुजरात के शासन हेतु भेज दिया।

---

१ दास नहीं हैं।

(२४८) ७६४ हि० (१३९१-९२ ई०) में नरसिंह, सरदार हरन तथा वीरभानु के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुये। सुल्तान के आदेशानुसार इस्लाम खाँ को विद्रोहियों से युद्ध करने के लिए भेजा गया। नरसिंह ने इस्लाम खाँ से युद्ध किया और पराजित हुआ। बहुत से काफ़िर मारे गये। सुल्तान की सेना ने उसका पीछा किया। अन्त में उसने क्षमा-याचना की और इस्लाम खाँ के साथ देहली पहुंचा।

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुआ कि सरदार हरन ने बलाराम क़स्बे पर आक्रमण कर दिया है। सुल्तान ने स्वयं प्रस्थान किया और काली नदी के तट पर पहुँचा। वे भागकर इटावा के क़िले में प्रविष्ट हो गये। जिस दिन सुल्तान इटावा पहुंचा काफ़िरों ने रात्रि में क़िला छोड़ दिया और भाग खड़े हुये। दूसरे दिन सुल्तान ने क़िले को नष्ट करके क़न्नौज की ओर प्रस्थान किया। क़न्नौज के काफ़िरों तथा दलमऊ के रायों को दण्ड देकर जलेसर पहुंचा। वहाँ मुहम्मदाबाद नामक क़िले का निर्माण कराया।

उपर्युक्त वर्ष के रजब मास (मई-जून १३९२ ई०) में ख्वाजये जहाँ नायब का पत्र, जो शहर (देहली) में था, इस आशय का प्राप्त हुआ कि इस्लाम खाँ विद्रोह के विचार से पंजाब पहुँचकर उपद्रव मचाने की योजना बना रहा है। सुल्तान यह समाचार सुनकर जलेसर की सेना सहित शहर (देहली) में प्रविष्ट हुआ और एक गोष्ठी आयोजित की। उसने इस्लाम खाँ को बुलवा कर उससे वास्तविकता के विषय में प्रश्न किया। उसने स्वीकार नहीं किया। एक हिन्दू जिसका नाम जाजू था तथा उसके भतीजे ने जो उसके शत्रु को उसके विरुद्ध झूठी गवाही दी। सुल्तान ने इस्लाम खाँ की हत्या करा दी और खाने जहाँ को वज़ीर नियुक्त कर दिया। मलिक मुक़र्रबुलमुल्क को सेना देकर मुहम्मदाबाद भेजा।

७९५ हि० (१३९२-९३ ई०) में सरदार हरन, जीतसिंह राठौर तथा बहासुहों के मुक़द्दम बीरभानु के विद्रोह करने के समाचार प्राप्त हुए। सुल्तान ने इस विद्रोह को शान्त करने के लिए मलिक मुक़र्रबुलमुल्क को भेजा। जब दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ तो मलिक मुक़र्रबुलमुल्क ने संधि का प्रस्ताव रख कर उपर्युक्त रायों को अपना आज्ञाकारी बना लिया और अपने साथ क़न्नौज ले गया और छल द्वारा उनकी हत्या करा दी। राये सेर (सुमेर ?) भाग कर इटावा पहुंचा। मलिक मुक़र्रबुलमुल्क लौटकर मुहम्मदाबाद पहुँचा।

(२४९) सुल्तान ने उसी वर्ष के शव्वाल मास (अगस्त-सितम्बर १३९३ ई०) में मेवात की ओर प्रस्थान किया तथा लूट मार प्रारम्भ करदी। वह मुहम्मदाबाद से जलेसर पहुँच कर रुग्ण हो गया। उसी समय समाचार प्राप्त हुआ कि बहादुर नाहिर ने देहली के कुछ स्थानों पर आक्रमण करके उनमें उत्पात मचा रखा है। सुल्तान ने निर्बल होने के बावजूद भी मेवात की ओर प्रस्थान किया। जब वह कोटल पहुँचा तो बहादुर नाहिर ने उससे युद्ध किया किन्तु पराजित होकर कोटला में बन्द हो गया। क्योंकि कोटला में ठहरने का उसमें शक्ति न थी अतः वह कोटला से भाग कर जर्जर में घुस गया। सुल्तान ने मुहम्मदाबाद में जिस भवन का निर्माण कराया था उसके प्रबन्ध हेतु वह वहां पहुंचा। इसी बीच में वह और अधिक रुग्ण हो गया। रबी उल अव्वल ७९६ हि० (जनवरी-फ़रवरी १३९४ ई०) में उसने शाहज़ादा हुमायूँ खाँ को शेखा खोखर के विरुद्ध युद्ध करने के लिये भेजा। शेखा ने विरोध करके लाहौर का क़िला अपने अधिकार में कर लिया था। शाहज़ादा लाहौर की ओर प्रस्थान करना चाहता था कि १७ रबी उल अव्वल (२० जनवरी १३९४ ई०) को सुल्तान की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। शाहज़ादा शहर (देहली) में ठहर गया। सुल्तान मुहम्मद ने ६ वर्ष तथा ७ मास तक राज्य किया।

सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दरशाह

वह सुल्तान मुहम्मद शाह का मंझला पुत्र था और उसकी उपाधि हुमायूं खाँ थी। मुहम्मद शाह की मृत्यु के उपरान्त ३ दिन तक वह शोक सम्बन्धी रस्मों को पूरा करता रहा। १९ रबी उल अव्वल (२२ जनवरी १३९४ ई०) को वह अमीरों, मलिकों, सैयिदों, क़ाज़ियों तथा देहली के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सहमति से सिंहासनारूढ़ हुआ। ख्वाजये जहाँ को विजारत प्रदान की। शेष पदाधिकारियों को उसी प्रकार रहने दिया। ५ जमादी उल-अव्वल (८ मार्च १३९४ ई०) को वह रुग्ण हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। उसने एक मास (२५०) और १६ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान मुहम्मद शाह।

वह सुल्तान मुहम्मद शाह का लघु पुत्र था। जब सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई तो अधिकाँश अमीरों, उदाहरणार्थ सामाना के हाकिम ग़ालिब खाँ, राय कमालुद्दीन माईन, मुबारक खाँ, हलाजू, ख्वास खाँ—इन्द्री तथा कर्नाल के हाकिम—ने शहर (देहली) से निकल कर सुल्तान महमूद शाह की अनुमति के बिना अपनी जागीरों को जाना चाहा। ख़ाने जहां को सूचना हो गई। वह उन्हें सान्त्वना देकर शहर (देहली) लाया। २० जमादी उल अव्वल (२३ मार्च १३९४ ई०) को अमीरों, मलिकों तथा शहर देहली के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के प्रयत्न से वह शुभ राजप्रासाद में सिंहासनारूढ़ हुआ और सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद शाह उसकी उपाधि हुई। उसने ख्वाजये जहां को वज़ीर नियुक्त किया। उसने मुक़र्रबुलमुल्क को मुक़र्रब खाँ की उपाधि प्रदान की और उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अब्दुर्रशीद सुल्तानी को सआदत खां की उपाधि दी और उसे बारबेगी बनाया। मलिक सारंग को सारंग खाँ की उपाधि प्रदान हुई और दीबालपुर का हाकिम नियुक्त किया गया। मलिक दौलतयार दबीर को दौलत खाँ की उपाधि प्रदान की; आरिज़े ममालिक का पद जो इससे पूर्व एमादुलमुल्क को प्राप्त था उसे प्रदान किया।

हिन्दुस्तान के निचले भाग—जौनपुर तथा उसके आसपास के स्थान—ज़मींदारों के प्रभुत्व के कारण अव्यवस्थित हो गये थे। ख़्वाजा सरवर की, जो ख़्वाजये जहाँ हो गया था और जिसे सुल्तान मुहम्मद ने जौनपुर की ओर नियुक्त किया था, उपाधि सुल्तानुश्शर्क़ निश्चित की और क़न्नौज से बिहार तक उसे सौंप दिया।

रजब ७९६ हि० (मई १३९४ ई०) में २० हाथी तथा भारी सेना देकर उसे बिदा किया। सुल्तानुश्शर्क़ ने उस प्रदेश में पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया और उस प्रदेश के आसपास (२५१) के ज़मींदारों को अपने अधीन कर लिया। बहुत से क़िलों का जो ध्वस्त हो गये थे पुनः निर्माण कराया। जाजनगर के राय तथा लखनौती के बादशाह जो उपहार प्रतिवर्ष सुल्तान फ़ीरोज़ शाह को भेजा करते थे, वे उसे भेजने लगे।

उसी वर्ष सुल्तान के आदेशानुसार सारंग खाँ दीबालपुर पर अधिकार जमाने तथा शेखा खोखर के उपद्रव को शान्त करने के लिये भेजा गया। शाबान मास (जून १३९४ ई०) में वह दीबालपुर पहुँचा और सेना की व्यवस्था की। ज़ीक़ाद ७९६ हि० (अगस्त-सितम्बर १३९४ ई०)में राय खलजीन भट्टी, राय दाऊद, कमालुद्दीन माईन तथा मुल्तान की सेना को लेकर उस ओर रवाना हुआ। जब वह लाहौर के निकट पहुँचा तो शेखा खोखर ने अत्यधिक सेना

लेकर लाहौर के करोही द्वार पर युद्ध किया। सारंग ख़ाँ को विजय प्राप्त हुई। शेखा खोखर पराजित होकर जम्मू पर्वत की ओर भाग गया। दूसरे दिन सारंग ख़ाँ ने लाहौर के क़िले को भी अपने अधिकार में कर लिया। अपने भाई मलिक कन्धू को आदिल ख़ाँ की उपाधि प्रदान करके वहीं छोड़ दिया और स्वयं दीवालपुर पहुँचा।

उपर्युक्त वर्ष में शाबान मास (जून १३९४ ई०) में सुल्तान महमूद शाह, मुक़र्रब ख़ाँ तथा कुछ हाथी और खासा ख़ेल के समूहों को शहर में छोड़ कर स्वयं सआदत ख़ाँ सहित ग्वालियर तथा बयाना की ओर गया। जब सुल्तान ग्वालियर के निकट पहुंचा तो मलिक अला उद्दीन धारवाल, मुबारक ख़ाँ, मलिक राजू का पुत्र तथा सारंग ख़ाँ का भाई मल्लू, सआदत ख़ाँ के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने लगे। सआदत ख़ाँ को सूचना मिल गई। उसने मलिक अलाउद्दीन तथा मुबारक ख़ाँ को बन्दी बना कर मरवा दिया। मल्लू भाग कर मुक़र्रब ख़ाँ के पास देहली पहुंचा।

सुल्तान शीघ्रातिशीघ्र देहली वापस हुआ। मुक़र्रब ख़ाँ उसके स्वागतार्थ बढ़ा। जब मल्लू के आने के कारण सुल्तान के क्रोध का उसे पता चला तो वह किसी न किसी युक्ति (२५२) से शहर (देहली) पहुँचा और विरोध का झण्डा बुलन्द कर दिया। सुल्तान ने सआदत ख़ाँ सहित शहर को घेर लिया और नित्य प्रति युद्ध होने लगा। ३ मास तक इसी प्रकार युद्ध होता रहा। इस समय मुक़र्रब ख़ाँ के कुछ हितैषियों ने सुल्तान को धोखा देकर सआदत ख़ाँ से पृथक् कर दिया और उसे शहर में लाये। हाथी घोड़े तथा राज्य की धन सम्पत्ति सआदत ख़ाँ के पास रह गई। मुक़र्रब ख़ाँ को सुल्तान के आने के कारण शक्ति प्राप्त हो गई और वह युद्ध के विचार करके बाहर निकला किन्तु पराजित हुआ और पुनः क़िले में बन्द हो गया। जब सआदत ख़ाँ ने देखा कि देहली की विजय बड़ी कठिन है और वर्षा ऋतु आ गई है तो वह शहर से निकल कर फ़ीरोज़ाबाद पहुंचा। कुछ विशेष व्यक्तियों की सहमति से नुसरत शाह बिन (पुत्र) फ़तह ख़ाँ बिन (पुत्र) फ़ीरोज शाह को जो मेवात में था बुलवाया। उपर्युक्त वर्ष के रबी उल अव्वल मास (दिसम्बर १३९४ ई०) में फ़ीरोज़ाबाद के राजसिंहासन पर आरूढ़ हो गया और उसने नासिरुद्दीन नुसरत शाह की उपाधि धारण कर ली।

जब नुसरत शाह के अमीरों ने देखा कि नुसरत शाह कठपुतली से अधिक नहीं है तो उन्होंने किसी युक्ति से नुसरत शाह को सआदत ख़ाँ से पृथक् कर दिया और संगठित होकर सआदत ख़ाँ पर जो असावधान था पहुंच गये। सआदत ख़ां अपने आप में युद्ध की शक्ति न देख कर देहली की ओर चला गया और मुक़र्रब ख़ाँ से मिल गया। उस विश्वासघाती ने उसे किसी बहाने से बन्दी बनाकर मरवा डाला। नुसरत शाह के अमीरों में से मुहम्मद मुज़फ़्फ़र, शिहाब नाहिर, फ़ज़्लुल्लाह बलख़ी तथा फ़ीरोज शाह के घर वालों ने नुसरत शाह की अधीनता स्वीकार की। मुहम्मद मुज़फ़्फ़र को वकीले ममालिक बनाकर तातार ख़ाँ की उपाधि दी गई। शिहाब नाहिर को शिहाब ख़ाँ की तथा फ़ज़लुल्लाह बलख़ी को क़ुतलुग़ ख़ाँ की उपाधि दी गई। देहली से फ़ीरोज़ाबाद तक दो बादशाह हो गये। मुक़र्रब ख़ाँ ने बहादुर नाहिर को सेना सहित प्राचीन देहली के क़िले में छोड़ दिया।

मल्लू की उपाधि इक़बाल ख़ाँ रखी गई। बैरून का क़िला उसे सौंप दिया गया। देहली तथा फ़ीरोज़ाबाद के मध्य में नित्य युद्ध होते थे। दोआब के मध्य के कुछ परगने, पानीपत, सोनपत, रोहतक, झज्झर तथा देहली के २० कोस तक के स्थान नुसरत शाह के अधिकार में (२५३) रहे। महमूद शाह के पास देहली के क़िले तथा ख़ज़ाने के अतिरिक्त अन्य स्थान न

रहे। इन दोनों बादशाहों के मलिकों तथा अमीरों ने प्रत्येक प्रदेश पर अधिकार जमा कर अपने आपको हाकिम तथा शासक बना लिया। ३ वर्ष तक यही दशा रही।

७९८ हि० (१३९५-९६ ई०) में दीबालपुर तथा लाहौर का हाकिम सारंग खाँ जो वास्तव में महमूद शाह की ओर से नियुक्त था, मुल्तान के हाकिम खिज़्र खाँ का विरोधी बन गया। मलिक भट्टी के कुछ दास सारंग खाँ से मिल गये। सारंग खाँ की शक्ति बढ़ गई। उसने मुल्तान पर अधिकार जमा लिया। रमज़ान ७९६ हि० (मई-जून १३९४ ई०) में उसने सेना एकत्र करके सामाना के हाकिम ग़ालिब खाँ पर, जो नुसरत शाह की ओर से था, आक्रमण किया। ग़ालिब खाँ युद्ध में परास्त हुआ और पानीपत में तातार खाँ के समक्ष पहुँचा। नुसरत शाह ने यह समाचार पाकर १० हाथी तथा कुछ सैनिक सहायतार्थ तातार खाँ को भेजा। ११ मुहर्रम ८०० हि० (४ अक्तूबर १३९७ ई०) को कोटला ग्राम के निकट युद्ध हुआ। सारंग खाँ पराजित होकर मुल्तान की ओर चला गया। मलिक अलास ने सामाना पर अधिकार जमाकर उसे ग़ालिब खाँ के सुपुर्द कर दिया और तलौंदी तक उसका पीछा करके तातार खां लौट गया।

उपर्युक्त वर्ष के रबी उल अव्वल मास (नवम्बर-दिसम्बर १३९७ ई०) में साहेब क़िरान तैमूर गुर्गान के पौत्र मिर्ज़ा पीर मुहम्मद ने सिन्ध नदी पार करके उच्छ के क़िले को घेर लिया। मलिक अली, जो सारंग खाँ की ओर से उच्छ का हाकिम था, घिर गया। एक मास तक युद्ध होता रहा। सारंग खाँ ने, मलिक ताजुद्दीन नायब को ४ हज़ार प्रतिष्ठित सवार देकर मलिक अली की सहायतार्थ भेजा। मिर्ज़ा पीर मुहम्मद ने यह सूचना पाकर क़िला छोड़ दिया और बढ़ कर शत्रुओं पर आक्रमण कर दिया। मलिक ताजुद्दीन पराजित हुआ। मिर्ज़ा पीर मुहम्मद (२५४) ने पीछे से आकर मुल्तान के क़िले को घेर लिया। छः मास तक सारंग खाँ युद्ध करता रहा। नित्यप्रति युद्ध होता था। अन्त में उसने क्षमा याचना करके पीर मुहम्मद की अधीनता स्वीकार कर ली। मिर्ज़ा पीर मुहम्मद मुल्तान विजय के कुछ दिन उपरान्त तक वहाँ ठहरा रहा।

उपर्युक्त वर्ष के शव्वाल मास (जून-जुलाई १३९८ ई०) में इक़बाल खाँ नुसरत शाह की सेवा में पहुँचा। शेख क़ुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के मज़ार में क़ुरान शरीफ़ को मध्यस्थ बनाकर दोनों पक्ष वचन-बद्ध हुये। नुसरत शाह को वे सेना तथा हाथियों सहित जहाँ पनाह के क़िले में ले गये। महमूद शाह, मुक़र्रब खाँ तथा बहादुर नाहिर सहित प्राचीन देहली में क़िला बन्द रहा। तीसरे दिन इक़बाल खाँ ने छल तथा विश्वासघात द्वारा नुसरत शाह को असावधान बनाकर अपने अधिकार में करना चाहा। परन्तु नुसरत शाह विवश होकर क़िले के बाहर निकला और कुछ व्यक्तियों सहित फ़ीरोज़ाबाद पहुँच गया। वहाँ भी न ठहर सकने के कारण वह तातार खाँ वज़ीर के समक्ष पहुँचा। फ़ीरोज़ाबाद इक़बाल खाँ के अधीन हो गया। मुक़र्रब खाँ जहाँ पनाह के क़िले में प्रविष्ट होकर अपनी रक्षा करने लगा। इक़बाल खाँ सेना एकत्र करके मुक़र्रब खाँ के घर जब वह असावधान था पहुँचा और उसे क्षमा न प्रदान की और उसकी हत्या कर दी। सुल्तान महमूद शाह को कोई कष्ट न पहुँचाया और उसे कठपुतली बना कर स्वयं राज्य करने लगा।

ज़ीक़ाद मास (जुलाई-अगस्त १३९८ ई०) में इक़बाल खाँ तातार खां पर आक्रमण करने के लिए पानीपत पहुँचा। तातार खाँ ने कुछ लोगों को थोड़े से हाथियों सहित क़िले के भीतर छोड़ दिया और अन्य मार्ग से देहली की ओर प्रस्थान किया। ३ दिन उपरान्त पानीपत के क़िले पर विजय प्राप्त हो गई। तातार खाँ के हाथी तथा सेना इक़बाल खाँ के

अधिकार में आ गये। तातार खाँ प्रयत्न के बावजूद देहली के क़िले पर विजय प्राप्त न कर सका और पानीपत की विजय के समाचार पाकर निःसहाय अवस्था में अपने पिता के पास गुजरात पहुँच गया। इक़बाल खाँ देहली आया। तातार खाँ के जामाता नसीरुलमुल्क को, जो इक़बाल खाँ का हितैषी था और इक़बाल खाँ के चले जाने के कारण तातार खाँ का सहायक हो गया था, अली खाँ की उपाधि प्रदान की। सामाना से दोआब के मध्य तक का भाग उसे सौंप दिया और वह स्थाई रूप से राज्य करने लगा।

(२५५) सफ़र ८०१ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १३९८ ई०) में यह सूचना प्राप्त हुई कि साहेब क़िरान अमीर तैमूर गुर्गान ने तलम्बा नामक स्थान को विध्वंस करके मुल्तान में पड़ाव किया है और जो लोग मिर्ज़ा पीर मुहम्मद द्वारा बन्दी बनाये गये थे उन सबकी हत्या करा दी है। इक़बाल खाँ यह सूचना पाकर बड़ा भयभीत हुआ और सेना तथा सामग्री एकत्र कराने लगा। साहेब क़िरान ने मुल्तान से प्रस्थान करके भटनीर से क़िले को घेर लिया। राय खलजीन भट्टी को बन्दी बना लिया। जो लोग घिरे हुये थे उनकी हत्या करादी। वहाँ से उन्होंने सामाना के आसपास तक के स्थानों पर आक्रमण किया। दीबालपुर, अजोधन तथा सरसुती के कुछ लोग भागकर देहली पहुँच गये। बहुत से लोग बन्दी बना लिये गये और उनकी हत्या करा दी गई। अमीर साहेब क़िरान ने वहाँ से प्रस्थान किया और दोआब के मध्य की विलायत में पहुँचे। अधिकांश स्थानों को विध्वन्स करके तथा वहाँ के निवासियों को बन्दी बनाकर, लोनी नामक क़स्बे में पड़ाव किया। कहा जाता है कि गंगा तट से सिन्ध तट तक लगभग ५० हज़ार हिन्दुस्तान के निवासी बन्दी बनाये गये; बहुत से लोगों की हत्या करादी गई। अधिकांश लोग भाग भाग कर पर्वतों में प्रविष्ट हो गये।

जमादी उल अव्वल ८०१ हि० (जनवरी-फ़रवरी १३९९ ई०) में अमीर तैमूर ने यमुना नदी पार की और फ़ीरोज़ाबाद में पड़ाव किया। दूसरे दिन हौज़े ख़ास के निकट पड़ाव किया। इक़बाल खाँ शहर (देहली) के बाहर निकला और विचित्र प्रकार के कार्य करने लगा। वह तैमूर की सेना के वीरों के प्रथम आक्रमण में ही पराजित हो गया और शहर (देहली) में प्रविष्ट हो गया। बहुत से लोग पद-दलित हो गये और बहुत से लोगों की हत्या करादी गई तथा बन्दी बना लिये गये। उसके सैनिक तथा हाथियों की बहुत बड़ी संख्या साहेब क़िरान के अधीन हो गई। रात्रि में मल्लू खाँ अपने परिवार को छोड़कर बरन क़स्बे की ओर चल दिया। सुल्तान महमूद अपने थोड़े से सेवकों तथा विश्वासपात्रों को लेकर गुजरात चल दिया। दूसरे दिन साहेब क़िरान ने शहर (देहली) वालों को अमान दे दी और अमानी का कर एकत्र करने के लिए कुछ लोगों को नियुक्त कर दिया। संयोगवश कर वसूल करने वालों की कठोरता के कारण शहर (देहली) के कुछ लोगों ने कर देने से इनकार किया और कुछ कर वसूल करने वालों की हत्या करदी। साहेब क़िरान इससे अत्यधिक क्रोधित हुये और उन्होंने शहर (देहली) वालों की हत्या और उनको बन्दी बनाये जाने का आदेश दिया। उस दिन अत्यधिक (२५६) मनुष्यों की हत्या हुई और वे बन्दी बनाये गये। अन्त में उन लोगों को क्षमा करके उन्हें शान्ति प्रदान करदी गई।

कुछ दिन उपरान्त ख़िज़्र खाँ जो मेवात के पर्वत में घुस गया था, बहादुर नाहिर मुबारक़ खाँ तथा वज़ीर खाँ सहित क्षमा याचना करता हुआ साहेब क़िरान की सेवा में उपस्थित हुआ। साहेब क़िरान ने ख़िज़्र खाँ के अतिरिक्त, इस कारण कि वह सैयिद तथा नेक

था, सभी को बन्दी बना लिया और वहाँ से लौटने का आदेश दिया। वे पहाड़ों के आँचल से होते हुए वापस हुये और सिवालिक पर्वत के आँचल का प्रदेश तैमूर की सेना द्वारा विध्वंस हो गये।

जब साहेब क़िरान लाहौर पहुँचे तो शेखा खोखर को, जो सारंग खाँ की शत्रुता के कारण साहेब क़िरान से मिल गया था और अपने आपको मार्ग-दर्शक तथा हितैषी बताता था और जिसने लाहौर पर छल द्वारा अधिकार जमा लिया था, किसी न किसी युक्ति से बन्दी बना लिया गया। उसके परिवार तथा सम्बन्धियों को बन्दी बना लिया गया तथा लाहौर को विध्वन्स कर दिया गया। ख़िज्र खाँ को मुल्तान तथा दीबालपुर सौंप कर, साहेब क़िरान ने काबुल मार्ग से समरक़न्द की ओर प्रस्थान किया।

तारीख़े सिन्ध
अथवा
तारीख़े मासूमी

[लेखक—सैयिद मुहम्मद मासूम भक्करी]

[प्रकाशन—पूना १९३८ ई०]

(९४) कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान फ़ीरोज़ शाह सिंहासनारूढ़ हुआ और उसने देहली की ओर प्रस्थान किया। जाम खैरुद्दीन ने कुछ मंज़िलों तक उसका पीछा किया और सन्न के उपान्त से, जो सहवान के निकट है, लौट आया। सुल्तान फ़ीरोज शाह के हृदय में उसका भय था। जाम खैरुद्दीन ने सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के प्रस्थान के उपरान्त न्याय तथा (प्रजा के प्रति) उपकार प्रारम्भ कर दिया। प्रजा तथा सर्वसाधारण की देख भाल तथा समृद्धि की पूर्ण व्यवस्था करने लगा।

उस जाम के राज्य-काल की घटनाओं में एक बड़ी विचित्र घटना घटी। एक दिन वह अपने विश्वासपात्रों तथा सेवकों सहित भ्रमण कर रहा था। अचानक उसे एक खाई में मनुष्यों की हड्डियाँ दृष्टिगत हुईं। वह वहां पहुँचा और उसने उन्हें देख कर अपने सेवकों से कहा, (९५) "तुम जानते हो कि हड्डियां मुझ से क्या कह रही हैं ?" वे लोग सिर झुका कर चुप हो गये। जाम ने कहा "उन पर अत्याचार हुआ है और वे न्याय चाहते हैं।" उसने उन लोगों की मृत्यु के कारण जानने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। एक वृद्ध को जिसका उस स्थान से सम्बन्ध था बुलवाया और उससे उन हड्डियों के विषय में पूछा। वृद्ध ने बताया कि ७ वर्ष पूर्व एक कारवान गुजरात से इस स्थान पर आया था और अमुक समूह ने उनकी हत्या कर दी और उनकी धन-सम्पत्ति लूट ली। उनकी अधिकांश धन-सम्पत्ति मौजूद है। जब जाम को यह पता चला तो उसने समस्त धन एकत्र करने का आदेश दे दिया। उसमें से अधिकांश एकत्र कर लिया गया। उसने कुछ आदमी गुजरात के वाली के पास भेज कर कहलाया कि इस धन को जो लोग मारे गये थे, उनके उत्तराधिकारियों को पहुंचा दिया जाय और हत्यारों का उसने बध करा दिया दिया।

इसके कुछ वर्ष उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

जाम बाबनिया (बाँहबना)

अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वह अमीरों तथा राज्य के प्रतिष्ठित लोगों की सहमति से सिंहासनारूढ़ हुआ। इस बीच में सुल्तान फ़ीरोज़ शाह हिन्दुस्तान तथा गुजरात के शासन प्रबन्ध की ओर से निश्चिन्त हो गया था। उसने सिन्ध विजय करने का संकल्प किया। जाम बाबनिया उससे युद्ध करता रहा। सुल्तान फ़ीरोज शाह ३ मास तक उस क्षेत्र में ठहरा रहा। जब जल

की अधिकता एवं पिस्सुओं का बाहुल्य हो गया तो सुल्तान ने प्रथम वर्षा में पटन गुजरात को ओर प्रस्थान किया। वर्षा ऋतु के उपरान्त उसने पुनः आक्रमण किया और असंख्य सेना अपने साथ ले गया। घोर युद्ध हुआ। अन्त में जाम बाबनिया बन्दी बना लिया गया और समस्त सिन्ध प्रदेश सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के दासों के अधीन हो गया। सुल्तान जाम को अपने साथ देहली ले गया। वह बहुत समय तक सुल्तान की सेवा में रहा और बड़ी योग्यता से सेवा करता (६६) रहा। सुल्तान ने प्रसन्न होकर उसे बादशाही चत्र प्रदान किया और पुनः सिन्ध पर राज्य करने के लिये भेज दिया। १५ वर्ष तक राज्य करने के उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

परिशिष्ट

(अ) ख़ैरुल मजालिस
(शेख नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहली)

(ब) इन्शाये माहरू
(ऐनुलमुल्क ऐनुद्दीन अब्दुल्लाह माहरु)

(स) दीवाने मुतहर
(मुतहर कड़ा)

(द) सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा उसके
उत्तराधिकारियों के सिक्के

परिशिष्ट अ

ख़ैरुल मजालिस

[शेख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहली]
संकलनकर्त्ता—मौलाना हमीद क़लन्दर
[प्रकाशन—अलीगढ़ विश्व विद्यालय इतिहास विभाग नं० ५]

मजलिस[१] १

ख़्वाजा (नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहली) ने मुझसे (हमीद क़लन्दर) इस अवसर पर कहा कि "हम तुझे क़लन्दर कहें अथवा सूफ़ी ? क़लन्दर किस प्रकार कह सकते हैं ? तू विद्वान् है।" सेवक ने निवेदन किया कि मैं एक बार शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में था, शेख़ के समक्ष भोजन लगा हुआ था। शेख़ ने भोजन करते समय एक टिकिया तोड़ी और आधी अपने सामने रखली और आधी सेवक को दे दी। सेवक ने उस टिकिया को लेकर उसे आस्तीन में छिपा लिया। जब सेवक शेख़ के पास से बाहर निकला तो क़लन्दरों ने उपस्थित होकर कहा, "शेखज़ादा हमें कुछ दो।" मैंने कहा "मेरे पास कोई भी वस्तु नहीं।" क़लन्दरों को कश्फ़[२] द्वारा सब कुछ ज्ञात हो गया था। उन्होंने कहा कि "आधी टिकिया जो तुझे शेख़ से प्राप्त हुई है वही हमें दे दे।" सेवक उस समय बाल्यावस्था में था। उसे आश्चर्य हुआ कि उन्हें इस बात का किस प्रकार पता चल गया। वहाँ उनमें से कोई भी उपस्थित न था। विवश होकर वह आधी टिकिया निकाल कर उन्हें दे दी। क़लन्दर लोग उसी स्थान पर जो हदलीज़खाने[3] में किलो-खड़ी की जामा मस्जिद के निकट था बैठ गये और उसे टुकड़े-टुकड़े करके खा गये। इसी बीच में सेवक का पिता शेख़ के पास से बाहर आया और पूछा कि "टिकिया क्या की ?" मैंने कहा 'क़लन्दरों को दे दी।" उन्होंने शोक प्रकट किया और कहा "क्यों दी ? वह बहुत बड़ी देन थी।" वे उसी उत्तेजना की अवस्था में शेख़ की सेवा में उपस्थित हुये। शेख़ को इस बात का पता चल गया। वे कहने लगे "मौलाना ताजुद्दीन तुम संतुष्ट रहो, तुम्हारा यह पुत्र क़लन्दर होगा।" इस पर मेरे पिता को संतोष हो गया। क्योंकि शेख़ सेवक को क़लन्दर कह चुके हैं; अतः ख़्वाजा भी क़लन्दर कहें। जब ख़्वाजा ने यह कहानी सुनी तो कहा कि 'मुझे ज्ञात न था कि तू शेख़ (निज़ामुद्दीन औलिया) का शिष्य है। आ मैं तुझ से आलिंगन करूँ।' सेवक निकट पहुंचा, ख़्वाजा ने आलिंगन किया।

मजलिस २

सेवक मौलाना बुरहानुद्दीन[४] के मलफ़ूज़[५], ख़्वाजा की सेवा में ले गया। ख़्वाजा ने उसमें से थोड़ा सा भाग पढ़ा और बार बार यही कहते थे कि "दरवेश. बहुत अच्छा लिखा है।"

१ गोष्ठी।
२ सूफ़ियों की दैवी प्रेरणा।
३ दो द्वारों के मध्य का स्थान (घर ?)।
४ एक प्रसिद्ध सूफ़ी जिनका मजार बुरहानपुर (दौलताबाद) में है। वे शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। बुरहानुद्दीन की मृत्यु १३३१ ई० में हुई।
५ वाणी का संग्रह।

सेवक को ख्वाजा ने अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया। सेवक ने ख्वाजा से उनकी मजलिसों (गोष्ठियों) का वृत्तान्त लिखने की अनुमति चाही। यह कारण इस पुस्तक की रचना का हुआ। मैंने इसे ७५५ हि० (१३५४ ई०) में प्रारम्भ किया और इसका नाम खैरुल मजालिस रखा।

मजलिस ३

सेवा में उपस्थित हुआ। क़यामत की चर्चा हो रही थी। कहने लगे क़यामत निकट आ चुकी। ७५५ हि० हो गई। इस चर्चा के समय ख्वाजा का मुख सफ़ेद हो गया। जो लोग उपस्थित थे, वे भी विस्मित हो गये। इसी बीच में ख्वाजा ने आदेश दिया कि सूफ़ियों के लिए मिष्ठान्न लाया जाय। उपस्थितगण क़यामत के भय से बड़े दुखी थे। मिष्ठान्न बीच में रखा रहा और किसी को सूचना भी न हुई। ख्वाजा ने सेवक से कहा कि "मिष्ठान्न ले जा, फिर लाना।" हमें यह ज्ञात न था कि हम आकाश पर हैं अथवा भूमि पर, रात्रि है या दिन। इसी प्रकार एक पहर दिन व्यतीत हो गया। किसी में भी कोई सुधबुध न थी। इसी बीच में एक दानिशमन्द[1] आया और उसने उच्च स्वर में सलाम किया। बहुत से उपस्थितगण सचेत हो गये। कुछ उस समय भी क़यामत के विचार से भयभीत थे। ख्वाजा ने उसकी दशा का पता लगा लिया। उसने निवेदन किया कि "दिन भर दीवान[2] में रहता हूँ जो आदेश दिया जाता है उसका प्रमाण मुझसे माँगा जाता है। दिन भर अवकाश नहीं मिलता।" ख्वाजा ने कहा "जन साधारण से भली भाँति व्यवहार करना चाहिये। दीवान में किसी प्रकार की हानि नहीं।" तत्पश्चात् ख्वाजा ने यह कहानी सुनाई। एक दरवेश जंगल में जा रहा था। एक वृद्ध की उससे भेंट हो गई। वृद्ध ने उससे कहा कि जब शहर पहुँचना तो अमुक मुहल्ले में अब्दुल्लाह हाजिब का घर पूँछकर मेरा सलाम उस तक पहुँचा देना और उनसे अनुरोध कर देना कि वे मेरे ईमान की रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते रहें किन्तु उसने अपना नाम न बताया। जब दरवेश नगर में पहुंचा तो उसने अब्दुल्लाह हाजिब का घर पूछा। उसके द्वार पर पहुँच कर उस वृद्ध का संदेश उसे पहुंचा दिया। अब्दुल्लाह हाजिब ने प्रार्थना की और दरवेश से वापस जाने के लिए कहा। दरवेश ने आग्रह किया कि मुझे उस वृद्ध का नाम बता दो। बड़ी कठिनाई से अब्दुल्लाह ने कहा कि उनका नाम ख्वाजा खिज़्र[3] था। तत्पश्चात् उस दरवेश ने पूछा कि "यह सम्मान मशायख़ (सूफ़ियों) को प्राप्त होता है। तू जिस वस्त्र में है उसे देखते हुये यह चमत्कार किस प्रकार उत्पन्न हो गया?" अब्दुल्लाह हाजिब ने कहा कि "खानक़ाह के कोने में जो बातें मशायख़ करते हैं वही मैं गलियों, बाज़ारों, घरों तथा राज-प्रासाद में करता हूँ। एक तिहाई रात्रि व्यतीत हो जाने पर उठ बैठता हूँ। वज़ू करता हूँ; तिलावत[4] तथा ज़िक्र[5] में व्यस्त हो जाता हूँ। प्रातःकाल पुनः वज़ू करके नमाज़ की चटाई पर बैठ जाता हूँ और अवराद[6] पढ़ने लगता हूँ, यहाँ तक कि सूर्योदय हो जाता है। इशराक़[7] की नमाज़ पढ़ता हूँ और राज-प्रासाद में पहुँच जाता हूँ। मार्ग में एक क्षण भी मेरी जिह्वा

१ बुद्धिमान् राजकीय पदाधिकारी।
२ कर विभाग।
३ एक पैग़म्बर जिनके विषय में मुसलमानों का विश्वास है कि वे सर्वदा जीवित रहेंगे और जो लोग मार्ग भूल जाते हैं उनको वह मार्ग बताते हैं। सूफ़ी साहित्य में उन्हें बड़ा महत्व प्राप्त है।
४ क़ुरान का पाठ।
५ ईश्वर के नाम का सुमिरन।
६ क़ुरान के विभिन्न भागों का जाप।
७ सूर्योदय के समय की नमाज़।

ईश्वर के ज़िक्र से खाली नहीं रहती। राज-प्रासाद में प्रविष्ट होकर मैं कहता हूं कि हे ईश्वर ! मैं तेरे अतिरिक्त किसी को भी नहीं देखता। मानों तेरे समक्ष खड़ा हूं। अमीर की सेवा में खड़े होकर मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि हे ईश्वर ! अमीर जिस किसी का भी कार्य मेरे सुपुर्द करे तो ईश्वर मुझ में इतनी शक्ति दे कि धन, कर्म तथा वचन द्वारा उसके कार्य को पूरा करूँ। नाश्ते के समय में पुनः घर लौट आता हूँ और वज़ू करके नमाज़े चाश्त[1] पढ़ता हूं। विश्राम का समय आ जाने पर विश्राम करता हूँ। विश्राम से उठकर पुनः वज़ू करता हूं और घर में सुन्नत[2] की नमाज़ें पढ़ता हूँ। अनिवार्य नमाज मस्जिद में पढ़ता हूँ। पुनः राज प्रासाद में उपस्थित होता हूँ और खुदा का ज़िक्र करता रहता हूँ। पुनः सायंकाल की नमाज़ के समय घर पहुँच जाता हूँ और सायंकाल की नमाज़ जमाअत[3] के साथ मस्जिद में पढ़ता हूं। तत्पश्चात् इशा[4] की नमाज़ पढ़ता हूँ और सोने के समय की नमाज। इसी प्रकार आधी रात तक मैं व्यस्त रहता हूँ। अन्य मशायख़ भी इसके अतिरिक्त क्या करते हैं ? मैं सर्वदा रोज़ा रखता हूं। कुछ मशायख़ खानक़ाह में एकान्तवास करते हैं। मैं राज प्रासाद में, मार्ग में, तथा घर में उपासना करता रहता हूँ।" निष्कर्ष यह कि वह संसार के कार्य में व्यस्त रहता था किन्तु वह मशायख़ के स्थान तक पहुंच गया था। उसका कारण यह था कि वह जनसाधारण से उत्तम व्यवहार करता था। सांसारिक पद से उसे कोई हानि न पहुंचती थी। ख़्वाजा खिज़्र जैसे व्यक्ति ने उससे ईमान की रक्षा की प्रार्थना का अनुरोध किया।

तत्पश्चात् ख़्वाजा ने उस दानिशमन्द की कहानी सुनाई जो क़ाज़ी था। एक दरवेश क़ाज़ी के समक्ष पहुंचा और उससे प्रार्थना की कि बादशाह ने मेरी मिल्क[5] की भूमि का अपहरण कर लिया है और उसे अपने राजप्रासाद में सम्मिलित कर लिया है। क़ाज़ी ने अपने प्यादे को बुलवाया और अपनी नियुक्ति का फ़रमान उसे देकर बादशाह की सेवा में भेज दिया और उससे तीन बातें कहीं। (१) तू बादशाह से यह निवेदन करना कि वह शरा की पताका[6] लाया है, यह कह कर देखना कि बादशाह क्या करता है। वह शरा की पताका का सम्मान करता है अथवा नहीं। यदि सम्मान न करे तो नियुक्ति का फ़रमान चूम कर उसके समक्ष रख देना और कह देना कि क़ाज़ी ने कहा है कि किसी अन्य को क़ाज़ी बना दे। यदि बादशाह शरा की पताका का सम्मान करे तो उससे कहना कि तूने एक व्यक्ति की भूमि का अपहरण किया है और उसे अपने राजप्रासाद में सम्मिलित कर लिया है। उसने इस बात का अभियोग चलाया है कि या तो बादशाह वादी का उत्तर दे या वादी को बुलाकर सन्तुष्ट करे। यदि वह इनमें से दोनों बातें न करे तो पुनः फ़रमान को चूम कर उसकी सेवा में प्रस्तुत करके कह देना कि किसी अन्य को क़ाज़ी नियुक्त कर दे। प्यादा पताका को लेकर बादशाह की सेवा में पहुंचा। राजप्रासाद में पहुँच कर उसने यह सूचना भिजवाई कि शरा की पताका आई है। बादशाह ने प्यादे को बुलवा लिया और जब वह राजसिंहासन के समक्ष पहुँचा तो बादशाह राजसिंहासन से उतर आया और खड़ा हो गया और पूछा कि क्या कहना है। प्यादे ने कहा एक दरवेश ने दावा किया है कि तूने उसकी मिल्क की भूमि का अपहरण किया है और उसे अपने राजप्रासाद में सम्मिलित कर लिया है। क़ाज़ी ने कहलाया है कि या तो

१ नाश्ते के समय की नमाज़।
२ वे नमाज़ें जो अनिवार्य नहीं।
३ मस्जिद में सामूहिक नमाज़।
४ रात्रि की अन्तिम अनिवार्य नमाज़।
५ धार्मिक व्यक्तियों को दी जाने वाली भूमि।
६ यहाँ तात्पर्य शरा के सम्मानित आदेश से है।

उपस्थित होकर उसका उत्तर दे या उसे बुलवा कर सन्तुष्ट करे। यदि इन दोनों में से वह कोई बात न करे तो क़ाज़ी ने कहलाया है कि किसी अन्य को क़ाज़ी नियुक्त कर दिया जाय। बादशाह ने कहा कि तुमने देख लिया कि मैंने किस प्रकार शरा का सम्मान किया है। तू जाकर क़ाज़ी से कह दे कि मैं स्वयं क़ाज़ी के न्यायालय में उपस्थित हूँगा। तत्पश्चात् वादी को उपस्थित किया गया। बादशाह ने कहा कि 'हे दरवेश तूने क़ाज़ी के समक्ष क्यों अभियोग प्रस्तुत किया? यदि तू मेरे पास उपस्थित होता तो मैं तेरे ऊपर अत्याचार न होने देता।' तत्पश्चात् बादशाह ने आदेश दिया कि जिस स्थान पर यह अपनी भूमि बतावे वहाँ महल गिरवा दिया जाय और उसकी भूमि वापस कर दी जाय। जब बादशाह के सेवक महल गिराने लगे तो दरवेश ने बादशाह से आग्रह किया कि महल को नष्ट न किया जाय। उसके अत्यधिक आग्रह करने पर बादशाह ने आदेश दिया कि दरवेश की भूमि नाप कर, उसे प्रत्येक गज़ के लिए एक सोने का तन्का दे दिया जाय। उसी के अनुसार उसे सोने के तन्के दे दिए गये। बादशाह उसे खिलअत देकर तथा सन्तुष्ट करके क़ाज़ी की सेवा में पहुंचा। क़ाज़ी उस समय फ़तवे की पंजिका लिखने में व्यस्त था। पंजिका लिखने के उपरान्त उसने बादशाह का अभिवादन किया और उसे अपनी नमाज़ की चटाई पर बैठाया। आधी चटाई पर स्वयं बैठा और शरबत मंगवा कर स्वयं पीया और बादशाह को प्रदान किया।

मजलिस ६

दास ने ख़ैरुल मजालिस पुस्तक का एक भाग समाप्त कर लिया और उसे ख्वाजा की सेवा में ले गया। ख्वाजा ने पढ़कर प्रशंसा की।

मजलिस २५

दास ख्वाजा की सेवा में उपस्थित हुआ। एक दानिशमन्द उपस्थित था। उसने निवेदन किया कि अमुक मलिक ने अभिवादन कहलाया है। ख्वाजा ने उसके विषय में पूछा। उसने उत्तर दिया कि उस पर मुतालबा[1] था और दण्ड दिया जा रहा है। ख्वाजा ने कहा कि सांसारिक पदों का परिणाम यही होता है। विशेष रूप से इस काल में। पिछले समय में समस्त पदाधिकारी ईश्वर के कार्य में संसार के कार्य से अधिक व्यस्त रहते थे। बहुत से लोग तो जुनैद[2] तथा शिबली[3] से बढ़ जाते थे।

मजलिस ४४

कविता के विषय में वार्तालाप होने लगी। ख्वाजा ने कहा कि अमीर खुसरो[4] तथा अमीर हसन[5] ने ख्वाजा सादी[6] के समान कविता करने की अत्यधिक इच्छा की किन्तु यह सम्भव न हो सका। ख्वाजा सादी जो कुछ भी कहते थे वह उत्तेजना की अवस्था में कहते थे। तत्पश्चात् ख्वाजा ने कहा कि खाक़ानी[7] तथा निज़ामी[8] पवित्र लोग थे किन्तु ख्वाजा सिनाई[9] ने सभी लोगों से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था।

---

१ किसी को जो धन अदा करना होता है वह मुतालबा कहलाता है।
२ बग़दाद के एक प्रसिद्ध सूफ़ी जिनकी मृत्यु ९११ ई० में हुई।
३ एक प्रसिद्ध सूफ़ी जिनकी मृत्यु बग़दाद में ९४६ ई० में हुई।
४ भारतवर्ष के प्रसिद्ध कवि तथा सन्त। इनका जीवन-काल १२५३ ई० से १३२५ ई० तक था।
५ अमीर खुसरो के मित्र तथा कवि।
६ शीराज़ के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि, जीवन-काल (११७५ ई० से १२९२ ई०)।
७ फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि (मृत्यु ११८६ ई०)।
८ शेख़ निज़ामी गंजवी, फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि (मृत्यु १२०० अथवा १२०९ ई०)।
९ शेख़ सनाई, प्रसिद्ध फ़ारसी सूफ़ी कवि (मृत्यु ११३१ ई०)।

मजलिस ४८

सूफ़ी उपस्थित थे। ख्वाजा ने प्रत्येक से पूछा, "क्या किया करते हो?" तत्पश्चात् एक व्यक्ति से पूछा, "तुम क्या करते हो?" उसने कहा कि "मैं कृषि करता हूँ।" उन्होंने कहा कि "यह बड़ा ही उत्तम व्यवसाय है। बहुत से कृषक साहिबे हाल[1] रह चुके हैं।"

मजलिस ५४

एक सूफ़ी मुल्तान से आया। वह बड़ा पवित्र तथा नेक व्यक्ति था। ख्वाजा ने उसके विषय में पूछा। उसने उत्तर दिया कि "मैं व्यापार करता हूँ।" ख्वाजा ने कहा कि व्यापार से अच्छा कोई अन्य व्यवसाय नहीं।

मजलिस ५५

क़लन्दर आये थे तथा ख्वाजा ने उन्हें रात्रि में अपना अतिथि रखा था। जब दास ख्वाजा की सेवा में पहुँचा तो ख्वाजा ने पूछा "दरवेश ऊपर हैं अथवा नीचे?" दास ने निवेदन किया कि ऊपर बैठे हैं। ख्वाजा ने कहा कि इस काल में दरवेश कम संख्या में हैं। शेख निज़ामुद्दीन औलिया के समय में २०, २० तथा ३०, ३० दरवेश उपस्थित हुआ करते थे। शेख उन लोगों को ३ दिन तक अपना अतिथि रखते थे।" ख्वाजा ने तत्पश्चात् कहा कि "उस काल में लोगों में तवक्कुल[2] था।" उस काल में धन की अधिकता तथा अल्पमूल्यता का उन्होंने स्मरण किया : गेहूं ७।। जीतल, शकर आधा दिरम, शकर तरी[3] १ जीतल अथवा उससे कुछ कम। इसी प्रकार वस्त्र तथा अन्य सामग्री भी सस्ती थी। यदि कोई दावत अथवा गोष्ठी करना चाहता तो दो तन्के और ४ तन्के में इतना अधिक भोजन तैयार हो जाता था कि बहुत से लोगों के लिए पर्याप्त होता था।

तत्पश्चात् उस काल के देहली तथा देहली के आसपास के लंगरों[4] का स्मरण किया। रमज़ान क़लन्दर के लंगर, मलिक यार पर्रां के लंगर तथा कुछ अन्य लंगरों की भी चर्चा की। तत्पश्चात् कहा कि "उस काल में इस प्रकार के लोग न थे। उस समय लोग पौरुष तथा दरवेशी में निपुण थे। शेख बद्रुद्दीन समरक़न्दी जिनका मज़ार संकोला में है बड़े बुज़ुर्ग थे। वे शेख (निज़ामुद्दीन औलिया) की सेवा में बहुत आते थे और शेख उनके पास जाया करते थे। वे बहुत बड़ी संख्या में दावतें किया करते थे। उन्हें समा[5] से अत्यधिक रुचि थी। उर्स[6] के समय शेख समस्त लंगर रखने वालों को बुलवाते थे। दरवेश लोग भी इधर उधर से आते थे। उस काल के ज़ौक़[7], राहत[8] आशीर्वाद तथा गौरव का उल्लेख संभव नहीं। इस काल में न तो वैसे लंगर वाले रह गये हैं और न लंगर ही। सभी नष्ट हो चुके हैं। लोग दरवेशों की प्रतीक्षा किया करते हैं।" तत्पश्चात् शेख की आँखों में आँसू भर आये और वे कुछ समय तक रोते रहे।

१ बहुत बड़े सन्त।
२ सन्तोष।
३ सफ़ेद शकर।
४ वह स्थान जहाँ लोगों को पका हुआ खाना बिना मूल्य के बाँटा जाता था।
५ सूफ़ियों की संगीत तथा नृत्य की गोष्ठी।
६ सूफ़ियों की मृत्यु के दिन का वार्षिक उत्सव।
७ आत्मा का आस्वादन।
८ आराम।

मजलिस ६०

ख्वाजा ने एक कहानी सुनाई कि "एक दानिशमन्द था। उसे सिरसावा में अदरार प्राप्त थी। उसके घर में आग लग गई। उसका फ़रमान जल गया। वह पुनः नये फ़रमान के लिए शहर (देहली) पहुँचा। उस समय निशानों[1] के लिए फ़रमानों का लिखवाना कठिन था। बड़ी कठिनाई से नया फ़रमान पूरा करवाया और एक रूमाल में बाँध कर आस्तीन में रख लिया। जब वह घर पहुँचा और आस्तीन में हाथ डाला तो रूमाल न था। फ़रमान सहित किसी स्थान पर गिर गया था। वह बड़ा परेशान हुआ कि अब क्या करे। वह लौट कर उसी मार्ग से सिरसावा तक रोता पीटता पहुंचा। वह चिल्लाता जाता था कि फ़रमान सहित मेरा रूमाल गिर गया है। किसी को मिला है अथवा नहीं? प्रत्येक मुहल्ले में तथा गली में चक्कर लगाता था। तत्पश्चात् वह सुल्तानुल औलिया (शेख निज़ामुद्दीन) की सेवा में पहुंचा और भूमि पर गिर पड़ा। थोड़ी देर पश्चात् उसने अपने विषय में निवेदन किया। शेख ने कहा कि "शेखुल इस्लाम शेख फ़रीदुद्दीन की नज़र[2] के लिए एक जीतल की मिठाई लाओ। उनकी आत्मा के लिए फ़ातेहा[3] पढ़ें। उनके आशीर्वाद से संभव है कि तेरा उद्देश्य पूरा हो जाय।" वह हलवाई के पास पहुँचा और उससे हलवा माँगा। हलवाई ने हलवा लपेटने के लिए काग़ज़ निकाला। उसने देखा कि यह वही काग़ज़ है जो खो गया था। हलवाई ने उसे फाड़ना चाहा। उसने हाथ पकड़ लिया और कहा कि 'यह मेरा फ़रमान है जो खो गया था' और एक हाथ में फ़रमान तथा दूसरे हाथ में हलवा लेकर शेख़ की सेवा में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि "शेख के आशीर्वाद से मुझे फ़रमान प्राप्त हो गया।"

मजलिस ६१

एक वृद्ध आया। उसकी दशा देखकर ख्वाजा ने, समझ लिया कि वह नौकरी चाहता है। ख्वाजा ने कहा कि 'आजकल लोग नौकर रखते हैं।' तत्पश्चात् कहा कि "नौकरी में कोई आपत्ति नहीं। अपने कार्य पर दृष्टि रखनी चाहिये और ईश्वर की स्मृति कभी न छोड़नी चाहिये।"

मजलिस ६५

दास ने खैरुल मजालिस नामक पुस्तक ६० अथवा ७० (पृष्ठ) तक लिख ली थी। कुछ सूफ़ियों ने उसकी प्रतिलिपि लेने का आग्रह किया। मैंने उनसे कहा कि "इसे समाप्त हो जाने दो, तत्पश्चात् ले लेना।" इससे वे लोग बड़े खिन्न हुए। मैंने कहा कि 'यह मेरा सौभाग्य है। सर्वप्रथम मैं ख्वाजा की सेवा में उपस्थित कर दूं।' ख्वाजा ने उसे अपने शुभ हाथों में लेकर पूछा "कितनी मजलिसें हो गई?" दास ने निवेदन किया कि '१०० होने में ३० या ४० की कमी है। कुछ सूफी उसकी प्रतिलिपि माँगते हैं।" सर्वप्रथम ख्वाजा ने कुछ वरक़ पढ़े और थोड़ा सा भाग रख लिया। शेष पुस्तक लाल कपड़े में थी, बँधी न थी, अलग अलग थी। ख्वाजा ने अपने सेवक इबराहीम से कहा कि 'बाँधने के लिए तागा ले आओ।' वह काले रंग के ऊन की रस्सी लाया। ख्वाजा ने आदेश दिया इसे बाँधो। सेवक ने पुस्तक बाँधी।

मजलिस ७७

चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ख्वाजा ने बहुत से लोगों को इफ़तार[4] के लिए

---

१ एक प्रकार का फ़रमान।

२ मनौती।

३ क़ुरान के कुछ अन्शों को पढ़ कर ईश्वर से प्रार्थना।

४ रोज़े की समाप्ति के उपरान्त का भोजन।

बुलवाया था। रात्रि में समा था। इफ़तार के उपरान्त खास मजलिस थी। कुछ बड़े बड़े सूफ़ी उपस्थित थे। दास ने भूमि चूमी। आदेश हुआ 'बैठ जाओ'। दास वहीं बैठ गया, यद्यपि स्थान रिक्त था। तत्पश्चात् दास को सम्मानित करते हुये कहा "क़लन्दर लोग तो नंगे सिर हैं; तू ने सिर पर रस्सी क्यों बाँधी है?" उस दिन दास सिर पर रस्सी लपेटे हुए था। तत्पश्चात् कहा कि 'अच्छा है' और दास के लिये छन्द की यह पंक्ति पढ़ी "न किसी का सेवक और न किसी का स्वामी।"

ख्वाजा ने शेख (निज़ामुद्दीन) के समय को स्मरण किया और कहा, 'हे ईश्वर! उस समय कैसे कैसे सूफ़ी थे और कैसे संतोष वाले लोग थे।' उस समय जो लोग थे उनमें से कुछ के नाम लिये और कहा कि 'मौलाना बुरहानुद्दीन ग़रीब बड़े विचित्र बुजुर्ग थे।' तत्पश्चात् कुछ अन्य बुजुर्गों की चर्चा की और मौलाना शिहाबुद्दीन इमाम का स्मरण किया और कहा 'उस काल के सूफ़ियों के विषय में क्या कहा जाय, वे बहुत बड़े हाल वाले[1] व्यक्ति थे। उस समय के विद्यार्थी भी बड़े पवित्र होते थे।' तत्पश्चात् कहा कि 'उस काल में आम दावतें होती थीं, मौसम[2] में और सफ़र मास के अन्तिम बुद्धवार को। उन दिनों मक़बरों, उद्यानों तथा हौज़ों पर स्थान न मिलता था। प्रत्येक दिशा में संगीत तथा नृत्य होता रहता था। उन दावतों की व्यवस्था एक तन्के में या उससे कुछ अधिक में हो जाती थी।'

उसी समय सुल्तान अलाउद्दीन के राज्य काल की समृद्धि का स्मरण किया और कहा कि "उस समय कितनी अल्पमूल्यता थी। उन दिनों में शीत ऋतु में कोई भी फ़क़ीर ऐसा न होता था जिसके पास लबादा न हो। साधारण (ऊन का) एक तन्के में, बर्द[3] का दो तन्के २० जीतल में, ३० जीतल में मकीना[4] सूती वस्त्र, १२ जीतल में अस्तर तथा रुई, इसी प्रकार अन्य वस्तुएँ भी, १ शशगानी तथा ४ जीतल सीने वाले तथा धुनिये की मज़दूरी। आजकल एक लबादा १ तन्के में कोई नहीं सीता।" तत्पश्चात् कहा कि काफ़ूर मुहरदार बहुत से लबादे सिलवा लेता था, फ़क़ीर बुलवाये जाते थे और उन्हें लबादे दे दिये जाते थे। एक फ़क़ीर ऐसा था जो दो बार लबादा ले जाता था।

तत्पश्चात् यह कहानी सुनाई कि "क़ाज़ी हमीदुद्दीन मलिकुत्तुज्जार उस समय अवध प्रदेश में गया हुआ था। उसने प्रीतिभोज करके मुझे बुलवाया। लोगों के चले जाने के उपरान्त हम एक स्थान पर बैठे। उसने कहा कि मैंने एक बार सुल्तान अला उद्दीन को देखा कि वह बड़ी शोचनीय दशा में बैठा हुआ था—नंगे सिर, भूमि पर पाँव। वह किसी विचार में विस्मित था। मैं उसके समक्ष गया। सुल्तान को सूचना न हुई। मैं लौट आया। मलिक क़रा बेग से कहा कि, 'मैंने सुल्तान को इस दशा में देखा है, जाकर देख कि उसकी क्या दशा है।' मलिक क़रा बेग सुल्तान का विश्वासपात्र था। वह उसके समक्ष जाकर वार्तालाप करने लगा। तत्पश्चात् उसने निवेदन किया कि 'हे मुसलमानों के बादशाह! मुझे एक प्रार्थना करनी है।' उसने आदेश दिया कि कहो। क़ाज़ी ने आगे बढ़कर कहा कि 'मैं भीतर आया और मैंने बादशाह को इस दशा में नंगे सिर चिंतित पाया। बादशाह क्या चिन्ता कर रहा था?' सुल्तान ने कहा, 'सुनो! कुछ समय से मेरे हृदय में यह विचार आ रहा है और मैं सोचता रहता हूँ कि हे अमुक व्यक्ति! ईश्वर ने संसार में इतने व्यक्ति उत्पन्न किये हैं, मुझे उन सब पर नेतृत्व प्रदान किया है; मुझे कोई ऐसी बात करनी चाहिये जिससे समस्त जनसाधारण को लाभ हो। मैं सोच रहा हूँ

१ सन्त।

२ जिस समय यात्री मक्का में एकत्र होते थे अथवा सूफ़ियों के समारोह के विशेष अवसर।

३ एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

४ एक प्रकार का, सम्भवतः डिज़ाइन का, कपड़ा।

कि क्या करना चाहिये। मेरे पास जितना खज़ाना है उससे सौ गुना अधिक भी मिल जाय और वह मैं सब लोगों में बाँट दूँ तो भी सभी जन-साधारण को वह प्राप्त न हो सकेगा। यदि ग्राम तथा प्रान्त उन्हें प्रदान करूँ तो भी सभी को न मिल सकेंगे। मैं इसी चिन्ता में था कि मैं क्या करूँ जिससे समस्त प्रजा को लाभ हो। इस समय मेरे हृदय में कुछ बातें आई हैं उनकी तुमसे चर्चा करता हूं। मैं सोचता हूं कि अनाज का भाव कम कर दूँ ताकि उससे समस्त जन-साधारण को लाभ पहुँचे। अनाज किस प्रकार सस्ता हो सकता है? मैं आदेश दे दूँ कि समस्त दिशाओं के नायकों को बुलवाया जाय, उन लोगों को जोकि विभिन्न दिशाओं से अनाज लाते हैं कोई १० हज़ार चौपायों पर और कोई २० हज़ार। उन्हें बुलवाकर मैं वस्त्र प्रदान करूँ तथा खज़ाने से धन दूं, उनके घर के व्यय हेतु धन दूँ ताकि वे अनाज ले आयें और जो भाव मैं निश्चित करूँ उसी भाव पर वे बेचें। उसने तदनुसार आदेश दे दिया। प्रत्येक दिशा से अनाज आना प्रारम्भ हो गया। थोड़े दिनों में ७ जीतल प्रति मन का भाव हो गया। घी, शकर तथा अन्य वस्तुएँ सस्ती हो गईं और उससे सभी को लाभ प्राप्त हुआ। सुल्तान अलाउद्दीन बड़ा ही उत्कृष्ट बादशाह था। एक ने कहा कि "लोग उसकी क़ब्र के दर्शनार्थ जाते हैं और वहाँ तागा बाँधते हैं[1] और उनकी आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं।" दास को एक कहानी याद आ गई। मैंने कहा कि "उन्हीं दिनों में मैं सुल्तान अलाउद्दीन की क़ब्र के दर्शनार्थ गया था। नमाज़ के उपरान्त मैंने क़ब्र के दर्शन किये और उस स्थान पर पहुँचा जहाँ लोग तागा बाँधते थे। यद्यपि दास की कोई आवश्यकता न थी तब भी रूमाल से तागा निकालकर बाँध दिया। रात्रि में स्वप्न देखा मानों लोग यह चिल्ला रहे हों कि "किसने सुल्तान अलाउद्दीन की क़ब्र में तागा बाँधा है?" शोर-गुल के उपरान्त मैं अग्रसर हुआ और मैंने कहा कि मैंने बाँधा है। उन लोगों ने कहा कि 'तुझे किस बात की आवश्यकता है, बता?' मैंने कहा "मुझे कोई आवश्यकता नहीं, क्या कहूँ। मेरे हृदय में यह बात आई कि मैंने शेख के रौज़े से एक प्रार्थना की है। शेख से प्रार्थना करने के उपरान्त किसी अन्य से क्या माँगू। मैं जाग उठा।"

मजलिस ८९

ख्वाजा ने कहा कि "एक बार शीत-ऋतु में मैं अवध से शेख निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में पहुँचा। मैं शेख की सेवा की इच्छा से इतना विवश हो गया था कि मुझे शीतऋतु की सूचना न थी। जब मैं पहुँचा तो समस्त जमाअतखाना[2] यात्रियों से भरा हुआ था। शेख ने मेरे ऊपर कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए कहा कि "मुझे तुम्हें अपने पास रखना बुरा नहीं मालूम होता। किन्तु अन्य सूफ़ी, जो अवध में हैं, तुम्हारे लिये चिंतित हैं।"

तत्पश्चात् ख्वाजा ने कहा कि "मैं शेख की सेवा में आया जाया करता था, लगभग ४० दिन तक ठहरा करता था; उस समय इतने यात्री न आते थे। तत्पश्चात् २० दिन और १० दिन ठहरने लगा। जिस दिन शेख ने मुझ से यह कहा था कि 'मुझे तुम्हारा रखना बुरा नहीं मालूम होता किन्तु क्या करूँ यात्री बहुत हैं, उसके विषय में एक सूफ़ी ने मुझे बताया कि शेख का उद्देश्य यह था कि मुझे यह बात बुरी न मालूम हो। मुझे इससे पूर्व ४० दिन तक रखते थे; उस अवसर पर १० रोज में लौट आया। इसके उपरान्त जब मैं पहुँचा तो छठवें या सातवें दिन इक़बाल आया और उसने कहा कि तैयार हो जाओ। मैंने पूछा क्या बात है?

१ मनौती करते हैं।

२ वह स्थान जहाँ सूफ़ियों के अतिथि ठहरते हैं।

ख्वाजा इक़बाल ने कहा कि "मुग़लों का बड़ा भय है। सुल्तान अलाउद्दीन ने इस समय अपने किसी अधिकारी को शेख़ के पास भेजा था और कहलाया था कि मुग़लों का भय है, आप शहर के भीतर आ जायँ। शेख़ कल या परसों में चले जायेंगे। उसी समय यह समाचार प्राप्त हुआ कि जानदारों को इस आशय से नियुक्त किया गया है कि चारों ओर की प्रजा को क़िले में ले आयें, समस्त ग्रामों को नष्ट करदें और खेतों को जला दें। मेरे मवेशी मौलाना फ़ख़रुद्दीन ज़र्रादी के ग्राम में थे। मौलाना फ़ख़रुद्दीन ज़र्रादी के एक सम्बन्धी के पास एक ग्राम था। उन्होंने मवेशी वहाँ भेज दिये। मैंने पत्र लिखकर मवेशी मँगवा लिये। तत्पश्चात् मौलाना बुरहानुद्दीन ग़रीब को लिखा कि दास कल शेख़ के पास से चला जायेगा। इस बिदा के उपरान्त मैं शेख़ की सेवा में न जा सका। इसी घटना के उपरान्त हम लोग बिदा हुये। मौलाना बुरहानुद्दीन ने पत्र लिखा कि मैं तुम्हें कल किलोखड़ी में बिदा करूंगा।"

———

परिशिष्ट ब

इन्शाये माहरू

[ऐनुलमुल्क ऐनुद्दीन अब्दुल्लाह बिन माहरू के लिखे हुये पत्र]

[प्रकाशन—अलीगढ़ इतिहास विभाग]

(१)

फ़तह खाँ को सिन्ध की इक़लीम प्रदान करने के सम्बन्ध में मन्शूर[१]

(३) सिन्ध की इक़लीम मैंने अपने पुत्र फ़तह खाँ को प्रदान कर दी और सभी कार्यों को–व्यवस्था, नियुक्ति, पदच्युत करना, प्रदान करना तथा निषेध या उसको सौंप दिया। युवावस्था तथा राज्य एवं पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने के कारण मनुष्यता के भावों को उसे न त्यागना चाहिये और सर्वदा ईश्वर का भय करते रहना चाहिये। उसे पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिये। समस्त खराजगुज़ारों[२] तथा जनसाधारण के प्रति कृपादृष्टि रखनी चाहिये। सैयिदों का सम्मान तथा उन्हें आश्रय प्रदान करना अपने सौभाग्य का कारण समझना चाहिये। जेहाद करने वालों के महत्व को जिनके कारण इस्लाम को उन्नति प्रदान होती हो सर्वदा अपने समक्ष रखना चाहिये। दीवाने विज़ारत का कार्य योग्य वज़ीरों को सिपुर्द करना चाहिये जो अपनी सूझ बूझ एवं सच्चाई के लिए प्रसिद्ध हों। वज़ीरों की सच्चाई तथा योग्यता के बिना राज्य के कार्य सच्चाई तथा ईमानदारी से सम्पन्न नहीं हो पाते। जो कोई ईमानदार सच्चा तथा बुद्धिमान् हो उसे इनाम तथा आश्रय प्रदान करते रहना चाहिये। जो लोग अपहरण करते हों, राज्य को नष्ट करने का प्रयत्न करते हों, प्रजा को कष्ट देते हों, उन्हें पदच्युत करना चाहिये और उनके अपराध के अनुसार उन्हें दण्ड देना चाहिये ताकि लोग सच्चाई तथा ईमानदारी से कार्य करने लगें। ग्रामीणों को दुष्ट अपहरण कर्त्ताओं से सुरक्षित रखना चाहिये। अपने दीवान के अधिकारियों से कह देना चाहिये कि कर उत्तम ढंग से समय पर प्राप्त करना चाहिये। महान् कार्यों में बुद्धिमानों तथा अनुभवी लोगों से परामर्श करते रहना चाहिये। जो लोग हितैषी तथा निष्ठावान् हों उनके प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते रहना और उनकी सेवाओं को व्यर्थ नष्ट न होने देना चाहिये।

मैंने सिन्ध के अमीरों, प्रतिष्ठित लोगों, रायों, राजाओं, मुक़द्दमों तथा समस्त निवासियों के प्रति कृपादृष्टि के कारण इस अक़्ता को अपने पुत्र को प्रदान किया है। उनको इसे हमारी बहुत बड़ी कृपा समझनी चाहिये और वे सर्वदा हमारे राज्य की उन्नति के लिये शुभ कामनायें करते रहें और मेरे पुत्र के आदेशों को मेरा आदेश समझ कर उनका पालन करें।

---

१ शाही आदेश।

२ खराज अदा करने वाले, कृषक।

(२)

आज़म हुमायूँ[1] को विज़ारत का पद प्रदान करते हुये मन्शूर।

राज्य का श्रृंगार दस्तूर[2] की योग्यता के बिना, जो विज़ारत के कार्यों में पिछले वज़ीरों से बढ़कर हो और जिसे क्षण भर में सभी बातों का ज्ञान हो जाय तथा हमारे राज्य के प्रति जो हृदय से निष्ठावान् हों, संभव नहीं। राज्य की सेनायें जो धर्म तथा राज्य की रक्षक हैं वज़ीर की सहायता के बिना सुव्यवस्थित नहीं हो पातीं। राज्य के लिए धन सम्पत्ति तथा खज़ाने का एकत्र होना भी उसी के ऊपर निर्भर है। राज्य के कर की अधिकता तथा बैतुलमाल[3] की सम्पन्नता द्वारा ही शासन प्रबन्ध को उन्नति प्राप्त होती रहती है। अपहरणकर्त्ताओं तथा अपहरण का अन्त हो जाने से राज्य को समृद्धि प्राप्त होती है। उसे चाहिये कि वह अपहरणकर्त्ताओं तथा अत्याचारियों को प्रभुत्व प्राप्त न होने दे। यदि भूल से कोई अत्याचारी पदाधिकारी बना दिया गया हो तो उसको पदच्युत करने में किसी प्रकार का संकोच न करना चाहिये ताकि अत्याचार जोकि एक बहुत बुरी आदत तथा बड़ी खराब प्रथा है उन्नति न पा सके। उसे योग्य तथा बुद्धिमान् लोगों से परामर्श करते रहना चाहिये और उनके पथ प्रदर्शन के अनुसार कार्य करना चाहिये। मूर्ख लोगों से कभी कोई परामर्श न करना चाहिये। यदि परामर्श के समय वह कोई बात राज्य के हित के विरुद्ध समझे तो उसे अच्छे ढंग से राज-सिंहासन के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करे कि उसका प्रभाव हो सके। उसे अभिमान से घृणा करना चाहिये। सहनशीलता तथा क्षमा जोकि उत्कृष्ट गुण हैं अपने स्वभाव में प्रविष्ट करना चाहिये। समस्त बड़े-बड़े खान, मलिक, मुक़्ते, वाली, दरबार के हितैषी तथा प्रतिष्ठित लोग, वज़ीर तथा बड़े बड़े कुशाग्र एवं विभिन्न श्रेणियों के लोग उसके अधीन रहें तथा उसकी आज्ञाओं एवं फ़रमानों को मेरी आज्ञा तथा फ़रमान समझें।

(३)

दास[4] को मुल्तान की अक़्ता की नियाबत से सम्बन्धित मन्शूर।

मलिकुश्शर्क, वल वुज़रा, ऐनुलमुल्क, ऐनुद्दौला, अब्दुल्लाह माहरू को मुल्तान की शिक़ के समस्त प्रबन्ध, विलायत तथा सेना की सुव्यवस्था, नियुक्त तथा पृथक् करने, निषेध तथा प्रदान करने से सम्बन्धित समस्त कार्यों की अनुमति प्रदान की जाती है ताकि वह अपने अनुभव तथा अपनी योग्यता के अनुसार शासन प्रबन्ध करे और उस प्रान्त की उन्नति, प्रजा की समृद्धि का तथा देखभाल एवं सर्वसाधारण को आश्रय प्रदान करने का प्रयत्न करे। इससे मुझे भी क़यामत में पुण्य प्राप्त होगा। उस शिक़ के समस्त मलिक, अमीर, मुक़्ते, कारकुन, राय, लश्करी तथा निवासी, जिस प्रकार उत्कृष्ट फ़रमान में लिखा हुआ है, उसके अधीन रहें।

---

१ आज़म हुमायूँ खाने जहाँ।

२ प्रधान मंत्री।

३ खज़ाना।

४ ऐनुलमुल्क ऐनुद्दीन, लेखक जो अपने लिये प्रत्येक पत्र में बन्दये दरगाह (दास) शब्द का प्रयोग करता है।

(४)
सैयिद मुहम्मद माजूनी की नियुक्ति के सम्बन्ध में मन्शूर।

सैयिद मुहम्मद माजूनी को अपनी अत्यधिक कृपा के कारण उन सैयिदों की खानक़ाह तथा नहरवाला नगर के आसपास के कुओं, जोकि सैयिद मुहम्मद की खानक़ाह से सम्बन्धित हैं और कई कारणों से उसके अधिकार में हैं, के दिये जाने की पुष्टि हम उसी प्रकार करते हैं जिस प्रकार साहेब दीवाने इस्तीफ़ाये ममालिक हुसेन अमीर मीरान ने सैयिदों को खानक़ाहे तथा कुयें प्रदान किये थे।

गुजरात के वर्तमान काल के तथा भविष्य के समस्त वाली, नवाब, कारकुन, उपर्युक्त खानक़ाहों तथा कुओं को सयिद मुहम्मद के अधिकार में समझें।

(५)
शेखज़ादा अबू बक्र यज़दी को खानक़ाह प्रदान करने के सम्बन्ध में।

शेख अबू बक्र बिन (पुत्र) शेख शिहाबुद्दीन को, जो शेखज़ादा यज़दी के नाम से प्रसिद्ध है, बादशाही कृपा द्वारा सम्मान प्रदान होता है और कोदिया की खानक़ाह तथा उसके आसपास के तकिये[1] एवं नहरवाला नगर के निकट के कुयें तथा भूमि, जो स्वर्गीय शेख हाजी रजब को अपनी वजहे मआश[2] तथा खानक़ाह के व्यय हेतु प्रदान किये गये थे और वह उसके अधिकार में थे, जिन्हें मलिकुश्शर्क़ वल वुज़रा साहेबे दीवाने इस्तीफ़ाये ममालिक[3] अमीर मीरान ने शेखज़ादा को प्रदान कर दिया था, के सम्बन्ध में आदेश होता है कि गुजरात के वर्तमान काल तथा भविष्य के समस्त कारकुन, मलिकुश्शर्क़ वल वुज़रा के पत्र के अनुसार शेखज़ादा के पास ही समझें।

(६)
लखनौती के इमामों[4], सैयिदों, मशायख़, ख़ानों, मलिकों तथा समस्त प्रजा के नाम पत्र।

लखनौती के समस्त ख़ानों, मलिकों, योग्य अमीरों, बुद्धिमान् वज़ीरों, सैनिकों, सेवकों एवं मुसलमानों को यह ज्ञात होना चाहिये कि हमारे विषय में ईश्वर की इतनी अधिक कृपा है कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। उसकी बहुत बड़ी कृपा यह है कि उसने हमको न्याय करने तथा संसार वालों की शान्ति तथा समृद्धि के लिए चुना।

मुझे ज्ञात हुआ है कि इलियास हाजी ने लखनौती तथा तिरहुट के लोगों पर खुल्लम खुल्ला अत्याचार तथा व्यर्थ का उत्पात इस सीमा तक कर रखा है कि वह स्त्रियों की भी हत्या करने लगा है। यह सभी को ज्ञात है कि किसी भी धर्म में काफ़िर स्त्री की हत्या की अनुमति नहीं है। इलियास बिना किसी अधिकार के तथा शरा की अनुमति के बिना लोगों से धन

१ फ़क़ीरों के निवास करने का स्थान।
२ जीविका।
३ मुस्तौफ़ियें ममालिक।
४ धार्मिक नेता; जो मुसलमानों को नमाज़ पढ़ाता हो।

वसूल करता है और कष्ट पहुँचाता है। वह किसी के प्राण तथा धन की चिन्ता नहीं करता और सभी को नष्ट करता है। क्योंकि वह प्रान्त हमारे स्वामियों के अधीन था और उनके उत्तराधिकार के कारण हमें प्राप्त हुआ है अतः उस प्रान्त की प्रजा की सहायता हमारे लिए अनिवार्य है। इलियास हाजी हमारे स्वर्गीय स्वामियों के जीवन-काल में आज्ञाकारी था। हमारे शुभ सिंहासनारोहण के समय भी वह आज्ञाकारी था। आज्ञाकारियों की प्रथा के अनुसार वह प्रार्थनापत्र तथा उपहार भेजा करता था। प्रजा पर उसके अत्याचार के सम्बन्ध में समाचार पाकर हम उसको चेतावनी देना चाहते थे। उसके सीमा से बढ़ जाने के कारण तथा खुल्लम खुल्ला विद्रोह कर देने के कारण अत्यधिक सेना लेकर उस प्रान्त की मुक्ति तथा वहाँ की प्रजा की समृद्धि के लिए हमने प्रस्थान किया ताकि उन लोगों को उसके अत्याचार से मुक्त करा दें। उसके अत्याचार के घाव हम न्याय तथा उपकार से भर रहे हैं। जिन लोगों के अस्तित्व के वृक्ष अत्याचार की आँधी से शुष्क होगये थे, उनमें हमारे आश्रय द्वारा फल आने लगेंगे। हमने अपनी अत्यधिक कृपा के कारण आदेश दे दिया कि लखनौती के समस्त लोगों, सैयिदों, आलिमों, मशायख़ तथा इसी प्रकार के दूसरे लोग और खानों, मलिकों, अमीरों, सद्रों, प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों, लावलश्कर को (जो कोई हमारे प्रति निष्ठावान् रहने का प्रयत्न करेगा और जिसका इस्लाम उसे इस ओर प्रेरित करे कि वह विलम्ब किये बिना संसार को शरण प्रदान करने वाले हमारे दरबार में उपस्थित हो जाय) जो अक़्ता, ग्राम, भूमि, वृत्ति तथा रोटी (जीविका) तथा वेतन प्राप्त होगा वह दुगना कर दिया जायगा। ज़मींदारों में से मुक़द्दम, मफ़रूज़ी तथा मालिक एवं इसी प्रकार के लोग—कोसी नदी की सीमा से लखनौती प्रदेश के अन्त तक—जो भी हमारे दरबार में उपस्थित होंगे उनकी विलायत का इस वर्ष का कर पूर्णतः क्षमा कर दिया जायगा। दूसरे वर्ष स्वर्गीय सुल्तान शम्सुद्दीन के राज्य-काल की प्रथानुसार ख़राज तथा कर निर्धारित किया जायगा। उससे अधिक किसी प्रकार न वसूल किया जायगा। क़िस्मात,[1] अवारिज़ाते[2] फ़रोई तथा मुहदेसात[3] जिनसे उस प्रदेश की प्रजा को कष्ट होता है तथा हानि पहुँचती है, पूर्णतः समाप्त कर दिया जायगा। जो मुक़द्दम, मालिक, राय, इत्यादि हमारे पास अपने सहायकों के दल सहित उपस्थित होंगे उन्हें उनकी अक़्ता, ग्राम, भूमि, रोटी (जीविका) वेतन, जो उन्हें प्राप्त होगा, का दुगना प्रदान किया जायगा। जो अपने आधे दल के साथ उपस्थित होगा उन्हें ड्योढ़ा और जो कोई अकेला आयगा उसे जो कुछ उसे प्राप्त है वही प्रदान किया जायगा। मैं उन्हें अपनी अपार कृपा एवं दया के कारण उनके स्थान से न हटाऊँगा। मैंने आदेश दे दिया है कि इस प्रदेश की समस्त प्रजा अपने-अपने वतन तथा घरों में निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करती रहे।

(७)

मुल्तान के ख़िते की दादबेगी से सम्बन्धित मन्शूर।

मुल्तान की दादबेगी[4] तथा एहतेसाब[5] अमुक व्यक्ति को इस आशय से प्रदान किया

---

१ हिस्सा करना, सम्भवतः राज्य के लिये अनुचित भाग प्राप्त करना।

२ अतिरिक्त कर, वे कर जो प्रचलित करों के अतिरिक्त हों।

३ विलायतों के खेतों तथा अचल सम्पत्ति पर जो कर अनुचित रूप से बढ़ा दिया जाता था अथवा दण्ड देकर या समझौते से वसूल होता था। (दस्तूरुल अलबाब, रामपुर पोथी पृ० ६ ब)।

४ दादबेग—क़ाज़ी के निर्णय का पालन कराना उसी का कार्य होता था। वह सुल्तान की अनुपस्थिति में दीवाने मज़ालिम का अध्यक्ष होता था और बहुत बड़ा अधिकारी होता था।

५ मुहतसिब का कर्त्तव्य। मुहतसिब समस्त ग़ैर इस्लामी प्रथाओं एवं आचरण की रोक थाम करने के लिये नियुक्त किये जाते थे। वह स्वयं दण्ड देकर शरा के विरुद्ध बातें रोक सकता था।

जाता है कि वह उस उत्कृष्ट कर्त्तव्य का पालन तथा धार्मिक बातों को कार्यान्वित कराता रहे। वह शरा के मार्ग तथा न्याय की प्रथा का पालन करे। जो लोग शरीअ़त के क्षेत्र से बाहर निकल रहे हों और धर्म के विरुद्ध कार्य कर रहे हों उन्हें कठिन परिश्रम तथा घोर प्रयत्न द्वारा उन कार्यों से रोके। मुल्तान के कुछ लोगों, जो किसी की पत्नी से उसके पहले व्यक्ति द्वारा तिलाक़ दिये बिना विवाह कर लेते हैं, में प्रचलित इस बिदअ़त को, जो समस्त धर्मों में हराम (निषिद्ध) है, उन लोगों को दण्ड देकर रोके। उसे यह घोषणा करा देनी चाहिये कि "हे मुल्तान वालो! तुम इस बुरे आचरण को त्याग दो।" यदि वे कहें कि हम अपने पूर्वजों की प्रथा का पालन करते हैं तो उसे समझ लेना चाहिये कि वे कुमार्ग पर हैं और मुसलमान नहीं हैं। उसके लिये यह आवश्यक है कि जिन लोगों ने इस प्रकार स्त्रियाँ रख ली हों उनके तिलाक़ दिलवा दे और इद्दत[1] की अवधि के उपरान्त उन्हें विवाह करने की अनुमति दे दे। उन्हें एक मास का समय दे दे ताकि वे इस हराम कार्य को त्याग दें। यदि इसके उपरान्त कोई यह कुकर्म करे और यह सिद्ध हो जाय, तो उसे उचित दण्ड दे।

(८)

एक अमीर को सिन्ध की सर लशकरी[2] के सम्बन्ध में मिसाल[3]।

सुल्तान ने अपने एक प्राचीन दास को उसके समकालीनों की अपेक्षा अधिक सम्मानित करके मुल्तान प्रदेश जूदी[4] पर्वत से उस नदी तट तक, जो उस स्थान पर है और समुद्र से मिलती है, इस दास को प्रदान किया है और इस दास को प्रत्येक प्रकार के पूर्ण अधिकार प्रदान किये हैं; सुल्तान द्वारा इस दास के विषय में यह आदेश हुआ कि हम जो कुछ राजधानी में करते हैं वह भी उसी प्रकार मुल्तान में आचरण करे, अतः अमुक बिन (पुत्र) अमुक को सरे लशकर नियुक्त किया जाता है और मुग़लों को पराजित करने तथा थट्टा के विद्रोहियों के दमन हेतु सेनाओं को उसके अधीन किया जाता है। उसे चाहिये कि वह युद्ध के समय ईश्वर पर भरोसा रक्खे और उसी से प्रार्थना करता रहे ताकि उसे धर्म-युद्ध में विजय प्राप्त हो।

(९)

एक अमीर को आलमाबाद की अक़्ता की नयाबत[5] प्रदान करने के सम्बन्ध में मिसाल।

अमुक अक़्ता उसे प्रदान की जाती है। वह यथासम्भव प्रजा की उन्नति के लिये प्रयत्न करता रहे। प्रजा को, जो ईश्वर की थाती है, अपनी कृपा की शरण में रक्खे और उसको आश्रय प्रदान करता रहे। कृषि तथा आबादी की उन्नति का अत्यधिक प्रयत्न करता रहे। आलमाबाद के समस्त रायों, ख़ूतों, मुक़द्दमों तथा प्रजा को आदेश दिया जाता है कि

---

१ शरा के अनुसार मुसलमान विधवा अथवा उस स्त्री का, जिसको तिलाक़ दे दिया गया हो, विवाह पति की मृत्यु अथवा तिलाक़ के ४ मास १० दिन के पूर्व नहीं किया जा सकता। यह शर्त उसके गर्भाधान के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये रक्खी गई है और इसे इद्दत कहते हैं।

२ सेनापति के पद से सम्बन्धित।

३ आदेश।

४ साल्ट रैंज।

५ नायब का पद।

वे अमुक बिन (पुत्र) अमुक को अक़्ता का नायब समझें। समस्त छोटे बड़े कार्यों के सम्बन्ध में उससे तथा उसके सहायकों से प्रार्थना करते रहें।

(१०)

तिलवारा के मुक़द्दम लखन राय के सम्बन्ध में आदेश।

तिलवारा में लखन राय ने विद्रोह तथा उपद्रव कर दिया था। उसका विद्रोह हमने युक्ति से शान्त किया और हम लखन राय के पुत्र वहल को अपना कृपापात्र बना कर लखन राय का कार्य सौंपते हैं ताकि वह प्रजा पर, जो ईश्वर की थाती है, कृपा करता रहे।

(११)

हमरुवाह तथा क़ुबूलवाह की दानगी[1] के सम्बन्ध में बाबदूजह को मिसाल।

बाबदूजह को शाही नहरों की खुदाई के लिये नियुक्त किया गया था। उसने इस विषय में अत्यधिक प्रयत्न किया। अन्य मुक़द्दम तथा सैनिक इस कार्य से भाग खड़े हुये थे। किन्तु उसने इस विषय में प्रयत्न करके साधारण श्रेणी से उच्च श्रेणी प्राप्त कर ली। क़ुबूलवाह तथा हमरुवाह की दानगी उसे सौंपी जाती है ताकि वह वालियों के सन्तोष हेतु परिश्रम करता रहे।

समस्त खूत, मुक़द्दम तथा परगनों की प्रजा उसे अपना दाना समझें और उसकी सेवा का प्रयत्न करते रहें। दानगी के कार्य में उससे परामर्श करें।

(१२)

दरबार के मलिकों, प्रतिष्ठित अमीरों, प्रसिद्ध हितैषियों तथा ख़ानों के लिये प्रतिज्ञा-पत्र।

दास इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं तथा शपथ लेते हैं कि वे नायबे अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ये रब्बुल आलमीन, सुल्तानुस्सलातीन अल वासिक़ बताईद अल्लाह अर्रहमान, अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज़ शाह सुल्तान ख़लदल्लाहो मुल्कहु व सुल्तानहु के प्रति शुद्ध हृदय से निष्ठावान् रहेंगे। उसके मित्रों के मित्र तथा उसके शत्रुओं के शत्रु रहेंगे। अपने जीवन काल में किसी प्रकार इन शर्तों का उल्लंघन न करेंगे और दरबार से सम्बन्धित लोगों, लावलश्कर एवं निष्ठावानों का विरोध न करेंगे। बादशाह के आदेश का उल्लंघन न करेंगे। इस दरबार के शत्रुओं तथा इसका हित न चाहने वालों की सहायता न करेंगे। किसी प्रकार खुल्लम खुल्ला अथवा छिपकर या कर्म अथवा वचन से इस दरबार का अहित न चाहेंगे। दुष्टता को हृदय में स्थान न देंगे। जिस प्रकार हमसे सम्भव हो सकेगा हम आज्ञाकारिता तथा निष्ठा का प्रयत्न करेंगे। यदि हमारा कोई पुत्र अथवा भाई भी विरोध करेगा तो हम उससे पृथक् रहेंगे और उसके विनाश का प्रयत्न करते रहेंगे। यदि हम इस प्रतिज्ञा-पत्र का किसी प्रकार उल्लंघन करें तो ईश्वर तथा मुहम्मद साहब के निकट एवं क़यामत में शापित रहें। हमें अपनी स्त्री तथा दासों पर भी कोई अधिकार न रहे।

---

१ सम्भवतः इसका सम्बन्ध दानगाना से होगा जिस के विषय में अफ़ीफ़ की तारीख़े फ़ीरोज़शाही देखिये।

(१३)

मलिकुश्शर्क़ शिहाबुद्दौला आख़ुर बेगे समरा तथा बदायूँ के मुक्ता की ओर से सुल्तान शहीद की मृत्यु के सम्बन्ध में संवेदना की अभिव्यक्ति तथा मुहम्मद शाह के सिंहासनारोहण से सम्बन्धित प्रार्थना-पत्र ।

अमुक द्वारा ज्ञात हुआ कि शहरयारे ग़ाज़ी[1] ने अफ़ग़ानपुर के पड़ाव पर पहुँचकर सुदृढ़ कूश्क में दरबारे आम किया। दुर्भाग्य से वह भवन हिलकर गिर पड़ा और वह धर्म-निष्ठ बादशाह शहीद हो गया और ख़ानों तथा मलिकों ने आपको राजमुकुट पहनाया। प्रथम समाचार द्वारा शरीर से प्राण निकल गये तथा दूसरे समाचार द्वारा जो प्राण निकल चुके थे, वे लौट आये। इस वृद्ध की ईश्वर से यह प्रार्थना है कि बादशाह के सम्मान तथा ऐश्वर्य में अत्यधिक उन्नति हो और इस वृद्ध के सिर पर बादशाह का छाया सर्वदा विद्यमान रहे।

(१४)

जाजनगर की विजय के सम्बन्ध में जो पत्र दास को प्राप्त हुआ था, उसका उत्तर ।

जाजनगर की विजय के सम्बन्ध में शुभ पत्र प्राप्त हुआ। मूसा दौलताबादी मसनदे आली तुच्छ दास के पास यह पत्र लाया। तुच्छ दास सिर को पाँव बनाकर उसके स्वागतार्थ बढ़ा और सम्मानपूर्वक उसे हाथ में लेकर उत्कृष्ट दरबार की ओर ज़मीनबोस[2] हुआ। उसके द्वारा इतनी प्रसन्नता तथा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ कि नया जीवन प्राप्त हो गया। उससे तीन मुख्य समाचार प्राप्त हुये। (१) बादशाह की सुरक्षा के समाचार (२) जाजनगर की विजय तथा अभागे गजपत राय के विनाश के समाचार (३) सम्मानित पताकाओं की राजधानी की ओर वापसी के समाचार।

फ़रमान में यह लिखा था कि जाजनगर का राय वर्षों से अपनी दासता से सम्बन्धित पत्र भेजा करता था। बादशाह ने उस पर विश्वास कर लिया था कि वह आज्ञाकारिता के क्षेत्र से बाहर न जायगा। जब विजयी पताकाओं ने लखनौती की ओर प्रस्थान किया तो मूर्ख राय ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया और हाथियों के भेजने से इनकार कर दिया। राय के महतों ने उसे यह समझाया कि राजधानी से जाजनगर बहुत दूर है और मार्ग अत्यन्त कठिन है। इस्लामी सेनायें इस विधान पर किसी प्रकार ठहर न सकेंगी। इन बातों के कारण राय ने आज्ञाकारिता त्याग दी और जो कुछ उसे देखना था, वह उसने देख लिया।[3]

विजयी पताकाओं ने जौनपुर से मूर्तियों के खंडन, इस्लाम के शत्रुओं के रक्तपात तथा पदमतलाव के समीप के हाथियों का शिकार खेलने हेतु प्रस्थान किया। किसी बादशाह द्वारा उनके शिकार का हाल ज्ञात नहीं। जाजनगर, जिसकी प्रशंसा समस्त यात्रियों ने की है, सुल्तान ने देखा।

सर्वप्रथम सुल्तान द्वारा गजपत के नगर और राय सालमीन सीखन के क़िले पर, जोकि एक अत्यन्त दृढ़ तथा भव्य क़िला था, क्षण भर में विजय प्राप्त हो गई। दूसरी विजय तासरम

---

१ सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़।

२ भूमि का चुम्बन किया।

३ कष्ट तथा अपमान सहन किया।

नगर की थी जो आजनगर का अत्यन्त दृढ़ किला था। वह तीमह् कहलाता था। किसी अन्य राज्य काल में वहाँ वालों ने खराज अदा न किया था और किसी भी सेना द्वारा वे पराजित न हुये थे। बिजयी सेनाओं की लूटमार द्वारा उस स्थान के आसपास से इतनी अधिक धन सम्पत्ति तथा मवेशी प्राप्त हुये कि उनका लेखा तैयार करना असम्भव है। इसी प्रकार नित्य एक नये नगर पर विजय प्राप्त होती थी, यहाँ तक कि विजयी पताकाओं की छाया बनारस तथा सारंगगढ़ की सीमा पर पड़ी। राय ने अपने बुरे दिन के विषय में भली भाँति जानते हुये भागने के पूर्व अहमद ख़ाँ तथा बाकी पात्र को बुलवाकर धन-सम्पत्ति, बर्तन तथा उपहार सुल्तान को भेंट करने के लिये सौंप दिये थे। उसने चुने हुये तथा उत्तम हाथी पहले ही से एक दृढ़ स्थान पर भेज दिये थे।

शाही सेना के पहुँचने के समाचार से आतंकित होकर अहमद खां तथा बाकी पात्र भाग खड़े हुये और उन्हें (राय के) उपहार तथा प्रार्थना-पत्र समर्पित करने का अवकाश न मिला। हाथियों की शृङ्खलायें खोलकर उन्हें सारंग पर्वत के जंगल में छोड़ दिया। राय अपना छत्र तथा पताका अपने स्थान पर छोड़ कर बनारस से अरकातीन (?) पहुँचा। कुछ शाही सेनाओं ने राय का, कुछ ने अहमद ख़ाँ का पीछा किया और कुछ उस प्रदेश के विध्वंस तथा विनाश में तल्लीन हो गईं। जो सेनायें राय राना सहस मल का पीछा करने के लिये भेजी गई थीं उन्होंने राय के शहनये पील को बन्दी बना लिया और अहमद ख़ाँ ने नम्रतापूर्वक शरण की याचना की और दरबार में ख़ाक बोस कर के सम्मानित हुआ। उसे ख़िलअत प्रदान हुये तथा उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की गई। जो सेनाय जाजनगर के आसपास के स्थानों के विध्वंस हेतु नियुक्त हुई थीं, उन्होंने तलवार तथा भाले से काफ़िरों के अभिमान का अन्त कर दिया। उस क्षेत्र में जहाँ भी मन्दिर अथवा मूर्तियाँ थीं, वे मुसलमानों के घोड़ों के खुरों द्वारा छिन्न भिन्न हो गईं।

विनाश तथा विध्वंस के उपरान्त कहा जाता है कि राय दाहिर चन्द राय का श्वसुर अपने दाँतों में तृण दबा कर शुभ द्वार के समक्ष खड़ा हो गया और उसने निवेदन किया कि इस प्रदेश में लाशों तथा पराजित राय के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया है। यदि दयापूर्वक आदेश हो तो राय की जो विजयी सेनाओं के भय से कोने में घुस गया है खोज की जाय और उसने जो कुछ किया है उसका वह फल भोगे। राघव ज्यौता पंडित ने उसके प्रति दया की प्रार्थना की। सुल्तान ने अपनी अत्यधिक कृपा, जो प्रजा की ओर है, के कारण उनकी प्रार्थना स्वीकार करली और राय के उपस्थित किये जाने के सम्बन्ध में फ़रमान राघव को दे दिये। राघव ने तत्पश्चात् यह सूचना पहुँचाई कि राय फ़रमान पाते ही सर्वदा आज्ञाकारी तथा दास बने रहने का वचन देकर हिन्दुओं की प्रथानुसार भूमि पर लेट गया और उसने माथे से लेकर पाँव के नाख़ुन तक (के समस्त अंग) भूमि पर रख दिये और जो कुछ हाथी तथा धन-सम्पत्ति उसके पास थी, उसे सुल्तान को भेंट कर दिया। अपने गजगृह से १९ हाथियों में से १८ पर्वतरूपी चुने हुये उत्तमहाथी अपने सेवकों के हाथ शाही दरवार में भेजे और निवेदन कराया कि "मेरे पास ५४ हाथी थे। १८ हाथी ये हैं जो भेज रहा हूँ, ८ इसके पूर्व भेज चुका हूँ। २८ हाथी अहमद तथा बाकी पात्र को दे दिये थे कि वे शाही दरबार में पहुँचा दें। एक हाथी गजपति के सम्मान हेतु रख लिया है। यदि आदेश हो तो उसे भी भेज दूँ। मैं इस बात की प्रतिज्ञा करता हूँ कि प्रत्येक वर्ष जितने हाथी भी बनारस में प्राप्त होंगे उन्हें शाही पीलख़ाने के लिये बिहार तथा कड़ा के मलिकों को भेजता रहूँगा। क्योंकि उस दरबार द्वारा मैं मुक्त कर दिया गया हूं अतः जब तक मैं जीवित रहूँगा, आज्ञाकारिता के मार्ग से विचलित न होउँगा।" इस वचन की उसने अपने धर्म के अनुसार शपथ द्वारा पुष्टि की।

जब उसकी सच्चाई, आज्ञाकारिता तथा निष्ठा का प्रमाण मिल गया तो बादशाह ने यह आदेश दिया कि यदि वह प्रारम्भ में ही आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेता तो वह प्रदेश शाही आतंक द्वारा ध्वस्त न होता। यह ऐसा प्रदेश था कि उसकी उन्नति तथा समृद्धि की कोई सीमा न थी। प्रत्येक ग्राम क़स्बे के समान तथा प्रत्येक क़स्बा नगर के समान था। वहाँ की भूमि हरियाली के कारण आकाश के समान थी और उद्यान फूलों से स्वर्ग के समान थे। वहाँ की मिट्टी से कस्तूरी तथा केसर को ईर्ष्या होती थी। वहाँ का जल आबेहयात[1] के चश्मे को लज्जित करता था और वहां के वृक्ष चन्दन के समान थे किन्तु जाहिल राय ने सुल्तान के प्रति आज्ञाकारिता का मूल्य न समझा और इस प्रकार के राज्य को एक 'दांव' पर हार गया।

जब राय के सेवकों ने हाथी तथा धन सम्पत्ति राजसिंहासन के समक्ष उपस्थित करके भूमि पर सिर रक्खा और सुल्तान की प्रशंसा तथा उसके प्रति शुभ कामनायें करके राय की ओर से क्षमा याचना की तो सुल्तान ने अपनी स्वाभाविक दया के कारण उसे खिलअत प्रदान किये और उसके सेवकों को भी खिलअतें तथा इनाम प्रदान किये।

इन विजयों की प्राप्ति तथा समुद्र की सैर एवं जगन्नाथ नामक मन्दिर के खण्डन तथा मूर्ति-पूजकों के विनाश के उपरान्त विजयी पताकाओं ने राजधानी देहली की ओर प्रस्थान किया। उसी मंज़िल से सुल्तान ने जंगल की ओर हाथियों का पीछा करने के लिये प्रस्थान किया और आदेश दिया कि ग़नीमत[2] का धन जब इस्लामी राज्य में पहुँचे तो ⅘ भाग बैतुलमाल में रक्खा जाय और ⅕ ईश्वर के आदेशानुसार वितरण किया जाय। इस प्रकार की बाँट संसार में किसी अन्य राज्य-काल में न हुई थी। शुभ पताकायें संभलपुर तथा कोकी होती हुई, कड़ा की ओर वापस हुईं।

दास की प्रार्थना है कि ईश्वर सुल्तान को सर्वदा विजय तथा सफलता प्रदान करता रहे और उसे दीर्घायु प्राप्त हो।

(१५)

शेखुश्शयूखे आलम सद्रुल हक़ वद्दीन मुहम्मद इस्माईल को शेखुल इस्लामी प्रदान होने पर पत्र।

आपको शेखुल इस्लामी[3] का का पद प्रदान हुआ। इससे प्रसन्नता हुई।

(१६)

मुल्तान के वक़्फ़ों[4] के सम्बन्ध में सुल्तान को प्रार्थना-पत्र।

मुल्तान के हिसाब किताब के समय दीवाने विज़ारत द्वारा जो पत्र वक़्फ़ के ग्रामों तथा मिल्क की भूमि को अधिकार में करने के आदेश के विषय में प्राप्त हुआ था, उसके सम्बन्ध में पत्र।

वक़्फ़ों का विवरण इस प्रकार है:

भूतकाल के सुल्तानों के वक़्फ़—सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद साम ग़ोरी के वक़्फ़ से

१ अमृत जल।

२ युद्ध की लूट में प्राप्त धन सम्पत्ति।

३ इस्लामी राज्य में धार्मिक मामलों से सम्बन्धित सर्वोच्च अधिकारी।

४ लोकोपकारार्थ दी हुई सम्पत्ति अथवा वह भूमि जो किसी धार्मिक कार्य के लिये प्रदान की जाती थी।

सम्बन्धित दो ग्राम हैं, मुल्तान की जामा मस्जिद के लिये, मुदर्रिसों के पाठन, मुकर्ररों,[1] विद्यार्थियों, मस्जिद के सेवकों, अज़ान देने वालों, चटाई, बोरिये, प्रकाश तथा मस्जिद के भवन के व्यय हेतु। सुल्तान मस्जिदों की सुव्यवस्था के लिये सर्वदा इच्छा किया करता है। इसका प्रबन्ध शेखुल इस्लाम, जो इस वक़्फ़ के मुतवल्ली[2] हैं, की प्रार्थना पर उन्हें सौंप दिया गया। सुल्तान द्वारा यह आदेश हुआ था कि मस्जिद के भवन के अत्यधिक व्यय के कारण एक बार दीवानी के कर से उसे धन प्रदान किया जाय, तत्पश्चात् उन दोनों ग्रामों से, जो मस्जिद के भवन के (व्यय के) लिये निश्चित हैं, धन दिया जाया करे।

ख़ाने शहीद[3] के वक़्फ़ में दो ग्राम हैं जो उसने अपने मदरसे, मुदर्रिस की वृत्ति तथा मुकर्ररों एवं विद्यार्थियों के लिये निश्चित किये थे। यदि वक़्फ़ (के धन से) उन्हें कठिनाई हो तो शरा के अनुसार बैतुलमाल पर उनका हक़ है[4]।

तलबीना की जामा मस्जिद का वक़्फ़ भी सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद साम का वक़्फ़ कहलाता है। उससे सम्बन्धित एक ग्राम है और उसका भी व्यय उसी प्रकार है।

सुल्तान शहीद का वक़्फ़ मुल्तान के क्षेत्र में नमाज़गाह तथा मस्जिद से सम्बन्धित है। इमाम तथा मस्जिद में अज़ान देने वाले की वृत्ति एवं नमाज़गाह की मरम्मत का व्यय उससे सम्बन्धित है। इस तुच्छ दास के लिये यह आवश्यक था कि सुल्तान शहीद[5] का वक़्फ़, जो हमारे स्वामियों का स्वामी था सबसे ऊपर लिखता, किन्तु क्रमानुसार लिखने के कारण प्राचीन सुल्तानों के वक़्फ़ को सबसे पहले लिखा गया।

(२) दानिशमन्दों,[6] सूफ़ियों तथा अमीरों के वक़्फ़, जिन्होंने ग्रामों तथा भूमि का अह्या[7] किया और जिनके मिल्क[8] का भाग निश्चित है और शनैः शनैः जैसी कि प्रथा एवं आदत है, (के साथ) दीवानी का हिस्सा भी वक़्फ़ होगया। मिल्क के भाग में कुछ कहा नहीं जा सकता। विवादास्पद दीवानी का भाग है। उपर्युक्त दानिशमन्द तथा सूफ़ी सुल्तान के विशेष शुभ-चिन्तक तथा फ़क़ीर हैं। जब सम्मानित पताकाओं ने जाजनगर की ओर प्रस्थान किया था तो वे क़ुरान पढ़ा करते थे। यदि दीवानी का भाग भी दान कर दिया जाय तो वे उसके उचित पात्र हैं। उस समस्त वक़्फ़ से बड़ा साधारण सा धन प्राप्त होता है। मुल्तान में ७०० वर्ष से इस्लाम है। मुल्तान के निवासी नाना प्रकार की दुर्घटनाओं के कारण छिन्न-भिन्न हो चुके हैं और मुल्तान में लेशमात्र भी रौनक़ शेष नहीं रह गई है। सुल्तान के राज्यकाल में मुल्तान नगर पुनः आबाद हुआ है और वहाँ के निवासी अपनी प्राचीन मिल्क के लोभ में लौट आ रहे हैं। इस तुच्छ दास को कुछ कहने का किस प्रकार साहस हो सकता था परन्तु इस कारण कि मुल्तान, सुल्तान का कारनामा है अतः धृष्टता की, जिसके लिये क्षमा-याचना करता हूँ। इस विषय में जो कुछ आदेश हो, मलिके मुलूकुश्शर्क़ वल वुज़रा ऐनुलमुल्क वक़्फ़ की मिल्क से सम्बन्धित ग्रामों तथा भूमि के विषय में आदेश दे।

सफ़र ७६३ हि० (१३६१—६२ ई०)

---

१ क़ुरान का पाठ करने वाले।
२ प्रबन्धक।
३ मुहम्मद बल्बन का ज्येष्ठ पुत्र।
४ बैतुलमाल से उन्हें धन दिलाना चाहिये।
५ सम्भवतः सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़।
६ बुद्धिमानों, आलिमों।
७ पुनरुत्थान करना, कृषि योग्य बनाना।
८ दान अथवा धर्मार्थ दी जाने वाली भूमि।

(१७)

शेखुल इस्लाम सद्रुद्दीन मुहम्मद के नाम पत्र।

स्वर्गीय मलिक क़ुतुबुद्दीन दबीर के पुत्र बड़ा पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं, और वे दरिद्र हो गये हैं अतः उनकी सहायता आवश्यक है।

(१८)

मलिकुल मशायख़ रज़ी उद्दीन के नाम पत्र।

दरवेशों का सेवक ऐने माहरू निवेदन करता है कि मोलाना हाजी बिहारी ने ख़्वाजा हुसामुद्दीन जुनैदी के पत्र में लिखा है कि जब उच्छ के कारकुनों को किसी कार्य की आवश्यकता होती है तो वे बेगार कराते हैं और अपशब्द कहते हैं। यदि उन्हें धन की आवश्यकता होती है तो वे लोगों को अँधेरी तथा तंग कोठरी में बन्दी बना देते हैं और तत्काल २००० तन्के अपितु इससे अधिक प्राप्त कर लेते हैं। वे किसी का भय नहीं करते। आलिमों तथा मशायख़ ने इस पाप को रोकने का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु इससे कुछ लाभ न हुआ।

आपके लिये उनकी सहायता करनी आवश्यक है। उच्छ की विलायत के मुक़्ता ख़्वाजा कमालुद्दीन को समझाते हुये पत्र लिखदें। धमकाने अथवा चेतावनी देने की आवश्यकता नहीं। उसे परोपकार तथा न्याय से सम्बन्धित पुण्य की सूचना दे दें। उच्छ के मुक़्ते के न्यायपूर्वक कार्य करने के कारण शेखुल मशायख़ क़ुतुबुल औलिया जमालुद्दीन की पवित्र आत्मा को संतोष प्राप्त होगा और यही पर्याप्त है।

(१९)

मलिकुल मशायख़ शेख़ रज़ी उद्दीन को पत्र।

आपका कृपा-पत्र इस दरवेशों के दास को प्राप्त हुआ। उच्छ के क़ाज़ी ने यह समाचार पहुँचाया था कि शेख़ रज़ी उद्दीन ने उच्छ में नमाज़ की अज़ान में एक वृद्धि करदी है। इस तुच्छ ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। उसका विचार था कि आपने जो आदेश दिया है वही उचित होगा। तत्पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि ख़तीब ने वृद्धि की है। इस विषय पर क़ाज़ी तथा ख़तीब में वाद विवाद हो रहा है और युद्ध तक नौबत पहुँच चुकी है। तुच्छ ने कहा कि यदि झगड़ा समाप्त कर दिया जाय तो उचित होगा। जो कुछ सत्य हो उस पर आचरण किया जाय। ख़तीब के लिये यह आवश्यक था कि मुझसे परामर्श कर लेता और मुझसे आज्ञा प्राप्त कर लेता। यदि शेख़ रज़ी उद्दीन की अनुमति होती और शेख़ जमालुद्दीन तथा शेख़ बहा उद्दीन के रौज़े एवं शेखुल मशायख़ सद्रुद्दीन की अनुमति होती तो ख़तीब से पूछताछ की जाती कि मेरी आज्ञा के बिना उसने यह कार्य क्यों किया। यद्यपि यह बात धर्म से सम्बन्धित है किन्तु बादशाह अथवा उसके नायब का आदेश आवश्यक था। आशा है कि इस नम्र निवेदन से किसी प्रकार दुःख न होगा।

दादबेगी[1] का विवरण इस प्रकार है। अन्य नगरों के क़ाज़ी तथा दादबेगी दोनों एक साथ विभाग में बैठते हैं। क़ाज़ी जो निर्णय करता है दादबेगी उसे कार्यान्वित कराता है। किन्तु उच्छ के दादबेग ने रवायतें[2] भेजी थीं। यह नवीनीकरण करने वाले मौलाना मुइज़ बिहारी का हवाला देते हैं। मौलाना मुइज़ स्वर्गीय सुल्तान (मुहम्मद शाह) के राज्यकाल में पदच्युत हो गया था।

सैयिद जमालुद्दीन के विषय में जो कुछ लिखा था, उसके प्रसंग में निवेदन है कि ग्रालमाबाद के क़िले का निर्माण उसने कराया था ग्रौर इस कार्य हेतु उसने ग्रत्यधिक कष्ट भोगे थे, ग्रतः उसे ग्राप ग्रपनी दरवेशी की शरण में रक्खें ताकि उसे स्थायित्व प्राप्त हो।

संक्षेप में, यदि किसी कारण शुभ हृदय को तुच्छ की वजह से कोई कष्ट पहुँचा हो तो वह ग्रपना ग्रपराध स्वीकार करता ग्रौर क्षमा-याचना करता है।

(२०)
मलिकुल मशायख़ रज़ी उद्दीन के नाम पत्र।

ग्रापके पत्र में लिखा था कि बद्रुद्दीन क़ीमाज़ तथा कमाल ताज ने मुल्तान से ग्राकर प्रजा पर एक मुहदिस[3] लागू किया ग्रौर उससे समस्त प्रजा चिल्ला उठी। इस मुहदिस को, प्रारम्भ में जब नगर ग्राबाद थे ग्रौर लोग सम्पन्न थे, स्वर्गीय सुल्तान ने दूर कर दिया था। जब प्रजा छिन्न-भिन्न तथा विवश हो गई तो यह मुहदिस ऐसे बादशाह के राज्यकाल में मुसलमानों पर न लगाया जाय। जब मुहदिस न लागू था तो समस्त प्रजा कठिनाई से जीवन व्यतीत करती ही थी, ग्रब वह कैसे जीवन व्यतीत कर सकती है? २५ हिन्दू दूकान में बैठते हैं। वे सब इसमें सम्मिलित हैं। उन पर ग्रधिक जिज़या लगाया जाय। ग्रन्य लोग इस क़िस्मत[4] को किस प्रकार सहन कर सकेंगे?

इस प्रसंग में निवेदन है कि दास ने उच्छ के कारकुनों को किसी भी मुहदिस का ग्रादेश नहीं दिया है। मुझे चिन्ता है कि उन्होंने कौनसा मुहदिस चलाया है। पत्र में मुहदिस की व्याख्या न थी जो इसके विषय में ज्ञान प्राप्त हो सकता। प्रजा की दरिद्रता तथा कष्ट का जो उल्लेख था तो उससे तात्पर्य यदि लशकरियों से हो तो सम्भव है कि ऐसा ही हो। यदि व्यापार ग्रथवा व्यवसाय से सम्बन्धित कर से तात्पर्य हो तो मुझे भली भाँति इस बात की स्मृति है कि सुल्तान ग्रलाउद्दीन के राज्यकाल से लेकर इस समय तक कभी इतनी समृद्धि न थी। दिन में दो जीतल ग्रथवा ३ जीतल का लाभ होता था। जुलाहा दो जीतल में चादर बुनता था। ग्राजकल ३ जीतल लेता है। दरज़ी ४ जीतल में सीता था। ग्राजकल ३ जीतल (?) से संतुष्ट नहीं। ग्राजकल ग्रनाज भूतकाल की ग्रपेक्षा सस्ता है। वे लोग ग्रत्यधिक मज़दूरी लेने से, जो वे ग्रकाल के समय लेते थे, बाज़ नहीं ग्राते। दरज़ी कोई न्याय नहीं करता। चादर बुनने वाला ग्रपनी इच्छानुसार बुनता है।

---

१ क़ाज़ी के निर्णय को कार्यान्वित कराना दादबेग का कर्त्तव्य होता था।

२ परम्परागत कथायें।

३ पूर्व पृष्ठ में मुहदेसात देखिये।

४ पूर्व पृष्ठ देखिये (ग्रनुचित बाँट ग्रथवा सरकारी कर)

आपको भली भाँति ज्ञात होगा कि सेना वाले धर्म तथा राज्य के रक्षक होते हैं। वलियों को उनके पक्ष में रहना उचित है ताकि उनके द्वारा सुन्नत[1] के मामले तथा शरीअत की बातों की उन्नति हो।

(२१)
मलिकुल मशायख़ रज़ी उद्दीन को पत्र।

जो कुछ दरवेशों के आगमन तथा ग्रामों के कर की न्यूनता के विषय में लिखा था, उसका ज्ञान प्राप्त हुआ। निवेदन है कि जब विजयी पताकायें विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली को वापस होंगी तो यह बात सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत की जायगी। आप ईश्वर से प्रार्थना करें कि शाही सवारी शीघ्र राजधानी में पहुँच जाय।

उच्छ के क़िले के नदी तट की सैर की इच्छा:—जिस प्रकार लिखा गया उसी प्रकार है। उच्छ बड़ा प्राचीन नगर है। वहाँ इतनी मस्जिदें, मदरसे तथा मुसलमान बुज़ुर्गों की एबादतगाहें हैं कि तुच्छ के हृदय को उनकी बड़ी चिन्ता है। ईश्वर ने चाहा तो ४ रबी उल अव्वल को उच्छ की ओर प्रस्थान होगा।

ख़ुदावन्द की जो यह इच्छा है कि तुच्छ मख़दूमज़ादे की सेवा द्वारा सम्मानित होता रहे तो यद्यपि यह बात दास को आश्रय प्रदान करने के लिये कही गई है किन्तु यह तुच्छ नहीं चाहता कि मख़दूमज़ादा आप से दूर रहे और अपने सम्बन्धियों से पृथक् रहे तथा परदेश के जीवन के कष्ट सहन करे।

क़ीमाज़ के मेरे प्रति झूठे दोषारोपण के विषय में जो कुछ लिखा गया वह निःसन्देह सत्य है। क़ीमाज़ ने मेरे ऊपर अनेकों झूठे दोष लगाये हैं और इस बात की चिन्ता नहीं की कि वह राजसिंहासन के समक्ष पूछताछ के समय क्या उत्तर देगा। आप इस विषय में कोई चिन्ता न करें।

(२२)
सैयिद जलालुद्दीन अहमद बुख़ारी के नाम पत्र।

यदि समस्त मशायख़ तथा पवित्र लोग इस तुच्छ तथा समस्त पदाधिकारियों के विषय में ईश्वर से प्रार्थना करते रहें कि वह हम लोगों को न्याय के मार्ग पर रक्खे तो यह उचित होगा न कि हम लोगों के दोष निकालें तथा बुराई करें, जैसा कि एक बुज़ुर्ग ने दास को लिखा है। हम तुच्छ लोग अपने अत्याचार तथा अपनी विवशता को स्वीकार करते हैं।

इस बात का अत्यधिक प्रयत्न किया जाता है कि प्रजा से कृपा, दया, नेकी तथा क्षमा-युक्त व्यवहार किया जाय किन्तु प्रजा असावधान है। सैयिद लोग ख़राज अदा करने से, जो उनका कर्त्तव्य है, मना करने लगे हैं। जुर्माना अदा करना उन्होंने अपना स्वभाव बना लिया है। पिछले वर्ष उन्होंने ख़राज देने का प्रतिज्ञापत्र शेख़ कबीर के रौज़े में लिखकर दिया था किन्तु उसका पालन न किया। आप कृपा करके उन्हें समझा दें कि वे इस बुरे नियम को छोड़ दें और आज्ञाकारिता प्रदर्शित करते रहें, ख़राज अदा करें और प्रजा से उत्तम व्यवहार करें, ख़राज का धन, जो मुजाहिदों, ग़ाज़ियों, आलिमों तथा दरिद्रियों को प्रदान होता है,

१ सुन्नत : मुहम्मद साहब का बताया हुआ आचरण।

इसी प्रकार व्यय हो। यह तुच्छ इस कार्य को सम्पन्न कराने में विवश नहीं है अपितु आपको साक्षी कर रहा है कि यदि वे इस दुराचार को न त्यागेंगे तथा खराज न अदा करेंगे एवं आज्ञाकारी न रहेंगे तो उचित दण्ड के पात्र होंगे। यदि वे खराज अदा करते रहेंगे और आज्ञाकारी रहेंगे तो सहस्रों प्रकार से उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की जायगी।

(२३)
शेख़ हसन सरबरहना के नाम पत्र।

स्वर्गीय ख्वाजा क़ुतुबुद्दीन दबीर की, जो शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया का मुरीद था, बहिन तथा उसके सहायकों को शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के समय से १५० चाँदी के तन्के वार्षिक तथा प्रति दिन दो हिस्सा भोजन का मिला करता था, अतः यह उन्हें तुरन्त प्रदान करने की कृपा की जाय। इससे आप को बड़ा पुण्य होगा।

(२४)
क़ाज़ी मिनहाजुद्दीन अब्दुल्लाह मुक़तदिर के नाम पत्र।

'शरहे कश्शाफ़ नामक' पुस्तक, जिसे मुझको प्रदान करने का आपका विचार है, के लिये अधिक प्रतीक्षा न करायें।

(२५)
सद्रे सुदूरे जहाँ जलालुल हक़्क़ वद्दीन के नाम पत्र।

इस तुच्छ के पुत्रों तथा सम्बन्धियों ने आपकी उनके प्रति अपार कृपा तथा दया के विषय में इतना अधिक लिखा है कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। इस तुच्छ ने किसी वस्तु के लिये दानगाना तथा ज़कात की रोक टोक नहीं की है। मुझे विश्वास है कि वे ज़कात स्वयं अदा करेंगे।

(२६)
सैयिदुल क़ुज़्ज़ात वल हुक्काम मुइज़्ज़ुद्दीन उच्छ के हाकिम के नाम पत्र।

उच्छ निवासी खिज्र अबू बक्र फ़रियाद लाया है। सैयिदुल क़ुज़्ज़ात के भतीजे मुहम्मद तथा उसके सम्बन्धियों ने न्याय के मार्ग से मुख मोड़ लिया है। उन्होंने फ़रियादी पर अत्याचार किया तथा जूते मारे हैं। यदि यह सत्य है तो यह कार्य शरा के आदेशों के प्रतिकूल तथा मूर्खतापूर्ण है। यह आवश्यक था कि सैयिदुल क़ुज़्ज़ात न्याय से कार्य करते ताकि अभियोग का अन्त हो जाता।

इसके अतिरिक्त उन लोगों ने यह सूचना भी दी है कि सैयिदुल क़ुज़्ज़ात इससे पूर्व ज़कात के विषय में जिसे बत्ता कहते हैं आज्ञापत्र देते थे किन्तु कमाल ताज द्वारा उन लोगों की, जिनपर अत्याचार हुआ है, सहायता करने के कारण आज्ञापत्र देने से मना कर दिया गया है। यदि कमाल ताज का आदेश अत्याचार से मुक्त है तो आप को उसकी सहायता करके जो कुछ हुआ है उसके प्रति न्याय करना चाहिये। यदि आप उसके आदेश को अत्याचार से मुक्त नहीं समझते तो इसकी सूचना देनी चाहिये थी न कि आदेश। यदि आप शत्रुता के कारण

आज्ञा-पत्र में विलम्ब करते हैं जिससे बैतुलमाल का धन नष्ट होता है और व्यापारियों की दशा खराब होती है तो उसकी अनुमति न तो शरा के अनुसार है और न बुद्धि के।

(२८)

थानेसुर (थानेश्वर) के क़ाज़ियों के नाम पत्र।

ज़ियाउद्दीन अपने ग्राम की प्रजा से जो शाही आदेशानुसार उसकी वजह् से सम्बन्धित है और जिज़या तथा उसकी कृषि बादशाह् के आदेशानुसार उसका हक़ है, लेता है। वह् उसकी (आय) से युद्ध के अस्त्रशस्त्र एकत्र करता है और वह् शुभ पताकाओं के साथ लखनौती के अभियान में था और वह् उस पर (कृषि तथा जिज़ये पर) अधिकार जमाने का पात्र है और वह् अपने व्यय तथा युद्ध के अस्त्र शस्त्र पर व्यय करने के लिये उसे ले सकता है, उसके सम्बन्ध में आपके कुछ कर्मचारी, जिन्हें शरा का कोई ज्ञान नहीं, कहते हैं कि प्रजा पर किसी का अधिकार नहीं। वह् स्वतन्त्र है। वे मूर्ख इतना नहीं समझते कि उनके प्राणों पर अधिकार जमाने को कौन कहता है किन्तु उनके जिज़ये पर जो बादशाह् किसी की वजह् में निश्चित कर देता है, उसका अधिकार हो जाता है। जिस कार्य का बादशाह् आदेश दे देता है वह् स्वीकृत होता है। ज़िम्मी के लिये जिज़या अदा करना अनिवार्य होता है। बादशाह् द्वारा व्यय का आदेश हो जाने पर यदि कोई अपने आपको स्वामी कह कर यह् जिज़या लेले तो यह् हराम है। कोई भी क़ाज़ी यही निर्णय देगा कि ग्राम के स्वामी को जिज़ये से क्या मतलब।

यदि कोई भूमि किसी व्यक्ति की वजह् में देदी गई हो और प्रजा ने उसे ख़ाली रक्खा हो तो खराजी भूमि को इस प्रकार खाली रखने से ख़राजी भूमि पर अधिकार होने के कारण मात्र खराज अनिवार्य हो जाता है। क़ाज़ियों के कर्मचारी भूमि के ख़ाली रहने का कारण बने और अपनी दुष्टता के कारण प्रजा से (अन्य स्थान पर) ले जाकर कृषि कराई और कहते हैं कृषि कहीं भी हो कृषि ही है तो यह् बात कल्पना मात्र है। यदि उन्हें फ़िक़ह् का ज्ञान होता तो वे यह बात न कहते। ज़मीने वज़ीफ़ा[१] रिक्त नहीं रहती। या तो वह् ख़राजी[२] होती है या उश्री।[३] जिज़या किसी की सम्पत्ति नहीं होता। खेद है कि ये लोग कितना व्यर्थ का वाद विवाद करते हैं।

(२९)

मौलाना शम्सुद्दीन मुतवक्किल के नाम पत्र।

जिस समय मलिक ख़ास हाजिब दीबालपुर की प्रजा तथा दासों के दावों से परेशान था उस समय इस तुच्छ ने उसके कार्य को ठीक कराने में, जिसे वह् सुल्तान का कार्य समझता है, किसी भी प्रयत्न में कमी न की। जब उसके कार्य ठीक हो गये तो वह् विरोधी बन गया। सुल्तान के हृदय में यह् बात आया करती थी कि उसके पिता तथा उसका कितना हमने उपकार किया किन्तु वह् फिर भी न्याय से कार्य नहीं करता।

१ कृषि योग्य भूमि।

२ जिस पर ख़राज लागू होता है।

३ जिस पर उश्र लागू होता है।

ऐसी दशा में बैतुलमाल से उस व्यय को पूरा करना चाहिये किन्तु यदि बैतुलमाल में "फ़ै" न हो तो इसमें कोई आपत्ति नहीं कि जेहाद की आवश्यकता पड़ जाने पर एक दूसरे को सहायता देकर शक्ति पहुँचाई जाय। यह बात स्पष्ट है कि इसमें थोड़ी सी हानि है किन्तु बड़ी हानि को दूर करने के लिए छोटी हानि सहन करना चाहिये। मुहम्मद साहब ने आवश्यकता पड़ने पर सफ़वान का धन उनकी अनुमति के बिना ले लिया था। 'सियरे शाहान' में लिखा है कि यदि बैतुलमाल में धन न हो तो इमाम को इसका अधिकार है कि उसे जितने धन की आवश्यकता हो वह लोगों से वसूल करे क्योंकि मुसलमानों के हित का देखना उसके लिए आवश्यक है। 'किताबे मुहीत' में इसी प्रकार उल्लेख है कि यदि सेना का सामान इत्यादि ठीक नहीं किया जायेगा तो मुशरिक मुसलमानों पर अधिकार प्राप्त कर लेंगे और इसमें जो हानि है वह स्पष्ट है; अतः अच्छा यही है कि धनी लोगों से इतना ले लिया जाय, जो सेना की तैयारी के लिए पर्याप्त हो सके। इस समस्या को मौलाना इमामुद्दीन हरवी ने हिरात में भलीभाँति समझा दिया है और लगभग ३० हज़ार सैनिक एकत्र कर लिये गये हैं। वे इस शक्ति के अनुसार मुग़लों का, जो धर्म के शत्रु तथा शैतान के समूह से सम्बन्धित हैं, डटकर मुक़ाबला करते रहते हैं। वे सर्वसाधारण की सहायता तथा इस्लाम की रक्षा करते हैं।

यदि यह कहे कि इस पर फ़तवे नहीं देना चाहिये, क्योंकि वह समय व्यतीत हो गया जब कि न्यायालय सावधानी से और केवल इस्लाम तथा धर्म की रक्षा के लिए यह सब कार्य करते थे किन्तु अब इस विषय में कर लेकर अमीरों की ही धन सम्पत्ति तथा आय में वृद्धि होगी, इससे इस्लाम को सहायता पहुँचाने का उद्देश्य समाप्त हो जायेगा, तो इसका उत्तर यह है कि अकस्मात् घटनाओं तथा कष्टों के समय धन का वसूल करना शरा के अनुसार स्वीकृत है। यह आय केवल अस्थाई होती है। अस्थाई बात से स्थाई बात का पतन नहीं होता; हाँ, यह आवश्यक है कि इस कार्य को सम्पन्न कराने के लिए ऐसे लोगों को चुना जाय जिनके न्याय के पल्लू सत्यता के क्षेत्र में रहते हों और वे अनुचित बातें न करते हों। यदि ऐसे लोगों का चुनाव कठिन हो और यह भय हो कि लोग अन्याय तथा अत्याचार करते रहेंगे तो फिर इस सिद्धान्त के अनुसार कि 'आवश्यकता पड़ने पर हराम[1] भी हलाल[2] हो जाता है, वह ख़राज, जो प्राचीन काल से लागू है और जिसका सर्वसाधारण को ज्ञान है, वसूल कर लिया जाय। इससे कोई दोष तथा उपद्रव भी उत्पन्न नहीं होता। इस प्रकार कार्य न करना चाहिये कि ऐसी वस्तु पर कर लिया जाय जो उपस्थित नहीं है और उसे उपस्थित मान लिया जाय क्योंकि इससे उपद्रव तथा ख़राबी का भय हो सकता है। बुद्धिमान् तथा सचेत लोग ऐसी बात करते हैं जिससे कम से कम हानि हो। यह कहा जाता है कि कुछ दोष और हानियाँ दूसरे दोषों तथा हानियों से हल्की होती हैं।

इन गोष्ठियों में, जहाँ इस प्रकार का वादविवाद होता है, यह भी कहा जाता था कि भाव निश्चित करने वाला केवल ईश्वर ही है। चीज़ों का भाव निश्चित करना स्वीकृत है। हमारे आलिम इसे उसी दशा में उचित समझते हैं जबकि इनके द्वारा सामान्य हानि तथा कष्ट का निवारण हो जाय। 'काफ़ी' में यह लिखा है कि आदमियों तथा मवेशियों का भोजन जिन वस्तुओं पर आधारित है उनका एहतेकार उचित नहीं। उसी के उपरान्त यह कहा गया है कि जिन वस्तुओं का एहतेकार मना किया गया है उनका सम्बन्ध ऐसी वस्तुओं से है जिन

---

१ शरा द्वारा अस्वीकृत कार्य।

२ शरा द्वारा स्वीकृत कार्य।

पर मनुष्यों तथा पशुओं की जीविका का आधार है, उदाहरणार्थ गेहूँ, जौ, अंगूर, खजूर, अंजीर। यह अबू हनीफ़ा[1] तथा मुहम्मद[2] के कथनानुसार है और इसी के अनुसार फ़तवे भी हैं। अबू यूसुफ़ ने कहा है कि जिस वस्तु का रोक लेना और उससे भण्डार भर लेना सर्व साधारण को हानि पहुँचाये वही एहतेकार है, अब वह चाहे सोना हो, चाँदी हो अथवा कपड़ा। इस प्रकार एहतेकार में हानि को अपने समक्ष रक्खा गया है, अब वह चाहे किसी भी वस्तु में पायी जाय, यद्यपि वह पहले से न हो। अबू हनीफ़ा तथा मुहम्मद ने इस हानि से वह हानि समझी है जो स्वभाव के अनुसार हो और उसका होना स्वाभाविक हो और उसके होने का अत्यधिक भय हो। फिर कहा है कि बादशाह के लिये यह उचित नहीं कि वह लोगों की खाद्य सामग्री का भाव निश्चित करे क्योंकि मुहम्मद साहब का कथन है कि 'तुम भाव निश्चित न करो क्योंकि भाव निश्चित करने वाला, उस पर अधिकार रखने वाला तथा उसको प्रसारित करने वाला ईश्वर है।' इसके उपरान्त फिर कहा है कि मूल्य विक्रेता का अधिकार है और वही उसको निश्चित कर सकता है। अतः इमाम के लिये यह उचित नहीं है कि वह विक्रेता से किसी प्रकार की रोक टोक करे, अपितु उस समय रोक टोक कर सकते हैं जब कि सर्वसाधारण की हानि को रोका जा सके, उदाहरणार्थ एक व्यक्ति ने भूमि का एक भाग ५० में क्रय किया है और वह उसे १०० में बेच रहा है तो इमाम उसे रोक सकता है ताकि मुसलमानों की हानि न हो। इमाम मालिक[3] ने यह कहा है कि अकाल के समय भाव निश्चित करना आवश्यक है ताकि सर्वसाधारण का कल्याण हो सके। 'शाहान' में उल्लेख है कि एहतेकार इसलिए निषिद्ध है कि सर्वसाधारण को इससे हानि पहुँचती है और वह बात जिससे मनुष्य को हानि पहुँचे उचित नहीं; और फिर कहा है कि यदि कोई भी इस प्रकार की कोई बात करे तो उसे दण्ड दिया जाय।

मुल्तान वाले—व्यापारी तथा व्यवसाय वाले—एहतेकार करते थे। यद्यपि उन्हें शरा के आदेश समझाये जाते, शिक्षा दी जाती किन्तु वे लोभ तथा लालच के कारण किसी बात पर ध्यान न देते थे। शरा के दण्ड के भय का भी उनपर प्रभाव न होता था। इससे समस्त मुसलमानों को विशेष रूप से इमामों तथा शक्तिहीन लोगों को बड़ी हानि पहुँचती थी। मुसलमान सैनिकों को भी इससे बड़ा कष्ट होता था। संसार की व्यवस्था इससे छिन्न-भिन्न हो जाती थी। संक्षेप में इसके उदाहरण इस प्रकार हैं—

(१) घी तथा कपड़े जिसे व्यापारी सरसुती की ओर से लाते थे:—एहतेकार करने वाले ७ जीतल प्रति सेर के हिसाब से मोल ले लेते थे और मूल्य धीरे-धीरे अदा करते थे। उसे कुछ समय तक अपने पास सुरक्षित रखते थे। जब घी की प्राप्ति में विलम्ब होता था तो उसे ९ जीतल तथा १० जीतल प्रति सेर के हिसाब से बेचते थे। आजकल उसे बैतुलमाल से तत्कालीन भाव पर क्रय किया जाता है और मूल्य नक़द दे दिया जाता है। चारों ओर के विक्रेता इससे सन्तुष्ट रहते हैं। यदि क्रय करने वाले तथा विक्रेता दोनों सन्तुष्ट हों तो व्यापार शरा द्वारा स्वीकृत रहता है। मंहगे मूल्य पर बेचने की अनुमति न देनी चाहिये और एहतेकार की हानि का अन्त करा देना चाहिये ताकि सर्वसाधारण, विशेष रूप से इमामों,

१ इमाम हनीफ़ा, इमाम हम्बल, इमाम शाफ़ई तथा इमाम मलिक इस्लामी धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध संकलन-कर्त्ता थे। उनकी व्याख्या पर आचरण करने के कारण सुन्नी मुसलमान चार मुख्य समूहों में बँटे हैं। इनकी मत्यु ७६७-६८ ई० में हुई। हिन्दुस्तान के अधिकांश सुन्नी उन्हीं के अनुयायी हैं।

२ इमाम मुहम्मद बिन इदरीस ने सर्वप्रथम फ़िक़ह को वैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत किया। इनकी मृत्यु ८१९ ई० में हुई।

३ मालिक इब्ने अनस, मालिकी फ़िर्क़े के नेता। इनका जन्म ७१४ ई० तथा मृत्यु ७९५ ई० में हुई।

शक्तिहीनों तथा सैनिकों को लाभ हो। मैं मूल्य निश्चित नहीं करता। इस प्रकार शरा के अनुसार लोगों को लाभ होता है। यदि कुछ एहतेकार करने वाले अकारण असंतुष्ट रहें और सर्वसाधारण के लाभ की बातों को हानि की बातें बतायें तो इसकी चिन्ता न करनी चाहिये।

(२) वस्त्र का उदाहरण:—एहतेकार करने वाले हूका से सस्ते समय में वस्त्र मोल लेते थे और उन्हें सुरक्षित कर लेते थे। कुछ समय व्यतीत होजाने पर वे उसे अधिक मूल्य पर बेचते थे। ५० में मोल लेते थे और १०० में बेचते थे। मैं जिस मूल्य पर एहतेकार करने वाले मोल लेते थे उसी मूल्य पर क्रय कर लेता हूँ और उन्हें छिपाये नहीं रखता और इस प्रकार बेचता हूँ कि एहतेकार का अन्त हो जाता है। इससे सर्वसाधारण को लाभ प्राप्त होता है। एहतेकार करने वालों के लिये यह एक प्रकार का दण्ड है।

(३) मिश्री का उदाहरण:—कुछ एहतेकार करने वाले इन्हें देहली तथा लाहौर से लाकर अत्यधिक महंगा बेचने के विचार से छिपा लेते थे। मेरा ख़्वाजा अली कमाल दिलबानी नामक एक मित्र था। ७ साल तक मिश्री को अपने घर में एहतेकार के विचार से रक्खे रहा। जब कुछ व्यापारी देहली तथा लाहौर से शाही मिश्री लाये तो भाव गिरने लगा। वह मित्र एहतेकार से बाज़ नहीं आता था और प्राचीन मित्र होने के बावजूद शत्रु हो गया।

(४) ईंधन का उदाहरण जो गाड़ियों से आता है और ८ जीतल प्रति मन के हिसाब से बिकता है इस समय इस महाल[1] से लाते हैं। मैं शाही नौकाओं तथा किसानों को भेजकर वहाँ से मंगवा लेता हूं और उचित मूल्य पर बिकवाता हूँ। इससे अत्यधिक लाभ होता है। १—सर्वसाधारण, शक्तिहीनों, आलिमों तथा सेना वालों को कम मूल्य व्यय करना पड़ता है। २—लकड़ी काटने वालों को वहाँ से लाभ होता है और बैतुलमाल में भी कुछ पहुँच जाता है। सब से अधिक लाभ यह है कि कृषकों के सेवक एक तन्का प्रतिमास वेतन लेते हैं। यदि उनको यही वेतन मिलने लगे तो वे अपना कार्य छोड़ कर लकड़ी (काटने) का कार्य करने लगेंगे। इससे अमीर तथा प्रतिष्ठित लोग परेशान हो जायँगे।

(३१)

मौलाना शिहाबुद्दीन के नाम पत्र।

मुल्तान में इस वर्ष सामग्रियों का मूल्य पिछले वर्षों की अपेक्षा १/१० हो गया है। जो अनाज पहले ८० जीतल प्रति मन के हिसाब से बिकता था इस वर्ष ८ जीतल प्रति मन हो गया है। सर्वसाधारण समृद्धि तथा सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसी दशा में विलायत (प्रान्त) के कर में यदि कमी हो जाती है तो क्या हानि, कारण कि कर संसार के शासन प्रबन्ध हेतु लिया जाता है। इस समय लोग बड़ी अच्छी दशा में हैं।

कुछ अज्ञानी यह ताना देते हैं कि उन्हें अदरार के स्थान पर कम उपज की भूमि देदी गई है और यह बात उन लोगों ने शेख़ नसीरुद्दीन तक पहुँचा दी है। उन्हें कदापि कम उपज वाली भूमि नहीं दी गई है अपितु बसे बसाये ग्राम प्रजा सहित दिये गए हैं। यदि उन ग्रामों का कर उपज की अधिकता के कारण निश्चित अदरार के अनुपात से प्राप्त होता है तो

---

१ कर की व्यवस्था की सुविधा की दृष्टि से कुछ ग्रामों की एकाई।

आश्चर्य नहीं क्योंकि पिछले वर्षों में ५० तन्का प्राप्त होता था, इस वर्ष ५ तन्के हो गया। कृषि दुगनी हो जाने पर पाँच गुना कर नहीं प्राप्त होता। हवाली[1] के आठ परगनों का कर इस वर्ष ३८,००० तन्के है। उनकी वजह, वज़ीफ़े तथा अदरार इसी अनुपात से होंगे।

यदि कोई अनभिज्ञ व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुकूल यह कहे कि उन्हें खराज भी क्यों नहीं दिया जाता तो यह बात किस प्रकार सम्भव है कारण कि सैनिकों की जीविका के साधन एकत्र करना परमावश्यक है। मैंने सेना के कार्यों के प्रबन्ध के लिये वजह की व्यवस्था की है। इमामों तथा सूफ़ियों को भी नहीं भूला हूँ। यदि समस्त कर इमामों तथा सूफ़ियों को प्रदान कर दिया जाय और सेना को जो मुसलमानों के प्रदेशों की रक्षक है कुछ न प्राप्त हो तो भी उनके उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती, कारण कि यदि सेना न हो तो फिर प्रजा सूफ़ियों और इमामों को धन किस कारण से देगी? इस प्रकार न सेना को धन प्राप्त होगा और न इमामों तथा सूफ़ियों को। कृषक तथा ज़मींदार सेना तथा कटार के भय से कर अदा करते हैं। उस धन के कारण वे असावधान हो जायेंगे और असावधानी के कारण विद्रोह कर देंगे। इस प्रकार अव्यवस्था के कारण मुसलमानों को हानि पहुँचेगी। इससे पूर्व ज़मींदारों को धन की अधिकता तथा अस्त्र शस्त्र के कारण प्रभुत्व प्राप्त हो गया था। ईश्वर न करे उन्हें पुनः इस प्रकार प्रभुत्व प्राप्त हो। इस प्रदेश के आगे शक्तिशाली शत्रु हैं। वहाँ के लोग ऐसी अशान्ति उत्पन्न कर सकते हैं कि उसका उपचार किसी प्रकार न हो सकेगा।

मैं अपनी इच्छानुसार सेना एकत्र करने का प्रयत्न करता हूँ। सेना की समृद्धि के लिये अत्यधिक प्रयत्न करता हूँ। इस ओर से असावधान हो जाने के कारण खराज के धन में हानि होने का भय है। मैं सेना को आधा धन तथा आधा अनाज दिलवाता हूँ। मैं स्वयं, जोकि अमीर हूँ, न्याय तथा उनसे समानता के कारण आधा धन तथा आधा अनाज लेता हूँ। इससे लाभ अथवा हानि जो कुछ है उसमें मैं और वे समान हैं, इसमें किसी प्रकार का कोई झूठ तथा दिखावा नहीं है।............

यदि कोई यह प्रश्न करे कि पिछले समय में, जब कि आजकल के समान अनाज सस्ता था, सेना का किस प्रकार प्रबन्ध होता था और किस प्रकार इमामों तथा सूफ़ियों को प्राप्त होता था, तो इसका उत्तर यह है कि मूल्य, जमा में दो प्रकार से प्राप्त होता है। सर्वप्रथम कृषि अधिक होती थी। आजकल उसका दसवां भाग भी नहीं। एमादुलमुल्क ने उस प्रदेश को इतना नष्ट कर दिया है कि उसकी उन्नति सम्भव नहीं। सुल्तान के प्रोत्साहन तथा कृपा द्वारा यही सम्भव हो सका है कि जो लोग दूर-दूर के स्थानों को चले गये थे उनमें से १००० में से १ और बहुत से लोगों में से केवल थोड़े से आये हैं। जब तक जन संख्या उतनी ही न हो जाय उस समय तक भूतकाल के समान खराज किस प्रकार प्राप्त हो सकता है और किस प्रकार वजह में उन्नति हो सकती है? दूसरे, पिछले समय में नाना प्रकार के साधनों द्वारा कर एकत्र किया जाता था। मंदवह,[2] तरका,[3] माले मौजूद,[4] चहार बाजार,[5] जरायब,[6] गुजरहा,[7] खराजे मुहतरेफ़ये मुसल्लम[8] और वह धन चाहे हराम क्यों न

१ आस पास।
२ मंडी का कर।
३ पैत्रिक सम्पत्ति जो किसी की मृत्यु के उपरान्त उसके सम्बन्धियों को प्राप्त हो।
४ वर्त्तमान धन-सम्पत्ति।
५ सम्भवतः वह बाजारी के समान कोई कर।
६ सम्भवतः सिक्के ढालने के सम्बन्ध में कोई कर।
७ सम्भवतः नदी के घाट पार करने पर कर।
८ व्यापार पर कर।

हो अत्यधिक होता था।[1] मुस्तौफ़ी इन साधनों से कर वसूल करता था और सेना, इमामों तथा सूफ़ियों को दिया जाता था।

आज कल सुल्तान की कृपा द्वारा अदरार तथा इनाम इत्यादि से सम्बन्धित तीन लाख तन्के इस प्रदेश में प्रदान किये गये हैं। सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में जबकि अनाज तथा कपड़ा अधिक सस्ता था, इसका दसवाँ भाग भी निश्चित न था। इस कारण मैं किसी न किसी प्रकार प्रबन्ध करता हूँ। मैं उन्हें आबाद ग्राम देता हूँ। उनमें से किसी में ऐसी भूमि है जिस पर कृषि होती है और किसी में ऐसी भूमि है जिस पर कृषि नहीं होती। उनकी अदरार इस प्रकार निश्चित हुई है कि यदि अकाल में अनाज का मूल्य बढ़ जाय तो उन्हें हानि न हो और मूल्य नष्ट न हो। कृषि की भूमि के कर से अपना परिवार चलायें और शेष भूमि से अपनी अदरार की उन्नति की व्यवस्था करें। यदि वे सब नक़द माँगें तो यह सम्भव नहीं। महँगाई के समय उन्हें उस धन से जितना अनाज प्राप्त होता था उसी अनुपात से हिसाब करके ले लें। उपर्युक्त बात का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि यदि मुल्तान प्रदेश में धन होता तो मेरे लिये उसे राजसिंहासन के समक्ष उपस्थित करने से अधिक अच्छी और कौन बात है।

यह बात निश्चय है कि प्रत्येक समूह को विभिन्न कार्यों तथा सेवाओं के लिये चुना गया है। सैनिकों को युद्ध के लिये, आलिमों को उपकार तथा इजतेहाद[2] के लिये, अहले क़लम को कर एकत्र करने के लिये। इस प्रदेश में सुल्तान की न्यौछावर से वजह में जो वेतन प्राप्त होता है उसे किसी न किसी युक्ति से आधा धन तथा आधा अनाज (के रूप में) प्रदान करता हूँ। मुल्तान में मेरे पास ५०० तन्के की भी पूंजी नहीं।

(३५)
सैयिदुस्सादात अइज़्ज़ुद्दीन पुत्र स्वर्गीय सैयिद क़ुतुबुद्दीन नाज़िर दौलतसरा के नाम पत्र।

तीसरा वर्ष है कि यह तुच्छ मुल्तान प्रदेश में है। बाह्य तथा आंतरिक रूप से इस प्रदेश के कार्यों की देखरेख में व्यस्त रहता है और यथाशक्ति इस विषय में प्रयत्नशील रहता है। यहाँ की व्यवस्था, वजह की परेशानी, सहायकों तथा अधिकारियों की असावधानी एवं विद्रोह, भूमि की खराबी, प्रजा तथा ग्रामीणों की दरिद्रता के कारण छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। अब शनैः शनैः उनकी व्यवस्था हो रही है। राना लोगों के समूह, जो प्रथम वर्ष में आज्ञाकारी बना लिये गये थे, में से कुछ ने इस वर्ष विद्रोह कर दिया है। इस तुच्छ ने उन लोगों पर अधिकार प्राप्त करने के लिये प्रस्थान किया।

(३८)
सैयिद नासिरुल हक़्क़ बद्दीन के नाम पत्र।

क़ाज़ी ज़हीरुद्दीन तथा उमरुद्दीन कुछ घोड़ों के क्रय हेतु आपके भरोसे पर लाहौर भेजे जाते हैं। आशा है कि आप कृपा करके जो घोड़े क्रय किये जायँ उन्हें सावधानी से देख लेंगे और किसी विश्वासपात्र को आदेश दे देंगे कि वह घोड़ों के क्रय करने का विवरण लिख दे।

---

१ करों की छूट के विषय में पूर्व पृष्ठों पर फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही का अनुवाद देखिये।

२ इस्लाम के अनुसार निर्णय।

(३९)
ख़ाने कबीर ज़फ़र ख़ाँ के नाम पत्र।

इस तुच्छ की बिदा के समय मुहम्मद ज़फ़र के विषय में कहा गया था। वह निवेदन करता है कि बिहार के पास के अकरा नामक ग्रामों को अपने वेतन में कटवा चुका हूँ। बिहार के कारकुन हिसाब के समय मुजरा न करायें। दीवाने विज़ारत के अधिकारियों ने उस धन को अन्य लोगों की वजह में लिखा दिया है। यदि मुहम्मद ज़फ़र दीवाने अर्ज़ का प्रमाण प्रस्तुत करे कि उस वर्ष में वह धन उसके तथा उसके अधीन सैनिकों के वेतन में सम्मिलित हो गया है तो उसे मुजरा करदें और यदि उसने पुनः लिया हो तो हिसाब करके मुल्तान (के हिसाब) में बढ़ा दिया जाय।

आशा है कि आप उसकी परेशानी में उस पर कृपा करेंगे। यदि मुहम्मद ज़फ़र दीवाने अर्ज़ का प्रमाण प्रस्तुत कर दे तो कृपा करके आदेश दे दिया जाय कि दीवाने विज़ारत के अधिकारी उसे मुजरा कर दें। यदि पूछताछ के उपरान्त पता चले कि उसने पुनः ले लिया है तो उसकी इस वजह से मुक्ति का इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं कि वह वजह मुल्तान में स्थानान्तरित कर दी जाय या उसके तथा उसके सहायकों के तीन वर्ष के वेतन में मुजरा कर ली जाय।

आशा है कि आप उसे कृपापूर्वक शीघ्र मुक्त कर देंगे ताकि वह दास के पास उपस्थित हो जाय और मलिकपुर खेकड़ा की आबादी तथा समृद्धि की, जो वर्षों बाद प्राप्त हुआ है, व्यवस्था हो सके। इस समय दास इस प्रदेश के कुछ क़स्बों की आबादी तथा समृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न कर रहा है और मलिकपुर खेकड़ा, क़ंजरूत, जंदला तथा अन्य स्थान उनमें सम्मिलित हैं।

(४६)
मलिकुश्शर्क़ साहिबे दीवाने इस्तीफ़ाये ममालिक[१] के नाम पत्र।

बाँहमनिया ने उपद्रव तथा विद्रोह की पताका आकाश तक बलन्द कर दी थी। उस प्रदेश का विनाश करना तथा मुग़लों को बुलाना अपना स्वभाव बना लिया था। एक बार वह मुग़लों के एक समूह सहित पंजाब में प्रविष्ट हो गया था। मुल्तान की सेना के आक्रमण के कारण वह भाग खड़ा हुआ। यह बात इससे पूर्व मलिकुश्शर्क़ को ज्ञात हो चुकी है। इसके पूर्व तथा इसके उपरान्त भी उसने कई बार गुजरात पर आक्रमण किया और यह बात आप से छिपी नहीं। सुल्तान ने उसके विद्रोह के दमन तथा हमीर दूदा के कार्यों की उन्नति की ओर ध्यान दिया है और उसकी सिफ़ारिश रुक्नुद्दीन अमीर हसन से की है। यह इस कारण कि गुजरात मलिकुश्शर्क़ के अनुज मलिक रुक्नुद्दीन हसन के अधीन है। दास इस बात की प्रतीक्षा कर रहा है कि यह कार्य मलिकुश्शर्क़ के आश्रय प्रदान करने के कारण उसके द्वारा सम्पन्न हो जाय और हमीर दूदा के कार्यों को भी, जो सुल्तान का उद्देश्य है, स्थायित्व प्राप्त हो जाय और मुल्तान तथा गुजरात को बाँहमनिया के उत्पात से मुक्ति प्राप्त हो जाय।

सुल्तान के आशीर्वाद से आशा है कि मलिकुश्शर्क़ इन कार्यों को इस प्रकार सम्पन्न करायेंगे कि संसार में इनकी स्मृति बनी रहेगी और किसी अन्य को इससे अधिक रूप में सम्पन्न कराना सम्भव न हो सकेगा कारण कि यह उपद्रवी, बाँहमनिया हर बार गुजरात के मुक़द्दमों पर

१ मुस्तौफ़िये ममालिक।

आक्रमण करता तथा वहाँ के लोगों को बन्दी बना लेता है और वहाँ के लोगों को हानि पहुँचाता है। यदि आप गुजरात निवासियों को युद्ध के लिये उभारें और उनसे कहें कि वे वीरता से कार्य करें और उन्हें यह बतायें कि उन लोगों ने यह निर्लज्जता क्यों स्वीकार कर ली है और इस प्रकार सभी एकत्र होकर प्रतिकार के लिये उद्यत हो जायँ और आप उनसे कहें कि इस्लामी सेना उनकी सहायतार्थ भेजी जायगी तो आशा है कि उनके अभिमान का अन्त हो जाय।

यह बात उदाहरण स्वरूप लिखी गई। आशा है मलिकुश्शर्क़ इससे सहस्रों गुना अच्छा प्रबन्ध करेंगे।

(४७)

मलिकुश्शर्क़ के नाम पत्र।

सुल्तान की जो इस दास पर कृपा हैं, उनमें से एक यह है कि २०,००० तन्कों को राजधानी (देहली) में दिये जाने का आदेश हुआ है। इसके विषय में परवाना जारी कर दिया गया है। दास ने इस धन की इस कारण प्रार्थना की थी कि यह धन मेरी माता को सुगमतापूर्वक प्राप्त हो जाया करे और ऋण का भुगतान तथा उस वृद्धा के कार्य सम्पन्न हो जाया करें। दास के घर पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिससे इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके, अतः कृपा करके उपर्युक्त धन दास के आदमियों को नक़द दिलवा दें ताकि आपकी सहायता से दास के हृदय पर से यह भार उठ जाय।

(४८)

मलिकुश्शर्क़ शम्सुद्दीन महमूद बक के नाम पत्र।

इससे पूर्व निष्ठा से परिपूर्ण मेरे पत्र प्राप्त हुए होंगे। इस समय पुनः यह निवेदन करता हूं। सुल्तान ने मेरे विषय में अत्यधिक कृपायें कीं और मुल्तान का शासन प्रबन्ध मेरे सिपुर्द किया है। लाहौर की शिक़दारी मलिकुश्शर्क़ वल बुजरा क़िवामुलमुल्क को प्रदान हुई है। खिलअत प्रदान करने के पश्चात् ९ शव्वाल को मुझे मुल्तान की ओर भेजा गया तथा क़ाज़ी बुरहान एवं मलिक अमीर नायब मुल्तान के अधीन दो बार करके नौकाओं तथा सामग्री भेजने का आदेश हुआ। तुच्छ प्रयत्न करके २९ ता० को मुल्तान पहुँचा और यथा सम्भव सेना एवं नौकाओं की तैयारी में व्यस्त हो गया। मुल्तान की इसके पूर्व के शासकों के कारण यह दशा हो गई है कि यदि मूल विषय में कुछ भी निवेदन किया जाय तो आपके हृदय को कष्ट होगा। ईश्वर के ऊपर दृष्टि रखते हुए यथासम्भव प्रयत्न करके सुल्तान के आदेश के पालन के विषय में प्रयास किया जा रहा है। ईश्वर करे कि सफलता प्राप्त हो।

(५२)

मलिकुल उमरा, सैयिदुल हुज्जाब 'वहीद क़र्शी' के नाम पत्र।

उपहार के घोड़े जीन सहित तथा ऊँट, पुत्र ख़तीरुद्दीन के साथ भेजे जा रहे हैं। आशा है कि उन्हें उचित अवसर पर प्रस्तुत करा देंगे और अपनी कृपा द्वारा इस कार्य को सम्पन्न करायेंगे। घोड़ों के भेजने में जो विलम्ब हुआ उसका कारण यह था कि इस वर्ष बाढ़ के कारण चनाब तथा रावी नदियाँ दोनों मिल गई थीं और मुल्तान का क़िला नदियों ने घेर

लिया था। क़िले की खाई में पानी गिरने वाला ही था और शहर में अशांति उत्पन्न होने वाली ही थी किन्तु ईश्वर की कृपा से मुल्तान के निवासी सुरक्षित रह गये। इस हितैषी को बाढ़ के कारण जो कष्ट उठाने पड़े उसका उल्लेख करना सम्भव नहीं। इस हितैषी को घोड़ों के इससे पहले न पहुँचने के ऊपर खेद है। आशा है कि सुल्तान के शुभ कानों तक यह बात पहुँचा देंगे।

पुत्र करीमुद्दीन दरबार का सेवक है; मेरा उसके प्रति जो स्नेह है वह आपसे निहित नहीं। चूँकि आपका छोटा भाई है अतः उस पर कृपा-दृष्टि रखें और इस बात का प्रयत्न करते रहें कि वह आपकी सेवा हेतु प्रयत्नशील रहे और जो कुछ वह निवेदन करे आप उसे स्वीकार करने का सम्मान प्रदान करें। पुत्र ख़तीरुद्दीन जो कुछ निवेदन करे उसे पूरा कराने का यथासम्भव प्रयत्न करें।

(५८)

मलिकुल उमरा पुत्र बहाउद्दीन के नाम पत्र।

पुत्र (बहाउद्दीन) के पत्रों द्वारा यह सूचना मिली है कि मार्ग-भ्रष्ट लोग भागकर इन क़स्बों तथा ग्रामों में निवास करने लगे हैं। तुम्हें ज्ञात होना चाहिये कि सेवक को सुल्तान द्वारा नाना प्रकार की कृपायें तथा आश्रय प्राप्त हुआ है। दो बार सफ़ेद पेटी, ५० हज़ार तन्के नक़द इनाम तथा २० हज़ार तन्के १०० दासों के मूल्य के प्राप्त हुये हैं और जो कुछ अन्य कृपाओं की आशा है उसका कुछ अनुमान नहीं। इस समय सुल्तान द्वारा दास को भरौंच, दिहसूई, बरौदा, नादूत तथा लौसादी (नौसादी) के राज्य को दृढ़ करने के लिए नियुक्त किया गया है। इस कार्य के सम्पन्न होने के उपरान्त ईश्वर ने चाहा तो मलिकुश्शर्क़ क़िवामुलमुल्क के पास उपस्थित हूँगा।

सामाना के कार्य से सेवक का कोई सम्बन्ध नहीं रहा। मेरे आदेश से सामाना की शिक़ का कार्य न प्रारम्भ किया जाय। मलिक कबीर की सेवा में तुम लिखो अगर तुम्हें राजधानी भेज दें तो तुम वहीं कार्य करो। उन लोगों का विनाश बड़ी कठिनाई से हो सकेगा। शिक़ के सवारों तथा प्यादों को एकत्र करो और यदि इस उपद्रव को शान्त करना असम्भव समझो तो मलिक कबीर की सेवा में निवेदन करके सहायता माँगो और जिस प्रकार सम्भव हो सके उनके विनाश को आवश्यक समझो।

(७६)

मलिक बहाउद्दीन के नाम पत्र।

दास २९ शव्वाल को मुल्तान पहुँच कर कार्य करने लगा। दीवाने इन्शा से बराबर पत्र भेजता रहता है। मलिक, मलिकज़ादा, मलिक अहमद तथा मलिक मंसूर के भतीजे ख्वाजा शरफ़ुद्दीन से पूछ लो क्योंकि मेरा उन लोगों के वंशों से दीर्घकाल से सम्बन्ध है; अतः आशा है कि वे अवश्य कृपा करेंगे।

(८३)

शरफ़ुल उमरा निज़ामुद्दौला बद्दीन अजोधन के मुक़्ता को पत्र।

राजधानी देहली से इसके पूर्व सेवक बुलवाये गये थे। जब वे मुल्तान पहुँचे तो ज्ञात

हुआ कि अजोधन से मुल्तान तक के मार्ग में खुक्खरों के उत्पात के कारण बड़ा भय है। आशा है कि आप की वीरता द्वारा उस भय का अन्त हो जायगा और कार्य सुव्यवस्थित हो जायँगे। मुझे उस ओर की चिन्ता है। अजोधन पहुंच कर यह सूचना भेजें कि इस भय का अन्त हो गया।

(९७)
उच्छ के कारकुनों के नाम पत्र।

४ रजब को खाने जहाँ के पास लखनौती की विजय का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि सुल्तान ने एकदला के क़िले पर आक्रमण किया और अगणित सेना ने क़िले को घेर लिया। पहले दिन जबकि युद्ध की अनुमति न थी ग्रामीणों, बाजारियों तथा दर्शकों ने, जो शाही सेना के आगे तमाशा देखने के लिये गये थे, ५००० बंगालियों को बाणों तथा तलवार द्वारा आहत कर दिया और ५०० व्यक्ति उसी स्थान पर मार डाले गये। अन्य लोग क़िले में भाग गये। सिकन्दर शाह पुत्र सुल्तान शम्सुद्दीन तथा प्रतिष्ठित खानों, मलिकों, अमीरों एवं लखनौती के समस्त निवासियों ने दीनता प्रकट की और उनको क्षमा कर दिया। सुल्तान ने सिकन्दर शाह की प्रार्थना इस कारण स्वीकार करली कि सुल्तान ने उसके पिता शम्सुद्दीन को अपना भाई बनाने का सम्मान प्रदान किया था। प्रजा की प्रार्थना इस कारण स्वीकार की कि उसका यश तथा प्रसिद्धि क़यामत तक शेष रहे। सिकन्दर शाह ने पर्वत रूपी हाथी तथा अत्यधिक उपहार प्रस्तुत किये।

(९८)
हालिकान को परवाना।

हालिकान के मुक़द्दमों को ज्ञात होना चाहिये कि जाम जोना ने, जिसे ईश्वर संमार्ग पर रक्खे और आज्ञाकारिता एवं ख़राज अदा करने की ओर प्रेरित करे, तथा बाँहमनिया ने, जो वचन का पालन न करने का निश्चय कर चुका है और जिन्होंने शेख़ुल इस्लाम तथा सैयिद जलालुद्दीन बुख़ारी को मध्यस्थ बनाया था, यह निवेदन किया है कि जो विलायत हमारे अधिकार में है उसे सेना के वेतन तथा उस प्रान्त की सेवा हेतु व्यय किया जाय और शाही ख़ज़ाने में कुछ दाखिल न हो। हम दास आज्ञाकारी हैं। गुजरात सक्खर जहाँ कहीं भी हमें आदेश हो सेवा करेंगे और ५० घोड़े जिनका मूल्य एक तन्का हो दरबार में पहुँचायेंगे। इससे सेना तथा ख़ज़ाने के उद्देश्य की पूर्ति होगी। सुल्तान ने जाम तथा बाँहमनिया को शेख़ुल इस्लाम तथा सैयिद जलालुद्दीन की मध्यस्थता के कारण तथा उन्हें मुसलमान समझ कर कृपा करके क्षमा प्रदान करदी थी।

उन लोगों ने अर्थात् थट्टा के कुछ मुक़द्दमों ने प्रारम्भ में दुराचार, विश्वासघात तथा चोरी प्रदर्शित की, अतः दरबार के दासों के लिए यह आवश्यक हो गया कि उन्हें इस प्रकार दंड दें कि अन्य लोगों को चेतावनी हो और वे शिक्षा ग्रहण करें। क्योंकि मुसलमानों के समूह, छोटे-बड़े दास तथा स्वतन्त्र (मुसलमानों) लोगों ने विरोध न किया था और आज्ञा-कारिता प्रदर्शित की थी, अतः उस प्रदेश के विध्वंस का आदेश न हुआ ताकि उन मुसलमानों को जिन्होंने आज्ञाकारिता प्रदर्शित की थी हानि न हो। इससे जाम तथा बाँहमनिया और भी धृष्ट हो गये। बाँहमनिया हमारे इस्लामी राज्य में मुग़ल सेना सहित लूट मार के लिए प्रविष्ट हो गया था और उसने मुसलमानों की धन सम्पत्ति तथा प्राण नष्ट कर दिये। अन्त में

उनको तथा अन्य अल्पदर्शियों की हत्या कर दी जायगी। इस समय इस्लाम का सम्मान इसी में है कि इस उपद्रव की अग्नि को तलवार द्वारा बुझा दिया जाय और इस्लामी सेना द्वारा उनका विनाश कर दिया जाय।

तुम लोग, जोकि हालिकान हो, यदि तौबा करो तथा अन्य मुसलमानों सहित शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करो तो लूट मार से बच जाओगे और यदि असावधानी के कारण इस शिक्षा पर आचरण न करोगे तो इस्लामी सेना के आक्रमण के समय अपने प्राणों की रक्षा न कर सकोगे। तुम्हारी हत्या करा दी जायगी और तुम्हारे परिवार को बन्दी बना लिया जायगा। यदि समय के पूर्व तुमने (आज्ञाकारिता प्रदर्शित) करना निश्चय कर लिया तो तुम्हारे तथा मुसलमानों के साथ समान व्यवहार किया जायगा। युद्ध के समय यदि तुम क्षमा-याचना करोगे तो तुम्हारी कोई बात स्वीकार न होगी। यदि तुम विवशता के कारण अपने आपको पृथक् न कर सको तो जब इस्लामी सेना सिविस्तान में पहुंच जाय और थट्टा पर विजय प्राप्त हो जाय तो तुम इस्लामी सेना से मिल जाओ।

(१०४)
उमदतुलमुल्क (हाजी दबीर) के नाम पत्र।

सफ़र मास के अन्त में मेरे पुत्र के पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि आपको फ़रमानों में तारीख लिखने का आदेश हुआ है। इस कारण अमानत को केन्द्रीय स्थान प्राप्त हो गया[१]।

(१०५)
मलिक मुअज़्ज़म माजिदुद्दौला वद्दीन मलिक रुक्नुद्दीन के नाम पत्र।

इस समय ये समाचार प्राप्त हुये हैं कि सुल्तान की कृपा द्वारा चन्देरी की अक़्तायें तथा उसके आसपास की अन्य अक़्तायें आप को प्राप्त हो गई हैं। इस समाचार से अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

(१०८)
मलिक फ़खरुद्दीन के नाम पत्र।

दो बार सेवक को विशेष शाही वस्त्रों के भण्डार से खिलअत तथा सफ़ेद पेटी एवं ५०,००० तन्के इनाम के रूप में प्राप्त हुये हैं। इनके अतिरिक्त २०,००० तन्के, दासों को क्रय करने के लिए प्रदान हुये हैं। इन कृपाओं के साथ एक यह भी है कि २०,००० तन्कों के देहली में दिये जाने का आदेश हुआ है। आशा है कि यह धन आपकी कृपा द्वारा मेरे आदमियों को प्राप्त हो जायगा।

(११२)
क़मरुद्दीन के नाम पत्र।

सेवक के इनामों में से २०,००० तन्कों के विषय में आदेश हुआ है कि उन्हें दास को राजधानी (देहली) में प्रदान किया जाय। इस विषय में दास ने मलिक कबीरुद्दीन को लिखा है। आशा है कि आप इस कार्य को उचित समय पर सम्पन्न करा देंगे।

१ जो जिस कार्य का पात्र था, वह उसे मिल गया।

(११९)

कमाल ताज के नाम पत्र।

अली क़ुली ने निवेदन किया है कि नासिरवाह नामक नहर की मरम्मत में अत्यधिक कार्य है। बड़े बड़े मशायख़ (सूफ़ियों) आलिमों तथा सद्रों अर्थात् कमाल ताज एवं अन्य मलिकों के ग्राम उस (मार्ग) में हैं। उसने इस बात का संकेत किया है कि आलिमों तथा मशायख़ ने इस कार्य से मना किया है। वह लश्करी[1] है तथा उसे इस्लामी नियमों का ज्ञान नहीं अतः उसने यह बात लिखी है।

यह बात ज्ञात होनी चाहिये कि नहरें दो प्रकार से खुदवाई जाती हैं; उदाहरणार्थ सेहून, जेहून, दजला, रावी तथा व्यास आदि जिनके विषय में बैतुलमाल के लिए आदेश दिया गया है।[2] यदि बैतुलमाल में धन न हो तो बादशाह उनकी उन्नति के विषय में प्रजा को आदेश दे किन्तु सामान्य नहरें (जिनका) लाभ प्रजा को एक समान प्राप्त होता है उदाहरणार्थ नासिरवाह, क़ुतुबुवाह तथा इसी प्रकार की अन्य नहरें—इनके विषय में वहां के लोगों तथा अधिकारियों को आदेश हुआ है और बैतुलमाल से इनके लिये व्यय नहीं किया जा सकता। इस प्रकार यह कदापि नहीं हो सकता कि आलिम तथा मशायख़, जिनके ग्रामों में नहरें सम्मिलित हैं, और जिनका खुदवाना उनके लिए आवश्यक है, किसी प्रकार उसके सम्बन्ध में विरोध करेंगे, कारण कि यदि मलिक इन्हें न खुदवायेंगे और जब इन पर बैतुलमाल से व्यय नहीं किया जा सकता तो फिर उन्हें किस प्रकार स्थापित रखा जा सकता है? विशेष रूप से ऐसे समय पर जबकि बैतुलमाल में धन न हो तो कृषि को हानि होगी तथा सर्वसाधारण को नुक़सान होगा। यदि कुछ लोग खुदवायें और कुछ लोग न खुदवायें तो कुछ लोगों का भार अन्य कुछ लोगों पर पड़ेगा जो अनुचित है। अत्याचार की परिभाषा यही है।

जो बातें इस पत्र में लिखी गई हैं उसकी सूचना आप अली क़ुली को दे दें ताकि वह खुदवाने में अत्यधिक प्रयत्न करे और इनके निर्माण में कोई कसर न उठा रक्खे।

(१२०)

मलिक शाहू के पुत्रों—अहमद तथा यासीन—के नाम पत्र।

मलिक शाहू के पुत्र अहमद तथा यासीन एवं अन्य व्यापारियों को ज्ञात होना चाहिये कि जिस प्रकार वालियों, मुक़्तों, असहाबे अतराफ़[3] तथा राहदारों[4] के लिए आवश्यक है कि वे व्यापारियों से भलीभाँति व्यवहार करें और उनकी उन्नति का प्रयत्न करते रहें, उसी प्रकार व्यापारियों के लिये भी यह आवश्यक तथा अनिवार्य है कि वे वालियों तथा मुक़्तों से सत्यतापूर्ण एवं निष्ठा का व्यवहार करें ताकि दोनों ओर से उत्तम व्यवहार होता रहे।

मेरे वालियों के लिए जो आवश्यक था उन्होंने मेरी ओर से (व्यापारियों इत्यादि) का सम्मान किया। तुम लोग, जोकि शाहू के पुत्र हो और व्यापारियों के मध्य में प्रविष्ट हुए हो, उत्तम व्यवहार की कोई सूचना नहीं रखते और इस परोपकार के बदले में छल द्वारा व्यवहार

१ सेना तथा अन्य राजकीय कार्यों का प्रबन्ध।
२ सम्भवतः नदियों की देख रेख से तात्पर्य है।
३ विभिन्न स्थान के अधिकारियों।
४ मार्ग की देखरेख करने वाली।

करते हो और कहते हो कि हमारे पास शाही फ़रमान इसी आशय का है। जकात तथा दानगाना जो कुछ होगा उसे हम देहली में अदा करेंगे। मुल्तान में हम से यह न लिया जाय। दास के ऊपर यह आरोप लगाया गया है कि उसने फ़रमान की चिन्ता नहीं की और उनके सहायकों तथा सम्बन्धियों से २० हज़ार तन्के जकात तथा दानगाने के लेता है। इस विषय में असत्य बात कही गई है। इसका प्रथम कारण यह है कि तुम लोग फ़रमान लाये, मैंने सुल्तान की सेवा में निवेदन किया। सुल्तान का फ़रमान, लेने के विषय में प्राप्त हुआ अतः मैंने आदेशानुसार ले लिया। यह बात कि मैंने ध्यान न दिया झूठ है। जो कोई मुसलमानों के ऊपर और विशेष कर वाली के ऊपर इस प्रकार का आरोप लगाये उसके विरुद्ध क्या होना चाहिये? दूसरा कारण यह है कि तुम लोगों की जकात तथा दानगाना १ हज़ार ७ सौ तन्के है और तुम ने वहाँ (सुल्तान की सेवा में) २२ हज़ार तन्के के विषय में निवेदन किया। यह पूर्णतः झूठ तथा जाल है। किन्तु मैं तुम लोगों का क्या दोष निकालूं। तीसरा कारण यह है कि जो लोग तुम से श्रेष्ठ तथा तुम से अधिक सम्मानित हैं और जिनका तुम से कोई सम्बन्ध नहीं है उन्हें तुम अपने साथ सम्मिलित करते हो, यह व्यर्थ का अभिमान है। चौथा कारण यह है कि तुम लोग सम्मानित व्यक्तियों में विरोध उत्पन्न कराते हो। देहली के सम्मानित व्यक्ति तथा कारकुन, तुम ने जो धन दिया है उसके विषय में पूछेंगे। क्योंकि मैंने कार्य फ़रमान के अनुसार किया है और मैं उत्तर भेजूँगा अतः हम लोगों के मध्य में घृणा उत्पन्न होगी जिसका परिणाम शत्रुता तथा विरोध होगा।

तुम लोग व्यापारी हो और तुम (क्या) इस बात को उचित समझते हो कि सुल्तान के दासों के मध्य में विरोध तथा शत्रुता हो? तुम ने बड़ा भारी अनर्थ किया है। सबसे बढ़कर यह है कि बैनामे में दासों को खुरासान ले जाने के विषय में लिखा है। तुम हिन्दुओं के हाथ घोड़े बेचते हो। यह संभव नहीं।[1] यह सुल्तान के फ़रमान के विरुद्ध है। दास उन लोगों में नहीं है जो घूस लेकर इस ओर ध्यान न दें और फ़रमान के विरुद्ध आचरण करें। जो दास आज्ञा का पालन नहीं करता उसे कोई स्थायित्व प्राप्त नहीं होता।

(१२१)
प्रजा के नाम पत्र।

इस वर्ष ईश्वर की कृपा से भूमि तथा कृषि को इतना अधिक जल तथा उन्नति प्राप्त हो गई है कि इसके पूर्व इसके विषय में किसी ने न सुना था। तुम लोगों को जोकि प्रजा हो कृषि के सम्बन्ध में पूर्ण परिश्रम करना चाहिये। तुम्हें इस बात का विश्वास रखना चाहिये कि जो कोई भी प्राचीन प्रजा से सम्बन्धित है उससे आधा धन के रूप में भाव के अनुसार और आधा अनाज के रूप में जैसा कि प्राचीन प्रथा है लिया जायेगा। जो कोई बाद में आये हैं उनसे अनाज प्राप्त किया जायेगा। तुम्हें यह बात भलीभाँति याद है कि मैंने कोई कार्य वचन के विरुद्ध नहीं किया।

(१३३)
किसी अज्ञात व्यक्ति के नाम पत्र।

तुम लोगों ने अपने प्रार्थना-पत्र में विरोधाभासी बातें लिखी हैं। तुमने अपनी आज्ञाकारिता के विषय में बहुत कुछ लिखा है यह ठीक नहीं। यदि यह बात ठीक होती तो मुसल-

---

१ इसकी अनुमति नहीं मिल सकती।

मानों की विलायत में जोकि सुल्तान के दासों के अधीन है किस प्रकार थोड़े से मुग़ल प्रविष्ट होकर उनके प्राणों तथा धन सम्पत्ति का विनाश करते ? तुमने इसके विषय में अनुचित व्याख्यायें की हैं। तुमने लिखा है कि "शाही फ़रमान मन्भूत के मुक़द्दमों के विषय में जोकि हमारे सम्बन्धी हैं सिविस्तान के शहनों तथा ग़ुमाश्तों को प्राप्त हुआ था कि प्रजा की भूमि तथा इमलाक उन्हें प्रदान करदी जायँ। क्योंकि मुक़द्दमों, शहनों तथा ग़ुमाश्तों ने शाही फ़रमान को कार्यान्वित नहीं कराया अतः शुभ आदेशों को कार्यान्वित कराने के लिये हम ने अपने सैनिकों को भेजा। शहनों ने युद्ध तथा विरोध प्रारम्भ कर दिया। हमारे सैनिकों ने युद्ध न किया और उन्हें चेतावनी देकर लौट आये। वाद-विवाद के उपरान्त शहनों ने स्वीकार कर लिया कि फ़रमान के अनुसार हम आज्ञा-पालन करते हैं। तत्पश्चात् हम किसी प्रकार का विरोध न करेंगे। उनके दीनता प्रकट करने के कारण हमारे सैनिकों ने युद्ध न किया और लौट आये। उनके आने जाने के कारण सीखर तथा सिविस्तान की विलायत वालों को कोई हानि न हुई। यदि कोई इसके विरुद्ध कहे तो इसके विषय में पूछ ताछ की जाय।"

तुम्हारे इस उत्तर के सम्बन्ध में तुम्हें लिखा जाता है कि तुम मुसलमान बादशाह के राज्य में जो मुग़लों को लाये तो यह क्या फ़रसान के पालन हेतु था ? शहनों के परिवार तथा वहाँ की प्रजा ने जो कुछ धन सम्पत्ति एवं मवेशी उपस्थित किये उन्हें तुम ले गये। मुग़लों तथा बाँहमनिया की लूट मार के कारण जो युद्ध हुआ यह किसी से छुपा नहीं। सत्य तो यह है कि तुमने किसी प्रकार रोक टोक न की। बाँहमनिया ने सविस्तान के क़िले के शहनों तथा अधिकारियों को जो पत्र लिखा था वह इस बात का प्रमाण है कि तुम निष्ठावान् नहीं हो।

सुल्तान की ओर से मैं अमीर तथा हाकिम हूँ। यदि शहनों का दावा ठीक होता तो सर्वप्रथम मुझे उसके विषय में लिखते और मुझसे न्याय की याचना करते। तुमने यह लिखा है कि "हमने सुना था कि सुल्तान ने लखनौती की ओर प्रस्थान किया है और मुल्तान की सेना भेजी जा चुकी है", इस प्रकार जो कुछ भी तुम्हारे मस्तिष्क में आया तुमने किया। मैं तुम्हें लेखनी से उत्तर नहीं देना चाहता था अपितु तलवार से, किन्तु प्रथा यही है कि यदि प्रजा आज्ञा का पालन न करे तो सर्वप्रथम उसको चेतावनी दी जाय और उसके सन्देह का अन्त कराया जाय। अतः तुम्हें लिखा जाता है कि जिस प्रकार भूतकाल के वालियों के समय में विशेष रूप से बहराम के समय में आज्ञाओं का पालन करते थे उसी प्रकार आज्ञा का पालन करो।

ईश्वर को धन्य है कि तुम अपनी पुत्रियों को अन्तःपुर में भेजकर आज्ञाकारिता का दावा करते हो। जिन हिन्दू मुशरिक रायों ने अपनी पुत्रियाँ भेजीं, उन्होंने छल तथा कपट के कारण नहीं भेजीं और कोई दुर्व्यवहार नहीं किया। हिन्दुओं को छल तथा कपट के कारण लज्जा आती है और तुम जोकि अपने आपको मुसलमान कहलाते हो छल तथा कपट पर वाद-विवाद करते हो। इस प्रकार बहाने बनाना अपराध से अधिक बड़ा पाप है।

तुमने जो यह लिखा है कि हमारी सेना ने युद्ध नहीं किया तो उसका कारण ज्ञात है। हमारी सेना (मुल्तान की सेना) उन दुष्टों का पीछा कर रही है। बाँहमनिया किस प्रकार सिविस्तान से एक रात्रि में थट्टा पहुँचा ? यदि तुममें वीरता होती तो तुम अपनी सेना सहायतार्थ क्यों न भेजते। तुमने जो यह लिखा है कि किसी की बात पूछताछ के पूर्व न स्वीकार की जाय तो हम इसी प्रकार आचरण करते हैं। तुम्हारे विषय में किसी की बात का कोई स्थान नहीं। तुम इतने वर्ष तक शाही छत्रछाया में आराम से रहे किन्तु इसका

मूल्य न समझने के कारण तुमने अपनी शान्ति का अन्त करा लिया। तुमने जो अपने पत्र में यह लिखा है कि तुम्हारी सेना ने मुसलमानों को दास बना लिया और उन्हें बाजार में बेच डाला तो उसका उत्तर यह है कि जो मुसलमान इस्लामी राज्य में लूटमार करें उनकी हत्या करा देना तो शरा द्वारा उचित है किन्तु मुसलमानों का बेचा जाना, यद्यपि वे बाह्य रूप से मुसलमान हों, उचित नहीं।

परिशिष्ट स

दीवाने मुतहर कड़ा

(प्रोफ़ेसर मसऊद हसन रिज़वी लखनऊ का संग्रह)

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की प्रशंसा।

युग के बादशाह ने अपने शिकार द्वारा संसार की अशान्ति को शान्ति में परिवर्तित कर दिया। शान्ति के लिये जो प्रयत्न इस बादशाह ने किये वह किसी अन्य बादशाह ने न किये होंगे। उसने अपने दान-पुण्य तथा न्याय के कारण बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। नित्य वह सिंह तथा भेड़िये का शिकार खेलता रहता है। उसने हाथियों को जीवित बन्दी बनाया तथा सिंहों का शिकार किया। उसके राज्यकाल में प्रजा को बड़ा आराम प्राप्त है।

उसने राजसिंहासन पर आरूढ़ होते ही ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उसने न्याय तथा दान अपने स्वभाव में प्रविष्ट कर लिये। संसार में जहाँ कहीं भी कोई बन्दी था, उसे उसने मुक्त कर दिया और उस पर अत्यधिक कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की। जहाँ भी बुद्धिमान् तथा पवित्र लोग मिले उन्हें उसने धन-सम्पत्ति प्रदान की। बाहर से आने वालों को उसने भूमि तथा ग्राम प्रदान किये। वृद्धों तथा अल्पावस्था के अनाथों को उसने इतनी अधिक वृत्ति प्रदान की कि वे संतुष्ट हो गये। राज्य के स्तम्भों तथा अमीरों के पदों एवं सम्मान में वृद्धि की। अकाल का उसके राज्यकाल में इस सीमा तक अन्त हो गया कि कारवान वाले एक तन्के में १०० चौपायों पर अनाज लादकर पहुंचा देते हैं। उसके राज्यकाल में शान्ति इस सीमा तक प्राप्त हो गई है कि जिस स्थान पर भी रात्रि हो जाती है, यात्री वहीं ठहर जाते हैं। उन ग्रामों को, जिनके विषय में किसी को इस बात की स्मृति नहीं कि कभी किसी ने कृषि की होगी, उसने ख़ुम्स तथा उश्र के धन से उपवन के समान बना दिया। आजकल राज्य के प्रान्तों में नाममात्र को भी ख़राब ग्राम नहीं पाये जाते। शुष्क जंगलों तथा बिना तरी के ब्याबानों को, जहाँ पक्षी तक न रह सकते थे, अत्यधिक नहरों तथा झरनों को खुदवा कर ऐसा बना दिया कि एक-एक कोस में दो दो नहरें बहती हैं।

अपनी ख़ास इमलाक के ख़राज से उसने इतनी सरायें, मदरसे, ख़ानक़ाहें, मस्जिदें हौज़ तथा क़िलों का निर्माण कराया कि सिन्ध नदी से देहली तक के सभी प्रदेश स्वर्ग के समान हो गये। देहली में अत्यधिक जन समूह हो जाने के कारण उसने अपने नाम पर एक नगर यमुना तट पर बसाया। चन्द्रमा के समान उसने वहाँ एक राजप्रासाद का निर्माण कराया और उसके चारों ओर मलिकों के घर तारों के समान बनवाये। यमुना तट पर मोती के समान एक मस्जिद का निर्माण कराया। तत्पश्चात् पत्थर के एक स्तम्भ की लाट वहाँ लगवायी।[1] समय के ज्ञान के लिये एक सुन्दर उच्च भवन पर एक तास तैयार कराया। उससे बादल तथा वर्षा में रोज़े तथा नमाज़ के समय का ज्ञान हो जाता था।

उसने अपने सिंहासनारोहण के प्रारम्भ में अपने शत्रुओं का विनाश कर दिया। पूर्व

---

१ अशोक की लाट।

के बादशाह[1] द्वारा उसके आदेशों का पालन न करने के कारण सुल्तान ने विवश होकर उसके राज्य के विनाश हेतु गंगा नदी द्वारा प्रस्थान किया।

एक लाख पदाति तथा ३०,००० अश्वारोहियों सहित, वह हाथियों को क़िले का रूप देकर मैदान में ठहरा। अश्वारोहियों तथा पदातियों के आक्रमण द्वारा ५० हाथियों को जीवित ही बन्दी बना लिया गया और शत्रु की सैकड़ों सेनाओं को धराशायी कर डाला गया।

तत्पश्चात् सम्मानित पताकाओं ने जाजनगर की विजय का संकल्प किया। ६० हज़ार में से उसने ४० हज़ार चुन लिये और जरीदा[2] होकर (शत्रु की राजधानी) की ओर प्रस्थान किया। वह दो मास तक उस जंगल तथा पर्वत में आक्रमण करता रहा। सहगी[3] नामक क़िले पर विजय प्राप्त करली। काफ़िर (राय) वहाँ से भी भाग गया। किन्तु बादशाह के राय के क़िले के निकट पहुँच जाने के कारण, यद्यपि राय के पास हाथी, घोड़े तथा सैनिक थे, वह बादशाह के आतंक से भयभीत होकर समुद्र की ओर भाग गया। जब बादशाह समुद्र तट पर पहुंचा तो राय ने कोई उपाय न देखकर क्षमा याचना करली। उसके पास जो कुछ धन-सम्पत्ति, रत्न, घोड़े तथा हाथी थे, उन्हें उसने बादशाह के चरणों में समर्पित कर दिया।

तत्पश्चात् उसने नगरकोट के क़िले पर एक बहुत बड़ी सेना लेकर आक्रमण किया। जब बादशाह ने देखा कि क़िला बड़ा ही दृढ़ है और तलवार तथा कुठार द्वारा विजय नहीं हो सकता तो उसने अरादे एवं मन्जनीक़ें[4] लगवाईं। शाही सेना ने इतने पत्थरों तथा अग्नि की वर्षा की कि राय को विवश होकर अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। उसने धन तथा खराज अदा करना स्वीकार कर लिया। इस विजय से सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने सिन्ध पर भी आक्रमण किया और जाम पर विजय प्राप्त करके उसे अपने साथ ले आया। उसने केवल इतना ही विजयें नहीं प्राप्त कीं अपितु इसी प्रकार की सैकड़ों विजय प्राप्त कीं।

देहली तथा उसके आसपास की यात्रा।

शहर देहली के द्वार में प्रविष्ट होने के पूर्व हमने दाहिनी ओर शेख निज़ामुद्दीन औलिया के मज़ार की ओर जाना निश्चय किया। हमने सोचा कि सर्वप्रथम हम शेख की खानक़ाह पहुँच कर उनसे सहायता की याचना करें। खानक़ाह का गुम्बद, शहंशाह का मदरसा, बाग़, सराय तथा बाज़ार देखें। बाग़ों के मार्ग से हौज़े खास पर पहुंचें। तत्पश्चात् शहर देहली में प्रविष्ट होकर जामा मस्जिद जायें और वहाँ नमाज़ पढ़ें। तत्पश्चात् राज प्रासाद के द्वार पर पहुंचें।

यह संकल्प करके हमने शेख के रौज़े की ओर प्रस्थान किया। वहाँ दर्शन के पश्चात् हम दायीं ओर पहुंचे। हमने भवन के चारों ओर तथा इधर उधर पत्थरों की इमारत की

---

१ इलियास।

२ जरीदा का अर्थ 'अकेला', 'शीघ्रातिशीघ्र' 'कुछ थोड़े से सवार जो बड़े दल का भाग हों', है। उपर्युक्त वाक्य से अन्तिम अर्थ स्पष्ट होता है। ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ के लिये भी जब वह अफ़ग़ानपुर पहुँचा था, बरनी ने जरीदा शब्द का प्रयोग किया है। (तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० २५)

३ तारीख़े मुबारकशाही में सीखरा है।

४ क़िले पर आक्रमण हेतु अग्नि तथा पत्थर फेंकने की मध्यकालीन मशीनें।

लीला देखी। दायीं ओर विस्तृत प्रांगण था। वहाँ के गुम्बद की चोटी तथा चमकता हुआ झरना देखा। उसकी लीला स्वर्ग की लीला के समान थी।

संसार के बादशाह के मदरसे में एक नया प्रज्वलित संसार दृष्टिगत होता था। उस प्रकार का स्थान न किसी की आँखों ने देखा और न किसी के कानों ने उसके विषय में सुना था। हमने सर्वप्रथम हौज़े ख़ास के चारों ओर चक्कर लगाये। जब हम हौज़ के बन्द की ओर पहुंचे और ऊँचाई की ओर बढ़े तो हमें स्वर्ग के समान एक सुसज्जित नगर दृष्टिगत हुआ।

हौज़ की लीला देखने के उपरान्त जब हम उस शुभ भवन (मदरसे) में प्रविष्ट हुये तो हमें एक खुला हुआ विस्तृत समतल स्थान मिला। उसका प्रांगण हृदयग्राही था और उसका विस्तार जीवन दान करता था। उसकी धूल से कस्तूरी की वर्षा होती थी और उसकी सुगन्धि अम्बर से परिपूर्ण थी। हरियाली, सुम्बुल[1], रैहान[2], गुलाब तथा लाला[3] खिले हुये थे और जहाँ तक दृष्टि जाती थी, बड़े सुव्यवस्थित ढंग से लगे हुये थे। अनार, नारंगी, नीबू, सेब तथा अंगूर इस प्रकार लगे हुये थे कि मानों आगे आने वाले वर्ष के फल इसी वर्ष लग गये हों। प्रत्येक दिशा में बुलबुलें गा रही थीं। ऐसा ज्ञात होता था कि उनके पंजों में चंग[4] तथा चोंच में बाँसुरी है। इस उद्यान में एक चबूतरा था जिसकी लम्बाई तथा चौड़ाई ४० हाथ थी। उसके ऊपर एक बहुत ही ऊँचा गुम्बद था। भवन के कोठे तथा बुर्ज दुलहिन के मुख के समान सोने से सजे थे। द्वार तथा दीवार दर्पण के समान थे। उसकी दीवार का चूना तथा पत्थर क़लई तथा संगमरमर के थे। उसके तख्ते तथा द्वार की लकड़ी चन्दन की थी। शीराज़, यमन तथा दमिश्क़ के क़ालीन से उसका बाहरी तथा भीतरी भाग सुसज्जित था।

जब हम उसमें प्रविष्ट हुये तो हमें उसके भीतर एक स्वर्ग मिला। विद्वान् लोग प्रत्येक दिशा में फ़रिश्तों के समान उपस्थित थे। उनमें अरबी के विद्वान् तथा एराक़ी ज्ञान विज्ञान के जानकार लोग थे। सभी शाम के लबादे तथा मिस्र की पगड़ियाँ पहने थे। प्रत्येक अद्वितीय था और हर प्रकार की कला को जानता था। प्रत्येक अपनी बुद्धि के कारण प्रसिद्ध था। वे फ़साहत[5] में बुखारा तथा समरक़न्द में और बलाग़त[6] में हिजाज़, यमन तथा नज्द में प्रसिद्ध थे। उन लोगों के प्रधान जो सिर से पांव तक बुद्धि एवं सम्मान थे, जलालुद्दीन रूमी थे। वे क़ुरान को सात विभिन्न नियमों से पढ़ सकते थे, और १४ विज्ञान जानते थे। मुहम्मद साहब की हदीसों के पाँचों प्रसिद्ध संग्रह का उन्हें ज्ञान था और वे चारों मज़हबों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रखते थे। हमने उनका जादू रूपी व्याख्यान सुना और उनके व्याख्यान द्वारा तफ़सीर[7] तथा हदीस[8] के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। मदरसे में प्रत्येक दिशा में विद्यार्थी वाद-विवाद कर रहे थे। वादविवाद का शोर समाप्त हो जाने के उपरान्त ख्वान सालार[9] भोजन लाया। भोजन में तीतर, कबूतर के बच्चे, चकोर, कुलंग, मछली, मुर्ग़

---

१ एक सुगंधित घास जो फ़ारसी उर्दू कविता में सुन्दर सुन्दर घुंघराले केश का उपमान मानी गयी है।
२ एक सुगन्धित घास।
३ एक प्रसिद्ध फूल।
४ डफ़ की शकल का एक बाजा।
५ सुन्दर तथा सुबोध भाषा।
६ अलंकार से परिपूर्ण भाषा।
७ क़ुरान की टीका।
८ मुहम्मद साहब की वाणी का संग्रह।
९ भोजन का प्रबन्धक।

तथा मोटे ताजे बकरी के बच्चे, बादाम मिला हुआ तथा सुगन्धित अनारदाना जिस पर केसर, चन्दन तथा कस्तूरी छिड़की हुई थी, भुनी हुई टिकियां, जलेबी, तथा गीली और सूखी बादाम की टिकियाँ प्रत्येक दिशा में ढेर थीं। सचमुच स्वर्ग की बहार सजी हुई थी। थाल पत्ते के समान तथा प्याले नरगिस[1] के समान थे। थाल के सामने खट्टे फल तथा अचार भी थे। आबदार[2] थालों में नारंगी मिला हुआ अनार का शर्बत तैयार किये हुये थे। मिश्री तथा गुलाबमिला हुआ शर्बत और कस्तूरी मिला हुआ शहद उपस्थित था। बर्गदार[3] सोने तथा चाँदी के बर्गदानों[4] में पान देने में व्यस्त थे। गुलाब के पत्तों के समान पानों के बीड़े काँटे से छेद कर तैयार किये गये थे। भोजन के उपरान्त लोगों ने बादशाह तथा शाहज़ादों की समृद्धि हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

वहाँ से हम ने खानक़ाह की ओर प्रस्थान किया। उसके गुम्बदों में बड़ी चमक दमक थी। प्रत्येक गुम्बद के नीचे एक क़लन्दर[5] विराजमान था। वे काले वस्त्र के सिंहों तथा सफ़ेद वस्त्र के हाथियों के समान थे। वे अत्यधिक पवित्र जीवन व्यतीत करते थे और लोक तथा परलोक दोनों से उन्हें घृणा थी। उनमें काबे के हाजी तथा विभिन्न स्थानों के यात्री थे। सब को बादशाह के सौभाग्य के कारण आराम प्राप्त था। उन्हें नाना प्रकार के भोजन, ऊनी वस्त्र तथा धन प्रदान किया जाता था। सभी बादशाह के प्रति शुभकामनायें करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में व्यस्त थे।

जब हम दूसरी पंक्ति में पहुंचे तो वहाँ आरिफ़ों[6] की बहुत बड़ी भीड़ थी। ऊँचाई पर सूफ़ी तथा उनके सामने उनके चेले थे। हिरमान[7] दायीं ओर तथा हैदरी[8] बाईं ओर थे। शेखुल इस्लाम सद्रुद्दीन, शेख बहाउद्दीन ज़करिया के पौत्र वहाँ के नेता थे। कुछ समय तक हम उनके पास बैठे। तत्पश्चात् उनके हाथ चूमकर तथा उनसे आशीर्वाद लेकर हम खानक़ाह के बाहर निकले।

नगर से सर्वप्रथम जब हम जुमा मस्जिद पहुँचे तो हमें ऐसी मस्जिद दृष्टिगत हुई जिसके समान कोई मस्जिद हमने न देखी थी। इन्द्र-धनुष के समान मेहराब पर मेहराब सजे हुये थे और मेघ के समान गुम्बद पर गुम्बद बने थे। उसमें जो कुछ लिखा था और जो बेल बूटे बने हुये थे, वे अद्वितीय थे।

थट्टा की विजय पर बधाई

थट्टा एक ऐसा टापू है जो शरण का उत्तम स्थान है। उसके एक ओर समुद्र और एक ओर ५ नदियाँ है। उसके जंगल में अनाज तथा जल का अभाव है। (उसको विजय करने की आकांक्षा के कारण) धन तथा राज्य नष्ट हो गये। वहाँ राय तमाची तथा राय जाम का राज्य था जिनके पास अत्यधिक सेना थी। सुल्तान ने अत्यधिक सेना लेकर उस पर आक्रमण किया। उसके

१ एक प्रसिद्ध फूल।
२ जल का प्रबन्ध करने वाले।
३ पान का प्रबन्ध करने वाले।
४ पान रखने के बर्तन।
५ स्वतंत्र विचार के सूफ़ी जो गृहस्थ जीवन त्याग कर अधिकांशतः दाढ़ी तथा सिर मुंडवाये रहते थे।
६ ज्ञानियों।
७ सम्भवतः वे लोग जो मक्का तथा मदीना से लौट आये थे।
८ सूफ़ियों का एक समूह।

आक्रमण के कारण शत्रुओं को क्षमा-याचना करनी पड़ी। संसार के बादशाह ने उन्हें सम्मानित किया और उन्हें पद तथा ख़िलअत प्रदान किये।

फ़ीरोज़ाबाद की प्रशंसा।

फ़ीरोज़ाबाद ऐसा उत्तम नगर है जिसमें स्वर्ग की नहरें तथा बग़दाद की इमारतें हैं। प्रत्येक दिशा में विचित्र भवन तथा चारों ओर उद्यानों एवं मैदानों की लीला दृष्टिगत होती है। सेना समृद्ध, प्रजा तथा बाज़ारी प्रसन्न हैं। धन्य है ऐसे नगर को तथा ऐसे बादशाह को जिसने ऐसा नगर बसाया। जिस प्रकार के भवनों का शहंशाह ने निर्माण कराया वैसे भवन न तो संसार में किसी ने देखे हैं और न सुने हैं। हे ईश्वर! यह महल कैसा हृदयग्राही है और यह कैसा स्थान है जहाँ प्राणों को उन्नति प्राप्त होती है। यहाँ जामा मस्जिद संगमरमर की बनी हुई है। ऐसी मस्जिद संसार के किसी देश में नहीं। उसके गुम्बद आकाश पर सिर उठाये हैं।

यहाँ पत्थर के एक टुकड़े की लाट[1] है जो ऊपर गावदुम चला गया है। उसका नीचे का तथा ऊपर का भाग सोने के कारण अग्नि के रंग का है। वह १०० फ़रसंग[2] से सोने का एक पर्वत ज्ञात होता है। उसके ऊपर से न तो कोई पक्षी और न कोई बाण उड़ सकता है। यदि उसका सविस्तार उल्लेख किया जाय तो जीवन काल समाप्त हो जाय और यह कहानी समाप्त न हो। सुल्तान उसे बहुत दूर से बड़ी युक्ति से लाया। जब वह जड़ से खोदा गया तो उसे ५०० बैल खींच कर लाये और एक लाख मन भारी ज़ंजीर से उसे बाँधा गया। सैकड़ों नौकाओं पर लाद कर उसे मस्जिद के निकट पहुँचाया गया। इतनी शक्ति कि एक पर्वत को एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर पहुंचा दे इस बादशाह के अतिरिक्त किसी अन्य में नहीं।

१ पत्थर की लाट जो फ़ीरोज शाह के कोटले में है। इस पर फ़ीरोज शाह ने सोने के मुलम्मे का एक कलश लगवाया था।

२ १२००० हाथ की दूरी का फ़ासला।

परिशिष्ट 'द'

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा उसके उत्तराधिकारियों के सिक्के[१]

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
			फ़ीरोज़ शाह तृतीय तुग़लुक़	
			७५२-७९० हि०	१३५१-१३८८ ई०
			स्वर्ण के	
			(अ) ख़लीफ़ा अबुल अब्बास अहमद अल हाकिम द्वितीय के नाम के साथ	
AV ६४९	—	भार १६६'२ आकार ·८	ज़ुरेबत हाज़ेहिस्सिकतो फ़ी ज़मनिल इमामे अबुल अब्बासे अहमद खलअदत खिलाफ़तोहु[२]	वासिक़ो बताईदे यज़दानी फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी[३]
			(ब) ख़लीफ़ा अबुल फ़तह अल मोतज़िद	
६५०	देहली ७६५ हि०	भार १६८·७ आकार ·६	वृत्त में फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबुल फ़तह खलअदत खिलाफ़तोहु[४] हाशिये में ज़रेबा हाज़ेहिस्सिकतो बहज़रते देहली सनअता खमसी व सित्तीन व सबामेयतिन[६]	अस्सुल्तानुल आज़मो सैफ़ो अमीरिल मोमिनीन अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज़ शाह अस्सुल्तानी खलअदत ममलोकतोहु[५]

१ H. Nelson Wright, 'The Coinage and Metrology of the Sultans of Delhi' (Delhi 1936). Pages 172-217.

२ "इमाम अबुल अब्बास अहमद के काल में यह सिक्का ढला। उनकी खिलाफ़त हमेशा बाक़ी रहे।"

३ "ईश्वर की सहायता पर भरोसा करने वाला फ़ीरोज़ शाह सुल्तान।"

४ "इमाम अमीरुल मोमिनीन अबुल फ़तह के काल में। उनकी खिलाफ़त सदैव रहे।"

५ "सुल्ताने आज़म अमीरुल मोमिनीन की तलवार, अबुल मुज़फ़्फ़र फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी

६ "(हिजरी) सन् ७६५ में यह सिक्का देहली की टकसाल में ढला।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
AV ६५० अ	देहली ७६१	भार १६६ आकार १	जैसा कि ६५० पर है परन्तु शब्दों का क्रम है : (इल)इमामे फ़ी ज़मनि अबू अमीरिल मोमिनीन अलफ़तह खिलाफ़तोहु खलअदत[1] हाशिये में, एहदा व सित्तीन[2]	जैसा कि ६५० पर है
६५० ब	—	भार १६९ आकार ·८५	ज़ुरेबत हाज़ेहिस्सिकतो फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबिल फ़तहिल मोतजिद बिल्लाह् खलअदत खिलाफ़तोहु[3]	जैसा कि ६५० पर है परन्तु 'खलअदत' व 'ममलोकतोहु' के स्थान विनमित हैं।

(स) खलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह अल मुतवक्किल प्रथम

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
AV ६५१	देहली ?	भार १७०·४ आकार ·९	वृत्त में फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबी अब्दुल्लाह् खलअदत खिलाफ़तोहु हाशिये में ज़ुरेबत हाज़ेहिस्सिकतो बहज़रते देहली सनअता .... ।[4]	उसी प्रकार जैसा कि ६५० पर है परन्तु 'अस्सुल्तानी'

१ इन शब्दों का सार्थक क्रम होगा:—"फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबुल फ़तह खलअदत खिलाफ़तोहु।" इसका अर्थ है—"इमाम अमीरुल मोमिनीन अबुल फ़तह के काल में। उनकी खिलाफ़त सर्वदा रहे।"

२ '६१'।

३ इन शब्दों का सार्थक क्रम होगा:—"ज़ुरेबत हाज़ेहिस्सिकतो फ़ी ज़मनिल इमामिल मोतजिद बिल्लाह अमीरिल मोमिनीन अबिल फ़तह, खलअदत खिलाफ़तोहु।" अर्थात् 'इमाम अमीरुल मोमिनीन अबुल फ़तह के काल में यह सिक्का ढाला गया। उनकी खिलाफ़त सर्वदा रहे।'

४ "यह सिक्का देहली की टकसाल में ढाला गया.......... ।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
			(द) बिना किसी ख़लीफ़ा के नाम के	
AV ६५२	७८६	भार १६७·८ आकार ·६	सुल्तानी फ़ीरोज़ शाह	अलमोमिनीन नायबो अमीर[1] ७८६
			चाँदी के	
AR ६५२ अ	देहली ७७३	भार १७० आकार १	जैसा कि ६५१ पर है परन्तु क्षेत्र का क्रम उसी प्रकार है जैसा कि ७७३ हि० के सिक्के पर है	जैसा कि ६५१ पर है
AR ६५२ ब	७८७	भार १६३ आकार ·९	वृत्त में जैसा कि ६५२ पर है	दोहरे वृत्त में जैसा कि ६५२ पर है परन्तु ७८७
			ताँबा व चाँदी मिली धातु के	
B ६५३	देहली ७५९	भार १३३ आकार ·७५	अलख़लीफ़ा अमीर इलमोमिनीन ख़लअदत खिलाफ़तोहु[2]	फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी ज़ुरेबत बहज़रते देहली[3] ७५९
६५४	,,	भार १३९·५ आकार ·७	,, परन्तु ७५९ खिलाफ़तोहु के बाँई ओर है।	,, परन्तु बिना तिथि के
६५५	देहली ७६२	भार १३७·५ आकार ·७५	अलख़लीफ़ा अमीर इलमोमिनीन ख़लअदत खिलाफ़तोहु ७६२	फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी ज़ुरेबत बहज़रते देहली
६५६	,, ७६४	भार १३७·५ आकार ·७५	,, परन्तु ७६४	,,
६५७-६५८	,, ७६५	भार १३७; १३४·५ आकार ·७५	,, परन्तु ७६५	

१ इन शब्दों का सार्थक क्रम होगा :—"नायबो अमीरिल मोमिनीन।"

२ "अलख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन, इनकी खिलाफ़त हमेशा रहे।"

३ "फ़ीरोज शाह सुल्तान; ढाला गया देहली की टकसाल में।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ६५९	देहली ७६६	भार १३७; १३४·५ आकार ·७५	जैसा कि ६५७ पर है परन्तु ७६६	जैसा कि ६५७ पर है
६६०	,, ७६७	आकार ·७	,, परन्तु ७६७	,,
६६१	,, ७६८		,, परन्तु ७६८	,,
६६२	,, ७६९	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७६९	,, परन्तु फ़ीरोज शाह सुल्तानी
६६३	,, ७७१	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७७१	,,
६६४	,, ७७२	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७७२	,,
६६५	,, ७७३	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७७३	,,
६६६	,, ७७४	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७७४	जैसा कि ६६२ पर है
६६७	,, ७७५	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७७५	,,
६६८	,, ७७६	भार १३७·६ आकार ·७५	,, परन्तु ७७६	,,
६६९	,, ७७७	भार १३६·७ आकार ·७५	,, परन्तु ७७७	,,
६७०—६७१	,, ७७८	भार १३६·७ आकार ·७५	,, परन्तु ७७८	,,
६७२—६७३	,, ७७९	भार १३६·७ आकार ·७५	,, परन्तु ७७९	,,
६७४—६७५	,, ७८०	भार १३७·१ आकार ·७५	,, परन्तु ७८०	,,

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
B ६७६	देहली ७८१	भार १३७·१ आकार ·७५	जैसा कि ६५७ पर है परन्तु ७८१	जैसा कि ६६२ पर है
६७७—६७८ •	,, ७८२	भार १४१ आकार ·७५	,, परन्तु ७८२	,,
६७९	,, ७८३	भार १४१ आकार ·७५	,, परन्तु ७८३	,,
६८०	,, ७८४	भार १४१ आकार ·७५	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाहे खलअदत खिलाफ़तोहु ७८४	,,
B ६८१	,, ७८५	भार १४० आकार ·७५	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाहे खलअदत खिलाफ़तोहु ७८५	,,
६८२	,, ७८६	भार १४० आकार ·७५	,, परन्तु ७८६	,,
६८३	, ७८७	भार १४० आकार ·७५	,, परन्तु ७८७	,,
६८४	,, ७८८	भार १४० आकार ·७५	,, परन्तु ७८८	,,
६८५	,, ७८९	भार १४० आकार ·७५	,, परन्तु ७८९	,,
६८६	,, ८१५	भार १४२·५ आकार ·७	जैसा कि ६५४ पर है परन्तु ८१५	,,
६८७—६८८	,, ८१६	भार १४५·३; १४३ आकार ·७	,, परन्तु ८१६	,,
६८९	,, ८६७	भार १४०·५ आकार ·७	जैसा कि ६५७ पर है परन्तु ८६७	जैसा कि ६५७ पर है

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ६९०	साहते सिन्ध	भार १४१ आकर ·७५	अलख़लीफ़ा अमीरिल मोमिनीन ख़लअदत ख़िलाफ़तोहु	शाह फ़ीरोज़ अस्सुल्तानी ज़ुरेबत बसाहते सिन्ध[1]।
६९० अ	,,	भार १४१	,, परन्तु वृत्त में	,, परन्तु 'शाह' के ऊपर टकसाल का चिह्न ३१ है
६९१–६९३	—	भार ८२·५ आकार ·६	वृत्त में ख़लीफ़ा अबुल फ़तह	वृत्त में फ़ीरोज़ सुल्तानी
६९४–६९६	—	भार ५४·७; ५५·२ आकार ·६; ·५५	In six-foil अहमद इलअब्बास अबू[2]	In six-foil शाह फ़ीरोज़ सुल्तानी
६९७	?	भार ५० आकार ·५	,, परन्तु 'इल अब्बा' दूसरी पंक्ति में है	,,
६९८	?	भार ५३·७ आकार ·५५	जैसा कि ६९४ पर है परन्तु 'अबू' के बाईं ओर टकसाल का चिह्न ९८ है	,,
६९९	देहली ७९०	भार ५६·२ आकार ·५५	अलख़लीफ़ा इलमोमिनीन अमीर ख़लअदत ख़िलाफ़तोहु[3]	जैसा कि ६५३ पर है परन्तु ७]९०
७००	देहली	भार ५१·२ आकार ·५५	जैसा कि ६९९ पर है	जैसाकि ६९९ पर है परन्तु कोई तिथि नहीं है
७०१	,,	भार ५६·२ आकार ·५५	,,	जैसा कि ६५७ पर है

१ "फ़ीरोज़ शाह सुल्तान; ढाला गया सिन्ध के मैदान में।"

२ इन शब्दों का सार्थक क्रम होगा :– 'अबिल अब्बास अहमद।'

३ इन शब्दों का सार्थक क्रम होगा :—"अलख़लीफ़ा अमीरिल मोमिनीन ख़लअदत ख़िलाफ़तोहु।"

संख्या	टकसाल व आकार	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ७०२–७०५	देहली —	भार ५५·५ आकार ·५५	जैसा कि ६९९ पर है	जैसा कि ६६२ पर है
७०६–७०८	—	भार ५४·२; ५३·८ आकार ·६; ·५५	दोहरे वृत्त में अलखलीफ़ा अबुल फ़तह खलअदत खिलाफ़तोहु	दोहरे वृत्त में फ़ीरोज शाह सुल्तानी खलदा मुल्कोहु[1]
७०९–७११	देहली —	भार ५५·५; ५०·८ आकार ·६; ·५५	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	फ़ीरोज शाह सुल्तानी ज़ुरेबत बहरजते देहली
७१२	—	भार ४२ आकार ·५५	In six-foil खलीफ़ा अबुल फ़तह 'खलीफ़ा' के ऊपर × का चिह्न	In six-foil सुल्तानी फ़ीरोज
७१३	देहली —	आकार ·४	वृत्त में शाह फ़ीरोज	वृत्त में देहली
			ताँबे के	
Æ ७१३ अ	देहली दारुलमुल्क	भार १४०·५ आकार ·६	फ़ीरोज शाह सुल्तानी	दारुलमुल्क देहली
७१४	,,	भार ६८·६ आकार ·६	वृत्त में शाह फ़ीरोज सुल्तानी	वृत्त में दारुलमुल्क देहली
७१५–७१६	,,	भार ६८·७ आकार ·६	,, परन्तु अक्षर अधिक कोणाकार हैं	,,
७१७–७१९	,,	भार ६५·२ आकार ·६	,, परन्तु उज शाह फ़ीर	,,

१ "फ़ीरोज शाह सुल्तान; उसका मुल्क हमेशा रहे।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
Æ ७२०–७२१	देहली	भार ६६·३ आकार ·६	उज़ शाह फ़ीर सुल्तानी	वृत्त में दारुलमुल्क देहली परन्तु दारुलमुल्क (मालवा रूप के)
७२२–७२३	,,	भार ६२·५; ६३ आकार ·६	दोहरे वृत्त में फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी	,, परन्तु दोहरे वृत्त में
७२३ अ	,,	भार ६२ आकार ·५५	जैसा कि ७२२ पर है परन्तु 'शाह' के स्थान पर 'शह' है	जैसा कि ७२२ पर है
७२४–७२७	देहली —	भार ५६·२ ५६·७ आकार ·५५	वृत्त में सुल्तानी फ़ीरोज़	वृत्त में हज़रते देहली
७२८–७३३	देहली —	भार ३४·६; ३४·५; ३१·५; ३१·१ आकार ·५	वृत्त में फ़ीरोज़ सुल्तानी	वृत्त में हज़रते देहली
७३४	,,	भार ·३४ आकार ·४	,, परन्तु उज़ फ़ी	,,
७३५	,,	भार ३४ आकार ·४	परन्तु उज़ शाह फ़ीर	,,
७३५ अ	,,	भार १६ आकार ·३५	जैसा कि ७३५ पर है	,,
७३५ ब	,,	भार ·१६ ८ आकार ·३५	हज़रत	देहली

मरणोपरान्त ढाले गये सिक्के

(अ) खिज्र खां द्वारा ढलवाये गये

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
७३६	देहली दारुलमुल्क ८१७	भार ६७·६ आकार ·६	जैसा कि ७१७ पर है	जैसा कि ७१४ पर है परन्तु नीचे ८१७ है

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
७३७	देहली ८२३	भार ६७·६ आकार ·६	जैसा कि ७१७ पर है	जैसा कि ७१४ पर है परन्तु ८२३
			(ब) मुबारक द्वितीय द्वारा ढलवाये हुए	
७३८	देहली दारुलमुल्क ८२४	भार ७०·७ आकार ·६	जैसा कि ७१७ पर है	जैसा कि ७१४ पर है परन्तु ८२४·
७३९	,, ८२५	भार ६६·२ आकार ·६	,,	,, परन्तु ८२५
७४०	,, ८२७	भार ७०·२ आकार ·६	,,	,, परन्तु ८२७
७४१	,, ८२८	भार ७० आकार ·६	,,	,, परन्तु ८२८·
७४२	,, ८३२	भार ६६·१ आकार ·६	,,	,, परन्तु ८३२
७४३	,, ८३५	भार ६६ आकार ·६	,,	,, परन्तु ८३५
७४४	,, ?	भार ६५·८ आकार ·६	,,	,, परन्तु ७३
			फ़तह ख़ाँ उसके पिता से सम्बन्धित स्वर्ण के	
AV ७४५	इक़लीमुश्-शर्क़ ७६१	भार १६८·५ आकार ·९	वृत्त में फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबी इलफ़तहिल मोतज़िद बिल्लाह खलअदत खिलाफ़-तोहु हाशिये में ज़ुरेबत हाज़ेहिस्सिकतो फ़ी इक़लीमिश्शर्क़ सनता एहदा व सित्तीन व सबामेयतिन	वृत्त में शाह फ़तह ख़ाँ फ़ीरोज़ जललल्लाहो ज़िला तो जलालोहु[1]

[1] इसका सार्थक क्रम सिक्के पर लिखी पंक्तियों के अनुसार यह होगा—"फ़तह ख़ाँ फ़ीरोज़ शाह मदल्लाहो ज़िलाला जलालेही।" अर्थात् ईश्वर उनके जलाल के सायों को बढ़ाये।

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
AV ७४५ अ	शहरे-पटना ७६१	भार १६६·२ आकार ·८	जैसा कि ७४५ पर है परन्तु फ़िश्शहर पटना	जैसा कि ७४५ पर है
७४५ ब	? ७— —	भार १७० आकार ·८	वृत्त में फ़ी ज़मनिल इमामे इलमो अबी अल्लाह अमीर मिनीन अब्दु खलअदत खिलाफ़तोहु[1] हाशिये में ज़ुरेबा हाज़ेहिस्सिकतो··· ······सबामेयतिन	अलशर्क़े वलग़र्ब (?) खबीर शाह फ़तह खाँ फ़ीरोज़ जललल्लाहो जलालोहु[2]
			चाँदी व ताँबा मिश्रित	
B ७४६–७४९	—	भार १३६·३ १३९·८ आकार ·७५	फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबी इलफ़तहिल मोतज़िद बिल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	शाह फ़तह खाँ फ़ीरोज़ जलल्लाहो ज़िलाला जलालेही
७५१–७५४	—	भार १३०·२, १३३·७; १३८ ४ आकार ·७५–·७	जैसा कि ७५० पर है	शाह फ़तह खाँ फ़ीरोज़ जल ज़िलाला जलालेही ज़ुरेबत हाज़ेहिस्सिकतो
७५५–७५६	—	भार १३९; १४०·२ आकार ·७, ·६५	,,	,,
७५७	—	भार ५४·७ आकार ·६	फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबिल फ़तह खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ७४६ पर है

१ इन शब्दों का सार्थक क्रम होना चाहियेः—"फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन अबी अब्दुल्लाह खुलअदत खिलाफ़तोहु।"

२ इन शब्दों का सार्थक क्रम होना चाहियेः—"फ़तह खाँ फ़ीरोज शाह खबीरुश्शर्क़े वलग़र्बे जलल्लाहो जलालोहु।" अर्थात् 'पूर्व व पश्चिम की खबर रखने वाले फ़तह फ़ीरोज़ शाह।' ईश्वर उनके जलाल को और बढ़ाये।

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ७५८-७६०	—	भार ५२·३,५६·२ आकार, ·६	फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ७४६ पर है
७६०. (bis)	—	भार ५५·५ आकार ·६	·········अमीर इलमो अबा अल्लाह अब्दु मिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु[1]	शाह फ़तह खाँ फ़ीरोज़ ····· ······

तुग़लुक़ शाह द्वितीय

७९०-७९१ हि० | १३८८-१३८९ ई०

स्वर्ण के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
AV ७६१	देहली ?	भार १७० आकार ·९	वृत्त में, जैसा कि ६५१ पर हाशिये में (बाहर से पढ़ने पर) ज़ुरेबत हाज़ेहि······ [बहज़रते देहली]	अस्सुल्तानुल आज़म ग़यासुद्दुनिया वद्दीन तुग़लुक़ शाह अस्सुल्तानी

चाँदी व ताँबा मिश्रित धातु के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ७६१ अ	— ७९०	भार १६४ आकार ·८	सुल्तानी तुग़लुक़ शाह	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९०
७६२—७६५	देहली ७९०	भार १४०·७ १४०·६ १३९·६; १३१ आकार ·७	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु ७९०	तुग़लुक़ शाह सुल्तानी ज़ुरेबत बहज़रते देहली
७६६	,, ७९१	भार १४१ आकार ·७	,, परन्तु ७९१	
B ७६७	—	भार ८३·८ आकार ·६५	वृत्त में, अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	वृत्त में तुग़लुक़ शाह सुल्तानी खलअदत ममलोकतोहु

१ इसका सार्थक क्रम होना चाहियेः—"अमीरिल मोमिनीन अबिल अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
७६८	देहली ७९० ?	भार ७२ आकार ·७	वृत्त में अबू अब्दुल्लाह हाशिये में, खलअदत (खिलाफ़तोहू बहज़रते देहली) ७]९०	सुल्तानी तुग़लुक़ शाह
७६९	—	भार ५३·१ आकार ·५५	अल खलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहू	तुग़लुक़ शाह सुल्तानी खलदा मुल्कोहू
७६९ अ	देहली —	भार ५५ आकार ·५	अल खलीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहू	तुग़लुक़ शाह सुल्तानी ज़ुरेबत बहज़रते देहली
७६९ ब	— ७९०	भार ५० आकार ?	अबू अब्दुल्लाह ७९०	तुग़लुक़ शाह सुल्तानी

ताँबे के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
Æ ७७०	देहली दारुलमुल्क	भार ६५·८ आकार ·५५	तुग़लुक़ शाह सुल्तानी	दारुलमुल्क देहली
७७० अ	" —	भार ६६ आकार ·५	सुल्तानी तुग़लुक़ शाह	जैसा कि ७७० पर है
७७० ब	देहली —	भार ३५ आकार ·४	शाह तुग़लुक़	हज़रते देहली

फ़ीरोज़ शाह ज़फ़र

७९१ हि० | १३८९ ई०

स्वर्ण के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
AV ७७१	देहली ?	भार १६८·९ आकार ·९	वृत्त में, जैसा कि ६५१ पर हाशिये में ...बहज़रते देहली......	अस्सुल्तानुल आज़म फ़ीरोज़ शाह इब्ने फ़ीरोज़ शाह अस्सुल्तानी[1]

१ "सुल्तानुल आज़म फ़ीरोज़ शाह ज़फ़र पुत्र फ़ीरोज़ शाह सुल्तान।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
			चाँदी व ताँबा मिश्रित धातु के	
B ७ २	— [७६१]	भार १६५·६ आकार ·८	फ़ीरोज़ शाह जफ़र इब्ने फ़ीरोज़ शाह	नायबो अमीरिल मोमिनीन[1] ७६१
७७३–७७५	देहली ७६१	भार १३८·३, १४०; १३६ आकार ·६५	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु ७६१	फ़ीरोज़ शाह जफ़र सुल्तानी जुरेबत बहज़रते देहली[2]
७७५ (bis)	देहली —	भार १४० आकार ·७	अल खलीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ७७३ पर है
७७५ अ	-- ७६१	भार १३० आकार ·६५	,,	फ़ीरोज़ [शाह] सुल्तानी जफ़र ७६१
७७५ ब	— ७६१	भार ११० आकार ·६५	वर्ग में शाह फ़ीरोज़ हाशिये में जफ़र इब्ने फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७६१
७७६	-	भार ८०·७ आकार ·६५	अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	फ़ीरोज़ शाह जफ़र इब्ने फ़ीरोज़ शाह
७७६ अ	? देहली	भार ७५·५ आकार ·६५	वृत्त में अबू अब्दुल्लाह हाशिये में खलअदत खिलाफ़तोहु जुरेबत	जैसा कि ७७६ पर है परन्तु उज़ शाह फ़ीर

२ "अमीरुल मोमिनीन का नायब।"

३ "फ़ीरोज़ शाह जफ़र सुल्तान। देहली की टकसाल में ढाला गया।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
७७७–७७८	—	भार ५२·८; ४६ आकार ·५५–·५	अल खलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	फ़ीरोज़ शाह ज़फ़र सुल्तानी
७७८ अ	— ७९० ?	भार ५५ आकार ·५५	फ़ीरोज़ शाह ज़फ़र इब्ने फ़ीरोज़ शाह	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९० ?
			ताँबे के	
Æ ७७९	—	भार १०६ आकार ·६	जैसा कि ७७७ पर है	वृत्त में शाह फ़ीरोज़ हाशिये में ज़फ़र [इब्ने फ़ीरोज़] शाह सुल्तानी
७७९ अ	देहली दारुलमुल्क —	भार ६७ आकार ·५५	फ़ीरोज़ शाह ज़फ़र सुल्ताने	दारुलमुल्क देहली
			अबू बक्र शाह ७९१-७९३ हि०	 १३८९-१३९० ई०
			स्वर्ण के	
AV ७८०	? देहली ७९१?	भार १६६·२ आकार ·८५×·९	वृत्त में जैसा कि ६५१ हाशिये में(बाहर से पढ़ने पर) ७९१ ? जुरेबत···	अस्सुल्तानुल आज़म अबू बक्र शाह बिन ज़फ़र बिन फ़ीरोज़ शाह अस्सुल्तानी बाहर की ओर वृत्त के चिह्न
			ताँबा व चाँदी मिश्रित धातु के	
B ७८१	— ७९२	भार १६३ आकार ·८	In foliated border अबू बक्र शाह ज़फ़र बिन फ़ीरोज़ शाह सुल्ताने	In foliated border नायबो अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु ७९२

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ७८२	देहली	भार १५६ आकार ·८	अबू बक्र शाह जफ़र बिन फ़ीरोज शाह सुल्ताने परन्तु अक्षर बड़े हैं और 'ज़फ़र' के पश्चात् 'बिन' नहीं लिखा है	नायबो अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहू ७९२
७८३	— ७६२	भार १४६ आकार ·८×·६	वृत्त में जैसा कि ७८१ पर है।	वृत्त में जैसा कि ७८१ पर है परन्तु तिथि 'फ़तह्' के बाईं ओर है।
७८४	,,	भार १६६ आकार ·८	वृत्त में बकरशाह अबू r हाशिये में (ऊपर से आरम्भ होकर) बिन ?] ज़फ़र बिन फ़ीरोज [शाह सुल्तानी	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७६२
७८५	,,	भार १६२·५ आकार ·८५	अबू बक्र शाह जफ़र इब्ने फ़ीरोज़ शाह	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७६२
७८६	— ७६२	भार १५२·५ आकार ·७५	जैसा कि ७८५ पर है	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७६२
७८७	— ७६१	भार ११५·३ आकार ·७	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहू ७६१	अबू बक्र शाह बिन जफ़र बिन फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी
७८८–७९१	— ७६२	भार १३७·२; १३५·२; १३०·५; १२९·६ आकार ·७	,, परन्तु ७६२	,,
७६१ अ	देहली ७६१	भार १३६ आकार·७	जैसा कि ७८७ पर है	जैसा कि ७८७ पर है परन्तु 'हज़रते देहली' 'सुल्तानी' के बाईं ओर

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ७६१ ब	— ७६१	भार १२८ आकार ·७	फ़ीरोज शाह जफ़र सुल्तानी ७६१	अबू बक्र शाह बिन फ़ीरोज शाह ज़फ़र सुल्तानी
७६२	— ७६१	भार ६७ आकार ·७	वृत में शाह अबू बक्र हाशिये में सीधे कोने में पेंदे में केवल 'शाह' का शब्द ही पढ़ा जाता है	नायबो अमीरिल मोमिनीन
७६३	— ७६२	भार १०६·६ आकार ·६५	" हाशिये में (सीधे केन्द्र से आरम्भ होकर) बिन ज़फ़र बिन फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी	" परन्तु ७६२
७६४	— ७६२	भार १०७ आकार ·७	वर्ग में शाह अबू बक्र हाशिये में (बायें केन्द्र से आरम्भ होकर) बिन ज़फ़र बिन फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७६२
७६५	— ७६३	भार ६३ आकार ·७	" परन्तु हाशिये की भाषा बायें कोने से पेंदे में आरम्भ होती है	" परन्तु ७६३
७६५अ	— ७६१	भार ११० आकार ·७५	In quatrefoil lozenge शाह अबू बक्र हाशिया :— (बिन) ज़फ़र बिन फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी	जैसा कि ७६२ पर है

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ७९५ ब	— ७९२	भार १०४·३ आकार ·७	In quatrefoil शाह बिन फ़ीरोज़ अबू बक्र शाह हाशिये में ? ज़फ़र······सुल्तानी	जैसा कि ७९२ पर है परन्तु ७९२
७९५ स	—	भार ७७ आकार ·६	वृत्त में अबू अब्दुल्लाह खलअदत] खिलाफ़तोहु	अबू बक्र शाह ज़फ़र सुल्ताने
७९६	—	भार ५३·३ आकार ·५५	अलखलीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ७८७ पर है
७९७–८००	—	भार ५४·५; ५३·५; ५३; ४७·३ आकार ·५५	अबखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	अबू बक्र शाह ज़फ़र सुल्तानी
८०१	—	भार ५३·३ आकार ·५	,,	,, परन्तु शाह
८०१अ	—	भार ५३ आकार ·५	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह	वृत्त में अबू बक्र हाशिये में शाह बिन ज़फ़र बिन फ़ीरोज़
८०१ब	— ७९१ ?	भार ४७	जैसा कि ७८७ पर है परन्तु तिथि ?	जैसा कि ७८७ पर है
			तांबे के	
Æ ८०२	देहली दारुलमुल्क ७९२ ?	भार ७५·३ आकार ·५५	In rayed circle शाह बक्र अबू द (sic)	दार [उलमुल्क] देहली ७९२ (उलटा ?)

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
Æ ८०२ अ	देहली दारुलमुल्क —	भार ४८ आकार ·४५	वृत्त में अबू बक्र हाशिये में ?	दारुलमुल्क देहली

अबू बक्र शाह ?

तांबा चाँदी मिश्रित धातु के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ? ८०३	— ७९२	भार १६८·५ आकार ·८५	In six foil lozenge शाह फ़ीरोज़ बिन अबू बक्र शाह	अलख़लीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत ख़िलाफ़तोहु ७९२
८०३ अ	— ७९२	भार १६७ आकार ·७५	फ़ीरोज़ शाह बिन अबू बक्र शाह सुल्तानी	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९२
८०३ ब	—	भार १७२·५ आकार ·७५	जैसा कि ८०३ पर है	अलख़लीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत ख़िलाफ़तोहु

मुहम्मद चतुर्थ बिन फ़ीरोज़

७९२–७९५ हि० १३९०–१३९२/३ ई०

स्वर्ण के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
AV ८०३ स	— ७९३	भार १७० आकार ·८५	फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु ७९३	अस्सुल्तानुल आज़म शाह शाह मुहम्मद फ़ीरोज़ सुल्तानी खलअदत ममलोकतोहु
८०४	— ८२५	भार १७३·९ आकार ·७५	जैसा कि ८०३स पर है परन्तु ८२५	अस्सुल्तानुल आज़म अबिल मुहम्मद मुहम्मद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह अस् ?] सुल्तानी

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
			? मुहम्मद शाह के समय के प्रारम्भिक सिक्के जब वह अपने पिता से सम्बन्धित था	
			तांबा चाँदी मिश्रित धातु के	
B ८१२ ब	७८६	भार १४१·३ आकार ·७	जैसा कि ८०६ में है परन्तु ७८६	जैसा कि ८०६ पर है परन्तु 'मुहम्मद' के स्थान पर 'अहमद'
				ताँबे के
Æ ८१२ स	—	भार ६८·५ आकार ·५५	जैसा कि ८०८ पर है	अ] हमद शाह सुल्ताने
			(ब) स्वतन्त्र शासक के रूप में ७९२–७९५ हि०	
			ताँबा चाँदी मिश्रित धातु के	
B ८१२ द	— ७९५	भार १६४·५ आकार ·८	जैसा कि ८०५ब पर है	जैसा कि ८०२ब पर है परन्तु ७९५
८१३–८१४	— ७९३	भार १२८·८ आकार ·७	जैसा कि ८०६ पर है परन्तु ७९३	जैसा कि ८०६ पर है परन्तु 'सुल्तान'
८१५–८१७	,,	भार १४०·५; १३४·२ आकार ·७	,,	जैसा कि ८०६ पर है
८१८–८२०	— ७९४	भार १३९·८; १४२·२ आकार ·७	,, परन्तु ७९४	,,
८२१	— ७९५	भार १३१ आकार ·७	,, परन्तु ७९५	,,
८२१ अ	— ७९–	भार १३२ आकार ·६५	शाह फ़ीरोज़ बिन मुहम्मद शाह	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९—

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ८२१ब	— ७९२	भार ५५ आकार ·५५	दोहरे वृत्त में जैसा कि ८२१अ पर है	जैसा कि ८२१अ पर है परन्तु ७९२
८२२— ८२३	—	भार ५३·३ आकार ·५५	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ८१३ पर है
८२४	—	भार ५२·८ आकार ·५५	अलखलीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ८०६ पर है
			ताँबे के	
Æ ८२५— ८२६	देहली ७९३	भार १३५; १३६·२ आकार ·६५	वृत्त में शाह मुहम्मद हाशिये में सुलतानी ज़ुरेबत बहज़रते देहली	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९३ *r* 'अमीर' के बाईं ओर
८२७— ८२८	,, ७९४	भार १३१·५; १३०·५ आकार ·६५	,,	,, परन्तु ७९४
८२९	देहली दारुलमुल्क ७९२	भार ६८ आकार ·५५	सुल्तान मुहम्मद शाह	दारुलमुल्क देहली ७९२
८३०	,, ७९३	भार ६३·२ आकार ·६	सुल्ताने मुहम्मद शाह	,, परन्तु ७९३
८३१— ८३३	,, ७९४	भार ६८·५; ६५·६ आकार ·५५—·५	,,	,, परन्तु ७९४
८३४	,, ७९५	भार ६४·७ आकार ·५५	,,	,, परन्तु ७९५
८३५— ८३८	,, —	भार ६९·५; ६७·५ आकार ·५५	जैसा कि ८२९ पर है	,, परन्तु बिना तिथि

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
Æ ८३८अ	देहली दारुलमुल्क —	भार ६६ आकार ·५५	वृत्ताकार क्षेत्र में शाह मुहम्मद	दारुलमुल्क देहली
Æ ८३९	देहली ७९१ ?	भार ५४·७ आकार ·६	वृत्त में शाह मुहम्मद हाशिये में (अन्दर से पढ़ने पर) सुल्तान ज़ुरेबत] बहज़रते देहली	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९]१
८४०– ८४१	,, ७९३	भार ५२·८; ५३–५ आकार ·६	,, हाशिये का पढ़ने में नहीं आता	,, परन्तु ७]९३
८४२– ८४४	देहली —	भार३४·५;३४·१ ३३·३ आकार ·४५–·४	शाह मुहम्मद	बहज़रते देहली
८४४ अ	,, —	भार २४; २२·५ आकार ·४५	जैसा कि ८४२ पर है	जैसा कि ८४२ पर है
८४४ ब	—	भार १६ आकार ·३५	मुहम्मद	शाह

सिकन्दर शाह प्रथम

७९५ हि० १३९३ ई०

ताँबा चाँदी मिश्रित धातु के

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
B ८४५	— ७९५	भार १३८·३ आकार ·८	अलखलीफ़ा अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु ७९५	सुल्ताने मुहम्मद शाह सिकन्दर शाह
८४५ अ	—	भार ५५ आकार ·५५	अलखलीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु	जैसा कि ८४५ पर है परन्तु 'सुल्तान'

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
			ताँबे के	
Æ ८४६*	[देहली] ७९५	भार १३५·६ आकार ·६५	वृत्त में शाह सिकन्दर हाशिये में [सुल्तानी जुरेबत बहज़रते देहली]	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९५
८४७—८४८	देहली दारुलमुल्क ७९५	भार ६८·३ आकार ·५५	सुल्ताने सिकन्दर शाह	वृत्त में दारुलमुल्क देहली ७९५
८४८ अ	,, ७९५	भार ६९·६ आकार ·६	मुहम्मद शाह सिकन्दर शाह	जैसा कि ८४७ पर है
८४८ ब	देहली	भार ३० आकार ·४५	शाह सिकन्दर	बहज़रते देहली
८४८ स	—	भार १८ आकार ·४	सिकन्दर	शाह
			महमूद द्वितीय बिन मुहम्मद चतुर्थ	
			७९५–८१५ हि०	१३९३–१४१३ ई०
			स्वर्ण के	
AV ८४८ द	देहली ७९७	भार १७१ आकार ·९	वृत्त में फ़ी ज़मनिल इमामे अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहू हाशिये में जुरेबत…बहज़रते देहली ७९७	अस्सुल्तानुल आज़म अबिल मुज़फ़्फ़र महमूद शाह मुहम्मद शाह फ़ीरोज़ शाह सुल्तानी

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
AV ८४९	— ?	भार १७३·३ आकार ·८	जैसा कि ८४८ द पर है परन्तु हाशिया नहीं है ....और अमीरिल मोमिनीन	जैसा कि ८४८ द पर है
८५०	— ?	भार १७३·७ आकार ·८	जैसा कि ८४९ पर है (तिथि नहीं है)	जैसा कि ८४८ द पर है परन्तु अबुल मुहम्मद
			चाँदी के	
AR ८५० अ	७९५	भार १६४·८ आकार ·८५	जैसा कि ८४९ पर है परन्तु तिथि ७९५ है	जैसा कि ८४८ द पर है
८५१	८१५	भार १६५·२ आकार ·९	,, परन्तु ८१५	जैसा कि ८५० पर है
			ताँबा चाँदी मिश्रित धातु के	
B ८५२— ८५३	७९५	भार १३९; १४२·३ आकार ·७	अलखलीफ़ा अबू अब्दुल्लाह खलअदत खिलाफ़तोहु ७९५	सुल्ताने मुहम्मद शाह महमूद शाह
८५४	७९६	भार १२४·३ आकार ·६५	,, परन्तु ७९६	,,
८५५	—	भार ५२·७ आकार ·५५	अलखलीफ़ा अमीरिल मोमिनीन खलअदत खिलाफ़तोहु	,,
			ताँबे के	
Æ ८५६	देहली ७९७	भार १४०·७ आकार ·६५	वृत्त में शाह महमूद हाशिये में सुल्तानी जुरेबत [बहज़रते देहली]	नायबो अमीरिल मोमिनीन ७९७

संख्या	टकसाल व आकार	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
Æ				
८५७–८५८	देहली ७६८	भार १३८·३ आकार ·६५	वृत्त में शाह महमूद	,, परन्तु ७६८
८५९	देहली ८१५	भार १३८·३ आकार ·७	जैसा कि ८५६ पर है	,, परन्तु ८१५
८६०–८६१	—		,, हाशिये में पढ़ने में नहीं आता	,, तिथि पढ़ने में नहीं आती
८६१अ	देहली दारुलमुल्क —	भार १३४·८ आकार ·७	वृत्त में सुल्ताने महमूद शाह	वृत्त में दारुलमुल्क देहली
८६१ ब	[देहली] ?	भार ६९ आकार ·५५	जैसा कि ८५६ पर है परन्तु हाशिया का पढ़ने में नहीं आता	जैसा कि ८५६ पर है परन्तु तिथि नहीं है
८६२	देहली दारुलमुल्क ७९५	भार ६८·८ आकार ५·५	वृत्त में सुल्ताने महमूद शाह	दारुलमुल्क देहली ७९५
८६३–८६४	,, ७९८	भार ६९·२ आकार ·५५	,,	,, परन्तु ७९८
८६५–८६६	,, ८००	भार ६६ आकार ·५५	जैसा कि ८६२ पर है	जैसा कि ८६२ पर है परन्तु ८००
८६७–८६८	देहली दारुलमुल्क ८०१	भार ७०·२ आकार ·५५	जैसा कि ८६२ पर है	जैसा कि ८६२ पर है परन्तु ८०१
८६९	,, ८०७	भार ६३·५ आकार ·५५	,,	,, ८०८
८६९ अ	,, —	भार ७०·५ आकार ·६	शाह महमूद सुल्तानी	वृत्त में जैसा कि ८६२ पर है परन्तु तिथि नहीं है
८६९ ब	,, ८०३	भार ६५·३	,,	जैसा कि ८६२ पर है परन्तु नीचे ८०३ है

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ट-देश)
८६९ स	देहली दारुलमुल्क —	भार ६३ आकार ·६	वृत्त में शाह महमूद	जैसा कि ८६२ पर है परन्तु बिना तिथि के
८७०	,, —	भार ५६·८ आकार ·६	जैसा कि ८६२ पर है परन्तु अक्षर अधिक सुन्दर हैं	दोहरे वृत्त में जैसा कि ८६२ पर है परन्तु बिना तिथि के
८७१	देहली —	भार ३४·८ आकार ·४५	शाह महमूद	बहज़रते देहली
८७१ अ	,, —	भार ९	,,	देहली
			मरणोपरान्त ढाले गये	
८७२	देहली ८३—	भार १४४ आकार ·६५	जैसा कि ८५६ पर है	जैसा कि ८५६ पर है परन्तु ८३
८७३	देहली दारुलमुल्क ८१६	भार ६९·४ आकार ·६	जैसा कि ८६२ पर है	जैसा कि ८६२ पर है परन्तु ८१६
			नुसरत शाह ७७९-८०२ ? हि०	१३९५-१३९९ ? ई०
			स्वर्ण के	
AV ८७४	— ८००	भार १७१·१ आकार ·८	जैसा कि ८०३स पर है परन्तु ८००	अलवासिक़ो बताईद इर्रहमानी नुसरतशाह अस्सुल्तानी खलअदत ममलोकतोहु[१]
			ताँबे के	
Æ ८७५	?	भार १४१·३ आकार ·६५	वृत्त में शाह नुसरत सुल्ताने हाशिया दृष्टिगत नहीं है	नायबो अमीरिल मोमिनीन *r* अमीर के बाईं ओर

१ "ईश्वर की सहायता पर भरोसा करने वाला नुसरत शाह सुल्तान। उसका देश सर्वदा रहे।"

संख्या	टकसाल व तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ-देश)
Æ ८७६	देहली ?	भार १३९·३ आकार ·६५	वृत्त में सुल्ताने शाह नुसरत हाशिये में ......देहली......	नायबो अमीरिल मोमिनीन *r* 'अमीर' के बाईं ओर
८७६ अ	८०१	भार १४० आकार ·६५	जैसा कि ८७६ पर है परन्तु हाशिये में लिखा पढ़ने में नहीं आता	जैसा कि ८७५ पर है परन्तु नीचे ८०१ है
८७६ ब	देहली दारुलमुल्क —	भार १३३ आकार ·६५	शाह नुसरत सुल्ताने	दारुलमुल्क देहली
८७७	,, ७९७	भार ७१·३ आकार ·६	,,	,, ७९७
८७८	देहली दारुलमुल्क ७९८	भार ६९ आकार ·६	शाह नुसरत सुल्ताने	दारुलमुल्क देहली ७९८
८७९	,, ७९९	भार ६६·१ आकार ·६		,, परन्तु ७९९
८७९ अ	,, —	भार ७० आकार ·५५	,,	,, परन्तु तिथि नहीं है
८७९ ब	,, —	भार ६० आकार ·५५	,, परन्तु 'ने' छोटा बना है	,,
८७९ स	,, —	भार ६५·४ आकार ·५५	,, परन्तु 'नी' है	
८७९ द	,, ८०१	भार ६७·१ आकार ·५५	सुल्ताने नुसरत शाह	जैसा कि ८७७ पर है परन्तु नीचे ८०१ है
८८०	देहली ७९७	भार ३४·३ आकार ·४५	शाह नुसरत ७९७	बहज़रते देहली

संकेत-सूची

अफ़ीफ़	*तारीखे फ़ीरोज़शाही*
ईथे	*Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of the India Office.*
फ़िरिश्ता	*तारीखे फ़िरिश्ता*
बदायूनी	*मुन्तखबुत्तवारीख़*
बरनी	*तारीखे फ़ीरोज़शाही*
रियू	*Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London.*
होदीवाला	*Studies in Indo-Muslim History.*

मुख्य सहायक ग्रन्थों की सूची

फ़ारसी

अफ़ीफ़, शम्स सिराज	तारीखे फ़ीरोजशाही (कलकत्ता १८९० ई०)
अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी	अखबारुल अखियार (देहली १३३२ हि०)
अमीर खुर्द, सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी	सियरुल औलिया (देहली १८८५ ई०)
अमीर खुसरो	वस्तुल हयात (अलीगढ़)
	क़ेरानुस्सादैन (अलीगढ़ १९१८ ई०)
	मिफ़ताहुल फ़ुतूह (अलीगढ़ १९२७ ई०)
	तुग़लुक़ नामा (हैदराबाद १९३३ ई०)
तैमूर सुल्तान (?)	मलफ़ूजाते तैमूरी
निज़ामुद्दीन अहमद	तबक़ाते अकबरी (कलकत्ता १९२७ ई०)
फ़िरिश्ता, मुहम्मद क़ासिम	तारीखे फ़िरिश्ता (नवल किशोर प्रेस)
फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़	फ़ुतूहाते फ़ीरोजशाही (अलीगढ़)
बदायूनी, अब्दुल क़ादिर	मुन्तखबुत्तवारीख (कलकत्ता १८६८ ई०)
बरनी, ज़ियाउद्दीन	तारीखे फ़ीरोजशाही (कलकत्ता १८६०–६२ ई०)
	तारीखे फ़ीरोजशाही (रामपुर, हस्तलिखित)
	फ़तावाये जहाँदारी (इण्डिया आफ़िस लन्दन, हस्तलिखित)
	सहीफ़ये नाते मुहम्मदी (रामपुर, हस्तलिखित)
माहरू	इन्शाये माहरू (अलीगढ़)
मुतहर कड़ा	दीवान (प्रोफ़ेसर मसऊद हसन रिजवी अदीब, लखनऊ का हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह)
मुहम्मद बिहामद खानी	तारीखे मुहम्मदी (हस्तलिखित, ब्रिटिश म्युज़ियम, लन्दन)
मुहम्मद मासूम	तारीखे सिन्ध (पूना १९३८ ई०)
यज़दी, शरफ़ुद्दीन अली	जफ़र नामा भाग २ (कलकत्ता १८८५-८८ ई०)
यहया बिन अहमद सिहरिन्दी	तारीखे मुबारकशाही (कलकत्ता १९३१ ई०)
हमीद क़लन्दर	खैरुल मजालिस (अलीगढ़)
हसन, अमीर, सिजज़ी	फ़वायदुल फ़ुआद (देहली १२७२ हि०)
हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर	दस्तूरुल अलबाब फ़ी इल्मिल हिसाब (हस्तलिखित, रामपुर)

अरबी

इब्ने बत्तूता	यात्रा का विवरण (पेरिस १९४९ ई०)
क़लक़शन्दी	सुबहुल आशा फ़ी सिनाअतिल इन्शा (काहिरा १९१५ ई०)

उर्दू

मुहम्मद हुसेन — अजाइबुल असफ़ार (लाहौर १८६८ ई०)

सर सैयिद अहमद ख़ाँ — आसारुस्सनादीद (कानपुर १९०४ ई०)

ओरियण्टल कालिज मैगज़ीन लाहौर

हिन्दी

रिज़वी, एस० ए० ए० — आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ़ १९५६ ई०)

खलजी कालीन भारत (अलीगढ़ १९५५ ई०)

तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ (अलीगढ़ १९५६ ई०)

ENGLISH

Benett. W. C, — *A Report on the Family History of the Chief Clans of Roy Bareilly District* (Lucknow 1870)

Elliot and Dowson — *History of India as told by its own Historians* (London 1887)

Ethe, H. — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of the India Office*

Gibb, H. A. R. — *Ibn Battuta* (London 1929)

Haig, Sir, Wolseley. — *The Cambridge History of India.* Vol. III (Cambridge 1928)

Hodivala, S. H. — *Studies in Indo-Muslim History* (Bombay 1939)

Ibbetson, Sir D. — *A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North-West Frontier Province* (Lahore 1919)

Mirza, M. W. — *The Life and Works of Amir Khusrau* (Calcutta 1935)

Moreland, W. H. — *The Agrarian System of Moslem India* (Cambridge 1929)

Qureshi I. H. — *The Administration of the Sultanate of Delhi* (Lahore 1944)

Rieu, C. — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London.*

Storey, C. A. — *Persian Literature, A Bio-Bibliographical Survey*

Thomas, E. — *The Chronicles of the Pathan Kings of Delhi* (London 1871)

Tripathi, R. P. — *Some Aspects of Muslim Administration* (Allahabad 1936)

Wright, H. N. — *The Coinage and Metrology of the Sultans of Delhi* (Delhi 1936)

Archaeological Survey Reports

Journal, Asiatic Society Bengal.

Journal, Royal Asiatic Society Great Britain and Ireland.

नामानुक्रमणिका (अ)

(अ)

(आ)

(इ)

(ई)

(उ)

(ऊ)

(ए)

(ऐ)

(ओ)

(क)

(ख)

(ग)

(च)

(छ)

(ज)

(झ)

(ड)

(त)

(थ)

(द)

(प)

(फ)

(ब)

(भ)

(म)

(य)

(र)

(ल)

(व)

(श)

(स)

(ह)

नामानुक्रमणिका (ब)

पारिभाषिक शब्द

(अ)

(आ)

(इ)

(उ)

(ए)

(क)

(ख)

(ग)

(च)

(छ)

(ज)

(त)

(द)

(न)

(प)

(फ)

(ब)